GOVERNMENT OF INDIA

ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA

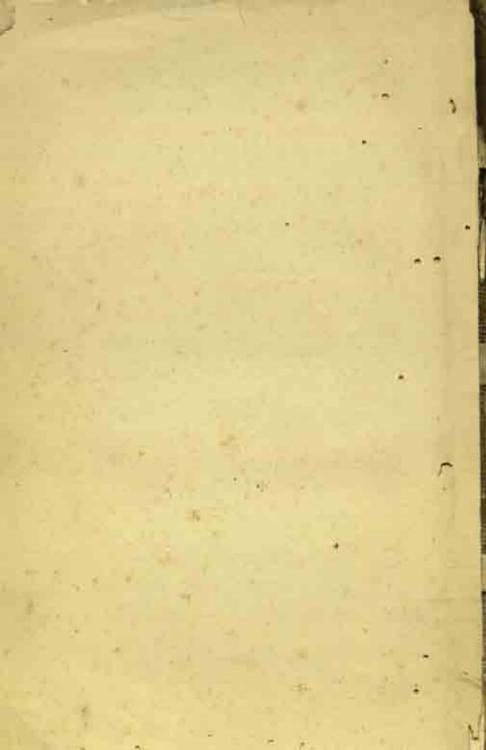
CENTRAL ARCHÆOLOGICAL LIBRARY

ACCESSION NO. 30082

CALL No. R 910. 3095426 G. I. G. I / U.P.

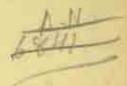
D.G.A. 79





IMPERIAL GAZETTEER OF INDIA

PROVINCIAL SERIES



UNITED PROVINCES OF AGRA AND OUDH

VOL. II

THE ALLAHĀBĀD, BENARES, GORAKHPUR, KUMAUN, LUCKNOW, AND FYZĀBĀD DIVISIONS, AND THE NATIVE STATES

30082



SUPERINTENDENT OF GOVERNMENT PRINTING CALCUTTA

1908

LIBRARY, NEW DELHN:
Ace No. 30082
Date. 2:2:51
Call No. 1. 910:3095426 G

OXFORD: NORACE HART PRINTER TO THE UNIVERSITY

| | | | | | FAG. 1-12 | |
|----|--|--------|----------|-------|-----------|-------|
| | AHĀBĀD DIVISION | -80 | 10 | | 2-2 | |
| IL | Committee of the Commit | - 7 | | 24 | . 3-3 | |
| Α9 | PRINCE DISTRICT Boundaries, configuration, and ri | ver sy | stem | 14 | 3 11 | ē. |
| | | | - 85 | 100 | | 3 |
| | Geology - | 14. | (9) | 5 | (8) | 3 |
| | Botany | - 4 | | 2.5 | 3 | 3 |
| | Fauna Climate and temperature | | - 2 | 7.5 | 14 | 3 |
| | Climate and temperature | | 17 | | 27 | 3 |
| - | Kuman | | | | | 3 |
| | Printer : | | | - 4 | | 5 |
| | Tri drawn out All | | 3 /41 | 18 | 90 | 5 |
| | | | 1 10 | 1.9 | 5 | 5 |
| | Cautes und occupations | | 1 6 | 2.5 | | 0 |
| | Christian missions | | | (8) | 9 | 6 |
| | General agricultural conditions Chief agricultural statistics and | princ | ipal cre | ops . | - | 6 |
| | Chief agricultural statistics and | ractic | ė . | | | 7 |
| | Chief agricultural statistical p | | | 20 | 246 | 7 7 7 |
| | Cattle, ponies, and sneep | | | | - 6 | |
| | Irrigation . | | | × | 91 | 7 |
| | Minerals - | 2 | S 10 | - 0 | 42 | 7 |
| | Arts and manufactures . | | 8 | | | В |
| | Commerce - · | | | 10 | , | 8 |
| | Railways and roads | 2 | | | | 8 |
| | Famine | 14 | | | 1 | 9 |
| | District staff | | | | - 4 | 9 |
| | ctuit instice and crime . | 10 | 19 | | 13 | 9 |
| | Land revenue administration | | 12 | | | 10 |
| | Local self-government | 15 | 14 | | 100 | 10 |
| | Police and jatls | 57 | (ZV) | | | . 10 |
| | Education . | 20 | | | | 10 |
| | Hospitals and dispensaries | | - | | | 10 |
| | Vaccination - | | -0 | 141 3 | - 8 | 13 |
| | Bibliography | - 4 | | AC | | 1.7 |
| | ANDARDUR TAHSIL | | | D 7 | - 1 | |

| | | | | | | | | | T | AGE |
|--|---|---------|--------|-------|-------|--------|------|----------------|-------|-----|
| Bt | LHAUR TAHSI | L. | 4 | 8 | 0 | (8) | 10 | * | 97 | 11 |
| Bi | tounipur Tal | HSIL | i i | 4 | | 10 | | 18 | 56 | 12 |
| C | WNPORE TAH | sīt | 6 | 9 | | +1 | 351 | :5 | 21 | 12 |
| Di | ERAPUR . | 6 | 10.7 | 19 | | 100 | 8 | | 51 | 12 |
| N. | ARWAL . | | 10 | 10 | | 20 | 100 | | 8 | 13 |
| Sp | TVARĀJPUR | | 10 | 4 | | 7 | 10 | | 8 | 1.3 |
| Gi | HATAMFUR | | 1941 | , | | | (A) | 32 | (A) | 14 |
| Bi | LHAUR TOWN | | | | 3 | 2 | 747 | 14 | ¥ | 14: |
| Bi | THUE . | î. | - | 9 | 8 | 21 | 1461 | 10 | | 3.4 |
| C | WNPORE CITY | Y | | 4 | 12 | 41 | 74.1 | 19 | . 15 | -20 |
| | The Mutiny | ī | 0 | 74 | 10 | × | 15 | 14 | 6 | 15 |
| | Municipality | 4 | 23 | 3 | (4) | | |)) | * | 17 |
| | Trade . | | 85 | 100 | 10 | | | 14 | × | 18 |
| | Manufactures | | *1 | (4) | | | | 14 | 3 | 19 |
| | Education | | ¥1 | 11 | | | 10 | | 10. | 20 |
| M | AKANPUR . | | | 1.0 | | | | | 12 | 20 |
| And the last of th | CHPUR DISTRI | CT | | 100 | | | | 9 | . 21 | -32 |
| - | Boundaries, c | | | | | r syst | imi | 8 | N | 21 |
| | CONTRACTOR OF THE PARTY OF THE | | | | 2000 | | 7 | | 13 | 2.1 |
| | Botany . | E. | 8 | - 5 | 9 | W. | - | 100 | 14 | -21 |
| | Fauna | 1 | 1 | | | - | | 100 | 14 | 21 |
| | Climate and t | | | | | | | | | 22 |
| | Ramfall . | | | | 100 | | | | | 22 |
| | History | | | | | | | | | 22 |
| | Archaeology | | | | | | | | | 33 |
| | The people | | | | | | | | | 23 |
| | Castes and or | | | | | | | | | 24 |
| | Christian mis | sions | | - | | | - 8 | - 3 | | 24 |
| | General agric | | | | | | | | 14 | 24 |
| | Chief agricult | noral e | eatist | es an | d nei | ncina | cror | 18.74 | 17211 | 25 |
| | Improvement | a in a | ericn | tural | pract | tice | | | | 25 |
| | Cattle and sh | | | | | Cart | | | | 25 |
| | Imgation . | | | | | 765 | 19 | -0 | | 25 |
| | Minerals . | | 100 | | | 1,87 | | | - 1 | 26 |
| | Arts and mar | | | | | 1.75 | | - | | 26 |
| | IN THE COLUMN TWO IS NOT THE OWNER. | | | | | - | | -01 | - | 26 |
| | Railways and | 1 | | | -3. | 1 | | | - 9 | 26 |
| | 11.17.00 (1.17.40 A. A. S. | | | | | | | | | 27 |
| | Famine . District staff | | | Ť. | - | | - 2 | - | | 27 |
| | | | | | | | 156 | 14 | - 1 | 27 |
| | Civil Justice Land revenu | | | | 1 | ** | | | - | 27 |
| | | | | | | - 1 | | | | #8 |
| | Local self go | 4500 | | | | | | | | 28 |
| | Police and j | | | (4) | - 2 | - 81 | | | | 28 |
| | E-(1) CONTRACTOR | - | - | 1.40 | 1.00 | | | 1.00 | | 2.0 |

| | | | | | | 97 | COM |
|-----|--------------------------------|----------|--------|---------|----------|------|------|
| | Hospitals and dispensaries | - 27 | - 11 | 74 | | 0. | 28 |
| | Vaccination | 100 | 45 | 18 | | 2 | 29 |
| | Bibliography | - 30 | | 19 | * | 11 | 29 |
| - 1 | ATEMPUR TARSIL | - 4 | 93 | 58 | 2. | 77 | 29 |
| | CHAJURA TANSIL | | +1 | | | 4 | 29 |
| Ň | GHAZIPUR TAHSIL | | , | | 3 | 2 | 30 |
| | Кнаса | | - 6 | 2 | V | 9 | 39 |
| - 5 | BINDKI | | - 2 | 10 | 72 | 8 | 30 |
| | BINDET | - 8 | - | 135 | (6 | * | 31 |
| | KHAJUHA TOWN | - (4 | 9 | 10 | 10 | 1 | 31 |
| 3 | Kona | 1.0 | | 10 | 28 | | 31 |
| Ri | was Pierroser |) 6 | ¥ | | 190 | | |
| - | Boundaries, configuration, | and hi | ll and | river : | ystem | 15 . | 32 |
| ٩, | Geology - | 65 | - 7 | | 141 | | 32 |
| | Botany | | | 27 | 141 | 9 | 33 |
| | | - 3 | - 12 | 27 | (41) | | 33 |
| | Climate and temperature . | | 19 | | 6 | - | 33 |
| | Rainfall | Ē | | (4) | +1 | 22 | 33 |
| | History | - 6 | - 10 | | ** | 35 | 33 |
| | Archaeology - + - | 1.0 | 4 | | *) | 187 | 35 |
| | The people | | - 0 | 3. | 12 | | 35 |
| | Castes and occupations . | | 100 | | | (4) | 36 |
| | entition missions | | | | | 2 | 30 |
| | Consult acrimational condit | ions . | | - 5 | - 6 | ř. | 36 |
| | 24 J. C Sendenderen Statistics | atticl t | THICLD | ai cro; | 30 H | | 37 |
| | Immovements in agricultu | ral pri | retice | 1.0 | 100 | 0.1 | 37 |
| | Cattle, ponies, and sheep | | - | 14 | | 11 | 38 |
| 4 | Irrigation - · · | | +) | - 3 | 13 | 25 | 38 |
| | Forests | - 3 | 73 | 35 | 100 | - 5 | 38 |
| | Minerals . | s) 9 | | 153 | | - 6 | 38 |
| | Arts and manufactures | | | | - | 2 | 39 |
| | Commerce | | | - | - 4 | - | 39 |
| | Commerce | | | - 1 | 14 | 4 | 39 |
| | Varnine . | | - 1 | - 1 | - 4 | 14 | 39 |
| | District subdivisions and | staff . | - 20 | 45 | 195 | | 40 |
| | Civil justice and crime | 4 6 | 18 | 0.1 | $-(\pm)$ | - 2. | 40 |
| | I and revenue administrat | ion | 16 | | | . 7 | 140 |
| | t weat self-government | R 16 | 11 | - 7 | - 57 | - 3 | 41 |
| | Police and jails | | 8 3 | - | | | 41 |
| | Education | 88 | 11 77 | - 8 | | - 14 | 140 |
| | Hospitals and dispensarie | 8 | . 3 | - 2 | | 28 | 41 |
| | Vaccination | | 2 12 | | 4. | | - 41 |
| | Bibliography | 1 | | | | 1.0 | - 3 |
| | BANDA TAHSIL | 2 | 2 3 | | | 12 | - 16 |
| | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | PAGE |
|---|------------------|----------------|---------|---------|--------|---------|-------------|---------|------|----------|
| | PAILANT | | | | | | | | - | 43 |
| | BABERÜ | | | 2 3 | | | | | - 25 | 43 |
| | KAMASIN | | | | | | | 9 12 | - 2 | 43 |
| | MAU. | a . | | // m | | | | LTX. | 120 | 44 |
| | KARWI TA | HSIL | | 2 B | | | | | 0.40 | 44 |
| | BADAUSA | (4) | | 0 0 | | | - 24 | - 2 | - 2 | 44 |
| | GIRWAN | | | 2 3 | | | | | | 45 |
| | KARWI SU | HDIVIS | ion . | | | | | | -6 | 45 |
| | BANDA TO | WM. | | | | | i i | | | 45 |
| | CHITRAKUT | r | | | | | | | - | 45 |
| | KALINJAR | | | | | | | | | 46 |
| | KARWI TO | WN_ | | | | | | | | 49 |
| | Rajafur (| or MA | THOAY | (AN) | | | 3 3 | - 6 | 13. | 50 |
| H | LAMERPUR D | ISTRIC | a : | | | | | - | 0.5 | 0-61 |
| | Boundari | es, cor | ingure | tion, | and I | nill an | d rive | r syste | ms. | 50 |
| | Geology | | | 10 | | | | | - 27 | 51 |
| | Botany | | | | | | | - | - | 51 |
| | Fauna | | | | | | | - 0 | | 51 |
| | Climate a | and ter | | | | | | | | 51 |
| | Rainfall | | | | | 9 15 | | - 0 | | 51 |
| | History | | | | | | | - | | 51 |
| | Archaeol | | | | | | | | - 90 | 53 |
| | The peop | | | | | | 11 | - 8 | | 53 |
| | Castes an | | | | | | - 7 | - 3 | - 3 | 53 |
| | Christian | | | | | | | | | 54 |
| | General a | gricult | ural c | ondi | ions | | | | | 54 |
| | Chief agr | icultur | al stat | istics | and | princi | nal cr | one. | | 54 |
| | Improver | nents i | n agri | cultu | ral pr | action | Part of the | Maria | | 55 |
| | Cattle, po | | | | | | | | | |
| | Irrigation | mental aller | | 11000 | | | 0 (5 | - 1 | - 55 | 55 55 |
| | Minerals | | | , 3 | | | - 4 | -,* | .5 | 55 |
| | Arts and | manuf | | | | - 8 | F 9 | - 6 | | 56 |
| | Commerc | | | | | | | - 8 | - 5 | 56 |
| | Railways | | | | | | | - 27 | 5 | 56 |
| | Famine | | | | | | - 12 | | - | 36 |
| | District s | | | ind s | | | - 74 | | | |
| | Civil just | | | | | | | - A | - 10 | 57 |
| | Land rev | | | | | 1,9 | - 3 | | 100 | 57 |
| | Local seli | | | | | | | | | 57 58 |
| | Police and | | | | | 1 11 | | | - 25 | |
| | Education | | | | | | | - 1 | 100 | 58 |
| | Hospitals | and 4 | famon | merica. | | | - 5 | - 7 | 10 | 58 |
| | Vaccinati | on . | aspens | HEE ICS | | | | - 5 | -04 | 39 |
| | Bibliogran | | | | | 14 | | 27 | 1.4 | 39 |
| | APRIL 111 (1964) | DESCRIPTION OF | | | | | | | | 40 |

| | TABLE | OF C | ON. | TEA | 7.5 | | | wii |
|---|-----------------------------------|--------|--------|--------|---------|-------|-----|-------|
| | | | | | | | | PAGE |
| | HAMIRPUR TANNIL . | - | - 6 | - | | | 12 | 39 |
| | RATH TAHSIL | | | | - / | - | | - 59 |
| | KULPAHAR TAHSIL | | - 5 | - | | - 2 | - 1 | 60 |
| | MAROBA TARSIL | - | 100 | 12 | 7 | | - | fio |
| | MAUDARA TARRIL . | | 6 | 8 | | 1 | - | 60 |
| | MAHORA SUBDIVISION | - | 13 | 16 | 1 | - 6 | - 0 | 61 |
| | HAMIRPUR TOWN . | | | - | 00 | 41 | - | 61 |
| | KULPAHAR TOWN . | | 100 | 10 | | 100 | - | 61 |
| | MAHOBA TOWN | | - | 14 | | - | 6 | 61 |
| | MAUDAHA TOWN . | | | - | | - | | 62 |
| | RATH TOWN | | - 63 | - 1 | - 4 | - | 54 | 63 |
| Α | LLAHABAD DISTRICT . | 0 | . R. | ű, | | 2 | 101 | 63-85 |
| | Boundaries, configuratio | n, an | d hill | and | river s | ysten | ME. | 63 |
| | Charley | | 13 | 58 | | | | 64 |
| | Botany | | - | (4) | - 00 | - | 2.0 | 64 |
| | Fauna | | | | | | - | 64 |
| | Climate and temperature | è . | | 24 | | | | 64 |
| | Rainfall , , , | | | | , | | - | 65 |
| | History | 8 | - 6 | Ğ. | - X | - 2 | -5 | 65 |
| | Archaeology | | - 3 | 174 | | 11 | - 3 | 66 |
| | The people | | 8 | - | - | 6 | 6 | 67 |
| | Castes and occupations | | - 63 | G. | | 41 | G | 67 |
| | Christian missions . | | | - | | 47 | | 68 |
| | General agricultural con | ditior | 18 | | | | | 68 |
| | Chief agricultural statists | | | | | | - | 68 |
| | Improvements in agricu | | | | | | - | :60 |
| | Cattle, ponies, and shee | p. | | Art of | | | 3 | 70 |
| | Irrigation | | 16 | 14 | - 5 | | 12 | 70 |
| | Irrigation | | 141 | 14 | | - | - | 70 |
| | Arts and manufactures | 0 | 10 | | | - | - | 70 |
| | Commerce | | 100 | | | | - | 70 |
| | Railways and roads | | | | | | | 71 |
| | Famine | | | | | | - | 71 |
| | District staff | | | | | | - | 71 |
| | Civil justice and crime | | | | - | | | 7.5 |
| | Land revenue administr | | 1 | a di | 1 | | | 72 |
| | Local self-government | | | | - | 10 | 54 | 73 |
| | Police and Jails | | | - | | | - | 73 |
| | Education | | 61 | | 141 | | - | 73 |
| | Hospitals and dispensar | | | | | | | 73 |
| | Vaccination | | | | | | - | 74 |
| | | 41 | | | | - | | 74 |
| | Bibliography . ALLAHĀBĀD TAHSĪL . | | | | | | 4 | 74 |
| | Sirathū , | | 1 (1) | ii ii | - 10 | 1 17 | | 74 |
| | 31111 13111 | | | | | | | 19.74 |

| | | | | | | | | | | PAGE |
|---|---|--|--|------------------------------------|-------------------------------------|-------|------------|-------|------|--|
| | MANJHANPUR | 3 | | +1 | 10 | - 0 | 0.1 | 100 | -10 | 73 |
| | SORAON . | | 181 | - | 54 | - 10 | - 83 | 200 | | 7.5 |
| | PHULPUR TARS | ît. | 171 | - | 2.4 | 18.1 | - | 140-1 | 1.0 | 73 |
| | HANDIA . | 19 | | | - | | | - 4 | | 76 |
| | KARCHANA . | 9 | | | | | | - | | 76 |
| | BARA | 0 | 2 | - 3 | 1 | | - 11 | | | 77 |
| | MEJA - | 12 | 10 | 21 | 12 | - | | | 100 | 77 |
| | ALLAHABAD CE | rv: | 2 | 100 | 176 | - | - | - 70 | 112 | 8-83 |
| | History . | 161 | 17 | - | | 0.0 | - | 12 | 3.6 | 78 |
| | Muhammadar | rule | | - | | | | | | 78 |
| | 1910 W. W | | | | | | | - | - | 79 |
| | Situation . | | | | | | | TW. | | 80 |
| | Municipality | | - 51 | -5- | 8 | - 3 | 171 | | | 81 |
| | Cantonments | | | - | 181 | - 17 | 3.5 | | - 4- | 82 |
| | Trade | 0 | - 33 | | | | | 12 | | 82 |
| | Education | | 1 | | 100 | | 13 | - 2 | | 1,000 |
| | THUST . | 1 | (00) | 1 | | -57 | 3 | - | - 1 | 82 |
| | KOSAN . | 41 | 140 | | | - 11 | - | - | | 83 |
| | | 2. | 365 | 1. | - | E1 . | 1 | 181 | A . | 83 |
| | | | (4) | 156 | 44 | - 10 | - 50 | + | - | 84 |
| | PHÜLFUR TOWN | | 10.7 | 18 | - | 100 | 100 | | 2 | 84 |
| | Sirsă | 87 | 100 | 7 | W. | 0.0 |) <u>+</u> | - (6) | | 85 |
| | | | | | | | | | | |
| ч | IANSI DISTRICT | *1 | E | | | 121 | (# | | | Box- |
| 31 | Boundaries, co | | | | | | | | | 85 |
| 31 | Boundaries, co Geology . | mfigu | | n, and | | | | ysten | 18 | |
| 21 | Boundaries, co | nifigt | rratio | on, and | 1 hill | and r | iver a | ysten | 18 | 85 |
| 21 | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . | nifigu | ratic | on, and | f hill | and r | iver a | ysten | 18 | 85 86 |
| 31 | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to | mpe | ratio | on, and | 1 hill | and r | iver a | ysten | 18 | 85 86 86 |
| 31 | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . | mpe | ratio | on, and | f hill | and r | iver a | yaten | 18 | 85 86 86 |
| 31 | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . | mfigu | ratio | on, and | f hill | and r | iver a | yaten | 18 | 85 86 86 86 |
| 31 | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archieology | mfigu | ratic | e . | f hill | and r | iver a | yaten | 18 | 85 86 86 86 86 87 |
| 31 | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people | migu | ratio | e . | hill | and r | iver a | yaten | 18 | 85 86 86 86 87 87 90 |
| ,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ | mingo | ratur | e . | hill | and r | iver a | yaten | 18 | 85 86 86 86 87 90 90 |
| ,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi | empe | ratur | e e | Thill | and r | iver a | yaten | 18 | 85 86 86 86 87 87 90 90 |
| ,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi | empe | ratur | e e | Thill | and r | iver a | yaten | 18 | 85 86 86 86 87 87 90 90 90 |
| ,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi General agricu | upat ons ltural | ratur | on, and | hill | and r | ivera | yaten | 18 | 85 86 86 86 87 90 90 90 91 |
| ,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi General agricu Chief agricultur | onfigurations in the second se | ratur | e dition | I hill | and r | crops | yaten | 18 | 85 86 86 86 87 90 90 91 91 |
| ,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi General agricu Chief agricultu Improvements | upat ons ltural in ag | ratur | dition | I hill | and r | crops | yaten | 18 | 85 86 86 86 87 90 90 91 91 92 |
| ,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and te Rainfall . History . Archieology The people Castes and occ Christian missi General agricu Chief agricultu Improvements Cattle, ponies, | upat ons ltural in ag shee | ratur ions l con atist | dition ics and itural j | hill I prin I pract | and r | crops | yaten | | 85 86 86 86 87 90 90 91 91 92 92 |
| 3. | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi General agricu Chief agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation | onfiguration of the second of | ratur ions l con atist gricul p, an | dition | hill Liprin Liprin tts | and r | crops | yaten | 18 | 85 86 86 86 87 90 90 91 91 92 93 93 |
| 3. | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi General agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation Forests | onfiguration and a superior and a su | ions l con atist | dition ics and itural j | hill I hill I print practi | and r | iver a | yaten | | 85 86 86 86 87 90 90 91 92 93 93 93 |
| ,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archieology The people Castes and occ Christian missi General agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation Forests . Minerals . | onfigu cupat cons litura in ag shee | ratur ions I con atist gricul | dition ics and tural pd goal | hill Liprin Liprin tts | and r | iver a | ysten | | 85 86 86 86 87 90 90 91 91 92 93 93 93 94 |
| ,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi General agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation Forests . Minerals . Arts and manu | outigu numper num num num num num num num num num num | ions l con atist | dition ics and tural p | I hill | and r | crops | ystem | | 85 86 86 86 87 90 90 91 91 92 93 93 93 94 94 |
| ,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and te Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi General agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation Forests Minerals . Arts and manu Commerce | onfiguration of the control of the c | rations l con atist | dition ics and tural j | I hill I prince | and r | iver a | ystem | | 85 86 86 86 87 90 90 91 91 92 93 93 94 94 |
| ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and occ Christian missi General agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation Forests . Minerals . Arts and manu | onfigurations on the second section of the second section of the second section of the second section of the se | rations l con atist | dition ics and tural j | I hill I principle | and r | erops | ystem | | 85 86 86 86 87 90 90 91 91 92 93 93 93 94 94 |

| | 1211 | S.E.E. | UX | CON | VZEZ | V75 | | | - 0 |
|----------------------------------|-----------------|--------|---------|--------|--------|-------|------|-------|-------|
| INTERNATION CONTRACT | Section section | | Larry | 1000 | | | | | PAGE |
| District subs | divisio | ns a | nd st | MT . | | - 1 | | - 10 | 93 |
| Civil justice | and c | rime | 4 10 | | 7. | Hales | 135 | | 93 |
| Land revenu | io adin | imis | trution | n a | 7.5 | | - , | | 46 |
| Local self-go | vernm | icest | 14 | 12 | - 2 | | | | 98 |
| Police and jo | ills | 41 | 10.0 | - 72 | - 7 | -W | - 2 | - 6 | 108 |
| Education | | - 81 | 100 | - 1 | 41 | Q. | 100 | A | 98 |
| Hospitals an | d disp | emna | rries | 4 | 4.1 | 240 | 19 | ** | 98 |
| Vaccination Bibliography | | 107 | - 0 | | 41 | - | - | - | 98 |
| anoming mining | | p-c | 100 | | 10.5 | 246 | | | -98 |
| JHANSI TAHSII | | | | | | 1-0 | | - | 99 |
| MAU TAHSIL | - 2 | 50 | i i | | | | | - | kyo |
| GARAUTHA . | 2 | 100 | 74 | 2 | - 3 | | | | 100 |
| Morn. | | 163 | 3 | | 47 | 100 | - 2 | | 100 |
| LABRIPER TAR | BIL | 50.7 | 12 | - 21 | 190 | - | | 760 | 100 |
| MAHRONI . | - | | | 41 | | | 4 | | 101 |
| LALITPUR SUBI | DIVISIO | ON | | | - | | | | |
| GUREARAI . BARWA SAGAR | | 10 | | | | | | - | 101 |
| BARWA SAGAR | | 17 | #1 | | | | | | 102 |
| CHÂNDEUR . | | | | | | | | | 103 |
| DEGGARN . | | 1 | - 8 | | 8 | | | | |
| DUDHAI . | | | | | 6 | | - 8 | | 103 |
| JHANSI CITY | 121 | | - | 19.1 | | | 167 | 1 | 103 |
| LALITPUR TOW | 100 | | 2 | | | T | 187 | | 104 |
| MADANEUR | AT | | | - | 3 | 0.1 | - | 17 | 105 |
| MAU-RANIPUR | | | | - | | | 19 | | 106 |
| Strow | A DATE OF | | | 19 | - | - 21 | 14 | . 4 | 100 |
| TALBAHAT . | 1.0 | | - 51 | 4 | | 10 | - 12 | 7. | 107 |
| TABLET TABLET | 3 | 2 | 170 | 17 | * | 2. | - | | 107 |
| ALAUN DISTRICT | | | 5 | 15 | T. | | 17 | 108 | 0.000 |
| Boundaries, o | ontigu | runo | m, an | d rive | r syst | em | 1.7 | - 57 | 108 |
| Geology . | A | 4 | 14 | | -2 | - | | * | 108 |
| Botany . | | 4/ | 14. | | | - 1 | 14 | | 168 |
| Fanna Climate, temp | A., | #1 | N | | - 61 | | | | 108 |
| Climate, temp | cratue | e, ar | nd rai | nfall | A | 16.5 | | | rog |
| rustory . | | 100 | 24 | 181 | 9.1 | 14 | | 96 | 109 |
| Archaeology | | 1 | | | 1 | 25 | | 40 | 111 |
| The people | | - | | | | 24 | 2 | 27 | TIL |
| The people Castes and occ | cupati | EPPC | 4 | | | | - | - | 112 |
| Christian miss General agricu | ions | | -STV | - | P . | 4 | - 6 | | 112 |
| General agricu | ltural | cone | dition | 82. | W. | 1/2 | 2 | - | 112 |
| Chief agricultu | ral str | tisti | CH AD | d prin | teinal | CTOD | 9 V | 72 | 113 |
| Improvements | in agr | ricut | turn!: | practi | ce | 13 | ¥1 | 74T 1 | 113 |
| Cattle, ponies, | and a | heep | | | - | × | +1 | 54 3 | 113 |
| Irrigation | 55 3 | | * | 80 | or 1 | 19 | 100 | (600) | 113 |
| | | | | | | | | | 114 |

| | | | | | | | PAGE |
|--|----------------------------|--------|---------|------|-----------------------|------|---|
| Arts and manufactures | | - | | - 4 | | - | 114 |
| Commerce | | | | S | | 1.5 | 114 |
| Railways and roads _ | | | | | - | | 114 |
| Famine | 3 | -2 | | - 1 | - 1 | 3 | 114 |
| District staff | 10 | - 27 | 17 | _2 | - | 201 | 115 |
| Civil justice and crime | - | | | | | | 115 |
| Land revenue administr | ation | - 5- | 161 | | - | | 1.15 |
| Local self-government | - | - | (6) | 14 | | | 116 |
| Police and jails | | v | | | | - | 116 |
| Education | | +1 | | | | - | 116 |
| Hospitals and dispensar | ries | 71 | | | - | | 116 |
| Vaccination | | | | | | | 116 |
| Bibliography | 8 | - 5 | | | - 6 | - | 116 |
| ORAI TARSIL | Š | | | - 12 | 2.0 | - | 116 |
| KALPI TAHSIL | | - | 160 | 14 | - | - 67 | 117 |
| JALAUN TAHSIL | | 41 | 121 | 72 | | 123 | 117 |
| KÖNCH TAHSIL | | | | | | | 118 |
| JALAUN TOWN | | | 7 6 7 | | | | 118 |
| Kälpi Town | | | | | | - | rrg |
| Kënch Town | - | - 11 | | - 12 | - | | 121 |
| ORAL TOWN | 2 | | 11 | | - | | 121 |
| BENARES DIVISION | 8 | 2 | | | -0. | 123 | |
| | | | | | | | - Armen |
| BENARES DISTRICT | | | 87 | | - 2 | 1000 | +40 |
| Benares District Boundaries, configuration | m, an | , D | | 8 | | 124 | |
| Boundaries, configuration | on, an | , D | | 8 | N N N | 174 | 124 |
| Boundaries, configuration Geology | on, an | d riv | | 8 | | 124 | 124 |
| Boundaries, configuration Geology Botany | on, an | d riv | | 8 | 2 2 | 174 | 124 125 125 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna | on, an | d riv | | 8 | | 174 | 124 125 125 125 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur | on, an | d riv | | tem | 2 2 | 174 | 124 125 125 125 125 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall | on, an | d riv | | 8 | 2 2 4 0 0 | 174 | 124 125 125 125 125 125 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History | e . | d riv | | tem | 2 2 | 124 | 124 125 125 125 125 125 125 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History | e . | d riv | | tem | 2 2 4 0 0 | 124 | 124 125 125 125 125 125 125 125 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people | on, an | d riv | er sys | tem | 2 2 4 0 0 | 124 | 124 125 125 125 125 125 125 127 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations | on, an | d riv | er sys | Semi | 2 2 4 0 0 | 124 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions | e . | d riv | er syst | iem | 2 | 124 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 128 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural con | dition | driv | er syst | (em) | | 124 | 124 125 125 125 125 125 125 127 127 128 128 129 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural statist | dition | d riv | er syst | crop | | 124 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 128 129 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural statist Improvements in agricultural | dition | d riv | ncipal | trop | | 124 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 128 129 129 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupation Christian missions General agricultural con Chief agricultural statist Improvements in agricul Cattle, ponies, and shee | dition | d riv | er syst | crop | | 124 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 128 129 129 129 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupation Christian missions General agricultural con Chief agricultural statist Improvements in agricul Cattle, ponies, and shee Irrigation | dition | d riv | er syst | crop | が、一般のない。 | 124 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 128 129 129 129 130 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupation Christian missions General agricultural con Chief agricultural statist Improvements in agricul Cattle, ponies, and shee Irrigation Minerals | dition | d rive | ncipal | crop | | 114 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 128 129 129 129 130 130 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupation Christian missions General agricultural con Chief agricultural statist Improvements in agricul Cattle, ponies, and shee Irrigation Minerals Arts and manufactures | dition ics an | d rive | ncipal | crop | | 114 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 128 129 129 129 130 130 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupation Christian missions General agricultural con Chief agricultural statist Improvements in agricul Cattle, ponies, and shee Irrigation Minerals Arts and manufactures Commerce | dition ics an itural | d rive | ncipal | crop | | 114 | 124 125 125 125 125 125 127 127 128 128 129 129 129 130 130 |
| Boundaries, configuration Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupation Christian missions General agricultural con Chief agricultural statist Improvements in agricul Cattle, ponies, and shee Irrigation Minerals Arts and manufactures | dition ics an itural | d rive | ncipal | crop | | 114 | 124 125 125 125 125 127 127 128 128 129 129 129 130 130 130 |

| | | | | | | | | | | PAGE |
|-----|--|--|--|--------------------------|-------|----------|-------|--|--|--|
| | District staff | | | | Car. | - | | 100 | | 131 |
| | Civil justice a | | | | 14 | | | 140 | | 131 |
| | Land revenue | | | | 53 | | | | | 131 |
| | Local self-gov | | | Marien I | | | - 2 | 12 | | 131 |
| | Police and jai | | 7 | | 8 | - 3 | 7 | 72 | | 132 |
| | Education | | | | - | | - 2 | - | | 132 |
| | Hospitals and | | | | 3 | | - 21 | - | - 10 | |
| | Vaccination | | HMMM | | | - 2 | | 104 | | 133 |
| | Bibliography | | | (0) | - | | (1) | | 4 | 133 |
| 1.1 | BENARES TANSI | | | - | 28 | - 5 | . 11 | 1911 | .5 | 133 |
| | GANGAPUR . | | | 2.5 | 1.0 | - 2 | | 12 | - 1 | 133 |
| | | | 3 | 7.1 | 2 | | 2 | 12 | - 2 | 133 |
| | CHANDAULI | | | 5 | 3 | * | - | 4 | | 134 |
| | BENARES ESTAT | | | | 4 | - 4 | 41 | 1.2 | - 1 | 100 |
| Ű4 | BENARES CITY | | - | - | 14 | | - | - | 130 | -141 |
| | A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH | 74 | ě | 41 | - 4 | - 4 | - 61 | 25 | | 136 |
| 97 | Description | | 101 | +(| 9 | | | - | | +37 |
| | Buildings | 19 | 10. | 10 | | | 6 | | | 138 |
| | Municipality | 12 | 2 | 57 | 12 | | 1 | - | | 139 |
| | Cantonment | | | | LT | .70 | | | | 140 |
| | Trade and ma | mufac | ture | # E | 9 | | - | - | - | 140 |
| | Education | 4 | 7 | | 14 | (A) | - 31 | 0 | - 2 | 140 |
| - 3 | RAMNAGAR | | | | | | | | | 100.000 |
| В | NAMEAGAS | 14 | 8 | 100 | | * | 100 | - 4 | | 141 |
| 1 | SARNATH | (A | | - 63 | (4 | ě | - | 9 | | 141 |
| 1 | Särnäth nzäpur Distri | cr | 2 | 10 | (4 | | E | 10 | 142 | |
| 1 | SARNATH | cr | 2 | 10 | (4 | | E | 10 | 142 | 141 |
| 1 | SÄRNÄTH . RZÄPUR DISTRI Boundaries, co Geology . | cr onfigi | inatio | on, and | i hi | l and | river | syster | 142 | 141 -158 |
| 1 | SÄRNÄTH . RZÄPUR DISTRI Boundaries, co Geology . | cr onfigu | iratic | on, and | t hi | l and | river | syster | 142 118 - | 141 -158 142 143 |
| 1 | SÄRNÄTH . RZÄPUR DISTRI Boundaries, co Geology . Botany . | cr onfigu | iratio | on, and | i hi | l and | river | system | 142 114. | 141 -158 142 143 143 |
| 1 | SARNATH BILLIANUS DISTRICT BOUNDARIES, CO Geology . Botany . Fauna . | cr onfigu | iratio | on, and | t hi | l and | river | system | 142 114 | 141 -158 142 143 144 |
| 1 | Boundaries, co Geology . Botany . Fauna . Climate and to | empe | matic | on, and | t hi | l and | river | system | 142 114 | 141 -158 142 143 144 144 |
| 1 | SARNATH BZAPUR DISTRI BOUNDARIES, CO GEOLOGY BOUND Fauna Climate and to Rainfall | cr onfigu | inatio | on, and | t hii | l and | river | system | 142 118. | 141 -158 142 143 144 144 |
| 1 | SARNATH BZAPUR DISTRIC BOUNDARIES, CO Geology Botany Fauna Climate and to Rainfall History | cr onfigu | matic | on, and | t hi | l and | diver | system | 142 118. | 141 -158 142 143 144 144 144 |
| 1 | Boundaries, or Geology Botany Fauna Climate and to Rainfall History Archaeology | cr onfigu | ratur | on, and | t hil | l and | river | system | 142 118. | 141 -158 142 143 144 144 144 144 144 |
| 1 | BOUNDARY BOUNDARY BOUNDARY BOUNDARY FAUNA Climate and to Rainfall History 'Archaeology The people | cr omfigs empe | matic | on, and | t hii | ll and | diver | system | 142 118. | 141 -158 142 143 144 144 144 144 146 |
| 1 | Boundaries, or Geology Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . 'Archaeology The people Castes and occ | cronfigu | ratur | m, and | i hii | ll and | river | system | 142 108 v. | 141 -158 142 143 144 144 144 144 146 146 |
| 1 | Boundaries, or Geology Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and our Christian miss | cr onfigu | ratur | on, and | t hi | ll and | river | system | 142 116 - | 141 -158 142 143 144 144 144 144 146 146 147 |
| 1 | BOUNDATE BOUNDATES, CO GEOLOGY BOUNDATE FAUNA Climate and to Rainfall History Archaeology The people Castes and occ Christian miss General agricu | cr omfign emper cupat ions dtural | ratur ions | on, and | t hi | ll and | niver | ryster | 142 164 17 17 17 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 | 141 -158 142 143 144 144 144 144 146 146 147 147 |
| 1 | Boundaries, or Geology Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and our Christian miss General agriculture . | cr omfigu emper cupat ions oltural aral st | ratur ions con | on, and | i hi | ll and | diver | ryster | F42 | 141 -158 142 143 144 144 144 144 146 146 147 147 147 |
| 1 | BOUNDATH BOUNDATER BOUNDAT | emper cupat ions iltural iral st | ratur ions consatist | e ditionies and | i hii | ll and | dver | system of the second se | 1042 1042 1042 1042 1043 1044 1044 1044 1044 1044 1044 1044 | 141 -158 143 144 144 144 146 146 147 147 147 148 148 |
| 1 | BOUNDATH BOUNDATES BOUNDATES GEOLOGY BOUNDATE FAUNA Climate and to Rainfall History 'Archaeology The people Castes and oct Christian miss General agricu Chief agricultu Improvements Cattle, pomies, | cr configurations and and and | ratur ions cons cons shee | e ditionics and itural p | i hi | ll and i | river | cyster - | 1042 1042 1042 1042 1043 1044 1044 1044 1044 1044 1044 1044 | 141 -158 142 143 144 144 144 146 147 147 147 148 148 148 |
| 1 | SARNATH BEZAPUR DISTRIN BOUNDAINS, CO GEOLOGY BOUNDY FAUNA Climate and to Rainfall History Archaeology The people Castes and oct Christian miss General agricu Chief agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation. | configurations in against and | iratic | e dition | I hi | ll and | crop | system of the sy | 1042 1042 1042 1043 1044 1044 1044 1044 1044 1044 1044 | 141 143 143 144 144 144 146 147 147 147 148 148 148 148 |
| 1 | BOUNDATH BOUNDATES FAUNDATES CATTER BOUNDATES CATTER CATTER CATTER LITTREATES LITTREAT | configurations in against and | ratur ions cons cons atist | e dition | i hi | ll and | crop | typiter of the second s | THE STATE OF STREET | 141 -158 142 143 144 144 144 146 147 147 147 148 148 148 148 149 149 |
| 1 | SARNATH BEZAPUR DISTRIP BOUNDAINES, CO Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and oct Christian miss General agricu Chief agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation . Minerals . Arts and manu | ccr configurations ccupat in ag and | ratur ions con atist rricu | e ditionics and itural p | i hii | ll and | crop | tyster of the second se | THE STATE OF STREET | 141 -158 142 143 144 144 144 146 147 147 147 148 148 148 149 149 |
| 1 | SARNATH BEZAPUR DISTRIP BOUNDAINES, CO Geology . Botany . Fauna . Climate and to Rainfall . History . Archaeology The people Castes and oct Christian miss General agricu Chief agricultu Improvements Cattle, ponies, Irrigation . Minerals . Arts and manu | ccr configurations ccupat in ag and | ratur ions con atist rricu shee | e ditionics and itural p | i hii | ll and | crop | tyster of the second se | THE STATE OF STREET | 141 -158 142 143 144 144 144 146 147 147 147 148 148 148 148 149 149 |

| | | | | | | | PAGE |
|--|--------|--------|--------|--------|------|-------|------|
| Famine | | | W | 12 | 74 | - | 150 |
| District staff | | 8 | 2 | 141 | * | ě | 150 |
| Civil justice and crime | 100 | 27 | ¥ | 7 | 18 | (4) | 151 |
| Land revenue administra | tion | 20 | × | 15 |)+ | 181 | 151 |
| Local self-government | 15 | TA. | - | | 3 | | 152 |
| Police and jails | 0.0 | 10 | | 100 | 14 | | 152 |
| Education | 10.0 | | | | 25 | | 151 |
| Hospitals and dispensaria | Es . | | | | | 9 | 152 |
| Vaccination | | | - | | | 12 | 152 |
| Bibliography | | | 2 | 10 | 72 | 14 | 152 |
| MIRZĀPUR TAHSIL | | 9 | 1 | 47 | 4 | .52 | 152 |
| CHUNĂR TAHSIL . | 3 | 74 | 1 | 1 | 26.1 | (4 | 153 |
| ROBERTSGANJ | 1 | 24 | - | 183 | (0) | | 153 |
| Ковн (от Вилдоні) | 60 | 161 | | | 107 | - | 154 |
| CHARIA | 41 | 110 | | Y | 10 | 12 | 154 |
| AHRAURĀ | ** | 32 | | | | | 175 |
| CHUNĂR TOWN | | | | | | | 155 |
| MIRZAFUR CITY | | 115 | 17 | | - | - A . | 156 |
| TAUNPUR DISTRICT | | | 3. | | - 27 | 158 | -174 |
| Boundaries, configuration | n, and | I rive | ar sys | tem | 8 | HIL | 158 |
| Geology | 7 | 161 | 16 | | 7 | 14 | 159 |
| Botany | 6 | 187 | 7.0 | 0 | 10 | | 159 |
| The state of the s | 5 | 77 | - 14 | 1.0 | 9.7 | 11 | 159 |
| Climate and temperature | 150 | 45 | - | | 91 | 33 | 139 |
| Rainfall . | | | | | 40 | 107 | 159 |
| History | | | | - 10 | +: | 191 | 159 |
| Archaeology | | | - 1 | | 7 | 141 | 160 |
| The people | 181 | | | | | 100 | 162 |
| Castes and occupations | | | - 74 | - 0 | - 2 | 12/ | 163 |
| Christian missions | | 22 | 2. | 3 | - 6 | . 17 | 103 |
| General agricultural con | dition | 187 | 78 | | 27 | 15 | 163 |
| Chief agricultural statist | ics an | d pr | incip | at cro | pe c | 6 | 163 |
| Improvements in agricul | tural | prac | tice: | - 14 | 100 | - | 164 |
| Cattle, ponies, sheep, an | d go | its | 0.1 | 10 | 91 | 10 | 164 |
| Irrigation | | 6 | 385 | 12 | | 100 | 164 |
| Minerals . | | 10 | 18 | 12 | | 51 | 165 |
| Arts and manufactures | | | - 6 | 12 | | - | 165 |
| Commerce | | | | - | - | | 165 |
| Railways and roads . | | 2 | - 10 | - 9 | 0 | - | 165 |
| Famine . | 9 | - | 1.3 | - 4 | - 22 | 21 | 165 |
| District staff | 3 | 100 | | 12 | 100 | 17 | 166 |
| Civil justice and crime | 10 | - | - | - 3 | | 47 | 166 |
| Land revenue administra | ation. | 1 2 | - 60 | -4 | | *1 | 166 |
| Local self-government | 122 | - | . 6 | - | | | 167 |

| TABLE O. | F CO. | NIE | NE | 8 | | 3 | ст |
|---|--------------------|-------|-------|--------|------|-------|-------|
| | | | | | - | | ATTE: |
| Police and jails . | | | 10 1 | 4 | | | 67 |
| Education | | | H | | | . 1 | 67 |
| Hospitals and dispensarie | \$ | | | | 2 | 1 1 | 67 |
| Vaccination | | | 2 1 | 21 | 4 | 0 1 | 0.6 |
| Bildiagraphy | | | | 23 | | E 3 | 168 |
| Bibli-graphy | | | 2 10 | 13 | | . 1 | 168 |
| MARIAHU | | i | S | | | . 1 | 168 |
| MACHHLISHAHR TAHSIL | | | iai | P. | | 111 3 | 168 |
| Кийтанан . | | | | | | _ 3 | 169 |
| KIRAKAT | * 1 | | | | | 2 1 | 169 |
| JAUNPUR CITY | ** -7 | | | 2 | 6 | 10 3 | 170 |
| Macuniferant Town | | | 1 | 7 | V | 9 1 | 172 |
| Machilishahr Town Mongra-Badshahpur | 20 1 | | - | 9 | |) a | 173 |
| SHAHGANI | | | | | | 19 | 173 |
| SHARGAS) | 2 | | | | | | |
| ZAFARĀBĀD | Ž. | - | | * | | 174- | 187 |
| Boundaries, configuration | n. and | rive | syst | em | | | 174 |
| Boundaries, comgulation | est missie | | | 2111 | 0 | 6 | 175 |
| Geology | 17 | | | | 7 | 1 | 175 |
| Botany | | | | | | | 175 |
| Fauna | | | - | | | | 175 |
| Climate and temperatur Rainfall . | | | | | - | | |
| Ramaii | | - | | 000 | 0 | 42 | 175 |
| History | | | - | | | | |
| Archaeology - The people - | - | * | ** | 37 | -0 | | 177 |
| The people | 5.4 | ٠. | -" | MO | - | -31 | 178 |
| Castes and occupations | 197 | 18 | 7 | - 3 | | | 178 |
| Christian missions | on the same | | - 8 | 3 | 111 | | 179 |
| General agricultural cor Chief agricultural statis | MANUOR. | 1 | neins | 1 eron | er. | - | |
| Improvements in agricu | ties an | orner | rice | | | | 179 |
| Improvements in agricu | HUHAI | praci | HCC. | ** | | | 180 |
| Cattle, ponies, and sho | cp. | - | | | | - | |
| Irrigation | ** | (4) | | 8 | | 17 | 180 |
| Minerals | · " , | 100 | | | | - | 180 |
| Arts and manufactures | | 100 | | - 4 | - 1 | - 8- | 180 |
| Commerce | | - | 1 | - 8 | - | | |
| Railways and roads . | | | . S., | 14 | - | - 24 | 181 |
| Famine | | 73 | - | | | | 181 |
| District staff | . 8 | - 6 | - | /4 | | | 181 |
| Civil justice and crime | | | - | | | 5.0 | 182 |
| T maked managements in the 197177171 | THE REAL PROPERTY. | | | - | | | |
| Local self-government | - 24 | | *1 | - (4 | 10 | . 10 | 180 |
| Police and jails | - 4 | | . 1 | 131 | - | | 183 |
| Education | 100 | - 25 | | -170 | - 1 | | 181 |
| Linearizate and dispers | aries: | 1.00 | - | - 6 | - 10 | - 4 | 203 |

| | | | | | | | FXGE |
|--|--------|-----------|------|------|-----|-------|-----------|
| Vaccination . | | | 1.9 | | 40 | | 183 |
| Bibliography . | | | 100 | 1+1 | +1 | 5411 | 183 |
| GHAZIPUR TARRIL | | | | | | | 183 |
| MUHAMMADĀBĀD TAS | uir. | | | | | | 184 |
| ZAMĀNIA TAHSĪL | | | - 6 | ã | 20 | 2 | 184 |
| SAIDPUR TARSIL. | | | 7.4 | 7 | A | 14 | 184 |
| BARA | 1 3 | | - 5 | | 47 | 22.1 | 185 |
| | | | - 54 | 12 | 10 | 201 | 185 |
| | | 5 (100.0) | 12 | - | | - | . 185 |
| MUHAMMADABAD TOW | N . | | | - | 100 | | 187 |
| SAIDPUR TOWN . | | | | | | | 187 |
| ZAMĀNIA TOWN . | | | | | | - | 187 |
| BALLIA DISTRICT . | | 1.00 | | - | | 188 | -200 |
| Boundaries, configur | ation, | | | | 100 | 10000 | 188 |
| Geology . | | | | | | 8 | 188 |
| Botany | | | - 12 | - 5 | - 5 | | 188 |
| Fauna - | | | | | - | 4 | 188 |
| Climate and tempera | | | 14 | - | 25 | | 189 |
| Rainfall | | 100 | | | 100 | | 189 |
| History and archaeo | logy . | 100 | - | | | | 189 |
| The people . | | | | | 2.0 | | 189 |
| Castes and occupation | ons . | | | | 100 | | 190 |
| Christian missions | | | | - | | | 190 |
| General agricultural | | | - 2 | . 8 | | 14 | 190 |
| Chief agricultural sta | | | | | | | rut |
| Improvements in agr | | | | | | | 101 |
| Cattle, ponies, and s | | | | | 223 | | 191 |
| Irrigation . | | | | | 140 | | 192 |
| Minerals . | | | | | 740 | - | 192 |
| Arts and manufactur | | | | | - | | 192 |
| Commerce . | | | | | 100 | - 17 | 192 |
| Railways and roads | | | | 70 | 27 | | 193 |
| | | | | - 21 | | - 0 | 193 |
| Famine | | | - 8 | - " | | | 193 |
| Civil justice and crin | | | - 8 | - 5 | | | 193 |
| Land revenue admin | | | - 0 | -8 | - 1 | - | 193 |
| Local self-governmen | | | | | | - | 194 |
| Police and jails | | | | | | 9 | 194 |
| Education . | 7 7 4 | - 14 | - 0 | | | ĵ. | 195 |
| Hospitals and dispen | | | - | | ď. | 1 | 195 |
| Vaccination | | | | | 10 | | Section 1 |
| Market Service Control of the Contro | | | ** | - | | - 9 | 195 |
| | 6 6 | | * | - 17 | 19 | * | 195 |
| DALLIA TARSEL | | | 21 | 1.87 | 10 | | 195 |
| | | | | | | | |

XY

| | | | | | | | | 9 | PAGE |
|-----------|--|-------------------|----------|--------|-------|-----|------|------|------|
| BANSDIN T | AHSIL. | 30 | E) (| 4 | ž. | 5 | | | 196 |
| BAIRIA | 100 00 | | 10 0 | | | | 15 | 8 | 196 |
| BALLIA TO | www. | | | | - | 8 | - 4 | | 197 |
| BANSDIH T | Fown . | Ų.,, | 8 3 | 3 | a . | 20 | 141 | 3 | 197 |
| BHALSPNE | (or BHAR | SAND) | | | W. | 21 | 15 | 4 | 197 |
| Cuir Fire | | 4 | W 1 | | 4 | 4 | 0.00 | | 198 |
| HALDI | 1 3 | 4 | 4 | | | EC | - | (8) | 198 |
| MANIAR | 2 4 | i. | | | * | 0 | 540 | - | 198 |
| NARHI | 4 4 | | | 4 | 4 | | | | 198 |
| RASEA TO | | | *1 | 4 | | | | 11 | 198 |
| | W 191 | | | | | 14 | 36 | 8 | 199 |
| SAHATWAI | | | 2 3 | | 0 | 2 | - 21 | 32 | 199 |
| SIKANDAR | | | 2 5 | | | ē. | 195 | 5 | 199 |
| GORAKHPUR | | | * : | G.1 | 9 | 2 | | 201 | 244 |
| GORAKHPUR | | - | v : | 60 | 1.0 | | 100 | 202 | -220 |
| | ries, config | | | 77 | | | | | 202 |
| Geology | | | 7 | 0.0 | N. | ** | | | 203 |
| | | | | | | | - | | 203 |
| Botany | | 29 | | - | | | | ě. | 203 |
| Fauna | | d. | 1 | | /7 | 7. | | 3 | 203 |
| | and tempe | | | | 2 | 8 | - 8 | | 203 |
| 20000000 | 6 20 | | 2 | 2 | | | | | 203 |
| History | | 18 | Ŧ | | - | 4 | * | - | 204 |
| | ology . | | 8 | 2 | 4 | - | * | 14 | - |
| | ople . | - | 2 | 47 | - | - | 4) | 4 | 205 |
| | unif occupa | | (4) | 41 | 9 | - | | 19 | 200 |
| | n missions | | | * | | 1 | 11 | 2 | 205 |
| General | agricultur | al con | ditions | e: | S.,, | | | 25.1 | 206 |
| Chief a | gricultural | statist | ics and | pon | cipal | cro | ps - | 2 | 200 |
| Improv | ements in a | gricu | ltural p | practi | ce | * | 9. | - 40 | 207 |
| Cattle, | ponies, and | shee | P | 77 | | 3 | - 2 | 161 | 207 |
| Irrigatio | ALCOHOL: A CONTRACTOR OF THE PERSON OF THE P | 171 | | \$ | 0 | 14 | | | 207 |
| Forests | | | 9 | 20 | 160 | S | - 21 | 195 | 208 |
| Mineral | a | 1/2/ | 8 | | 35 | 114 | | 100 | 208 |
| Arts an | d manufact | nures | 74 | | 0.0 | | | 51 | 208 |
| | erce . | 161 | 14 | | 22 | (4 | - 1 | - | 208 |
| Railway | ys and road | 5 | 19 | | 12 | 1+ | | | 209 |
| | 2 . | | | | - | | | | 209 |
| | aubdivisio | | | | | | TA . | 47 | 210 |
| | stice and c | | | | - | 14 | - | +1 | 210 |
| Land | evenue adn | vinistr | ation | Ž. | | 4 | 4 | 47 | 310 |
| Localia | elf-governn | tent | | | 22 | 10 | - | | 211 |
| | and jails | | | | | - | 1 | | 211 |
| Educat | | 1 | | | | 4 | - 4 | | 211 |
| | als and dis | | | - 2 | | - | | 4 | 212 |
| 2x0spitt | medi-Marrie tally | ELECTRONIC STREET | | 1.7 | I | 1.4 | | | |

| | | | | | | | | | | PAGE |
|---|--|--------|-------|--------|-------|------|------|-------|-----|------|
| | Vaccination | 6 | | 14 | 16 | 41 | 100 | 14 | | 212 |
| | Bibliography | | - | 9 | 9 | 41 | | 19 | | 212 |
| | BANSCAON TAB | SIL | | a i | × | 45 | | 10 | - | 212 |
| | MAHABAJGANI | | 10 | | v | | 0 | 79 | ь. | 213 |
| | PADRAUNA TAI | | | | | 4.) | -4 | 10.00 | | 213 |
| | HĀTĀ . | | | | - 0 | | | | | 213 |
| | DEORIA TARSIT | | -1 | 74 | | | | | | 214 |
| | GORAKHPUR TA | | | | | | | 4 | | 214 |
| | THE RESERVE OF THE PARTY OF THE | | - | | 2 | 100 | No. | 12 | 1 | 215 |
| | DEGRIA SUBDIV | | 1 | 1 | 4 | 11 | 191 | | 6 | 215 |
| | Тамконі . | | 8 | 9 | 9 | *1 | NIT. | 6 | | 215 |
| | The same and the same and | | 41 | 14 | 9 | 3) | 00.5 | | | 216 |
| | BANSGAON TOW | ZN. | | | 141 | *1 | 160 | | wi | #16 |
| | BANSGAWA . | | | | | | 200 | | | 216 |
| | BARHAJ . | | *1 | | | ** | 181 | | | 216 |
| | BARHALGANI | | +1 | | | 7 | | , | | 217 |
| | GAURA . | | 1 | | | - | | 10 | - | 217 |
| | Gola | | | | 8 | 2 | 3 | 8 | 0 | 217 |
| | GORAKHPUR CI | | 8 | 9 | 3 | al . | 8 | | | 317 |
| | LAR | | 3 | | 12 | - | | | 20 | 219 |
| | NICHLAUL . | ē | - | | 14 | 21 | 14 | | | 210 |
| | PADRAUNA TOV | | 161 | TA . | | - | | | *11 | 201 |
| | | 43 | | | | | | | 61 | 210 |
| | RÜDARPUR . | | F | | ¥ | | | | | 219 |
| | SALEMPUR-MAJ | | | | | | | | - | 220 |
| B | ASTI DISTRICT | | | | | | | ~ | | -230 |
| Ĭ | Boundaries, c | onfigu | ratio | n, and | river | syst | | | | 220 |
| | Geology . | | | | | | | | | 221 |
| | Botany - | | | | ě. | | 8 - | | | |
| | Fauna . | 7 | | | - | | 19 | 9 | | 221 |
| | Climate and | | | | | | 19 | | 41 | 221 |
| | | | | | | | | | | 221 |
| | History | | | | | | | | | 221 |
| | Archaeology | | | | | | | | Y | 222 |
| | The people | | | | | | | | | 222 |
| | Castes and oc | | | | | | 10 | 171 | 41 | 222 |
| | Christian mis | | | | | | | , | | 223 |
| | General agric | | | | | | | | | 225 |
| | Chief agricult | | | | | | | | | 223 |
| | Improvement | | | | | | | | | 224 |
| | Cattle, ponies | | | | | | | | | 224 |
| | Irrigation. | | | | | | 4 | | | 224 |
| | Minerals | * | , | į. | | | | | | 225 |
| | Arreand man | | | | | | | | | 202 |
| | | | | | | | | | | |

| | TABI | E = 0 | $F \in \mathcal{C}$ | ON | TEN | TS | | | XVII |
|--|--|--|---|---------------------------------------|-----------------|------|---|---|--|
| | | | | | | | | | PAGE |
| Commerce | 78 | | | :4 | | *1 | | | 275 |
| Railways and | | | | | | 100 | 14 | | 225 |
| Famine . | | | | | | | | | 326 |
| District staff | 18 | | | | | | 3 | - 25 | 226 |
| Civil Justice a | | me | | | - 6 | -31 | | 12 | 226 |
| Land revenue | | | | | Α. | II | | - 1 | 226 |
| Local self-gov | | | | | | 11 | | 14 | 227 |
| Police and in | | ÷ | | | | 11 | | | 227 |
| Education | | | - | | • | | | | 227 |
| | | | | 125 | | | | - 2 | 227 |
| Hospitals and | | | | 3 | | 1 | | 1 | 227 |
| Vaccination | | 2 | 20 | | 1 | 11 | 500 | - 2 | 227 |
| Bibliography | | (8) | 11 | 12 | 1 | - 55 | | | 228 |
| DOMARIAGANI | 17 | 7 | 2 | | -81 | | | 14 | 228 |
| Bānsi . | 3 | 8 | 8 | - | | - 4 | 14 | | |
| HARAIYÄ . | 9 | | A | ~ | 4 | 12 | 24 | - 2 | 228 |
| BASTI TARSIL | 10 | 1 | | .4 | | 45 | 1.9 | | 229 |
| KHALILABAD | 14 | × | 8 | 0 | 146 | 11 | 58 | 0. | 225 |
| BASTI TOWN | 54 | .0. | 0.1 | (€ | 33 | - 5 | 187 | - 10 | 229 |
| . IAGHAR . | 73 | 15 | 83 | - | 3. | | (3) | 2 | 230 |
| MEHNDAWAL | | | | | | - | 72 | - | 230 |
| Uskā | | | | 4 | 19 | 22 | 14 | 72 | 230 |
| | | | | | | | | | |
| AMMGARII DISTR | ICT. | | 2 | -30 | 0 | | 18 | 233 | -244 |
| | | | n, an | d rive | | | 101 | 233 | 231 |
| Boundaries, o | onfigu | ratio | | d rive | | | 181 | | |
| Boundaries, o Geology | onfigi | ratio | n, an | | er sys | tem | (4) (4) (4) | | 231 |
| Boundaries, of Geology . Botany . | configu | ratio | 4 | 14 | er sys | tem | (a) (a) (a) | 19 | 231 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . | configu | ratio | # H | 14 | er sys | tem | (a) (a) (a) (b) (b) | 19 | 231 231 231 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and | temper | ratio | # # # # # # # # # # # # # # # # # # # | 14 | er sys | tem | (6) (6) (6) (6) | 19 | 231 231 231 231 232 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and t Rainfall . | temper | ration | #1 #1 #5 #1 | 14 14 14 14 14 | er sys | tem | 1911年 | | 231 231 231 231 232 232 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and t Rainfall . History . | temper | rature | | 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 | er sys | tem | 日本の日本 次の | 10 8 8 8 8 805 | 231 231 231 231 232 232 232 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and t Rainfall . History . Archaeology | temper | rature | 1 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | 14 14 14 14 14 | er sys | tem | 1911年 | F 1 5 5 1 5 1 5 1 5 1 | 231 231 231 231 232 232 232 233 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and the Rainfall . History . Archaeology The people | temper | rature | 1 | * * * * * * * | er sys | tem | 日本の日本 次の | 0 8 8 8 8 8 8 7 8 8 | 231 231 231 231 232 232 232 233 233 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and Rainfall . History . Archaeology The people Castes and or | temper | rature | | * * * * * * * * * * | er sys | tem | 明明在京中大學原出日 | 2 2 2 2 5 2 5 2 5 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 231 231 231 231 232 232 232 233 233 234 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and the Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis | temper | rature | 作 1 | * * * * * * * * * * | er sys | tem | 国 · 日 · 日 · 日 · 日 · 日 · 日 · 日 · 日 · 日 · | 0 8 8 8 8 8 8 7 8 8 | 231 231 231 232 232 232 233 233 234 234 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and the Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agric | temper coupat sions | rature | litio | | er sys | tem | 祖司 医安全 医食品 祖 日 田 | 2 2 2 2 5 2 5 2 5 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 231 231 231 232 232 232 233 234 234 234 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and the Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agricult | temper ceupat sions ultural | rature ions i concentisti | lition | ns . | ncipa | tem | 国民 医医生 医食品 居 五 日 多 | 2 2 2 2 5 2 5 2 5 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 231 231 231 232 232 232 233 234 234 234 234 234 234 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agricult Improvement | temper cupat sions ultural tural sits in a | rature ions concentiati | lition cs ar | ns nd pri pract | ncipa | tem | 国民 医医生 医食品 居 五 日 多 | 2 2 2 2 5 2 5 2 5 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | 231 231 231 232 232 232 233 234 234 234 234 235 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agric Chief agricult Improvement Cattle, ponies | temper temper sions ultural tural sis in as | rature ions concentration | lition cs ar tural | ns nd pri pract | er sys | tem | 国民 医医生 医食品 居 五 日 多 | | 231 231 231 232 232 232 233 234 234 234 234 235 235 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and ! Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agric Chief agricult Improvement Cattle, ponies Irrigation | temper temper sions ultural tural si is in as | rature ions concentration | lition cs ar | ns nd pri pract | er sys | tem | 日日日日日 日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日日 | THE R. P. P. LEWIS CO. P. | 231 231 231 232 232 232 233 234 234 234 234 235 235 235 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and the Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agric Chief agricult Improvement Cattle, ponies Irrigation Minerals . | temper temper sions ultural tural si is in as | rature ions t constantiti | dition cs artural | ns nd pri pract | anneipa nice | tem | 祖司法法法司祖司司法法司司 | | 231 231 231 232 232 232 233 234 234 234 234 235 235 235 236 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and ! Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agric Chief agricult Improvement Cattle, ponies Irrigation | temper temper sions ultural tural si is in as | rature ions t constantiti | dition cs artural | ns nd pri pract | ncipa | tem | 祖司 医医生物病 田田 田田 日本 | THE R. P. P. LEWIS CO. P. | 231 231 231 232 232 233 233 234 234 234 234 235 235 235 236 236 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and . Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agric Chief agricult Improvement Cattle, ponies Irrigation Minerals . Arts and man Commerce | temper temper temper temper torial si torial si ts in as | ature ions i concatisti gricult | dition cs artural | ns nd pri pract | anneipa nice | tem | 祖司法法法司祖司司法法司司 | | 231 231 231 232 232 233 233 234 234 234 235 235 235 236 236 236 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and the Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agricult Improvement Cattle, ponies Irrigation Minerals . Arts and man | temper temper temper temper torial si torial si ts in as | ature ions i concatisti gricult | dition cs artural | ns nd pri pract | anneipa nice | tem | 祖司 医医生物病 田田 田田 日本 | | 231 231 232 232 232 233 233 234 234 234 235 235 235 236 236 236 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and . Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agric Chief agricult Improvement Cattle, ponies Irrigation Minerals . Arts and man Commerce | temper temper sions ultural si in aq s, and | rature concatistical critical sheep | dition cs artural | ns nd pri pract | ncipa | tem | 祖司 医医生物病 田田 田田 日本 | | 231 231 232 232 232 233 233 234 234 234 235 235 235 236 236 236 236 236 |
| Boundaries, of Geology . Botany . Fauna . Climate and the Rainfall . History . Archaeology The people Castes and of Christian mis General agric Chief agricult Improvement Cattle, ponies Irrigation Minerals . Arts and man Commerce Railways and | temper temper sions ultural si in aq s, and | rature concatisti gricult | difficiences are trural | ns and pri | ncipa | tem | 祖司 医医生物病 田田 田田 日本 | | 231 231 232 232 232 233 233 234 234 234 235 235 235 236 236 236 |

| | | | | | | | TAGE |
|------|--|--|---------|-------|--------|-------------|--|
| | Civil justice and crime | | 1122 | 10 | | | 237 |
| | Land revenue administrat | ion . | 541 | | | | 990 |
| | | | | | | | |
| | | 3 3 | | | - | | 239 |
| | 19 3 | | | | | | 239 |
| | Hospitals and dispensaries | | | | | | 239 |
| | A STATE OF THE STA | | | | - | 200 | |
| | Dilillananish | | | | - 2 | | 239 |
| | DEGGAON | | | | | | 239 |
| | AZAMGARH TAHSIL | | | | - 60 | 24 | 239 |
| | Militar | | - 37 | | | - 54 | 240 |
| | Same | 1.0 | - 3 | -5 | | - 1 | 240 |
| | Mercer Server on The Pain Williams | | | | 100 | 19 | 240 |
| 1 | 44 | | | 7.7 | - 50 | 20 | 200 |
| A.R. | Azamgarh Town | | | - 53 | 12.0 | | 241 |
| | The Contract of the Contract o | 74 | - 12 | 2 | 0.3 | | 10.10 |
| | | 14 | - 100 | 4 | 241 | II. | 242 |
| | | | 4 | 41 | 12/ | | 243 |
| | Mau | 9 | | 40 | 34 | 100 | 243 |
| | MUBARAKPUR | 29 | | | 70. | - 92 | 244 |
| | MUHAMMADARAD TOWN . | | 10 | (4) | | (8) | 244 |
| KI | MAUN DIVISION | | 3-1 | 100 | 14 | 2.45 | -290 |
| | | | | | | | |
| N, | UNI TAL DISTRICT | | | 1,92 | | 246 | -262 |
| N | Boundaries, configuration, a | | l and | river | | 246 | -262 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology | and hil | l and | river | yster | 246 ns. | -263 246 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany | and hil | l and | river | yster | 746 ns. | -263 246 247 |
| N. | Boundaries, configuration, a Geology . Botany | and hil | l and | river | yster | 246 ns. | -263 246 247 248 |
| N. | Boundaries, configuration, a Geology . Botany . Fauna | and hil | l and | river | yster | 246 05. | -263 246 247 248 248 |
| N. | Boundaries, configuration, a Geology . Botany . Fauna . Climate and temperature . | and hil | l and | river | yster | 246 ns . | -263 246 247 248 248 248 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall | and hil | l and | river | yster | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology | and hil | l and | river | yster | #46 | 246 246 247 248 248 248 248 248 248 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people | and hil | l and | river | yster | #46 | 246 247 248 248 248 248 248 248 248 250 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people | and hil | l and | river | yster | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 248 248 250 250 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occurations | and hil | ll and | river | yster | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 248 250 250 251 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions | and hil | ll and | river | system | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 248 250 251 251 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi | and hil | ll and | river | yster | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 248 250 251 251 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Cluristian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics is | ons, | il and | river | yster | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 250 250 251 251 251 |
| N | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics i Improvements in agricultural | ons, | incipal | crop | yster | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 248 250 251 251 |
| Z | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics a Improvements in agricultura Cattle, ponies, and sheep | ons, | incipal | crop | yster | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 250 250 251 251 251 |
| Z | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics a Improvements in agricultura Cattle, ponies, and sheep Irrigation | ons, and prac | incipal | crop | yster | 246 | -263 246 247 248 248 248 248 250 250 251 251 252 253 |
| Z | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics a Improvements in agricultural Cattle, ponies, and sheep Irrigation Forests | ons, and practice of the second practice of t | incipal | crop | yster | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 250 251 251 251 252 253 253 253 |
| Z | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics a Improvements in agricultura Cattle, ponies, and sheep Irrigation Forests Minerals | ons, and prac | incipal | crop | system | #46 | -263 246 247 248 248 248 248 250 250 251 251 252 253 |
| 7 | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics a Improvements in agricultura Cattle, ponies, and sheep Irrigation Forests Minerals Arts and manufactures | ons, and practice of the contract of the contr | incipal | crop | yster | 246 | -263 246 247 248 248 248 248 250 251 251 251 252 253 253 253 |
| 7 | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics a Improvements in agricultura Cattle, ponies, and sheep Irrigation Forests Minerals Arts and manufactures Commerce | ons, and prac | incipal | crop | yster | 246 | -263 246 247 248 248 248 248 250 250 251 251 251 253 253 253 254 |
| 7 | Boundaries, configuration, a Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditi Chief agricultural statistics a Improvements in agricultura Cattle, ponies, and sheep Irrigation Forests Minerals Arts and manufactures | ons, and practile | incipal | crop | yster | 246 | -263 246 247 248 248 248 248 250 250 251 251 253 253 253 254 254 254 |

| TABLE OF | CON | TEN | TS | | | XIX |
|--|--------|--------|---------|--------|-------|-------|
| The state of the s | | | | | | PAUL |
| District subdivisions and staff | | | 41 | .56 | ÷ | 255 |
| Civil justice and crime . | | 4 | A1 | - | - 6 | 255 |
| Land revenue administration | - | | *1 | 18 | | 255 |
| Local self-government | 19 | .5 | 20 | 12 | 3 | 257 |
| Police and jails | 2.4 | -8 | 1.5 | 23 | 77 | 257 |
| Education | | | 7.0 | | 9 | 257 |
| Hospitals and dispensaries | 3 | | | 9 | - 10 | 258 |
| Vaccination | 92 | -/2 | - 41 | | | 258 |
| Bibliography | - | ÷ | +/ | 13 | 32 | 258 |
| NAINI TAL TAHSIL | 100 | | 8 | 501 | | 258 |
| Bhābar | 0.1 | 1.0 | | | it | 258 |
| Käshipur Tahsil. | 100 | 2 | × . | 121 | 2 | 259 |
| TARAL. | 7.25 | 12 | 72.7 | 71 | 7.7 | 259 |
| GAGAR | 1.73 | 12 | | 100 | 15 | 259 |
| HALDWANI | - 8 | 3 | 8 | - | I. | 260 |
| - ARPUR | 100 | -32 | - 2 | 10 | 14 | 260 |
| Käshifur Town | 100 | 14 | ř. | P. | - 19 | 250 |
| Käthgodán | . 8 | -19 | | 15 | ** | 261 |
| MUKTESWAR . + - | (41) | - 28 | | 10 | | 261 |
| NAINI TAL TOWN | 0.5 | 09 | TX. | 135 | 22 | 202 |
| ALMORA DISTRICT | . 16 | 10 | | | 26 | 3-278 |
| Boundaries, configuration, an | d hill | and | river : | systee | 110 . | 263 |
| Geology | | | | 1 | | 264 |
| Botany | -13 | 10 | - 2 | - | -Va | 264 |
| Fauna | 127 | .5 | . 41 | 153 | 14 | 264 |
| Climate and temperature . | | 72 | 91 | 111 | -54 | 265 |
| Rainfall | 100 | - | 181 | | -)+ | 265 |
| History | 6 | 18 | - 9 | - 61 | 13 | 263 |
| *Archaeology The people | 10 | 15 | | 52 | 12 | 267 |
| The people | 157 | 12 | | | 17 | 267 |
| Castes and occupations - | | - | | - 8 | 9 | 268 |
| Christian missions | | - | - 3 | - 6 | | 268 |
| General agricultural conditio | ns . | , W., | | - 63 | - | 268 |
| Chief agricultural statistics ar | nd pri | incipa | i croj | 38 11 | - 5 | 268 |
| Improvements in agricultural | prac | tice | 140 | | - | 268 |
| Cattle, ponies, and sheep | 10 | | | - | 19 | 269 |
| Irrigation | 100 | 14 | | - | - | 269 |
| Forests - | | - | | | | 269 |
| Minerals | | - | | | | 269 |
| Arts and manufactures . | | | | - 2 | - 62 | 260 |
| | - 5 | G | 10 | 100 | G | 260 |
| Commerce | 3 | | 2 | | | 270 |
| Famine | 25 | | ~ | - | 110 | 270 |
| District subdivisions and stat | a i | 24 | | - 2 | 19 | 270 |

| | | | | | | | | | FAGE |
|-------------------|----------|--------|--------|--------|-------|---------|--------|------|-------|
| Civil justice at | nd cri | me | 8 | 02 | Ot . | 39 | 10 | | 270 |
| Land revenue | admi | nistra | tion | | | -01 | 11 | 2 | 271 |
| Local self-gove | | | w | 10 | 24 | | 7. | | 272 |
| Police and jai | | | A | | 17 | | 6 9 | 14 | 272 |
| | 100 | | | | | - 3 | 20 8 | 0.0 | 272 |
| Hospitals and | | nsari | 66 | | 3 | 10 | 41 | 30 | 272 |
| Vaccination | 1.00-1 | | 2 1 | 2 | 4 | 1 | V. | 0.7 | 275 |
| Bibliography | | 3 | 1 | 4 | 14 | V | 1 |): | 273 |
| CHAMPAWAT | | 2 | | 100 | 340 | 13 | 1 | 10 | 273 |
| ALMORA TAHSII | 100 | 4 | 8 | -83 | 100 | - X | 20 | - | 273 |
| ASKOT | +1 | 10 | TA. | +1 | 160 | 19 | 8 | | 273 |
| ALMORA TOWN | 41 | 1960 | 1.0 | | 100 | 3 | | * | 274 |
| ANTA DHURA | | 100 | | | | | 9 | 21 | 274 |
| BAGESHWAR | | 100 | | | | 4 | 2 | à/ | =75 |
| BAUNATH . | | | | | | 12 | 1 | ¥3 | 275 |
| BIANS | | | | - 2 | 27 | 16. | 14 | 709 | -325 |
| DEVI DRUBA | | | | à | 17 | 4 | 0. | | 275 |
| DWARAHAT. | | | 100 | 12 | - 60 | 100 | 39 | 1 | ±76 |
| GARBYANG . | 6 | T) | 0.00 | 100 | 367 | Ð | (8 | | 276 |
| LEBONG | 7 | 27 | | | | 10 | | -81 | 476 |
| MILAM . | 4 | 43 | OIC. | | 2 | 10 | | 7 | ±76 |
| NANDA DEVI | | AC. | | | | - | | 3 | 276 |
| PINDARI | | - | - | 19 | 191 | | | - | 277 |
| RANIKHET . | 14 | | | | 7 | | 2 | 10 | 277 |
| TANARPUR . | | | | | A | Ti. | 147 | 3 | 277 |
| . During District | CT | | | -1- | . 2. | Time. | (4) | - | 8-390 |
| Boundaries, | config | uratio | n, ar | d hill | and | river s | system | 18 . | 278 |
| Geology - | The last | - | 100 | - | 19 | 16 | | 17 | 279 |
| Botany | | - 52 | 81 | 16 | 734 | | 181 | - | 279 |
| Fauna . | -54 | 4 | - 11 | 0.0 | 10 | 1.6 | | 37 | 279 |
| Climate and | tempe | eratur | D + | 045 | 191 | | | - | 279 |
| Rainfall : | 100 | | 7 | 27 | - 25 | | - | - 9 | 279 |
| History - | 29 | 4 | | 012 | 17 | - | - | 7.4 | 280 |
| Archaeology | | | | 0.75 | | - 13 | - 5 | | 181 |
| The people | | - 7 | | 100 | - 4 | - 4 | - 41 | Fei. | 281 |
| Castes and o | ecups | tions | 1 3 | | 740 | - 4 | | 190 | 281 |
| Christian mi | ssions | | | - 4 | Fil | 19 | 4 | 0.0 | 252 |
| General agric | cultur | al cor | nditio | ns. | 34. | | | 10 | |
| Chief agricul | ltural | statis | tics:# | nd pr | incip | al crop | Bio. | - 0 | 282 |
| Improvemen | ts in | agrica | iltura | i prac | tice | 2 | - 6 | - | 282 |
| Irrigation | *1 | 15 | | | 10 | 19 | | - 3 | 283 |
| Forests | | (0) | 0. | - | - | - | 7 | - | 283 |
| Minerals . | 45 | 00 | | | | - | .7 | - 8 | 283 |
| Arts and ma | | | | | | - | | - 6 | 283 |
| | | | | | | | | | |

XX

| | | | | | | | FAGI |
|---|--|---------------|-------|-------|------|------|------------|
| | Commerce | - 60 | - | Ţ. | | | 28 |
| | Railways and roads | 1 | 14 | - 17 | - 1 | - 2 | 184 |
| | Famine | 72.1 | - | | 923 | 7 | 28. |
| | District staff | 10 | | | 75 | | 284 |
| | Civil justice and crime . | | | | | | 284 |
| | Land revenue administration | | - | | - | - | 384 |
| | Local self-government . | 100 | 17. | | | | ±86 |
| | Police and jails | | | - 5 | | | 286 |
| | Education | 5 | - 5 | | | | 286 |
| | Hospitals and dispensaries | | -0 | | 6 | 3 | 286 |
| | Vaccination | | | | | - | |
| | AND STATE OF THE S | | | 7411 | | -1 | ≥87 |
| | The Control of the Co | | | (#) | | - | 287 |
| | The second second | 9 | *. | 140 | 100 | Α. | 287 |
| | JOSHIMATH | đ | 57 | 1,60 | 19 | 95 | 287 |
| | Karnaprayag . , | 27. | - 71 | 31 | 23 | 51 | 288 |
| | KEDÄRNÄTH | - | * | 350 | 13 | 10 | 288 |
| | KOTDWARA. | | * | 9 | -3 | 7 | 288 |
| | LANSDOWNE | 1.6 | 7 | 1 | - 12 | - 27 | 280 |
| | Mana | 0 | 2.1 | 19 | 4 | 41 | 289 |
| | Niti | 1 | 41 | -51 | - | ěl. | 289 |
| | PANDUKESHWAR | 91 | | - | | 100 | 289 |
| | PAURI | 20 | 12 | 19 | - | | 289 |
| | Rudrafrayag . | | | | | 10.7 | 200 |
| | SRÎNAGAR | | 171 | | | | 200 |
| 0 | LUCKNOW DISTRICT | | | - | | 291 | -375 |
| ~ | LUCKNOW DISTRICT | | 6 | | | | -313 |
| | Boundaries, configuration, and | river | Byst | em | 41 | 7 | 202 |
| | Geology | 20 | | | - | 5 | 202 |
| | Botany . | | | | | | 202 |
| | Fauna | | | | | | 292 |
| | Climate and temperature . | | | | | | 292 |
| | Beinfall | 0 | | | | | 293 |
| | History | | 120 | - | - | | 193 |
| | Archaeology . | | š – | | 3 | | 203 |
| | The people | | 8 | 3 | 1 | 6 | 293 |
| | PATTER NAME OF THE PATTER NAME O | | | | | | (0.00) |
| | Christian missions | | | | 140 | | 294 |
| | Constant missions | | | 3 | | 9 | 294 |
| | General agricultural conditions | in the second | | - | - | | 794 |
| | Chief agricultural statistics and | brim | cipal | crops | | | 295 |
| | Improvements in agricultural p | ractio | 96 | 91 | | | 295 295 |
| | Cattle, ponies, and sheep . | | | - | 17 | | 295 |
| | Irrigation . | | | | 2 | 7. | 290 |
| | | | - | 9 | 8 | fi - | 296 |
| | Arts and manufactures | | W | 4 | 14 | 2. | 200 |

| | | | | | | | | PAGE |
|----------------------|---------|------|------|--------|-------|-----|-------|------|
| Commerce | (2) | 8 | 20 | 127 | 72 | - 1 | | 200 |
| Railways and roads | 64 | W | - | 160 | 14 | - | 8 | 296 |
| Famine . | | Q. | 41 | 761 | 19 | 91 | 27 | 297 |
| District staff | 24 | 2 | 6. | 160 | 7.6 | × 1 | - 5 | 297 |
| Civil justice and cr | ime | | | 11 | | | | 297 |
| Land revenue admi | inistra | tion | | 14 | - 100 | W1 | 10 | 298 |
| Local self-governme | ent | | | 201 | | | - 10 | 298 |
| Police and jails | | | | | | | | 298 |
| Education . | | | ** | | - | - | | 299 |
| Hospitals and dispe | marie | | | 4 | 8 | n. | 15 | 299 |
| Vaccination . | | 7 | | 3 | 3 | 1/3 | 5 | 200 |
| Bibliography . | 5 | | 31 | 31 | | - 1 | 15 | 299 |
| LUCKNOW TAHSIL | 14 | (8) | | 10 | 19 | 20 | 20 | 200 |
| MALIHABAD TAHSIL | - | | | | | 6. | 13 | 300 |
| MOHANLALGANJ . | | | 10 | | - | | 1.63 | 300 |
| Аметиї | | | - | OF THE | - | | 10.75 | _500 |
| Kākori | 2.0 | - | | 160 | | | - | 301 |
| LUCKNOW CITY . | | | | | | | 301 | -313 |
| History | | Ĭ. | | 3 | | | | 301 |
| Asaf-ud-daula | 8 | 8 | 3 | 9 | - 2 | 20 | 133 | 303 |
| Suadāt Ali Khān | 100 | W | 20 | 4 | 7 | 21 | 197 | 305 |
| Ghāzī-ud-dīn Ha | idax | | 0 | - | 77 | 77 | 247 | 301 |
| Nasir-ud-din Hai | dar. | | | 4 | 2 | 21 | 131 | 303 |
| Muhammad Alī S | Shah | 0 | | 7.6 | | - | 147 | 304 |
| Amjad Ali Shah | × | 0 | | | 4 | 90 | 000 | 30.1 |
| Wajid Alt Shah | 4 | | | 100 | | - | 101 | 304 |
| The Mutiny | | | | | 4 | | . 60 | 304 |
| First relief . | , | | | | | 41 | | 300 |
| Final relief | | | | | | | | 300 |
| Evacuation . | 74 | | | | | | 4 | 307 |
| Recovery | 1 | 6 | | 12 | 2 | | 8 | 308 |
| Description of city | 9 | ÷ | 10 | 14 | 4 | | 14 | 308 |
| Improvements : | 4 | | | - | 4 | | 24 | 310 |
| Officials - | | × | | 19 | 4 | - | 24 | 311 |
| Municipality , | 10 | х | 8 | 26 | 180 | | 14 | 311 |
| Cantonment . | | | - | 3 | | | | 311 |
| Commerce . | | - | | | | 100 | 129 | 310 |
| Education , | | | | | * | - | 28 | 312 |
| MALIHABAD TOWN | | V | | 17 | | 100 | - | 313 |
| NAO DISTRICT | 8. | | 4. | | | ., | 313 | -325 |
| Boundaries, configu | mation | and | rive | r syst | em | | 1 | 313 |
| Geology | - | V | | Tä | 12 | - | | 314 |
| | 12 | | 10 | 14 | à. | -2 | (k | 314 |
| Faurea | | | | | | | 100 | |

| TABLE OF C | V) 100 | ng an | yrer . | | | xxiii |
|--|----------|--------|--------|-------|------|--------------|
| TADLE OF C | 4,72,Y-2 | 200.04 | 1.00 | | | |
| September 1999 a service states | | | | | | PAGE |
| Climate and temperature . | 04 | (9) | 10. | 23 | | 314 |
| Rainfall | 5.5 | .0 | - 51 | 7.5 | - 31 | 314 |
| History | 27 | Ξ. | 5 | | | 314 |
| Archaeology | | 4 | - | 8 | 8 | 316 |
| The people Castes and occupations | 24 | | - | - | (A) | 316 |
| Castes and occupations | 16 | - | 41 | 19 | | 310 |
| Christian missions | 201 | - 19 | 41 | 24 | (8) | 317 |
| General agricultural condition | B e | | 0 | - | | 317 |
| Chief agricultural statistics an | | | | 6.4 | | 317 |
| Improvements in agricultural | | ice | 1 | 12 | | 318 |
| Cattle, ponies, and sheep . | 11 | 12 | - | | | 318 |
| Irrigation | | , | | | - 2 | 318 |
| Minerals . | 16/ | - 5 | - 2 | 6 | - 22 | 318 |
| Arts and manufactures | TAGE | 1 | 1 | 1 | 100 | 318 |
| Commerce | 79.1 | 12 | - 21 | 19 | | 319 |
| Railways and roads | 141 | 14 | 41 | 5 | - 0 | 319 |
| Famine | | | | | - | 319 |
| District staff | 100 | | | | | 319 |
| Civil justice and crime . | 1363 | | - 2 | | - 22 | 319 |
| Land revenue administration | | | i. | | 10 | 320 |
| Local self-government | | -4 | - 8 | 18 | -3 | 320 |
| Police and juils | 100 | | - 5 | 233 | 8 | 321 |
| | | | | 100 | | 321 |
| and the second s | | 10 | | - 0 - | | |
| Hospitals and dispensaries | - | 14 | - | 95 | - | 321 |
| Vaccination | 1,00 | - 3 | . 60 | (0) | | 321 |
| Bibliography | 10 | 2 | 6 | (0) | 28 | 321 |
| UNAO TABSIL | - 55 | 12 | - 55 | 121 | 3 | 321 |
| SAFIFUR TANSII | 100 | 17 | 77 | 19.1 | - 0 | 321 |
| PURWA TAHRII | 10 | 1.7 | - 6 | .9 | - 3 | 322 |
| Mohan Tahsil | | | - 2 | 4.7 | 72 | 322 |
| Asiwan | 100 | 14 | - | 10.7 | | 323 |
| BANGARMAU | 14 | - 5 | 4. | 100 | - | 323 |
| MAURAWAN | 1/41 | 10 | 8 | 161 | - 5 | 324 |
| Mohan Town | 13 | 38 | (a) | Ger. | | 324 |
| PURWA TOWN | 24 | | 100 | - | | 324 |
| SAFIFUR TOWN | 1 (4) | | 10.0 | 1.04 | | 324 |
| UNAO TOWN | - | | | - | | 325 |
| THE STATE OF THE S | - | | | 4 | 323 | 5-338 |
| Boundaries, configuration, an | | | | 25 | - | Albert Artes |
| Geology | | | 17 | - | 19 | 326 |
| The second secon | | | 1 | 73 | - | 320 |
| Fauna | | | - | | 9 | 326 |
| Climate and temperature | | | = | | - | 326 |
| A STATE OF THE STA | | | - " | | | 326 |
| Rainfall | | 19 | 4. | 191 | 1.0 | - Jane |

| | | | | | | | | | | PAGE: |
|-----|----------------------|--------|-------|--------|--------|------|---------|------|------|-------|
| | History : | | | | TA. | | 100 | - 1 | × | 3=7 |
| | Archaeology | | 41 | - | | | 100 | 79 | | 328 |
| U | The people | | 47 | | | | | | | 328 |
| v | Castes and oc | | | | | | | | | 328 |
| | Christian miss | ions | | | | | | | | 329 |
| | General agricu | Itural | con | dition | 16 - | | | 13 | 1 | 329 |
| 1 | Chief agricultu | | | | | | | | | 329 |
| | Improvements | | | | | | | | | 330 |
| - | Cattle, ponies, | | | | | | | | | 330 |
| | Irrigation | | | | | | | - | | 330 |
| | Minerals : | | | | - | 41 | | - | | 330 |
| 2 | Arts and mans | | | - | - | | | | | 331 |
| 1 | Commerce | | | | | | | 1.6 | - | 331 |
| | Railways and | roads | | 14 | | - 11 | | | | 331 |
| | Famine . | | | (4 | | | | | | 331 |
| | District staff | | 11 | | 0 | | | - 3 | | 332 |
| | Civil justice ar | | | | 3 | - 2 | | | - 8 | 332 |
| | Land revenue | | | | | - 31 | 1 | -5 | | 332 |
| | Local self-gove | | | | Α. | - 0 | 100 | | | 333 |
| | Police and jail | | | | 121 | 23 | | -0 | - | 333 |
| | Education | | 8 | 12 | | 1 | | | | 333 |
| | Hospitals and | | near | es | | | | | | 333 |
| | Vaccination | | | | | | | | | 333 |
| | Bibliography | | | ű. | (7) | - 1 | | | | 333 |
| R | AE BARRITTA | | | - | 0 | - 11 | 7 | - 1 | - 0 | 334 |
| Ď | ALMAU TARSÍL | | | | - | 20 | - 1 | | | 334 |
| M | AHĀRĀJGANJ (| or Da | izznr | ekero | | - 5 | 4 | | - 2 | 334 |
| | MON TARSIL | | | | = 44 | - 5 | 700 | - | | 335 |
| | ALMAU TOWN | | | | | 15 | 110 | | | 335 |
| | AIS . | | | | | 21 | 1.57 | - 10 | | 336 |
| 7.0 | AE BARELI TO | | | | | 111 | 71 | | | 336 |
| | LON TOWN | | 10 | | | */ | | | - | 337 |
| | PUR DISTRICT | | | | 0 | - | | | | -350 |
| | Boundaries, co | | ratio | 9 119 | | | terris. | 13 | 0.0% | 338 |
| | Geology . | | | | ****** | | | | - | 338 |
| | Botany . | | | - | 2 | - 1 | -0.00 | | | 538 |
| | The second second | 5 | | 7 | | 1 | 3 | N. | 3 | - |
| | Climate and to | | - | 8 | i i | - 2 | 216 | | 2 | |
| | Rainfall . | | | | | | 1 | 0 | | 339 |
| | 224 | | | | | | | | | |
| | Archaeology | | | s | | | | | | 339 |
| | The people | | | | | | | | 2. | 340 |
| 3 | Castes and occ | e . | ons | 1,00 | | | | | | 340 |
| | Christian missi | | | | | | | [8] | | |
| | CHICLD CHAIL LETTERS | E4113 | 40.1 | - 4 | 26.7 | 100 | - 1 | | 16.1 | 144.6 |

| TABLE OF CONTENT | 3 | | SXV |
|---|-----------|-------|------------|
| | | | TAGE |
| General agricultural conditions | 15 . | | 341 |
| Chief agricultural statistics and principal | crops | | 344 |
| Improvements in agricultural practice | 10 | 9 | 344 |
| Cattle, ponies, and sheep | ti | 3 | 3.42 |
| Irrigation | 7 | | 342 |
| Minerals | | | 343 |
| Arts and manufactures | -2/ | 2 2 | 343 |
| Commerce | ė. | 5 = 3 | 343 |
| Railways and roads . | 4 | 0 A | 343 |
| Famine | 10 | 3 30 | 343 |
| District staff | | | 344 |
| Civil justice and crime | | - | 344 |
| Land revenue administration | | | 344 |
| Local self-government , | | 4 4 | 345 |
| Police and jails | 11 | 2 1 | 345 |
| Education | 12 | 9 9 | 345 |
| Hospitals and dispensaries | | N 4 | 346 |
| Vaccination | 2 | Se 00 | 340 |
| Bibliography | 60 | | 5000 |
| SITAPUR TAHSIL. | | | 202 |
| BISWAN TAHSIL | | | 100 |
| Sidhauli | | | 334 |
| Misrikit | 8 | 12 2 | |
| MARMÜDÄBÄD ESTATE | | W 10 | 150.046 |
| / Biswan Town | 10 | 3 × | 348 |
| KHAIRĀBĀD | | | 349 |
| | | | 349 |
| MAHMUDARAD TOWN | 30 | | mail files |
| SITAPUR TOWN | | | 200 |
| HARDOI DISTRICT | | | 0-364 |
| Boundaries, configuration, and river syst | em | | |
| Geology . | | V 7 | 351 |
| Botany | | | Washing |
| Fauna | | | |
| | | | 894 |
| | | | - |
| | | | 800 |
| Archaeology | | | |
| | | | |
| Castes and occupations | | 1 3 | |
| | | | |
| General agricultural conditions | | | |
| Chief agricultural statistics and principal | crops | | 354 |
| Improvements in agricultural practice | CA CAPITA | | 354 |
| Improvements in agricultural practice | - 4 | .5. 1 | 10.04 |

| | | | | | | | | | | PAGE |
|-----------|-------------|---------|----------|-------|--------|------|------|------|---------------|------|
| His | tory . | 191 | | | 6.2 | | - | | | 327 |
| | haeology | | | , | | | | | | 328 |
| The | people | | | | | 3 | 0 | - | - | 328 |
| | tes and oc | | iona | 2 | - 63 | 12 | 4 | | 16.1 | 328 |
| | istian mis | | | | 10 | 17 | | - | 2 | 329 |
| Gen | eral agric | ultura | cond | ition | | 79 | | | 565 | 329 |
| Chi | of agricult | ural st | tatistic | s an | d prin | cipa | crop | 8 | 000 | 329 |
| | rovement | | | | | | | | | 330 |
| | le, ponies | | | | | | | | 1400 | 330 |
| | ation | | | | | | | | | 330 |
| Min | | 1.0 | | | | | | | | 330 |
| | and man | | | | | | | -11 | | 331 |
| | nnerce | | | 3 | | 8 | | - | 8 | 331 |
| | ways and | | | Ÿ. | 101 | 8 | | 3 | 24 | 331 |
| | ine . | | | V | | | 10 | - | - | 331 |
| | rict staff | | | 111 | 12.1 | 121 | | | 1 | 332 |
| 1,877,075 | I justice a | | | 21 | - | | | | | 33= |
| | d revenue | | | rion | | | | | | 332 |
| | al self-gov | | | - | | | | | | 333 |
| | ce and jai | | | ** | | 177 | | | OFFE COMME | 333 |
| | cation | | 4 | 20 | . 91 | | -5 | - 22 | | 333 |
| | pitals and | | | | MIL | 17 | 8 | - 2 | | 333 |
| Vac | cination | emple | and to | | 151 | | - 1 | - | 0 | |
| 2000 | iography | 8 | | 7 | | 7 | 5 | - | 5 | 333 |
| | ARELI TA | | | | | | 1 | - 5 | | 333 |
| | AU TARSI | | | | 2 | 7.4 | | | | 334 |
| | RAJGANJ (| | | | | * | | | - | 334 |
| | TAHSIL | | | | | | | | | 334 |
| | AU TOWN | | | | (10) | - | | - | 54 | 335 |
| | | | (1) | 40 | 101 | (8 | | F | 58 | 335 |
| | in Sec | | 10 | | 100 | 17 | - 0 | 10 | - | 336 |
| | Town | | 3 | 1 | 100 | 1.2 | | - | 1. | 336 |
| | - | 10 | 3 | 2 | 50 | 3 | 2 | 10 | 0 | 337 |
| SHAFUR | DISTRICT | 4 | | | i alaa | | 9 | | 230 | 350 |
| | ndaries, c | | | | | | | | - | 338 |
| | logy | | | | 14 | 14 | | - | -14 | 338 |
| | ıny . | 3.6 | 7 | ** | - | | | 10 | -4 | 338 |
| Fau | | lá | | 41 | 12 | 9 | 90 | 100 | 4 | 338 |
| | sate and t | | | | (4) | X | (6) | -60 | 14 | 339 |
| | fall . | | | 0 | . 1 | -0 | 0. | 000 | 4 | 339 |
| | ory - | | 8.1 | 51 | 0.0 | (8) | 10 | .00 | 14 | 339 |
| | nacology | | 3 | 10 | 58 | 16 | - 21 | 170 | 10 | 340 |
| | people | | | | 61 | | -5 | 100 | | 340 |
| | es and oc | | | 0 | 12 | 2 | | 7. | 13 | 340 |
| (C)1444 | crien mice | in me | | | | | | | | 241 |

| 22 | IBLE | OF C | ON | TEN | TS | | | 33 |
|----------------------------------|-------------|----------|-------|--------|-------|--------|------|--------|
| Contract of the Contract | STATE WATER | CANCELLO | | | | | | EAG: |
| General agricult | | | | | M. | | - 5 | 34 |
| Chief agricultura | | | | | | | 70 | 34 |
| Improvements is | | | | tice | 3 | 18 | - 1 | 34 |
| Cattle, ponies, a | nd shee | р. | 1 | - 2 | 100 | | 41 | . 34 |
| Irrigation | 1 | 111 | 14 | - | 783 0 | 10 | - 21 | 34 |
| Minerals | - 2 | 11 | 14 | 4 | 140 | GA. | 67 | 34. |
| Arts and manufi | actures | (0) | | - 0 | 140 | | 10 | 34 |
| Commerce . | | 100 | 19 | 71 | 24 | 15 | +1 | 34. |
| Railways and ro | ads . | | | - | 0.40 | | 8.5 | 34. |
| | | | | 7 | | | | 34 |
| Famine District staff . | | | | - | 4 | 9 | | 34 |
| Civil justice and | | 100 | ă. | | | 8 | - 5 | 34 |
| Land revenue ac | | | | | 161 | | | 34 |
| Local self-govern | | 4 | 12 | - | | | | 343 |
| Police and jails | | | | 2 | 11 | | *1 | 343 |
| Education - | | | | | | | | Graf I |
| Linestelle and d | £1 | - | 00 | 10 | 200 | 8 | . 1 | |
| Hospitals and d | | | -3 | | 1.5 | 19 | - | 34 |
| Vaccination . Bibliography . | 10 | 25 | (8) | 71 | 10 | 1 | | 34 |
| Bibliography . | | 2 | | 5 | | 3 | - 5- | 34 |
| SITAPUR TAHSIL. BISWAN TAHSIL | - | 17 | | - 6 | 8 - | | - 6 | 34 |
| | | 19 | à | | 14 | 2 | - | 341 |
| SIDHAULI | | 1.6 | 1 | F. | 5 | 12 | 100 | 34 |
| MISRIKH : : | 15 | | 1 | 100 | | (4) | 100 | 34 |
| MAHMUDABAD EST | | 50 | | E | 4 | (8) | 122 | 34 |
| / BISWAN TOWN - | 0 | 59 | v. | 100 | 19 | 6 | 100 | 342 |
| KHAIRABAD . | 191 | | *: | 197 | | 7. | 100 | 345 |
| LABARPUR | | | | | | - | | 349 |
| Манмправар То | Wee . | | | - 0 | 11 | 8 | 150 | 349 |
| STEAPUR TOWN . | APP C | | 8 | 2 | 14 | Tall . | 100 | 359 |
| HARDOI DISTRICT | | | 4 | 100 | | 0.0 | 350 | - |
| Boundaries, con | | | | | | | | 359 |
| Geology | | | | | | | | 351 |
| 44 | | | | | , | | | 35 |
| | | | | | | | | 35 |
| Fauna | | 100 | 8 | 12 | | * | 10 | 7.43 |
| Climate and ten | | | * | 10.1 | 1. | | | |
| Rainfall | 1.75 | 2 | 7 | WW. | | 8 | | 351 |
| History | 1.00 | | 5/ | | | | 197 | 35 |
| Archaeology - The people - | - 6 | 12 | 4 | - 1 | | | | 35 |
| The people | 14 | 14 | -11 | 18.00 | | | | 35 |
| Castes and occur | pations | 4 | 91 | 32 | (A | | | 353 |
| Christian mission | 05 1 45 | 14 | 10 | 310 | 0 | Y) | 30. | 353 |
| General agriculti | iral con | dition | E e | (%) | 2 | 5 | 121 | 353 |
| Chief agricultura | Latatisti | CS BD | d pri | ncipal | crops | | 1.0 | 354 |
| Improvements in | agricul | tural | pract | ice | 2 | 5 | | 354 |
| | | | | | | | | |

| | | | | | | - 4 | EARTH |
|-----------------------------|-------------|-----------|-------------|--------|---------|------|-------|
| Cattle, ponies, and sheep . | | | E | | * | 53 | 355 |
| Irrigation | | | 12 | 4 | | 8 | 355 |
| | | | | | | p.) | 355 |
| VArts and manufactures | | | *: | 4 | 2 | V. | 355 |
| Commerce | | | | 2 | 8 | * | 350 |
| Railways and roads . | | | 10 | 107 | | 91 | 356 |
| Famine | | | 41 | 10 | 5 | 6 | 350 |
| District staff | | | 20 | 367 | 74 | | 357 |
| Civil Justice and crime | | | | | | | 357 |
| Land revenue administrati | on | | | | | | 357 |
| Local self-government | | | | | | - | 358 |
| 12 12 V V V V V | | | | | | 0 | 358 |
| | | | | | S | 8 | 358 |
| Education | | 1 | | | Televis | - | 358 |
| | | | 3 | 01 | 41 | 7.6 | 358 |
| Vaccination - | 2 3 | | | - | 100 | 10 3 | 358 |
| Bibliography | | | 14 | | | 14 | 358 |
| HARDOI TABSIL | 4 | W. | | | F1 | 1.0 | 359 |
| Shahabad Tahsil. | - | 100 | | • | | 1 | 359 |
| BILGRAM TAHSIL. | | 10. | | 1 | | | 360 |
| SANDĪLA TAHSĪL - | | | - | 10 | 21 | | 360 |
| BILGEAM TOWN | Υ., | F. 1 | 2.0 | 12 | | | 361 |
| GOPAMAU . | 2 | 21 | | 2 | | | 361 |
| HARDOI TOWN | 8 | 5 | 2 | | - | | 351 |
| MALLANWAN | | 77 | 3 | - 12 | V | 155 | |
| PIHĀNĪ | | | - | | | | 362 |
| Sannt | 2 | 27 | 100 | 10 | 100 | - | 362 |
| SANDILA TOWN | 4 | 1 | -35 | - | 0. | 100 | 362 |
| SHAHABAD TOWN | 2 | 31 | 167 | | - 1 | 15 | 363 |
| KHERI DISTRICT | ×. | 10.00 | (0) | 10 | | - | 4-375 |
| Boundaries, configuration | , and | Trive | r sys | tem | | 7. | 364 |
| Geology | | | * | | - | - 61 | 364 |
| | | - | | 1.0 | -9 | - 2 | 364 |
| Fauna | 1.00 | | 71 | 100 | | -6 | 365 |
| Climate and temperature | | | 2 | 10 | V | 100 | 395 |
| Rainfall | | | 41 | 100 | 150 | | 365 |
| History and archaeology | | | | 25 | 19 | 181 | 305 |
| The people | | T. | 41 | 161 | | (#) | 366 |
| Castes and occupations | | 9 | - | | | | 366 |
| Christian missions | | 12 | | | - 10 | - | 367 |
| General agricultural cone | | | | | - | - | 367 |
| Chief agricultural statisti | CO OT | d rei | neim | d cros | 05 | | 367 |
| Improvements in agricul | tares? | syract | TOTAL TOTAL | 100000 | | | 367 |
| Improvements in agricul | A-CITALITY. | 277.003/5 | 77.5 | - 22 | - 143 |) | 368 |
| Cattle, ponies, and sheep | £(4) | 5. | - 12 | - 5 | 100 | - 3 | 368 |
| Terioution | 100 | | | | | | - 200 |

| TAB | LE | OF (| CON | TEA | ZZ | | | XXVII |
|--|--------|--------|--------|--------|-------|------|------|-----------------|
| | | | | | | | | PAGE |
| Forests | 10.1 | 131 | v | | - 64 | (9) | 100 | 358 |
| Minerals | - 1 | 58 | - 8 | 100 | 54 | - 5 | - | 368 |
| Arts and manufact | | | | 100 | - 2 | | - 6 | 368 |
| Commerce | - | - | | 100 | - 4 | | - 51 | 368 |
| Railways and road | 3 41 | | 20 | - 2 | 12 | 2 | - 60 | 369 |
| Famme | 10 | 12 | V | 10 | 1 | ¥ | - 5 | 369 |
| District staff | 161 | 14 | 10 | 186 | 1.5 | | 15 | 369 |
| Civil justice and cr | | | | 10 | 16 | | | 370 |
| Land revenue admi | inistr | ntion | | 200 | | 160 | - 12 | 370 |
| Local self-governm | ent | 1,5 | | | 10.11 | | - 10 | 371 |
| Police and jails | 0.73 | 17 | | 100 | 0.7 | | 17.1 | 371 |
| Education . | | 100 | | 100 | - 3 | 4 | | 371 |
| Hospitals and disp | ensar | ries | 2 | 1 | - 32 | - 2 | 147 | |
| Vaccination . | 4 | 1 | 33 | 24 | 14 | 91 | 100 | |
| Bibliography : MUHAMDI TAHSIL | 1 | 10 | 400 | 14 | 12 | - 6 | 190 | 371 |
| MUHAMDI TAHSIL | (0) | - 0 | 10 | 100 | | | 100 | 374 |
| /NIGHASAN | | 0 | | 390 | | | 179 | 372 |
| LAKHIMPUR TAHSIL | | | | - | | | | 372 |
| DHAURABHA . | | - | | 7.0 | | | 14 | 373 |
| AND THE RESERVE OF THE PARTY OF | | | | 4 | | - 8 | | |
| KHERI TOWN | 2 | Ž. | 150 | 10 | - 81 | - 2 | -8 | 373 |
| LAKHIMPUR TOWN | | W | 27 | 81 | - | 13 | 14 | 374 |
| MCHAMDI TOWN | ă. | | 10 | 16 | | F-1 | - | 0.000 |
| SINGAHĪ BHADAURA | | - (| 161 | 10 | | - 12 | | 373 |
| Fyzarad Division . | | | 100 | | · v | - 0 | | |
| Destroy Deserves | | | | | | | | -393 |
| Boundaries, configu | ratio | m, and | d rive | er sys | tem | | | |
| Geology | | | - | | | | - 1 | 377 |
| Geology Botany | 8 | 2 | 50 | 2 | 1 | 12 | 100 | 377 |
| Fauna | | | 1 | - 12 | | 47 | 14 | 377 |
| Climate and temper | | | Sin . | 12 | 20 | | | 200.00 |
| Rainfall | | | | 18 | 4.1 | | | No. of the last |
| V History | 0 | | | | | | | 378 |
| Archaeology | | | | | | | | 379 |
| The people . | | | | | | | | 379 |
| Castes and occupati | ons | | | | | | | 380 |
| Christian missions | 10000 | | 8. | - 9 | | 10 | - 6 | 380 |
| Christian missions General agricultural | con | dition | | - | 11 | 14 | 1 | 380 |
| Chief agricultural st | atisti | CR and | i pri | ncinal | crop | 0.14 | - | 280 |
| Improvements in ag | | | | | | | | 381 |
| Cattle, ponies, and | | | | | | | | 381 |
| Irrigation | and a | 200 | | | | | | 381 |
| Irrigation . Minerals . | | | ٥., | 7.0 | | 15 | 2 | 382 |
| Arts and manufactur | | | | | | | | 182 |
| THE RESERVE ASSESSMENT AND ADDRESS OF SELECTION ADDRESS OF SELECTION AND ADDRESS OF SELECTION AND ADDRESS OF SELECTION AND ADDRESS OF SELECTION AND ADDRESS OF SELECTION | 10000 | | 100 | | - | | 7.0 | And in case of |

| 10 | | | | | | | | PAGE |
|--|--|---|--|--|---|---|---|---|
| | | 90 | 100 | - 23 | 9 | - 4 | 14.1 | 382 |
| | | E. | 10. | 1.8 | 18 | - 0 | (40) | 362 |
| | | ** | | 3 | | - 61 | 197 | 383 |
| The state of the s | | | 10 | 18 | | -1 | 140 | 383 |
| | | | 100 | - | | | 3411 | 383 |
| | | ration | | | | - | - | 383 |
| Local self-governm | ient | | | - | | | | 384 |
| Police and jails | | | | - 12 | - | | (2) | 384 |
| Education | 77 | . 2 | 1 | 12 | la! | - 27 | - 1 | 384 |
| Hospitals and dist | ensa | ries: | 11 | - | (4) | - | 22 | 385 |
| | | - | 120 | - 12 | | | - 1 | 385 |
| Bibliography . | | | 6 | | 141 | | | 385 |
| | | | - | | | | | 385 |
| | - 1.0 | | | | - 2 | | | 385 |
| | | 71 | - | | | | | 386 |
| | | - 20 | - | | - | | | 86 |
| | | - 51 | - 1 | - | - 70 | | | 387 |
| Control of the Contro | 8 | 퓠 | -2 | 17 | - 3 | - 3 | - 5 | 188 |
| | | - | 70 | | | | | 389 |
| | | - | | - 1 | | | | 1000 |
| The state of the s | | | 1-61 | 1.0 | - | | - | 390 |
| | | - | 26. | - 04 | - 2 | 1500 | - 14 | 391 |
| 100 CO | | 0.0 | (0) | | 91 | 10 | - | 392 |
| | | - | (8 | | 7. | -0 | - | 392 |
| | | | 124 | | . A. | -0. | 393 | -407 |
| A STREET OF THE PARTY AND ADDRESS OF THE PARTY | | | d rive | er sys | tem | 100 | | 393 |
| Control of the Contro | - 5 | | 127 | - 1 | - 5 | (8) | 15 | 393 |
| | - | - 6 | 3 | - | - 8 | - | 19 | 393 |
| | | - 27 | 1 | - 12 | -2 | 1 | - | 394 |
| | | e - | 9 | - 1 | - 2 | 181 | 16 | 394 |
| | 8 | 21 | 24 | 12 | 20 | 100 | 74 | 394 |
| | | 63 | 14 | 1.6 | 8 | 000 | - 5 | 394 |
| | 7. | 10 | H | | | 19 | | 395 |
| | | 100 | 2 | 4 | 4 | (9) | 19 | 395 |
| Castes and occups | tions | H | | | 11 | 14 | | 396 |
| | 7 | | | | | | | 396 |
| General agricultura | I con | dition | \$. | | | | | 396 |
| Chief agricultural s | tatist | ics and | d pri | ncipa | crop | 8 . | - | 397 |
| | | | | | i. | | 21 | 397 |
| | | | | | 17 | 4 | 4 | 398 |
| Irrigation | | 135 | 19 | ě | 4/ | 24 | 4 | 398 |
| Forests | 40 | 24 | 9 | 91 | 100 | 14 | | 398 |
| Minerals | | 000 | 1.0 | | | | | 398 |
| CONTRACTOR OF THE PARTY OF THE | | | | | | | | |
| Arts and manufacti | ites. | 100 | 170 | | | 400 | | 398 |
| | Railways and road Famine District staff Civil justice and d Local self-governm Police and jails Education Hospitals and disp Vaccination Bibliography FYZĀRĀD TAHSĪL AKBARPUR TAHSĪL KRARPUR TAHSĪL AKBARPUR TOWN FYZĀRĀD TAHSĪL AKBARPUR TOWN FYZĀRĀD TAHSĪL AKBARPUR TOWN FYZĀRĀD TAHSĪL AKBARPUR TOWN FYZĀRĀD CITY ALĀLPUR KICHHAUNCHHA L'ĀNDĀ TOWN NDĀ DISTRICT Boundaries, config Geology Botany Fauna Climate and temper Rainfall History Archaeology The people Castes and occups Christian missions General agricultural s Improvements in a Cattle, ponies, and Irrigation Forests Minerals | Civil justice and crime Land revenue administ Local self-government Police and jails Education Hospitals and dispensa Vaccination Bibliography FYZĀBĀD TAHSĪL ĀKBĀPUR TĀHSĪL ĀKBĀPUR TĀHSĪL ĀKBĀPUR TĀHSĪL ĀKBĀPUR TĀHSĪL ĀKBĀPUR TĀHSĪL ĀKBĀPUR TĀHSĪL ĀKBĀRPUR TĀHSĪL ĀKBĀRPUR TĀHSĪL ĀKBĀRPUR TOWN TYZĀBĀD CITY ALĀLPUR ĀKBĀRPUR TOWN TYZĀBĀD CITY ALĀLPUR ĀKBĀRPUR TOWN NDĀ DISTRICT Boundaries, configuratio Geology Botany Fauna Climate and temperatur Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural con Chief agricultural statist Improvements in agricu Cattle, ponies, and shee Irrigation Forests Minerals | Railways and roads . Famine . District staff . Civil justice and crime . Land revenue administration . Local self-government . Police and jails . Education . Hospitals and dispensaries . Vaccination . Bibliography . FYZĀRĀD TAHSĪL . AKBARPUR TAHSĪL . KIKĀPUR . LODHVĀ ESTATE . LODHVĀ ESTATE . LODHVĀ TOWN . VYĀBĀD CITY . ALĀLPUR . KICHHAUNCHHA . FANDĀ TOWN . NDĀ DISTRICT . Boundaries, configuration, and . Geology . Botany . Fauna . Climate and temperature . Rainfall . History . Archaeology . The people . Castes and occupations . Christian missions . General agricultural condition . Chief agricultural statistics am . Improvements in agricultural . Cattle, ponies, and sheep . Irrigation . Forests . Minerals . | Railways and roads : Famine . District staff . Civil justice and crime . Land revenue administration . Local self-government . Police and jails . Education . Hospitals and dispensaries . Vaccination . Bibliography . PYZĀRĀD TAHSĪL . AKBARPUR TAHSĪL . BĪKĀPUR . TĀNDĀ TAHSĪL . AJODHVĀ ESTATE . AJODHVĀ ESTATE . AJODHVĀ CITV . ALĀLPUR . KICHHAUNCHHA . TĀNDĀ TOWN . NDĀ DISTRICT . Boundaries, configuration, and rive . Geology . Botany . Fauna . Climate and temperature . Rainfall . History . Archaeology . The people . Castes and occupations . Chief agricultural statistics and pri . Improvements in agricultural pract . Cattle, ponies, and sheep . Irrigation . Forests . Minerals . | Railways and roads: Famine District staff Civil justice and crime Land revenue administration Local self-government Police and jails Education Hospitals and dispensaries Vaccination Bibliography FYZĀRĀD TAHSĪL ĀKBARPUR TAHSĪL BĪKĀPUR TĀNBĀ TAHSĪL AJODHVĀ ESTAYE AJODHVĀ TOWN FYZĀRĀD CITY ALĀLPUR KICHHAUNCHHA TĀNBĀ TOWN NDĀ DISTRICT Boundaries, configuration, and river sys Geology Botany Fauna Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditions Chief agricultural statistics and principa Improvements in agricultural practice Cattle, ponies, and sheep Irrigation Forests Minerals | Railways and roads . Famine . District staff . Civil justice and crime . Land revenue administration . Local self-government . Police and jalls . Education . Hospitals and dispensaries . Vaccination . Bibliography . FYZĀRĀD TAHSĪL . AKBARPUR TAHSĪL . BIKĀPUR . TĀNBĀ TAHSĪL . AJODHYĀ ESTATE . AJODHYĀ TOWN . AKBARPUR TOWN . VYĀBĀD CITY . ALĀLPUR . KICHHAUNCHHA . FANDĀ TOWN . NDĀ DISTRICT . Boundaries, configuration, and river system . Geology . Botany . Fauna . Climate and temperature . Rainfall . History . Archaeology . The people . Castes and occupations . Christian missions . General agricultural statistics and principal crop . Improvements in agricultural practice . Cattle, ponies, and sheep . Irrigation . Forests . Minerals . | Railways and roads . Famine . District staff . Civil justice and crime . Local self-government . Police and jails . Education . Hospitals and dispensaries . Vaccination . Bibliography . FYZĀRĀD TAHSĪL . AKEARPUR TAHSĪL . BIKĀPUR . TANDĀ TAHSĪL . AJODHYĀ ESTATE . AJODHYĀ ESTATE . AJODHYĀ TOWN . FYZĀRĀD CITY . ALĀLPUR . KICHHAUNCHHA . FANDĀ TOWN . NDĀ DISTRICT . BOUNdaries, configuration, and river system . Geology . Botany . Fauna . Climate and temperature . Rainfall . History . Archaeology . The people . Castes and occupations . Christian missions . General agricultural conditions . Chief agricultural statistics and principal crops . Improvements in agricultural practice . Cattle, ponies, and sheep . Irrigation . Forests . Minerals . | Railways and roads Famine District staff Civil justice and crime Land revenue administration Local self-government Police and jalls Education Hospitals and dispensaries Vaccination Bibliography FYZĀRĀD TAHSĪL AKBARPUR TAHSĪL BIKĀPUR FANDĀ TAHSĪL ANDORIYĀ ESTATE AJODHYĀ ESTATE AJODHYĀ TOWN FYZĀRĀD CITY ALĀLPUR KICHHAUNCHHA FANDĀ TOWN NDĀ DISTRICT Boundaries, configuration, and river system Geology Botany Fyama Climate and temperature Rainfall History Archaeology The people Castes and occupations Christian missions General agricultural conditions Christian missions General agricultural conditions Chief agricultural statistics and principal crops Improvements in agricultural practice Cattle, ponies, and sheep Irrigation Forests Minerals |

| | TAB | LE (| OF C | ON | TEN | TS | | | EXIX |
|---|---|--|------------------|--------|--|-------|---|-----|--|
| | | | | | | | | | PAGE |
| Railways and | | | (3) | 20 | - 2 | -2 | 4 | 1 | 399 |
| Famine . | | 1 | Y. | 100 | 14 | 14 | 11 | 14 | 399 |
| District staff | | 4 | 10 | - | 16 | 9 | - 6 | -24 | 399 |
| Civil justice | | | 3 | - 10 | -00 | 18 | 41 | -30 | 399 |
| Land revenue | | | ttion | +) | 34 | - 1 | 100 | (0) | 400 |
| Local self-go | | | 5. | 8 | | - 0 | | 35 | 401 |
| Police and ja | tils | 17 | | 71 | - | | 2.0 | | 401 |
| Education | | 9 | -8 | | 4 | 7 | 41 | | 401 |
| Hospitals an | | msar | ies | - | - 5 | 2 | | - 4 | 401 |
| Vaccination | | - | | - | 34 | 4 | All | 00 | 401 |
| Bibliography | | 4 | 00 | ě. | 19 | 10 | ě! | 15 | 401 |
| GONDA TAHSTI | 1 1 | | 131 | 0 | 0.0 | 1.0 | 0.1 | 041 | 401 |
| TARABGANJ. | | 150 | | 80 | (30) | 12 | 83 | 25 | 402 |
| UTRAULA TAII | STL. | - | - | | 24 | - | 0. | 15 | 402 |
| BALRAMPUR E | Table Street | | | 3 | | | 24 | 14 | 403 |
| BALRAMPUR T | OWN | | 3 | 6. | - 6 | | | - | 404 |
| Сипаріа | 10 | 6 | 8 | 13 | - | - | | 14 | 404 |
| COLONELOANI | - 6 | | 19 | 2 | 160 | 13 | 80 | | 405 |
| DERI PATAN | × . | (0) | 0.0 | 10 | 100 | | | HIL | 405 |
| GONDA TOWN | 0.7 | | * | F . | 3 | | | | 405 |
| /Nawabganj | + | | 3 | - | 55 | | | 351 | 406 |
| SET MAHET | | | | | | | | | 406 |
| | | 4.5 | _ | | | | - 7.4 | 0.7 | |
| UTRAULA TOW | | | ., | i. | | | 1 | -3 | 407 |
| UTRAULĀ TOW BAHRAICH DISTR | N . | 5 | 0 | | ě | 5 - | 100 | -3 | |
| | N . | | ğ | 3 | er sys | 5 | A 101 P | -3 | 407 |
| BAHRAICH DISTR | N . | ratio | ğ | 3 | er sys | 5 | N 40 10 10 | 407 | 407 -420 |
| BAHRAICH DISTR. Boundaries, | s . configu | ratio | n, an | đ riv | | tem | 2 10 to 10 to 10 | 407 | 407 420 407 |
| Baunaicu Distr. Boundaries, Geology | w . icr configu | ratio | n, an | đ riv | | tem | 5 to 12 to | 407 | 407 -420 407 408 |
| BAHRAICH DISTR Boundaries, Geology : Botany . | onfigu | ratio | n, an | đ riv | | tem | 5 to 12 to | 407 | 407 407 408 408 |
| Bannaica Distra Boundaries, Geology : Botany : Fauna : Climate and | onfigu | ratio | n, an | đ riv | | tem | 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | 407 | 407 407 408 408 408 |
| Bannaica Distr. Boundaries, Geology : Botany : Fauna : Climate and Rainfall : | temper | ratio | n, an | đ riv | | tem | 100 00 00 00 00 | 407 | 407 407 408 408 408 409 |
| Bannaica Distra Boundaries, Geology : Botany : Fauna : Climate and | temper | ratio | n, and | đ riv | 8 8 8 8 | tem | 100 00 00 00 00 | 407 | 407 407 408 408 408 408 409 |
| Bannaich Distra Boundaries, Geology : Botany : Faima : Climate and Rainfall : History ; Archaeology | temper | ratio | n, and | đ riv | 8 8 8 8 | tem | 100 00 00 00 00 | 407 | 407 407 408 408 408 409 409 409 |
| Bannaich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people | ex . rear configu temper | ratio | n, and | d rive | Sections. | tem | 12 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 | 407 | 407 407 408 408 408 409 409 409 410 |
| Bannaich Distra Boundaries, Geology : Botany : Faima : Climate and Rainfall : History ; Archaeology | er configuration temper | ature | n, and | d rive | Sections. | tem | 12 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 | 407 | 407 408 408 408 409 409 409 410 410 |
| Bannaich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people Castes and o Christian mis | temper | ratio | n, and | d rive | 医多生物 医外外 医水黄 | tem | · 101 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 | 407 | 407 408 408 408 409 409 409 410 410 |
| Bannaich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people Castes and o Christian mis General agric | temper | ratio | n, and | d rive | 海马克斯 医二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十 | tem | 1. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 1 | 407 | 407 408 408 408 409 409 409 410 411 411 |
| Bankaich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people Castes and o Christian mis General agric Chief agricul | temper | ratio | dition | d rive | ncipa | tem | 1. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 1 | 407 | 407 408 408 408 409 409 409 410 411 411 411 |
| Bankaich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people Castes and o Christian mis General agricul Improvemen | temper coupat saions cultural thiral st | ratio rations ions ions ions ions | dition | d rive | ncipa | tem | 1. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 1 | 407 | 407 408 408 408 409 409 410 411 411 411 412 |
| Bankaich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people Castes and o Christian mis General agricul Improvement Cattle, ponie | temper coupat ssions cultural tural st ts in ag a, and | ratio sture ions i con atisti gricul sheep | dition | d rive | ncipa | tem | 1. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 1 | 407 | 407 408 408 408 409 409 410 411 411 411 412 412 412 |
| Bankaich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people Castes and o Christian mis General agricul Improvement Cattle, ponie | temper coupat ssions cultural tural st ts in ag a, and | ratio sture ions i con atisti gricul sheep | dition | d rive | ncipa | tem | 1. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 1 | 407 | 407 408 408 408 408 409 409 410 411 411 411 412 412 413 |
| Bahraich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people Castes and o Christian mis General agric Chief agricul Improvement Cattle, penie Irrigation | temper coupat ssions cultural tural st ts in ag is, and | ratio | dition | d rive | ncipa | tem . | 1. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 1 | 407 | 407 408 408 408 408 409 409 410 411 411 411 412 413 413 |
| Bahraich Distra Boundaries, Geology: Botany: Faima: Climate and Rainfall: History: Archaeology The people Castes and o Christian mis General agric Chief agricul Improvemen Cattle, pomie Irrigation Forests: | temper counting temper coupat ssions rultural st ta in ag a, and | ratio | dition ics an | d rive | ncipa | tem . | 1. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 10. 1 | 407 | 407 408 408 408 408 409 409 410 411 411 411 412 412 413 |

| | | | | | PAGE |
|--|----------|--------|------|------|------|
| Railways and roads . | | | 4 | - | 413 |
| Famine | 2 22 | - 3 | 100 | .4 | 414 |
| District staff |) (m) | a = | | 74 | 414 |
| Civil justice and crime | | | | 14 | 414 |
| Land revenue administrati | on . | 4 6 | - | - | 474 |
| Local self-government | | | 21 | - | 415 |
| | | | | | 415 |
| | | | 8 | | 415 |
| Hospitals and dispensaries | | 2 | 120 | 10 | 415 |
| | 100 | 4 6 | 160 | 14 | 415 |
| Bibliography | 2 THE R. | | 1321 | 14 | 415 |
| BAHRAICH TARSIL | - N | 2 21 | 0.00 | 7.0 | 410 |
| KAISARGANI | | | 747 | - | 416 |
| NANPARA TAHSIL | | | 200 | | 416 |
| KAPURTHALA STATE | | | | | 417 |
| NANPARA ESTATE | | | | | -118 |
| BAHRAICH TOWN | | | | | 419 |
| BHINGA | | 8 8 | | -6 | 419 |
| Nanpara Town | | | 20 | 72 | 410 |
| | | | | 1999 | -420 |
| Boundaries, configuration, | | | - 2 | 900 | 420 |
| | | System | | - 5 | 421 |
| | | | - | | |
| Botany Fauna | | | | | 421 |
| Climate and temperature | | | - | 4 | |
| The second secon | I PA | | | - 4 | 421 |
| 2000 CO | - 2 | 0 0 | | | 421 |
| Archaeology | | t 6 | - 1 | | 421 |
| And the Control of Control | | V 11 | 12 | | 422 |
| Castes and occupations . | | 4 1 | 177 | | 423 |
| Christian missions | | . 5 | | | 4=3 |
| Christian missions | ž. | | | -14 | 4#3 |
| General agricultural condit | | | | | 423 |
| Chief agricultural statistics | | | | F | 424 |
| Improvements in agricultur | | | - | | 424 |
| Cattle, ponies, and sheep | | 0 01 | | | 424 |
| Irrigation | | 0 0 | 27 | | 475) |
| Minerals . | | 10.1 | 19 | ×. | 445 |
| Arts and manufactures | 3 3 | 17/ | 125 | 6. | 425 |
| Commerce | | 11 12 | 7 | 2.5 | 425 |
| Railways and roads | 13 | | 2 | - 53 | 475 |
| Famine | | | 3 | - 51 | 425 |
| District staff | - 8 | - | - | | 420 |
| Civil justice and crime . | la l | Yes | - | 1 | 426 |
| I and recommendationing | 957 | | | | 406 |

| TABL | E O | F | CON | TEN | TS | | | XXXI |
|--|--------|------|--------|--------|------|-----|------|------|
| | | | | | | | | PAGE |
| Local self-governmen | it | 27 | 19 | 4 | 10 | 14 | ¥ | 426 |
| Police and jails | | 10 | | 0 | 10 | 18 | - | 447 |
| Education | | ě(| - 4 | ă. | 16 | - | | 427 |
| Hospitals and dispen | surie | 8 | - | | F2 | - | | 427 |
| Vaccination | | | - | × | | - | | 427 |
| Bibliography . | | *1 | 14 | | | | | 427 |
| SULTANPUR TABSIL . | | | | | | - | | 427 |
| Аметні | | | - " | | 1 | | 1 | 428 |
| MUSÄFIRKHÄNA . | 2 | Š. | 2 | - 1 | | 10 | | 428 |
| Kadifur | | | - | 1 | 10 | 10 | .4. | 428 |
| SULTANFUR TOWN | | E. | 4 | | 10 | - | | 429 |
| PARTABGARH DISTRICT . | 0 0 | 001 | 19 | | 17 | 7.4 | 429 | -438 |
| Boundaries, configur | | | | ст зув | tem | - | | 429 |
| Geology , , | | | | | | | | 430 |
| The state of the s | | | | - | | - | - | 430 |
| Fauna , , | | | - 2 | - | - | 2 | 12 | 430 |
| Climate and tempera | | 4 | | - 2 | 127 | 74 | 4 | 430 |
| Rainfall | | | 17 | 1 | F | - | 2 | 430 |
| History | | | 14 | 4 | | - | | 430 |
| Archaeology | | 10 | 10 | | | | .4 | 431 |
| | | | | 4 | | | - | 432 |
| Castes and occupation | | | | | | | | 432 |
| Christian missions | | - | | - | | | - | 432 |
| General agricultural | cond | itio | ns. | Ų. | . 21 | | - 82 | 433 |
| Chief agricultural sta | tistic | n a | nd pri | ncipa | Crop | 8:e | - | 433 |
| Improvements in agr | icult | ura | pract | tice | 4 | | 18 | 433 |
| Cattle, ponies, and s | heep | - | | | | - | - 0 | 434 |
| Irrigation . | . 18 | | | | | 100 | | 434 |
| Minerals . | | | | | | | | 434 |
| Arts and manufactur | CF. | | | | | | | 434 |
| Commerce . | | 41 | - | | | | | 434 |
| - Railways and roads | | 71 | 22 | | - | | | 434 |
| Famine | | 111 | | | | 113 | - 8 | 435 |
| District staff | | 10 | | 4 | | 14 | | 435 |
| Civil justice and crin | | | | | - | 24 | | 435 |
| Land revenue admin | | | 1 5 | | | (4) | | 435 |
| Local self-governmen | | | | | | - | | 436 |
| Police and jails | | | | | | | | 436 |
| Education . | | | | - | | | - | 436 |
| Hospitals and disper | sarie | 25 | | - | | | | 436 |
| Vaccination . | | - | 3.1 | | - 3 | | - 7 | 436 |
| Ribliography | - | | - 5 | 33 | - 5 | 72 | 6 | 436 |
| PARTABUARN TARRIL | | | - 6 | | | | | 436 |
| KUNDA | | | -0 | | 0. | 100 | | 437 |
| DECUMENTAL A | | - | - | | - | | 100 | 1000 |

| | | | | | | | | TAGE |
|----------------------|----------|-------|---------|--------|--------|-------|------|-------|
| PATTI | 1911 | | - | - | | | 7) | 437 |
| Beila | ., | | | | 4 | - 1 | - | 437 |
| PARTABGARH TOWN | | à | - 3 | 35 | - | - 5 | - 61 | 438 |
| BARA BANKI DISTRICT | 761 | V | V. | 100 | | 1 | | 449 |
| Boundaries, config | guration | n, a | nd riv | er sys | stem | - 61 | 7 | 438 |
| Geology - | 14 | 3 | - 8 | 141 | - 16 | 4. | 10 | 439 |
| Botany | (10) | Ö. | - 30 | 100 | 10 | | - | 439 |
| Fauna | 10 | × | | - 20 | - 1 | | 12 | 439 |
| Climate and temp | erature | la - | | 193 | 1,9 | | 191 | 439 |
| Rainfall | 100 | | | | | | 200 | 439 |
| History | | | - | | - | ** | | 439 |
| Archaeology . | 1.5 | 10 | | 18.0 | | | | 440 |
| Whe people . | | | 7. | | | - | -0 | 440 |
| Castes and occupa | tions | 3 | 2 | 197 | 12 | T | 33 | 441 |
| Christian missions | | Ä | 10 | 7. | - 14 | - 1 | 10 | 441 |
| General agricultur | al conc | intic | ms. | 8 | - 19 | | 10 | 14.60 |
| Chief agricultural | | | | | d crop | X8:56 | 1.00 | 442 |
| Improvements in | | | l pract | tice | | | 161 | 442 |
| Cattle, ponies, and | Sheep | | | 29 | (%) | | | 442 |
| Irrigation . | 59 | 10 | 100 | 12 | | - | - | 442 |
| Minerals | | 81 | 10 | | | - | 100 | 443 |
| Arts and manufact | tires | 7 | | | | | | 443 |
| Commerce , | | 4 | | | ě | - 6 | 2 | 443 |
| Railways and road | 8 1 | 8 | | | (E) | - 1 | 14 | 443 |
| Famine | | | 11 | 7.0 | ř. | - | - | 444 |
| District staff | | 9 | - 21 | 1 | | - | 24 | 444 |
| Civil justice and co | | á) | 4.0 | (4 | 1.8 | - 1 | -14 | 444 |
| Land revenue adm | | tion | 10 | 10 | | E | 9 | 3444 |
| Local self-governm | | ¥. | 10 | 19 | | .0 | 28 | 445 |
| Police and jails | | 83 | 100 | (+ | | - 1 | 3 | 445 |
| Education . | | 55 | | t. | | 15 | 24 | 445 |
| Hospitals and disp | ensari | en. | - 51 | 7. | - 11 | 500 | 33 | 445 |
| Vaccination - | | 55 | | 15 | | - | 3 | 445 |
| Bibliography . | 9 | T | | 9 | | - | - | 445 |
| RAMSANERIGHAT | 2 | 2 | 1 | 100 | 2 | 0 | 12 | 446 |
| NAWABGANJ TAHSIL | | À | 14 | 14 | A. | - 6 | -4 | 446 |
| FATEHPUR TABSIL | 1 | 0.1 | | 3 | - | - 51 | 4 | 446 |
| HAIDARGARH | | ėl. | 100 | 79 | - 30 | P. | - | 1447 |
| BAHRAMGHAT . | 2.7 | 10 | G. | A | 8.1 | 000 | 16 | :447 |
| BARA BANKI TOWN | 0.1 | F); | - | | 4(| 101 | | 447 |
| BURHWAL | 21 | 15 | 9 | ¥ . | 90 | 25 | 1.0 | 448 |
| | | 100 | 58 | 16 | 15 | 135 | - | 448 |
| FATEHPUR TOWN | 0.0 | 9, | | | - | 4 | 12. | 448 |
| NAWABGANJ TOWN | | | 1.0 | | | | | 448 |

| TAB | LE | OF | CON | TEN | 7.5 | | | exxiii |
|-----------------------|------|--------|---------|--------|-------|--------|-----|--------|
| re . | | | | | | | | PAGE |
| Runaud | | | | - | 13 | | | 449 |
| ZAIDPUB | 9 | - 4 | | | | | - | 449 |
| RAMPUR STATE | Α, | | 1 | - | | - | 450 | -460 |
| Boundaries, config | | | | er sys | tem | 14 | A | 450 |
| Geology | ě | | | 91 | 16. | - 1 | 61 | 450 |
| Botany | | [9] | 18 | 4. | b. | 16 | 6 | 450 |
| Fanna | | | | 100 | 26 | | - | 450 |
| Climate, temperatu | | ind ri | infall | 71 | 0.1 | - 0 | | 459 |
| History | | 11 | | 100 | - 1 | -80 | - | 450 |
| The people | 7 | 52 | 7. | | | - 10 | | 452 |
| Castes and occupat | | | | - 8 | 3 | | | 452 |
| Christian missions | | | - 4 | | (4) | | - 6 | 453 |
| Agriculture | ы | - 13 | . * | 10.0 | - | - | - | 453 |
| Cattle and pomes | | 14 | | F., | | - | | 453 |
| Irrigation | | | | 100 | 74 | | | 453 |
| Arts and manufacti | | 19 | ×. | - | | | 100 | 453 |
| Commerce | | - | | - | | | 100 | 454 |
| Railways and roads | - | | | | | | . 5 | 454 |
| Famine | | | | - 5 | | | | 454 |
| Administration | 8 | - 3 | | - 51 | - 3 | | | 454 |
| Legislation | | 10 | - | | | | | 454 |
| Justice | 16 | - | | | | - 4 | | 454 |
| Finance | 10 | 34 | - 22 | P . | - | | | 455 |
| Land revenue | . 22 | | - 11 | -0 | | - | | 455 |
| Miscellaneous rever | nue | 10 | - 4 | 2 | | | | 456 |
| Municipal | | 12 | - 11 | 5 | 19 | 100 | 100 | 450 |
| Public works | 6 | | | 5 | - | | | 456 |
| Army | 10 | 3 | 1 | | | | 100 | 456 |
| Police and Jails | 53 | - 8 | | -5- | | -8 | | 450 |
| Education | 10 | 10 | . X | | | | | 456 |
| Hospitals and dispe | | | 27 | 10.1 | | | | 457 |
| Vaccination | T. | -12 | - 1 | -11 | 71 | | - 0 | 457 |
| Bibliography | 100 | 16 | | 2.1 | 14 | - | | 457 |
| HUZUR TAHSIL | - | 19 | Ā | - 0 | à | | 100 | 457 |
| Shahabad Tahsil | 4 | 100 | | | 201 | 100 | - | 457 |
| MILAR | oc. | 197 | - 0 | 15 | | ->- | 10 | 457 |
| BILASPUR TAHSIL | 87 | 1.0 | 33 | 15 | 12 | | 1 | 458 |
| Star | 90 | 18 | 1. | 183 | 7 | | 11 | 458 |
| RAMPUR CITY . | 71 | 1.77 | - 51 | 5 | 17 | 6. | 1 | 458 |
| Shaharad Town | 53 | | - | -8 | | | 1 | 439 |
| TANUA | - | | - 5 | | - | A | - | 459 |
| TERRI STATE (or TERRI | | | | | | - 5 | | -166 |
| Boundaries, configu | | | nd:hill | and: | river | system | 18. | 460 |
| Geology | ā | 8 | - 6 | | 14 | | | 160 |
| | | | | | | | | |

the W.

TABLE OF CONTENTS

| XXXIV | TAB | LE C | F C | ONZ | EN2 | 35 | | | |
|-------------|---------|---------|--------|--------|-----|------|-------|------|------|
| | | | | | | | | | PARK |
| Botany . | | 2. | II. | 15 | 12 | 60 | 38 | * | 460 |
| Fauna . | - 2 | 1 | USS. | A | 10 | 70 | 20.00 | ::: | 450 |
| Climate, te | mperati | ire, ar | id rai | infall | Ψ. | 15 | 15 | 3 | 46t |
| History and | archae | cology | | .03 | | 2.5 | 150 | 2 | 461 |
| The people | 100 | | | 13 | 12 | 7.1 | 1 | 100 | 461 |
| Custes and | | | +1 | 3 | 10 | 2 | - 1 | 7 | 461 |
| Christian u | | | | - | 9 | 2 | 2.0 | 12 | 462 |
| Agriculture | | | | 1 | 177 | - 1 | F | 4 | 462 |
| | | - | | -8 | 14 | - | | - | 462 |
| Trade . | | | 2 | 17. | - | . 0 | 41 | 10 | 462 |
| | | 3 | | - 5 | 4 | | *1 | 1.5 | 4612 |
| Administra | tion an | d justi | ice: | 10 | 24 | 18.0 | 11 | 35 | 462 |
| Finance - | | ii. | è | - 60 | 3 | 100 | - 11 | 150 | 463 |
| Land rever | nue - | 36 | 18 | 100 | 38 | 12. | | 12 | 463 |
| Miscellane | ous rev | emie | 0 | 36 | 10 | 17 | - | - 0 | 463 |
| Public wor | | 14 | 3 | | | | - | 12 | 163 |
| Army | | 100 | | | | | - 2 | - 67 | 463 |
| Police and | | | | - | | - | | - | 493 |
| Education | | 1.00 | | | 2 | - 9 | 4 | 61 | 463 |
| Hospitals | and dis | pensa | ries | - 1 | F. | 9 | - 34 | 9.7 | 464 |
| Vaccinatio | | - | 11 | i a | 41 | 14 | 1.0 | - 10 | 464 |
| Bibliograp | hy - | | - | ě | 40 | 10 | - 1 | - 33 | 464 |
| SAKLÄNÄ E | | | 19 | | 0.1 | | 12 | 7.5 | 464 |
| BHAIRONGH | | - 61 | | | | 100 | 1.0 | - 23 | 464 |
| DEVAPRAVA | 6 | | 100 | | 4.0 | 191 | 7 | | 464 |
| GANGOTRÍ | | - 0 | - | | - 7 | | | 2 | 465 |
| JAMNOTRI | | - 10 | 14 | - 3 | | - 9 | - | | 465 |
| TEHRI TOW | | | 150 | 17 | - | - 61 | -14 | - | 403 |
| | | | | | | | | | |
| INDEX - | | | - | 19 | | _ × | - 0 | 40 | 7-52 |

Man at end

PROVINCIAL GAZETTEERS OF INDIA

UNITED PROVINCES

VOLUME II

ALLAHĀBĀD DIVISION

Allahabad Division,-A Division on the south-western border of the United Provinces, extending from the northern terraces of the Vindhyas to the Ganges, and lying between 24° 11' and 26" 58' N. and 78" to' and 82" 21' E. On the norther is bounded by the Etawah and Farrukhabad Districts of the Agra Division; on the north-east the Ganges divides the greater part of the Division from Oudb, a portion of Allahabad District extending north of the river; Mirzapur District lies on the east; and the southern and western boundaries are formed by Native States of the Central India Agency. The headquarters of the Commissioner are at ALLAHARAD CITY. The number of inhabitants at the four enumerations was as follows: 5,377,928 (1872), 5,588,287 (1881), 5,757,121 (1891), and 5.540,702 (1901). The portion of the Division lying southwest of the Junma, called BUNDELKHAND (British), suffered more severely than any other part of the Provinces in the faming of 1806-7. The total area is 17,270 square miles, and the density of population is 321 persons per square mile, compared with 445 for the Provinces as a whole. The Division has the largest area, but is only fifth in regard to population. In 1901 Hindus formed on per cent, of the total population and Musalmans 9 per cent. Members of other religions included Christians (14,080, of whom 5,005 were natives) and Jains (13,240). The Division contains seven Districts, as shown below:-

| | | Area in | Populatino, | and reserve to 1003-4. |
|-------------|-------|---------|-------------|------------------------|
| Campore | | 2,384 | 1,258,868 | 23,61 |
| Fatchpur | 8 3 | 1,618 | 686,393 | 75.73 |
| Dianda. | 5 5 | 3,090 | 621,038 | 10,51 |
| Handreen | 10 | 2,250 | 488,841 | 31,48 |
| Allabithini | 11 | 2,811 | 1,489,358 | 27,39 |
| District . | 4 /41 | 8,6.08 | 610,759 | 7/44 |
| Jälsen . | 50.00 | 1,480 | 899,726 | 71,38 |
| | Total | 17,170 | 3,540.700 | 1,06,04 |
| W.F. 11. | | | 31 | |

TABLE OF CONTENTS

XXXIV

| | | | | | | | | FAGE |
|----------------|-----------|------|--------|------|------|-----|------|--------|
| Botany . | | | | 4 | 7/ | 2. | V. | 460 |
| 1188000 | | | . 6 | 100 | 2. | 11 | 19 | 400 |
| Climate, temp | | | infall | 17 | | 10 | 4 | 461 |
| History and a | rchaeolog | y . | - | - | | 100 | 4 | 461 |
| The people | | | | 20 | | | | 461 |
| Castes and oc | | | | - | 75 | *1 | 9 | 461 |
| Christian miss | | | | (40) | 14 | | - | 4612 |
| Agriculture | | | | 14 | | | | 462 |
| Forests - | | - 4 | | | | 70 | 9 | 462 |
| Trade . | E 18 | | , | 110 | | - | - | 462 |
| Roads - | e 16 | | | | 0 | 2 | Tall | 462 |
| Administration | | tide | - 1 | 725 | 7 | 141 | - | 462 |
| Finance - | | 2 | à i | 000 | - | 91 | .4 | 463 |
| Land revenue | E 12 | 17 | 9 | 181 | 15 | 40 | 9.7 | 463 |
| Miscellaneous | revenue | i ä | 9 | 100 | 16 | * | 100 | 463 |
| Public works | 21 19 | 20 | 47 | (0) | 0 | | 100 | 463 |
| Army | 4 100 | 16 | | 5+3 | - 19 | | | 463 |
| Police and jai | | 19 | | | 12 | | | 463 |
| Education | 31 540 | - 20 | | | | | - | 463 |
| Hospitals and | dispensa | ries | | | | 0 | 1 | 464 |
| Vaccination | 0 171 | 1.7 | | | - 10 | - 8 | - 6 | 464 |
| Bibliography | | | 11 | 8 | TA . | 8 | 6 | 464 |
| SAKLĀNĀ ESTAT | ne i | | - 10 | 10 | | 127 | 10 | 464 |
| BHAIRONGHATÍ | 7 17 | 17 | | - 5 | 4 | 12 | 10 | 464 |
| DEVAPRAYÃO | V 51 | | - 5 | - | - | | - | 464 |
| GANGOTRI . | 40 | - | | - | | | 10 | 465 |
| JAMNOTRI . | 45 100 | | | | - | | - | 465 |
| Tenni Town | 41 141 | | | | | | - | 465 |
| | | | | | | | | |
| NDEX . | | - 4 | 4 | | 191 | 16 | 461 | -524 |
| | | | | | | | | |
| 4. | | | - | - | 14 | | 40.8 | it end |

PROVINCIAL GAZETTEERS OF INDIA

UNITED PROVINCES

VOLUME II

ALLAHĀBĀD DIVISION

Allahabad Division,-A Division on the south-western border of the United Provinces, extending from the northern terraces of the Vindhyas to the Ganges, and lying between 24" 11' and 26" 58' N. and 28" 10' and 82" 21' E. On the norther is bounded by the Etawah and Farrakhahad Districts of the Agra Division; on the north-east the Ganges divides the greater part of the Division from Oudh, a portion of Aliahibad District extending north of the river; Mirzspur District lies on the east; and the southern and western boundaries are formed by Native States of the Central India Agency. The headquarters of the Commissioner are at ALLAHABAD CITY. The number of inhabitants at the four enumerations was as follows: 5,377,928 (1872), 5,588,287 (1881), 5,757,181 (1891), and 5,540,702 (1901). The portion of the Division lying southwest of the Jumma, called BUNDELKHAND (British), suffered more severely than any other part of the Provinces in the famine of 1896-7. The total area is 17,270 square miles, and the density of population is 321 persons per square mile, compared with 445 for the Provinces as a whole. The Division has the largest area, but is only fifth in regard to population. In 1901 Hindus formed oo per cent, of the total population and Musalmans 9 per cent. Members of other religions included Christians (14,080, of whom 5,005 were natives) and Jains (13,240). The Division contains seven Districts, as shown below:-

| | | Area in | Population, | Land revenue and cesses for 1003-4, in thomsedant ruposs, |
|-----------|-------|---------|-------------|---|
| Самироле. | | 2,384 | 1,218,858 | 73,61 |
| Fatespur | | 1,618 | 686,391 | 15,13 |
| Banda. | 4 4 | 3,060 | 611.038 | 10,51 |
| Hamirpur | | 2,289 | 458:342 | 11,48 |
| Allahähäd | . (6) | 2,811 | 1,489,358 | 97.39 |
| Hillian | 1 14 | 3,518 | 610,759 | Tr44 |
| Jalann | | 3.480 | 309.726 | 11,38 |
| | Total | 17,170 | 5,540,701 | 1,05,04 |

B:P. 811

и

Campore, Fatehour, and part of Allahabad lie in the Jumna-Ganges Doals, and a portion of Allahabad extends north of the Ganges. The southern portions of Allahabad, Bands, Hamtrour, and Jhansi lie on the outer terraces of the Vindhyas, or are studded with outlying hills of the same system, while the remaining portions of these Districts and

also Ialaun stretch northwards in a level plain.

The Division contains 10,050 villages and 51 towns, but most of the latter are very small. The largest towns are CAWNPORE (197,170 with cantonments), ALLAHABAD (172,032 with cantonments), Juliusi (55,724 with cantonments), and Bānnā (22,565). Cawnpore is the largest trading and manufacturing centre in the Provinces; Allahabad is the seat of Government and an important religious centre; and Jhansi derives its importance from its communding position. The southern Districts contain a fine series of Hindu temples and fortresses, the memorials of the Chandel rulers of MAHCBA.

Itounfiguration, and river system.

Cawnpore District (Kingur).-Northern District of the daries, con- Allahahad Division, United Provinces, lying between 25° 56' and 26° 38' N. and 79° 31' and 80° 34' E., with an area of 2,384 square miles. It is bounded on the north-east by the Ganges, which divides it from the Oudh Districts of Hardot and Unao; on the north-west by Farrukhahad and Etāwah; on the south-west by the Jumna, which separates it from Jalaun and Hamirpur; and on the south-east by Fatehpur. Cawapore forms part of the Doxu, or great alluvial plain between the Ganges and the Jumna; and it does not materially differ in its general features from other portions of that vast tract. It consists for the most part of a level platean, varied only by the courses of the minor streams whose waters eventually swell the great boundary rivers. There is a general slope towards the south-west, and all the river channels trend in that direction. The Isan cuts off a small angle to the north, joining the Ganges shortly after its entry within the limits of Cawnpore; next come the Panda and Rind or Arind, which traverse the central portion of the District from end to end; while the Sengar, after a southwesterly course through part of the District, turns south abruptly and falls into the Jumoa. The banks of both the Sengar and jumna are deeply furrowed by extensive ravines, which ramify in every direction from the central gorge. Their desolate appearance contrasts strongly with the rich and peaceful aspect of the cultivated country above. The Ganges and Tumns are navigable throughout their course, but water-borne

traffic has decreased. Although no lakes of any size exist, there are several *jhils* or swamps, especially in the northern and central portions; and in the south-west a long drainage line, called the Sonts, gradually deepens into a regular water-course.

The District consists entirely of Gangetic alluvium; but Geology.
kankar is found in all parts, and large stretches of country,
especially in the Ganges-Pändü Doüb, are covered with saline
efflorescences.

The flora of the District presents no peculiarities. The Botanyonly extensive jungles are of dhith (Butea frondosa). Groves of mangoes cover a larger area; and mahnā (Bassia latifolia), filmum (Eugenia fambolana), nim (Melia Asadirachta), and babūt (Acacia arabica) are the commonest trees.

Leopards are found near the confluence of the Sengar and Fance. Jumna, ravine-deer along the Jumna, and antelope and nilgar in small and decreasing numbers throughout the District. Wild hog are common near both the great rivers, and wolves along the bank of the Ganges are sometimes dangerous to human life. Partridges, quail, and hares are common; and geese, duck, teal, and other aquatic birds haunt the marshes in the cold weather. Fish are plentiful, and are freely used for food.

The climate is hot and dry. From April to July westerly Climate winds prevail; the rainy season lasts till the end of September and temperature or beginning of October, and the cold weather begins in November. The District is, on the whole, well-drained, and is therefore fairly healthy.

The average rainfall over a long series of years is 33 inches, Rainfall, evenly distributed throughout the District. From time to time there are considerable variations in the fall, which greatly affect agricultural conditions. In 1894 the amount was as much as 50 inches, and in 1897 only 19 inches.

The early history of the District is unusually meagre, owing History, to the fact that it contained no town of importance, and was divided between kingdoms or provinces whose capitals were situated beyond its limits. Thus in the reign of Akbar it was divided between the archive of Kanau, Kālvē, and Korā. On the fall of the Mughal empire the District fell into the possession of the Bangash Nawab of Farrukhāsān and remained in his power from 1738 to 1754, when the Marāthās occupied the Lower Doāb. After the great battle of Panapat the Farrukhāhād Nawāb again acquired part of the District, and gave some help to Shujā-ud-daula in his second attempt

against the English, which ended in the victory of the latter near Jajmau in 1765. The result of that event was the restoration to the emperor Shah Alam II of a tract seath of the Gauges, including part of this District. A few years later the Marathas again advanced, and the emperor joined them. The Oudh forces were successful in driving the Marathas out of the Doub, and in 1773 the territory granted to the emperor was assigned to the Nawab of Oudh. About 1778 a British cantonment was founded at Cawnpore, and in 1801 the whole District was ceded with other territory. The later history is uneventful till the date of the Mutiny of 1857. The events of that terrible summer are described in detail in the article on Cawnpose City.

The revolt commenced on June 6, when the native troops seized the treasury, broke open the jail, and burnt the public offices. For three weeks the small European garrison held out in entrenchments, hastily prepared in the middle of an open plain. On June 26 they capitulated on a sworn promise of protection, which was broken almost as soon as made. As the survivors of the siege were embarking in boats for Allahabad, fire was suddenly opened by men in ambush. With bardly an exception, the men were shot down on the spot and the women were carried off to prison, where they were afterwards all cut to pieces under the orders of the Nana, at the first sound of Havelock's guns outside Cawapore. General Havelock had fought the battles of Aung and the Pandu Nadi on the 15th of July, and next day took Cawnpore by storm. The 17th and 18th were devoted to the recovery of the city, and the 19th to the destruction of Bithur and the Nana's palaces. Two or three unsuccessful attempts to cross into Oudh were hazarded; but no actual advance was made until the arrival of reinforcements under General Outram towards the end of August. Lord Clyde's column passed through to the relief of Lucknow on October 19, and Colonel Greathed followed a week later. In November the Gwalior mutineers crossed the Jumna, and, being joined by a large force of Oudh rebels, attacked Cawnpore on the 27th, and obtained possession of the city, which they held till Lord Clyde marched in the next evening. On December 6 Lord Clyde routed them with great loss, and took all their guns. General Walpole then led a column through the country, restoring order in Akbarpur, Rasulabad, and Derapur, The District was not completely pacified till after the fall of Kalm in May, 1858. But that event rendered its reorganization easy; and when Firoz Shah fied through it in December, 1858, his passage caused no disturbance.

Some interesting copper arrow-heads and hatchets have been Xichaenfound near Bithur. Along the course of the Rind stands logy. a series of Hindu temples, mostly of small size, dating from the sixth to the ninth centuries.

There are 6 towns and 1,962 villages in the District. In The spite of adverse seasons population is increasing steadily. The people numbers at the four enumerations were as follows: 1,136,055 (1872), 1,181,196 (1881), 1,200,695 (1891), and 1,258,868 (1901). Campore contains eight tahsils-Akbarpuk, Bu HAUR, BROGNIPUR (or Pukhrayan), CAWNPORE, DERAPUR, NARWAL (or Sath Salempur), SHIVARAIPUR, and GRATAMPUR—the headquarters of each being at a place of the same name. The only large town is Cawnroug Crry, the administrative head-quarters of the District. The following table gives the chief statistics of population in 1901 :-

| Tunat | Ares for square miles. | Trem. | Villages, pp. | Population | Pepalation per square mile. | Percentage of va- station in proper lation between the and again. | Number of per- sens able to read and write. |
|--|--|--|--|---|--|--|---|
| Akbarpur - Bilhaar - Bilhaar - Bhogstpur - Cawapore - Denipur - Narwal - Shivarājpur - Ghātampur - | 243 345 368 253 308 218 276 341 | 日本 中二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十二十 | 199 245 308 221 275 170 311 233 | 107,729 126,261 141,346 138,507 149,393 92,860 147,920 124,662 | 440 453 384 1,196 486 426 536 366 | + 43 - 58 +110 + 43 + 68 - 60 + 51 + 58 | 2,760 4,272 2,788 25,052 4,073 3,366 4,703 3,894 |
| District total | 1384 | 6 | 1,953 | 1,358,868 | 528 | + 44 | 50,508 |

Hindus form more than 90 per cent, of the population, and Musalmans a per cent. The density of population is generally lower than in the rich Districts farther west. In spite of distress caused by the famine of 1896-7, population increased between 1891 and 1901 at a higher rate than the Provincial average. More than 99 per cent, of the population speak Western Hindl, the prevailing dialect being Kanaujia.

The most numerous Hindu castes are: Brahmans, 172,000; Castes and Chamirs (leather-workers and cultivators), 154,000; Ahirs occupa-(graziers and cultivators), 122,000; Rajputs, 95,000; Lodhas (cultivators), 47,000; Kurmis (agriculturists), 45,000; and Koris (weavers), 51,000. The Boriyas or Baurias, who number 15,000.

are akin to the Pasts, and are not found elsewhere. Among Musalmins the chief groups are: Shaikhs, 53,000; Pathans, 18,000; and Saivids, 7,000. Agriculture supports 62 per cent. of the population, general labour more than 8 per cent., and personal services nearly the same proportion. Raiputs, Brahmans, and Kurmis are the principal holders of land; Brahmans, Ahirs, Raiputs, Chamars, Kachhis, and Kurmis are the chief cultivators.

Christian infectors.

In 1901 there were 1,456 native Christians, of whom 547 belonged to the Anglican communion, 330 were Methodists, 50 Presbyterians, and 104 Roman Catholics. The Society for the Propagation of the Gospel has laboured here since 1833. and the American Methodist Mission was opened in 1871.

General serion!tural conditions.

Broadly speaking, there are two main agricultural divisions in the District. In the southern portion the Jumna and Sengar have an extensive system of ravines with small areas of lowland; the upland away from the ravines is mainly loam, but is not very fertile, and bears some resemblance to the neighbouring tract of Bundelkhand south of the Jumna. A striking feature of this tract is the great depth of the water-level, making the cost of irrigation from wells almost prohibitive. 'The northern half of the District consists mainly of good fertile loam, with some heavy rice soil and large usar plains, particularly in the north and north-west. Along the Pandu and Rind are found stretches of lighter loam with a distinctive red colour. In the extreme north a strip of very light soil or bhur is found near the Isan. The Ganges has very little alluvial land, as in most parts of its course it flows close under the high bank,

Chief agricultural statistics.

The tenures found are those common to the United Provinces. In the whole District, 4,336 mahilis are held aamindari, 957 and princi-pathidari, and 20 bhaiyachard. The main agricultural statistics pal cropt for 1903-4 are given below, in square miles :-

| Takett. | Total | Cultivated | Treigand. | Cultivable waste. |
|---------------|-------|------------|-----------|----------------------|
| Akbarper | 945 | 131 | 66 | 37 |
| Billion | 345 | 163 | 76 | 39 |
| Bhogalpar . | 368 | 225 | 67 | 34 |
| Campore . | 283 | Eat | 60 | 24 |
| Desirpur. | 308 | 186 | 78 | 33 |
| Narwal | 118 | 116 | 45 | -32 |
| Shivartipur . | 276 | 145 | 80 | 31 |
| Ghitampur . | 341 | 216 | 60 | 49 |
| Total | 2,374 | 1,323 | 534 | 249 |

The principal food-crops, with the area under each in square miles, were : gram (263), jowar (230), barley (254), and wheat (230). Maize, rice, and bajra are also important. Of the non-food crops, cotton covered an area of 82 square miles, sugar-cane 12, indigo 20, and opium 10.

The area under cultivation has not increased during the last Improvethirty years, nor is there much room for expansion. Important agriculchanges have, however, taken place in the crops sown. These total changes have been in the direction of increasing the area under practice. the food-crops of the poorer classes, such as jourar, rice, maire, and minor products, all of which are grown in the autumn, The spring crops, especially mixed wheat and barley, and mixed gram and peas, have decreased in area, as have the valuable autumn crops, cotton and sugar-cane. A substantial increase has, however, been effected in the area double-cropped; and poppy and potatoes, which are valuable crops, though covering a small area, are being more largely grown. Canal origation has also been extended to two important tracts in the south-west and north-east of the District. A steady demand exists for advances under both the Land Improvement and the Agriculturists' Loans Acts. During the ten years ending 1901 the total advances were 1-7 lakhs, of which Rs. 75,000 was advanced in the famine year 1896-7. In normal years the loans amount to Rs. 3,000 or Rs. 4,000.

The District has no particular breed of cattle, goats, or sheep, Cattle, and the best animals are all imported, the MAKANPUR fair pooles and being the great source of supply. Horse-breeding is not carried on in any part, and the pomies ordinarily bred are very inferior.

Cawopore is largely dependent on canals. In 1903-4, out Irrigation. of 534 square miles irrigated, canals supplied 362, wells 140, and tanks 20. Three main branches of the Lower Ganges CANAL supply the District; namely, the Cawapore branch, the Etāwah branch, and the Bhognipur branch. The first of these is now continued through the east of Cawapore, under the name of the Fatehpur branch. Unbricked wells can be made in all parts of the District, except in the tract near the Jumna, and often last for many years, with annual repairs and cleaning. Water is raised in a leathern bucket by a rope drawn by bullocks.

The only mineral products of the District are kankar or Minerals. nodular and block limestone, and the saline efflorescences called reh.

CAWNFORE CITY is the most important manufacturing centre manufacin the United Provinces. Cotton-spinning and weaving and mess

turning and the manufacture of leather goods are the chief industries carried on; but iron work, woollen goods, sugar, and several other classes of articles are also manufactured. The twenty-five largest factories gave employment in 1902 to neatly 17,000 hands. Outside the city there are few manufactures, and these are confined to the preparation of the articles required for local use.

Commerce.

The trade of the District largely centres in Cawnpore city, which not only takes the lead in industrial enterprise, but is also the greatest commercial mart in Upper India. Articles manufactured here are exported to all parts of the country, and several classes of goods are sent abroad. Grain and pulses, oilseeds, and sugar are exported; while now cotton, salt and saltpetre, metals, and piece-goods are imported for distribution to the surrounding Districts. The traffic is largely carried on the rallway; but grain and cotton are also brought into Cawnpore by road and by the Lower Ganges Canal.

Railways

Cawapore is an important railway junction. The oldest line and roads, is the East Indian Railway, which passes across the District from east to west. Through communication with Bombay is supplied by the Indian Midland branch of the Great Indian Peninsula Railway, while a branch of the Oudh and Rohilkhand Railway runs to Lucknow. The Cawnpore-Achhnera metregauge line traverses a rich tract in the Agra Division, and is connected with the Bengal and North-Western Railway. The District is well supplied with means of communication, being the centre of a system of metalled roads radiating in all directions with a total length of 205 miles, maintained by the Public Works department, 148 miles being repaired at the cost of Provincial revenues. There are also 798 miles of unmetalled roads in charge of the District board. Avenues of trees are kept up on 567 miles. The main routes are the grand trunk road, and the roads from Cawapore city to Ihansi and Sangor, and to Hamirpur,

Famine.

Campore is not liable to such severe famine as are the Districts situated to the west and south, but contains several tracts in which distress is caused by drought. The terrible famine of 1770 extended to this District, and in 1783-4 people and cattle died by thousands. Distress was felt in 1807-4, and the famine of 1837 visited Cawnpore with frightful severity. Cattle died by herds, and whole villages were depopulated. In 1860-1 some distress was felt, but the extension of canal irrigation has been very effective to prevent famine; and in 1868-9 and 1877-8 there was little damage. In 1896-7 distress was

severely felt in the parts not protected by canals, and was, as usual, aggravated by the inrush of starving people from Bundelkhand. In February, 1897, 139,600 persons were in receipt of relief, and more than 4 lakhs was spent on relief works. Large advances were made for seed, bullocks, and wells, and the District recovered rapidly.

The District officer is usually assisted by two members of the District Indian Civil Service, and by four Deputy Collectors recruited staff. in India. A takuldar resides at the head-quarters of each taksil, and two Executive Engineers in charge of divisions of the Lower Ganges Canal are stationed at Campore city.

There are two District Munsifs. The Subordinate Judge Civil and District Judge have civil jurisdiction throughout Campore justice and and Fatehpur Districts, and the latter is also Sessions Judge for both Districts, but only hears appellate criminal cases from Fatehpur. The District is not specially notable for crime. In 1900 a serious riot attended by loss of life took place in the city, and extra police were quartered on it for a time. Female infanticide was formerly suspected; but the last names were removed from the register of persons under surveillance in 1901.

Cawnpore was acquired in 1801, and when first formed Land included parts of the present Districts of Farrukhābād and revenue Fatehpur. The administrator under the Nawab of Oudh before tration. cession had been the celebrated ennuch, Almas Ali Khan, whose method was that of assessing revenue at the highest figure which could be collected. Under British rule short-term settlements were made at first, based on the nominal demand under native rule. This demand was excessive over a series of years, and great scandals arose. The native officials were corrupt and the European officers ignorant or supine; and estates were brought to sale, and purchased for a song, without their owners knowing that they were in arrears. In 1821 a special commission was appointed, with power to inquire into and set aside such sales. The commission annulled 185 auction sales, and a few private sales and mortgages. In 1840 the first regular settlement under Regulation IX of 1833 was carried out. The revenue demand was reduced from 23-2 to 21.8 lakks, and this was further reduced by Rs. 30,000, as the assessment was found to be too high. There were at that time two large talukas in the District, which, in accordance with the usual policy, were broken up and settled with the village proprietors. The next regular settlement was made between 1868 and 1877, in the usual method. Each village was divided into blocks of similar qualities of soil, and rates were selected for the

valuation of these. The result was an assessment of 11-6 lakbs. In 1903 a new settlement was commenced; but procedure has been simplified, as the patroāris' records were proved to be reliable, and where the existing demand is found to lie between 45 and 55 per cent. of the recorded 'assets' no change is ordinarily being made. Collections on account of land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees:—

| | 1880-1. | 1890-1- | 1000-1. | 1003-4 |
|-----------------|---------|---------|---------|--------|
| Land revenue . | 11,49 | 31,36 | 31,32 | 40,39 |
| Total session . | 39,03 | 33,99 | 38,24 | |

Local selfgovernment. There is only one municipality, Cawnpore city; but five towns are administered under Act XX of 1856. The District board, which is in charge of local affairs beyond the limits of these towns, had an income and expenditure of 1-5 lakhs in 1903-4, chiefly derived from rates. The expenditure included Rs. 60,000 spent on roads and buildings.

Police and Jalla. There are 28 police stations; and the District Superintendent of police usually has 2 Assistants, and a force of 6 inspectors, 133 subordinate officers, and 621 constables, in addition to 195 municipal and town police, and 2,882 rural and road police. The District jail contained a daily average of 397 inmates in 1903.

Education.

Campore takes a fairly high place as regards the literacy of its population, and 4 per cent. (7 males and 0-4 females) could read and write in 1901. This is largely owing to the presence of a great city. The number of public institutions rose from 234 with 7,028 pupils in 1880-1 to 271 with 11,177 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 363 public institutions with 12,580 pupils, of whom 529 were girls; besides 205 private schools with 3,406 pupils, including 131 girls. More than 14,000 of the total number of pupils were in primary classes. Three of the public schools were managed by Government and 162 by the District and Municipal boards. The total expenditure on education was 1-1 lakhs, of which Rs. \$4,000 was met from subscriptions and other sources, Rs. 44,000 from Local funds, Rs. 21,000 from fees, and Rs. 15,000 from Provincial revenues. The only college in the District is at Cawnpore city.

Hospitals and dispensaries. There are 18 hospitals and dispensaries, providing accommodation for 153 in patients. In 1903 the number of cases treated was 107,000, including 1,600 in-patients, and 5,400 operations

were performed. The total expenditure was Rs. 28,000, chiefly met from Local funds.

About 33,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, Vaccinated in 1903-4, Vaccination a proportion of 26 per 1,000 of the population, thus. which is rather a low figure. Vaccination is compulsory only in the municipality and cantonment.

(F. N. Wright, Settlement Report, 1878; District Gazetteer,

1881 [under revision].)

Akbarpur Tahsil.-Central tahsil of Cawopore District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 26" 15' and 26" 33' N. and 79" 51' and So" 11' E., with an area of 245 square miles. Population increased from 102,256 in 1891 to 107,739 in 1901. There are 100 villages and one town, Akbarpur, the takiil headquarters (population, 4,734). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,15,000, and for cesses Rs. 15,000. The density of population, 440 persons per square mile, is below the District average. Three rivers flow through the taksil and determine its physical features. The Rind crosses the north and forms part of the eastern boundary. On its banks the soil is reddish and very fertile. The Non rises in a swamp and drains the central belt of loam, the fertility of which is diminished by barren usar and dhak jungle. The soil then deteriorates as the ravines of the Sengar, which marks the southern boundary, are approached. Trrigation is supplied by the Etawah branch of the Lower Ganges Canal. In 1903-4 the area under cultivation was 131 square miles, of which 66 were irrigated, canals supplying two-thirds and wells most of the remainder.

Bilhaur Tahsil.—Northern tahiii of Cawapore District, United Provinces, conterminous with the parguna of the same name, lying between 26° 31' and 26° 58' N. and 79° 40' and 80° 8' E., with an area of 345 square miles. Population fell from 157,593 in 1891 to 156,261 in 1901. There are 245 villages and one town, Britanua, the tahiii head-quarters (population, 5,143). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,00,000, and for cesses Rs. 48,000. The density of population, 453 persons per square mile, is below the District average. The Ganges forms the north-eastern boundary, and the tahiii is crossed by the Isan and Pandii while the Rind flows along the southern side. Near the Isan the soil is light and sandy, but it improves near the Pandii, and a fertile red soil is found along the Rind. Many swamps in the centre of the tahiil are used for irrigating about ten square miles in

ordinary years. In 1903-4 the area under cultivation was 163 square miles, of which 76 were irrigated. The Cawnpore branch of the Lower Ganges Canal is the most important source

of irrigation, but wells supply nearly as large an area.

Bhognipur Tahsii (or Pukhrāvān), South-western taksil. of Cawapore District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lving between 26° 5' and 26° 25' N. and 79" 31' and 80" 2' E., with an area of 368 square miles. Population increased from 120,806 in 1801 to 141,346 in 1901. There are 208 villages and one town, Musinagar (population, 1,575). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. z,68,000, and for cesses Rs. 43,000. The density of population, 384 persons per square mile, is considerably below the District average. On the south flows the Jumna, while the Sengar forms part of the northern boundary and then turns abruptly south to meet the Jumna. Both rivers are fringed by deep ravines, and the soils resemble those found in Bunpar-KRAND. Water is only found at an immense depth, and irrigation is supplied almost entirely by the Bhognipur branch of the Lower Ganges Canal. In 1903-4 the area under cultivation was 225 square miles, of which 67 were irrigated.

Cawapore Tahsil,-Head-quarters tahiil of Cawapore District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, formerly known as Jäjmau. It lies along the Ganges, between 26° 15' and 26° 41' N. and 80° 2' and 80° 26' E., with an area of 28 square miles. Population increased from 324,628 in 1891 to 338,507 in 1901. There are 221 villages and two towns: CAWNPORE, the District and taksil head-quarters (population, 197,170), and BITHUR (7,173). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,56,000, and for cesses Rs. 41,000. The density of population, 1,196 persons per square mile, is more than double the District average, owing to the inclusion of the city. The Panda and Rind are the chief rivers besides the Ganges. There is a high cliff of barren soil along the Ganges, pierced by ravines; but south of this the soil improves and is a fertile loam, which gradually assumes a reddish colour south of the Pāndii. In 1903-4 the area under cultivation was 141 square miles, of which 60 were irrigated. The Cawapore and Fatehpur branches of the Lower Ganges Canal supply about two-fifths of the irrigated area, and wells most of the remainder.

Derapur.—Tahril of Cawnpore District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 26° 20' and 26° 37' N. and 79° 34' and 79° 55' E., with an area of 308 square miles. Population increased from 140,008 in 1891 to 149,593 in 1901. There are 275 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,97,000, and for cesses Rs. 48,000. The density of population, 486 persons per square mile, is below the District average. On the north the taksil is bounded by the Rind, while the Sengar flows near the southern boundary. The northern portion is fertile, but the land on both banks of the Sengar is furrowed by deep ravines. In 1903-4 the area under cultivation was 186 square miles, of which 78 were irrigated. The Etäwah branch of the Lower Ganges Canal serves the area north of the Sengar, and the Bhognipur branch part of the area south of that river. Canals supply nearly two-thirds of the irrigated area, and wells most of the remainder.

Narwal.-Eastern taksil of Cawnpore District, United Provinces, conterminous with the parguna of the same name, formerly called Sarh Salempur. It lies south-west of the Ganges, between 26° 8' and 26° 25' N. and 80° 14' and 80° 34' E., with an area of 218 square miles. Population fell from 98,784 in 1801 to 92,860 in 1901, the decrease being greater than in any other takes in the District. There are 170 villages and one town, Narwal, the taksil head-quarters (population, 2,214). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,20,000; and for cesses 35,000. The density of population, 426 persons per square mile, is below the District average. From the banks of the Ganges rises a high cliff of poor soil; but the land is more fertile in the centre of the taktil, which is drained by the Pandu, and in the south, where the Rind flows through a well-cultivated area. In 1903-4 the area under cultivation was 116 square miles, of which 45 were irrigated. Wells supply two-thirds of the irrigated area, and the Cawnpore and Fatehpur branches of the Lower Ganges Canal most of the remainder.

Shivarājpur.— Takil of Cawnpore District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying along the Ganges between 26° 31' and 26° 46' N. and 79° 55' and 86° 12' E., with an area of 276 square miles. Population increased very slightly from 147,823 in 1891 to 147,910 in 1901. There are 311 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,75,000, and for cesses Rs. 44,000. The density of population, 536 persons per square mile, is above the District average. Along the Ganges lies a high ridge of hard barren or sandy soil. A small river, called the Non, drains a fertile tract south of this area, and the rest of the lakil

is composed of rich loam through which the Pāndā flows. In the west extensive swamps and clay land are found, where rice is grown. In 1903—4 the area under cultivation was 145 square miles, of which 80 were irrigated. The Cawopore branch of the Lower Ganges Canal supplies more than two-thirds of the irri-

gated area.

Ghätampur.-Southern taksil of Campore District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying along the Jumna, between 25° 56' and 26° 19' N. and 79° 58' and 80° 21' E., with an area of 341 square miles. Population increased from 117,797 in 1801 to 124,662 in 1901. There are 233 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,76,000, and for cesses Rs. 44,000. The density of population, 366 persons per square mile, is the lowest in the District. The tabsil is divided into two portions by the small stream called Non. The northern half is a tract of fertile loam, while the southern is occupied by soils resembling those found in BUNDELKHAND, and is much cut up in parts by wild and bare ravines. In 1903-4 the area under cultivation was 216 square miles, of which 62 were irrigated. The Bhognipur branch of the Lower Ganges Canal supplies five-sixths of the irrigated area.

Bilhaur Town.—Head-quarters of the tahril of the same name, in Cawnpore District, United Provinces, situated in 26° 50' N. and 80° 4' E., on the grand trunk road, and on the Cawnpore-Achhnerā Railway. Population (1901), 5,143. The town contains a tahrili and a dispensary, and is administered under Act XX of 1856, with an income of about Ra. 1,100.

The tahsili school has about 100 scholars.

Bithûr.—Town in the takstl and District of Cawapore, United Provinces, situated in 26° 37' N. and 80° to E., near the Ganges, on a branch line of the Cawapore-Achhnerā Railway. Population (1901), 7,173. The Hindus believe that Brahmā celebrated the completion of the creation of the world by a horse sacrifice at this place. A great bathing-fair takes place annually in November at the Brahmāvarta ghit. Early in the nineteenth century the civil head-quarters of the District were for a time at Bithûr. Bāji Rao, the last of the Peshwāa, was banished to Bithûr and had extensive palaces in the town. His adopted son, Dundu Pant, better known as the Nāna Sāhib, was the instigator of the massacre at Cawaponk in 1857. The town was captured by Havelock's forces on July 19, when the palaces were utterly destroyed; but the Nāna succeeded in making good his escape. In the neighbourhood of Bithûr

some prehistoric copper arrow-heads and hatchets have been found. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,000. There is a primary

school with 20 pupils.

Cawnpore City.-Head quarters of the District of the same name, United Provinces, situated in 26° 28' N. and 80° 21' E., on the right bank of the Ganges, 120 miles above its junction with the Jumns at Aliahabad; distance by rail to Howrah (Calcutta) 684 miles, and to Bombay 830 miles. The city is the third largest in the United Provinces and is increasing rapidly. The numbers at the four enumerations were as follows: 122,770 (1872), 151,444 (1881), 188,714 (1801), and 197,170 (1901), including cantonments (24,496). In the eighteenth century it was a mere village known as Kanhaiyapur or Känhpur, of which the present name is a corrupted spelling. Following the British victories in 1764-5 at Buxar and Jajmau, a treaty was made at Fyzahad in 1773 with the Nawab Wastr of Oudh, Shujā-ud-daula, who allowed the British to occupy two stations in his territories with troops. The places first selected were Fatehgarh and a site in Hardor District; but in 1778 the troops were moved from the latter place to Cawapore, and in 1801 the District with others was ceded by the Nawah. Like Calcutta, the city, which is now the most important trade centre in Upper India, owes everything to British influence. The population in 1951 included 144,123 Hindus, 46,040 Musalmans, and about 4,000 Christians, of whom nearly 3,000 were Europeans or Eurasians. The civil lines and cantonments stretch for several miles along the river bank, and separate the native city from it. The latter is of mean appearance, and consists of a maze of narrow winding streets.

In 1857 Cawnpore was the scene of several of the most The terrible episodes of the Mutiny. The native garrison included Mutiny, a company of artiflery, a regiment of cavalry, and three regiments of infantry, while there were only 200 British troops. Inflantmatory runours had already spread before the outbreak at Meerut on May 9, and the news of that disturbance increased them. On May 20 General Wheeler telegraphed to Lucknow for reinforcements; but Sir Henry Lawrence could spare only fifty men. The General then appealed to Dundu Pant, adopted son of the last Peshwa, who was living at Bithur, twelve miles away, and who had a grievance against the British Government, owing to their refusal to recognize his succession to the late Peshwa's pension and title. Dundu Pant, more familiarly known as the Nana Sähib, brought in 300 horse and

foot with two guns. Before the end of May an entrenchment was prepared, consisting of a shallow trench and miserable parapet 4 or 5 feet high, surrounding two long single-storied barracks, the whole enclosure 1 being but 200 yards square. On June 2 the fifty men who had come from Lucknow were sent back with fifty more of the Cawnpore garnson. During the night of June 4 the outbreak began with the departure of the cavalry regiment, followed by the 1st Infantry, and the next day by the other two regiments. In no case were the European officers injured, and a few men from all the regiments, mostly native officers, joined the English in their entrenchments. The sepoys, after plundering the treasury and houses in the civil station and opening the jail, had started for Delhi; but on June 6 the Nana, who had thrown off his too successful pretence of friendship, persuaded them to return. The European entrenchment contained between 750 and 1,000 persons, of whom 400 were men able to bear arms. On June 7 the besiegers, who were subsequently reinforced and had as many as twelve guns, opened their attack in earnest; but in spite of three general assaults on June 12, 18, and 23, failing stores, and difficulty in obtaining water, the defenders still held out. The Nana then decided to have recourse to stratagem. He promised that our forces should be allowed to march out with arms, that carriages should be provided for those who could not march and for the women and children, and that boats properly victualled should be ready at the Sait Chaura ghat to convey everybody to Allahabad. On the other hand, the entrenchments, treasure, and artillery were to be given up. Early on June 26 the evacuation began. Though every detail of the coming massacre had been carefully prepared and the fatal ghat was surrounded by armed men and guns, the mutineers could not restrain themselves, and victims began to fall before they had entered the ambuscade. The majority were, however, allowed to embark, when a bugie sounded just as the boats were ready to start. For twenty minutes grape and bullets hailed on the boats, and only then did the enemy venture to come to close quarters. Every man caught was killed, and the women and children were taken to the Savada Kothi, where their number were shortly increased by the inmates of a boat which had got away, but was subsequently captured. In the meantime, Havelock had been advancing up the grand trunk road, and he defeated the Nana's brother and entered Cawnpore District on July 15.

A Memorial Church now stands near the site of the emrenchment.

The same night five men armed with swords entered the Bibighar, to which the women and children had been removed, and hacked and slashed till all were left for dead. Next morning the bodies of the dead and a few children who had survived were thrown into a well in the compound. The well is now surrounded by a stone screen, and over it is a pedestal on which stands a marble figure of an angel by Marochetti. A large area round it was enclosed at the expense of the town, and is called the Memorial Garden. Cawopore was occupied by Havelock on July 17, and was held till the end of November, when the Gwalior Contingent got possession of it for ten days. It was recovered on December 6 by Sir Colin Campbell on his return from Lucknow.

Since the Mutiny the most serious event has been the riot of April, 1900. Two or three cases of plague had occurred, and several patients had been segregated. A mob of the lowest classes, led by ringleaders in better circumstances, attacked the plague huts and murdered six policemen and a takiil chaprisi. There is reason to believe that some of these were thrown alive into the burning thatch. The rioters then proceeded to the parade-ground, and were dispersed by troops who fired on them. Seven of the ringleaders were hanged, and a punitive force of police was quartered in the city for a year.

Campore has been a municipality since 1861. During the Municipality since 1861. ten years ending 1901 the income averaged 5-6 lakhs, and the pality. expenditure 5-5 lakhs; but the income includes loans from Government, amounting to 14% lakhs in the decade. Owing to its position as a trading centre, octroi was not levied here for many years, the chief receipts being derived from a licence tax on trades and professions, and from the rents of escheated lands within the municipality, which are under the management of the municipal board. In 1892 octroi was introduced, but two years later it was replaced by a terminal tax on both imports and exports, which now produces about half of the total receipts. In 1903-4, out of a total income of 5-x lakhs (excluding a loan of ro lakhs), the principal receipts were, terminal tax (r-9 lakhs), tax on professions and trades (Rs. 60,000), house tax (Rs. 50,000), and tents (Rs. 35,000). The expenditure of 11-3 lakhs included general administration (Rs. 19,000), collection of taxes (Rs. 22,000), public works (Rs. 01,000), conservancy (154 lakhs), repayment of loans with interest (3-9 lakha), besides capital expenditure (2-3 lakha), and plague charges (Ra. 17,000).

A system of water-works was completed in 1804 at a cost of 142 lakhs, and the annual charges for maintenance amount to about Rs. 68,000, while the income from sale of water is Rs. 27,000. The works supply the whole city with drinkingwater drawn from the Ganges and filtered before distribution; standposts are situated in all parts for public use, and the daily supply amounts to about 10 gallons per head, about one-seventh being taken by a few of the large mills. A drainage scheme, which was much needed, is now being carried out, and the house tax was specially imposed to meet the extra charges that will be necessary. The main sewers are complete, and the branches are nearly finished. The initial cost of the scheme was for the first time in the United Provinces met from a loan raised in the open market. Refuse is removed from the city by a steam tramway, the only one of its kind in the Provinces, and incinerators have been erected to consume it. An electric tramway has been sanctioned to run for about four miles through the town. The receipts of the cantonment fund during the ten years ending 1901 averaged Rs. 50,000, and the expenditure Rs. 48,000. In 1903-4 the income and expenditure were Rs. 60,000 and Rs. 68,000 respectively. The ordinary garrison in the cantonment consists of British infantry and artillery, and native infantry and cavalry.

While Campore first became of importance as a military cantonment, its subsequent growth has been the result of alterations in trade routes dating from its connexion by mil with Calcutta in 1863. When the demand for cotton arose during the American Civil War, it was easiest to send it from Bundelkhand to the railway at Campore. The strain on Campore was difficult to meet. Lands covered with the mud huts of camp followers were hastily taken up by the authorities. Commissuriat elephants were brought out to push down the fruil erections in order to clear space for the storage of the bales of cotton, which, piled up level with the roofs, had been blocking every lane in the city. At the same time the ordinary country produce of the Doab and of Oudh began to pour in here instead of passing by along the river. The trade which thus had its origin in the alignment of a railway has been immensely increased by the later development of the railway system of Upper India. In addition to the East Indian Railway, the Oudh and Rohilkhand and the Indian Midland broad-gauge systems pass through Cawapore, providing through communication with the northern part of the Provinces and with Bombay, while the narrow-gauge lines traversing Rajpu-

Tinde.

tana and Central India on the west, and the Districts north of the Gogra and Bihar and Bengal on the east, meet here. A network of sidings also connects these lines with the chief factories in the place. In the last ten years imports have increased by about 2,000,000 maunds, and exports by 3,000,000 maunds, or by 30 to 40 per cent, in each case.

Cawnpore, however, is not only a collecting and distributing Manufactures. centre for raw products, such as cotton, food-grains, oilseeds, salt, saltpetre, sugar, and foreign manufactured goods; it has also become a great manufacturing town. In 1869 the Eigin Cotton-Spinning and Weaving Mills were founded by a company and subsequently purchased by a private individual. Since then three other mills have been opened by companies: the Muir Mills in 1875, the Cotton Mills, Limited, in 1882, and the Victoria Mills in 1887. The nominal capital in 1903-4 was 67 lakhs, excluding the Elgin Mills, and there were 3,215 looms and 242,616 spindles at work, employing 6,395 persons daily. The next industry to be organized in factories was tanning, which has now become of even greater importance than cotton. In Upper India tanning is the traditional occupation of Chamārs, who are also day-labourers, and formed a large proportion of the early population of the town. A Government Harness and Saddlery Factory-opened on a small scale soon after the Elgin Mills commenced operations-now employs 2,000 to 2,500 hands, and turns out goods valued at 30 lakhs annually. A still larger concern is the Army Boot and Equipment Factory, owned by a private firm, and employing over 3,000 persons. In 1903 the three large tanneries inspected under the Factory Act employed 4,015 persons, and including small native works it was estimated that the capital exceeded 45 lakhs and that about 10,000 hands were employed. Military requirements have been supplied not only throughout India, but to troops sent from England to Egypt, China, and South Africa, while the boots and shoes manufactured here are also sold in the Straits Settlements and in South Africa. The chief tarming material is the bark of the habil tree, which is found all over the Doab. A woollen mill was opened in 1876, which has developed from a small blanket. manufactory into a large concern with a capital of 20 lakhs, employing 1,500 hands and using 500 looms and 13,100 spindles, while the out-turn consists of every class of woollen goods, valued at 17 lakhs. The other factories in Cawnpore include a augar mill where rum is also manufactured, a jute mill, seven cotton gins and presses, a tent factory, two flour

mills, a brush and cabinet-making factory, two iron foundries, a tape factory, and chemical works. There is a small but increasing native industry in cheap cutlery. The total capital sunk in manufacturing enterprise is estimated at one million sterling, and more than half the inhabitants of the city are directly dependent on it. It must be pointed out that the manufactures of cotton, wool, leather, flour, and sugar, referred to above, were all assisted materially in the first place by Government contracts for army purposes; but although their establishment without such aid might have been difficult, they could now, aimost without exception, be maintained independently of the official market.

The Upper India Chamber of Commerce was founded at Campore in 1889, and now represents practically every European commercial firm and manufacturing concern of consequence in the United Provinces and the Punjab. The association takes for its object the general welfare and interests of trade and commerce, and has supplied a want which would otherwise have been greatly felt. It has recently been decided to move the Allahabad Currency Office to Cawmpore.

The principal educational institution is Christ Church Education. College, maintained by the Society for the Propagation of the Gospel Mission. It was founded as a high school in 1860 and affiliated to the Calcutta University in 1866. It is now affiliated to Allahābād, and was raised to the first grade in 1896. In 1904 the number of students on the rolls was 106. The same mission also manages an industrial school, which includes a carpenter's shop and brass foundry. The municipality maintains ten schools and aids twelve others, with a total attendance of 1,046. An agricultural school at which hamungos are trained, with a large experimental farm, situated in the old civil lines, north of the city, is now being converted into a college. There are twenty-four printing-presses and three weekly and four monthly newspapers, none of which is of much importance.

(Valuable information on the trade of Cawapore has been obtained from a note by the late W. B. Wishart, secretary to

the Chamber of Commerce.)

Makanpur.-Village in the tahsil of Bilbaur, Cawnpore District, United Provinces, situated in 26° 54' N. and 79° 59' E., 40 miles north-west of Cawopore city. The shrine of a Musalman saint, named Shah Madar, who had originally been a Jew, attracts a large number of pilgrims annually, both Musalmans and Hindus, the latter regarding the saint as an incarnation of the god Lakshmana. In addition to the religious attractions of the fair, a large cattle-market is held, at which 15,000 to 20,000 animals of all kinds are offered for sale.

Fatehpur District.- District in the Allahabad Division, Boun-United Provinces, lying between 25" 26' and 26" 16' N. and daties, possipure 80° 14' and 81° 20' E., with an area of 1,618 square miles. It tien, and is bounded on the north by the Ganges, dividing it from Rae river Barell District in Oudh; on the west by Cawapore; on the south by the Jumna, separating it from Hamirpur and Banda Districts; and on the east by Allahabad. The District of Fatehpur forms a portion of the Doan, or great alluvial tract between the Ganges and the Jumna, and its main features do not differ from those common to the whole area enclosed by these two great rivers. It consists for the most part of a highly cultivated and fairly well-wooded plain. A ridge of slightly higher land, forming the watershed of the District, runs through it from east to west, at an average distance of three to five miles from the Ganges. In the extreme west are three small rivers - the Pandu, which flows northward into the Ganges, and the Rind and the Non, which swell the waters of the Jumna. The tract enclosed between the Jumna and the two last-named streams is a tangled mass of ravines, with wild and desoiate scenery. Shallow lakes (jhils) are common in the midland portion of the District, which is badly drained, but they ordinarily dry up by January or February. As a whole, the western region is the most cut-up by ravines and covered with bubil jungle; the central tract is more generally cultivated, though interspersed with frequent patches of barren usar; and the eastern part, near the Allahabad border, is one unbroken stretch of smiling and prosperous tillage.

The soil consists entirely of Gangetic alluvium, in which Goology, kankar is the chief mineral product.

The District is well supplied with cultivated trees, in parti-Botany. cular the mango in the west and the makua in the east. Groves are especially numerous in the south-east. Shisham, nim, siris, pipal, and imit, are common along roadsides and near the village sites, while babul, ber, and dhak flourish in the ravines and on waste land.

Leopards are occasionally found in the ravines along the Fanna. Jumna and Rind, and wolves abound in the same tracts. Wild hog and jackals are common everywhere, and the nilgai and antelope are to be seen in places. The ravine-deer is found wherever there is broken ground, and often where the country is rolling or undulating Wild-fowl of all kinds are very

abundant, and geese, duck, and teal swarm in the numerous jilis during the cold weather. Crocodiles, porpoises, and fish of many kinds are common in the large rivers.

climate and temperature. The climate of Fatehpur is that of the Doab generally; but from its easterly position the west winds do not reach it with such force in the bot weather as in Agra and the western Districts. The surface is somewhat marshy, and the numerous jkils render the atmosphere damp. It is, however, not unhealthy.

Rainfall.

The average annual rainfall over the whole District is 34 inches, and variations in different parts are small. The amount received from year to year, however, fluctuates considerably. Thus in 1894 the fall was 71 inches, and in 1896 less than 17 inches.

History.

According to tradition, the Rajas of Argal held a large part of the District as tributaries of the Kanauj kingdom before the Musalman conquest, and Jai Chand, the last king of Kanauj, is said to have deposited his treasure here before his final defeat in 1104. Nothing definite is known of the history of the District during the early Muhammadan period when it formed part of the province of Korii, or in the fifteenth century, when it was included in the short-lived kingdom of Jaunpur. The Argal Rajas supported Sher Shah against Humayan, and were finally crushed on the restoration of Mughal power. Under Akbar the western half of the District formed part of the surkar of Kora, while the eastern half was included in Kara. It has twice been the scene of battles in which the fate of the Mughal empire was at stake. In 1659 Aurangreb met Shuja between Kora and Khajuha, and the battle which resulted was one of the bloodiest ever fought in India, Shuis being defeated and his army dispersed. In 1712 Farrukh Siyar was unsuccessfully opposed near the same place by his cousin, Azz-ud-din, son of Jahandar, who had seized the throne. During the slow decline of the Delhi dynasty Fatehpur was entrusted to the governor of Oudh; but in 1736 it was overrun by the Marathas, on the invitation of a disaffected landholder of Kora. The Marathas retained possession of the country until 1750, when it was wrested from them by the Pathans of Fatehgarh. Three years later Safdar Jang, the practically independent Nawab of Oudh, reconquered it for his own benefit. By the treaty of 1765 Fatehpur was handed over to the titular emperor, Shah Alam; but when in 1774 he threw himself into the hands of the Marathas, his eastern territories were considered to have escheated, and the British sold them for

50 lakes of rupees to the Nawab Wazir. As the Oudh government was in a chronic state of arrears with regard to the payment of its stipulated tribute, a new arrangement was effected in 1801, by which the Nawab ceded Allahabad and Kora to the English, in lieu of all outstanding claims.

No event of interest occurred after the introduction of British rule, until the Mutiny of 1857. On the 6th of June news of the Cawnpore outbreak arrived at the station. On the 8th, a treasure guard returning from Allahābād proved mutinous; and next day the mob rose, burnt the houses, and plundered all the property of the European residents. The civil officers escaped to Banda, except the Judge, who was murdered. On the 28th of June, fourteen fugitives from Cawnpore landed at Shivarajpur in this District, and were all killed but four, who escaped by swimming to the Oudh shore. The District remained in the hands of rebels throughout the month; but on the 30th Colonel Neill sent off Major Renaud's column from Allahābād to Cawnpore. On the 11th of July General Havelock's force joined Renaud's at Khāgā, and next day they defeated the rebels at Bilanda. They then attacked and shelled Fatehput, drove out the rebels, and took possession of the place. On the 15th Havelock advanced to Aung and drove the enemy back on the Pandu Nadi. There a second battle was fought the same day, and the insurgents were driven in full flight on Cawnpore. British authority, however, was confined to the tract along the grand trunk road; and order was not re-established till after the fall of Lucknow and the return of Lord Clyde's army to Cawnpore, when the Gwalior mutineers were finally driven off.

Attempts have been made to identify several places in the Archaeo-District with sites visited by the Chinese pilgrims; but no logy. excavations have been carried out, and the identifications are uncertain. The Hindu remains are generally fragmentary, and even the later Muhammadan buildings at Kora and Khajuha

are few, and not of striking merit.

Fatehpur contains 5 towns and 1,403 villages. Population The is increasing, but received a check owing to the vicissitudes of People the seasons between 1891 and 1901, when the District suffered both from floods and from drought. The numbers at the four enumerations were as follows: 663,877 (1872), 683,745 (1881), 699,157 (1891), 686,391 (1901). There are four tahnis—FATEHPUR, KHAJUHA, GHÄZIPUR, and KHÄGÄ—each named after its head-quarters. FATEHPUR, the only municipality and the head-quarters of the District, is the largest town. The

following table gives the chief statistics of population in

| | | Nun | aber of | 8 9 343 | | | 944 |
|-------------------|-------|-------|----------|----------|---------------------------|------------------------------------|--------------------------------|
| Takit. | Ame o | Towns | Villagen | Populati | Population per aquarem | Percenting variation population 18 | Namber Pertinant Tradian |
| Fatehpur . | 356 | 3 | 374 | 171,598 | 463 | - 1/2 | 6,363 |
| Khajuha . | 504 | 3 | 384 | 199,123 | 395 | - 36 | 8,301 |
| Ghadput : | 277 | 444 | 151 | 91,222 | 329 | -1.3 | 3,840 |
| Khāgā | 481 | -3 | 3493 | 224/348 | 466 | - 0:1: | 6,731 |
| District total | 1,618 | B | 1,403 | 686,391 | 455 | - 1.8 | 25,436 |

About 88 per cent, of the population are Hindus, and less than 12 per cent. Musalmans. Fatehpor is less thickly populated than the Districts of the Doab farther west. Eastern Hindl is spoken by 83 per cent, of the population, and Western Hindl by about 17 per cent.

Castes and occupations. The most numerous of the Hindu castes are: Chamārs (leather-workers and cultivators), 63,000; Brāhmans, 58,000; Ahīrs (graziers and cultivators), 57,000; Rājputs, 42,000; Kurmīs (agriculturists), 42,000; Pāsīs (toddy-drawers and labourers), 32,000; and Lodhas (cultivators), 30,000. Among Musalmāns: the largest divisions are: Shaikhs, 26,000; Pathāns, 16,000; and Behnās (cotton-carders), 6,000. The agricultural population forms 70 per cent of the total, while nearly 7 per cent are supported by general labour. Rājputs, Brāhmans, and Kāyasths hold the greater part of the land, while Rājputs, Brāhmans, Lodhas, Kurmīs, and Kāchhīs are the chief cultivating castes.

Christian missions. In 1901 there were 113 native Christians, of whom 84 were Presbyterians. The American Presbyterian Mission has been established here since 1853.

General agricultural conditions. Three natural divisions exist in the District. Bordering on the Ganges is a long narrow tract of alluvial soil, separated from the watershed by a belt of sandy land. South of the watershed, which is marked by a distinct ridge, lies the fertile central area which extends over more than half of the District. The prevailing soil is a good loam, with clay in the depressions, and many fills near which rice is sown. After a series of wet years portions of this tract become waterlogged, owing to defective drainage. The most southern portion of the District, bordering on the Jumna and forming from one fourth to onefifth of the total area, resembles the part of BUNDELKHAND immediately across the Jumma. A dark heavy soil named kābar, which is unworkable when very dry or very wet, and a lighter and less fertile soil called parad predominate. Ravines are extensive and tend to increase, while the water-level is extremely low. On the edge of the Jumna is found a little rich alluvial soil.

The ordinary tenures of the United Provinces are found, Chief Zamindari mahali number 3,197, their predominance being agriculdue to the large number of sales during the early period statistics of British rule, when the cultivating communities lost their and princirights; 1,163 mahāls are held pattīdāri, and 45 bhatyāchārā, pal crops. The main agricultural statistics for 1903-4 are shown below, in square miles :-

| Takeit | Foral | Culti- | freigated. | Cultivable waste | |
|----------------|-------|--------|------------|---------------------|--|
| Fatchpur , , . | 356 | 178 | 91 | 42 | |
| Khajahā | 377 | 158 | 83 | 45 | |
| Khaga | 481 | 269 | 111 | 54 | |
| Total | 7,618 | 188 | 345 | 105 | |

The commonest food-crop is a mixture of gram and barley. The areas under the chief crops in 1903-4 were gram, 222 square miles; barley, 161; jowar, 147; wheat, 123; rice, 94; cotton, 34; and poppy, 13 square miles.

The area under cultivation has decreased slightly within the Improvelast thirty years; but owing to an increase in the area bearing ments in aeritwo crops in a year, the gross area cultivated in each of the cultural main harvests has risen, especially in the case of the autumn practice. crop. The increase is found in the cheaper food-crops, while the area under the more valuable products, especially cotton and sugar-cane, has decreased. On the other hand, poppy is more largely grown than formerly. In adverse seasons loans are freely taken under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts. The advances amounted to a total of 2-9 lakhs between 1891 and 1900, of which 1-5 lakhs was lent in the famine year, 1806-7. With the return of more favourable seasons advances have been smaller.

In the greater part of the District the cattle are of the Caule and inferior type common to the Doth. Near the Rind and sheep. Jumna a smaller and more hardy breed is found, resembling the cattle of Bundelkhand. Nothing has been done to improve

the breeds and there is practically no horse-breeding. The Fatehpur sheep are, however, well-known, and are exported in considerable numbers.

Irrigation.

In 1903-4 the area irrigated was 325 square miles, including 130 square miles from wells, 93 from tanks or jhils, and 90 from Government canals. Wells are the only source of irrigation in the north of the District, and both masonry and unbricked wells are common. The Fatchpur branch of the Lower Ganges Canal, which was opened in 1898, supplies part of the central and southern tracts. It is chiefly used in the spring harvest, and very little canal water is taken for the autumn crops-Irrigation from tanks, which comprise chiefly the numerous swamps or thill, is confined to the central tract. Near the Jumna the water-level is at a depth of 60 to 90 feet, and irrigation from wells is almost unknown.

Minerals

Kankar is found in all parts of the District, and is the only mineral product, except saltpetre which is manufactured from efflorescences on the soil.

Arts and manufac-Tieres.

The District is largely agricultural, and its manufactures are unimportant. It is, however, celebrated for the ornamental whips made at Fatehpur town, and for the artistic bed-covers, curtains, and awnings made at Jafarganj. The latter are covered with designs, partly stamped, and partly drawn and coloured by hand, inscriptions in Persian being generally introduced in the border. Coarser cotton prints are made at Kishanpur and playing-cards at Khajuha.

Commerce

The trade of the District is mainly in agricultural products, and BINDKI is the most important commercial town. Grain, cotton, hides, and ght are largely exported; and piece-goods, metals, and salt are the chief imports. Markets are held in many villages, Kishanpur or Ekdālā on the Jumna being the chief; and an important religious fair takes place at Shivarajpur on the Ganges. The railway takes a large proportion of the traffic, but trade with Bundelkhand on the south and with Oudh on the north is carried on by road. The great rivers are used much less than formerly,

itali ways

The main line of the East Indian Railway crosses the District and roads, from end to end. The road system is fairly good; and 197 miles of metalled roads are in charge of the Public Works department, though the cost of all but 78 miles is met from Local funds. There are 341 miles of unmetalled roads. Avenues of trees are maintained on 122 miles. The main routes are: the grand trunk mad, which is followed by the line of the railway; and the metalled road at right angles to

this, which passes from Rae Bareli in Oudh to Bundelkhand. The old imperial road from Agra to Allahabad meets the grand

trunk road near Fatehnur town.

The District must have suffered in the famines immediately Famine. before and after the commencement of British rule, but no separate records have been preserved. In 1817-8 distress was not so severe as farther west. Fatchpur escaped lightly in 1860-1, and again in 1868-9, though relief works were opened in the latter famine. In 1827-8 also there was no famine, but the labouring classes were distressed. The drought of 1896 followed a succession of bad seasons in which the crops had been injured by excessive rain, and famine pressed hardly on the southern part of the District. Relief works and poorhouses were opened, and the daily number of persons in receipt of aid rose to 45,000, the total cost of the operations being 14 lakhs.

The Collector is usually assisted by four Deputy-Collectors District recruited in India. A tahsildar is posted at the head-quarters staff. of each taksil, and there is an Assistant Opium Agent at

Fatehour.

There is only one District Munsif, and the District is included Civil in the Civil and Sessions Judgeship of Cawnpore. Sessions justice and cases, however, are tried by the Judge of Bandit as Joint Sessions Judge. Crime is light and presents no special features. Female infanticide was formerly suspected, but no persons are now under surveillance.

At the cession in 1801 the present District was included Land partly in Cawnpore and partly in Allahabad. In 1814 a Joint sevenue Magistracy was formed with head-quarters first at Bhitaura and tration. then at Fatehpur, and the subdivision became a separate District in 1826. The pargamas constituting Fatehour had nominally paid 144 lakhs under Oudh rule, and this demand was retained after the cession, but soon had to be reduced-The whole tract was farmed up to 1809 to Nawab Bakar Ali Khiin, who received 10 per cent, of the collections. By extortions and chicanery he and his family acquired 182 estates, paying a revenue of 2-3 laklis. The early settlements were made for short periods and pressed heavily, though they were lighter than the nominal demand under native rule. The fraudulent sales effected during the early part of the nineteenth century were examined by the special commission appointed under Regulation I of 1821, and 176 public sales and 29 private transactions were cancelled. The first regular settlement under Regulation IX of 1833 was completed during

a single cold weather, 1839-4c, and although a survey was made and villages were inspected, the methods were very summary. The demand fixed was 14-5 lakhs, which was reduced a few years later by Rs. 21,000. The next settlement was made between 1871 and 1876. Villages were grouped together in blocks according to the classes of soil they contained, and rates were selected from the rents actually found to be paid. The total revenue assessed amounted to 13 lakhs, or less than half the assumed 'assets.' In 1900 the question of revision was considered, and it was decided to extend the existing settlement for ten years. The present demand is 13-1 lakhs, with an incidence of Rs. 1-4 per scre, varying from Rs. 1-3 to Rs. 2 in different parts of the District. Collections on account of land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees:—

| | 1880-1. | 1800-1 | 1000-1 | 1003-4 |
|--------------------------------|---------|--------|--------|--------|
| Land revenue . Total revenue . | 13,08 | 13,13 | 14,50 | 13,04 |

Local self- Fa govern- adm ment, Dist

Fatehpur town is the only municipality, but four towns are administered under Act XX of 1856. The local affairs of the District beyond the limits of these places are managed by the District board, which had an income and expenditure of about a lakh in 1903-4. The expenditure includes Rs. 55,000 on roads and buildings.

Police and jalls. There are so police stations; and the District Superintendent of police has a force of 3 inspectors, 77 subordinate officers, and 323 constables, besides 51 municipal and town police, and 1,880 rural and road police. The District jail contained a daily average of 223 prisoners in 1903.

Education.

The District is not distinguished for the literacy of its inhabitants, of whom only 3.8 per cent. (7 males and o-1 females) could read and write in 1901. The number of public schools fell from 132 in 1880-1 to 101 in 1900-1, but the number of pupils rose from 4.046 to 4.371. In 1903-4 there were 177 such institutions, with 6.795 pupils, of whom 200 were girls, besides 180 private schools with 1.737 pupils. Three of the public schools were managed by Government and 115 by the District and municipal boards. In 1903-4 the total expenditure on education was Rs. 36,000, of which Rs. 28,000 was provided by Local funds, and Rs. 6,300 by fees.

Hospitals There are six hospitals and dispensaries, with accommodation

for eighty in-patients. In 1903 the number of cases treated and diswas 28,000, including 946 in-patients, and 1,300 operations pensative were performed. The expenditure was Rs. 7,800, chiefly from Local funds.

About 22,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, Vaccinarepresenting a proportion of 31 per 1,000 of population. Vactions of compulsory only in the municipality of Fatchpur.

(A. B. Patterson, Settlement Report, 1878; H. R. Nevill,

District Gasetteer, 1906.)

Fatehpur Tahail.—North central tahsil of Fatehpur District, United Provinces, comprising the parganas of Fatehpur and Haswa, and lying between 25° 43' and 26° 4' N. and 80' 38' and 81° 4' E., with an area of 356 square miles. Population fell from 175,452 in 1891 to 171,598 in 1901. There are 374 villages and one town, Fatehpur, the District and tahsil head-quarters (population, 19,281). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,87,000, and for cesses Rs. 46,000. The density of population, 482 persons per square mile, is the highest in the District. The Ganges forms part of the northern boundary, but the drainage largely flows south-east through a series of jäils into a channel called the Sasur Khaderi. In 1903-4 the area under cultivation was 178 square miles, of which 91 were irrigated, wells and tanks or jhils being the

chief sources of supply.

Khajuhā Tahsil, -Western tahail of Fatehpur District, United Provinces, comprising the parganas of Bindld, Kora, Kutia Guntr, and Tappa Jar, and lying between #5° 51' and 26° 16' N., and 80° 14' and 80° 47' E., with an area of 504 square miles. Population fell from 206,711 in 1891 to 199,223 in 1901, the rate of decrease being the highest in the District. There are 385 villages and three towns, the largest being BINDET (population, 7,782). KHAJUHĀ, the tahril head-quarters, has a population of 2,044. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,42,000, and for cesses Rs. 71,000. The density of population, 305 persons per square mile, is below the District average. The takiil extends from the Jumna to the Ganges, and is crossed by the Rind. A considerable area is covered by the ravines of the Junna and Rind; which are absolutely waste, though they provide grazing for herds of cattle, In 1903-4 the area under cultivation was 276 square miles, of which 83 were irrigated. The Fatehpur branch of the Lowet Ganges Canal at present serves about one-third of the irrigated area, but is likely to take a larger share. Wells supply most of the remainder.

Ghāzipur Tahsāl.—South central trāxii of Fatehpur District, United Provinces, comprising the pargunar of Ghāzipur, Aya Sāh, and Mutaur, and lying between 25° 41' and 25° 55' N, and 80° 31' and 81° 4' E., with an area of 277 square miles. Population fell from 92,389 in 1891 to 91,222 in 1901. There are 151 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,95,000, and for cesses Rs. 31,000. The density of population, 329 persons per square mile, is the lowest in the District. The tahtāl lies along the Jumna, and the soil for some distance from that river resembles the poorer soils of Bundeikhand. In 1903-4 the area under cultivation was 158 square miles, of which 39 were irrigated. The Fatehpur branch of the Lower Ganges Canal supplies nearly half the total irrigation, but in the northern part tanks or jhāta are used.

Irrigation from wells is insignificant.

Khaga.-Eastern taksil of Fatchpur District, United Provinces, comprising the pargunas of Dhita, Ekdilli, Hathgaon, and Kutila, and lying between 250 26' and 260 1' N. and 81" o' and 81° 20' E., with an area of 481 square miles. Population fell slightly from 224,605 in 1891 to 224,348 in 1901. There are 403 villages and one town, Kishanpur (population, 2,354). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,80,000, and for cesses Rs. 61,000. The density of population, 466 persons per square mile, is above the District average. North and south the takiil is bounded by the Ganges and Jumna, while the centre is drained by a shallow channel called the Sasur Khaderi. Near the Ganges the soil is sandy, while towards the Jumna ravines and poor soil retard cultivation. The central portions are, however, fertile. In 1903-4 the area under cultivation was 169 square miles, of which 112 were irrigated. Wells supply more than half, and tanks or jhils are the next most important source. The Fatehpur branch of the Lower Ganges Canal, which was opened in 1898, is extending its operations.

Bindki.—Town in the Khajuhā tahtil of Fatehpur District, United Provinces, situated in 26° 3′ N. and 80° 36′ E., 5 miles from the Mauhār or Bindki Road railway station on the East Indian Railway. Population (1901), 7,728. The town has now become the most important trading centre between Cawnpore and Allahābād, and attracts a great deal of trade from Bundelkhand. Grain, ghi, and cattle are the chief articles of commerces. Bindki is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 1,500 from taxation and Rs. 2,500 from rents. There is a flourishing town school with 114 pupils,

and a dispensary,

Fatehpur Town.-Head-quarters of Fatehpur District and taksil, United Provinces, situated in #5° 56' N. and 80° 50' E, on the Grand Trunk Road, and on the East Indian Railway. Population (1901), 19,281. Nothing is known of the early history of the town, but it was extended by Nawab Abdus Samad Khān in the reign of Aurungzeb. In 1825 it became the head-quarters of a subdivision, and in the following year of the newly-formed District. The houses are chiefly built of mud, the only buildings of historical interest being the tomb of Nawah Abdus Samad Khan, and the tomb and mosque of Nawab Bakar All Khan, who enjoyed a farm of the District early in the nineteenth century. The chief public buildings, besides the ordinary District courts, are the municipal hall, male and female dispensaries, and school. Fatchpur has been a municipality since 1872. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 13,000. In 1903-4 the income was Rs. 20,000, chiefly from octroi (Rs. 13,000), and the expenditure was Rs. 18,000. Trade is principally local, but grain and ghi are exported, and there is a noted manufacture of whips. The municipality manages one school and aids another, the two containing 202 pupils, while the District high school has 144.

Khajuhā Town.—Head-quarters of the tahiil of the same name, in Fatehpur District, United Provinces, situated in 26° 3' N. and 80° 32' E., on the old Mughal road from Agra to Allahābād, at miles west of Fatehpur town. Population (1901), 2,944. A town was founded in the village of Khajuhā by Aurangzeb to commemorate his victory over Shujā in 1659, and was called Aurangābād, but the old name has survived the new. The sarai and bāradari, built at the same time, are fine buildings which have been restored. In 1712 Farrukh Siyar defeated his cousin, Azz-ud-din, near here, and proceeded on his victorious march to Delhi. The town is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 600. The trade of the place has largely been diverted to Bradai; but brass vessels are still made in some quantities, and the playing-cards made here have some reputation. There is a

achool with 50 pupils.

Korā.—Ancient town in the Khajuhā takril of Fatehpur District, United Provinces, situated in 26° 7° N. and 80° 22' E., on the old Mughai road from Agra to Allahābād, 29 miles west of Fatehpur town. Population (1901), 2,806. The town was for centuries held by the Gautam Rājās of Argal, and became the head-quarters of a province under the Muham-

0

madars. In Akbar's time it was the capital of a surkir in the Sübah of Allahabüd. It still contains many old and substantial houses, but most of them are ruinous and desolate in appearance. A massive and handsome biradari in a large garden surrounded by high walls and a magnificent tank are the chief relies of native rule, and these were constructed late in the eighteenth century. Separated from Korā by the Mughai toad stands another town, called Jahānābād, which is more flourishing and contains 4,379 inhabitants. Jahānābād is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 900. A school in Jahānābād has 110 pupils, and a smaller school in Kotā 23.

Boundaries, configuration, and bill and river systems,

Banda District.-District in the Allahabad Division of the United Provinces, lying south-west of the Jumna, between 24" 53' and 25" 55' N. and 79" 59' and 81" 34' E., with an area of 3,060 square miles. On the north and northeast the Jumna divides it from Fatchpur and Allahabad: Allahābād and the State of Rewah lie on its eastern border; the States of Panna, Sohawal, Kothi, Patharkachhar, Chaube jagars, Charkhart, and Ajaigarh form the southern boundary; and the States of Charkhari and Gaurihar and the Hamirpur District lie on the west. Banda consists of a varied country, aloping downwards from the Vindhyan range on the south and west to the valley of the Jumna on the north and north-east. The south-eastern or highest portion is composed of the sandstone hills which form the northward escarpment of the great table-land of Central India. These hills are well-wooded and are arranged in a series of terraces with bold and abrupt scarps facing the north, their highest elevations being 1,300 feet above the sea. Their sides are scored by the beds of mountain torrents, which during the rainy months form affluents of the Jumna, but in the dry season gradually diminish, until by the month of May their channels are mostly empty. The Ken, Baghain, and Paisunt, however, the most important among them, are never quite dry. North of this hilly region lies a tract of undulating plains, at first thickly studded with rocky isolated hills, sometimes crowned by ruined fortresses, which rapidly decrease in number and size. The plain itself, the most fertile portion of the District, is widest at its western extremity, and narrows like a wedge as it runs eastward. The Jumna valley rises by a series of terraces, broken by ravines, to the level of the table-land above.

gy. In the greater part of the District the older rocks are concealed by the alluvium of the Gangetic plain. The northern

Geology.

or Bindhāchal range of the Vindhyan plateau consists of Kaimur sandstone, while the southern or Pannā range is composed of the overlying upper Rewah sandstone, and the space between is made up of the Pannā and Jhiri shales. Below the sandstone lies the Archaean gueiss, which is only visible in a few places.

The bills in the south-east are covered with 'reserved' forest, Botany, while the rest of the District is fairly well wooded. The flora of Banda has been fully described'. The characteristic feature is that it forms the northern limit of many Central and Southern Indian species, which here meet the plants of the Doab.

Allantus excelta and teak are not found farther north in a wild state. The makua tree (Bassia latifolia) is of great economic value, and is largely planted.

Tigers are occasionally found in the 'reserved' forest, and Fassaleopards, hyenas, wolves, and bears are more common in the same tract. Simbar haunt the forests, and antelope are common in the plains, while wild hog abound in many parts. Sand-grouse, partridges, quail, duck, teal, and geess are the commonest game birds. Fish, including small manseer and Indian trout, abound in the Ken, Baghain, and Paisunt, and many kinds are common in the Junma. The croccodile and the porpoise are also found in several rivers.

The cold season is less intense than in the neighbouring Climate Districts of the Doab, frost being rare. The hot weather and temperature commences in the middle of March, and is distinguished by the absence of dust-storms and comparative clearness of the atmosphere. The heat soon becomes intense and lasts till late in October. The climate is unhealthy both for Europeans and natives, and deaths from exposure to the sun are imusually frequent.

The average annual rainfall is more than 40 inches, but the Rainfall, west of the District receives less than the south near the hills and the east near the Jumna. Large variations from the average are frequent. In 1894 the rainfall was about 82 inches, and in 1896 only 18 inches.

According to tradition, Rama and Sua during their exile History, stayed a while at Cherrarkur. The history of the District is that of Bundelkhand. South of Banda stands the magnificent hill fortress of Kalinjak, one of the chief strongholds of the Chandels, who ruled from about 850 till the rise of Musalman influence. About 1182 Prithwi Raj of Delhi defeated

U.P. 31.

M. P. Edgeworth in Journal of Aciatic Society of Bengal, vol. xxi.

Parmal Deva, the last great Chandel ruler, and in 1203 the Chandels were finally overthrown by Kuth-ud-din, and became petty Rajas. Mewatis and Bhars then overran the country, and its history for several hundred years is scanty. Though the Muhammadans had overthrown the ruling dynasty, they never acquired a firm hold, and Sher Shah lost his life at the siege of Kälinjar in 1545. Under Mughal rule the District formed part of the Subah of Allahabad; but early in the eighteenth century the Bundeläs, whose power hitherto had not extended permanently as far east as Banda, took Kalinjar, and Chhatar Sal, their leader, was recognized by Shah Alam Bahadur as ruler of Bundelkhand. Contests with the imperial troops under Muhammad Khān, the Bangash Nawāb of Farrukhābād, who was governor of Allahābād, led to the calling in of the Marathas, and by the middle of the eighteenth century the Bundels dominions gradually split up into small states. Internal dissensions favoured the extension of Maritha power, and in 1776 British troops marched south from Kalpi against the intruders. During the rest of the century misrule increased; and the Marathas overran Banda under Als Bahadur, an illegitimate son of the Peshwa Baji Rao, in alliance with Himmat Bahadur, a religious mendicant who had turned soldier. Alt Bahadur fell at a siege of Kalinjar in 1802. The District was ceded to the British by the treaty of Poona in 1803; but Shamsher Bahādur, son of All Bahādur, and several independent chiefs had to be reduced. Himmat Bahādur, on the other hand, yielded and received a large jacir along the Jumna, which lapsed to the British shortly after. The District remained quiet under British rule, but its fiscal history, which will be related later, was unfortunate.

On the outbreak of the Mutiny in May, 1857, the ignorant inhabitants were easily incited to revolt by the Cawapore and Allahābād mutineers. The 1st Native Infantry seized on the magazine and public buildings at Bāndā, and were joined by the troops of the Nawāb. Until June 14 every effort was made by the British residents to retain the town, but on that date it was abandoned. The Nawāb of Bāndā, a descendant of All Bahādur, whose name he bore, then put himself at the head of the rebellious movement. The Joint-Magistrate of Karwi, Mr. Cockerell, was murdered at the gate of the Nawāb's palace on June 15. The rural population, with a few notable exceptions, rose on masse, and a period of absolute arrarchy followed. The Nawāb attempted to organize a feeble government; but his claims were disputed by other pretenders, and

he was quite unable to hold in check the mob of plunderers whom the Mutiny had let loose upon the District. The fort of Kälinjar, however, was held throughout by the British forces, aided by the Rājā of Pannā. The town of Bāndā was recovered by General Whitlock on April 20, 1858.

The most striking remains in Banda District are contained Amhaesin the great fort of Kalinjar; but Chandel temples have surlogyvived in many places, and the fort of Marpha also deserves
mention. The town of Kalinjar contains a few Muhammadan
buildings, and the Marathas have left some memorials at Banda
and Karwi. Stone implements have been found at several
places in or near the hills, and are collected in many village
shrines. A few caves contain ancient rude dinwings.

There are 5 towns and 1,188 villages. The population, The which had been increasing steadily, received a sudden check people, in the disastrous series of years from 1892 to 1897. The numbers at the four enumerations were as follows: 697,684 (1872), 698,608 (1881), 705,832 (1891), 631,058 (1901). Banda is divided into eight taksils—Banda, Pallani, Bandau, Kamasin, Mau, Karwi, Badausa, and Girwan—the head-quarters of each being at a town of the same name. The principal towns are the municipality of Banda, the District head-quarters, and Karwi, the head-quarters of a taksil and subdivision. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takett. | Arms in repeated | Towns R | Allague Allague | Pepulation | Population per reputation node. | Percentage of variation in population be twent 1801 and 1901. | Number of person able to read and write. |
|----------------|------------------|---------|--------------------|------------|------------------------------------|---|---|
| Banda . | 427 | 1 | 113: | 98,574 | 231 | - 11-7 | 4,549 |
| Pailini | 362 | 00 | 121 | 80,524 | 2.12 | - 93 | 2,319 |
| Babera | 363 | ., | 121 | 77,595 | 213 | - 195 | 1,674 |
| Kamisin . | 358 | 38.6 | 160 | 78,773 | 230 | - 54 | 1,053 |
| Man | 316 | T | 164 | 64,011 | 205 | - 11-9 | 2,411 |
| Karwi | 557 | | 180 | 78,410 | 138 | - 10-6 | 2,912 |
| Hadamak . | 333 | 200 | 732 | 74:753 | 37.4 | - 44 | 1,881 |
| Girwan | 234 | 2 | 179 | 77,706 | 233 | - 91 | T,950 |
| District total | 3,060 | 5 | 1,168 | 631,019 | 30() | - 10-6 | 19,648 |

About 94 per cent of the population are Hindus and less than 6 per cent. Musalmäns. As in all the Bundelkhand Districts, the density of population is less than half the Provincial average. Eastern Hindt is the prevailing language; but it is much mixed with the Bundelt dialect of Western Hindt. Various dialects are recognized locally, such as Kundri, Tirhart, Gahora, and Jurar.

Castes and occupations.

Chamārs (leather-workers and cultivators), 98,000, are the most numerous Hindu caste. The following are also important: Brāhmans, 92,000; Ahīrs, 59,000; Rājputs, 49,000; Korīs (weavers), 28,000; and Kurmīs, 24,000. The Kols, a jungle tribe more common in Central India, number 5,700; and the Domārs, a depressed labouring caste, 5,000. Among Musalmāns the Shaikhs number 17,000 and the Pathāns 8,000. Agriculture supports 70 per cent. of the population, and general labour 6 per cent. Brāhmans, Rājputs, and Kurmīs are the chief holders of land; and the same castes, together with Kāchhis and Ahīrs, are the principal cultivarors.

Christian missions. In 1901 there were 147 native Christians, of whom eighty-twowere Anglicans, thirty Presbyterians, and eleven Methodists. The Society for the Propagation of the Gospel Mission commenced work about the time of the Mutiny, and a missionary has been stationed at Banda town since 1873. The American Methodist Mission has two branches in the District.

General agricultural conditions.

Like the whole of Bundelkhand, Banda is specially liable to fluctuations in agricultural prosperity, and cultivation advances or declines in alternate cycles. The prevailing soils differ considerably in composition and fertility. Mar is a rich black soil, which can be easily tilled in favourable seasons and is often very fertile. It is retentive of moisture and can thus, with ordinary rain, produce wheat and other spring crops without irrigation. An excess or too great deficiency of rain makes mar unworkable. Kabar is stiffer and more difficult to work than mor; and although it is also capable of producing spring crops, it is more easily rendered unworkable by variations in the rainfall. Mar and habar are found in most parts of the District, but especially in the northern plain. A red or yellow loam called parms, resembling the ordinary loam soil of the Doab, occurs in many parts. Where the surface is uneven and especially near the ravines and watercourses, which drain into the larger rivers, the natural soil is deprived of its more fertile constituents, and produces only a scanty autumn harvest. The level tracts in the beds of the larger rivers, called tari or kachhar, often consist of very fertile alluvium. Near the hills. and on the Vindhyan terraces, a thin layer of red soil is found, which soon becomes exhausted by cultivation. One of the greatest difficulties which the cultivator has to contend with is

the growth of a coarse grass called kins (Saccharum spontaneum), which spreads rapidly. The spring crops are also liable to be attacked by rust in damp and cloudy cold weather.

At cession the prevailing tenure was profitoiri, which under Chief the policy adopted became pattidari and bhairachara, with agricula variety of the latter known as bhej barar. The transfers of statistics property during the early period of British rule led to an and princiincrease in samindari villages, which are gradually disinte-pal crept. grating into pattidari, though they still include nearly half the estates in the District. A peculiar tenure, named pauth, exists, chiefly in alluvial land, in accordance with which a plot of land passes in annual succession to a different co-sharer or cultivator. The privilege of cultivating land on payment of revenue rates and not rent rates has also survived. The main agricultural statistics for 1903-4 are shown below, in square miles :-

| 7944 | Takel. | | Caltirated | Irrigated. | Cultivable season | |
|------------|--------|-------|------------|------------|----------------------|--|
| Diamon III | | 427 | 907 | 1: | 140 | |
| Palifini . | 4 14 | 362 | 188 | 7300 | 89 | |
| Baberii . | | 363 | 189 | 1. | 116 | |
| Kamasin | × 8 | 355 | 203 | 1411 | 83 | |
| Mau . | | 316 | 132 | * | 105 | |
| Karwi . | 2 0 | 557 | 116 | 3 | 187 | |
| Badama. | # # | 333 | 165 | 1 | 199 | |
| Girwan + | | 334 | 168 | 2. | 93 | |
| | Total | 3,060 | 1,350 | 9 | 905 | |

Norm .- Statistics for the Banda and Pallasi aukells are for 1003-9.

The chief food-crops, with their areas in 1903-4, were gram (519 square miles) and forear (290), covering 38 and 22 per cent., respectively, of the net cultivated area; rice, wheat, Adjed, and barley are also of importance. Oilseeds (137 square miles) and cotton (75 square miles) are the principal non-food crops.

As in the other Bundelkhand Districts, there has been no Improveimprovement in agricultural practice in Banda. The area under ments in cultivation varies considerably. Attempts have been made to tent eradicate kāns by a steam-plough and by flooding; but the practice, former method was too costly, and the latter is difficult owing to the scurcity of water. Nearly 6 lakbs was advanced under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts

between 1891 and 1900, of which 3.4 lakhs was lent in the bad years, 1895-7. In the four more favourable years, 1900-4, the total advances amounted to Rs. 86,000.

Cattle, punies, and abeep.

There is one well-defined breed of cattle called Kenwariya, chiefly found along the river Ken. The cattle are small, but hardy and active, and thrive on poor food. Attempts are now being made to improve the strain. A little horse-breeding is conducted in the Pailant tuhsil, and the experiment of maintaining a stallion at Bändä town has met with considerable success. The goats are of distinctly high standard, and sheep-breeding is an industry of some importance, both for wool and for supplying meat to Cawapore and Allahābād.

Irrigation.

At the present time there is very little irrigation in Banda, owing to the difficulty of obtaining a supply of water, and the unsuitability of mar soil for well-irrigation. The water-level is 60 to 100 feet below the surface, and temporary wells can be made only in few places. The rivers flow in deep channels through broken country. Thus in 1903-4 only 9 square miles were irrigated. Wells supplied two-thirds of this, a few fields in which garden crops are grown being found in many villages. Many scattered fields, however, are kept sufficiently moist by means of small embankments, and the extension of this system is being tried. In 1903 the construction of a canal was commenced which will draw its supply from the Ken by means of a dam and reservoir. It is designed to serve the tract between the Ken and Baghain rivers, and will protect an area containing 65 per cent, of the total population, in which 23 lakhs was spent on famine relief in 1896-7. The estimated cost of the canal is 37 lakhs.

Forests.

The forests in the south-east of the District cover an area of 114 square miles, of which 84 are 'reserved.' They are of small commercial importance, but serve to prevent further erosion, and supply the wants of the neighbouring villages for grazing and minor produce. Teak, bamboos, Borwellia thuri-fera, Buchanania latifolia, Ficus iatifolia, Lagerstroemia parviflora, Odina Wodier, Stervulia urens, and Terminalia tomentosa are the principal trees.

Minerals.

The sandstone in the south of the District is, in places, well adapted for building, for millstones, and for other purposes. Greenstone, pipe-clay, and limestone are also worked. Iron is found and was formerly worked at several places; but the reservation of the forests has increased the cost of fuel. There was formerly a diamond mine in the Bindhāchal range, but it has been closed.

The industries of the District are few and unimportant, Arts and Coarse cotton cloth, cotton prints, metal cooking-vessels, and manufacrough cotton carpets are made in several places for the local market. Agate pebbles, imported from the Narbada, are cut and polished, and used for a variety of ornaments. There is a small production of silk-embroidered plush or velvet articles at Karwi. A single cotton gin at the same place employed 280 hands in toot.

The trade of Banda is chiefly in agricultural produce and Commerce. in the few articles required by the population. In favourable years gram, millet, and wheat are largely exported. Cotton is a considerable item of export, and the produce of this District has a good reputation. Rice, sugar, tobacco, salt, and metals are the chief imports. Traffic from the greater part of the District was formerly directed towards the Jumpa, and was then either carried by river, or taken to Fatchpur on the East Indian Railway; but the opening of a line through the District has partly diverted this trade, though BINDKI and Cawapore still attract a large share of the commerce of the District. BANDA, KARWI, and RAJAPUR are the most flourishing trade centres.

A branch of the East Indian Railway from Allahabad to Railways Jubbulpore has a length of 47 miles in the south-east of the and roads.

District. At Manikpur this is met by the Midland aection of the Great Indian Peninsula line from Jhansi, which passes through Banda and Karwi. Communications have been greatly improved in recent years, and the District contains 131 miles of metalled roads, of which 56 are maintained at the cost of Provincial revenues, and 587 miles of unmetalled roads. Avenues of trees are kept up on 120 miles. The chief routes are from Banda town to Chilla on the Jumna, from Banda towards Saugor, and from Bändä through Karwi to Mänikpur. Distress in Banda District may be due to an excess or Famine.

to a deficiency of rain. The former causes a spread of kans or rust, while the latter prevents cultivation. Bundelkhand suffered from famine in 1813-4 and again in 1819, when overassessment aggravated the distress. A sence of bad years necessitated large remissions between 1833 and 1837. In 1837-8, however, the people escaped more lightly than in the neighbouring Districts to the north and east. The next famine of 1869 was due to excessive rain in 1867 and a deficiency in 1868. In May, 11,000 persons were employed on relief works, and the people lost many of their cattle. The District was depressed till 1873, when there was a recovery; and the drought of 1877 was beneficial imasmuch as it checked the growth of \$\hat{klas}\$. Another period of depression commenced in 1884, when excessive rain damaged the autumn harvest for several years in succession. In 1888 the rains ceased early and \$\hat{klas}\$ again spread. Remissions of revenue were given, but rust and heavy rain in 1894, and a short fall in 1895, caused actual famine. The misery of the people was completed by the failure of the rains in 1896, when B\hat{a}nd\hat{a} suffered more than any other District in the Provinces.

District subdivisions and staff, The three eastern tahcils, Man, Kamāsin, and Karwi, form a subdivision, usually in charge of a member of the Indian Civil Service, who is stationed at Karwi. The Collector is assisted by a member of the Indian Civil Service and by three Deputy-Collectors recruited in India, and a tahcildar is stationed at the head-quarters of each tahsil. When the Ken Caral is completed, it will be in charge of an Executive Engineer.

Civil justice and crime. The District Judge and Sub-Judge of Banda exercise civil jurisdiction throughout Banda and Hamirpur Districts. The former is also Sessions Judge of both Districts, and in addition tries the sessions cases of Fatebpur. Banda is singularly free from crime. A Special Judge is at present inquiring into the cases of estates brought under the Bundelkhand Encumbered Estates Act.

Land revenue administration.

At cession most of the present Districts of Banda and Hamirpur and part of Jalaun were formed into a single District called Bundelkhand. This was divided into northern and southern Districts in 1819, Randa forming most of the latter. Under the Marathas the revenue system had been systemin, and the assessment was a rack-rent pitched at the highest figure that could be collected. The early British assessments were fixed for short periods as usual, and at first were moderate and well distributed. From 1809, however, a period of overtaxation commenced. The revenue was enhanced nominally by 14 per cent.; but a change in currency made the increase really as much as 29 per cent. The severity of the assessments was only surpassed by the methods of collection, and corrupt native officials and speculators acquired large areas. A period of agricultural prosperity led to still larger enhancements in 1815. The mistake was partly due to excessive reliance on the existing prosperity, and to ignorance of the peculiarities of Bundelkhand soils; and it was aggravated by the policy of the time: Bad seasons, commencing in 1819, were not accepted as a sufficient reason for reduction; but in 1825 remission

became absolutely necessary. In 1828 the rains failed, and by 1830 the District was reduced to a condition of almost general bankruptcy. A great part of Banda was then taken for a time under direct management, and collections were made from the cultivators with some success. A survey was commenced in 1836, and in 1843-4 the first regular settlement was made; average rent-rates were fixed for all the well-known classes of soil, and were applied without sufficient allowance for variations, the total demand being r6-3 lakhs. Bad seasons and rigorous administration had at last led to the sanction of a reduction of revenue when the Mutiny broke out. In 1858-q the demand was reduced by nearly 18 per cent, and the District recovered rapidly, only to suffer again from excessive rainfall in 1867 and the following years. The next revision of settlement, which commenced in 1874, thus coincided with a period of great depression. The assessment, as usual, was based primarily on assumed rates for each class of soil; but these were modified according to the actual condition of each village. The area to which these rates were applied was not, however (except in the Karwi subdivision, which was separately settled), the actual cultivated area, but an assumed standard area which was carefully worked out for each village, and which allowed for a margin of fallow. The result was an assessment of 11-3 lakhs, which was sanctioned for twenty years only. It has already been stated that a cycle of adverse seasons commenced again in 1888. In 1893 reductions of revenue, amounting to Rs. 19,000, were made, and the settlement was estended for ten years in 1894. Deterioration was already setting in, and large reductions have been made since the fimine of 1896-7. The revenue demand in 1903-4 was only q lakhs. The District is now under the operation of the Bundelkhand Alienation of Land Act, and in 1905 a system of fluctuating assessments was commenced. Collections on account of land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees:-

| | 1880-11 | tilgo-t. | 1000-1 | 1995-4 |
|--------------------------------|---------|----------|--------|--------|
| Land revenue . Total revenue . | 12,07 | 11,43 | 11,11 | 8,74 |

Banda town is the only municipality in the District, but four Local selftowns are administered under Act XX of 1856. Local affairs government, beyond the limits of these places are managed by the District. board, which in 1903-4 had an income and expenditure of tog lakhs. The expenditure includes Rs. 91,000 on roads and

buildings.

Police and inile.

There are 23 police stations. The District Superintendent of police has an Assistant stationed at Karwl, and commands a force of 4 inspectors, 110 subordinate officers, and 420 constables, besides 78 municipal and town police, and 1,731 rural and road police. The District jail at Banda contained a daily average of 262 prisoners in 1903, and the

iail at Karwi 32 in the same year.

Allowing for the absence of towns, Banda is not very back-Education. ward as regards literacy, compared with other Districts in the United Provinces. In 1901, 3 per cent. (5-9 males and o-1 females) could read and write. The number of public schools rose from 142 with 3,884 pupils in 1880-1 to 149 with 4,953 pupils in 1900-1. In 1904-4 there were 172 such institutions with 6,102 pupils, including 108 girls, besides 10 private schools with 204 boys. Two schools were managed by Government, and most of the others by the District or municipal boards. Out of a total expenditure on education of Rs. 37,000, fees supplied only Rs. 2,800, the balance being met from Local funds.

Hospitals and dispensaries.

There are 6 hospitals and dispensaries, with accommodation for 157 in-patients. In 1903 the number of cases treated was 38,000, including 900 in-patients, and 2,000 operations were performed. The total expenditure was Rs. 11,500, chiefly met from Local funds.

Vaccinntion.

About 21,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4. representing a proportion of 33 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipality of Banda.

(District Gazetteer, 1874 [under revision] A. Cadell, Settlement Report [excluding Karwi], 1881; A. B. Patterson,

Settlement Report Karwi Subdivision, 1883.)

Banda Tahsil.-Western taksil of Blinda District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 25 20' and 25° 38' N. and 79" 59' and 80" 32' E., with an area of 427 square miles. Population fell from 112,912 in 1891 to 98,574 in 1901. There are 113 villages and one town, Banda, the District and taksil head-quarters (population, 22,565). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,48,000, and for cesses Rs. 24,000. The density of population, 231 persons per square mile, is slightly above the District average. The Ken flows through the centre of the taksil, which lies almost entirely in the level plain north of the Vindhyas. In 1902-3 only 1 square mile was irrigated, out of 207 square miles under cultivation. The Ken Caral,

now under construction, will serve part of this takeil.

Pailani.—Northern tahsil of Banda District, United Provinces, conterminous with the parganu of the same name, lying south of the Jumna between 25° 32' and 25° 55' N. and 80° 14' and 80° 40' E., with an area of 362 square miles. Population fell from 88,544 in 1891 to 80,524 in 1901. There are 121 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903–4 was Rs. 1,41,000, and for cesses Rs. 23,000. The density of population, 222 persons per square mile, is slightly above the District average. The Ken, after forming part of the western boundary, turns custwards and crosses the tahsil till it joins the Jumna. The tahsil contains a good deal of light soil, and near the Jumna there are deep ravines. In 1902–3 the area under cultivation was 188 square miles; there is practically no irrigation, but the Ken Canal, when completed, will serve part of this tahsil.

Baberů,—Tahil of Banda District, United Provinces, conterminous with the pargana of Augast, lying along the Jumna between 25° 23' and 25° 41' N. and 80° 30' and 80° 57' E., with an area of 363 square miles. Population fell from 96,284 in 1891 to 77,395 in 1901, the rate of decrease being the highest in the District. There are 121 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903–4 was Rs. 1,26,000, and for cesses Ra. 20,000. The density of population, 213 persons per square mile, is almost exactly the District average. Near the south and east rice is grown in considerable quantities, this tract being known as Jurāt. The Jumna, as usual, is fringed by a network of deep ravines. In 1903–4 only 1 square mile was irrigated, out of 189 square miles under cultivation. The Ken Canal, when completed, will supply part of this taksil.

Kamāsin.— Tahtil of Bānda District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying along the Jumna between 25° 17' and 25° 38' N. and 80° 47' and 81° 12' E., with an area of 358 square miles. Population fell from 83,297 in 1891 to 78,773 in 1901. There are 169 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,18,000, and for cesses Rs. 20,000. The density of population, 220 persons per square mile, is slightly above the District average. Besides the Jumna, the Bāghain and Paisuni drain the tahtil, flowing from south-west to north-east to join the great river. Some of the best cotton produced in the

District is grown in Kamäsin. In 1903-4 less than half a square mile was irrigated, out of 205 square miles under cultivation. The Ken Canal, when completed, will serve a small area in the west of this taksil.

Mau.—Eastern tahsil of Banda District, United Provinces, conterminous with the pargana of Chhibun, lying along the Jumma between 25° 5' and 25° 24' N. and 81° 7' and 81° 34' E., with an area of 316 square miles. It is included in the Karwi subdivision of the District. Population fell from 73,658 in 1891 to 64,921 in 1901. There are 164 villages and one town, Rājārus (population, 5,491). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 86,000, and for cesses Rs. 14,000. The density of population, 205 persons per square mile, is alightly below the District average. In the south the outer range of the Vindhyas crosses the tahsil in three terraces. The forests and jungles are gradually diminishing, owing to the export of wood to Allahābād. In 1903-4 less than 1 square mile was irrigated, out of 132 square miles under cultivation.

Karwi Tahsil.-South-eastern tahtil of Banda District, United Provinces, conterminous with the pargana of Tarahuwan, lying between 24° 53' and 25° 19' N. and 80° 45' and 81º 16' E., with an area of 567 square miles. Population fell from 87,687 in 1891 to 78,410 in 1901. There are 189 villages and two towns, including Karwi, the tahsil head-quarters (population, 7,743). The demand for land revenue in 1003-4 was Rs. 77,000, and for cesses Rs. 15,000. The density of population, 138 persons per square mile, is the lowest in the District. Roughly speaking, about half the tahuil lies in the plain, while the other half is situated on a plateau between the crest of the first range of the Vindhyas and the scarp beyond which extends to the still higher plateau of Rewah. The latter portion presents beautiful scenery and is clothed with forest. Near the west the Paisuni forms part of the border and then strikes across the tahiil. In 1903-4 the area under cultivation was 126 square miles, of which only 3 were irrigated.

Badausa.—South-western tahsil of Banda District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 25 3' and 25° 27' N. and 80° 31' and 80° 52' E., with an area of 333 square miles. Population fell from 77,922 in 1891 to 74,755 in 1901. There are 132 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903—4 was Ra. 36,000, and for cesses Rs. 14,000. The density of population, 224 persons per square mile, is above the District average. The Baghain flows through the tahsil from south-west to north-east.

In the south are scattered hills, and the south-east includes a small patch of 'reserved' forest, but most of the taksil lies in the plains. In 1903-4 only 1 square mile was irrigated, out of 165 square miles under cultivation. The Ken Canal, when

completed, will supply a small area.

Girwan.—Takiil of Banda District, United Provinces, conterminous with parguma Sihonda, lying between 24° 59' and 25° 28' N. and 80° 17' and 80° 34' E., with an area of 334 square miles. Population fell from 85,528 in 1891 to 77,706 in 1901. There are 179 villages and one town, Kālinjan (population, 3,015). The demand for landrevenue in 1903—4 was Rs.1,19,000, and for cesses Rs. 19,000. The density of population, 233 persons per square mile, is the highest in the District. In the west lies the Ken, which is fringed with ravines; but the taksil is on the whole fertile. In 1903—4 only 2 square miles were trigated, out of 168 square miles under cultivation. The Ken Canal, when completed, will serve a large area in this taksil.

Karwi Subdivision, Subdivision of Banda District, United Provinces, consisting of the Kamasin, Karwi, and

MAU tahsiis.

Banda Town.-Head-quarters of the District and tahtil of the same name, United Provinces, situated in 25" 28' N. and 80° 20' E., near the river Ken, on the Midland section of the Great Indian Peninsula Railway, and on a metalled road from Fatehpur to Saugor. Population (1901), 22,565. Banda was a mere village till the commencement of the nineteenth century, when the Nawab, Shamsher Baharlur, settled here. Its importance was increased by its selection as head-quarters of a District, and by a flourishing trade in cotton. After the removal of the Nawab in 1858, owing to his disloyalty in the Mutiny (see BANDA DISTRICT), the town began to decline, while the growth first of RAJAPUR, and then of KARWI, has largely deprived Blinda of its principal trade. It is a straggling and ill-built town, but with clean wide streets, and contains 65 mosques, 168 Hindu, 1 Sikh, and 5 Jain temples. Besides the usual public offices, there are a dispensary and stations of the Church Missionary Society and American Methodist Missions. The chief mosque is that built by All Bahadur, the last Nawab. Portions of the former palace are now used as public offices or as native residences. A mile from Banda stand the ruins of a fort called Bhuragarh, which was built in 1784, and stormed by British levies in 1804. Banda has been a municipality since 1865. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged

Rs. 23,000. In 1903-4 the income was Rs. 28,000, chiefly derived from octrol (Rs. 21,000), and the expenditure was Rs. 25,000. The town is not of great commercial importance. The only local industries are the preparation of articles made of agate, and the manufacture of lithis or staves. There are

ra schools, attended by 840 pupils.

Chitrakut.-Hill and place of pilgrimage in the Karwi taksil of Banda District, United Provinces, situated in 25° 13' N. and 80° 46' E., 31 miles from the Chitrakat station on the Great Indian Peninsula Railway. The hill lies partly in the Karwi tahtil and partly in the Chaube jagir of Kāmtii Rajolā. The Paisuni river flows nearly a mile from its base, which has a circumference of three or four miles. A terrace, constructed by the Rüni of Chhatar Sil about 1725, and repaired as a famine work in 1896-7, runs round the hillside. In former times the hill was more frequented as a place of pilgrimage than any other in Bundelkhand or Baghelkhand, It is said to have attained its great sanctity in the Tretayuga or the third epoch of the Hindu cosmogony, when it was visited by Rāma and Sirā during their wanderings in the jungles. More than thirty shrines, dedicated to various deities, crown the surrounding hills, or fringe the banks of the PaisunI. The small town of Sitapur, on the banks of the river, is largely inhabited by attendant priests. The temple attendants enjoy the revenues of forty-two makils within British territory, besides several others in the adjoining Native States. Two large fairs take place annually, on the occasion of the Rim-naumi and Dewill festivals, which formerly attracted 30,000 and 45,000 persons respectively. The attendance has now shrunk to a few thousands, as Rājās do not attend the festivals, and the Marūthā family of Karwi has become impoverished. Since 1807 plague regulations have still further reduced the number of pilgrims.

Kälinjar.—Town and hill-fort in the Girwan tahsil of Banda District, United Provinces, situated in 25°1° N. and 80°29° E., 35 miles south of Banda town. Population (1901), 3,015. The fort occupies a hill which rises abruptly, and is separated from the nearest eminence by a valley about seven miles across. Elevation, 1,203 feet above the sea. The crown of the hill is a plateau. Vast polyhedral masses of syenite form the base and afford a comparatively accessible slope, but the horizontal strata of sandatone which cap the whole present so bold an escarpment as to be practically impossible of ascent.

Källinjur is one of the very ancient forts of Bundelkhand,

and separate names for it are recorded in each of the three prehistoric periods of Hindu chronology. It is said to have been called Ramakuta in the Satya-yaga, Mahagiri ('the great hill') in the Trett, and Pingalis (the 'brown-yellow' hill) in the Dudhara-yaga. Other accounts transpose or vary these names. But its present appellation, Kalinjar, is itself of great antiquity. It occurs, as will be mentioned bereafter, in the Mahabharata; it is conjectured to appear in Ptolemy under the name of Tamasis; and it is mentioned in the Siva Purana as one of the nine uthals, from which will burst forth the waters that are finally to destroy the world. The modern name is sometimes rendered Kalanjar, from the local worship of Siva under his title of Kālanjara, or 'He who causes time to grow old." It was a very ancient seat of Saivite rites, and according to local traditions was strongly fortified by Chandra Brim or Varmma, the legendary founder of the Chandel

dynasty.

As in many other cases, Kālinjar was a high place sanctified by superstition, and fortified partly by nature and partly by art, The Mahābhārata mentions it as already a famous city, and states that whoever bathes in the Lake of the Gods, the local place for pilgrimage, is as meritorious as he who bestows in charity one thousand cows. The hill must have been covered with Hindu temples before the erection of the fort, for the dates of the inscriptions on the sacred sites are earlier than those on the gates of the fortress; and the ramparts consist largely of ornamental pillars, comices, and other fragments of carved work, which evidently belonged to earlier edifices. Firishta speaks of it as having been founded by Kedar Nath, a reputed contemporary of the Prophet, in the seventh century A.D. The Musalman historians make mention of the king of Kalinjar as an ally of Jaipal, Raja of Labore, in his unsuccessful invasion of Ghami, 978 a. n. A Raja of Kalinjar was also present at the battle of Peshawar, fought by Anand Pal in 1008, when endeavouring to check the victorious advance of Mahmud of Ghami in his fourth expedition. In 1021 Ganda or Namia, the Chandel Raja of Kalinjar, defeated the king of Kanauj; and in 1023 Mahmud of Ghami besieged the fort, but came to terms with the Raja. The Chandel clan of Rajputs removed the seat of their government from Manoua to Kalinjar after their defeat by Prithwi Raj, the Chauhan ruler of Delhi, about 1182. In 1203 Kuth-ud-din, the viceroy of Muhammad Ghori, took Kalinjar, and 'converted the temples into mosques and abodes of goodness, while the very name of idolatry was

10

annihilated.' But the Musalmans do not seem to have long retained possession of their new conquest; for in 1234, and again in 1251, we hear of fresh Muhammadan attacks on Kälinjar, which fell into the hands of Malik Nusrat-ud-din with a great booty. In 1247 Sultan Nasir-ud-din Mahmad brought the surrounding country under his sway; but even after this date, Chandel inscriptions erected in the fort show that it remained in the hands of its ancient masters almost up to the close of the

thirteenth century. Kalinjar next reappears in history in 1530, when the Mughal prince, Humāyun, son of Bābar, laid siege to the fort, which he continued intermittently to attack during ten years. In 1545 the Afghan, Sher Shah, marched against the stronghold; during the siege a live shell rebounded from the walls into the battery where the Sultan stood, and set fire to a quantity of gunpowder. Sher Shah was brought out horribly burnt, and died the following day. Before his death, however, he ordered an assault, which was executed with instant success, and his son, Jalai Khan, was crowned in the captured citadel and assumed the name of Islam Shah. In 1560 Majnun Khan attacked the fort, which was finally surrendered to him for Akbar, who constituted it the head-quarters of a sarkar. Under Akbar, Kalinjar formed a jagir of the imperial favourite, Rājā Birbal. Later it fell into the hands of the Bundelis (see BANDA DISTRICT); and on the death of their national hero, Chhatar Sal, it passed into the possession of Hardeo Sah of Panna. His descendants continued to hold it for several generations, when they gave way to the family of Kaim JL one of their own dependants.

During the period of Maräthä supremacy, Alf Bahädur laid siege to the fort for two years, but without success. After the British occupation Daryau Singh, the representative of Kaim Ji, was confirmed in possession of the fort and territory. But on his proving contumacious in 1812, a force under Colonel Martindell attacked Kälinjar; and although he failed to take the place by storm, Daryau Singh surrendered eight days later, receiving an equal portion of territory in the plains. During the Mutiny, a small British garrison retained possession of the fort throughout the whole rebellion, aided by the Rājā of Pannā. In 1866 the fortifications were dismantled.

The summit of the rock is between 4 and 5 miles in circuit, and is fortified by a rampart rising from the very edge. Access is obtained by a sloping pathway and flight of steps passing through seven gateways, several of which bear inscriptions.

Numerous rock-cut tanks and a few remains of temples are to be seen on the plateau, and religious carvings and inscriptions are scattered about, some of which have yielded valuable historical results. One temple, dedicated to Nilkanth, is still in good repair. There are also many caves, some of which contain inscriptions.

The town is locally known as Tarahti, and is situated at the foot of the hill. It is now of small importance; but the mins of fine residences and many old remains prove it to have been once rich and important. Tarahti contains a dispensary, and was till recently administered under Act XX of 1856, but its importance is decreasing. There is a village school.

(Journal, Asiatic Society of Bengal, vol. xvii, pages 171 and 313: Cunningham, Archaeological Survey Reports, vol. xxi.

page 20.)

Karwi Town,-Head-quarters of the tahsil and subdivision of the same name, in Banda District, United Provinces, situated in 25° 12' N. and 80° 54' E., near the Paisunt river and on a branch of the Great Indian Peninsula Railway. Population (1901), 7,743. Karwi was a British cantonment from 1805 to 1816; and in 1829 it became the principal residence of a Maratha chieftain who lived in almost regal state, and built several beautiful temples and large wells. Numerous traders from the Deccan were thus attracted to Karwi. During the Mutiny, Nārāyan Rao, after the murder at Banda of the Joint Magistrate of Karwi, assumed the government, and retained his independence for eight months amid the subsequent anarchy. The accumulations of his family constituted the great treasure afterwards famous as 'the Kirwee and Banda Prize Money.' The Bara, a large building, which formed the palace of Narayan Rao's family, was confiscated, with most of the other property, and now serves as a tahsili, police station, and school. The other public buildings are a jail and dispensary. A Joint Magistrate and an Assistant District Superintendent of Police are stationed at Karwi, which also contains branches of the Society for the Propagation of the Gospel and the American Methodist The town is administered, together with the adjacent village of Tarahawan, under Act XX of 1856. Karwi declined for a time after the Mutiny; but the milway, opened in 1800, has caused it to become the most important trade centre in the District. Cotton, grain, ghi, and other produce are largely exported. A cotton gin, opened in 1960, employed 180 hands in 1903, and there is a small manufacture

Web. He

of embroidered plush. There are three schools, with \$70 boys and 25 girls.

Rājāpur (or Majhgawān),-Town in the Mau takāl of Banda District, United Provinces, situated in 25° 22' N. and 81° of E., on the bank of the Jumna, 18 miles north-east of Karwi. Population (1901), 5,491. Rajāpur is the name of the town, and Majhgawan that of the mauza or village area within which it is situated. According to tradition the town was founded by Tulat Das, the celebrated author of the vernacular version of the Rămāvana, and his residence is still shown. He is said to have established several peculiar restrictions, which are scrupulously observed; no houses (except shrines) are built of stone, and potters, harbers, and dancing-girls are rigorously excluded. The only public buildings are the police station, post office, school, and dispensary. Rainpur was for a time the chief commercial centre of the District. owing to its position on the Jumna; but many of its merchants have migrated to Karwi, and the place is declining. Besides the export of country produce, there is a small mannfacture of shoes and blankets. The school has ninety pupils.

Houndaries, configuration, and hill and river systems.

Hamirpur District. - District in the Allahabad Division of the United Provinces, lying between 25° 5' and 26° 7' N. and 70° 17' and 80° 21' E., with an area of 2,280 square miles. It is bounded on the north by the Jumna, which separates it from Campore and Fatehpur, and by the Betwa, which divides it from Illaun and the Native State of Baont; on the west the Dhasan separates it from Jhansi; on the south lie the States of Alipura, Chhatarpur, and Charkbart; and on the east the District marches with Banda. The Native States of Sarila. Jigni, and Behat, and portions of Charkharf and Garrauli form enchance, entirely surrounded by British territory. Hamirpur lies chiefly in the great plain of Bundelkhand, which stretches between the banks of the Jumna and the outer scarps of the Vindhyan plateau. The hilly southern region is broken by scattered outlying spurs and isolated hills, some distance from the main Vindhyan range, which does not enter the District. Their general elevation does not exceed 300 feet above the Junina valley, or a total of about 800 feet above the sea. Though the hills are usually treeless, the scenery is picturesque, owing to their rugged outlines, and some of the artificial lakes are exceptionally beautiful. These magnificent reservoirs were constructed by the Gaharwar and Chandel Rajas, before the Muhammadan conquest, as sheets of ornamental water, and consist of valleys or depressions hemmed in by rocky hills and

massive artificial dams. Some of them enclose craggy islets or peninsulas crowned by the ruins of granite temples. The largest lake near Manona has a circumference of more than 4 miles; and several lakes are used for irrigation. North of the hill and lake country the plain spreads in an arid and almost treeless level towards the banks of the rivers. Of these, the principal are the Betwa, and its tributary the Dhasan, neither of which is navigable. The chief drainage channel in the centre of the District is the Birma Nadi, a tributary of the Betwa.

Most of the District consists of Gangetic alluvium, which Geology, conceals the underlying rocks, except in the southern hills, where the Bundelkhand gneiss is exposed.

The District is remarkable for the absence of trees. At the Botany, commencement of the eighteenth century one-third of it was densely wooded; but the jungle has been largely cleared. In the lower hills and valleys khair (Acacia Catechu), sef (Lagerstreemia parniflora), dhawā (Anogeissus tatifolia), and tendū (Diospyros tomentosa) are the most valuable trees, but are of poor quality. In the plains the tamarind, nim (Melia Azadirachta), and mahuā (Bassia latifolia) are commonly found. The mango is rare.

Leopards, hyenas, wolves, jackals, antelope, and hog are Faunafairty common, while a few sāmbar and chital are also found. The usual game birds occur, and fish, including mahseer, are common in the rivers and lakes.

The climate of Hamirpur is dry and hot, owing to the Climate and temperature of shade and the bareness of the soil.

The average annual rainfall is about 36 inches, varying from Rainfall.

33 in the north to 39 in the south. In 1868-9 only 17 inches
were received, and in 1894-5 more than 56 inches.

The earliest traditions connected with the District relate that Hatory, it was ruled by Gaharwar Rajputs, to whom the construction of some of the embankments forming the lakes is attributed. They were followed by the Parihārs, to whom succeeded the Chandels about the middle of the ninth century. During the Chandel supremacy in Bunderskinsho, Manona in the south of Hamirpur District was one of the chief capitals of that dynasty. The Chandels adorned the town and its neighbourhood with many splendid edifices, remains of which still exist; they also constructed some of the noble artificial lakes already described. In 1182 Parmal Deva was defeated by Prithwi Raj, the Chauhan ruler of Delhi; after which disaster the Chandel princes abandoned Mahoba and sank in importance,

though they still occupied the hill fort of KALINJAR in Banda District. About twenty years later Mahoba was conquered by Kutb-ud-din, and with occasional interruptions remained in the hands of the Musalmans till the close of the seventeenth

century.

In 1680 the District came into the possession of Chhatar Sal, the great national hero of the Bundellis, and was the theatre of many battles during his long struggle with the imperial forces under Muhammad Khān, the Bangash Nawāb of Farrukhābād and governor of Allahabad. On his death about 1734 he bequeathed to his ally, the Peshwa of the Marathas, one-third of his territories; and Mahobā formed a portion of the region so granted. The larger part of the present District of Hamtrour fell to his son, Jagat Raj. During the next seventy years the District continued under the government of his descendants, who, however, carried on among themselves that intestine warfare which was universal in Bundelkhand throughout the latter half of the eighteenth century. Rival Rajas had forts in every village, and one after the other collected their revenue from the same estates. Moreover, the Bundela princes were opposed by the Maratha chieftains; and Alt Bahadur, an illegitimate descendant of the Peshwa, who had made himself Nawah of Banda, succeeded in 1790 in annexing a portion of the District. He was defeated by the British and died in 1802. The British District of Bundelkhand was formed in the succeeding year (1803), a part being granted to our ally, Himmat Bahadur, as the price of his allegiance. The town of Mahoba uself, with the surrounding country, remained in the hands of the Pandits of Jalaun, until, on the death of their last representative in 1840, it lapsed to the British. The pargana known as Jaitpur was ruled by the descendants of Chhatar Sal until 1842, when the last Rājā, believing that our reverses at Kābul would prove fatal to British rule, revolted, and having been easily captured was removed to Cawnpore, receiving a pension of Rs. 2,000 a month. Jaitpur was handed over to another claimant, who mortgaged it to the Government, and died without issue in 1849. His territories lapsed, and have since formed part of Hamirpur. The later history of the District up to 1857 is chiefly concerned with the difficulties of fiscal administration. which will be described later.

On the outbreak of the Mutiny, Hamirpur exhibited the same return to anarchy which characterized the whole of Bundelkhand. On June 13, 1857, the 53rd Native Infantry broke into mutiny, and the massacre of Europeans began the next day. Only one Christian escaped with life. The surrounding native chiefs set up rival claims to portions of the British territory and plundered all the principal towns. The Charkhari Rājā alone maintained a wavering allegiance, which grew firmer as the forces of General Whitlock approached Mahobā. That town was reached in September, 1858, and the fort of Srinagar was destroyed. After a short period of desultory guerilla warfare in the hilly regions of Bundelkhand, the rebels were effectually quelled and the work of reorganization began.

The most important remains of the Chandels in this District Amharoare at Mahona, but the finest temple of large size is the threelogssteepled granite edifice at Makarbai, 8 miles away.

Hamirpur contains 7 towns and 756 villages. Population The is liable to considerable variations owing to vicissitudes of people. season. The numbers at the four enumerations were as follows: 529,137 (1872), 507,337 (1882), 513,720 (1891), and 458,542 (1901). There are five taksits—Hamirpur, Räth, Kulpakär, Mahobā, and Maudahā—each named after its head-quarters. The principal towns are Räth, Mahobā, and Hamirpur, the District head-quarters. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takell, | Arra in square dealers | Louis | mber of | Population | Population per spare side. | Percentage of sariation in population he seem 1892 and 1994 | Number of persons able to read and write. |
|----------------|---------------------------|-------|---------|------------|-------------------------------|---|--|
| Hamilton . | 376 | 2 | 124 | 71,625 | 190 | -1117 | ±,800 |
| Rath | 574 | 1. | 179 | 125,731 | 219 | - 0.9 | 3,990 |
| Kulpahiir | 558 | 1 | 331 | 111,926 | 201 | - 11-3 | 2,003 |
| Mahohi | 329 | 1 | -92 | 61,938 | T58 | - 10-5 | 2,081 |
| Mandahit . | 457 | 1 | 130 | 87,322 | 193 | - 15-9 | 2:333 |
| District total | 4,289 | 7 | 756 | 458,542 | 200 | - to-g | 15,107 |

The considerable decrease between 1891 and 1901 was due to a series of bad seasons, culminating in the famine of 1895-7. The density of population is approximately the same as that of the surrounding Bundelkhand Districts, but is less than half the Provincial average. Almost the whole population speak Western Hindl, the prevailing dialect being Bundell, which is, however, mixed with Baghell.

Chamārs (tanners and cultivators), 64,000, are the most Castes and numerous Hindu caste; followed by Lodhis or Lodhas (agri-occupations, 23,000; Brāhmans, 49,000; Ahirs, 31,000; Rāj-

puts, 27,000; and Kāchhīs, 24,000. Basors, numbering 11,000, who perform low menial duties, and Khangirs, 7,000, who are watchmen and thieves, though they claim to have once held the country, are not found outside the District in considerable numbers. Agriculture supports 64 per cent, of the population, and general labour 6 per cent. Brahmans, Raiputs, and Lodhas are the chief holders of land; and the same castes, followed by Kächhis and Chamars, are the principal cultivators.

Christian entestons,

General agricultural conlitions

A mission was opened at Mahobā by an American society in 1895, and there are branches at Rath and Maudaha; but in 1901 there were only 223 native Christians in the District.

The most important distinction between different parts of the District follows the distribution of different classes of soil. These fall into two main classes: the black or heavy soils, and the light soils. The former are called mar and habar, and the latter parzed; but near the rivers, where denudation has impoverished the soils, a coarse gravelly soil is found, called raker. In the north of the District the black soils predominate, while in the south there is a great deal of poor light soil overlying the rocks. Mar is the most fertile soil, and retains moisture for a long time, though an excess of min makes it unworkable. Kabar differs from mar in that it is more easily affected by either excess or deficiency of minfall. The autumn crops, which are usually sown broadcast, cover a larger area than the spring harvest.

Chief agriculturni *tatisties pal crops.

The ordinary tenures of the United Provinces are found, but pattidari and bhaiyachari mahali predominate; some of the latter are extraordinarily large. The main agricultural statistics and princi- for 1903-4 are given below, in square miles :-

| | Tehril: | | | | Total | Cultivated | Irrigated | Cultivable wants. | |
|---|----------|------|-----|------|-------|------------|-----------|----------------------|--|
| f | Hamirpar | | | | 276 | 183 | 2 | 113 | |
| Г | Rath . | | | 4 | 574 | 320 | - 2 | 95 | |
| L | Kulpahär | i.a. | è | 3 | 558 | 237 | 17 | 175 | |
| L | Mahohii | 56 | (8) | 36 | 329 | 133 | 8 | 133 | |
| ı | Maudahii | | 9 | 4 | 457 | 330 | 3 | 140 | |
| | | | T | otaî | 2,289 | 1,130 | 38 | 656 | |

NOTE .- Statistics for the Hamilton and Mandalia to held and to 1900-1.

Gram and jower are the principal food-crops, covering 270 and 265 square miles respectively, or 25 and 23 per cent, of the net cultivated area. Oilseeds (240 square miles) and cotton (84) are the most important non-food crops; while arkar, kodon,

wheat, bairs, and bariey cover 94, 43, 76, 43, and 34 square miles. A little sugar-cane is grown in the south and west, and Ain is cultivated in the south.

Like all the Bundelkhand Districts, Hamirpur is subject to Improvecycles of varying agricultural prosperity, and no permanent agriculadvance can be traced. Either excess or deficiency of rainfall tural causes land to remain untilled; and the result is the spread of practice. a grass called bant (Saccharum spontaneum), which cannot be eradicated without much trouble, though it dies out after a varying period of ten to fifteen years. The spring crops are also liable to rust. The most striking change in recent years was the replacement of wheat by gram or millet, both inferior crops, after the famine of 1805-7; but the area under wheat is again increasing. A valuable red dve was formerly obtained from a plant called al (Morinda citrifolia); but its cultivation has ceased owing to the introduction of aniline colours. Considerable sums have been advanced under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts, amounting to a total of Rs. 2,64,000 during the ten years ending 1900, of which 2 lakhs was advanced in the three bad years 1896-8. Between 1901 and 1904 the total advances were Rs. 82,000.

In 1867 six bulls were imported from Hansi and Hissar, but Cattle, the cross had little effect in improving the District breed, which ponies, and is on the whole inferior. Renewed attempts have recently been made to introduce a better strain. No horse-breeding operations are carried on. The sheep and goats are superior to those bred in the Doth, and are thus in some request out-

side the District.

The water-supply is defective in almost every part, and Irrigation. difficulties sometimes occur in supplying water for cattle. It has already been stated that the black soils retain moisture, and with ordinary seasons irrigation is not much required in them. In 1903-4 the total irrigated area was 28 square miles, of which 4 square miles were supplied by a branch of the Betwa Canal in the north of the District, and 1 square mile by the artificial lakes in the south. Wells supplied 22 square miles, being most used in the light parted soil in the central and southern parts. A project for a canal from the Dhasin near the south-west corner of the District has been sanctioned; it will water the western portion between the Birma and the Dhasan.

Soapstone is quarried at one place, and used for making toys, Minerals. parts of hukkus, vases, &c. The roads in the south are metalled with broken granite, and elsewhere with hankar or nodular limestone, which is also used for making lime.

Arts and manufac-Tittes.

The District is almost entirely agricultural, and beyond the few requirements of the people which can be satisfied locally, there are few industries. Coarse red cotton cloth is the only important manufacture, and the silver ware of Maudaha is the sole product of artistic merit. A little saltpetre is made in places. There are small cotton presses at Kulpahär and Mahobā, and at the former place hav is pressed into bales for export.

Commerce.

The noticeable feature in the trade of the District is the absence of large central markets. Jouar, bajra, wheat, gram, cotton, ghi, hon, oilseeds, and cloth are exported in favourable seasons; while sugar, tobacco, spices, rice, salt, piece-goods, and metals are imported. The trade of the north of the District is by road with Campore, while the railway carries the produce of the southern part. RATH is the most important trade centre, and the other markets are essentially local, merchants or their agents dealing on the spot with the cultivators and small village traders.

Railways

A branch of the Great Indian Peninsula Railway from and roads. Ihansi to Manikpur passes through the south of the District. The roads have recently been much improved, but communications are still backward, and during the rains many of the unmetalled roads become almost impassable. About 100 miles are metalled, of which 55 are maintained at the cost of Provincial revenues, and 419 miles are unmetalled. Avenues of trees are kept up on 122 miles of road. The principal routes are the roads from Cawnpore through Hamirpur town, Mandahā, and Mahobā to Saugor ; from Hamirpur, through Rāth, to Harpālpur and Kulpahār railway stations; and from Hamirpur through the east of the District to Panwart on the railway.

Famine.

The District appears to have escaped the terrible famines of 1781 and 1803-4. In 1813-14, however, it suffered severely, and again in 1819 the food supply failed, though the people had money, gained by the high prices of cotton in previous years. A succession of bad years culminating in the drought of 1833-4 led to famine, pestilence, and emigration, which reduced the population by a half, and were long remembered. Distress was less severe in 1837-8, but was still great. The District escaped famine in its worst form till 1868-9, when the failure of the rains caused the loss of the harvest, and people were reduced to eating the refuse of oilseeds, and roots and herbs. There was also great mortality among the cattle. The drought of 1877-8 did not seriously affect Hamirpur. Early in

1804 rust damaged the spring crops, and the rains of that year destroyed the autumn harvest. In 1805 rust was again bad, and the rains ceased prematurely, causing much distress. Relief works were required early in 1806, and the still shorter rainfall of that year caused severe famine. The works were kept open till August, 1807, at a total cost of nearly o lakhs, besides expenditure on relief by other methods.

The Mahobā and Kulpahār taksils are included in the sub-District division of Mahobā, which is usually in charge of a resident authors Joint-Magistrate. The Collector is also assisted by two and staff. Deputy-Collectors recruited in India, and a tahuldar is stationed at the bead-quarters of each tahsil.

There is one District Munsif, and the whole District is in-Civil cluded in the Civil and Sessions Judgeship of Banda. In justice and former times Hamirpur was noted for dacoity and robberies; but crime is not exceptionally serious now. The escape of criminals is, however, facilitated by the way in which Native and British territory are intermingled. Female infanticide was formerly suspected, but no villages have been under surveillance since 1000.

Most of the present District was acquired in 1803-4, when Land it was included in the District of Bundelkhand. In 1819 this revenue was divided into a northern and southern portion, the former, tration. called Kalps, including parts of the present Jalaun District and the northern parts of Hamirpur. In 1821 the head-quarters were moved to Hamirpur. The Maratha method of administration was briefly a system of rack-rent pitched at the highest rate which could be paid. The earliest settlements made, though based on the takildars' unreliable estimates and the village papers, were moderate and well-distributed. From 1810, however, enhancements were made, and in 1816 the revenue of that portion of the District which was then British territory was raised from of to 14-7 lakhs. In the succeeding short-term settlements the revenue, though reduced, was still excessive; and after the famine of 1833-4 half the estates in the District had been resigned by their proprietors. Speculations in land and corruption among the native officials added to the difficulties of administration. The first regular settlement, preceded by a professional survey, was made in 1842 for most of the District, the southern portions, which were acquired subsequently, being regularly settled at later dates. The assessment was based on rates which had been fixed for a large part of Bundelkhand; it was moderate and worked well. The demand for the area referred to above was o-8

lakhs, and the demand for the whole District 10-8 lakhs. This demand was revised in 1877-0, when the revenue fixed amounted to 10-7 lakhs. Soil rates were framed to calculate the 'assets,' and the valuation was revised with reference to the recorded rental, fiscal history, and actual condition of each village. The term of settlement was twenty years, and in 1893 it was decided to prolong this period for ten years more. The famine of 1895-7, however, led to extensive reductions, and an experiment was made in fluctuating assessments. In 1005 the whole District came under settlement according to the new system devised for Bundelkhand, by which the revenue will be liable to revision every five years in case of considerable variations in cultivation. The present demand for land revenue is 8-2 lakhs, or an incidence of less than eleven annas per acre, varying in different parts from eight annas to one rupee. Collections on account of land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees :-

| | | 1880-t. | 1800-1. | 1100-е. | 1103-4 | |
|---------------|---|---------|---------|---------|--------|--|
| Land revenue | 8 | 10,68 | 10,72 | 9,76 | 7:74 | |
| Total revenue | | 11,65 | 13,83 | 12,50 | 9.04 | |

Local self-No municipalities have been constituted, but seven towns government, are administered under Act XX of 1856. Local affairs beyond the limits of these are managed by the District board, which in 1903-4 had an income and expenditure of 1-2 lakhs. The expenditure includes Rs. 75,000 on roads and buildings.

Police and There are #1 police stations. The District Superintendent jails.

of police controls a force of 3 inspectors, 79 subordinate officers, and 334 constables, besides 86 town police, and 1,161 rural and road police. The District jail contained # daily average of 79 prisoners in 1903.

Education. Hamfrpur compares favourably with other Districts in the United Provinces as regards literacy. This is the more remarkable in a purely agricultural community. In 1901, 3-3 per cent. (6-5 males and 0-1 females) could read and write. The total number of public schools rose from 91 in 1880-1 to 98 in 1900-1, and the number of schoolsr from 3.551 to 3.720. There were 131 such schools in 1903-4, with 4.993 pupils, including 64 girls, besides 52 private schools with 708 pupils. Only 955 out of the total number were in secondary classes. Two of the schools are managed by Government and ninety seven by the District board. Out of a total expenditure on

education of Rs. 32,000, only Rs. 2,600 was met from fees and the balance was charged to Local funds.

There were five dispensaries and hospitals in 1903, with Hospitals accommodation for sixty-four in-patients. In 1903 the number and dispensaries of cases treated was 26,000, including 575 in-patients, and 1,100 operations were performed. The expenditure was Rs. 5,400, chiefly met from Local funds.

About 21,000 persons were successfully vaccinated in Vaccina-1903-4, representing the high proportion of 45 per 1,000 of tion, population, although vaccination is not compulsory in any part of the District.

(District Gazetteer, 1874 [under revision]; W. E. Neale, Settlement Report, 1880.)

Hamirpur Tahsil.-North-eastern tahsil of Hamirpur District, United Provinces, comprising the pargunus of Hamirpur and Sumerpur, and lying between 25° 42' and 26° 7' N. and 79° 51' and 80° 21' E., with an area of 376 square miles. Population fell from \$1,173 in 1891 to 71,625 in 1901. There are 124 villages and two towns: Hamingun, the District and tahsil head-quarters (population, 6,721), and Sumerpur (4,030). The demand for land revenue in 1904-5 was Rs. 1,14,000, and for cesses Rs. 28,000. The density of population, 190 persons per square mile, is slightly below the District average. On the north flows the Jumna, while the Betwa runs almost due east through the centre of the takil to join it. The soil is chiefly fertile, but grows lighter near the junction of the two rivers, and a network of ravines fringes the banks of both the Jumna and the Betwa. In 1902-1 only 2 square miles were irrigated, out of 183 square miles under cultivation. The Betwa Canal serves a small area in the north.

Rath Tahail.—North-western tahail of Hamirpur District, United Provinces, comprising the farganas of Jalalpur and Rath, and lying between 25° 28' and 25° 56' N. and 79° 21' and 79° 55' E., with an area of 574 square miles. Population fell from 126,920 in 1891 to 125,731 in 1901, the decrease being the smallest in the District. There are 179 villages and one town, Rath, the tahail head-quarters (population, 11,424). The demand for land revenue in 1904-5 was Rs. 2,64,000, and for cesses Rs. 44,000. The density of population, 219 persona per square mile, is the highest in the District. The tahail is enclosed on the west by the Dhasin, on the north by the Betwa, and on the east by the Birma. The centre contains rich black soil; but the north-east includes some of the poorest land in the District, and ravines occupy a large area. In

1903-4 only 2 square miles were irrigated, out of 329 square miles under cultivation. It is proposed to irrigate this takiil

by a canal from the Dhasan.

Kulpahar Tahsil,-South-western tahsil of Hamirpur District, United Provinces, conterminous with the pargana of Panwari-Jaitpur, lying between 23" 5' and 25" 31' N. and 79" 17' and 70' 49' E., with an area of 558 square miles. Population fell from 127,567 in 1891 to 111,926 in 1901. There are 231 villages and two towns: KULPAHAR, the taksil headquarters (population, 5,128), and Jaitpur (4,817). The demand for land revenue in 1904-5 was Rs. 1,71,000, and for cesses Rs. 34,000. The density of population, 201 persons per square mile, is almost exactly the District average. The takuil contains numerous hills and large areas of jungle. In the north black soil is found; but in the south the soil is poor and scanty, rock being near the surface. In 1903-4 the area under cultivation was 257 square miles, of which only 17 were irrigated. Wells serve most of the irrigated area, but a small supply is obtained from tanks through canals managed by the Irrigation department.

Mahobā Tahsil.-South-eastern tahsil of Hamirpur District, United Provinces, conterminous with the parguna of the same name, lying between 25° 6' and 25° 38' N. and 79° 41' and 80° 9' E., with an area of 329 square miles. Population fell from 74,200 in 1891 to 61,938 in 1901, the rate of decrease being the highest in the District. There are ninety-two villages and one town, Manona, the tahsil head-quarters (population, 10,074). The demand for land revenue in 1904-5 was Rs. 75,000, and for cesses Rs. 13,000. The density of population, 188 persons per square mile, is the lowest in the District. In the north some fairly good black soil is found: but scattered rocky hills stud the southern portion, and the soil here is inferior and only a thin layer conceals the underlying rock. Several considerable artificial lakes made by the Chandels add a charm to the landscape and supply water for irrigation. In 1903-4 the area under cultivation was 133 square miles, of which only 5 were irrigated. Pin cultivated near Mahobā has a great reputation, being exported to Calcutta and Bombay.

Maudahā Tahsīl.—Tahsīl in Hamīrpur District, United Provinces, comprising the parganas of Maudahā and Muskirā, and lying between 25° 30' and 25° 52' N. and 79" 45' and 80° 21' E., with an area of 452 square miles. Population fell from 103,900 in 1891 to 87,322 in 1901, or by 19 per cent. There

are 130 villages and one town, MAUDAHA, the *tahiil* headquarters (population, 6,172). The demand for land revenue in 1904-5 was Rs. 1,76,000, and for cesses Rs. 36,000. The density of population, 193 persons per square mile, is below the District average. On the east the *tahiil* is bounded by the Ken, and on the west by the Birmā. It contains a large proportion of fertile black soil; but the north-west is very inferior, and the land near the rivers is cut up by ravines. In 1902-3 the area under cultivation was 230 square miles, of which only 2 were irrigated.

Mahobā Subdivision.—Subdivision of Hamtrour District, United Provinces, including the Manobā and Kulpahār

taksils.

Hamirpur Town.—Head-quarters of the District and tahiil of the same name, United Provinces, situated in 25° 58' N. and 50° 9' E, on a tongue of land near the confluence of the Betwa and Jumna, and on the metalled road from Cawnpore to Saugor. Population (1901), 6,721. According to tradition, it was founded in the eleventh century by Hamir Deo, a Karchuli Rājput expelled from Alwar by the Muhammadans. Under Akbar it was the head-quarters of a mahil or pargana. The ruins of Hamir's fort and a few Musalmān tombs are the only relies of antiquity. Several Europeans were murdered here during the Mutiny. Besides the usual public offices there is a dispensary. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,100. There is a little trade in grain. The District school has 64 pupils, and a middle school 142.

Kulpahār Town.—Head-quarters of the tahsil of the same name, in Hamirpur District, United Provinces, situated in 25° 19' N. and 79° 39' E., near the Great Indian Peninsula Railway. Population (1901), 5,128. The town was founded by Jagat Raj, Raja of Jaitpur, son of the great Bundela leader, Chhatar Sal. Each of his four sons built for himself a mansion in the town, the ruins of which still exist. The fort was taken by All Bahādur of Bānnā in 1790, and was dismantled by the British in 1805. Kulpahār contains a tahsili, and a school with 120 pupils. It is administered under Act XX of 1856, with an income of about Ra. 1,100. There is a considerable trade in grain and cotton, and a small cotton press and haybaling factory are worked.

Mahobā Town.—Ancient town in Hamirpur District, United Provinces, and head-quarters of the taked of the same name, situated in 25° 18' N. and 79° 53' E., on the road from

Campore and Saugor and also on the Great Indian Peninsula Railway. Population (1901), 10,074. The name is derived from the great sacrifice or Mahetsava, said to have been performed by Chandra Varmma, the traditional founder of the Chandel dynasty, which ruled a large tract of country from here (see BUNDELKHAND). Mahobā stands on the banks of the Madan Sagar, a lake constructed by Madan Varmma, the fifteenth king and the most powerful of all the Chandel rulers. Architectural antiquities of the period abound throughout the neighbourhood. The Ram Kund, which is believed to mark the place where Chandra Varmma died, is a tank of especial sanctity. The fort, now almost entirely in ruins, commands a beautiful view over the hills and lakes. Several of the latter, confined by magnificent masonry dams, have greatly silted up; but the Kirat Sagar and Madan Sagar still remain deep and clear sheets of water. The shores of the lakes and the islands in their midst (one of which in the Madan Sagar is connected with the mainland by a stone causeway) are thickly covered with pillars and broken sculpture. The numerous arms of the lakes embrace rocky tongues of land surmounted by picturesque ruins. Three miles east of the town lies the Bijainagar Sagar, the largest of all and more than four miles in circuit, while to the south-west lies the Rahilya Sagar, on the bank of which a large mined temple is situated. Mahobā was probably the civil capital of the Chandels, while their greatest fortress was at Katanjan, and their religious capital at Khajnano. After a rule of more than three centuries Parmāi was conquered by Prithwi Raj of Delhi in 1182, and twenty years later Mahoba feil into the hands of Kutb-ud-din, after which little is heard of the Chandels. In the seventeenth and eighteenth centuries this part of the country was ruled by the Bundellas The Musalman buildings of the town are exclusively constructed from Hindu materials. A mosque bears an inscription which assigns its foundation to the year 1322 in the reign of Ghiyas-ud-din Tughlak. The town contains a small cotton press, a dispensary, and a mission orphanage. It is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 3,500. There is an increasing trade in local produce. The taknili school has 164 pupils.

Maudahā Town.—Head-quarters of the tahtil of the same name, in Hamirpur District, United Provinces, situated in 25° 40′ N. and 80° 7′ E., on the Cawnpore-Saugor road. Population (1901), 6,272. According to tradition a Muhammadan, named Husain, with the help of some Parihar Rajputs,

expelled the Kols who resided here and took possession of the place. In 1730 Diler Khan, a son of the governor of Allahahad, was slain here, and his tomb attracts a considerable number of votaries. The fort was first built by Khuman Singh and Guman Singh of Charkhart, and on the same site All Bahadur of BANDA afterwards erected a stone fort. The town commiss a taksili, and is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,100. The silver ware produced here in small quantities has some merit. There is a branch of the American Mission, and a middle school with tor pupils.

Rath Town.-Head-quarters of the taksil of the same name, in Hamtrour District, United Provinces, situated in 25° 36' N. and 70° 34' E., 50 miles south-west of Hamtrour town. Population (1901), 11,424. The early history of the place is uncertain. It stands on a site which is evidently of great antiquity; but the Musalmans who occupied it early destroyed most of the Hindu buildings. Rath contains several mosques, temples, and tanks adorned with extensive ghits, the finest lake being called Sagar Tall. There are mins of two Musalman tombs which were built, probably about the fourteenth century, from fragments of Hindu temples, and also remains of two forts built by Bundell chiefs late in the eighteenth century. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Ra. 3,000. It is the most important must in the District, and deals in gmin, cotton, and sugar. There are small industries in weaving, dyeing, and saltpetre manufacture; but trade is decreasing. The town contains a branch of the American Mission, a dispensary, and a school with 180 pupils.

Allahābād District (Ilahlbād).-The most eastern District Bounin the Allahabad Division, United Provinces, lying between 24° daries, configuration, 47' and 25" 47' N. and 81" 9' and 82" 21' E,, with an area and hill of 2,811 square miles. It is bounded on the north by the and river Partabgarh District of Oudh; on the east by Jaunpur and systems. Mirzapur; on the south by the Native State of Rewah and Banda District; and on the west by Fatchpur. The Ganges forms part of the northern boundary and then crosses the District; and the Jumns, after flowing along the southern border, meets the Ganges near the centre. These two rivers divide Allahabad into three well-marked subdivisions:-(1) The Doab or triangular wedge of land enclosed by the converging channels of the Ganges and Jumna. This consists of a fertile tract drained by the Sasur Khaderi, a tributary of the latter.

Near the Ganges there is usually a stretch of alluvial land (kachhār or char), and along the Jumna and the lower course of the Sasur Khaderi are extensive ravines. The elevated plain between is rich and well-wooded, while the ravines are bare and desolate. Near the lumna stands the Pabhosa hill, which is the only rock found in the DOAR. (2) The trans-Ganges tract lying north of that river. This is more fertile than the Doab, and is remarkedly well-wooded. It contains many swamps or thils near which rice is cultivated. (1) The trans-Jumna tract, lying south of the Jumna and Ganges, is the largest of the three and the most varied in physical aspects. The drainage is entirely into the Ganges and the Jumna, the main feeder being the river Tons (Southern). Immediately south of the Ganges a low range of stone hills enters the District from the east. West of the Tons another set of hills forms smaller ranges. which reach the Jumina. The country north of these hills resembles the ordinary Doah, but the south is composed of black soil interspersed by low rocky hills, and is really a part of BUNDELKHAND. Beyond the Belan, on the southern boundary. of the District, the massive scarps of the Kaimur range rise in tiers from a small fertile valley.

Geology.

North of the Jumna and Ganges the District consists solely of Gangetio alluvium; but in the south three subdivisions of the Vindhyan rocks are represented: the Kaimur, the lower Rewah, and the upper Rewah. The lowest or Kaimur is a massive sandstone with a bold scarp to the north; the upper Rewah forms a similar, bur loftier, scarp of sandstone; and the low ground between is formed of the lower Rewah group of shales and sandstone.

Botany.

The flora of the District presents no peculiarities. North of the Ganges magnificent groves of mango are found, while the mahnā (Bassia latifolia) grows plentifully in the west of the Doāh, and the pipal (Ficus religiosa) south of the Jumna. Chhiūl or dhāk jungles (Butea frondosa) exist in most parts, and the babūl (Acacia arabiaa) grows on the black soil.

Fanna.

In the Dolb and trans-Ganges tract jackals and hog are the only common wild animals. South of the Jumna herds of antelope and wild hog commit serious inroads on the crops. Ravine-deer and leopards are found in the hills, and occasionally a tiger is seen. Wolves are common. The usual species of game birds are plantiful; and all the rivers and the swamps north of the Ganges, and the artificial tanks south of the Jumna, provide fish.

Climate

The Doab and trans-Ganges tracts are fairly healthy, and

their climate is that of the Gangetic plain generally. South of and temthe Jumna the heat is excessive. Even at Allahabad city the parature, shade temperature reaches 113° or 114° in ordinary years, the highest recorded being 120°. The hot weather and rains last from April to November.

The average annual minfall for the whole District is 37 Rainfall, inches, the variations in different parts being small. From year to year, however, fluctuations are considerable. Thus in 1880 only 17 inches of rain were received, and in 1894 more than

76 inches.

Tradition connects the country round Allahābād with Vāra-History nāvata, where the Pāndava brothers spent part of their exile; but a similar claim is made for other places. Rāma and Sitā are popularly believed to have passed through the District on their self-imposed exile. For a long time it was believed that Kosam, in the south, was the Kausāmbhl mentioned in the Mahābhārata and Purānas. The earliest historical fact known about the District is that, about the fourth or fifth century, it was included in the dominions of the Guptas of Maoadha. Early in the seventh century it appears from the narrative of Hiuen Tsiang, the Chinese pilgrim, that Allahābād was in the dominions of Harshavardhana, the great ruler of Kanauj.

From this time nothing is known of the history of Allahabad until the invasion of Shahab-ud-din Ghort in 1104. The District was then conquered by the Musalmans, in whose hands it remained until the introduction of British rule. During the thirteenth and fourteenth centuries the country round Allahabad was included in the fief of Kara, at which town the governor had his head-quarters. Kara was the scene of the famous meeting between Muizz-ud-din and his father in 1286. The son had just succeeded Balban on the throne of Delhi, and the father was making his way up from Bengal to oppose him. They met at Kara, and, inspired with an aversion to bloodshed, conferred with each other from boats in the middle of the Ganges, and resolved to march together to the capital. Allahābād was in the possession of Alä-ud-din at the end of the thirteenth century, and it was in the Ganges sands between Manikpur and Kara that he basely murdered his uncle, the aged Sultan Firoz Shah. Under succeeding princes, the history of the District is a tedious nurrative of ambitious revolts and their barbarous suppression. About 1529 it was wrested from the Pathans by Babar. Prince Sallm, afterwards known as the emperor Jahlingtr, resided at Allahiblid as governor during the lifetime of his father; and the mausoleum

in the Khusrd-bagh commemorates Salim's rebellious son. Early in the eighteenth century, when the Bundelas under Chhatar Sal were beginning their national movement against the Mughai power, Muhammad Khan, the Bangash Nawab of Farrukhābād, was governor of the Subāh of Allahābād, and the western portion, now in Hamirpur and Banda Districts, was overrun by Bundels and Maratha chieftains. During the subsequent anarchy the Oudh government at one time held the supremacy; at another the ubiquitous Marāthās held brief possession; and still later, in 1765, the English restored the country to Shah Alam, the phantom emperor of Delhi. For some years Allahābād was the seat of the imperial court; but in 1771 Shilh Alam removed to Delhi and threw himself into the arms of the Marathas. The British held that his eastern dominions were forfeited, and sold the abandoned Province to the Nawah of Outh for to lakhs of rupees. Shah Alam remained a state prisoner in the hands of the Marathas until 1803, when the victories of Lord Lake set him free. Meanwhile difficulties arose from time to time with regard to the payment of the Oudh tribute, which was permanently in arrears : and in 1801 the Nawab agreed to a compromise, by which he made over his territory between the Ganges and the Jumna to the British Government in lieu of tribute. The District of Allahābād formed part of the tract thus ceded.

During the Mutiny of 1857 the sepoys at Allahābād revolted (June 6), and massacred most of their officers. At the same time the populace rose throughout the city, set free the prisoners in jail, and murdered every European and Eurasian upon whom they could lay hands. Happily, however, the British forces held the fort with the aid of a Sikh detachment; and on June 11 Colonel Neill arrived to take the command. The insurgents were promptly attacked and driven off; and within a fortnight after the outbreak the city and station were once more in the hands of the authorities. Soon afterwards Havelock arrived at Allahabad; and, the position having been secured, the main army. passed on for Cawapore. No further disturbance arose, and the peaceful course of administration in the District has never

since been interrupted.

Archaeology.

The District is rich in archaeological remains. Besides the objects of interest at ALLAHABAD CITY, which range from a pillar erected by Asoka in the third century B.C. to buildings of the Mughai period, ruined temples and forts, coins, and other memorials of the past have been found at many places. Chief among these are Kosam, Jutisi, Garbwa, where

interesting inscriptions of the Gupta kings were dug up, and

Singraur.

Allahābād contains 3,473 villages and 13 towns. Popula-The tion increased from 1872 to 1891, but decreased in the next respledecade, owing to the famine of 1896-7. The numbers at the four enumerations were as follows: 1,306,241 (1872), 1,474,106 (1881), 1,548,737 (1891), 1,489,358 (1901). There are nine tahrile, Allahanad, Sirathū, Manjhanpur, Soraon, Phūl-PUR, HANDIA, KARCHANA, BARA, and MEJA, each named after its head-quarters. The only considerable place is ALLAHanan Crry, which is both the administrative head-quarters of the District and the capital of the United Provinces. The following table gives the chief statistics of population in 1001:-

| Tuhati, | Ares in square | Name Towns | other of | Population, | Pegulation per spare mile. | Ferrentings of variation in population ter- tween rifes | Number of persons able to reset and write. |
|----------------|----------------|------------|----------|-------------|-------------------------------|--|---|
| Allaháhád . | 296 | 2. | 208 | 338,820 | 11145 | - 51 | 10,811 |
| Strathu | 350 | 3 | 251 | 129,204 | 517 | - 00 | 3,761 |
| Manjhanpur | 372 | 1 | 169 | 129,798 | 477 | - 14 | 34954 |
| Soraco | 250 | | 473 | 185,758 | 718 | - 0.1 | 5,160 |
| Phülpur | 286 | 3. | 486 | 171,651 | 600 | - 29 | 4,052 |
| Brandil | 387 | Tana. | 580 | 183,281 | 639 | - 3-0 | 4,178 |
| Karchanii . | 257 | 1 | 338 | 127,327 | 495 | - 3.6 | 3,780 |
| Biles | 253 | awy. | 237 | 55,503 | 219 | -13-0 | 1,742 |
| Mejā | 650 | 2 | 379 | 167,014 | 257 | -14:4 | 5/987 |
| District total | 118,1 | 13 | 3,473 | 1,489,358 | \$3° | - 3-8 | 63,528 |

Hindus form 86 per cent, of the total population, and Musalmans 13 per cent, and there are 6,800 Christians. In the hilly tracts south of the Jumna, population is not so dense as in the Doab and trans-Ganges tracts, and the same part of the District suffered most severely in the famine of 1896-7. About 90 per cent, of the population speak Eastern Hindl, chiefly the Awatht dialect, and most of the remainder Western Hindt.

As might be expected in one of the great religious centres Castes and of the Hindus, Brähmans are the most numerous caste, number. occupaing 177,000. Other large castes are:-Chamars (leatherworkers and cultivators), 155,000; Ahirs (graziers and agriculturists), 153,000; Kurmls (agriculturists), 111,000; Pasts

(toddy-drawers and labourers), 97,000; Raiputs, 63,000; Koris (weavers and labourers), 45,000; and Kachhis (cultivators), 15,000. Kurmis, Kāchhis, and Pāsis belong chiefly to the central parts of the Province. There are 15,000 Kols in the jungly tracts of the trans-Jumna area, who are more numerous in Central India and the Central Provinces. The Muhammadans are largely descended from converted Hindus, though 72,000 call themselves Shaikhs. Julahās (weavers) number 14,000, and Pathans 20,000. Agriculture supports more than 60 per cent, of the total population, and general labour 8 per cent., the District being essentially agricultural, apart from the single large city.

Christian missions.

Of the 2,230 native Christians in 1901, 1,075 belonged to the Anglican communion, 349 were Roman Catholics, 253 Presbyterians, and 130 Methodists. The American Presbyterian Mission was opened here in 1836, the branch of the Church Missionary Society in 1858, and the American Methodist Mission in 1873. Allahābād is the head-quarters of the Anglican Bishop of Lucknow, and also of a Roman Catholic bishop. A village called Muirabad, situated close to Allahabad city, is exclusively inhabited by native Christians.

General agricultural conditions.

Along both banks of the Ganges are found rich alluvial lowlands called kachhir, which produce magnificent spring crops, though they are flooded in the rains. From the kachhār on the north bank a high ridge of barren soil rises to the upland, which is at first composed of light loam, and then sinks a little to the clay area, which includes good rice land. Sugar-cane is also grown in this tract to a larger extent than elsewhere. A similar distribution of soil is found in the Doab, where, however, jhils are less frequent, and near the Jumna and Sasur Khaderi the clay and loam of the central portion turn to sand, while in the extreme south-west a dark friable soil is found, resembling the black soils of Bundelkhand, This tract also produces rice. South of the Jumna the country is less fertile, consisting of a tract of the black soils which are entirely dependent on sessonable rain for cultivation. Besides the ordinary food-crops, oilseeds are the most important product of this tract; but the jungles afford grazing, and cattle are kept in large numbers. A small fertile valley lies in the south between the Belan and the scarp of the Vindhyan plateau.

Chief agticultural statistics

In the trans-Jumna tract are a few large estates, some of which are held on talukaliri tenure; but the prevailing tenure and princi. is patthdari. In the Doah and trans-Ganges tracts 5, 300 mahalis pal crops, are held samindari, 2,001 pattidari, and 219 bhaiyachard. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles:-

| Takail. | | | Total. | Cultivated | tirigated | Caltivable waste. |
|--------------|------|------|--------|------------|-----------|----------------------|
| Attababad . | - 63 | 3) | 296 | 210 | 45 | oy. |
| Siratha | | - | 350 | 137 | 49 | 20 |
| Manjhanpur - | *2 | 27 | 272 | 180 | 5.1 | 31 |
| Sorson | | | 260 | 163 | 68 | 18. |
| Philipur - | - 23 | - 2 | 286 | 172 | 65 | .13 |
| Handia . | - 1 | - | 187 | 186 | 88 | 16 |
| Karchani . | - | 45 | 357 | 174 | 28 | 31 |
| Inra | | | ₹53 | 122 | - 1 | 69 |
| Меја | | - 61 | 650 | 317 | 24 | 144 |
| | | otal | 2,811 | 1,661 | 420 | 350 |

Rice and gram covered 363 and 406 square miles respectively, or 22 and 24 per cent, of the net area cropped. Barley (314 square miles), bājra (184), jowār (147), and wheat (168) are the other food-crops of importance. Oilseeds (65 square miles) are chiefly grown south of the Jumna, and cotton (15) in the Deab; poppy covered 11 square miles, and sugar-cane and hemp (san) 13 and 18 square miles respectively.

The agricultural conditions of the District have improved Improvelittle within recent years. North of the Ganges a slight in agriculcrease has taken place in the net cultivated area and a more und decided rise in the area bearing double crops; but the area proctice. in either case is largely occupied by the inferior food-crops of the people. In the Doah the net cultivation has not expanded, though the double-cropped area has increased. Less cotton is grown in both these tracts than thirty years ago, and the areaunder indigo has contracted still farther. The trans-Jumna tracts had advanced to some extent when the famine of 1896-7 threw them back considerably. In all three tracts a large area produces poppy, and in the trans-Canges area and Doah an increase in the number of masonry wells is to be noted. A little has been done in the trans-Jumna tracts to prevent erosion of land and hold back water by making small earthen dams, Advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts are not considerable, except in adverse seasons. A total of about 2:8 lakhs was advanced during the ten years ending 1900, chiefly between 1895 and 1898. The average for the next four years was Rs. 10,000. One or two small agricultural banks have recently been founded.

Cattle, popies, and sheep.

The indigenous breed of cattle is very inferior, and all the best animals are imported. Dealers from Bharatpur and Hānsi regularly bring cattle, while near the Jumna the small but sturdy bullocks of Bāndā are common. There is no horse-breeding, and the ponies bred locally are very inferior. Goats are kept in all parts, but sheep are chiefly found north of the Ganges.

Irrigation.

The District depends mainly on wells and swamps or fills for irrigation. In 1903-4, 420 square miles were irrigated, or one-fourth of the net cultivated area. Wells supplied 219 square miles, fills or tanks 170, and canals 28. Rivers are hardly used at all for this purpose, supplying only about 3 square miles. The canal irrigation is confined to the Doub, and is supplied by distributaries of the Fatehpur branch of the Lower Ganges Canal. It is increasing rapidly, as the cultivators appreciate its advantages. There is very little irrigation in the trans-Jumna truct, and it is limited almost entirely to the area below the hills. The tank or swamp irrigation is most important north of the Ganges and in the Manjhanpur tahsil in the Doub. Water is invariably raised from the wells in a leathern bucket drawn by bullocks.

Minerals.

The chief mineral product of the District is sandstone, which provides excellent building stone. Kankar is found abundantly in several places, and is used for metalling roads and for making lime.

Arts and manufactures. The District is mainly agricultural, and there are few industries beyond those connected with the simple requirements of the people. Sugar is refined in a few places north of the Ganges, and a little coarse cloth is made all over the District. Sarai Akil is noted for the manufacture of brass vessels. In Allahābād city an iron foundry and a coach-building and furniture factory employ more than 300 hands, a brick and tile factory 700 to 800, and three of the largest printing-presses 1,000 hands. The East Indian Railway has a castor-oil factory at Manaurt, employing 400 or 500 persons. There are still about 20 indigo factories with about 2,000 hands.

Commerce.

The agricultural products of the District—grain, cotton, oilseeds, sugar, and gir—form the principal exports, while metals, salt, and piece-goods are the chief imports. Trade was formerly carried largely by river, and there is still a small import of country produce, such as grain and oilseeds, both on the Junua and on the Ganges; but it is dwindling, and the export trade has ceased. Sirsa is the chief trading centre outside Allahabad city; but many smaller markets serve as collecting and distributing centres.

The main line of the East Indian Railway passes through Railways the District from end to end, close to the southern bank of and reads the Ganges. A branch line leaves this just before it crosses the Jumna, opposite Allahabad city, and gives through communication with Bombay. A branch of the Oudh and Robilkhand Railway connects Allahābād with Fyzābād, and other lines have been projected to unite it with Rae Barell, Jaunpur, and Benares. Communications by road are fairly good: 172 miles are metalled, and are maintained by the Public Works department, though the cost of 48 miles is charged to Local funds. The remaining 656 miles are unmetalled, Avenues of trees are kept up on 441 miles of road. The chief route is the grand trunk road, which runs close to the line of the East Indian Railway in the Doab, and crosses to the north side of the Ganges at Allahabad. Other good roads lead from Allahābād city towards Nāgpur, to Fyzābād, and to Jaunpur,

Allahabad suffered from famine in 1770 and in 1783, but Famine. not so severely as other Districts. In 1803-4, immediately after cession, famine was severe, and remissions of revenue and advances for seed and cattle were made. Distress was felt in 1837-8, but the revenue was collected almost in full. The same remarks apply to the year 1860-1; but in 1869 famine was severe in the trans-Jumna tract, and by May 8,000 to ro,000 labourers were employed on relief works. The distress was greatly aggravated by the form of paralysis known as lathyrism, which is caused by eating hister del (Lathyrus satirms). The same tract suffered in 1873-4, but in 1877-8 escaped lightly. Famine visited the District in 1896 and 1897, and again the trans-lumna tract suffered most severely. The previous seasons had been adverse, and relief in the southern portion commenced in March, 1896, the numbers relieved reaching 9,500 in June. The rains of that year, however, ceased prematurely, and the whole District was involved. Immigrants poured in from Rewah State, and cholera broke out. In May, 1807, the average daily number of persons relieved rose to 289,000. Altogether 7-9 lakks of revenue was remitted, and 16-3 laklis suspended.

The Collector is usually assisted by two members of the District Indian Civil Service, and by six Deputy-Collectors recruited staff. in India. A taksilder resides in each taksil, and an officet of the Opium department is stationed in the District.

The civil courts are those of the Munsif, Sub-Judge, Judge Civil of Small Causes Court, and District Judge, the latter being also justice and Sessions Judge. There is a Cantonment Magistrate in the

Allahābād cantonment. Crime is of an ordinary character, and not specially remarkable; but the city has a bad reputation for burglary, forgery, and cheating. Infanticide was formerly suspected, but no persons are now under surveillance.

Land revenue administration.

At the cession in 1801 the District of Allahahad included part of Fatehpur, which was removed in 1826. In the five years preceding 1801 the Oudh government had collected about 15-6 lakhs annually, including the revenue of the Fatebpur pareanar. The first British settlement, which was made in 1802 for three years, realized nearly 28 lakhs a year. It was in reality a farm to three persons, one of whom was the Raia of Benares, and was marked by severity and inequality. The three farmers took advantage of the numerous sales for arrears of revenue which followed to acquire land paying 6 lakhs. An improvement was effected in 1805, when the revenue was reduced to 23 or 24 lakbs, and engagements were taken directly from the village zamindirs, but two-fifths of the District still remained in the hands of contractors. In the succeeding settlements, which were for short periods, further advances were made in the method of settlement. From 1825 the special commission, appointed under Regulation I of 1821, set aside many of the fraudulent transfers which had been made since the commencement of British rule. In a few villages settlement operations were carried out under Regulation VII of 1822; but the provisions of this law were too minute to be successful. The first settlement, preceded by a regular survey, was carried out in 1838-9, under Regulation IX of 1813. Rent rates were fixed on a consideration of the reports of subordinate officers, and the previous assessments and villages were hastily inspected. A lump assessment was then announced on a considerable area, and it was distributed over individual villages by the proprietors themselves. The revenue on the present area was raised from 19-3 to 21 lakhs. This demand was revised between 1867 and 1878 by a number of officers. The general method was to select rates of rent found to be actually paid for different classes of soil, and value each village by applying those rates. Reductions of revenue and transfers of villages had brought the revenue down to 10-8 lakhs. and this was raised to 23-8 lakes. In 1901 the question of a revision of the settlement was considered, and it was decided to extend the term in the trans-Ganges and Doab tracts for ten years. The three trans-Jumna tahtils, which suffered most severely in the famine of 1896-7, have, however, been resettled, and the greater part has been brought under the system of fluctuating assessments prescribed for Bundelkhand, under which the revenue is liable to revision every five years. The revenue demand in 1903-4 was 23-5 lakhs, the incidence being Rs. 1-5 per acre, varying from R. 0-8 to Rs. 2-2 in different parts of the District. The new assessment in the trans-Jumna tract will reduce the demand by 1-2 lakhs. Collections on account of land revenue and total revenue have been, in thousands of ninees :-

| | 1880-1- | 1890-1 | too-t- | 1001-4 |
|----------------|---------|--------|--------|--------|
| Land revenue . | 23,72 | 24,44 | 25,47 | 22,77 |
| | 28,99 | 40,19 | 42,99 | 40,75 |

ALLAHARAD CITY is the only municipality in the District, but Local selftwelve towns are administered under Act XX of 1856. Beyond governthe limits of these, local affairs are administered by the District board, which had an income of 1-7 lakhs in 1903-4. The expenditure in the same year was 1-6 lakhs, of which Rs. 73,000 was spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police usually has two Police and Assistants, and commands a force of 5 inspectors, 197 subordi. Hala nate officers, and 857 constables, besides 371 municipal and town police, and 3,380 village and road police. There are 35 police stations. The Central jail contained a daily average of 1,487 prisoners in 1903, and the District jail 598. A workhouse for European vagrants is maintained at Allahabad.

The District takes a high place as regards the literacy of its Education. inhabitants, of whom 4.3 per cent. (8 males and 6-6 females) could read and write in 1901. The number of public institutions rose from 170 with 5,593 pupils in 1880-1 to 214 with 8,777 pupils in 1900-1. There were 242 such schools in 1903-4 with 10,815 pupils, of whom 972 were girls, besides 156 private schools with 2,303 pupils, including 5 girls. Of the public institutions 8 were managed by Government and 137 by the District and municipal boards. Three Arts colleges, a training college, and a normal school are situated at Allahahad city. The total expenditure on education in 1903-4 amounted to 3.4 lakhs, of which Rs 68,000 was derived from fees, Rs. 1,45,000 from Provincial revenues, and Rs. 72,000 from Local funds.

There are 19 hospitals and dispensaries, with accommo-Hospitals dation for 259 in-patients. In 1903 the number of cases and distreated was 160,000, of which 2,800 were in-patients, and 7,300 pensaries. operations were performed. The city of Alfahabad contains

the first eye hospital opened in the United Provinces. The total expenditure in 1903 was Rs. 71,000, of which Rs. 14,000 was derived from subscriptions and endowments.

Vsccination. About 33,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, representing the low proportion of 22 per 1,000 of population, Vaccination is compulsory only in the Allahābād municipality and cantonment,

(F. W. Porter, Settlement Report, 1878; District Gazetteer,

1884 [under revision].)

Allahabad Tahsil. - Head-quarters tahsil of Allahabad District, United Provinces, conterminous with the pargana of Chail, lying between 25° 17' and 25° 35' N. and 81° 28' and 81° 55' E., with an area of 296 square miles. Population fell from 342,446 in 1891 to 338,820 in 1901. There are 308 villages and two towns, including ALLAHABAD CITY (population, 172,032). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,07,000, and for cesses Rs. 51,000. The high density of population, 1,145 persons per square mile, is due to the inclusion of the city. The taksil forms the eastern extremity of the Dollb and lies entirely between the Jumna and Ganges, which meet on its eastern border. The Sasur Khaderi drains the centre and joins the lumna. North of this river is a level fertile upland producing good crops, while to the south the soil is lighter and broken up by ravines. In 1903-4 the area under cultivation was 210 square miles, of which 45 were irrigated. Wells supply more than two-thirds of the irrigated area, and tanks or jhils about one-fourth, chiefly south of the Sasur Khadert. A small but increasing area is served by the Fatehpur branch of the Lower Ganges Canal.

Sirāthū.—North-western tahtil of Allahābād District, United Provinces, conterminous with the parguna of Karā, lying south of the Ganges, between 25° 30' and 25° 47' N. and 81° 12' and 81° 31' E., with an area of 250 square miles. Population fell from 129,932 in 1891 to 129,204 in 1901. There are 251 villages and three towns, none of which contains a population of 5,000. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,07,000, and for cesses Rs. 34,000. The density of population, 517 persons per square mile, is a little below the District average. An upland ridge runs parallel to the Ganges at a distance ranging up to a mile and a half, and the low alluvial land below it is very rich. South of the ridge, as far as the Sasur Khaden, which runs through the centre of the tahtil, the soil is of average quality, and well-irrigation is usual. To the south of the river well-irrigation is replaced by

water from the numerous jhils, and rice is cultivated. In 1903-4 the area under cultivation was 137 square miles, of which 49 were irrigated. Wells supply nearly two-thirds of the irrigated area, and tanks most of the remainder. The Fatehpur

branch canal serves only a few acres.

Manjhanpur,-South-western taksil of Allahabad District, United Provinces, comprising the parganas of Karari and Atharban, and lying north of the Jumna, between 25° 17' and 25" 32' N. and So" 9' and 81" 32' E., with an area of 272 square miles. Population fell from 131,688 in 1821 to 129,798 in There are 269 villages and one town, Manjhanpur root. (population, 3,221). The demand for land revenue in 1902-4 was Rs. 2,38,000, and for cesses Rs. 38,000. The density of population, 477 persons per square mile, is considerably below the District average. A high cliff scored by deep ravines borders the Jumna. The upland country beyond is at first sandy, but contains small jhile used for irrigation, the largest being the Alwara jhit. The soil then changes to the ordinary fertile loam of the Doab, where wells supply most of the irrigation. In 1901-4 the area under cultivation was 180 square miles, of which 51 were irrigated. The Fatehpur branch canal supplies about one fourth of the irrigated area; and tanks or jhiis and wells the remainder in almost equal proportions.

Soraon,-The westernmost of the three trans-Gangetic takells of Allahabad District, United Provinces, comprising the pargarats of Mirzāpur Chauhāri, Somon, and Nawabganj, and lying between 25° 32' and 25" 45' N. and 81" 36' and 81° 58' E., with an area of 260 square miles. Population fell from 186,876 in 1891 to 186,758 in 1901, the rate of decrease being the lowest in the District. There are 423 villages and two towns, including Matt Armaa (population, 6,769). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,01,000, and for The tahril has a higher density, 718 cesses Rs. 41,000. persons per square mile, than any in the District except that which contains the city of Aliahābād, and parts of it are more thickly populated than any rural area in the United Provinces. The upland portion consists of remarkably fertile sail, overspread with a network of jhills, which supply water for rice cultivation. Excellent sugar-came and rice are grown. In 1903-4 the area under cultivation was 163 square miles, of which 68 were irrigated. Tanks or jilits supply one-fourth of the irrigation, and wells most of the remainder.

Phülpur Tahsil.—A tahül of Allahābād District, United Provinces, comprising the parganar of Sikandra and Jhūst, and

lying between 25" 18' and 25" 45' N, and 80" 52' and 82" 10' E, on the north bank of the Ganges, with an area of 286 square miles. Population fell from 175,851 in 1891 to 171,653 There are 486 villages and two towns, including Phülipus, the tahiil head-quarters (population, 7,611). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,04,000, and for cesses Rs. 40,000. The density of population, 600 persons per square mile, is above the District average. Stretches of alluvial land border part of the course of the Ganges, but most of the takiil lies in the fertile uplands. In 1903-4 the area under cultivation was 172 square miles, of which 65 were irrigated. Wells supply a rather larger area than tanks or jhils, and no

other sources are important.

Handia. - North-eastern tahsil of Allahahad District, United Provinces, comprising the pargunar of Mah and Kiwai, and lying along the northern bank of the Ganges between 25° 16' and 25° 36' N. and 82" 2' and 82" 21' E., with an area of 287 square miles. Population fell from 187,089 in 1891 to 183,281 in 1001. There are \$82 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,24,000, and for cesses Rs. 52,000. The density of population, 639 persons per square mile, is considerably above the District average. Most of the takuil consists of two depressions, in which rice is largely grown. These are situated in the upland, and are separated by a high ridge. There is a little alluvial land near the Ganges. In 1903-4 the area under cultivation was 186 square miles, of which 88 were irrigated, tanks or jhils supplying nearly onethird of the total, and wells the remainder.

Karchana, - The central of the three trans-Jumna taksils of Allalabad District, United Provinces, conterminous with the pargana of Arail, lying between 25" 9' and 25" 26' N. and 81° 44' and 82° 5' E., with an area of 257 square miles. Populution fell from 134,818 in 1891 to 127,327 in 1901. There are 338 villages and one small town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,64,000, and for cesses Rs. 42,000; but the revised settlement has reduced the revenue to Rs. 2,39,000. The density of population, 495 persons per square mile, is below the District average. The taksil is bounded on the north-east by the Ganges, on the north-west by the Jumna, and on the south and east by the Tons. Bordering on the rivers are tracts of high sandy soil much cut up by ravines, except towards the Ganges. The central portion consists of fertile lount, which changes in the west to clay, where coarse rice is the staple crop. Though situated south of the Jumna,

the country resembles the Doah, but facilities for irrigation are not good. In 1903-4 the area under cultivation was 174 square miles, of which 28 were irrigated. Wells supply about two thirds of the irrigated area, and jhils the remainder.

Bara. The westernmost of the three trans-Jumna takuilt in Allahabad District, United Provinces, conterminous with the pargasa of the same name, lying between 25° 2' and 25° 22' N. and 81° 31' and 81° 40' E., with an area of 253 square miles. Population fell from 63,816 in 1891 to 55,503 in 1901. There are 237 villages, but no town. The demand for land revenue in 1003-4 was Rs. 1,24,000, and for cesses Rs. 20,000; but the revenue demand has since been reduced to Rs. 1,02,000, and in future will be liable to revision every five years. The density of population, 210 persons per square mile, is the lowest in the District. This tahtil presents the characteristic features of BUNDELKHAND-low ranges of hills dipping in plains of mir or black soil, and stretches of barren stony ground. Rice is largely grown in the best mar soil. Kisari dal (Lathyrus sativus) is also common, and the effects of its consumption are seen in the number of cripples in every village. In 1903-4 the area under cultivation was 122 square miles, of which only

2 square miles were irrigated.

Mejā. - South-eastern tahsil of Allahābād District, United Provinces, conterminous with the pargana of Khairagarh, lying between 24° 47' and 25° 19' N, and 81° 45' and 82° 19' E, with an area of 650 square miles. Population fell from 195,227 in 1891 to 167,014 in 1901, the rate of decrease being the highest in the District. There are 579 villages and two towns, including Stress (population, 4,159). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,86,000, and for cesses Rs. 48,000; but the land revenue has since been reduced to Rs. 2,13,000. The density of population in the whole taksil is only 257 persons per square mile, but in the northern Deah portion it rises to 460. The southern part of the takat is a precarious tract, which has recently been brought under a system of fluctuating assessments. North of a low range of hills, which crosses the takiil from-east to west at a distance of 5 to 10 miles south of the Ganges, conditions resemble those of the Doah. A great plain of mar or black soil like that of BUNDELKHAND, and with low detached hills here and there, stretches south to the Belan. Beyond the Belan there is a tract of mar on the east, and on the west a small fertile valley of much better quality. In the extreme south rises the northern scarp of the Kainners.

Allahābād City (Hahābād).—Head-quarters of the District of the same name, and also the seat of government for the United Provinces and a cantonment. It is situated in 25° 26' N, and 81° 50' E., on the left bank of the Jumna, on the wedge of land formed by its confluence with the Ganges; distant by rail 564 miles from Calcutta and 844 from Bombay. The city is the fifth largest in the United Provinces. At the four enumerations its population (including cantonments) was as follows: 143,693 (1872), 160,118 (1881), 175,246 (1891), 172,032 (1901). In 1901 the population included 114,679 Hindus, 50,274 Muhammadans, and 6,000 Christians, more than half of whom were Europeans or Eurasians. The population in municipal limits was 159,545, and in cantonments 12,487.

History.

The ordinary Hindu name of the place is Prayag or Prag ('place of sacrifice'), and for many centuries the junction of the two great rivers has been a holy place. According to ordinary belief a third river, the Saraswatt, which disappears in the sand south-west of the Punjals, reappears here, to unite with the Ganges and the Jumna. The earliest monument of antiquity is a pillar, now situated in the fort, which bears an inscription of Asoka of the third century a.c., another recording the victories of Samudra Gupta in the fourth century A.D., and a third of the Mughal emperor, Jahangir, There is, however, reason to believe that the pillar was erected by Asoka some distance from its present position, as it contains an address to the rulers of Kausambhi (see Kosam). The Chinese pilgrim, Hiuen Tsiang, in the seventh century, found Prayag inhabited by many heretics (i.e. Hindus), who regarded the place as very holy. He describes a large temple with a great tree before it, from which people threw themselves down. Muhammadan writers repeat the story of suicide from this tree as late as the sixteenth century; but Jahangte is said to have cut it down. The priests in the famous underground temple in the fort still exhibit the stump of a tree, called the undying banian, which shows a few sickly leaves when the great bathing fair is held, and, according to the sceptical, is renewed every year.

Muhammadan rale. In the early days of Muhammadan rule Prayag was included in the province of Karā, and was not of much political importance. Akbar, however, erected the magnificent fort, and from his time the town was known as Alhabās, Ilahābās, or Ilahābād, and became the capital of a Subak or province. Towards the end of Akbar's reign, prince Salim, afterwards the emperor Jahāngīr, held the governorship of the province and

resided in the fort. Throughout the eighteenth century the town and province experienced the usual reverses of Upper India during the disastrous period of Mughal decline. From 1720 to 1720 they were held by Muhammad Khān, Nawāb of Farrukhābād, but he was recalled as he had failed to repel the Bundelis, who had gained part of the province with the help of the Marathas. A few years later, in 1730, a Maratha raid reached the city itself; but in 1747 the government passed to Safdar Jang, Nawab of Oudh. After his victory over the Oudh forces at Khudaganj in 1750, Ahmad Khan of Farrukhābād advanced on Allahābād, and burnt the town, but had not reduced the fort when news of a Maratha advance on his own state caused his withdrawal in 1751. The town and adjacent territory were transferred from the Nawab of Oudh to the emperor, Shah Alam II, after the battle of Buxar in 1764, and the fort was garrisoned by British troops. A few years later the emperor joined the Marathas and granted the Allahabad territory to them, whereupon the British declared it to have escheated and sold it to the Nawab of Oudh for so lakhs. In 1801 the city with the District and other territory was ceded to the British. The growth of administrative needs led to the establishment of a Board of Revenue and Chief Civil and Criminal Courts at Allahābād in 1831, and in 1834 the city became the head-quarters of a separate administration; but in the following year the capital was temoved to Agra, though the Board of Revenue and Chief Courts were not transferred till 1843. After the suppression of the Mutiny Allahabad again became the Provincial capital,

During the Mutiny of 1857, Allahabad was the scene of The one of the most serious outbreaks which occurred in the Mutlay. United Provinces. The news of the mutiny at Meerut reached Allahabad on May 12. The native troops in the cantonment consisted of the 6th Bengal Native Infantry, a wing of a Sikh regiment, and two troops of Oudh Irregular Horse. A small body of European artillerymen were brought in from Chanar fort when news of the spread of the rebellion arrived. Disquieting rumours soon prevailed in Allahabad, but precautionary measures were taken in the fort and approaches to the city, and affairs remained quiet for some time. The sepoys volunteered to march against the rebels at Delhi, and at the sunset parade on June 6 the thanks of the Governor-General were read to the regiment for their loyalty. At nine o'clock that very evening they rose in open rebellion, fired upon and murdered most of their officers, and plundered the

treasury. Many military and civil officers were in the fort at the time of the rising. The city rabble joined in the plunder and bloodshed; the lail was broken open, the dwellings of the Christian residents sacked and burnt, and every European and Eurasian cantured was murdered in cold blood. The work of destruction only ceased from want of anything further to destroy, and a sort of provisional insurgent government was established in the city, under a man called 'The Maulvi,' who proclaimed the restored rule of the Delhi emperor. The little garrison of Europeans and loval Sikhs held together in the fort until the arrival of Colonel Neill with a party of the Madras Fusiliers on June 11. On the morning after his arrival, Colonel Neill assumed the offensive against an insurgent rabble in the suburb of Daragani, which was carried and destroyed. On June 15, after having dispatched the women and children to Calcutta by steamer, Neill opened the guns of the fort upon the suburbs of Kydgani and Mutthigani, which were occupied after some opposition. On June 17 the Magistrate proceeded to the city kettelli and re-established his authority. The rebel leader, the Maulyi, escaped; and on the morning of the 18th, Neill with his whole force marched into the city, which he found deserted. Havelock arrived shortly after, and the united force moved on to Cawnpore. Although the surrounding country remained for a time in rebellion, there was no further disturbance in Allahabad itself.

Situation.

The native city occupies a well-drained site along the high bank of the Jumna some distance east of the fort, which crowns the point at which the Ganges and Jumna unite. 'The houses are not, as a rule, of striking appearance, and they are arranged in a network of narrow streets, intersected by a few main roads. North of the city lie the civil lines and cantonments, most of which were laid out after the Mutiny in fine broad streets, extending to the bank above the low alluvial land bordering on the Ganges. The suburb called Daragani lies north of the fort along the Ganges, and contains the modern mansions of some of the wealthy merchants. Many changes have been made in the fort, which have greatly detracted from its picturesque appearance as a relie of antiquity. It now contains barracks, a magazine, and arsenal, A magnificent building which dates from Mughal times, and has hitherto been used as part of the arsenal, is now being restored, as far as possible, to its original condition. Below the fort stretches a wide expanse of sand on which is held the annual fair in January. Large crowds of pilgrims assemble to

bathe at the junction of the great rivers, and in 1004 it was estimated that 250,000 were present on the great bathing day. Every twelve years the gathering is much larger, and in 1894 a million people were present. West of the native city is situated a garden originally laid out by Jahangir, which contains the tomb of prince Khusrii, whose name the garden now bears, and the tombs of his mother and sister. Khusru was the eldest son of Jahangir, and after the death of Akbar attempted to seize the throne at Agra, but was defeated and imprisoned. The buildings are plain but massive, and the interior of the principal mausoleum is adomed with painted flowers and birds. Among noteworthy modern buildings are the Government Offices, the High Court and Bar Library, the District Courts, the European Barracks, the Anglican and Roman Catholic Cathedrals, several churches, the Muir Central College, the Mayo Memorial Hall, and the Thornhill and Mayne Memorial, which contains a public library and is situated in a beautiful park. Government House stands in a fine park-like enclosure, on slightly rising ground, and has a central suite of public rooms, with a long curved wing on either side containing the private apartments. The Central jail is situated at Naint on the south bank of the Jumna, and the workhouse for European vagrants is opposite the Collector's court. Besides being the seat of government, Allahābād is the head-quarters of a Soperintending and of an Executive Engineer of the Roads and Buildings Branch, and of an Inspector of Schools. Bishops of the Anglican and Roman Catholic Sees of Lucknow and Allahabad reside here; and there are branches of the Church Missionary Society, the American Presbyterian and Methodist Missions, and two Zanāna missions. A village inhabited by native Christians, named Muirābād after Sir William Muir, a former Lieutenant-Governor, lies north of the civil lines. A Volunteer rifle corps and a squadron of Light Horse have their head-quarters at Allahabad.

Allahabad has been a municipality since 1863. During the Miniciten years ending 1901 the income averaged 3.5 lakhs and the pality-expenditure 3.7 lakhs. The former, however, included loans from Government, and the latter capital expenditure on waterworks. In 1903-4 the income was 4.5 lakhs, chiefly derived from octroi (1.9 lakhs), water-rate (Rs. 84,000), rents (Rs. 46,000), fees from markets, &c. (Rs. 6,000), sale of water (Rs. 20,000), and a grant from Government of Rs. 59,000, The expenditure was 4.5 lakhs, comprising 1 lakh for interest and repayment of debt, Rs. 90,000 for conservancy,

Rs. 61,000 for water-works maintenance, Rs. 41,000 for administration and collection, Rs. 33,000 for public safety, and Rs. 31,000 for roads and buildings. An excellent water-supply has been obtained from the Jumna, at a total capital cost of 17-2 lakbs, and the average daily consumption of filtered water amounted to 10 gallons per head in 1903-4.

Cantoninents. The Allahabad cantonments are divided into three portions, and are ordinarily garrisoned by British and native infantry, native cavalry, and field and garrison artillery. The income and expenditure of the cantonment fund averaged Rs. 24,000 during the ten years ending 1901. In 1903-4 the income was Rs. 32,000 and the expenditure Rs. 30,000. The successful working of a grass-farm and dairy, in connexion with the Allahabad cantonment, has led to the establishment of similar institutions in many parts of India.

Trade.

Allahābād is not famous for any particular trade or manufacture, but it has long been a murt of considerable general importance. Its position on the East Indian Railway giving direct access to Calcutta, with a branch towards Bombay, adds to the trade involved in supplying a large population. The construction of branches of the Oudh and Robilkhand Railway from Allahābād to Fyzābād and Jaunpur, with a bridge over the Ganges, will add to the importance of the city. At present it exports grain and oilseeds; and the chief imports include grain, sugar, ghi, oilseeds, piece-goods, and metals, some of which are re-exported in small quantities. Printing is the most important organized industry. In 1903 the Government Press employed 1,031 hands, and its branches in the Naint jail 287, while the Pioneer Press employed 606, and there were about thirty-five smaller presses. Large brick and tile works situated just outside the boundaries of the city employed 700 to 800 workers, an iron foundry gave employment to 135, and a coach-building and furniture factory to 178. Flour mills are now under construction.

Education

Allahābād is the most important educational centre in the United Provinces. The Muir College was founded in 1872, and the foundations of the fine buildings in which it is housed were laid in the following year. Spacious chemical and physical laboratories have recently been opened. The number of students in 1904 was 340, of whom 21 were reading in the M.A. classes and 131 in law classes. Several hostels are attached to this institution, and efforts are being made to establish others. It is proposed to make this college the nucleus of a teaching university. College classes are also

held in three schools, with an average attendance of about seventy-five. A training college for teachers, originally founded in Lucknow, was removed to Allahābād in 1900. It contained forty-eight students in 1904. The Allahābād Christian College, managed by the American Presbyterian Mission, was opened in 1902 and had seventy pupils in 1904. There is also a normal school with 117 pupils. The municipality maintains eight schools and aids fifteen others, with a total attendance of 1,545. The largest institution is the Kāyastha Pāthahāla, which contains both school and college classes and has 370 students, of whom 53 are in college classes. A number of schools make provision for the education of Europeana and Eurasians, including one free school. Several English and vernacular newspapers are published at Allahābād, the Pšower being the most important.

Jhusi.—Town in the Phulpur tahsil of Allahabad District, United Provinces, situated in 25° 26' N. and 81° 54' E., on the Ganges, opposite its junction with the Jumna. Population (1001), 1,142. Thust has been identified with the Pratisthan or Kest of the Puranic histories, which was the residence of Purfiravas, first king of the Lunar dynasty and son of the moon. It was at one time called Harbongpur after the Raja Harbong, of whose vagaries and misrule many fables are told. In the time of Akbar the town was known as Hadiabas. It has recently been suggested that Thusi was the Kia-shi-pu-lo visited by Hmen Tsiang. Two great mounds, once the site of forts, are the only visible remains; but gold coins of the Gupta kings, and a copperplate of Trilochana Pala, dated in 1027 A.D., have been discovered here 1. Jhust is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 500. There is a small school with thirty pupils.

Kosam.—The name of two villages, distinguished as Kosam Inām and Kosam Khirāj, in the Manjhanpur tahsīl of Allahābād District, United Provinces, situated in 25° 20' N. and 81° 24' E., on the bank of the Jumna. Population (1901), 2,374. For many years the ancient remains buried beneath these villages were believed to be the site of the-city of Kausāmbhi, one of the most celebrated cities of ancient India to both Hindu and Buddhist. If the distances recorded by Hiuen Tsiang are correct, Kausāmbhi must be looked for at some distance south or south-west of Kosam, and the most recent writer has located it at Gurgi in the State of Rewah. The remains at Kosam include those of a wast fortress with earther ramparts and

bastions, four miles in circuit, with an average height of 30 to 35 feet above the general level of the country. Near the centre is a small modern Jain temple, and a large collection of Jain sculptures of the eleventh century were dug up close by. A large stone monolith stands at an angle in a mound of brick ruins, bearing inscriptions by pilgrims dating from the fifth or aixth centuries. An inscription, dated in 1564, mentions the name of Kausambhi. Numerous terra-cotta figures, stone carvings, and coins are found in the neighbourhood, the latter ranging over the whole period of Indian numismatics. One variety of coins found here bears the names of a series of kings who appear to have reigned in the first or second century B.C. Three miles north-west of the fort stands a rocky hill called Pabhosa, high on the face of which is a cave where important inscriptions have been found.

(Cunningham, Archaeological Reports, vol. i, pp. 301-12; vol. x, pp. 1-5; vol. xxi, pp. 1-3; Coint of Ancient India, p. 73; Major Vost, Journal, Royal Asiatic Society, 1903, p. 583.)

Mau Aimma.—Town in the Soraon tuhtil of Allahābād District, United Provinces, situated in 25° 42′ N. and 81° 56′ E., on the metalled road from Allahābād city to Fyzābād and on a branch of the Oudh and Rohilkhand Railway. Population (1901), 6,769. This was the first place in the District in which plague broke out in 1899, having been imported direct from Bombay. Mau Aimma is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,000. It was once celebrated for its cotton cloth; but the industry has declined and many of the Julāhā inhabitants (Muhammadan weavers) now seek work in Bombay. There is, however, a flourishing local traffic in grain, cloth, cotton, sugar, and tobacco, which is likely to increase since the opening of a railway. The school has about sixty-four pupils.

Phulpur Town.—Head-quarters of the tahzil of the same name, in Allahābād District, situated in 25° 33′ N. and 82° 6′ E., on the metalled road from Allahābād city to Jaunpur. Population (1901), 7,611. The place is said to have been founded in the seventeenth century, but has no history. Besides the usual offices, it contains a dispensary, police station, and post office. Phulpur is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,300. The market is of some importance, and there is a considerable trade in cloth, cotton, and metal vessels. Sugar was formerly an important article of trade, but is so no longer. A little cotton cloth is made. The tahzili school has about ninety pupils.

Sirsa.-Town in the Mejā tahtil of Allahabad District. United Provinces, situated in 25° 16' N. and 82° 6' E., on the East Indian Railway. Population (1901), 4,159. Sirst is administered under Act XX of 18x6, with an income of about Rs. 1,000. It is the most important mart in the District outside Allahabad city. The trade is chiefly concerned with the export of grain and oilseeds to Bengal and Calcutta. A middle school has eighty-eight pupils.

Jhansi District.-South-western District of the Allahabad Boon-Division, United Provinces, lying between 24° 11' and 25° 50' N. duries, configuration, and 78° 10' and 79° 25' E., with an area of 3,628 square miles, and hill The District consists of two portions, each roughly shaped like and river a pear, which are connected by a narrow strip of country. systems. The northern portion lies east and west, and is bounded on the north by the States of Gwalior and Samthar and by Jalaun District; on the east by the Dhasin river, which separates it from Hamirpur and from portions of the smaller Bundelkhand States; on the south by the State of Orchha; and on the west by the States of Datia, Gwalior, and Khaniadhana. The southern boundary is extremely irregular, incorporating several enclaves of native territory, while British villages are also enclosed in the adjacent States. The southern portion, which lies north and south, is bounded on the west by the Betwa river, which separates it from Gwalior; on the south by the Saugor District of the Central Provinces; and on the east by the Dhasan and Jamni rivers, which divide it from the Bundelkhand States. The District presents a great variety in its physical aspects, and includes some of the most beautiful scenery in the Provinces. The highest ground is in the extreme south, which extends to the two outer scarps of the Vindhyan plateau, running from the Betwa in a south-easterly direction and gradually breaking up into a confused mass of hills, parts of which approach a height of 2,000 feet above sealevel. Below the second scarp an undulating plain of black soil, interspersed with scattered hills and scored by numerous drainage channels, stretches north beyond the town of Lalitpur, and gradually becomes more rocky. Low red hills of gneiss then appear, with long ridges running from south-west to north-east. These continue in the northern portion of the District, especially east of the Betws, but gradually sink into another plain of dark soil. The slope of the country is from south-west to north-east, and the rivers flow generally in the same direction. The Betweet is the most considerable river, and after forming the western boundary of the southern portion.

divides it from the northern half, which it then crosses. Its principal tributaries, the Jamnt and the Dhasan, form the eastern boundaries of the southern and northern parts of the District. The Pahoj is a small stream west of the Betwa. A striking feature of the Dhasan and of the Betwa, especially on the left bank, is the labyrinth of wild deep ravines, sometimes stretching 2 or 3 miles away from the river. The numerous artificial lakes formed by embanking valleys add to the natural beauty of the scenery. The largest are at Taibahat, Barwa Sagar, Arjar, Pachwara, and Magarwara.

Gootney

The oldest rock is gneiss, which occupies the greater part of the District. It forms the massive granitic ridges described above, which are traversed by gigantic quartz reefs, and often crossed at right angles by basic dykes of dojerite or diabase. South of Lalitpur the upper Vindhyan massive sandstones, with a bed of Kaimur conglomerate near the base, rest directly on the gneiss, but in places the Bijawar and lower Vindhyan series intervene. The former of these includes sandstones, limestones, and slates, some of the beds containing a rich hematitic ore, while copper has been found in small quantities. The lower Vindhyans consist principally of sandstone and shale. The fringe of the great spread of basalt constituting the Mālwā trup just reaches the extreme south-east of the District, while a few outlying patches are found farther north, and the cretaceous sandstones of the Lameta group, which often underlie the trap, are met near the basalt 1.

Botany.

The flora of the District resembles that of Central India. A considerable area is 'reserved' or 'protected' forest, which will be described later; but there is a serious deficiency of timber trees, and the general appearance is that of low scrub jungle. Grazing is abundant, except in unusually dry years.

Fanns.

In the more level portion of the District, heg, antelope, and *nilgai* do great damage to the crops. Leopards, *chital*, *sāmbar*, hyenas, wolves, and occasionally a lynx are found in the northern hills, while farther south tigers, bears, wild dogs, and the four-horned antelope are met with, and at tare intervals a wild buffalo is seen. Bustard, partridge, sand-grouse, quail, and plover are the commonest game birds, while snipe, duck, and greese haunt the marshy places and lakes in the cold weather. Mahseer and other kinds of fish abound in the larger rivers.

Climate and temperature. The climate of the District is hot and very dry, as there is little shade and the radiation from bare rocks and and wastes

¹ H. B. Medlicott, Memoirs, Geological Survey of Imita, vol. 5, pt. 1.

is excessive. It is, however, not unhealthy, except in the autumn; and during the rains and short cold weather the climate is far from unpleasant. In the south, owing to its greater elevation, the temperature is slightly lower than in the northern part.

The average annual rainfall is about 31 inches, ranging from Rainfall.

34 inches in the north-west to about 41 in the south-east. In

1868-9 the fall amounted to only 15 inches, but in 1894-5 it
was nearly 60 inches. The seasonable distribution of the rain
is, however, of more importance than large variations in the
total amount. Disastrous bailstorms are common in the cold
weather, and nearly 100 head of cattle were killed in a single

storm in 1895.

Ihlinsi forms part of the tract known as British Bun-History. DELEHAND, and its history is that of the Chandel and Bundela dynasties which once ruled that area. The earliest traditions point to the occupation of the northern portion by Parihār and Kāthi Rāiputs, and of the south by Gonds. The Chandels of Manora rose into power east of this District in the ninth century, but extended their power over it in the eleventh century, and have left many memorials of their rule in temples and ornamental tanks. After the defeat of the last great Chandel Raia by Prithwi Raj in 1182, and the mids of the Muhammadans under Kuth-ud-din in 1202-3 and Altanish in 1234, the country relapsed into anarchy. The Khangars, an aboriginal tribe, who are said to have been the servants of the Chandels and are now represented by a menial caste, held the tract for some time and built the fort of Karār, which stands just outside the British border in the Orchha State, The Bundelas rose to power in the thirteenth or fourteenth century and expelled the Khangars. One of their chiefs, named Rudra Pratap, was recognized by Babar, and his son, Bharti Chand, founded the city of Orchba in 1531. The Bundeia power gradually extended over the whole of this District and the adjacent territory, and the authority of the Mughals was directly challenged. In the early part of the seventeenth century the Orchia State was ruled by Bir Singh Deo, who built the fort at Jhansi. He incurred the heavy displeasure of Akbar by the murder of Abul Fazi, the emperor's favourite minister and historian, at the instigation of prince Saltm, afterwards the emperor Jahangir. A force was accordingly sent against him, which was defeated in 1602. On the accession of Jahangir in 1605, Bir Singh was pardoned and rose to great favour; but when, on the death of the emperor

in 1627, Shah Jahan mounted the throne, Bir Singh revolted again. The rebellion was unsuccessful, and Bir Singh died shortly after. The south of the District had already fallen into the hands of another descendant of Rudra Pratap, who founded the State of Chandert. In the latter half of the seventeenth century a third Bundela State was founded east of the District by Champat Rai, whose son, Chhatar Sal, extended his authority over part of Ihansi. On his death, about 1734, the Marathas obtained the greater part of the District under his will, and in 1742 forcibly extorted most of the remainder from the Rājā of Orchhā. Ihānsi remained under the Peshwas for some thirty years, though in the south the Rajas of Chandert still maintained partial independence. After that period the Maritha governors of the north of the District made themselves independent in all but name. In 1817 the Peshwa ceded to the East India Company his sovereign rights over the whole of Bundelkhand, and in the same year Government recognized the hereditary title of the Maratha governor and his descendants to their existing possessions. The title of Raja was granted to the Thansi house in 1832 for services rendered in connexion with the siege of Bharatpur. In 1839 the Political Agent in Bundelkhand was obliged to assume the administration in the interests of civil order, pending the decision of a dispute as to succession; and the management was not restored till 1842, when most of the District was entrusted to Rājā Gangādhar Rao. The Rājā died childless in 1853, when his territories lapsed to the British Government and were formed into a District of Ihansi. Meanwhile the Chanders State, which comprised the south of the District and some territory west of the Betwil, had also been acquired. A dissolate and inefficient ruler, named Mür Pahlad, who had succeeded in 1802, was unable to control his vassal Thakurs, who made constant plundering expeditions into the neighbouring territory. In 1811 their incursions on the villages of Gwalior provoked Sindhia to measures of retaliation, and Mür Pahlād was deposed, but received a grant of thirty-one villages. In 1820 another revolt was headed by the former Raia. It was promptly suppressed, and the State was divided, Mür Pablad receiving one-third. In 1844, after the battle of Maharajpur, Sindhia ceded to the British Government all his share of the Chandert State as a guarantee for the maintenance of the Gwalior Contingent. The territory so acquired was constituted a District called Chandert, with the stipulation that the sovereignty of the Raja and the rights of the inhabitants should be respected.

In 1857 there was considerable discontent in both the Thansi and Chanderi Districts. The widow of Gangadhar Rao was aggrieved, because she was not allowed to adopt an heir, and because the slaughter of cattle was permitted in Thansi territory. Mardan Singh, the Raia of Banpur, had for some time resented the withholding of certain honours. The events of 1857 accordingly found the whole District ripe for rebellion. On June v a few men of the 12th Native Infantry seized a small fort in the cantonment containing the treasure and magazine. Many European officers were shot the same day. The remainder, who had taken refuge in the main fort, capitulated a few days after and were massacred with their families, to the number of sixty-six persons, in spite of a promise of protection sworn on the Koran and Ganges water. The Rani then attempted to seize the supreme authority; but the usual anarchic quarrels arose between the rebels, and the whole country was plundered by the Orchhā leaders. The Bundellis also rose in the south, and Lalitpur, the head-quarters of the Chanderi District, was abandoned by the British officials, who suffered great hardships, but were not murdered. The Raja then asserted complete independence and extended his rule into parts of Saugor District, but was driven back to Chanders by Sir Hugh Rose in January, 1858. On March 3 the British army forced the passes in the south of the District and marched north. Jhansi was reached on March 20, and during the siege Tantia Topi, who attempted a diversion, was completely defeated. The town was assaulted on April 3, and the fort was captured on the 5th. Sir Hugh Rose had been compelled to march forward to Jalaun District, leaving only a few troops at Jhansi, and disturbances soon broke out again, and increased when the news of the Gwalior revolution was received. The Rais of GURSARAL in the north of the District, held out for the British, and in July the Banpur Raja gave himself up. The south and the west of the District, however, were not cleared till late in the year. In 1861 the name of the Chandert District was changed to Lalitpur, and in the same year the portions of that District west of the Betw3, together with Jhansi town and fort, were ceded to Sindhia. In 1886 Thansi town and fort, with fifty-eight villages, were made over to the British by Sindhia in exchange for the Gwalior fort, Morae cantonment, and some other villages. Districts of Jhansi and Lalitpur were united in 1891; but the area included in the latter forms an administrative aubdivision.

Archaeology. The District is exceptionally rich in archaeological remains. Chandel memorials in the form of temples and other buildings are found in many places, among which may be mentioned Chandfor, Deogarh, Düdhai, Lalitpur, Madanfur, and Siron. At Erachh (Irich) the fragments of ancient buildings have been used in the construction of a fine mosque, which dates from 1412.

The people.

Jhansi contains nine towns and 1,331 villages. Population had been increasing steadily for some time, but received a check in the series of bad years between 1891 and 1901. The numbers at the four enumerations were as follows: 530,487 (1872), 624,953 (1881), 683,619 (1891), 616,759 (1901). There are six tabils—Jhansi, Mau, Garautha, Moth, Lalittur, and Mahroni—the head-quarters of each being at a place of the same name. The principal towns are the numicipalities of Jhansi, the administrative head-quarters of the District, Mau-Ranteur, and Lalittur. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| TaketL | Area to square miles. | Name Paramet | Villages of | Population. | Population per square mile. | Percentage of variation in population be Down 1894 and 1904. | Number of persons able to read and write. |
|----------------|--------------------------|--------------|-------------|-------------|--------------------------------|--|--|
| Jhimi | 499 | 3 | 210 | 145,371 | 791 | - 0.1 | 9,769 |
| Man | 439 | 1 | 164 | 100,298 | 228 | -13.8 | 3,743 |
| Garantha . | 466 | | 155 | 66,963 | 144 | - 347 | 3,766 |
| Moth | 379 | 1 | 136 | 55,638 | 199 | - 5.8 | 1,631 |
| Lalltour. | 1,058 | 1 | 368 | 144.638 | 137 | + 2.9 | 4,097 |
| Mahron | 887 | 1. | 300 | 103,851 | 117 | -11/3 | 2,917 |
| District total | 3,628 | 9: | 1,331 | 616,759 | 175 | - 98 | 14.933 |

Nearly 93 per cent. of the population are Hindus and only 5 per cent. Muhammadans. Jains number 10,760, forming 1-7 per cent. of the total—a higher proportion than in any other District of the United Provinces. The density of population is lower than in any part of the United Provinces, except the Kumaun Division, and the District suffered heavily from famine in 1895—7 and again in 1900. More than 99 per centof the people speak Western Hinds, chiefly of the Bundelt dialect.

Castes and occupations. Chamars (leather-dressers and cultivators), 76,000, are the most numerous Hindu caste, followed by Kāchhts (cultivators), 58,000; Brilmans, 58,000; Ahirs (graziers and cultivators),

\$2,000; Lodhas (agriculturists), 47,000; and Rajputs, 35,000. Among castes peculiar to this part of India may be mentioned the Khangars (0,000), Basars (0,000), and Saharias (2,000); the two former being menials, and the latter a jungle tribe. Shaikhs (13,000) are the most important Musaiman tribe. About 56 per cent, of the total population are supported by agriculture and 8 per cent, by general labour, Raiputs, Brahmans, Ahirs, Lodhas, and Kurmis are the chief proprietary castes, the firstnamed being largely of the Bundels clan-

In 1901 there were 777 native Christians, of whom 355 Christian belonged to the Anglican communion and 267 were Roman missions. Catholics. The Church Missionary Society has had a station at Ihansi since 1858, and the American Presbyterian Mission since x886.

The characteristic feature of Ihansi, as of all the Bundel-General khand Districts, is its liability to alternate cycles of agricultural tural conprosperity and depression. It contains the usual soils found ditions in this tract. Mar and kabar are dark soils, the former being distinguished by its fertility and power of retaining moisture, while kibar is less fertile, becomes too sticky to plough when wet, and dries very quickly, splitting into hard blocks. Parsed is a brownish or yellowish soil more nearly resembling the loam of the Doab. Mar, the commonest variety, covers a large area in the centre of both the northern and southern portions of the District, and is also found on the terraces of the Vindhyas. It produces excellent wheat in favourable seasons, but is liable to be thrown out of cultivation by the growth of kans (Sackarum spontaneum). This is a tall thin grass which quickly spreads when tillage is relaxed; its roots reach a depth of 6 or 7 feet, and finally prevent the passage of the plough. After a period of ten or fifteen years kans gradually gives way to other grasses, and the land can again be cultivated. In the neck of land which connects the two portions of the District, and for some distance south of the narrowest point, a red soil called robar patri is found, which usually produces only an inferior millet Interspersed among these tracts of poor soils little oases are found, generally near village sites and in valleys, which are carefully manured and regularly watered from wells sunk in the rock. The spring crops are peculiarly liable to attacks of rust in damp, cloudy weather. Along the rivers there is a little alluvial land, and near the lakes in some parts of the District tice can be grown. In the north-west, field embankments are commonly made, which hold up water for rice cultivation and also serve to stop the spread of hins.

Chief agricultural

The greater part of the land is held on the usual tenures found in the United Provinces. In the Lalitpur subdivision and princi, nearly two-thirds of the whole area are included in zamindari pal crops, estates, while pattidari holdings are commoner in the rest of the District. A peculiar tenure, called ublart, is also found. This originated from grants of land given in lieu of a definite annual sum, or hakk. Where the annual value of the land granted exceeded the hakk, the excess (uhliri) was paid as revenue. The tenure is thus equivalent to an abatement of the full revenue chargeable. Some of the ubiri tenures, called butota, date from the occupation of Chanderi by Sindhia and are not liable to resumption; but the others, which were mainly granted after the British occupation, are liable to be resumed for misconduct, on the death of an incumbent (though such resumptions are rare), or if any part of the wAbri estate is transferred. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles:-

| Tel | Tahali. | | | | Cultivated | Irrigatest | Cultivable waste. |
|----------|---------|----|------|-------|------------|------------|----------------------|
| Jhimi . | | × | - 10 | 499 | 1871 | 28 | 150 |
| Man . | | | *0 | 439 | 190 | 13 | 149 |
| Garanthā | | +2 | - 20 | 466 | 194 | 7999 | 147 |
| Moth | *: | | | 279 | 118 | 12 | 105 |
| Lalitput | 10 | - | - | 1,058 | 244 | 38 | 463 |
| Mahront | 1 | Y | 7 | 887 | 133 | 22 | 357 |
| | | Te | ian. | 3,028 | 1,150 | 193 | 1,401 |

ROTE .- Statistics for the Points, Man, and Moth tednils are for 1902-3.

Jouar covered 326 square miles, kodon and other small millets 223, and gram 196. Wheat follows in importance with So square miles, and barley, rice, maize, and barra are the remaining food-crops. Oilseeds were grown on 206, and cotton on 46 square miles.

Improvesugats in agriculturn practice.

The methods of cultivation in Bundelkhand are conspicuously poor, and the people easily yield to adverse circumstances. There has thus been no improvement in agricultural practice since the commencement of British rule. Within the last twenty years considerable loss has been caused by the introduction of artificial dyes in place of al (Morinda citrifolia). The M plant was grown on the best land, and required careful cultivation, which is the best preventive of a spread of kans: The losses incurred by blight in 1803 and 1804 have also led to the replacement of wheat by the less valuable gram, but there has been a slight recogery. The steps taken to extend irrigation will be described later. Advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts are freely taken, especially in bad seasons. A total of nearly 3 lakis was advanced during the ten years ending 1900, and Rs. 60,000

in the next four years.

The cattle are smaller and hardier than in the Dolb, but the Cattle, best animals are imported from the neighbourhood of the Ken sleep, sheep, and river or from Gwalior. Attempts were made to improve the goats breed about 1870; but the Nagor and Hissar bulls which were imported were too large and too delicate. There is no horse-breeding in the District, and the ponies are of a very poor type. Donkeys are extensively used as beasts of burden. The sheep are of the ordinary inferior kind; but the goats bred along the banks of the Dhasan are celebrated for their size and the quantity of milk which they give.

In years of well-distributed minfall mar and habar require Irrigation

no artificial sources of irrigation. Thus in 1903-4 only 103 square miles were irrigated in the whole District. Wells supplied or square miles, tanks 7, and canals 3. The wellirrigation is chiefly found in the red-soil tracts of the Ihansi taksil and the northern part of the Lalitpur subdivision. Tanks are very numerous, and the embankments of about thirty are maintained by the Public Works department, with 48 miles of small distributaries. New projects for making tanks are being carried out, and these serve a useful purpose by maintaining a high water-level, even where they are not used for irrigation directly. Much has already been done in repairing old embankments and in deepening lakes and improving the irrigation channels. A canal is taken from the Betwa at Parichha, where the river is dammed; but it irrigates a very small area in Jhansi, chiefly serving Jalaun. A second dam is under construction higher up at Dukwa, which will impound a further supply. Water from wells is usually mised by means of the Persian wheel

Government forests cover 189 square miles, of which 141 are Forests situated in the Lalitpur subdivision. There is also a large area of private forest. The 'reserved' forests produce little timber, but they supply the wants of the villages in the neighbourhood, as well as some quantity of bamboos for export, and are of value for climatic reasons. Grass is especially important; and minor products, such as honey, lar, gum, catechu, and various fruits and roots, are also gathered by the jungle tribes. The chief trees include several kinds of acacia, Adina cardifolia, Anogeii-

sus latifolia, Diospyros melanoxylon, Grewia vestita, various figs, Lagerstruemia parviflora, teak, and Terminalla tomentosa. The manua (Bassia latifalia) grows well. During years of famine the forests are thrown open to grazing, and also supply roots and berries, which are eaten by the jungle tribes.

Minerals.

The most valuable mineral product is building stone, which is quarried from the upper Vindhyan sandstone, and exported. Steatite is worked in one place, and iron is smelted after indigenous methods in a few small furnaces. The roads are largely metalled with disintegrated gneiss.

Arts and manufac-Hores.

Coarse cotton cloth, called khārmā, is still made at a number of places; and at Erachh more ornamental articles, such as chintz and large kerchiefs dyed with spots, are turned out. Small woollen rugs are made at Jhansi, and some good silk is woven at the same place. Mau, Jhansi, and Maraura are noted for brass work. The railway workshops at Jhansi city employed 2,160 hands in 1903, and there are a small cotton gin and an ice factory.

Commerce. The most valuable exports of the District are oilseeds, ghi, and pin. Grass, minor forest products, and road metal are also exported, and hay was haled in large quantities for the Military Department during the Tirah expedition of 1805 and the South African War. There is no surplus of grain, except in very prosperous years. Sugar, salt, kerosene oil, and grain are the chief imports. Thansi city, Mau-Rantpur, Lalitpur, and Chirgaon are the principal trade centres, and Cawnpore and Bombay absorb most of the trade. There is, however, a considerable amount of local traffic with the adjacent Native States, and also some through trade.

Rallways and roads.

Ihānsi city has become an important railway centre. The main line of the Indian Midland Railway (now amalgamated with the Great Indian Peninsula) enters the south of the District, and divides into two branches at Jhānsi, one striking north-west to Agra and the other north-east to Cawopore. A branch line from Ihansi crosses the south-east of the northern division of the District. There are 1,295 miles of roads, a greater length than in any other District of the United Provinces. Of the total, 340 miles are metalled and are maintained by the Public Works department, but the cost of 160 miles is charged to Local funds. There are avenues of trees along 364 miles. The principal routes are: the road from Cawnpore to Saugor through Jhansi and Lalitpur, which traverses the District from end to end; and the roads from Jhansi to Gwalior on the north-west, and to Nowgong on the south-east.

The District is specially exposed to blights, droughts, floods, Famine. hailstorms, and their natural consequence, famine, which is generally accompanied by disastrous epidemics of fever and cholera. No details are known of the famines which must have periodically devastated this tract; but it is commonly said that famine may be expected in Bundelkhand every fifth year. The first serious famine after the Mutiny occurred in 1868-9, and it was probably the worst in the century. The rains of 1868 ceased prematurely and the autumn harvest was almost a complete failure: poorhouses were opened, and subsequently relief works were started, which took the form of roads, bridges, and irrigation embankments in Ihansi District, and the excavation of tanks and construction of embankments in Laiitpur. The total expenditure on this form of relief was nearly t lakhs, and the number of workers at one time rose above 26,000. Epidemics of small-pox and cholera followed; and the climax came when the rains of 1869 broke, and the roads, which were at that time unmetalled, became impassable. Excluding several partial losses of the harvest, the next great famine took place in 1896-7. Since the autumn of 1893 the autumn crops had been poor, and the spring crops even poorer, while kins had spread rapidly. The rains of 1895 were deficient, and relief works were opened in February, 1806. In May 42,000 persons were being relieved, and a terrible epidemic of cholera added to the loss of life. The works were almost abandoned by the middle of July, and up to the end of August prospects were fair. The monsoon, however, ceased abruptly, prices rose with alarming tapidity, and the relief works had to be reopened. The autumn was also marked by a virulent epidemic of fever, which attacked even the well-to-do. The distress became most acute in May, 1897, when nearly 100,000 persons were being relieved. Large suspensions and remissions of revenue were made, and relief works were closed in September, 1897. In 1899 a short minfall again caused great distress in the red-soil area, and the effects were increased by the high prices due to famine in Western India.

The tuknis of Lalitpur and Mahroni form the subdivision of District Lalitpur, which is in charge of a member of the Indian Civil subdivisions. Service, assisted by a Deputy-Collector. The ordinary District and staff consists of the Collector, a Joint-Magistrate, and three Deputy-Collectors recruited in India. The Forest officer is in charge of the whole of the Bundelkhand forest division.

There are two District Munsifs, and a Sub-Judge for civil justice and work. The District and Sessions Judge has jurisdiction over criss.

the neighbouring District of Jalaun, and a Special Judge is at present engaged in inquiries under the Bundelkhand Encumbered Estates Act. The District is notorious for serious outbreaks of dacoity in bad times, and crimes of violence are not infrequent; but generally speaking, crime is light.

Land revenue administration.

Up to 1891 the present Lalitpur subdivision formed a separate District, and the fiscal history of the two portions of what is now the District of Jhansi is thus distinct. After the lapse of Jhānsi in 1853 the three Districts of Jhānsi, Chanderi (or Lalitpur), and Jalaun were placed in charge of Deputy-Superintendents, under a Superintendent who was subordinate to the Commissioner of the Saugor and Nerbudda territories at Jubbulpore. In 1848 these Districts (including Hamirpur up to 1863) were detached from Jubbulpore and administered as a Division in the Province of Agra on the non-regulation system. Finally, in 1891, the Districts were included in the Allahabad Division and were brought under the ordinary laws, many of which had

already been applied.

In Jhansi District proper the Maratha revenue system was evotwāri, and the nominal demand was a rack rent, which could be paid only in very favourable seasons. Arrears were not, however, carried over from one year to another. The early settlements of those portions of the District which were acquired between 1842 and 1844 were of a summary nature. and only for short periods. The first regular settlement of the whole commenced with a survey in 1854, but was interrupted by the Mutiny and not completed till 1864. Proprietary rights had been partly introduced between 1839 and 1842, and the sale of land by decree of the civil courts followed in 1862. The settlement, which was made by several officers on different principles, resulted in an assessment of 4-3 lakhs, as compared with a previous demand of 5-6 lakbs, in addition to about Rs. 50,000 due on account of ubliris. The demand was undoubtedly reasonable; but the rigid system of collection and the freedom of sale of land were new ideas that were not grasped by the people. Some landowners had been in debt since the days of Marstha rule. After the Mutiny, revenue was collected from many from whom it had already been extorted by the Orchha or Jhansi rebels. In 1867 the crops failed, and in 1868-9 there was famine, and great loss of cattle. In 1872 many cattle were again lost from murrain. Although the settlement had appeared light, it became necessary to re-examine the condition of the District in 1876. After much discussion the Jhansi Encumbered Estates Act (XVI of 1884) was passed,

and a Special Tudge appointed, who was empowered to examine claims and reduce excessive interest. The sale of a whole estate operated as a discharge in bankruptcy to extinguish all debt due. Altogether, 1,475 applications were tried, and out of a total claim of 16-6 lakhs the Judge decreed 7-6. More than go per cent, of the amount decreed was paid in full, namely, 124 per cent, in cash, 46 per cent, by loan from Government, and 32 per cent, by sale of land, only of per cent, being discharged under the insolvency clause. Many estates were cleared by sale of a portion only. A striking feature of the proceedings was the rapid use in the value of land. The next revision of settlement was made between 1889 and 1892. This was carried out in the usual way by assessing on the actual rent-rolls, corrected where necessary by applying the rates ascertained for different classes of soil. The total revenue was raised from 4-9 to 5-5 lakhs.

In the Lalitpur District conditions were different, for samindari rights existed, except where the Marathas had extinguished them. The early British settlements were of a summary nature, and for short periods; and though nominally based on recorded rentals or customary rates, a system of auction to the highest bidder was sometimes followed, with disastrous results. 'The first regular settlement was commenced in 1853, but was interrupted by the Mutiny, and was not completed till 1869. The methods employed were a compromise between the valuation of villages by applying rates found to be paid for different classes of soil, and the valuation of the 'assets' actually recorded. The result was a reduction from 1-8 to 1-5 lakhs. This settlement came under revision in 1896, and the revenue was mised to 1-6 lakhs, though this was only to be reached by degrees, and the initial demand was r-a lakhs.

The revenue demand for the whole District was thus 7 lakhs when the famine broke out. The special legislation of 1882 had not had more than a temporary effect, and the District has now been brought under the provisions of the Bundel-khand Encumbered Estates Act. The Land Alienation Act has also been applied, and transfers are restricted in the case of land held by agricultural tribes. Summary reductions of revenue brought down the demand to 6:3 lakhs in 1902-3, or less than 5 armas are acre, varying from 1 arma to nearly 12 armas in different parts. In 1903 a new settlement was commenced under the special system, by which the demand will be liable to revision every five years. Collections on account of

land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees:-

| | | 1880-1 | 1fg0-t- | приз-т. | - Hart-4- | |
|----------------------------|---|--------------|--------------|---------|-----------|--|
| Land revenue Total revenue | 1 | 5,71 7,30 | 6,18 9,87 | 6,12 | 6,54 | |

Local selfgovernment.

There are three municipalities, and six towns are administered under Act XX of 1856. Outside of these, local affairs are administered by the District board, which had an income of 1-7 lakbs in 1903-4, chiefly derived from a grant from Provincial revenues. The expenditure included a lakh devoted to roads and buildings.

Police and

The District Superintendent of police has two Assistanta, one of whom is posted to Lalitpur. The ordinary force, which is distributed in 39 police stations, includes 7 inspectors, 185 subordinate officers, and 784 men, besides 215 municipal and town police, and 1,528 rural and road police. A Superintendent of Railway Police also has his head-quarters at Jhānsi. The District jail contained a daily average of 267 prisoners in 1903.

Education-

Jhansi takes a high place in regard to the literacy of its inhabitants, of whom 4 per cent. (7.7 males and 0.3 females) could read and write in 1901. The number of public schools fell from 98 in 1880-1 to 85 in 1900-1, but the number of pupils increased from 2,537 to 2,962. In 1903-4 there were 167 such schools with 5,982 pupils, of whom 146 were girls, besides 39 private schools with 529 pupils. Two schools were managed by Government and 133 by the District and municipal boards. All the schools but two are primary. The total expenditure on education in 1903-4 was Rs. 41,000, of which Local funds provided Rs. 37,000, and fees Rs. 3,000.

Hospitals and dispensaries There are 10 hospitals and dispensaries, with accommodation for 170 in-patients. About 62,000 cases were treated in 1903, including 1,383 in-patients, and 3,000 operations were performed. The total expenditure was Rs. 15,000, chiefly met from Local funds.

Vaccina-

In 1903-4, 23,000 persons were successfully vaccinated, representing a proportion of 38 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the Jhansi cantonment and in the municipalities.

(District Gasetteer, 1874 [under revision]; W. H. L. Impey and J. S. Meston, Settlement Report [excluding Lalitpur], 1893; H. J. Hoare, Settlement Report, Lalitpur subdivision, 1899; P. C. Mukherji, Antiquities in the Lalitpur District, 1899.)

Jhansi Tahsil.-Head-quarters tahsil of Ihansi District. United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 25° 8' and 25° 37' N. and 78° 18' and 78 53' E., with an area of 499 square miles. Population fell from 145,680 in 1891 to 145,321 in 1901, the rate of decrease being the lowest in the District. There are 210 villages and three towns, JHANSI, the District and takill head-quarters (population, 55,724), and Bakwa Sagar (6,355) being the The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,20,000, and for cesses Rs. 21,000. The density of population, 201 persons per square mile, is considerably above the District average. This tahull is the best and most stable in a very precarious District. The Pahaj forms part of the western boundary; and the Betwa, after flowing along the south-east, crosses native territory and then traverses the northern portion of the takst/, giving off the Betwit Canal. In the north lies a good tract of kibar or black soil and partoli or loam; this area is thickly populated and closely cultivated, while field embankments to hold up water are common. About the centre of the tahsil the country changes to a broken tract of hilly uplands, and the soil is stony and poor, but is manured near the village sites and irrigated from wells worked by the Persian wheel. Farther south jungle is more common, and the people depend largely on the pasturing of cattle. In 1902-3 the area under cultivation was 171 square miles, of which 28 were irrigated, chiefly from wells.

Mau Tahsil.-Tahtil of Jhansi District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 25° 6' and 25° 29' N. and 78° 49' and 79° 19' E., with an area of 4 to square miles. Population fell from #15,7#4 in 1891 to 100,208 in 1901. There are 164 villages and only one town, Mau-Ranipus, the tahiil head-quarters (population, The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1, 23,000, and for cesses Rs. 21,000. The density of population, 228 persons per square mile, is considerably above the District average. The taksil is bounded on the east by the Dhasin river, but towards the south and west is much intermixed with portions of Orchhā State. The southern portion is generally wild and hilly, dotted with artificial lakes and fertile irrigated valleys, but displaying also great tracts of barren waste. In the centre the country is more open and there is little irrigation. Farther north again the soil is chiefly black soil, deteriorating near the wild nullahs which fringe the Dhasan; this part has suffered much from the inroads of kans (Saccharum spontaneum). In 1902-3 the area under cultivation was 190 square miles, of which 13 were irrigated, wells supplying

more than three-fourths of the irrigated area.

Garautha. North-eastern takuil of Ihansi District, United Provinces, contemuinous with the pargana of the same name, lying between 25° 23' and 25° 49' N. and 79° 1' and 79° 25' R., with an area of 466 square miles. Population fell from 88,926 in 1891 to 66,963 in 1901, the rate of decrease being the highest in the District. There are 153 villages, but no The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,25,000, and for cesses Rs. 24,000. The density of population, 144 persons per square mile, is below the District average. On the north-west and north the Betwa forms the boundary, while the Dhasan flows on the eastern frontier to join it. The soil is chiefly mar or black soil, becoming very poor near the ravines which scar this tract in every direction. For the last thirty years the growth of kans (Saccharum spontaneum) has thrown a large area out of cultivation. In 1903-4 the cultivated area was 194 square miles, but there was practically no irrigation.

Moth,-North-western taksil of Thansi District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 25° 32' and 25° 50' N. and 78° 46' and 79° 7' E., with an area of 279 square miles. Population fell from 50,089 in 1891 to 55,638 in 1901. There are 136 villages and two towns: Chirgaon (population, 4,028) and Moth, the tabill headquarters, 2,937. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,17,000, and for cesses Rs. 19,000. The density of population, 199 persons per square mile, is slightly above the District average. The Betwa flows through the centre of the tahril. The villages along its banks are liable to injury from the erosion in ravines, and those east of the river are largely overgrown by kans (Sacharum spontaneum), which prevents cultivation. West of the Betwa good black soil is found in the north of the tahsil, where it is protected and enriched by embankments, while in the south, where the soil is lighter, there is a little irrigation. There is excellent grazing for cattle, and large quantities of ghi are exported from Chirgson. In 1902-3 the cultivated area was 118 square miles, of which only

z were irrigated.

Lalitpur Tahsil. - Tahsil of Jhansi District, United Provinces, comprising the pargunas of Lalitpur, Bansi, Talbahat, and Balabahat, and lying between 24° 16' and 25° 12' N. and 78° 10' and 78° 40' E. with an area of 1,058 square miles: Population fell from 157,153 in 1801 to 144,638 in 1901. There are 168 villages and two towns: LALITPUR, the tahsil head-quarters (population, 11,560), and Talmanar (5,693). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 80,000, and for cesses Rs. 16,000. The density of population, 137 persons per square mile, is below the District average. Lalitpur is bounded on the west and north-west by the Betwa. In the south lie the outer scarps of the Vindhyan plateau, while gneiss hills crop up in the north. The space between is largely occupied by black soil, which gradually changes in the north to a thin red, and there is a little alluvium along the Betwa. The black soil has for some years been in a poor state owing to the spread of kins (Saccharum spontaneum), but the red soil is fairly protected by well-irrigation. In 1903-4 the area under cultivation was 244 square miles, of which 38 were irrigated, almost entirely from wells,

Mahroni. South-eastern taksil of Thansi District, United Provinces, comprising the parganas of Banpur, Mabroni, and Madaors, and lying between 24° 11' and 24° 58' N. and 78" 30' and 79° o' E., with an area of 887 square miles. Population fell from 117,047 in 1891 to 103,851 in 1901. There are 300 villages and one town, Mahroni, the takul head-quarters (population, 2,682). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 65,000, and for cesses Rs. 12,000. The density of population, 117 persons per square mile, is the lowest in the In the south a confused mass of hills mark the commencement of the Vindhyan plateau. The drainage is carried off by the Dhasan and Janni, tributaries of the Betwa, which in turn form part of the eastern boundary. Below the hills lies a tract of black soil, gradually turning to red in the north and east. The former has largely deteriorated owing to the spread of kins (Saccharum spontaneum). Irrigation is practised in the red soil, especially towards the north. 1903-4 the area under cultivation was 233 square miles, of which 22 were irrigated, almost entirely from wells.

Lalitpur Subdivision.—Subdivision of Jhansi District, United Provinces, comprising the Laureur and Markoni tabult.

Gursaral.—An estate in Jhansi District, United Provinces, with an area of 155 square miles. The estate is held on the ubdiri tenure (see Jhansi District), the land revenue payable to Government being at present Rs. 20,000 and the cesses

Rs. 5.500. The proprietors receive about Rs. 54,000 from the under-proprietors. The owner is a Maratha Brahman, whose family settled here about 1727. A member of the family was governor of Jalaun and other territories belonging to the Peshwä in Bundelkhand. In 1840 Kesho Rao, who at that time managed Gursarai under the Răia of Ialaun, was a claimant for the succession to the Jalaun estate, which was, however, held to have lapsed. Kesho Rao was allowed to continue in the management of Gursarai, and in 1852 the estate was granted to him, subject to the payment of Rs. 22,500 as a quit-rent. On the outbreak of the Mutiny in Ialaun the British officer in charge of that District was forced to retire to Agra, and Kesho Rao assumed charge on behalf of Government, and maintained order till the end of October, 1857. He was then seized by the Gwalior mutineers and maltreated, after which he retired to Gursarai. When Sir Hugh Rose reached Jhānsi, Kesho Rao at once communicated with him, and together with his sons gave valuable help in the subsequent operations. The title of Raja Bahadur and other rewards were granted for these services. Raja Kesho Rao was an Honorary Magistrate with civil and revenue powers, and had a limited jurisdiction in his own estates. He died in 1880, and in 1886 the special powers vested in the Rājā were cancelled. The ubiri grant, which carried with it a reduced demand for land revenue, was conditional on the estate remaining undivided. In 1895 serious disputes led to the cancellation of the grant and the assessment of a full revenue demand. The title of Raia was at the same time withdrawn from the head of the family. Default in the payment of revenue led to the assumption of direct management by Government, a money allowance being paid to the proprietors. The disputes as to the shares due to each member of the family were finally settled by a decree of the Privy Council passed in 1898, and in 1902 the ubari grant was restored. The privileged rate of revenue is Rs. 25,000, which has been temporarily reduced to Rs. 20,000 for five years. The payments made to the uhiridars by the village proprietors will be revised in the settlement operations now being carried out in JHANSI DISTRICT. Gunaral town had a population of 4,304 in 1901, and contained a police station, post office, and a school with about 84 pupils.

Barwa Sagar,—Town in the District and tabil of Jhansi, United Provinces, situated in 25° 22' N. and 28" 44' E., on a branch of the Great Indian Peninsula Railway. Population (1901), 6,355. The town stands near a fine lake formed by damming the Barwa stream, an affluent of the Betwil. The lake is used for irrigation, and the embankment and channels are in the charge of the Public Works department. Northwest of it stands a castle said to have been built by Udit Singh, Raja of Orchha. The neighbourhood is rich in antiquarian remains dating from the Chandel period or even earlier. Barwa Sagar contains a school with 75 pupils. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 700. Ginger and vegetables are largely grown in the neighbourhood, and there is a flourishing local trade.

Chandpur.—An almost uninhabited village in the Lalitpur tabsil of Jhansi District, United Provinces, situated in 24° 30' N. and 78° 19' E. It is noted for its ruins of the Chandel period. A beautiful tank covered with lotus is surrounded by the remains and contains a sculptured column. Three temples stand on its embankment, another group on a peninsula which once formed an island, and others at a little distance away. There

are several inscriptions, one dating from 868 A.D.

Deogarh - Fort and ruins in the Lalitpur tahail of Ihanai District, United Provinces, situated in 24° 32' N. and 78° 15' E. on the right bank of the Betwa. On a hill towering above the river is an extensive line of circumvallation approached by a sloping ascent leading up to a gateway. Inside the wall at the north-east comer stands a group of sixteen Jain temples, probably of Chandel origin. Many of them are in very fair repair, and the carving of some is particularly fine. Jains occasionally still worship here. Below the fort lies the village of Deogarh and a fine temple of the later Gupta period. In the cliff under the south wall of the fort are two stairs cut in the solid rock, and some small rock carvings and a cave known as the Sidhgunha. There are several inscriptions in various parts of the ruins, ranging from 1097 to the eighteenth century. The fort was held by the Bundeläs till 1811, when Colonel Baptiste took it.

(A. Cunningham, Archaeological Survey Reports, vol. x,

D. 105)

Dudhai.-Ruined town in the Lalitpur takiil of Jhansi District, United Provinces, situated in 24" 25' N. and 78" 23' F., 30 miles south of Lalitpur town. The town stood on the second scarp of the Vindhyan plateau on the bank of an artificial lake. It must once have been of great importance, but nothing is known of its history. Two fine temples stand in the midst of a few miserable buts which are still inhabited, and the ruins of other temples and buildings are scattered over a considerable area. The remains of a circular building of low flat-roofed cells are peculiar, and a colossal image, 20 feet high, of the man-lion incarnation of Vishnu is carved on a hillside close by. The lake and some of the remains certainly date from the Chandel period.

Jhansi City.—Administrative head-quarters of the District and tahsil of the same name, with cantonment, in the United Provinces, situated in 25° 27' N. and 78° 35' E., on the road from Cawnpore to Saugor, and on the Great Indian Peninsula Railway; 799 miles by rail from Calcutta, and 702 from Bombay. Under native rule the population of Jhansi was about 30,000 in 1872 and 33,000 in 1881. After its cession in 1886, population rose to 53,779 in 1891 and 55,724 in 1901. Hindus numbered 41,029 in 1901 and Musalmans 11,983, while there were about 2,000 Christians. The population in numicipal

limits was 47,881 and in cantonments 7,843.

Thansi city, which is sometimes known as Balwantmagar, owes its foundation to Bir Singh Deo, Raja of Orchha, who built a fort here in 1613. A town sprang up and remained in the possession of the Bundelas till 1742, when it was seized by the Marathas, who had already acquired property in the neighbourhood under the will of Chhatar Săl. They added to the fort, and the town continued to be the seat of a governor. The rapid growth of Jhānsi during that period was partly due to the forcible removal of people from other places. It was subsequently held for a few months by Shuja-ad-daula, Nawah of Oudh, and was wrested from him by Antip Giri Gosain of Moth, from whom it passed to the Raja of Orchha, and in 1766 was again brought under Maratha rule. The British acquired sovereign rights from the Peshwa in 1817; and in 1853 the State of Jhansi lapsed in default of heirs, when the city became the head-quarters of a Superintendent subordinate to the Commissioner of the Saugor and Nerbudda territories. The Mutiny history has been given in that of the JHANSI DISTRICT. In 1861 the city, with a large tract adjoining it, was coded to Sindhia; and the head-quarters of the District, called Jhansi Naoabad ('newly-founded'), included only a small village, with the civil station and cantonment. Jhansi then became the head-quarters of a Subah of the Gwalior State, but in 1886 it was restored to the British in exchange for the Gwalior fort and Morar cantonment.

Jhansi is picturesquely situated round the fort, which crowns a rocky hill. It is a walled city, but has lately been opened up by roads, and a spacious handsome market place, called Hardyganj after a recent District officer, has been constructed.

An excellent water-supply is obtained from five large wells sunk in the rock towards the close of the eighteenth century. Besides the ordinary courts there are few public buildings, the finest being a hospital built a few years ago. There are many small temples, but none of striking appearance, and part of the old palace of the Rājā is occupied by the police station and a school. Jhānsi is the head-quarters of a Superintending and of an Executive Engineer in the Irrigation branch, and of an Executive Engineer in the Roads and Buildings branch. It is also the chief station of the Church Missionary Society and the American Presbyterian Mission in the District.

A municipality was constituted in 1886. During the tenyears ending 1001 the income and expenditure averaged Rs. 48,000 and Rs. 47,000 respectively. In 1903-4 the Income was Rs. 73,000, chiefly from octroi (Rs. 56,000); and the expenditure was Rs. 68,000, including conservancy (Rs. 19,000), public safety (Rs. 12,000), administration and collection (Rs. 10,000), and roads and buildings (Rs. 4,000). The income and expenditure of cantonment funds during the ten years ending 1001 averaged Rs. 17,000, and in 1003-4 were Rs. 24,000 and Rs. 21,000 respectively. The usual garrison includes British and native infantry, native cavalry, and artillery. Thansi is the chief centre in the District for the collection and distribution of agricultural products. Its trade has improved greatly with the extension of railways, which radiate from it in four different directions. There are also small manufactures of brass ware, fine silk, and coarse rugs. The railway workshops employed over 2,000 hands in 1903, and a small cotton gin and ice factory are situated here. A private firm supplies hay pressed at Jhansi to the military authorities in many parts of the Eastern command. The municipality maintains three schools and aids twelve others, with a total attendance of 994. besides the District school, which has about 100 pupils.

Lalltpur Town.—Head-quarters of the subdivision and taksil of the same name, in Jhansi District, United Provinces, situated in 24° 42′ N. and 78° 28′ E., on the Great Indian Peninsula Railway and on the Cawnpore-Saugor road. Population (1901), 11,560. Tradition ascribes the founding of the town to Lalità, wife of a Rajā Sumer Singh, who came from the Deccan. It was taken from the Gonds early in the sixteenth century by Govind Bundelä and his son, Rudra Pratāp. A hundred years later it was included in the Bundelä State of Chanderi. About 1800 an indecisive battle was fought close by between the Bundeläs and Marāthās, and in 1812 it became

the head-quarters of Colonel Baptiste, who was appointed by Sindhia to manage Chandert. On the formation of a British District of Chanderl in 1844, Lalitpur became the head-quarters, and it remained the capital of the District, to which it gave its name in 1861, up to 1891, when Lalitpur and Jhansl Districts were united. The history of the Mutiny at Lalitpur has been narrated in the history of INANSI DISTRICT. The town contains a number of Hindu and Jain temples, some of which are very picturesque. A small building, open on three sides save for a balustrade, and supported on finely-carved columns, obviously derived from a Chandel building, bears an inscription of Firoz Shah Tughlak, dated 1338. Lalitpur is the head-quarters of a Joint-Magistrate and of a Deputy-Collector, and also contains a dispensary and a branch of the American Mission with an orphanage. It has been a municipality since 1870, but is one of the few towns in the United Provinces where none of the municipal commissioners is elected. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 15,000 and Rs. 13,000 respectively. In 1903-4 the income was Rs. 19,000, chiefly derived from octroi (Rs. 11,000) and from rents and fees (Rs. 6,000), and the expenditure was Rs. 21,000. Lalitpur has a large and increasing export of oilseeds, hides, and ghi, besides a considerable road traffic with the neighbouring Native States. Large quantities of dried beef are exported to Rangoon. There are four schools with 247 pupils, including 25 girls.

Madanpur.—A small village in the Mahroni tahsil of Jhānsi District, United Provinces, situated in 24° 15′ N. and 78° 41′ E. Population (1901), 561. The village is picturesquely situated at the narrowest point of one of the easiest passes up to the Vindhyan plateau, close to a fine artificial tank. There are numerous Chandel ruins in the neighbourhood, the finest of which are two splendid temples standing on the embankment of the lake. One of these contains an inscription recording the conquest of the Chandel kingdom by Prithwi Rāj of Delhi in 1182. A quarry of excellent sandstone lies close to the village, and iron ore was formerly worked here.

Mau-Rānīpur Town.—Head-quarters of the Mau tahsil of Jhānsi District, United Provinces, situated in 25° 15' N. and 79° 9' E., on a branch of the Great Indian Peninsula Railway. Population (1901), 17,231. The municipality includes two towns, Mau and Rānīpur, separated by a distance of about four miles. Man was a small agricultural village till the latter part of the eighteenth century, when the exorbitant demands

of the Raja of the neighbouring State of Chhatarpur led to an exodus of merchants and others who settled here. The place became noted for its manufacture of the coarse red cotton cloth known as Aharmi. It was for long the chief town in the District, but the restoration of Thansi city to the British and the alteration in trade routes made by railways have increased the importance of the latter place. Mau is also losing its trade in khirud, as the vegetable dye which was used in its preparation is giving way to aniline. Besides the ordinary offices Man containsa dispensary. It is a remarkably picture some town; its houses are built with deep caves between the first and second stories. and occasional hanging balcony windows of unusual beauty. The principal temple is that of the Jains (who form an important commercial body), which is very little enclosed, and presents a fine appearance with its two solid spires and many cupolas. Mau has been a municipality since 1869. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 16,000. In 1903-4 the income was Rs. 21,000, chiefly from octroi (Rs. 15,000), and the expenditure was Rs. 18,000. As stated above, the trade in cloth is decreasing. but agricultural produce is still largely exported. There is a small manufacture of brass, and an important cattle fair is held here. Six schools have about 209 pupils.

Siron.—Village in the Lalitpur takisi of Jhansi District, United Provinces, situated in 24° 52′ N. and 78° 20′ E., 12 miles north-west of Lalitpur town. The piace is of importance for the ruins in the neighbourhood. Remains, chiefly of Jain buildings, are scattered about and have been used to construct modern temples. A large slab in one of these contains an inscription, dated 907 A. D., from which it appears that this tract

of country was then subject to the rule of KANAUJ.

(Epigraphia Indica, vol. i, p. 195.)

Talbahat.—Town in the Lalitpur lahil of Jhānsi District, United Provinces, situated in 25° 3′ N. and 78° 26′ E., on the Great Indian Peninsula Railway and on the Cawapore-Sangor road. Population (1901), 5,693. The place was of importance in the Bundelā annals. A fort and palace were built on a rocky range east of the town by Bhānat Sāh, Rājā of Chanderi, in 1618. In 1811 it was captured by Colonel Baptiste on behalf of Sindhia, through the treachery of the commander, after a three months' siege. The fort was reduced to its present state of ruin by Sir Hugh Rose in 1858, but still contains some interesting frescoes. East of the fort is a fine take of 528 acres, formed by two small dams, which supplies water for rice and

wheat cultivation. The town is well-drained, and is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 600. There is a small industry in blanket-weaving. A school has 75 punils.

Boomand river system.

Jālaun District, -District in the Allahābād Division of the daries con- United Provinces, lying between 25° 46' and 26° 27' N. and 78° 56' and 70° 52' E., with an area of 1,480 square miles. Inlaun is the most northern of the Districts of British Bundelkhand, and is roughly triangular in shape, the boundaries being chiefly formed by the Jumma and its tributaries, the Betwa and Pahuj. On the north and north-east the Jumna divides it from Etawah and Cawnpore; on the south-east its greatly indented boundary marches with that of the Baont State; on the south the Betwa separates Jalaun from Jhansi and Hamirpur, and the Samthar State forms part of the boundary; on the west the Pahúj generally lies between Jālaun and the State of Gwalior, except where a portion of the Datia State enters the former like a wedge. Jalann lies entirely within the level plain of Bundelkhand. Its highest portions are on the borders, especially near the Jumna, while the lowlands occupy the central part and are chiefly drained by two separate channels which unite as they approach the Jumna, the combined stream being called the Non. An important feature of these channels, and still more so of the larger rivers, is the intricate reticulation. of deep ravines which fringe them, including about one-fifth of the total area of the District. The course of the Jumna is from north-west to south-east, while the Pahiij runs from south to north and the Betwii from west to east. The junction of the Pahaj with the Jumna is on the northern frontier.

Geology.

Jalaun consists almost entirely of alluvium. Kankar or nodular limestone is the chief mineral found; but stone and gravel are obtained near Saidnagar.

Botany.

The District presents no peculiarities from a botanical point of view. It is very sparsely wooded, especially in the blacksoil tracts in the south. Babul (Acacia arabica) is found everywhere in waste land, while khair (Acacia Catechu) grows in the ravines. Plantations of babul under the management of the Forest department are being undertaken near Kalpi to supply the Campore tanneries. Kans grass (Saccharum spontaneum) is a great pest, recurring in cycles.

Fanira.

Tigers are hardly ever met with, but wild hog, antelope, leopards, and hyenas are numerous. The poorer classes residing on the banks of the three principal rivers use fish as an article of diet to a considerable extent.

The climate is hot and dry, but not unhealthy. The average Climate, monthly temperature ranges from about 65° in January to temperature, and 96.5° in May. The average annual rainfall over the whole minfall District is 32 inches, and there is little difference between the amounts received in different portions. Great variations occur, however, from year to year. In 1868-9 the fall was only 13 inches, while it was as much as 51 inches in 1894-5.

No details are known of the ancient history of this tract, History. which was not a political entity till the eighteenth century. The town of Kalpi was conquered by Kuth-ud-din in 1196. Owing to its importance as guarding a main crossing of the Jumna, it was held by a strong garrison and became a startingpoint for expeditions into Central India and the Deccan, and later a fortress on the route from Agra to Bengal. In the long struggle between the kings of Delhi and Jaumpur during the first eighty years of the fifteenth century Kälpt was the scene of fierce battles and sieges. The Hindu confederacy against Babar met here and advanced to experience a crushing defeat near Fatehpur-Sikri in Agra District. During the next thirty years Kalpi was taken and retaken several times, and under Akbar it became the head-quarters of a sarkar. The Bundeläs had for a short time held Kaipt in the fourteenth century, and towards the end of Akbar's reign assumed a threatening attitude. Bir Singh Deo, Rājā of Orchhā, occupied the greater part of Jalaun District and was confirmed in his possessions by Jahangir. He revolted when Shah Jahan came to the throne, and after a long struggle lost all his influence in this tract. Another branch of the Bundelâs which had gradually acquired power in Hamirpur District now became prominent, and Chhatar Săl, its great leader, included Jalaun in his dominions. Early in the eighteenth century, however, when attacked by the governor of Allahabad, he called in the Marathas to aid him. At his death about 1734 he bequeathed one-third of his possessions, including this District, to his allies. Under Maratha rule the country was a prey to constant anarchy and intestine strife. In the wars which took place at the close of the eighteenth century Kälpi was taken by the British in 1708, but subsequently abandoned, Part of the District was ceded by the Penhwa in 1801 for the maintenance of troops, by a treaty modifying the terms of the Treaty of Bassein a year earlier; but the fort of Kalpi was held by Gobind Rao on behalf of Shamsher Bahadur (see Banda Distrator) and was taken after a short siege. A tract near the Jumna was assigned to Himmat Bahadur, who

had aided the British, and in 1806 Gobind Rao submitted and was restored to his possessions. Portions of the present District in the Kälpi and Künch taktils were included in the British District of Bundelkhand. The Jälaun estate was seriously misgoverned, and in 1838 the British Government assumed its management. It lapsed in 1840, and during the next few years additions were made by conquest, by treaties with the Rājās of Jhānsi and Gwalior, and by lapse. In 1853 the southern portion of the present Hamfrpur District, which had been administered by the Deputy-Superintendent of Jālaun, was transferred to Hamfrpur, and Künch and Kālpī were attached to Jālaun. In 1854 and 1856 further transfers were made to Jhānsi District, and Jālaun assumed its present form

subject to a further transfer to Sindhia in 1861.

News of the rising at Cawapore reached Orai early in June, and shortly afterwards intelligence arrived that the Europeans at Jhansi had been massacred. Thereupon the men of the 53rd Native Infantry deserted; and on June 15 the Ibansi mutineers reached the District and murdered all the Europeans on whom they could lay their hands. Meanwhile Kesho Rao, chief of Gurarai, assumed supreme authority. He kept a few European officers as prisoners for some months, until after the defeat of the infamous Nāna Sāhib and his flight from Cawnpore; but those events induced him to change his tone and to treat with Colonel Neill for their restoration. After sending them in safety to Campore, the chief established himself for a time at Jalaun ; but upon the arrival of Tantia Topt in October the usual anarchic quarrels arose. Kesho Rao was deposed; his son was seized by the rebels; and the mutineers of Jaham, joining those of Gwalior, set out for Cawnpore. Meanwhile the populace everywhere revelled in the licence of plunder and murder which the Mutiny had spread through Bundelkhand. In May, 1858, after the fall of Jhansi, Sir Hugh Rose's force entered the District and routed the rebels at Kunch. There he left some troops of the Gursarai chief, whose allegiance had returned with the advent of the British forces. A Deputy-Commissioner was put in charge of the District at Künch, and Sir Hugh Rose advanced to attack the strong rebel position at Kaipi. On May 23 he drove them from that post and shortly afterwards marched in pursuit towards Gwalior. Unfortunately he was unable to leave any troops in garrison, except a small body to guard the passage at Kalpi; and accordingly on his withdrawal the western portion of the District relapsed once more into anarchy. Plundering went on as before; and in

July and August the rebels again attacked and pillaged Künch and Jalaun. The latter town was immediately recovered by a detachment from the garrison at Kälpi; but it was not till September that the guerilla leaders were defeated, and some further time elapsed before the work of reorganization could be effected.

Jalaun was treated as 'non-regulation' up to 1891, when it was made subject to the ordinary laws in force in the United Provinces, some of which had already been introduced.

The District is not rich in antiquities. A few carved pillars Archaeoand stones which may possibly be of the Chandel period have logy.
been found at Orai. The great battle in which Prithwi Rāj of
Deihi defeated Parmāl, the last great Chandel ruler of BUNDELKHAND, is said to have taken place at a village called Akorī
in the Orai tahiii. Kātrī, the most celebrated historical place
in the District, contains a number of Muhammadan tombs.

There are 6 towns and 837 villages in Jalaun. Population The shows considerable fluctuations, owing to the vicissitudes of people season to which all Bundelkhand is liable. The numbers at the four enumerations were as follows: 404,447 (1872), 418,142 (1881), 396,361 (1891), 399,726 (1901). There are four takids—ORAI, KALFI, JALAUN, and KÜNCH—each named from its head-quarters. The principal towns are the municipalities of KÜNCH, KALFI, and ORAI, the District head-quarters. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takett. | Arra in square miles. | Towns. | Villagra. go and | Population. | Population per square mile. | Percentage of variation in population be tween 1501 and 1404. | Number of persons able to read and write. |
|----------------|--------------------------|--------|------------------|-------------|--------------------------------|---|--|
| Oral | 213 | 3 | 105 | \$9,065 | 190 | - 13-7 | 3,445 |
| Kälpl | 407 | 1 | 154 | 75,691 | 186 | - 30 | 2,674 |
| Jalaun | 424 | 3 | 281 | 160,381 | 378 | + 9-0 | 6,959 |
| Klinch | 338 | 1 | 197 | 104,588 | 309 | + 1/7 | 4:451 |
| District total | 1,450 | 6 | *37 | 399,716 | 170 | . 03 | 17,529 |

Hindus form nearly 94 per cent. of the total population, and Musulmans only 6 per cent. The density of population is considerably higher than in the other Bundelkhand Districts, owing to the absence of the rocky hills and Jungle wastes which characterize the latter. Jahan was the only Bundelkhand District in which the population did not decrease between 1891 and 1901, and this result may safely be ascribed

to the Betwa Canal. Practically the whole population speaks Western Hinds, the prevailing dialect being Bundels.

Castes and occupatrons.

Chamles (leather-workers and cultivators), 68,000, are the most numerous Hindu caste. Other large castes are Brahmans, 50,000; Rājputs, 35,000; Kāchhīs (cultivators), 27,000; Koris (weavers), 20,000; and Ahlrs (graziers), 19,000. The Basors (5,000) and Khangars (6,000) are menial classes peculiar to this part of Bundelkhand. Among Musalmans, there are 11,000 Shaikhs and 6,000 Pathans, but many of these are descended from converted Hindus. Agriculture supports 61 per cent of the total population, and general labour to per cent. Raiputs, Kurmis, and Brähmans are the chief landholders.

Christian missions.

There were so native Christians in 1901, but no missions have permanent stations in the District.

General arricultural conditions.

The southern portion of Jalaun forms a rich basin of the black soils of Bundelkhand (mar and kabar), in which excellent wheat can be grown in favourable seasons without irrigation. Unfortunately it becomes overgrown, when cultivation is relaxed, by the weed called kans, which spreads rapidly and finally stops the plough. Towards the north the soil is brown or yellow, called purrou; this resembles the loam of the Doah and requires irrigation. Near the ravines which border the rivers, the soil is denuded of its more valuable constituents and becomes exceedingly poor; but there is valuable grazing near the Jumna and Betwa, and ghi is made by the Ahirs who graze large herds of cattle there. Field embankments are also made, which prevent erosion and by holding up water stop the growth of kans and retain moisture.

Chief agricultural. **Atutistics** pal crops.

The ordinary tenures of the United Provinces are found, zamindari and pattidari mahals being the commonest. A and princi-few estates are held on the ubiri tenure, which implies a reduction of the full revenue demand on varying conditions (see JHANSI DISTRICT). The main agricultural statistics for 1899-1901 are given below, in square miles :-

| | Tahiil. | | Total | Caltivated. | Irrigated. | Calrivable waste. | | |
|---------|---------|---|-------|-------------|------------|----------------------|----|------|
| Oni | | | | +0 | 311 | 134 | 2 | ¥o. |
| Kälpt | 4. | | 7 | 71 | 497 | 158 | 9 | 314 |
| Jilinis | | | À. | 2/ | 474 | 278 | 35 | 73 |
| Künch | Se i | - | 41 | -21 | 338 | 234 | 11 | 41 |
| | | | To | lat | THE | Bot | 47 | 30/1 |

Later figures are not available owing to actilement operations.

The principal food-crops are gram, joude, and wheat, which covered 333, 133, and 103 square miles respectively. Arhar (81 square miles), bojra (69), and barley (15) are less important. Oilseeds (48 square miles) and cotton (59) are the chief non-food crops; but hemp (san) and poppy are also

grown to a small extent.

Jalaun, like the rest of Bundelkhand, is liable to great fluctua-Improvetions in agricultural prosperity. If the spring harvest is injured, agriculwhether by blight or by excess or deficiency of rain, cultivation unal relaxes, or whear is replaced by inferior staples, and hims practice spreads rapidly, throwing land out of cultivation. No material improvements have been made in agricultural methods, though many years ago it was attempted to introduce American varieties of cotton near Kalpt. Endeavours are now being made to encourage rice cultivation, and an experimental farm is under consideration. Part of the District has been rendered more secure by canal irrigation, which will be referred to later. Advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts are freely taken, especially in bad years. A total of 5 lakhs was advanced during the ten years ending 1900, including 3 lakbs in the two famine years 1895-7; and Rs. 16,000 was lent between 1900 and 1904.

The cattle of Jalaun are inferior to those found south of the Cattle, Betwil. Attempts have been made to introduce better strains, postes, and but hitherto without success. No horses are bred, and the

ponies, sheep, and goats are all of an ordinary type.

Up to 1886 the District had no sources of irrigation except Irrigation. wells; and owing to the peculiarities of the black soils, mir and kabar, and the great depth of the spring-level the area irrigated was small. The opening of the Betwa Canal has led to a considerable increase in the irrigated area. This work enters the District in the south-west and has two branches, which supply almost every part of the District. Though the cultivators did not at first take water readily, the famine of 1896-7 opened their eyes to the value of the canal. In that year the area irrigated, which had been only 12 square miles in 1894-5, rose to 128 square miles. Water is now freely taken for Arruri, or loam, and the area of black soil irrigated, especially kabar, is increasing steadily. The area irrigated in 1899-1901 from canals was 38, and from wells 9 square miles. At present the irrigation is almost entirely confined to the spring crops, as the supply is exhausted by the beginning of the hot weather; but a second reservoir is being constructed to increase the supply.

Minerals:

Kankar or calcareous limestone and sultpetre are the only mineral products.

Arts and manufacturesJalaun was formerly noted for the production of cotton cloth; but the competition of machine-made cloth from Cawnpore has materially affected the industry, and the cultivation of al (Morinda citrifolia), from which a valuable red dye was made, has ceased since the introduction of aniline colours. Cotton-dyeing and printing still survive on a small scale at Saidnagar and Kotra. There are two small cotton gins at Kalpi and a larger one at Ait, while another has recently been completed at Künch.

Commerce.

The principal exports are gram, oilseeds, cotton, and ghi. The bark of the babūl is now being sent in increasing quantities to Cawnpore for use in tanning, and a plantation is being made near Kālpī. The gram is sent to Southern and Western India, oilseeds to Bombay, cotton to Cawnpore and Bombay, and ghi to Bengal. Kānch, Kālpī, Jālaun, Rāmpura, and Mādhogarh are the chief trade centres.

Railways and roads.

The south of the District is crossed by the Indian Midland section of the Great Indian Peninsula Railway from Jhānsi to Cawnpore, and a short branch connects Ait with Künch. There are 669 miles of road, of which 130 are metalled. The latter are in charge of the Public Works department, but the cost of all but 45 miles of metalled roads is met from Local funds. Avenues of trees are maintained on 109 miles. The main lines are the roads from Cawnpore and Saugor, and from Orai to Künch, Jālaun, and Mādhogarh.

Famine.

Drought and blight are the two great scourges of Jalaun, and famine and scarcity occurred in 1783, in 1833, in 1837, and in 1848. The rains of 1868 failed and the autumn harvest was only about one-third of the normal, while the following spring harvest, which benefited by an opportune fall in September, 1868, gave rather more than half an average crop. There was great distress, especially in the remote southern villages, until the monsoon of 1869, and relief was given and works were opened. A still worse calamity was experienced in the years 1895-7. Previous seasons had injured the crops and kans had spread considerably. The mins of 1895 ceased prematurely, and relief was necessary early in 1896. By May the numbers on relief rose above 40,000, but the approach of the mins sent the people back to their villages. The monsoon of 1896, however, was even weaker than that of the previous year, and relief operations were again required. By April, 1897, there were 127,000 persons in receipt of relief, and before the next harvest nearly 35 per cent, of the total population had been relieved. Between October, 1896, and the same month in 1807 nearly 12 lakhs was spent by Government.

The Collector is assisted by three Deputy-Collectors recruited District in India, and a taksildir is stationed at the head-quarters of staff. each takstl.

There is one regular Munsif. The District lies in the Civil jurisdiction of the Civil Judge and Sub-Judge of Jhansi, and Justice and is also in the Ihansi Sessions division. A Special Judge is at present carrying out inquiries under the Bundelkhand Encumbered Estates Act. Crime is on the whole light, but serious outbreaks of dacoities occur not infrequently, and the difficulty of breaking up gangs is increased by the proximity of Native States

The District includes three large estates, Rämpura, Jaga-Land manuar, and Goodlpana, for which no detailed statistics are adminisavailable, the total area of the three being about 85 square tration. miles. A fixed revenue of Rs. 4,500 is paid for Jagamanpar, and the other two are held revenue-free. For the first time since its existence in its present form, the settlement of the whole of Jalaun District is now being revised simultaneously. Portions of the Künch and Kälpt taksilt were first settled as part of the Bundelkhand District and afterwards of HAMIRPUR, the first regular settlement being made in 1840-1. This was revised in the usual manner in 1872, the term being fixed for thirty years. The remainder of the District was assessed summurily for short terms from 1839 to 1863. The first regular settlement, which should have commenced earlier, but was postponed by the Mutiny, was carried out between 1866 and 1863, and was confirmed for a period of twenty years. It was revised between 1885 and 1887, and the operations are noteworthy as being the first in the United Provinces in which the rules directed that rent-rolls should form the chief basis of assessment. At that time the revenue of the portions settled in 1872 was 2-9 lakhs. The revenue on the rest of the District was enhanced from 6-3 to 7-5 lakhs, the demand falling at 47 per cent, of the corrected rental. A series of bad seasons followed, and in 1893 reductions were made. The famine of 1895-7 necessitated further reductions of revenue, and in 1903-4 the demand stood at 0-8 lakhs. The whole District has now been brought under the special system of settlement in force in Bundelkhand, by which revenue is liable to revision every five years. Collections on account

of land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees:-

| | 1880-Ti | 1800-E | 1000-E | 1079-4 |
|--------------------------------|---------|--------|---------------|--------------|
| Land revenue . Total revenue . | 9,10 | 10,35 | 9-39 19,25 | 8,02 9,01 |

Local selfgovernment,

There are three municipalities, and two towns are administered under Act XX of 1856. Beyond the limits of these, local affairs are managed by the District board, which had an income in 1903-4 of Rs. 87,000, half of which was derived from rates. The expenditure was Rs. 88,000, including Rs. 50,000 spent on roads and buildings.

Police and

The District Superintendent of police has a force of 3 inspectors, 83 subordinate officers, and 360 constables, distributed in 17 police stations, besides 100 municipal and town police, and 1,200 rural and road police. A special force is maintained along the frontier of the Native States as a guard against dacoits. The District jail contained a daily average of 157 prisoners in 1903.

Education.

Jalaun takes a high place as regards the literacy of its inhabitants, of whom 4.4 (8.4 males and o.1 females) could read and write in 1901. The total number of public schools rose from 102 with 2,530 pupils in 1880-1 to 112 with 3,944 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 140 such institutions, with 5,184 pupils, including 271 girls, besides 58 private schools with 890 pupils. The education imparted is almost entirely primary, and only six schools were classed as secondary. No schools are managed by Government, but 92 are managed by the District and municipal boards. Out of a total expenditure on education of Rs. 26,000, Local funds provided Rs. 22,000 and fees Rs. 4,000.

Hospitals and dispensaties. There are 7 hospitals and dispensaries, with accommodation for 73 in-patients. About 55,000 cases were treated in 1903, including 895 in-patients, and 2,600 operations were performed. The total expenditure was Rs. 13,000, chiefly met from Local funds.

Vaccina-

In 1903-4, 15,000 persons were successfully vaccinated, representing a proportion of 37 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipalities.

(District Gazetteer, 1874 [under revision]; Settlement Reports by P. J. White, Kunch, 1874; Kalpi, 1875; remaining portion of District, 1889.)

Orai Tahsil (Unii) .- Head quarters tahiil of Jalaun Dis-

trict, United Provinces, conterminous with the surgana of the same name, lying between 25° 46' and 26° 3' N. and 79° 7' and 70° 34' E., with an area of 311 square miles. Population fell from 67,702 in 1801 to 50,065 in 1001, the rate of decrease being the highest in the District. There are 105 villages and two towns, including ORAL the District and taksil head-quarters (population, 8,458). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,02,000, and for cesses Rs. 33,000. The density of population, 190 persons per square mile, is much below the District average. Orai lies north of the Betwa, and the greater part of it forms an extensive plain of rich black soil called mar, This tract is at present greatly depressed owing to a succession of bad years, commencing in 1893, when a hailstorm caused such damage that Rs. 55,000 of revenue was remitted. The Hamirpur branch of the Berwa Canal, which crosses the tahsil, is being more largely used for irrigating the black soil. In 1800-1000 the area under cultivation was 134 square miles, of which only 2 were irrigated.

Kälpi Tahsil.-Eastern tahul of Jalaun District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 25° 53' and 26° 22' N. and 79" 25' and 79" 52' E., with an area of 407 square miles. Population fell from 78,754 in 1891 to 75,692 in 1901. There are 154 villages and one town, Karri, the tahsil head quarters (population, 10,130). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,55,000, and for cesses Rs. 25,000. The density of population, 186 persons per square mile, is the lowest in the District. The tahvil is bounded on the north-east by the Jumna and on the south by the Betwa, while several small drainage channels enter it from the west and unite to form a stream called the Non. In the south-west the soil is inferior mar, and this tract has recently suffered from bad seasons and is overgrown with kans (Sucharum spontaneum). Near the Jumpa the soil becomes lighter, and on the banks of the vast system of ravines which fringe that river and the smaller streams denudation has reduced the fertility of the land. In 1899-1900 the area under cultivation was 158 square miles, of which only 9 were Irrigated.

Jalaun Taltail. - Northern taksil of Jalaun District, United Provinces, comprising the pargana of Jalaim and part of Madhogarh, and lying between 26° and 26° 27' N. and 79° 3' and 79° 3x' E., with an area of 424 square miles. Population increased from 147,000 in 1891 to 160,181 in 1901, the rate of increase being the highest in the District.

There are 181 villages and two towns, including Jalaun, the tabil head-quarters (population, 8,573). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,16,000, and for cesses Rs. \$1,000. The density of population, 378 persons per square mile, is the highest in the District. The tahul is bordered on the west by the Pahūj and on the north by the Jumns, both of these rivers having a fringe of ravines. In the south and east the rich black soil called mar is found; but this tract has suffered recently from had seasons. North of the mar is a tract of habar, or lighter-coloured soil, which largely depends on rain at particular seasons for its cultivation. The north, west, and north-east of the takeil consists of a loam tract, which is served by the Kuthaund branch of the Betwa Canal, and is one of the most stable tracts in this very precarious District. In 1900-1 the area under cultivation was

275 square miles, of which 25 were irrigated.

Kunch Tahsil,-Western tahsil of Jalaun District, United Provinces, comprising the parguna of Kunch and part of Madhogarh, and lying along the Pahuj, between 25° 51' and 26" 15' N. and 78° 56' and 79° 18' E, with an area of 338 square miles. Population increased from 102,815 in 1891 to 104,588 in 1901. There are 197 villages and one town, KCNCH (population, 15,888). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3.07,000, and for cesses Rs. 50,000. The density of population, 300 persons per square mile, is considerably above the District average. In the east is one of the richest areas of the black soil called mar to be found in Bundelkhand. It suffered from rust in 1894 and 1895, and subsequently from famine, but has not been overgrown by kilns (Saccharum spontaneum). West of the mir the soil becomes lighter asthe ravines of the Pahuj are approached, and this tract is irrigated by the Kuthaund branch of the Betwa Canal. In 1000-1 the area under cultivation was 234 square miles, of which 11 were irrigated.

Jalaun Town.-Head-quarters of the taksil of the same name in Jalaun District, United Provinces, simuated in 26° 8° N. and 70° 21' E., on a metalled road 13 miles from Orai, the District head-quarters. Population (1901), 8,573. During the eighteenth century Jalaun was the capital of a Maratha State, and nearly all the respectable inhabitants are still Maratha Brihmans, many of whom enjoy pensions and rent-free grants. Besides the taknili offices, the town contains a dispensary and a takilli school with 144 pupils. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,300. Trade is small, but increasing. A fine market was built in 1881, and a number of Mārwārī bankers are settled here.

Raipi Town.—Head-quarters of the taksil of the same name in Jalaun District, United Provinces, situated in 26 S' N. and 79 45' E., on the Jumma, on the mad from Cawnpore and Saugor, and on the Great Indian Peninsula Railway.

Population (1901), 10,139.

According to tradition Kalpi was founded in the fourth century by one Baseleo. It fell into the bands of Kutb-ud-din in 1196, and at once became an important fortress of the Musulmans. In the fifteenth century Ibrahim Shah of Jaunpur made two unsuccessful attempts to seize Kālpi, and in 1435 Hoshang Shah of Malwa captured the place. A few years later Ibrāhim's successor, Mahmūd, was allowed to occupy the town on the plea of chastising the governor. He plundered it, and then refused to restore it to the king of Malwa, but afterwards came to terms. In the great struggle between the Januar kingdom and the rulers of Delhi, which ended with the extinction of the former, a great battle took place near Kaipt in 1477 and Husain Shah of Jaumpur fled to Kanauj, where he was again defeated. When the victory at Pantpat in 1526 laid open the plains of Hindustan to Babar, the Rana of Chitor and the Afghans combined to stop his advance, and occupied Kālpi, but were met near the site of Fatehpur-Sikri, as they marched on Agra, and defeated. Kalpi was taken in 1527 by Humayan after his conquest of Jaunpur and Bihar, and held till 1540, when the Mughals were defeated by Sher Shith at Kanauj. It was again the scene of fierce contests in the struggles which supped the Afghan strength before the return to power of the Mughals. Under Akbar Kalpi became the head-quarters of a sarkar, which included the adjacent parts of the present Districts of Etawah, Cawnpore, and Hamirpur, besides Jalaun and portions of the State of Gwalior. When the Marathas acquired part of Bundelkhand carly in the eighteenth century, Kälpi became the head-quarters of their governor. In 1798 the town was captured by the British, but was subsequently abandoned. It again fell into their power, after a few hours' resistance, in 1803, and was granted to Himmat Bahadur. He died in the following year and the grant lapsed, when the town was made over to Gobind Rao of Jalaun, who exchanged it in 1806. After the large District of Bundelkhand was divided into two portions, Kalpi was for a time the head-quarters of the northern division, afterwards

called Havingur District. During the Mutiny a great victory was won near here, in May, 1858, by Sir Hugh Rose over a force of 12,000 rebels under the Rant of Jhansi, the Rao Sahib, and the Nawab of Banda, which did much to

quell the rebellion in Bundelkhand.

The town is situated among the ravines of the Jumna, and after a long period of decay is again reviving in importance, The western outskirt contains a number of old tombs, notably that called the chaurdsi gumbas (or 'eighty-four domes'); but ravines now separate these relics of the past from the dwellings of the living. Old Kalpi stands near the river on an elevated site, and is a good specimen of the older type of North Indian town, with darkened plaster walls and flat roofs interspersed with trees, and here and there a temple spire or a Muhammadan dome. The newer portion of the town stretches southeast, and is lower and further from the river. On the most prominent edge of the steep bank stand the ruins of a fort, but only a single building has survived. This is a masonry room with walls nine feet thick, said to have been the treasury of the Maratha governor. A fine flight of steps leads from the fort to a bathing ghat on the river. A few years ago a lofty tower was built by a local pleader, which is adorned with representations of the battles of the Rāmāyana. It is noteworthy that less prominence is given to Rāma than to Rāvana his adversary, who is represented as a gigantic many-armed figure, of dignified aspect, about 80 feet in height. The chief public buildings are the taktifi and dispensary.

Kalpi has been a municipality since 1868. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 11,000. In 1903-4 the income was Rs. 14,000, chiefly derived from octroi (Rs. 9,000), and the expenditure was Rs. 14,000. For many years Kālpi was a great trade centre, Cotton and grain were brought from the south, and sent away to Campore or down the Jumna to Mirzāpur and Calcutta, while the manufactures of sugar-candy and paper were celebrated. The buildings of the East India Company's cotton factory, which was one of the principal stations for providing for the annual investment, are still standing. As railways spread and trade routes altered, Kalpi declined, but its commerce is now again increasing. Grain is sent to Southern and Western India, ghi to Bengal, and cotton to Cawnpore or Bombay. Two small cotton gins have recently been opened, and the Forest department is starting plantations of babil for the supply of bark to the Cawnpore tanneries. The tahrifi school has 111 pupils, and there are three municipal schools with 170, and

a girls' school with 19.

Kunch Town (Konch) .- Head-quarters of the tahril of the same name in Jalaun District, United Provinces, situated in 25" 59' N. and 70" 10' E., on a branch of the Great Indian Peninsula Railway, Population (1901), 15,888. Küncht was the head-quarters of a mahal or parguna under Akbar. In 1804 the commander of the British troops in Bundelkhand dispatched a force to reduce the fort of Amanta Malaya, five miles from Kunch. Amtr Khān, the Pindāri, came to the rescue of the garrison, and the British had to retire to Künch after losing heavily. The Pindāris subsequently overpowered a small detachment of reinforcements at Kalpt, but their forces were entirely broken and dispersed by the British troops a month later. During the Mutiny Kunch was several times occupied by the rebel troops. The town consists of a business quarter in the east, and a quiet, scattered country village to the west. The latter contains the high site of an old ruined mud fort, on which the takiili and police station now stand. The former is adorned by a large tank constructed in the eighteenth century, and has been much improved during the last thirty years. A new bazar has been built, and a large enclosure has been made, to which goods may be brought free of octroi. The chief public buildings are the dispensary and tahsta school. Kunch has been a municipality since 1868. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 13,000. In 1903-4 the income was Rs. 22,000, chiefly from octroi (Rs. 13,000) and a tax on professions and trades (Rs. 2,000), and the expenditure was Rs. 22,000. The town is the largest trading centre in the District, and is increasing in importance. Grain and ghi are the chief exports, and a large cattle market is held. Sugar, tobacco, and rice are imported for distribution to the country around. The taksin school has 66 pupils, four municipal schools 200, and a girls' school 22 pupils.

Oral Town (Urm).—Head-quarters of Jalaun District and also of the Oral taksil, United Provinces, situated in 25° 59' N. and 79° 28' E., on the Cawnpore-Saugor road, and on the Great Indian Peninsula Railway. Population (1901), 8,458. Oral was chosen in 1839, probably on account of its position on the Cawnpore-Saugor road, as the head-quarters of the newly-annexed territory of Jalaun. It then consisted of a few dilapidated buts, and has been improved to some extent, but still remains a place of no importance except

as the District head-quarters. Besides the ordinary offices, Orai contains male and female dispensaries, and high and takilli schools with about 200 pupils, and is the head-quarters of a Special Judge under the Bundelkhand Encumbered Estates Act. There is a fine tank with masonry approaches south of the town. A municipality was constituted in 1871. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 9,000. In 1903-4 the income was Rs. 15,000, chiefly from octroi (Rs. 7,000), and the expenditure was Rs. 12,000. There is no trade.

BENARES DIVISION

Benares Division, -South-eastern Division of the United Provinces, lying between 23° 52' and 26" 12' N. and 82" 7' and 84° 39' E. The northern portion is traversed by the Ganges and in the east reaches to the Gogm, while the southern extends beyond the Kaimur range and the river Son to the East Satpuras. The head-quarters of the Commissioner are at Benares city. Population increased from 1872 to 1891, but fell in the next decade. The numbers at the four enumerations were as follows: 4,395,252 (1872), 5,178,005 (1881), 5,368,480 (1891), 5,069,020 (1901). There is reason to believe that the Census of 1872 understated the actual population. The decrease between 18q1 and 1q01 was due partly to an epidemic of fever following disastrous floods in 1894, partly to emigration, and partly to the effects of famine. The total area is 10,431 square miles, and the density is 486 persona per square mile, as compared with 445 for the Provinces as a whole. The Districts north of the Ganges include the most thickly populated area in the United Provinces. In 1901 Hindus formed more than or per cent, of the total population, and Musalmans not quite 9 per cent. There were 2,949 Christians and 1,984 Sikhs. The Division contains five Districts, as shown below:-

| | | Area in square miles. | Population, 1901. | Land recessor and traves for 1903-4. in thousands of repres. |
|----------|-------|-----------------------|----------------------|---|
| Henares: | | 1,00% | 882,084 | 10,45 |
| Miralpur | | 8,435 | 1,081,432 | 9.93 |
| Janupur | A 191 | 1,551 | 1,303,930 | 14,60 |
| Ghāzipur | . 0 | 1,389 | 913,818 | 13/10 |
| Ballia | A 1 | 1,245 | 987,768 | 8,43 |
| | Total | 10,431 | 3,059,010 | 88-81 |

This is the only considerable area in the United Provinces of which the revenue is permanently settled. Ballia District lies

entirely in the Doab between the Ganges and Gogra, which form its northern and southern boundaries and meet at its eastern extremity. Jaunpur District is situated in the same Doab, but does not reach either of the rivers. Ghazquir, Benares, and Mirzāpur lie on both sides of the Ganges; but while the first two Districts are situated entirely in the alluvial plain, Mirzāpur stretches many miles south to the Vindhyas and East Satpuras. There are 13,654 villages and only 38 towns; and the Division is remarkable for the number of small hamlets in almost every village, contrasting with the closelypacked central village sites of the Western Districts in the United Provinces. The largest towns are: Benares (200,331, with cantonments), MIRZAPUR (70,862), JAUNPUR (42,771), and Ghazirus (29,429). There are few places of commercial importance, the chief being Benares, Mirzapur, Ghazipur, Jaunpur, Shāhoanj, and Ahraurā. Benares is one of the holiest centres of Hinduism, especially to the worshipper of Siva: and some interesting Buddhist remains have survived at SARNATH near it. Jaumpur was the seat of a powerful kingdom during the fifteenth century, and contains fine specimens of the Muhammadan buildings of that period.

Boun-Scuration, and river system.

Benares District (Banuras). - District in the Division of darles, con- the same name. United Provinces, lying between 25° 8' and 25° 35' N. and 82° 40' and 83° 33' E., with an area of 1,008 square miles. Benares is bounded by Jaumpur and Ghāzīpur on the north; by the Shahabad District of Bengal on the east; by Mirzāpur on the south; and by Jaunpur and Mirzāpur on the west. The District is part of the alluvial valley deposited by the river Garges, and forms an irregular parallelogram, divided by the sacred stream. On each bank of the river is found a high ridge of coarse gravelly soil, mixed with kankar or nodular limestone, and scored by ravines. East of the Ganges the surface dips rapidly, and a large portion of this tract is under water during the rains, and is generally marshy. On the opposite bank the level is more uniformly maintained.

The Ganges first touches the District on the southern boundary, and after crossing it in a series of bold curves, with a general direction from south-west to north-east, leaves the northern border, at the point where it receives the Guntt, which forms the northern boundary for about 22 miles. Two small streams, the Barna and Nand, drain the area on the left bank of the Ganges. The Karamnäsä skirts the south-eastern border; it becomes a heavy stream after min, and is subject to sudden floods, but is almost dry during the hot months,

The District contains many small marshy lakes or *jhile*, some of which attain a length of several miles during the rains, but most of them are almost dry in the summer.

Benares lies entirely in the Gangetic alluvium, and kankar is Goology, the only stone found. Saline efflorescences called ren are not

uncommon, especially in the Chandault takeil.

The flora of the District presents no peculiarities. The Botany, mango and bamboo are largely planted, and fine groves are numerous. Fruit is also largely grown, and Benares is famous for its mangoes and guavas. There is very little jungle.

Owing to the absence of uncultivated land the wild animals Fannafound here are not important. A few antelope are seen northeast of the Ganges and along the Karamnāsā. Wild-fowl congregate in numbers on the rivers and lakes. Fish are caught

largely in the Ganges.

The climate, except in the cold season, is moist and relaxing Climate and resembles that of Bengal. Even during the winter months and temperature, the cold is much less marked than in the Districts farther west. In summer, though the heat is great, the west winds blow intermittently; but in the rains a fairly constant east wind prevails. The mean monthly temperature ranges from about 60° in January to 92° in May and June.

The average annual rainfall over the whole District is nearly 40 Rainfall, inches, varying from 38 in the west to 41 in the east. Fluctuations from year to year are occasionally considerable, but are not so violent as in Districts farther west. In 1876 the fall was only 26 inches, while in 1894 nearly 64 inches were received.

Before the Muhammadan invasion BENARES Crry was at History. times the capital of a kingdom; but the records of the early period are vague and unreliable. Tradition relates that aboriginal races, such as the Bhars and Koiris, once held the District; but in the twelfth century they certainly owed allegiance to the Rājā of Kanauj. Benares fell into the hands of Muhammad Ghort after the defeat of Jai Chand, and a governor was appointed to dispense justice and repress idolatry. In the fifteenth century the District formed part of the separate kingdom of Jaunpur till its fall; and in the struggles of the next century between Mughal and Pathan it suffered much. Under Akbar it was included in the Sanat of Allahabad, and enjoyed a period of peace until the eighteenth century, when it shared in the troubles that attended the fall of Mughal power. About 1722 the greater part of the present Benares Division was included in the territory governed by Saadat Khan, the first Nawab of Oudh, who subjet it to Mir Rustam Ali. The latter

was expelled in 1738, and the grant was transferred to his agent, Mansi Rām, an ancestor of the present Mahārājā, who

had already acquired a fort in Jaumpur.

Mansa Ram died in 1739; but his son, Balwant Singh, in whose name the grant had been made and who had received the title of Raja, successfully followed his father's policy. Through a long course of years he endeavoured to make himself practically independent of the Nawah, his lord-paramount, by building or seizing a line of fortresses on a strong strategical base south of the Ganges. Step by step he acquired new strips of territory, and strengthened each acquisition by fresh military works.

In 1763 the Rais joined the emperor, Shah Alam, and the Nawab, Shuiz-ud-daula, in their invasion of Bengal. After the disastrous battle of Buxur, however, he went over to the British cump and prudently sought the protection of the conquerors. By an agreement of 1764, Balwant Singh's estates were trunsferred from Oudh to the Company; but the transfer was disapproved by the Court of Directors, and in 1765 the Benares territory was restored to Outh, the Nawab consenting to guarantee the Rājā in the quiet enjoyment of his possessions. Balwant Singh died in 1770, and the Nawah endeavoured to use the opportunity thus afforded him of dispossessing his powerful vassal. The English, however, compelled him to recognize the succession of Chet Singh, an illegitimate son of the late Raja. Five years later, the Nawab ceded the sovereignty of the Benares estate to the British, who confirmed Chet Singh in his holding by sanad, dated April 15, 1776.

In 1778 a contribution of 5 lakha was levied upon Chet Singh for the maintenance of a battalion of sinthis; similar demands were made in 1779 and 1780. In the latter year, British power in India being then threatened with a simultaneous attack on the part of Haidar Ali, the Nizām, and the Marāthās, the Governor-General, Warren Hastings, called upon the Raja to furnish a cavalry contingent of 1,500 men. The Raja returned evasive answers, but did not send a single trooper. For this conduct Hastings determined to inflict upon him a fine of 50 lakhs. In August, 1781, he arrived in person at Benares, and finding Cher Singh still insubordinate, gave orders that he should be arrested in his own house, A riot occurred, the little body of British troops was attacked and easily overcome, the Raja fled to one of his strongholds, and a general rising took place in the city. Hastings, shut up with his slender retinue in Benares, found himself in a most critical position, from which he extricated himself by flight to Chunar. The Rain remained in open rebellion till the end of September, when the British troops dispersed his followers. The Governor-General then returned to Benares, deposed Chet Singh, and recognized his nephew, Mahip Nārāyan, as Rājā, Chet Singh retired to Gwalior, where he died in 1810. The criminal administration of the whole estate and the civil and criminal administration of the city were taken from the Raja and assumed by the Company. For the later history of the family, see BENARES ESTATE. When Waztr Alt, Nawab of Oudh, was deposed by the British in 1708, he received orders to live at Benares. In January, 1700, he attacked Mr. Cherry, the Governor-General's agent, and murdered him with two other The Magistrate, whom he proceeded to assail, defended himself in his house till the cavalry arrived from Birabar and rescued him. Wazir Alt escaped at the time, but was subsequently given up and confined for life in Calcutta.

From this period English rule was never seriously disturbed till the Mutiny of 1857. News of the outbreak at Meerut reached Benares on May 15. The 37th Native Infantry at once became disorderly, and it was determined to disarm them on June 1. They replied to the order with a volley; but when it was returned they shortly dispersed. The Sikhs and the Irregular Cavalry joined the mutineers. The civil officers, however, held the mint and the treasury, and the rebellion went no farther. Parties of Europeans passing up from Calcutta to the north-west sufficed to keep the city quiet, though in the District some disturbances took place. Early in June the Rajputs of Jaunpur marched to attack Benures, but on June 17 they were cut to pieces by a British force. Next day the erection of the fort at Raighat was commenced on a site which commands the whole city, and no breach of the peace afterwards occurred.

Ancient remains are found in many places, the oldest being Archaeothe group of Buddhist ruins at Sarnarn. The famous temples logyof Benares Crry are not conspicuous for architectural beauty or for antiquity; and the finest, together with the magnificent line of stone bathing ghāts along the Ganges, date principally from the eighteenth century.

The District contains 4 towns and 1.972 villages. Its The population increased between 1872 and 1891, and then de people creased owing to a series of bad seasons. The numbers at the four enumerations were as follows: 794,039 (1872), 892,684

^{*} Visier All Khan, or the Manacre of Benard, 1844; reprinted at Benards.

(1881), 921,943 (1891), 882,084 (1901). It is probable that the Census of 1872 understated the population. There are three taktils—Benaries, Gargarur, and Chardauli—each named from its head-quarters. Benaries City is the administrative capital, and Ramnagar, the residence of the Mahārājā, is the only other town of importance. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| | BATE | Number of | | di di | 84 | ge of a be | 541 |
|----------------|---------|-----------|------------|---------|-----------------------|--|---------------------------------------|
| Takell, | Amainsq | Diwin. | Villagra | Populat | Populatio square p | Necessary Variatio populatio tuessary | Number personn to read write |
| Benarua | 464 | 1 | 989 | 857:541 | 1,302 | -39 | 41-757 |
| Gangapur . | 118 | 100 | #80 | 86,703 | 733 | -36 | 7,895 |
| Chandault . | 436 | .9 | 703 | 337,840 | 558 | = £4 | 8,463 |
| District total | T,oo8 | 4 | 1,971 | 881,084 | 875 | - 42 | 53,115 |

The density of population is extremely high, being nearly double that of the United Provinces as a whole. Hindus form more than 89 per cent, of the total, and Musalmans more than 10 per cent. The language in common use is Bihāri, which is spoken by 90 per cent, of the population, while Western Hindi (chiefly Hindustāni) is spoken by 7 per cent. Owing to its religious reputation, there are large numbers of persons speaking Bengali, Marāthi, and Gujarāti in Benarss city.

Castes and occupations.

The most numerous Hindu castes are: Brāhmans, 98,000; Chamārs (leather-workers and cultivators), 97,000; Kurmīs (agriculturists), 83,000; Ahirs (agriculturists), 81,000; Rājputs, 53,000; and Koiris (cultivators), 42,000. Among the castes found chiefly in the east of the United Provinces are the high-caste Bhuinhārs, who claim to be Brāhmans, 18,000; Bhars (an aboriginal tribe), 38,000; Luniās (labourers), 15,000; and Gonds (corresponding to Kahārs elsewhere), 12,000. Among Muhammadans the castes and tribes chiefly represented are the Julāhās (weavers), 28,000; Shaikha, 26,000; and Pathāns, 10,000. The principal landholders are Brāhmans, Bhuinhārs, Rājputs, various money-lending castes, and Kāyasths. Agriculture supports 57 per cent. of the total population, and general labour 6 per cent.

Christian missions. There were 669 native Christians in 1901, of whom 380 belonged to the Anglican communion. The Church Missionary Society commenced work here in 1818, and the London Mission Society two years later. The Baptist and Wesleyan Societies also have branches.

The characteristic features of the portion of the District General east of the Ganges are the absence of drainage, and the clay agriculsoil in the centre. Rice cultivation is thus more important conditions here than in the tract west of the river, and in ordinary years the spring crops are largely grown without irrigation. In the extreme east the soil turns to mar, the black soil of Bundelkhand. West of the Ganges the soil is lighter, and not so liable to waterlogging. The whole District is very closely cultivated. In the cold weather the spring crops are often liable to attacks of rust.

In the portion of the District outside the BENARES ESTATE Chief agrithe ordinary tenures are found, samindari mahale numbering statistics 2.688, and pattidiri 1,972. Some of the mahals are of the and princivariety known as complex, which comprise portions of a number put crops. of separate villages. There are also tenants at fixed rates, who have a transferable as well as a heritable right, and underproprietors called mukarraridars, who hold permanent leases, The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles :--

| IZ3 | Takit | | Total. | Cultivated | Irrigated. | Cultivatile | |
|-----------------------|-------|-------|--------|------------|------------|-------------|--|
| Benares | ĸ | | 464 | 326 | 189 | 59 | |
| Gangāpur Chandauli | | 132 | 426 | 332 | 45 89 | 33 | |
| | | Total | 1,008 | 743 | 203 | 106 | |

Rice and barley are the chief food-crops, covering 162 and 152 square miles respectively, or 25 and 23 per cent, of the net area cropped. Gram (77 square miles) and wheat (60) come next in importance; jovear, maize, bājra, and sāwās are also grown. Maize is a favourite crop near the city and near village sites. Sugar-cane was grown on 21 square miles, hemp (san) on 17, and the District also produces poppy and oilseeds.

Between 1840 and 1880 the total cultivated area (excluding Improvethe Gangapur autif/) increased by only about 4 per cent. The ments in principal change in this period was the replacement of sugar agriculby rice and hemp (san), and there have been no striking practice. alterations since. As a rule, few or no advances are made under the Loans Acts, but in 1896-7 Rs. 7,400 was lent.

The cattle of the District are very poor, and when better Cattle, animals are required they are imported. The ponies are also ponies, and inferior, and there is no peculiar breed of sheep or goats.

Irrigation.

In 1903-4, 187 square miles were irrigated from wells and 59 from tanks. The tanks are chiefly natural depressions or jills, and are used in October and November for rice cultivation, and later for the spring crops and for sugar-cane if the water is not exhausted. Wells can be made in most parts of the District, and are chiefly worked by bullocks. The rivers are hardly used at all for irrigation, as the lowlands in their beds do not require it, and the expense of raising water to a higher level would be prohibitive.

Minerals.

Kankar, or calcareous limestone, is the only mineral product, and is used for metalling roads and for making lime.

Arts and somulattures. Excluding the city of Benares, there are few manufactures, and these are confined to the preparation of a few classes of articles for local use, the weaving of coarse cotton cloth being the most important. The city is, however, celebrated for gold and silver jewellery, ornamental brass-work, embroidery, and silk-weaving. It also contains three ice factories, several printing presses, two chemical works, and two brick-making concerns.

Commerce.

There is little surplus agricultural produce in the District, and oilseeds are perhaps the most important export. The manufactures of the city are, however, largely prepared for outside markets. The imports include piece-goods, salt, and metals. Benares city is the only trade centre, and absorbs a large quantity of the produce of the District, while it is the chief place for the distribution of imported goods. Railways have now taken the place of roads as trade-routes, and there is little traffic on the river except the carriage of stone and fuel from Mirzapur.

Railways and rands.

The District is exceptionally well served by railways and roads. The main line of the East Indian Railway traverses the eastern portion, and at Mughal Sarai gives off a branch to Gaya in Bengal. Mughal Sami is also the terminus of the Oudh and Rohilkhand Railway, which crosses the Ganges by a magnificent bridge, and then divides into two branches at Benares, and serves the western half of the District. Benares is the terminus of a branch of the Bengal and North-Western Railway which runs north. There are 577 miles of road, of which 127 are metalled. The latter are maintained by the Public Works department, but the cost of all but fifty-one miles is charged to Local funds. The main lines are: the grand trunk road, which traverses the south of the District, crossing the Ganges at Benares; and a series of roads radiating from Benares city to Jaumpur, Azamgarb, and Ghāzipur. Avenues of trees are maintained on 262 miles.

Benares District suffers like its neighbours from drought, Famine. and from its natural consequence, famine; but it is less severely affected than the regions south or west of it. In 1770. Benares was visited by the famine which devastated Bibar and Northern Bengal. In 1783, though the dearth was more marked in the western Districts, Hustings described the country from Buxar to Benares as devastated, and serious riots took place. There was little distress in 1801-4, though bounties were given to encourage the import of grain from Bengal. The famines of 1837-8 and 1860-1 were also not felt here severely. High prices caused distress in 1869, in 1874, and in 1877-9, but to a much smaller degree than elsewhere. The monsoon of 1896 ceased prematurely, and the important rice crop yielded only one-eighth of the normal. Prices rose very high; but the distress was largely confined to artisans and those who were unable to labour, and the numbers on the relief works opened did not reach 4,000, though 12,000 persons were in receipt of gratuitous relief.

The Collector is usually assisted by a member of the Indian District A tahsildar is stationed at the head-quarters of each tahsil.

The civil courts of the District are those of the Munsif, Civil Sub-Judge, Small Cause Court Judge, and District Judge; but justice and these have no jurisdiction within the Benares Domains in cases which are in any way connected with land. The District Judge is also the Sessions Judge. Murders are not uncommon, and agrarian quarrels often lead to riots. Professional dacoity is rare. The Bhars, Musahars, and Doms of this District commit dacoities in Eastern Bengal. Infanticide was formerly suspected, but no villages are now proclaimed under the Act.

After the cession to the British in 1775 the revenue adminis-Land tration was carried on for some years by the Raja, who paid revenue a fixed subsidy to the British Government. In 1787 Mr. Jona-tration. than Duncan, afterwards Governor of Bombay, was appointed Resident at Benares, and was impressed by the mismanagement and extortion which prevailed. Reforms were commenced in the following year, and a settlement was made in which the annual value of each village was ascertained by applying rates calculated on the average produce. The amil's (native collector) fees of 10 per cent, and banker's dues were deducted. and half the balance was taken as revenue. The term then fixed was four years in part of the District and ten years in the remainder. In 1791-2 the decennial settlement was extended to the tract where engagements for a shorter period had been

taken, and in 1795, with a few revisions, the whole settlement was declared permanent. In 1818 the Districts of Ghazipur (then including Ballia) and Jaunpur were formed, and in 1820. Benares was still further reduced by the formation of Mirzipur District. The permanent settlement had not been based on a survey, and no detailed record-of-rights was prepared. engagements being often taken from a few representatives of large bodies of co-sharers. Between 1833 and 1841 a survey was made, field maps were prepared, and detailed records drawn up. A second formal revision was made between 1882 and 1886, since which time annual papers have been prepared as in the rest of the Provinces. The revenue assessed in 1705 on the two takril's outside the Benares Domains was 7-0 lakhs. which by 1843 had risen to 8-2 lakhs, owing to the assessment of alluvial land and resumption of revenue-free grants. In 1903-4 the demand was 7.7 lakhs, and the demand in the Gangapur taksil was 1-2 lakhs. Collections on account of land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees :--

| | 1580-1 | 1890-1 | 1900+t ₁ | 1993:4- | |
|--------------------------------|-----------------------|---------------|---------------------|---------|--|
| Land revenue . Total revenue . | 8,9 <u>8</u> 13.93 | 9,01 18,67 | 9,04 | 8,98 | |

Local selfgovernment.

Benares is the only municipality in the District, but there are two towns administered under Act XX of 1856. Outside of these, local affairs are managed by the District board, which had an income of 1-1 lakhs in 1903-4, about one-third of which was derived from local rates. The expenditure on roads and buildings amounted to Rs. 60,000, out of a total expenditure of 1-2 lakhs.

Police and jails.

The District Superintendent of police has a force of 4 inspectors, 121 subordinate officers, and 619 men, distributed in 22 police stations, besides 424 municipal and town police, and 1,460 rural and road police. There is a large Central jail with a daily average of 1,292 inmates in 1903, while the District jail contained 411.

Education.

The District of Benares contains a higher proportion of persons able to read and write than any other in the United Provinces, except the Himālayan Districts. In 1901, 4-9 per cent. of the population (11-2 males and o-8 females) were literate. The peculiar conditions of Benares city are largely responsible for this. The number of public institutions fell

from 142 with 6,033 pupils in 1880-1 to 02 with 5,274 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 200 such institutions with 12,006 pupils, of whom 1,165 were girls, besides 130 private institutions with 3,471 pupils, including 870 girls. Three colleges and a collegiate school are maintained in BENARES CITY, but the majority of schools are of the primary class. Four schools and colleges are managed by Government, and 118 by the District and Municipal boards. The total expenditure in 1901-1 was 1-2 lakhs, of which Provincial revenues contributed Rs. 58,000, Local funds Rs. 20,000, and fees Rs. 25,000.

There are 11 hospitals and dispensaries, with accommo-Hospitals dation for 330 in-patients. In 1903 the number of cases and distreated was 124,000, including 3,819 in-patients. The total expenditure was Rs. 27,000, chiefly met from Local funds.

In 1903-4 the number of persons successfully vaccinated Vaccinswas 26,000, representing a proportion of 28 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipality and cantonment of Benares.

(District Gauetteer, 1884 [under revision]; F. W. Porter, Survey and Revision of Records in Benares District, 1887; A. Shakespear, Selections from the Duncan Records, Benares, 1873.)

Benares Tahsil.-Northern tahril of Benares District, United Provinces, comprising the parganas of Dehat Amanat, Kaswār Sarkār, Pandrah, Katchir, Sultānīpur, Kol Aslah, Athganwan, Shivapur, and Jaihupur, and lying between 25° 12' and 25° 35' N. and 82" 40' and 83" 12' E., with an area of 464 square miles. Population fell from 580,467 in 1891 to 557,541 in 1901. There are 980 villages and two towns, including BENAMES CITY, the District and taksi/ head-quarters (population 209,331). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,94,000, and for cesses Rs. 77,000. The density of population, 1,202 persons per square mile, is considerably above the District average owing to the inclusion of a large city. The takiil forms an elevated plain, bounded in part on the south and east by the Barna and Ganges, and on the north by the Gumti. The northern portion is also drained by the Nand, a tributary of the Gumtt. The soil is generally a rich loam, and irrigation is provided chiefly by wells, though tanks or july serve a small area. In 1903-4 the area under cultivation was 326 square miles, of which 159 were irrigated.

Gangapur.-Western tuksil of Benares District. United Provinces, included in the BENARES ESTATE, conterminous with parguna Kaswar Raja, and lying between 25° 10' and 25° 24' N. and 82° 42' and 83° E., with an area of 118 square miles. Population fell from 89,934 in 1891 to 86,703 in 1901. There are 280 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,25,000, and for cesses Rs. 3,000. The density of population, 735 persons per square mile, is high. This is a fertile tract of country lying south of the Harna river. In 1903-4 the area under cultivation was

85 square miles, of which 45 were irrigated.

Chandauli - Eastern fahsil of Benares District, United Provinces, comprising the Aurganas of Barhwal, Bārā, Dhūs, Mawai, Mahwart, Maihwar, Narwan, and Ralhupur, and lying east of the Ganges between 25° 8' and 25° 32' N. and 83° 1' and 83° 33' E., with an area of 426 square miles. Population fell from 251,542 in 1891 to 237,840 in 1901. There are 703 villages and two towns, including RAMNAGAR (population, 10,881). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,80,000, and for cesses Rs. 64,000. The density of population, 538 persons per square mile, is the lowest in the District. On the south-east the Karamnasa forms the boundary, and its tributaries, the Godhai and Chandraprabhā, carry off some of the surplus water; but the drainage generally is defective. The soil is largely clay, and rice is the chief crop. In 1903-4 the area under cultivation was 122 square miles, of which 80 were irrigated. Wells supply about two thirds of the irrigated area, and tanks or marshes the remainder.

Benares Estate. - An estate, usually known as the Family Domains of the Mahārājā of Benares, comprising the taksils of GANGAPUR in Benares District and KORH or Bhadohi and CHARIA in Mirrapur District, United Provinces. The total area is 988 square miles, and the revenue due to Government from Gangāpur and Korh is 3 lakhs, Chakiā being held revenuefree, while the rent-roll is about to lakhs. The Mahārājā is exempted from the payment of cesses on account of the Domains, and under Act I of 1904 has recently been authorized to collect certain rates which will be applied in the same manner as local rates in ordinary Districts. Besides his Family Domains the Mahārājā owns a large area of samindari land in the Districts of Benares, Ghāzīpur, Balliā, Jaunpur, Allahābād, Mirzāpur, and Shāhābād (Bengal), with a rent-roll of 7 lakhs, paying 3-9 laklis revenue and Rs. 59,000 cesses. The founder of the family was Mansa Ram, a Bhuinhar, who entered the service of Rustam All, governor of Benares under the Nawah of Oudh. In 1738 Mansa Ram obtained the engagement for

revenue of the sarkars of Jaunpur, Chunar, and Benares in the name of his son, Balwant Singh, on whom the title of Raia was conferred. Balwant Singh was subsequently recognized as the samindar of Gangaput, and in 1754 he received a revenue-free grant of Chakia on payment of Rs. 80,000. Later, on the accession of Shuja-ud-daula, half the revenues of Korh were granted to him in fagir. In 1764, after the battle of Buxar, the territory held by Balwant Singh under the Nawab of Oudh was granted by the emperor to the Company, but the Court of Directors disapproved the treaty and restored the sovereign rights to the Nawab. Balwant Singh was succeeded in 1770 by Chet Singh; and the sovereignty of the tract under his control was ceded to the Company in 1775. An agreement was made with Chet Singh confirming him in his possessions subject to the payment of revenue. In 1778 the Raja was required to pay for the maintenance of three battalions of sepoys, and in 1780 he was further required to pay for cavalry for the general service of the state. Chet Singh manifested great reluctance to meet these demands, and was also believed to be disaffected, and to be holding correspondence with the enemies of the British Government. He was accordingly arrested in August, 1781, by order of Warren Hastings, who had come to Benares; but his retainers collected and cut to pieces the troops guarding the Raja, and Hastings was compelled to withdraw to Chunar. A month later, when a sufficient force had been collected, the Rājā's strongholds were reduced, and Cher Singh fied to Gwalior, where he died in 1810. The zamindári was then granted to Mahip Nārāyan, a grandson of Balwant Singh, at an enhanced revenue; and the criminal administration of the province, as well as the civil and criminal administration of the city of Benares, together with control over the mint, were taken out of the new Rājā's hands. In 1787 Mr. Duncan, the Resident at Benares, called attention to the bad condition of the province, owing to maladministration, and was authorized to carry out a settlement of revenue with the actual landholders, and to institute other reforms. A formal agreement was concluded in 1794, by which the lands held by the Raja in his own right were separated from the rest of the province, of which he was simply administrator. The direct control of the latter was assumed by the Government, and an annual income of 1 lakh of rupees was assured to the Raia, while the former constituted the Domains. Within the Domains the Rājā has revenue powers similar to those of a Collector in the British District, which are delegated to

certain of his own officials. All civil cases which are in any way connected with land, and all rent cases arising within the Domains, are tried in the Raja's own courts. The Commissioner of the Benares Division is Superintendent of the Domains, and an appeal lies from all decisions of the Raja's courts to the Superintendent. The Deputy-Superintendent, who is a member of the Indian Civil Service stationed at Mirzāpur, exercises most of the powers of the Superintendent, subject to the control of the latter. Appeals lie from the Superintendent or Deputy-Superintendent to the Board of Revenue, which stands in the place of the High Court for such land suits as would be tried by the ordinary civil courts. The tenures in the Domains differ in some respects from those in ordinary British territory. Under-proprietors are called mansuridars or mukarraridars; the revenue payable by the former to the Raja is subject to revision at a settlement made under his orders, while the latter pay a fixed sum. The tenant rights resemble those of tenants at fixed rates and occupancy tenants in the neighbouring Districts; but the occupancy right is acquired after twenty years instead of twelve, and is transferable by sale, as well as heritable. The present Raja, Sir Prabhu Narayan Singh, G.C.I.E., who succeeded in 1889, holds the personal title of Mahārājā Bāhādur, and the privilege of being addressed by the title of 'Highness.' He is also authorized to possess eight cannon and maintain 700 armed retainers.

(Narrative of the Insurrection in the Zemeedary of Banaris, Calcutta, 1782, reprinted at Roorkee, 1853; A. Shakespear, Selections from the Duncan Records, Benares, 1873; F. Curwen, The Buhwuntnamah, Allahabad, 1875; H. B. Punnett, Manual

of the Family Domains, 1891.)

Benares City (Baniras, or Kasi).-Head-quarters of Benares District, with cantonment, United Provinces, situated in 25° 18' N. and 83° 1' E., on the left bank of the Ganges; distance by rail from Calcutta 479 miles, and from Bombay 941 miles. The city is the second largest in the United Provinces; but its population includes a large number of pilgrims and is liable to considerable fluctuations. The numbers at the four enumerations were as follows: 175,188 (1872), 214,758 (1881), 219,467 (1891), 209,331 (1901). In 1901 the population included 153,821 Hindus, 53,566 Musalmans, and about 1,200 Christians. The cantonment contained a population of 4,058, included in the figures already given.

The ancient name of the city of Benares was Vārānasi, the etymology of which is uncertain; its popular derivation from

History.

Varana (Barna) and Au, the names of the two small streams which confine the modern city, is, however, untenable. A more recent name, still commonly used by Hindus in all parts of India, is Kast or Kast, which is possibly taken from the name of a tribe of Aryas, though popularly explained as meaning 'bright.' In the eighteenth century the city was officially known as Muhammadabad. The great antiquity of Benares is attested by its mention in both the Mahābhārata and the Rāmayana; but details of its history are very scanty, and even the Purifras only record one dynasty of kings. It was close to Benarcs, in the deer-park which is identified with the country round Sarnath, that Gautama Buddha commenced to preach. In the seventh century A.D., Hitten Tsiang found the kingdom of Benares inhabited mostly by Hindus, and only a few followers of the law of Buddha. The city at that time contained twenty Hindu temples, with a girantic copper image of Siva, It is probable that Benares was sacked by Mahmud of Ghazni early in the eleventh century, and nearly 200 years later it fell into the hands of Muhammad Ghort. Throughout the Musalman period its political importance was slight, and the active cultivation of the Hindu religion was forcibly restrained. In the eighteenth century, as has been shown in the history of BENARES DISTRICT, the city and surrounding country gradually came under the Rājā of Benares, and finally in 1775 were ceded to the British.

Benares or Kasi is at the present time one of the holiest Descripplaces to the orthodox Hindu, and attracts great concourses of tion. pilgrims; while many of its inhabitants are persons who have settled there in the hope of salvation through a death within its sacred precincts. The native town lies for four miles along a kankar ridge on the north-west bank of the Ganges, which forms a slightly curved teach below it, thus permitting the eye to take in at a single sweep the long line of picturesque châts surmounted by irregular buildings of various styles and proportions, the slender white minarets of Aurangzeb's mosque rising high above the general level. For a distance of from one to two miles from the bank the city consists of winding labyrinths and narrow alleys, lined by many-storied buildings used as shops or private houses, with immunerable shrines in every part, ranging from a shapeless fragment of stone smeared with vermilion to magnificent temples. Raja Man Singh of Jaipur is said to have presented 100,000 temples to the city in a single day.

The ordinary throng of a large city is swollen by the

presence of strings of pilgrims being conducted from one to another of the more important shrines, and by the number of sacred bulls which wander about the streets. Along the ghits strange figures of religious mendicants and ascetics are to be seen, some superintending the ablutions of the pilgrims in the sacred stream of the Ganges, while others practise devotions or Balliflings, various forms of austerity. Within the city there are many handsome houses substantially built and elaborately decorated; but the narrow, dirty, and crowded environments usually disappoint the visitor, after the high expectations aroused by the view from the river. Even the temples are generally small, and are not more than a few hundred years old. From a religious point of view, the Bisheshwar or golden temple, dedicated to Siva, is the most important. Siva in the form of Bisheshwar is regarded as the spiritual monarch of the city, and this is the holiest of all the holy places in the sacred city. It contains the venerated symbol of the god, a plain lingam of uncarved stone. The building is not of striking dimensions and has no great pretensions to beauty, but is crowned by a dome and spire covered with copper, which was gilded at the cost of Mahārājā Ranjit Singh of Lahore. It was built by Ahalyā Bai, the Marāthā regent of Indore. Subordinate to Bisheshwar is Bhaironath, who acts as his minister and magistrate. The other temples to which pilgrims are specially directed are those of Bhaironath, and his staff or Dandpani, Ganesh or Dhundi Rāj, Vindumādhava or Vishnu, Durgā and Annpurna. These were chiefly built by Marathas during the seventeenth century, and are all comparatively small. The Durgă temple is, however, remarkable for its simple and graceful architecture, and is situated in the outskirts on the bank of a large tank. Along the river front the Dasishwamedh, Manikarnikā, and Panchgangā ghāts are the most esteemed. At the first of these Brahma is said to have performed ten horsesacrifices. Near the second is situated the famous well, which Vishnu dug with his discus and filled with his sweat, forming one of the chief attractions for pilgrims, thousands of whom annually bathe in the fetid water. The Panchganga ghat is so named from the belief that five rivers meet at it, but the Ganges alone is visible to the gross material eye. Raja Jai Singh's observatory, built in 1603, is a hundsome and substantial building overlooking the Man Mandir ghit. It includes a number of instruments which have been allowed to fall out of repair. Close by stands the Nepalese temple, which is ornamented by a series of obscene wooden carvings. The

huge mass of Aurangzeb's mosque, built from the remains of a temple, towers high above a steep cliff over the Panchganga ghat, and is the most conspicuous building in the city when seen from the river. Another mosque, also built on the remains of a temple of Bisbeshwar, stands close to the Gyan Bapt or 'well of knowledge,' where Siva is said to reside. The older buildings and remains are chiefly found in the north and west of the present city, and the ancient site appears to have been situated on both banks of the Barna. This stream flows into the Ganges about a mile beyond the present northern limit of the town. West of the city lies the suburb of Sigra. the seat of the chief missionary institutions. Northwards, the Sikraul cantonments and parade-ground stretch away to the bank of the Barna, which is here crossed by two bridges, of stone and iron respectively. The civil station, including the courts and Central jail, occupies the northern bank. The most noteworthy of the modern buildings are the Mint the Government College, the Prince of Wales's Hospital, built by the gentry of Benares in commemoration of the visit of His Majesty to the city in 1876, the police station, and the town hall, a fine building constructed at the expense of a Mahārājā of Vizianagram. Benares is the head-quarters of the Commissioner of the Division, who is also a Political Agent for the payment of certain pensions; of an Inspector of Schools, and of an Executive Engineer in the Roads and Buildings branch. It contains three male and three female bospitals, besides a lunaric asylum, a leper asylum, a poorhouse, and branches of the Church Missionary, London Mission, Baptist, and Wesleyan Societies. Some members of the ex-royal family of Delhi reside at Benares in a large building called the Shivala, which was once occupied by Chet Singh.

A municipality was constituted in 1868. During the ten Maneryears ending 1901 the income averaged 4.8 lakhs, and the pality.
expenditure 5.8 lakhs; the latter, however, included capital
expenditure on water-supply and drainage. In 1903—4, excluding a loan of 1.5 lakhs, the income was 4.7 lakhs, the
chief items being octroi (3 lakhs), water-rate (Rs. 83,000),
other taxes (Rs. 54,000), and rents (Rs. 30,000). The expenditure amounted to 6.4 lakhs, including repayment of loans
and interest (1.1 lakhs), water-supply and drainage (capital,
2-2 lakhs, and maintenance, Rs. 72,000), conservancy (Rs.
70,000), roads and buildings (Rs. 28,000), public safety
(Rs. 50,000), and administration and collection (Rs. 40,000).
An excellent system of water-works was constructed between

1890 and 1892, which has cost upwards of 26 lakhs. In 1903-4 the daily consumption of filtered water amounted to over 16 gallons per head of population, and there were more than 5,000 house-connexions. Water is pumped from the Ganges and filtered before use. An elaborate drainage scheme is still under construction, which is estimated to cost 15 lakhs. It includes a system of sewers, with house-connexions.

Canton-

The cantonment is usually garrisoned by British and native infantry. The receipts and expenditure of the cantonment fund during the ten years ending 1901 averaged Rs. 12,500. In 1903-4 the income was Rs. 12,700 and the expenditure Rs. 13,100.

Traile and manufactures.

The wealth of Benares depends largely upon the constant influx of pilgrims from every part of India, whose presence lends the same impetus to the local trade as that given to European watering-places by the season visitors. Some of the pilgrims are Rājās or other persons of importance, who bring considerable retinues, and become large benefactors to the various shrines and temples. Hindu princes of distant States pride themselves upon keeping up a 'town residence' in holy Kāsī. The city thus absorbs a large share of the agricultural produce of the District, and it also acts as a distributing centre. Its manufactures include ornamental brass-ware, silk, both plain and embroidered with gold and silver, jewellery, and lacquered wooden toys. The brass-ware has a considerable reputation among Europeans as well as natives. The trade in silk kamkhwib or kincob, woven with gold and silver, is decreasing as native taste inclines towards European fabrics, A good deal of German-silver work is now turned out in Benares, employing a number of workmen who formerly prepared gold and silver wire. This is perhaps the most flourishing industry of the place. The only factories are three ice works, two brickyards, two chemical works, and a few large printing presses.

Education.

The Benares College was opened in 1791, and the fine building in which it is now housed was completed in 1852. It is maintained by Government, and includes a first-grade college with 97 pupils in 1904, and a Sanskrit college with 427 pupils. The Central Hindu College, opened in 1898, is affiliated to the Allahabad University up to the B.A. standard. It contained 104 students in the college and 204 in the school department in 1904. It was founded largely through the efforts of non-Indian theosophists, and is intended to combine Hindu religious and ethical training, on an unsectarian basis,

with modern Western education. The missionary societies maintain a number of schools for both boys and girls; and the Church Missionary Society is in charge of Ini Nārāvan's collegiate school, which was founded by a Hindu, after whom it is called, in 1818, and presented to the Society. The same Society manages a normal school for female teachers. The municipality maintains fifteen schools and aids seven others, attended by more than 1, 700 pupils. Benares has produced a number of Hindu scholars and authors, and was the residence of the celebrated religious teachers Vallabhacharya, Kabir, and Tulst Das, and the nineteenth-century author and critic, Harish The Sanskrit college issues a periodical called The Pandit, dealing with Sanskrit learning, and a Society called the Nāgari Prachārini Sabhā has recently commenced the publication of ancient vernacular texts. A few newspapers are published, but none of importance.

(Rev. M. A. Sherring, The Sacred City of the Hindus, 1868.)

Ramnagar.-Town in the Chandault tahsit of Benares District, United Provinces, situated in 25° 16' N. and 83° 2' E., on the right bank of the Ganges nearly opposite Benares city. Population (1901), 10,882. The town owes its importance to its selection by Raja Balwant Singh of Benares as his residence. He built a massive fort rising directly from the river bank, which is still the palace of his descendants. His successor. Chet Singh, constructed a beautiful tank, and a fine temple richly adorned with curved stone. Two broad and well-kept roads cross at right angles from the centre of the town, and are lined with masonry shops and a few ornamental private buildings. The rest of the town consists of the usual mud houses. Rämnagar is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 2,500. There is a considerable trade in grain; and riding whips, wickerwork stools, and chairs are largely made. The public buildings include a school.

Sārnāth.—Ancient remains in the taksīl and District of Benares, United Provinces, situated in 25° 23' N. and 83° 2' E., about 3½ miles north of Benares city. The most imposing building is a large stone stieps, 93 feet in diameter at the base and 110 feet high above the surrounding ruins, which are themselves 18 feet above the general level of the country. The lower part has eight projecting faces, all but one of which are richly carved; the upper portion is built of bricks and was probably plastered. Half a mile away is another stieps composed of bricks, which is now surmounted by a tower with an

inscription recording its ascent by the emperor Humayun-The space between the two stupes is thickly strewn with brick and stone debris. Excavations have shown that these mins mark the site of a large monastery. In 1905 new inscriptions of Asoka and Kanishka were discovered. A Jain temple now stands close to the stone stupa, and a short distance away is a lake with a Hindu temple on its bank. Samath is identified with the Mrigadaya or deer-park, near which was situated the Isipattana monastery, and in which Gautama Buddha first preached his doctrines.

(Rev. M. A. Sherring, The Sacred City of the Hindus, chap, xviii.)

Bounand hill and styer systems.

Mirzāpur District.-District in the Benares Division of daries, con-the United Provinces, lying between 23° 52' and 25° 32' N. and 82° 7' and 83° 33' E., with an area of 5,238 square miles. It is bounded on the north by Jaunpur and Benares; on the east by the Bengal Districts of Shahabad and Palamau; on the south by the Surguja Tributary State and the State of Rewah; and on the west by Allahabad. The District of Mitzapur extends over a larger area than any other in the United Provinces, except those situated in the Himālayas, and exhibits a corresponding diversity of natural features. The northern portion, with an area of about 1,100 square miles, forms part of the Gangetic plain, extending on either bank of the great river. South of the Ganges the outer scarp of the Vindhyas forms an irregular rampart, sometimes advancing to the bank of the Ganges, and sometimes receding to ten miles or more away. The Vindhyan plateau stretches from the northern scarp for a distance of 30 or 40 miles to the Kaimurs, which look down on the valley of the Son. The eastern portion of the plateau forms part of the Benages. ESTATE, and a considerable area is set aside by the Mahārājā as a game preserve. The scenery in this tract is among the wildest and most beautiful in the District, and the portion where the hills meet the plains is especially picturesque. The Karamnāsā descends by a succession of falls, including two known as the Latifsah and Chhanpathar, which, from their heauty, are deserving of special notice. The tributary stream of the Chandraprabha leaves the plateau by a single cascade, called Deo Dhart, 400 feet in height, whence it passes through a gloomy and precipitous gorge, 7 miles long, over a huge masonry dam to the open country beyond.

After passing the crest of the Kaimur hills, a more rigged, imposing, and elevated range than the Vindhyas, an abrupt descent of 400 or 500 feet leads down into the vailey of the Son. The easiest pass is the Kiwai ghāt above Mārkundi on the Ahraurā-Chopan road. The basin of the river lies at the foot of the hills, with occasional stretches of alluvial land on either bank. South of the Son is a wilderness of parallel ridges of rocky hills, of no great height, but exceedingly rugged and clothed with stunted forest. Excepting a few level patches and valleys, and the large basin of Singrauli in the south-west and the smaller area round Dūdhi in the south, hills cover the whole area.

The two main rivers are the Ganges and Son, which flow from west to east across the northern and central portions of the District respectively. The east of the Vindhyan plateau is drained by the Karamnāsā and its tributaries, the Garai and Chandraprabbā, and the centre by the Jirgo and small streams, all of which flow from south to north. The drainage from the northern slopes of the Kaimurs, however, passes into the Belan, which has a course from east to west. South of the Son the chief rivers are the Rihand and Kanhar, which flow north to join that stream. There are few lakes or marahes, Samdha Tal, in the Korh tahūl, being the largest.

The District presents an unusual variety of geological forma-Geology.

tions. The northern portion is Gangetic alluvium, while the plateau which lies south of it consists of upper Vindhyan sandstone and shale. The lower Vindhyan series occupies the Son valley. It includes a compact limestone bed, 250 feet thick, with varying underlying beds of conglomerate, shale, carbonaceous beds, limestone, porcellanite, and glauconitic sandstones. On the south bank are beds of indurated highly siliceous volcanic ashes, while on the north limestones and shales belonging to the Kheinjua and Rohtas groups are found. The hilly tracts south of the Son consist of the Bijawar slates, quartzites, limestones, basic volcanic rocks, and hematitic jasper. In the extreme south are found gneiss and the Gondwärna beds of shale, sandstone, and boulders. On the southwest border adjoining the Rewah State are the remains of an exhausted coal-mine.

The flora of the Gangetic valley presents no peculiarities. Botany. The area north of the river is well wooded, while trees become scantier as the hills on the south are approached. The eastern portion of the plateau has extensive areas of low jungle; but timber attains an average growth only in the remoter portions and in the game preserves. South of the Son the principal

^{*} Records of Geological Survey of India, vols. v and vi; Memoirs of Geological Survey of India, vols. vii and xxxi.

jungles are composed of salai (Boswellia thurifers), mixed with thorns and a few dwarfed trees. Sal (Shorea robusta) is found in the hollows, and khuir (Acada Catechu) is common. In the extreme south the sal is of better quality, but no forest land is 'reserved.'

Fame.

Tigers are occasionally found in the preserves of Chakia, and are more common over the whole tract south of the Son. They are also met with in the gorges of the Kaimurs near the Rewah boundary and in parts of the plateau. Leopards are found over the whole District south of the Ganges. The hyena, wolf, jackal, and fox are common, and packs of wild dogs hunt the southern jungle. The sloth bear is found on the Vindhyan plateau and in the Kaimurs. In the Ganges valley are found antelope, ravine-deer, and nilgal; while sambar and chital are common in the preserves, and the four-horned antelope is met with occasionally. As a rule game birds are scarce, aquatic species particularly so. Fish are common in the Ganges, and are largely caught. Mahacer are found in the Son and Belan.

Climate and temperature, The temperature of Mirzāpur is subject to smaller extremes than in the Districts farther west. The greatest heat is less, except where bare rock is found, and the cold weather is also less marked. The climate is unhealthy at the commencement of the hot weather and also at the end of the rains.

Rainfall.

The average annual rainfall is about 41 inches, varying from 38 at Korh, north of the Ganges, to 45 at Robertsganj on the plateau.

History.

The early history of the greater part of the District is unknown, as no records exist of the rule of the aboriginal tribes, and their traditions are vague and unreliable. Bhars once held the Ganges valley, and had a city near the present site of Bindhachal, Eastward from Chunar the country was held by the Cherüs. The Soeris, who are now almost extinct, were formerly powerful. In the south of the District the Kols and Kharwars ruled in the forests. About the end of the twelfth century Raiput clans seized the whole District. Portions of the Gangetic valley fell into the lumds of the Musalmans a few years later; but little is heard of the District till the sixteenth century, when Chunas became an important post in the wars between Humayun and Sher Shah. The fort was held by the Pathans for some time after the accession of Akbar. In the eightcenth century this area was included in the territory granted to the Nawab of Oudh. In 1738 the governor of the sarkars of Benares, Jaunpur, Ghāzīpur, and Chunar fell into disfavour and was replaced by Mansa

Rām, who had been in his employment. Mansā Rām was succeeded by his son, Balwant Singh, Raja of Benares, who rapidly extended his possessions and acquired the whole of the present District, except the fort at Chuntir. At his death in 1770 the British compelled the Nawab to recognize the succession of Chet Singh, an illegitimate son of Balwant Singh. In 1775 the Nawah ceded sovereign rights to the British, who confirmed Chet Singh in full civil and criminal powers subject to the payment of a fixed revenue. Chet Singh refused certain demands made by Warren Hastings in 1871, and an attempt to arrest him led to an imeute at Benares. Hastings, who had come to Benares, had to fly to Chunar and collect troops, who defeated Chet Singh's forces at Sikhar Patita and Lattipur. Chet Singh took refuge in Bijaigarh, his stronghold on the Kaimurs, but again fied on the approach of the British. His estates were then conferred on Mahip Nărăyan, a nephew of Balwant Singh. In 1788, owing to his misgovernment, Mahip Nārītyan's private estates, comprising Korh and Chakis, were separated from the rest of the District, which was brought under the ordinary administration. Its history is thenceforth a blank till the date of the Mutiny in 1857.

At first only a Sikh guant had charge of the treasury at Mirzapur; but after the outbreaks at Benares on the 1st and at Jaunpur on the 5th of June, Colonel Pott arrived with part of the 47th Native Infantry. The Sikhs were called into Allahabad on the 8th; and next day, strong rumours of intended attacks by the rebels being current, all the officers, except Mr. Tucker, retired to Chunar. On the 10th Mr. Tucker attacked and defeated the insurgents; and on the 13th a detachment of the 1st Madras Fusiliers arrived at Mirzāpur, and destroyed Gaura, a stronghold of the river dacoits. In Bhadohi pargana, Adwant Singh, head of the Thakurs, rebelled, but was captured and hanged. The Thakurs vowed vengeance, attacked Mr. Moore, Deputy-Superintendent of the Domains, at Pall factory, and on July 4 murdered him together with two planters, while endeavouring to make their escape. On June 26 the Bändä and Fatehpur fugitives arrived and passed on to Allahabad. On August 11 the Dinapore mutineers entered the District, but were put to flight by three companies of the 5th Fusiliers, and left Mirzāpur at once. Kuar Singh, the rebel samindar of Shahabad District, made an incursion on September 8 after his defeat at Arrah, but the people compelled him to pass on to Banda. On September 16, when the 50th Native Infantry

mutinied at Nägod, the officers and 200 faithful men marched through Rewah to Mirzāpur. In January, 1858, Mr. Tucker led an expedition against Bijaigarh, drove the rebela across the Son, and re-established order, which was not again disturbed.

Archaeology. Some interesting cave-dwellings have been discovered on the scarp of the Kaimurs, the walls of which are occasionally adorned with rude drawings of the chase, while atone implements have been found on the floors?. Curious atone images of bearded men, supposed to be relics of Bhar rule, are found in the north of the District. An interesting inscription of Lakhana Deva of Kanauj, dated in 1796, was dug up near Ahraura. The most striking memorials of Muhammadan rule occur in the great fort of Chunar, and the remains of rulned eastles exist at various places on the Kaimurs.

The people.

Mirzāpur contains 7 towns and 4,257 villages. Population increased from 1872 to 1891, but the famine of 1896-7 enused a decrease in the next decade. The numbers at the four enumerations were as follows: 1,015,826 (1872), 1,136,796 (1881), 1,161,508 (1891), 1,082,430 (1901). There are five tubsils—Mirzāpur, Chunār, Robertsganj, Korh, and Charlà—each named from its head-quarters. The principal towns are the numicipality of Mirzāpur, the District head-quarters, which includes Bindhāchal, and the 'notified area' of Chunăr. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takid. | Area in spare | Towns Name | ther of | Population. | Population per aquare min. | Parentage of sprinted in population be twen that | Number of persons able to read and write. |
|----------------|---------------|------------|---------|-------------|-------------------------------|---|--|
| Mirelpur . | 1,185 | 2 | 964 | 332,340 | 181 | - 10-7 | 14,980 |
| Chunăr | 362 | .3 | \$80 | 176,531 | 374 | - 49 | 7,615 |
| Robertsgan | 2,621 | 12 | 1,227 | 331,717 | 85 | - 8-3 | 4,408 |
| Kork . | 396 | 1 | 1,076 | \$85,240 | 720 | - 11 | 9,662 |
| Chakiā . | 474 | 122 | 415 | 66,601 | 141 | ÷ 61 | 2,054 |
| District total | 3,438 | 7 | 4,757 | 1,081,430 | 207 | - 6-8 | 28,725 |

Of the total population 93 per cent, are Hindus, and nearly 7 per cent. Musalmans. North of the Ganges the density of population is very high; but the large area of jungle and rock in the centre and south of the District reduces the density

Journal, Asiatic Society of Bengul, pt. iii, 1894, p. 21; Jearmil, Royal Asiatic Society, 1899, p. 89.

elsewhere, and the Robertsgunj taksil is one of the most thinly populated tracts in the Provinces. The boundary between the tracts where Eastern Hindt and Bihari are spoken passes through the north of the District; but Eastern Hindl is the prevailing speech south of the Son. Bihāri is spoken by about 63 per cent. of the population, and Eastern Hindl by 36 per cent. The aboriginal tribes have largely given up their own tongues.

The principal Hindu castes are: Brahmans, 153,000; Castes and Chamars (leather-workers and cultivators), 134,000; Ahirs occupa-(graziers), 102,000; Kurmis (agriculturists), 64,000; Răjputs, 42,000; Kewats (cultivators), 40,000; and Koirts (cultivators), The District also contains a number of aboriginal tribes similar to those of Chota Nagpur and Central India, the most important of which are the Kols, 27,000; Majhwars, 21,000; Kharwars, 15,000; Bayars, 12,000; and Cherns, 6,000. These are rapidly becoming Hinduized. Among Muhammadans the largest tribes and castes are: Julishās (weavers), 20,000; Shaikhs, 13,000; Behnüs (cotton-carders), 9,000; and Pathins, 2,000. The high proportion of 71 per cent, of the total population are supported by agriculture, and only 4 per cent, by general labour,

Out of 413 native Christians in 1901, Congregationalists Christian numbered 254 and members of the Anglican communion 02. missions. The London Mission commenced work at Mirzapur in 1837 and at Düdhl in 1862. In 1807 a hospital and dispensary were founded at Kachhwa. The Church Missionary Society has a small branch at Chunër.

The soils and consequently the agricultural conditions of the General District present many diversities. In the Gangetic plain the agriculusual loam and sandy and clayey soils are found, the first ditions, variety preponderating, and this area produces the ordinary crops-rice, gram, wheat, barley, and the millets. On the Vindhyan plateau the soil is a stiff and shallow red clay, giving only scanty crops, with generally two fallows intervening. Kodon, a small millet, is the chief crop grown here. A remarkable strip of fertile country, however, stretches across the District between the Belan and the base of the Kaimurs. The western portion, like the rest of the plateau, suffers from the lack of facilities for irrigation; but in the east the water-level rises, and large quantities of rice are grown, while even sugarcane and poppy succeed. The broad valley of the Son has a light sandy soil. In the tract south of this river cultivation is practically confined to four places, the Son, Kon, Dildhl, and Singraulf valleys. Rice, kodon and other millets, wheat, and

oilseeds are the principal crops grown here. Cultivation is largely fluctuating, and, excluding fields round the homesteads, lands are only cultivated once in three years. The custom of firing the jungle borders to obtain fertile land is still practised.

Chief agricultural statistics

The tahuls of Korh and Chakin form part of the BENARES ESTATE, and the former includes a number of villages owned and crops, by sub-proprietors called mansuridars or mukarraridars. Excluding a few large estates held by single persons, in some of which sub-proprietary rights exist, and pargana Dudhit, the prevailing tenure is the ordinary pattidari. The Düdhi pargama is almost entirely managed as a Government estate. and proprietary rights exist only in a small portion. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles:--

| Tukst | Total | Cahivares. | Irrigated. | Cultivable waste. | |
|-------------|-------|------------|------------|----------------------|--|
| Mimipur | 1,185 | 429 | 45 | 413 | |
| Chusir. | 362 | 242 | 36 | 153 | |
| Robertagani | 3,621 | 255* | 37.0 | 225* | |
| Korh | 396 | 250 | 112 | 38 | |
| Chakii | 4741 | 100 | 27 | 24 | |
| Total | 5,238 | 1,485 | 347 | 853 | |

" These figures exclude the unsurveyed area south of the Son.

† Agricultural statistics acadlable for only 160 square miles.

The principal food-crops, with their areas in the same year, were rice (163 square miles), gram (169), kodon (161), wheat (113), and barley (109). Bajra, jowar, and mains are also grown. Oilseeds (grown on 118 square miles), sugar-cane (10), and poppy (3), are of some importance.

Improvements in surriculturnl practice.

The system of crop records has only recently been introduced into the permanently settled Districts, and it is impossible to say whether cultivation is progressing or not, and what changes are taking place in agricultural methods. The changes, if any, have not been sufficiently important to attract attention, Advances are rarely made under the Land Improvement Loans Act, and only small amounts have been lent under the Agriculturists' Loans Act, amounting to Rs. 82,000 during the ten years ending 1900, of which Rs. 51,000 was advanced in 1895-7-

Cattle. ponies, and sheep.

The cattle bred locally are very inferior, and animals are imported from Bihār for the plough, from the Districts north of the Gogra for other agricultural work, and from Surguja for

use as pack-animals. The huffaloes of the District are of a better stamp, and supply milk and are used for hauling stone. Ponies are very inferior; sheep and goats are largely kept, but

no particular breeds are recognized.

Excluding the Benares Domains, 108 square miles were tragation. irrigated in 1903-4, of which 56 were irrigated from wells, 31 from tanks or jails, and 22 from other sources. The Gangetie valley is supplied chiefly by wells and jhils. On the plateau wells are almost unknown except in the fertile strip below the Kaimurs. Tanks and embankments are the usual means for the storage and supply of water here, and are extensively used for rice cultivation. The artificial lakes at Karsota on the plateau and Gaharwargaon south of the Son are the most important of these works. South of the Son the number of embankments approaches 900; but increased facilities for water-supply are still needed. The rivers are rarely used for irrigation; and there is only one small canal, made about 1820 by the Rain of Benares, which supplies water from the Chandraprabha.

The most important mineral product is building stone, Minerals which is largely quarried in the north of the District, and exported as far as Calcuma. Millstones, curry-stones, houndary pillars, and fencing posts are also made. The quarries are Government property and a royalty is levied, which yields about a lakh annually. Iron ore is found in places and a little is worked by the aboriginal tribes for local use. Coal was formerly extracted south of the Son and carried on pack bullocks to the river steamers at Mirzāpur, and as recently as 1896 an unsuccessful attempt was made to work it again.

Mica and iron pyrites are also found, but are not used.

The District generally has few arts or industries, excluding Arts and those of the city of Mirzāpur. Cane sugar is produced north manufacof the Ganges, and palm sugar near Chunar. Iron vessels are tures. made at Kachlwa, lacquered wooden toys at Ahmura, and an inferior art pottery at Chunăr. The manufacture of indigo and weaving of hear silk, which were formerly of some importance, have dwindled considerably; but the silkworm is still bred, and wild silk is also collected. South of the Son catechn is extracted in most villages. Miralpur city is one of the most important centres of brass manufactures in the United Provinces. It also contains large industries turning out shellac, lacdye, and woollen carpets, besides a cotton spinning mill.

The District exports stone, shellac, catechu, and other jungle Commerce. produce, carpets, brass and iron utensils, grain, g/ii, oilseeds, spices (chiefly betel), and raw silk; and imports brass, iron and

copper, sait, cotton, and piece-goods. The chief channel for trade is now the railway, the Ganges being little used, except for the carriage of stone and fuel. Trade between the north and south of the District is carried entirely on pack-bullocks, and is decreasing owing to the establishment of markets outside the border. Mirzāpur, Kachhwā, and Abraurā are the chief trading centres, while Chunār railway station is an important place for the export of stone.

Railways and roads. The main line of the East Indian Railway passes through the District a little distance south of the Ganges, and the Oudh and Rohilkhand crosses the extreme north. There are 1,025 miles of road, of which 148 are metalled. The latter are maintained by the Public Works department, but the cost of all but 69 miles is met from Local funds. The main lines are the grand trunk road north of the Ganges, with branches from Mirzāpur city to several points on it, the great Decoan road, the road from Mirzāpur to Jaunpur, and the roads from Mirzāpur and Chunār to the south of the District. Avenues of trees are maintained on 123 miles.

Famine.

Local tradition tells of serious suffering in the northern parts of Mirzāpur during the great famine of 1783; but the District has usually escaped the worst degrees of famine. In 1864 and 1865 the rains were scanty and most of the rice crop perished, and revenue was freely suspended. In 1868 drought again caused distress, which deepened into famine in the southern part, though rain in September saved some of the late crops. Relief works were opened early in 1869, and provided work for all who came; but the forest tribes remained in their jungles, living on forest produce. A series of bad sensons caused distress in 1873, when nearly 44,000 head of cattle were lost owing to the failure of fodder and water, and small relief works were necessary. The great scarcity of 1877-8 was only slightly felt in this District. In 1896, however, the rainfall was short for the second year in succession, and the late rice and the following spring crops were lost. The Vindhyan plateau and the tract south of the Son suffered most severely; but some distress was also felt in the area between the Ganges and the plateau. North of the river the high prices were the only inconvenience to the people. By June, 1897, there were 48,000 persons on relief works and 23,000 in poorhouses or receiving gratuitous relief. The Maharaja of Benares spent 1-8 lakhs on relief in his estates.

District staff. The Collector is usually assisted by a member of the Indian Civil Service, and by three Deputy-Collectors recruited in India. The Deputy-Superintendent of the Family Domains of the Maharaja of Benares (see Benares Estate) has his head-quarters at Mirzapur, a takutldar is stationed at the headquarters of each taksil, and there are two officers of the Opium department in the District.

Civil justice is in the hands of a Munsif, a Sub-Judge, and Civil the District Judge, the latter being also Sessions Judge. In justice and the two tahsils of the Benares Estate all civil cases which are in any way connected with land, and all rent and revenue cases, are tried by the Mahārājā's courts with an appeal to the Deputy-Superintendent. The tract south of the Son is a separate non-regulation area, in which the taksildar of Robertsganl and the Collector and his Assistants have civil powers. Crime is

light, especially in the jungle tracts.

followed by the preparation of a record-of-rights. The District was again surveyed between 1879 and 1882; and the old record-of-rights, which had been of an imperfect nature and had never been corrected, was thoroughly revised for the area included in the Gangetic valley. In the two taktils belonging to the BENARES ESTATE the Mahārājā makes his own settlement with the subordinate proprietors. Pargana Dudhi was for many years entirely overlooked by the British administrators, and it thus escaped the permanent settlement. The Raja of Singraull usurped the whole pargana, and complaints against his misgovernment led to its inspection in 1847. A formal inquiry was held, and it was declared to be the property of Government. A settlement was made in 1849-56, which was revised in 1871-5, 1886-7, and 1897-8. Proprietary rights in

this pargana do not exist except in tappa Gonda Bajia, and the assessment is based on the number of ploughs maintained by the cultivators. The area estimated to be cultivated by each plough is fixed, and the rates per plough vary in different villages. The village headmen or sapurdars receive concessions for their own cultivation, and also a percentage on collections. The collections on account of land revenue and revenue from

| | attions: | ifign-t. | 1990-0 | 1992-4- |
|-----------------|----------|----------|--------|---------|
| Land revenue . | 8,45 | 8,85 | 9,65 | 8,44 |
| Total revenue . | 11,71 | 14,90 | 16,18 | 16,70 |

all sources have been, in thousands of rupees :-

Up to 1830 Mirzāpur formed part of BENARES DISTRICT, Land and most of it was thus permanently settled by 1795. A sur-revenue vey was carried out between 1839 and 1841, which was tration. Local selfgovernment. The towns include one municipality, MIRZĀPUR, one 'notified area,' Chunār, and four places administered under Act XX of 1856. The District board administers local affairs beyond the limits of these. In 1903-4 the board had an income of 1-2 lakhs, chiefly derived from local rates, a contribution from Provincial revenues, and ferries; while the expenditure was 1'3 lakhs, including Rs. 55,000 spent on roads and buildings.

Police and juils.

The District Superintendent of police has a force of 4 inspectors, 101 subordinate officers, and 1,446 constables distributed in 26 police stations, besides 195 municipal and town police, and 1,500 rural and road police. In 1903 the District jail contained a daily average of 230 inmates. The Provincial reformatory is now located in the fort at Chunăr.

Education.

Mirzipur District takes a fairly high place as regards the literacy of its population, of whom 3-6 per cent. (7 males and 0-3 females) could read and write in 1901. The number of public schools rose from 144 with 4,724 pupils in 1880-1 to 231 with 9,334 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 197 such schools with 7,914 pupils, including 291 girls, besides 55 private schools with 1,560 pupils, of whom 168 were girls. Only 1,941 pupils in both descriptions of schools were receiving secondary education. Four of the public schools are managed by Government and 115 by the District or municipal boards. Out of a total expenditure on education in 1903-4 of Rs. 91,000, Local funds supplied Rs. 47,000, and fees Rs. 8,000.

Hospitals and dispensaries. There are 11 hospitals and dispensaries, with accommodation for 75 in-patients. In 1903 the number of cases treated was 102,000, including 1,200 in patients, and 7,800 operations were performed. The total expenditure was Rs. 24,000, chiefly met from Local funds.

Vancina-

About 34,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, representing a proportion of 31 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipality.

(A. Shakespear, Selections from the Duncan Records, Benares, 1873; District Gazetteer, 1883 [under revision]; G. Dale, Recusion of Records in the Gangetic Valley, Mirzopur District, 1887; W. Crooke and G. R. Dampier, A Note on the Tract of Country South of the River Son, Mirzopur District, 1894.)

Mirzāpur Tahsīl.—Western tahsil of Mirzāpur District, United Provinces, comprising the tappas of Upraudh, Chaurāst, Chhiyānve, and Kon of parguna Kantit, and talaku Majhwā of pargana Kaswār, and lying between 24° 36' and 25° 17' N.

and 82° 7' and 82° 50' E., with an area of 1,185 square miles. Population fell from 372,015 in 1801 to 332,340 in 1901, the rate of decrease being the largest in the District. There are 964 villages and two towns, including MIRZAPUR, the District and takiil head-quarters (population, 20,862). The demand for land revenue in 1003-4 was Rs. 1,21,000, and for cesses Rs. 68,000. The density of population, 281 persons per square mile, is above the District average. Most of the tahril is situated south of the Ganges, which forms part of the northern boundary and then cuts off a small portion on the north. The greater part of it is thus situated on the Vindhyan plateau, the southern portion of which is drained by the Belan. In the extreme south-west the Kaimurs rise abruptly from the plateau. The area under cultivation in 1903-4 was 429 square miles, of which 45 were irrigated. Wells are the chief source of supply.

Chunar Tahsil, Tahsil of Mirzapur District, United Provinces, comprising the parganas of Bhagwat, Karyat Sikhar, Altraurii, Chuniir, Bhuilt, and taluka Saktesgarh of pargana Kantit, and lying between 24° 47' and 25' 15' N. and 82° 42' and 83° 12' E., with an area of 562 square miles. Population fell from 185,582 in 1891 to 176,532 in 1901. There are 580 villages and two towns: AHRAURA (population, 11,328) and CHUNAR, the taksil head-quarters (0,026). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,87,000, and for cesses Rs. 45,000. The density of population, 314 persons per square mile, is considerably above the District average. The Ganges divides the pargana of Kuryat Sikhar on the north from the rest of the takil, which stretches away south to the middle of the Vindhyan plateau. In the west the scarp of the Vindhyas reaches almost to the Ganges, and scattered hills are found on the bank of that river; but in the east lies a broader stretch of level land. The Jirgo rises in the south of the takili, and flows north to join the great river near Chunar. The area under cultivation in 1903-4 was 242 square miles, of which 36 were irrigated. Wells supply more than half the irrigated area, and tanks most of the remainder.

Robertsganj.—Southern tahsil of Mirappur District, United Provinces, comprising the pargusar of Barhar, Bijaigarh, Agori, and Singmuli including Dudhi, and lying between 23 52' and 24' 54' N. and 82° 32' and 83° 33' E., with an area of 2,621 square miles. Population fell from 241,779 in 1891 to 221,717 in 1901. There are 1,222 villages and two towns, neither of which has a population of 5,000. The demand for land

revenue in 1903-4 was Rs. 64,000, and for cesses Rs. 24,000-This taksil is situated entirely in the hilly country, and supports only 85 persons per square mile. About one-third of it lies in the Vindhyan plateau, which is drained to the west by the Belan, and is bounded on the south by the great rampart of the Kuimurs looking down on the valley of the Son. A fertile strip of moist land crosses the plateau between the Belan and the Kaimurs, and produces a great variety of crops. South of the Son lies a tangled mass of hills, covered with low scrub jungle, and interspersed by more fertile valleys and basins, in which cultivation is possible. Pargana Dudht is managed as a Government estate, and proprietary rights exist in only one tabba. The whole tract south of the Son is non-regulation, and is administered under special rules suitable to the primitive character of its inhabitants. Agricultural statistics are maintained only for an area of 654 square miles, of which 255 were under cultivation in 1903-4, and 27 were irrigated. Dams and embankments are the chief means of irrigation.

Korh (or Bhadohi) .- North-western tahsil of Mirzapur District, United Provinces, conterminous with parguna Bhadohi, lying between 25° 9' and 25° 32' N. and 82° 14' and 82° 45' E., with an area of 396 square miles. Population fell from 291,218 in 1891 to 285,240 in 1901, the rate of decrease being the lowest in the District. There are 1,076 villages and one town, Gopiganj (population, 4,005). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,73,000, and for cesses Rs. 12,000. Korh lies entirely north of the Ganges and is very thickly populated, the density being 720 persons per square mile. Its northern boundary is formed by the Barna river. The tahsil forms part of the BENARES ESTATE, and is a uniform plain, highly cultivated and well wooded, with but little waste or jungle. The area under cultivation in 1903-4 was 250 square miles, of which 112 were irrigated, almost entirely from wells,

Chakiā.—North-eastern tahsil of Mirzāpur District, Umited Provinces, belonging to the Benares Estate and conterminous with pargana Kerā Mangraur, and lying between 24° 56' and 25° 15' N. and 83° 13' and 83° 25' E., with an area of 474 square miles. Population fell from 70,914 in 1891 to 66,601 in 1901. There are 415 villages, but no town. The density of population, 141 persons per square mile, is below the District average. Chakiā stretches from the Gangetic valley to the centre of the Vindhyan plateau, and the greater part lies on the latter. The northern portion is a fertile level plain pro-

ducing rice; but the plateau is a waste expanse of hill and jungle, most of which forms a game preserve. The southern portion is usually known as the Naugarh taluka. The Karan-wasa and its tributary the Chandraprabha drain the takail, flowing from south to north. Agricultural records are maintained for only 160 square miles, of which 109 were under cultivation in 1903-4, and 27 square miles were irrigated, almost entirely from wells. The whole takail is held free of revenue.

Ahraura. - Town in the Chunar taksii of Mirzapur District, United Provinces, situated in 25° 1' N. and 83° 3' E., 12 miles south-east of Chunir. Population (1901), 11,328. Ahraura was formerly an important trade centre, being the most southerly limit of cart traffic on the road from the railway to the south of the District and to Surguill State. Besides the through trade, which has fallen off owing to the establishment of other markets, there are local industries in sugar-making and the manufacture of lacquered toys. Taxar or wild silk was formerly woven here; but this industry is almost extinct, though silk thread is still made. The town contains a dispensary and two schools. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 4,000. A short distance away, in the village of Belkhara, is an inscription of Lakhana Deva, the last king of Kanauj, which, though dated in 1106, completely ignores the conquest by the Muhammadans a few years earlier !.

Chunar Town.-Head-quarters of the tahsil of the same name, in Mirzapur District, United Provinces, situated in 25° 7' N. and 82° 54' E., on the right bank of the Ganges and on the East Indian Railway, Population (1901), 0,926. Tradition assigns a high antiquity to the fort of Chunar. Bhartrinath, brother of the half-historic Vikramaditya of Ujjain, is said to have chosen this solitary wooded rock overhanging the Ganges as the site of his hermitage. In the early Muhammudan period a Hindu, named Prithwi Rājā, possessed the fortress, and after his death it was seized by the Musalmans. A mutilated slab over the gateway, however, commemorates its recovery from the invaders. It again fell into the hands of the Muhammadans, though the actual command of the fort remained in the hands of the Bahelias till it became British. Sher Khan Sur, afterwards Sher Shah, obtained Chunar by marriage with the daughter of a local chief; and in the struggles between Pathan and Mughal the fort was of great importance as the key to

¹ Cunningham, Archaeological Survey Reports, vol. zi, p. 128.

Bengal and Bihār. It was captured by Humdyūn in 1537. and recaptured shortly after by Sher Shah. In 1575 Akbar's armies took the place, which remained in the power of the Mughals till the eighteenth century, when it fell into the hands of the Nawah of Oudh. The British troops under Major Munro attacked it without success in 1763; but it came into our possession after the battle of Buxar in the following year, After Raja Chet Singh's outbreak in 1781, Warren Hastings retired to Chunăr, where a force was collected under Major Popham, which expelled Chet Singh from his strongholds in the neighbourhood. Hastings was fond of the situation and climate of Chunăr, and his residence is still standing. The fort was used for some time as a place of confinement for state prisoners, and was parrisoned up to 1800. The Provincial reformatory for juvenile offenders in the United Provinces is now located here.

The fort is built on an outlier of the Vindhyan range, a sandstone rock jutting into the Ganges and deflecting the river to the north. It lies nearly north and south, Soo yards long, 133 to 300 broad, and 80 to 175 feet above the level of the surrounding country. The circumference of the walls is about 2,400 yards. The present fortifications were for the most part constructed by the Musalmans, apparently from materials obtained by pulling down still older Hindu buildings. The town fies immediately north of the fort in the angle between the Jirgo and the Ganges, and contains a dispensary and a branch of the Church Missionary Society. Close by is the tomb of Shah Kasim Sulaimani, a saint whose piety was clearly established, when he was carried prisoner to Deihi, by his fetters dropping off each evening at the time of prayer. His cap and turban are still shown at his tomb, and when gently rubbed by one of his disciples pour out a divine influence1.

Chunăr was a municipality from 1868 to 1904, and during the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged about Rs. 7,000. The income in 1903-4 was Rs. 13,000, chiefly derived from octroi (Rs. 8,000), and the expenditure was Rs. 12,000. Its constitution has now been changed to that of a 'notified area.' The town has little trade, but some inferior art pottery with debased European patterns is produced here. There is a takrili school, and the municipality aids three schools attended by 246 pupils.

Mirzapur City.—Head-quarters of Mirzapur District, United Provinces, situated in 25° 9' N. and 82° 35' E., on the Crooke, Popular Beligion of Northern Imita, p. 118. right bank of the Ganges, and on the East Indian Railway, 509 miles from Calcutta and 891 from Bombay, and connected by short branches with the grand trunk road. The population (including Bindhāchal) has fluctuated considerably. The numbers at the four enumerations were as follows: 67,274 (1872), 85,362 (1881), 84,130 (1891), 79,862 (1901).

The earliest mention of Mirrapur is by Tieffenthaler between 176c and 1770, who refers to it as a mart on the Ganges. Its importance increased rapidly towards the close of the eighteenth century, and during the first half of the nineteenth century it was the most important trading centre in Upper India. Although the District was not separated from Benares till 1830, the town became the head-quarters of a Judge-Magistrate as early as 1788, and contained an important custom-house. The cotton of the Deccan and Central India was brought here on pack-bullocks and the grain of the Doab in country boats, to be carried by river to Calcutta; while sugar, piece-goods, and metals were brought up stream for distribution. As the trade of the place depended largely on its position at the highest point on the Ganges reached by large steamers, the opening of the East Indian Railway as far as the Jumna opposite Allahabad in 1864 marked the first step in its decline. The town has a handsome river-front lined with stone ghats or landingplaces, and possesses mimerous mosques, temples, and dwellinghouses of the wealthier merchants, with highly decousted façades and richly carved balconies and door frames. The civil station stretches eastwards along the river. It is the headquarters of the usual District staff, of the Deputy-Superintendent of the Family Domains (BENARES ESTATE), of two Opium officers, and also of the London Mission. There are male and female hospitals and a town hall, besides the usual public offices. Mirzipur has been a municipality since 1867. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged about Rs. 62,000. In 1903-4 the income was Rs. 83,000, chiefly derived from octroi (Rs. 69,000); and the expenditure was Rs. 67,000, including conservancy (Rs. 19,000), public safety (Rs. 12,000), administration and collection (Rs. 11,000), and public works (Rs. 10,000). A drainage scheme to cost 3:2 lakhs has recently been undertaken. The small town of Bindhāchal, a few miles south-west of the city, is included within. municipal limits. It contains the celebrated shrine of Vindhyeshwari or Vindhyahāsini, which is armually visited by large crowds of pilgrims from Central and Southern India. In former years the goddess was especially venerated by the Thagu-

(thugs). Close to Bindhāchal are found extensive ruins believed to be those of Pampapura, the ancient city of the Bhars. Bindhāchal contains a dispensary. While Mirzāpur no longer holds its former importance as a centre of commerce, it still absorbs the greater part of the trade of the District. It is also the seat of the largest brass industry in the United Provinces, as far as the production of domestic vessels is concerned. There are eighty factories for the preparation of shellae from stick lac found in the jungles of the south of the District or imported, which give employment to about 4,000 workmen. Mirripur is celebrated for the woollen carpets produced here, and six of the largest factories employ 700 to 800 hands. There is also a cotton-spinning mill, which employed 560 workers in 1903. The principal schools are the ordinary District and town schools, and a school and orphanage supported by the London Mission; the municipality maintains six and aids fifteen other schools, attended by 881 pupils,

Bounfiguration, and river system.

Jaunpur District.-North-western District of the Benares daries, con- Division, United Provinces, lying between 25° 24' and 26' 12' N. and between 82° 7' and 83° 5' E., with an area of 1,551 square miles. In shape it is an irregular triangle, with the southern boundary as base, and the eastern and western boundaries running up to a blunt apex in the north. The boundaries are formed-on the south by Allahabad, Mirzapur, and Benares: on the east by Ghāzīpur and Azamgarh; on the north by Sultanpur; and on the west by Sultanpur and Partabgarh, Jaunpur District forms part of the Gangetic plain, but is slightly irregular in contour, with a series of undulating stopes. This apparent diversity of surface is increased by the occurrence of lofty mounds often covered with groves, which mark the sites of ruined or deserted towns, the relics of a forgotten race, or the demolished forts of the modern inhabitants. The entire area is very highly cultivated, and the village sites are small and scattered about at short intervals. While the country is well wooded, the trees are seldom planted together in groves. The District is divided into two unequal parts by the sinuous channel of the Gumti, a tributary of the Ganges, which flows past the capital city, and cuts off one-third of the area to the north-east. It is a considerable river and is crossed by a fine old stone bridge at Jaunpur, and by a railway bridge two miles lower down. The Gumti is liable to great and sudden floods. While its ordinary rise seldom exceeds 15 feet, it rose 23% feet in fourteen days in September, 1871, and was 37 feet above its dry-season level. There are no streams of importance north of

the Gunti; but it receives the Sai from the south, and a amaller affluent, called the Pili Nadi. The Barna divides Mirzāpur from Jaunpur and has a small tributary, called the Basthi.

Jaunpur exposes nothing but Gangetic alluvium, in which Geology. kankar or calcareous limestone and saline efforescences are the only minerals found.

The flora of the District does not differ from that of the Botany. Gangetic plain generally. The mango, mahua, shishum (Dalbergia Sissee), various figs, and the babiil (Acacia arabica) are the commonest trees. A weed called rasni or baisurai (Pluchea lanceolata), which grows in light soil, is of some hindrance to cultivation.

Owing to the density of the population and the absence of Faana. forests or waste lands, wild animals are scarce, and include only a few wolves in the ravines of the Gumti and Sai, an occasional wilgai, and small animals. Geese, duck, and quall are the commonest wild-fowl, and fish are found abundantly in the rivers and small jhils.

The climate of Jaunpur is moister, and the temperature more Climate equable, than in most Districts of the United Provinces. In and temperature ranges from about 50° to about 75°, and in May and June from 80° to 210°.

The average annual rainfall is 42 inches, the amount being Rainfall, almost the same in all parts of the District. While variations occur from year to year, extreme failures are very uncommon.

The earliest traditions connected with the District point to History. its occupation by the aboriginal Bhars and Soeris. In the later Hindu period it contained several places of importance, chief among which was ZAFARABAD, then known as Manaich. This place has recently been identified as the fort of Munj, captured by Mahmud of Ghazni in roro. The rule of the Musalmans was not, however, established at that time, and towards the close of the eleventh century the District was included in the new Rathor kingdom of Kanauj. When Muhammad Ghori commenced his victorious march against Jai Chand of Kanauj, the latter sent his vast treasures to the fort of Asm, which was also probably situated near Zafarābād, and after Jai Chand's death in 1194 the Muhammadans penetrated through this place to Benares. The magnificent temples of the Rathor kings were plundered and overthrown, and although Hindu governors were recognized, they paid allegiance to the king of Delhi. In 1321 Ghiyas ud-din Tughlak appointed his son, Zafar Khān,

governor, and thirty-eight years later, in 1359, Ftroz Shah Tughlak founded the city of JAUNPUR. A cunuch, named Malik Sarwar, who had held important posts at the court of Delhi, was appointed Wazir in 1389 with the title of Khwaja-i-Jahan. A few years later, in 1394, the administration of all Hindustan, from Kanaul to Bihar, was placed in his charge, so that he might reduce the turbulence of the Hindus, and he assumed the title of Sultan-ush-Shark, or King of the East, The ambitious ennuch had hardly succeeded in his task when he declared his own independence, the revolt being rendered easier by Timūr's invasion, which destroyed the last semblance of the authority of the kings of Delhi. Timur, on his departure from India, granted large jagirs to Khizr Khān, and Khwāja-i-Jahan materially strengthened his position by adopting Khizr Khān's nephew, Karauphūl, as his son and heir. The dynasty thus founded ruled at Jaumpur for nearly a century, and proved formidable rivals to the sovereigns of Delhi. Khwaja-i-Jahan died in 1399, and was succeeded by Karanphul under the title of Muhārak Shāh. An attempt was made by Ikbāl Khān, de facto ruler of Deihi, to crush the rising power, but without success. Mubārak Shāh died in 1401 and was succeeded by his brother, Ibrāhīm Shāh, who, like his successors, was a builder of magnificent mosques and a patron of learning. In 1407 Ibrahim achieved his desire and took Kanauj, Sambhal, and Baran (Bulandshahr). He was approaching Delhi when news came that Muzaffar Shāh (I) of Gujarāt had defeated Hoshang Shāh of Mālwā, and had designs on Jaumpur. Ibrāhīm therefore withdrew, giving up his new acquisitions of Sambhal and Baran. By 1414, Khiar Khān acquired the supreme power at Delhi. Thrahim was thus for a time free from danger in that quarter, and set out in 1427 to attack Karpi, but was opposed by Mubarak Shah, who had succeeded Khizr Khan in 1421. He made another unsuccessful attempt in 1432, and also invaded Bengal and other adjoining territory. Ibrahlm died in 1440, and was succeeded by his son Mahmud, who was allowed by the king of Mālwā to attack Kālpī in 1444, in order to punish an impious governor. Mahmūd attempted to retain this fief, but was compelled to resign it. He then sacked Chunăr and laid waste Orissa, and in 1452 advanced to Delhi during the absence of Bahlol Lodi, who had ascended the throne a year earlier. Bahlol returned and Mahmud retired; but a few years later hostilities again broke out and continued till Mahmiid's death in 1459. His eldest son, Muhammiid Shah, was killed after a few months and was succeeded by

unother son called Husain Shah. For some years Husain confined his incursions to Orissa, or to Bundelkhand and Baghelkhand; but at length he too undertook to invade Delhi, and lost his kingdom in the venture. The first expedition took place in 1473, and during the next few years fortune inclined now to one side and now to the other. In 1480, however, Husain was twice defeated in the Central Dollb, and Jaumpur fell. Husain maintained hostilities in various directions, and in 1487 recovered Jaunpur for a time, but was soon driven out again, and Barbak Shah, son of Bahlol, became governor. Bahlol died in 1489 and was succeeded by his son, Sikandar; Barbak Shah also claimed the throne, and was defeated, but restored to his governorship. Revolts continued, and Husain Shah made a final effort about 1406, but was repelled and died a few years later. When Ibrahim, last of the Lodis, was defeated and killed by Babur at Panipat in 1526, Bahädur Khān, the governor of Bihār and Jaunpur, asserted his independence; but after the fall of Agra and Delhi, Babar sent his son Humayan eastward. The Mughal rule was not, however, firmly established, and the Pathans under Sher Shah and his successors governed the country for a time. On the revival of Mughal power, Jaunpur fell before Akbar's general in 1550, and remained in the Mughal empire till its break up, though rebellions took place soon after the capture of the city, At the reorganization of the empire in 1575 Allahabad became the capital of the province in which Jaunpur was included. Nothing worthy of note occurred in connexion with this District until 1722, when it passed to the Nawab of Outh. Some years later it was granted to Mansa Ram, founder of the BENARES ESTATE; and it remained in the possession of his family, with the exception of the fort of Jaunpur, though the Bangash Nawāb of Farrukhābād nominated a governor about 1750, after defeating the Nawab of Oudh. The District was coded to the British in 1775, with the rest of the province of Benares.

From that time nothing occurred which calls for notice till the date of the Mutiny. On June 5, 1857, news of the Benares revolt reached Jaunpur. The sepoys of the treasury guard at once mutinied and shot their own officers, as well as the Joint Magistrate. They then marched off to Lucknow without molesting the other Europeans, who made good their escape to Benares. The District continued in a state of complete anarchy till the arrival of the Gurkha force from Azamgarh on September 8. The civil officials then returned to Jaunpur, and

the police stations were re-established; but the north and west of the District remained in rebellion. In November, owing to the active levies made by Mahdi Hasan, who styled himself Nazim of Jaunpur, most of the surrounding country was lost again. But in February, 1858, the rebels of the north and west were defeated and dispersed; and in May the last smouldering embers of disaffection were stifled by the repulse of the insurgent leader, Jurhi Singh, from Machhlishahr at the hands of the people themselves.

Archaeology. The magnificent buildings of the Sharki kings at JAUNPUR, and the earlier buildings of ZAVARAHAD, were partly constructed from the remains of Hindu temples, none of which has remained intact. A few inscriptions exist in them, and a copperplate grant of Gobind Chand, king of Kanauj, has been found in the District.

The people.

Jampur contains 7 towns and 3,152 villages. Population has varied. The numbers at the four emmerations were as follows: 1,025,961 (1872), 1,209,663 (1881), 1,264,949 (1891), 1,202,920 (1901). It is probable that the enumeration of 1872 was imperfect; between 1891 and 1901 the District suffered from a succession of bad seasons. There are five tahsils—JAUNPUR, MARIĀHŪ, MACHHLISHAHR, KHUTĀHAN, and KIRĀKAT—each named from its head-quarters except Khutāhan, which has its head-quarters at Shāhganj. The only municipality is Jaunpur city, the District capital. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takett. | Area in square tolless. | Town | ber of | Population. | Population per square seils. | Presentage of variation in population be tween 1894 and tyes | Number of persons able to read and write |
|----------------|----------------------------|------|--------|-------------|---------------------------------|--|---|
| Janupur | 380 | à | 711 | 269,131 | 961 | -34 | 6,868 |
| Mariähü | 321 | | 676 | 243,791 | 759 | - 3.8 | 5,049 |
| Machhlishahe. | 344 | 3 | 610 | 233/431 | 679 | = 46 | 51494 |
| Khutāhan . | 162 | 350 | 700 | 269,438 | 744 | - 6.1 | 7.847 |
| Kirākat | 244 | 1 | 455 | 187,128 | 767 | -7/3 | 7:497 |
| District total | 1,351 | 7 | 3,152 | 1,202,920 | 776 | -49 | 32,450 |

Hindus form nearly 91 per cent, of the total, and Musalmans 9 per cent. The density of population is high in all parts of the District. About 81 per cent, of the population speak Eastern Hindi and 15 per cent. Bihāri, the boundary between these languages passing through the north-east of the District.

The Hindu castes most largely represented are the Chamars Castes and (leather-workers and labourers), 182,000; Ahrrs (graziers and scrupaagriculturists), 173,000; Brithmans, 146,000; Rajputs, 101,000; Koirts (cultivators), 49,000; and Kurmis (agriculturists), 46,000. The aboriginal Bhars still number as many as #5,000. Among Musalmans may be mentioned the Julahas (weavers), 28,000; Shaikhs, 18,000; Pathins, 13,000; and Behnis (cotton-carders), 11,000. Agriculture supports as many as 77 per cent, of the total population, and general labour less than 2 per cent. Rajputs own more than a third of the land, and Brāhmans, Saiyids, Shaikhs, and Baniās are also large landholders. High castes also hold as tenants a rather greater proportion than the low castes. The inhabitants of this District supply considerable numbers of emigrants to Assam, the Eastern Districts of Bengal, and the colonies.

There were only sixty-two native Christians in the District Christian in 1901. Of these, forty-seven belonged to the Anglican com- missions. munion and eight were Methodists. The Church Missionary Society opened a branch at Jaunpur in 1833. There has been a Wesleyan Mission at Shāhganj since 1879, and a Zanāna

Mission at Jampur since 1890.

The District being permanently settled, accurate details are General not available as to the distribution of the various classes of articulsoil. Generally speaking, light sandy soil is found near the ditional banks of the rivers, especially the Sai and Gumtt. The sand gradually changes to a very fertile loam which, however, requires constant irrigation; and, lastly, clay is found remote from the rivers. The largest clay tracts in which the best rice can be grown are found in the north and the south-west. The District is very highly cultivated, and there are no extensive areas of waste land, except a few usar plains in the Khutāhan tahrii. The Gumti and Sai frequently flood the low-lying land in their beds; but the loss is not serious, and the chief danger to agriculture is the liability of the spring crops to suffer from rust in a wet winter.

The usual tenures existing in the permanently settled tract Chief agriof the United Provinces are found, namindari mahais being the cultural commonest. The makilis are, however, frequently complex and princithat is, a single mahil, instead of forming a single village pal crops. (mausa) or part of a mausa, includes several mausas or parts of maunas. There are a few talukdari estates; but the talukdars are here known as perhhashdars, and the under-proprietors as farotars. Most of these estates were originally grants for the maintenance of the Jaunpur garrison. The main agri-

enltural statistics for 1903-4 are shown below, in square

| TakaL | Total. | Cultivated | Irrigatoil | Cultivable waste. | |
|--------------|--------|------------|------------|-------------------|--|
| Taunpor | aSo. | 198 | 115 | 19 | |
| Mariihii | 321 | 212 | 116 | 39 | |
| Machhlishahr | 344 | 203 | 106 | 30 | |
| Khutihan | 362 | 228 | 129 | 50 | |
| Kirikat | 244 | 161 | 95 | 127 | |
| Total | 1,551 | 998 | 571 | 195 | |

The staple food-crops are barley, covering 303 square miles, or 28 per cent. of the net cultivated area, rice (251), peas and marier (137), and maize (124). The Jaunpur variety of maize is especially noted throughout the Provinces. Gram, wheat, arhar, towar, and the smaller millets are also largely grown. Sugarcane is an extremely valuable crop, and was grown on 53 square miles in 1903-4, while hemp (san) covered 14 square miles. Oilseeds, indigo, poppy, and tobacco cover smaller areas.

Improvements in agricultural practice.

When the District was first acquired in 1775 there were large areas of waste. Mr. Duncan, who carried out the permanent settlement, gave special facilities for breaking up waste, and also encouraged the growth of sugar-cane and introduced indigo, poppy, and potatoes. The result was a speedy increase in the cultivated area. During the last sixty years, however, the area under cultivation has increased by only 4 per cent., and the chief change recently has been the rise in the area double-cropped. Indigo is declining rapidly, as in most parts of the Provinces; and the area sown is now only 5 square miles, or less than a quarter of what it was twenty years ago. Maize and rice are more largely grown than formerly in the autumn, and wheat in the spring harvest. In adverse seasons loans under the Agriculturists' Loans Act are taken, but advances under the Land Improvement Act are very rare. The total of loans from 1891 to 1900 amounted to only a lakh, of which Rs. 30,000 was advanced in 1896-7. Very small advances have been made since.

Cattle, ponies, sheep, and goats. The cattle of the District are inferior, and the best animals are imported. A Government bull was once kept, and its services were eagerly sought for. The ponies are also of a poor stamp, but are largely used as pack animals. Sheep and goats are of the ordinary type.

Irrigation. Out of 571 square miles irrigated in 1903-4, wells supplied

442 square miles, tanks or jhils 126, and other sources 3. The area irrigated from tanks or jhits is probably understated, as every pond is used for irrigating the late rice. Water is raised from wells in a leathern bucket by bullocks or men, except in the extreme north, where the water-level is so high that a lever can be used. Excellent wells can be made without brick linings, which will last from one to ten years. The tanks are sometimes artificial, but are all of small size; the swing-basket worked by four or eight persons is usually employed to mise water from tanks and ihils.

Kankler or calcareous limestone is found in all the upland Minerals. parts of the District, and is used for metalling roads and for making lime.

Sugar-refining is the most important industry in the District, Arts and A little coarse cotton cloth is made in many places for local tares. use. The manufacture of indigo still continues, but on a very small scale since the introduction of synthetic indigo. Jaunpur city is celebrated for the manufacture of scents, and also produces a little papier-mâché work.

The District being almost entirely devoted to agriculture, its Commerce, trade is confined to raw materials and food-stuffs. Sugar, foodgrains, scent, and oilseeds form the chief exports; and salt, piece-goods, metals, and spices are imported. Jaunpur city, Shāhgani, and Mungrā Bādshāhpur are the chief trade centres.

The loop line of the Oudh and Rohilkhand Railway from Railways Benares through Fyzabad to Lucknow traverses the District and roads. from south to north, while the main line of the same milway grosses the south-west corner. A branch from Zafarābād to Phāphāmau on the Ganges is now under construction, which will give access to Allahābād. Shāhgani is connected with Azamgarh, and Jaunpur city with Ghāzīpur, by branches of the Bengal and North-Western Railway.

The District is well supplied with roads, the length of which is \$86 miles. Of the total, 186 miles are metalled and are maintained by the Public Works department, but the cost of all but 45 titles is met from Local funds. An excellent system. of metalled reads radiates from Janupur city to Allahabad, Fyzibad, Azamgarh, Benares, and Mirzapar. Avenues of trees are maintained on 220 miles.

Jaunpur has usually escaped from famine, owing to the Femine. rarity of complete failure of the mins. No details are available for the famines of 1770 and 1783, but the pressure of high prices was felt in 1803-4. The disastrous seasons of 1837-8 and 1860-1 hardly affected this District, and even in 1868

the threatened famine was averted by heavy rain in September. The famines of 1873-4 and 1877-8 also pressed very lightly. In 1896-7, however, the District suffered severely. Heavy rain had damaged the crops in 1894, and in the two following years the minfall was deficient, so that the important late rice crop failed. Relief works were opened and advances were given for the construction of wells; but the first fall of rain in June, 1897, ended the famine.

District

The Collector is usually assisted by a member of the Indian Civil Service (when available), and by five Deputy-Collectors recruited in India. A tahsildar is stationed at the head-quarters of each tahsil.

Civil justice and crime. There are two District Munsifs, a Subordinate Judge, and a District Judge for civil work. The Court of Sessions bears the sessions cases of Basti District as well as those of Jaunpur. Owing to the pressure on the soil, disputes about cultivation, proprietary rights, and irrigation are common, and sometimes lead to serious riots; but the worst kinds of crime, such as murder and dacoity, are not very prevalent. Female infanticide was found by Mr. Duncan to be rife in 1789, and on the passing of an Act for its repression in 1870 a large number of persons were proclaimed; but all have since been exempted, and the practice is believed to be extinct.

Land sevenue administration.

Though a Judge-Magistrate was placed in charge of an area corresponding to the present District as early as 1795, the revenue administration was not separated from that of BENARES till 1818. From its acquisition in 1775 the District was in charge of the Raja of Benures till 1788, when Mr. Duncan, the Resident, commenced a settlement which was made permanent in 1795. Default in the payment of revenue, and the turbulence of the population of this part of the huge District of Benares, led to the formation of a Deputy Collectorate of Jaunpur in 1818, which soon became a separate District. In 1820 a large tract of what is now the Azamgarh District was placed under the Collector of Jaunpur, but part of it was removed in 1823 and the rest in 1830. There have been a few other smaller changes. The revenue demand fixed by Mr. Duncan on the present area amounted to 11-1 laklis, rising to 11-3 lakhs. It has since increased to 12-5 lakhs, owing to the inclusion of land not previously assessed. The permanent settlement included no detailed record-of-rights and was not based on a survey; and maps and records were not prepared till between 1839 and 1841. In 1849 the rent payable by the farcture to the pethkathdars was for the first time

determined and recorded. The whole of the records prepared in 1841 were destroyed in the Mutiny of 1857, and when order was restored an attempt was made to prepare them afresh. The new record was completed in 1867, but was soon found to be incorrect and inadequate. A fresh revision was, therefore, made between 1877 and 1886, based on a resurvey. The usual village papers are now prepared annually as in the rest of the Provinces. The incidence of land revenue is Rs. 114 per acre, varying from R. 1 to Rs. 2-2 in different parts of the District. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees :-

| | | | #890-t. | 1900-1. | 1003-1 | |
|---------------|----|-------|---------|---------|--------|--|
| Land revenue | | 12,40 | 12,20 | 13,63 | 23,74 | |
| Total revenue | A. | 15,03 | 16,49 | 10,31 | 19.36 | |

JAUNPUR CITY is the only municipality, but six towns are Local selfadministered under Act XX of 1856. The District board governmanages local affairs outside the limits of these, and in 1903-4 had an income and expenditure of 1-1 lakhs, chiefly derived from local rates. The expenditure included Rs. 60,000 on roads and buildings.

There are 17 police stations; and the District Super-Police and intendent of police has a force of 3 inspectors, 83 subordinate jalla. officers, and 350 constables, besides 163 municipal and town police, and 1,954 rural and road police. The District jail contained a daily average of 231 inmates in 1903.

The District takes a low position as regards the literacy of Education. its population, of whom 2-7 (5-4 males and 0-1 females) per cent, could read and write in 1001. Musalmans are distinctly more advanced in this respect than Hindus, 4-2 per cent, being literate. The number of public schools rose from 148 with 5,546 students in 1880-1 to 164 with 7,320 pupils in 1900-t. In 1903-4 there were 199 such schools with 8,862 pupils, of whom 169 were girls, besides 114 private schools with 1,792 pupils. Only 1,623 pupils were in classes beyond the primary stage. Two of the public schools were managed by Government, and 138 by the District and municipal boards. Out of a total expenditure on education of Rs. 40,000, Local funds contributed Rs. 30,000 and fees Rs. 8,000.

There are 8 hospitals and dispensaries, with accommodation Hospitals for \$3 in-patients. In 1903 the number of cases treated was and dispen-75,000, including 400 in-patients, and 5,000 operations were

performed. The total expenditure was Rs. 8,000, which was chiefly met from Local funds.

Vaccina-

About 37,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, representing a proportion of 31 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipality of Jaunpur.

(District Gazetteer, 1884 [under revision]; P. C. Wheeler, Report on Revision of Records in Jaunpur, 1886; A. Führer,

The Shargi Architecture of Jaunpur, 1889.)

Jaunpur Tahsil. - Head-quarters tahsil of Jaunpur District, United Provinces, comprising the pargana of Havelt Janupur and tappas Saremau, Rārī, Zafarābād, Karyāt Dost, and Khapraha, and lying between 25° 37' and 25° 54' N. and 82° 24' and 82° 52' E., with an area of 280 square miles. Population fell from 278,482 in 1891 to 269,131 in 1901. There are 711 villages and two towns, including JAUNPUR CITY, the District and tahsil head-quarters (population, 42,771). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,30,000, and for cesses Rs. 4 2.000. The density of population, 961 persons per square mile, is the highest in the District. The sinuous course of the Gumti winds through the centre of the taksil, while the Sai crosses the western portion and then forms the southern boundary. There is a considerable area of sandy soil, and ravines furrow the ground near the rivers. The area under cultivation in 1903-4 was 192 square miles, of which 125 were irrigated, almost entirely from wells.

Mariāhū.—Southern tahsil of Jaunpur District, United Provinces, comprising the pargana of Mariāhū and tappas Barsathī and Gopālpur, and lying between 25° 24' and 25° 44' N. and 82° 24' and 82° 44' E., with an area of 321 square miles. Population fell from 253,402 in 1891 to 243,792 in 1901. There are 676 villages and only one town, Mariāhū, the taksil head-quarters (population, 3,626). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,21,000, and for cesses Rs. 44,000. The density of population, 759 persons per square mile, is slightly below the District average. Mariāhū is divided into two nearly equal portions by the Basūhī river, while the Sai and Barnā form its north-eastern and southern boundaries. The area under cultivation in 1903-4 was 212 square miles, of which 116 were irrigated. There are about 1,200 small tanks; but wells are by far the most important source of

irrigation.

Machhlishahr Tahsil.—South-western tahsil of Jaunpur District, United Provinces, comprising the parganas of

Chiswa, Mungra, and Garwara, and lying between as 30' and 25° 55' N. and 82° 7' and 82° 28' E., with an area of 324 square miles. This area is exclusive of an enclave belonging to Partabgarh District. Population fell from 244,677 in 1891 to 233,431 in 1901. There are 610 villages and two towns: MACHHLISHARE, the takiil head-quarters (population, 8,725), and MUNGRA-BADSHAHPUR (6,130). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,82,000, and for cesses Rs. 44,000. The density of population, 679 persons per square mile, is the lowest in the District. Machhlishahr is triangular in shape and is emssed by the Sai and Basühl rivers, while the Barna forms part of the southern boundary. It contains a great deal of low lying land in which rice is largely grown, and also some patches of barren usar. The area under cultivation in 1903-4 was 205 square miles, of which 106 were irrigated, chiefly from wells. Tanks and jhils supply nearly a fifth of the irrigated area, a larger proportion than elsewhere in this District.

Khūtahan,-Northern taksil of Jaunpur District, United Provinces, comprising the parganas of Ungli, Rari (taluka Badlapur), Karyat Mendha, and Chanda, and lying between 25° 50' and 26° 12' N. and 82° 21' and 82° 46' E., with an area of 362 square miles. Portions of the taksil form enclaves in Partabgarh and Sultanpur Districts. Population fell from 286,832 in 1891 to 269,438 in 1901. There are 700 villages and only one town, Shahgani, the tahul head quarters (population, 6,430). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,27,000, and for cesses Rs. 50,000. The density of population, 744 persons per square mile, is below the District average. Several small drainage channels exist; but the Gumti, which crosses the south-west of the taluil, is the only considerable river. Khutahan contains a large area of good rice land, and also a number of barren usar tracts. The area under cultivation in 1903-4 was 288 square miles, of which 120 were irrigated. Wells supply about seven-eighths of the irrigated area, and tanks and jhile most of the remainder.

Kirākat. — Eastern tahtil of Jaunpur District, United Provinces, comprising the pargunar of Daryāpār and Biālst and tappar Chandwak, Pisārā, and Guzāra, and Iying between 25° 32' and 25° 46' N. and 82° 47' and 83° 3' E., with an area of 244 square miles. Population fell from 201,556 in 1891 to 187,128 in 1901. There are 455 villages and only one town, Kirākat, the tahtil head-quarters (population, 3,355). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 180,000, and for cesses Rs. 36,000. The density of population, 767 persons

per square mile, is almost equal to the District average. Kirākat is bisected by the Gumti, which flows from north-west to south-east in a very winding course. The area under cultivation in 1903-4 was 161 square miles, of which 95 were irrigated. There are few tanks or jhils, and irrigation is supplied almost exclusively by wells.

Jaunpur City.—Head-quarters of the District and takell of the same name, United Provinces, situated in 25° 45′ N. and 82° 41′ E., on the Oudh and Rohilkhand and Bengal and North-Western Railways, 515 miles by rail from Calcutta and 977 miles by rail from Bombay. It lies on the banks of the Gumti river, and at the junction of metalled roads from Allahabad, Fyzābād, Azamgarh, Benares, and Mirzāpur. Population has been almost stationary for the last twenty years. The numbers at the four enumerations were as follows: 35,003 (1872), 42,845 (1881), 42,815 (1891), 42,771 (1901). In 1901 the population included 26,091 Hindus and 16,596 Musalmāns.

The origin of the name Jaunpur, also known as Jawanpur, and occasionally as Jamanpur, is uncertain. Hindus derive it from Jamadagni, a famous rishi, in whose honour a shrine has been raised, while Musalmans assert that the city takes its name from Ulugh Khān Jūnā, afterwards Muhammad Shāh (II) bin Tughlak of Delhi. Up to the fourteenth century the neighbouring town of ZAVARABAD was of greater importance; but ancient remains show that a town existed also on the present site of Jaunpur. A shrine sacred to Karar Bir, the giant demon slain by Rama, king of Ajodhya, still stands near the fort; and tradition says that the fort itself is on the site of a temple built by Bijai Chand of Kanauj in the twelfth century. In 1350 Firoz Shah Tughlak halted at Zafarahad on his way to Bengal, and was struck by the suitability of the neighbourhood for the foundation of a new city, which was at once commenced. Some years later Jaumpur became the head-quarters of a governor, and in 1304 a eunuch named Khwāja-i-Jahān received the appointment. He soon declared himself independent; and for nearly a century, as has been related in the history of JAUNEUR DISTRICT, his successors ruled a varying area, which sometimes extended from Bihar to Sambhal and Aligarh (Koil), while they even threatened Delhi-Jaunpur remained the seat of a governor till the reorganization of the empire by Akbar, who raised Allahāhād to the position of a provincial capital. From that date Jaunpur declined in political importance, though it retained some of its former

reputation as a centre of Muhammadan learning, which had gained for it the title of the Shirāz of India. On the acquisition of the province of Benares in 1775, Jaunpur became British territory, and an Assistant was posted here subordinate to the Resident of Benares. A Judge-Magistrate was appointed in 1795, and in 1818 Jaunpur became the head-quarters of a Sub-Collector and shortly afterwards of a Collector.

The main portion of the town lies on the left bank of the Gumti, while some outlying quarters and the civil station are situated on the right bank. The river is crossed here by a magnificent stone bridge built by Munim Khān, governor under Akbar. In the city proper are simuted the splendid monuments of the Jampur kings, which form the finest specimens of Pathān architecture in Northern India. Very little remains of the earlier fort built by Firoz Shah. It was ledy an irregular quadrangular building, overlooking the Gumti and surrounded by a stone wall built round an artificial earthen mound. The materials were largely obtained from temples. In 1850 the towers and most of the buildings in the fort were destroyed. A magnificent gateway, added in the sixteenth century, a small mosque built in 1376, and a spacious set of Turkish baths constructed by Ibrahim Shah, are alone fairly complete. The earliest mosque is that known as the Attla Masjid, which was built by Ibrahim Shab, and completed in 1408. It consists of a fine courtyard with double storied cloisters on three sides, and the mosque itself on the west. The most striking feature is the magnificently decorated façade, 75 feet in height, with a breadth of nearly 55 feet at the base, which stands before the dome of the mosque and recalls the propylons of Egypt. It consists of a great arched gateway surmounted by a pierced screen, and forming a recess in a gigantic frame flanked by massive towers. Smaller gateways of similar construction stand on either side. The Arala Masjid is said to occupy the site of a temple of Atala Devi which Firoz Shah attempted to appropriate, but which he was induced to leave on account of the threatening attitude of the people. The Dariba Masjid, built by two of Ihrahim's nobles, has a domed hall and two wings, marked by a low façade of the peculiar Jaunpur type, but with little ornamentation. It is said to have been built on the site of a temple of Bijai Chand of Kanauj. Only the great piers and beautiful central screen remain to show the magnificence of the Jhanjhri mosque, which was built by Thrahim Shah on the site of Jai Chand's temple at Muktaghat, but was demolished by Sikandar

Lodi. The Lal Darwaza mosque, erected by Bibl Raji, the queen of Mahmud Shah, is smaller than the Atala Masjid, the propylon being only 49 feet high. The cloisters, which are of one story, are in a poor state of preservation. The Jama Masjid, or great mosque of Husain Shah, is believed to have been founded as early as 1438; but work on it was suspended for many years, and it was not completed till 1478. The mosque stands on a raised terrace, and its courtyard is surrounded on three sides by cloisters with aisles, the upper story of which was pulled down by Sikandar Lodi. There is a massive domed entrance gateway in each of these sides, which also suffered at the hands of the Lodi king, and the fourth is occupied by the mosque proper with its majestic facade 84 feet in height. The mosque is being gradually restored. Close to the northern gateway stands a small enclosure in which lie the modest tombs of Husain Shah and some of his descendants; the tombs of the earlier rulers being situated on a platform in another part of the city. Many smaller mosques and tombs are to be seen; but no traces exist of the palaces and college which once graced Jaumpur. The modern public buildings are few and unimportant; they include the usual courts and two dispensaries, one of which is maintained by the Zanāna Bible and Medical Mission.

Jaunpur has been a municipality since 1867. During the ten years ending 1001 the income and expenditure averaged Rs. 39,000 and Rs. 17,000 respectively. In 1903-4 the income was Rs. 58,000, chiefly from octroi (Rs. 30,000) and rents and fees (Rs. 11,000); and the expenditure was Rs. 57,000, including conservancy (Rs. 14,000), administration and collection (Rs. 10,000), and public safety (Rs. 11,000). The town is celebrated for the manufacture of perfumes from the flowers of the rose, jasmine, and screw-pine, and from the toot of the khashhar grass (Andropogon muricata). Papiermâché articles, such as cigar-cases, book-covers, &c., are also made. The town was formerly noted for its paper manufacture, but this has died out. There is some trade in grain, and in the distribution of imported goods; but Jaunpur is not an important commercial centre. Two high schools and six of lower grade have a total attendance of 607 pupils. In addition to these, Arabic is taught at the Jama Masjid.

(A. Führer, The Sharqi Architecture of Jaunpur, 1889.)

Machhilshahr Town, Head-quarters of the tahsil of the same name, Jaunpur District, United Provinces, situated in 25° 40' N. and 82° 25' E., on the road from Jampur city to Allahāhād. Population (1901), 8,725. The ancient name of the town was Ghiswā, derived from a Bhar chief, Ghisu, who is said to have ruled in the neighbourhood. It is situated in the midst of a low-lying damp tract of country, and its present name of Machhlishalu, or 'Fishtown,' was given to it owing to its liability to floods. No details are known of its history; but it contains the ruins of an ancient fort and seventeen mosques, most of which are dilapidated. The Karbala was built in the thirteenth century, and the Jāma Masjid by Husain Shah of Jaunpur. Machhlishahr is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 1,600. It contains the usual tahsili offices, and also a dispensary and a middle school with 147 pupils. There is little trade.

Müngrä-Bädshähpur.—Town in the Machhlishahr tahnif of Jaunpur District, United Provinces, situated in 25° 40′ N. and 82° 12′ E., on the Oudh and Rohilkhand Railway, and on the road from Jaunpur city to Allahābād. Population (1901), 6,130. The town is said to have been founded by Ibrāhim Shāh of Jaunpur. On the cession of the Benares province to the British it became a customs post and trade centre between Oudh and Benares. It is still a mart for the import of cotton from Allahābād and for the export of sugar. Mungrā-Bādshāhpur is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 12400. There is a primary school with 75 pupils.

Shāhganj.—Hearl-quarters of the Khutāhan tahsilof Jaunpur District, United Provinces, situated in 26° 3' N. and 82° 42° E., at the junction of a branch of the Bengal and North-Western Railway from Azamgarh with the Oudh and Rohilkhand Railway. Population (1901), 6,430. The town was founded by Shujā-ud-daula, Nawāb of Oudh, who built a market-place, a būradūri, and a dargāh, or tomb, in honour of Shāh Haznat Alt. Shāhganj is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 6,000. It is a thriving mart, second only to Jaunpur city, and is the centre of the sugar-refining industry, besides being a depôt for the export of grain and the distribution of imported cotton. The town contains a dispensary, a branch of the Wesleyan Mission, and two schools with 113 pupils.

Zafarābād.—Town in the District and tahtil of Jaunpur, United Provinces, situated in 25° 42' N. and 82° 44' E., on the right bank of the Gumti, and on the Outh and Rohilkhand Railway, 5 miles south-east of Jaunpur city. A branch line to

Allababild is under construction. Population (1901), 1,618. According to local tradition, the town was formerly known as Manaich, and contained forts named Asni and Ratagarh. It has recently been suggested by Major Vost that Manaich is to be identified with the Manai, Muni, &c., of the Musalman historians, which was stormed by Mahmud of Ghazni in 10191. During the next 170 years the town was included in the kingdom of Kanaui, and in 1194 it fell into the hands of Muhammad bin Sam. If the identification with AsI or AsnI be correct, this was the place whither Iai Chand had sent his treasure for safety, and at which the Musalman conqueror received the allegiance of the Hindu princes. In 1321 Ghivās-ud-din Tughlak sent his son, Zafar, with an army to crush the Rajputs here : but tradition says that, instead of fighting, a discussion on the merits of Hinduism and Islām took place, and the Raiput chief was vanguished and became a Musalmän. Zafar Khān assumed the governorship, and the name of the town was changed to Zafarābād. In 1359 Firoz Shāh Tughlak passed through here and decided to found a new city. After the building of Jaunpur the older town decayed. Zafarābād, however, still contains many remains of great interest. The Masjid of Shaikh Raran, built in 1311 or 1321, from a Hindu or Buddhist temple, consists of a hall 18 feet high with nine bays from east to west and seven from north to south, and probably contained a facade resembling those at JAUNPUR. A considerable area covered by tombs is known as the 'Plain of the Martyrs,' who are said to have perished in the assaults on the forts. The forts of Ratagarh and Asni are now represented by extensive mounds, with traces of moats, and another mound is said to cover the mins of Bijai Chand's great temple. Zafarābād is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. Soo. It was formerly noted for its manufacture of paper; but this has completely ceased, and the former workmen have now become masons, who go in considerable numbers as far as Calcutta and Rangoon to seek work. There are three schools, with 230 pupils.

(A. Führer, The Sharqi Architecture of Jaunpur, 1889.)

Ghāzīpur District.—District in the Benares Division of the United Provinces, lying on both banks of the Ganges, between 25° 19' and 25° 54' N. and 83° 4' and 83° 58' E, with an area of 1,380 square miles. It is bounded on the north by Azumgarh and Balliā; on the east by Balliā and the Shāhābād District of Bengal; on the south by Shāhābād and Benares; and on the west

Elliot, History of India, vol. ii, p. 46.

Botndaries, configuration, and river

evalem.

by Jaunpur. No hill or natural eminence is to be found within the District; but both north and south of the Ganges the country may be divided into an upland and a low-lying tract. The higher land marks the banks of ancient streams which have now disappeared. Ghäzipur is very thickly inhabited and closely miltivated; and its villages contain numbers of small collections of houses scattered in all parts, instead of being concentrated in a central site, as in the western Districts. The Ganges flows through the southern portion of the District in a series of bold curves. It is joined by the Gumti after a short course in the west, and in the south-east by the Kammnasa, which for 18 miles forms the boundary between Ghāzīpur and Shāhābād. Smaller streams flow across the northern part of the District from northwest to south-east. The Gangi and Besa join the Ganges midway in its course, while the Mangai and Chhoti Sarin unite beyond the limits of the District, and subsequently fall into the Ganges.

The District is well wooded, but its flora presents no pecu-Botanyliarity. The trees are largely of cultivated varieties, such as the mango, bamboo, and various fruit trees. There are a few patches of jungle in which dhāk (Butea frondosa) is the most conspicuous tree.

No rocks are exposed anywhere in Ghazipur, and the form-Goology, ation is purely Gangetic alluvium. Kankar or calcareous limestone and saline efflorescences are common.

The country is too densely populated and too well culti-Fanna, vated to harbour many wild animals. The nilgai and antelope are the only large game. The ordinary kinds of water-fowl are found on some of the tanks, and fish are plentiful in the Ganges and its tributaries.

As compared with other Districts in the United Provinces, Climate and tem-Ghazipur is hot and damp; but the temperature is not subject perature, to the extremes recorded farther west.

The average annual rainfall is 40 inches, the amount received Rainfall in different parts of the District varying very little. From year to year, however, fluctuations are considerable. In 1887 the fall was only 16 inches, while in 1804 it was an much as 50 inches.

Tradition refers the foundation of the city of Ghāzipur to a History.

mythical hero, Gādh, who is said to have called his stronghold

Gadhipur. Nothing definite is known of the early history of
the District, which was, however, certainly included in the
kingdom of the Guptas of Magadha in the fourth and fifth
centuries a.D. Hiuen Tsiang, the Chinese pilgrim, in the
seventh century, found a kingdom called Chen-Chu in this

neighbourhood, the site of the capital of which has not been satisfactorily identified. He noted that the soil was rich and regularly cultivated, and the towns and villages were close together. A long blank follows, which can only be filled by

speculation.

In 1194 Bihār and the middle Ganges valley were conquered by Kuth-ud-din, the general of Muhammad Ghori, first Musalman emperor of Delhi. He had defeated and slain the Hindu champion, Jai Chand, the Rathor Raja of Kanani, in the Jumna ravines of Etawah; and the whole country as far as Bengal lay at his mercy. During the succeeding century we hear little of the present District; but about the year 1330 the city of Ghāzīpur was founded (according to a probable tradition) by a Saiyid chief, named Masud, who slew the local Hindu Raia in battle. Sultān Muhammad Tughlak thereupon granted him the estates of his conquered enemy, with the title of Ghizz, which gave the name to the newly-founded city. From 1304 to 1476 Ghāzīpur was incorporated in the dominions of the Sharki dynasty of Jaunpur, who maintained their independence for nearly a century as rivals to the rulers of Delhi. After their fall, it was reunited to the dominions of the Delhi Sultins, and was conquered like the surrounding country by the Mughal emperor, Babar, after the battle of Panipat in 1526. In 1539, however, the southern border of the District, close to Buxar in Shahabad, was the scene of a decisive engagement between the Afghan prince Sher Shah and Humayan, the son of Babar, in which the latter was utterly defeated and driven out of the country.

Sher Shah's victory settled the fate of Ghazipur for the next twenty years. It remained in the undisturbed possession of the Afghans, not only through the reigns of the three emperors belonging to the Suri dynasty, but throughout the restored supremacy of Humayan. It was not till the third year of Akbar that Ghāzīpur was recovered for the Mughal throne by Khān Zamān, governor of Jaunpur, from whom the town of Zamānia derives its name. After his rebellion and death in 1566, the District was thoroughly united to the Delhi empire; and organized under the Subah of Allahabad. During the palmy days of Akbar's successors the annals of Ghazipur are purely formal and administrative, until the rising of Nawahs of Oudh at the beginning of the eighteenth century. In 1722 Saādat Khān made himself practically independent as viceroy of Oudh. About 1748 he appointed Shaikh Abdullah, a native of the District, who had fied from the service of the governor

at Patna, to the command of Ghāzipur. Abdullah has left his mark in the city by his splendid buildings. His son, Fazl All, succeeded him; but after various vicissitudes was expelled by Rājā Balwant Singh of Benares. Balwant Singh died in 1770, and the Nawāb was compelled by the English to allow his illegitimate son, Chet Singh, to inherit his title and principality. In 1775 the suzerainty of the Benares province was ceded to the British by the Nawāb Wazīr, Asaf-ud-daula. The new government continued Chet Singh in his fief until the year 1781, when he rebelled and was deposed by Warren Hastings.

In 1857 order was preserved till the mutiny at Azamgarh became known on June 3. The fugitives from Azamgarh arrived on that day, and local outbreaks took place. The 65th Native Infantry, however, remained stanch, and 100 European troops on their way to Benares were detained, so that order was tolerably re-established by June 16. No further disturbance occurred till the news of the mutiny at Dinapore arrived on July 27. The 65th then stated their intention of loining Kuar Singh's force; but after the rebel defeat at Arrah they were quietly disarmed, and some European troops were stationed at Ghazipur. No difficulties arose till the siege of Azamgarh was raised in April, when the rebels came flying down the Gogra and across the Ganges to Arrah. The disorderly element again rose, and by the end of June the eastern half of the District was utterly disorganized. In July, 1858, a force was sent to Ballia, which drove the rebels out of the Ganges-Gogra Dosb, while another column cleared the parganas north of the Ganges. The parganar south of the river remained in rebellion till the end of October, when troops were sent across, which expelled the rebels and completely restored order.

The whole District abounds in ancient sites, where antiquities Archaeo-have been discovered ranging from stone celts, through the logs-Buddhist epoch, to the later Hindu period. In particular, a valuable pillar inscription and an inscribed seal of the Gupta kings of Magadha have been found at Burrai, and another inscribed pillar of the same period (now at Benares) at Pahlädpur. A few Muhammadan buildings of interest stand at Bhitri, Ghāzipur, and Saldpur.

Ghazipur contains 7 towns and 2,489 villages. The popurate lation increased between 1872 and 1891; but a series of people adverse seasons from 1893 to 1896 caused a serious decrease in the next decade, chiefly through deaths from fever and migration. The numbers at the four enumerations were as follows: 832,635 (1872), 963,189 (1881), 1,024,753 (1891),

E.F. H.

913,818 (1901). It is probable that the Census of 1872 understated the actual population. More emigrants are supplied to Eastern Bengal and Assum from this District than from any other in the United Provinces. There are four fahrils—Ghāzipur, Muhammadārād, Zamānia, and Saidpur—each named from its head-quarters. The only municipal town is Ghāzi-pur, the District head-quarters. The chief statistics of population in 1901 are given below:—

| | Number of | | noon. | m per | o and | Part . | |
|----------------|-----------|-------|----------|---------|---|-------------------------------|------------------------------|
| Tokett | Area in w | Towns | Villages | Populat | Pupaintie square z | Percents populati tween | Number permina to read |
| Ghürlpur. | 391 | 1 | 524 | 266,873 | 683 | - 164 | 9,317 |
| Muhammadabad | 325 | 2 | 594 | 226,760 | 709 | - 9-9 | 5,365 |
| Zaminia | 381 | 1 | 334 | #37,867 | 624 | - 37 | 8,306 |
| Saidgar | 197 | | 617 | 182,320 | 614 | -11/7 | 5,595 |
| District total | 1,380 | 7 | 2,489 | 913,818 | 658 | - 10-8 | 28,393 |

About 90 per cent, of the population are Hindus and nearly 10 per cent, Musalmans. The District is very thickly populated in all parts. Almost 97 per cent, of the total speak the Bhojpuri dialect of Bihāri¹, and the remainder Hindustani.

Castes and occupations. The most numerous Hindu castes are the Ahirs (graziers and cultivators), 145,000; Chamārs (leather-workers and labourers), 117,000; Rājputs or Chhattrīs, 78,000; Koirīs (cultivators), 66,000; Brāhmans, 63,000; Bhars (labourers), 45,000; Bhuinhārs (agriculturists), 38,000; and Binds (fishermen and cultivators), 28,000. The Bhuinhārs are a high caste, corresponding to the Bābhans of Bihār. The Koirīs, Bhars (an aboriginal race), and Binds (akin to the Kahārs) are found only in the east of the United Provinces and in Bihār. The District is essentially agricultural, 71 per cent. of the population being supported by agriculture, and 5½ per cent. by general labour. Brāhmans, Rājputs or Chhattrīs, and Bhuinhārs own nearly two-thirds of the land, and Musalmāns about one-fifth. The three high castes of Hindus named above cultivate about two-fifths of the area held by tenants, and lower castes about half.

Christian missions. Out of 329 native Christians in 1901, the Anglican communion claimed 111, the Lutherans 63, and Presbyterians 42. The Lutheran Mission has been established at Ghazipur since 1855, and the Zanāna Mission since 1890.

¹ Specimens are given in Journal, Arintic Society of Bengal, 1884, p. 132.

The usual soils are found in the upland areas, varying from General light sandy to loam and clay. In some places, and especitarial control in the east of the District, the soil is black, resembling distorations, the rich black soil of Bundelkhand in its physical qualities. In the wide valley of the Ganges large stretches of rich alluvial soil are found, which produce excellent spring crops without irrigation. The District is within the area in which blight attacks the spring crops.

The ordinary tenures found in the permanently settled Dis Chief agnitricts of the United Provinces exist in Ghāzīpur. Many mahāli statisties are of the variety called complex, and instead of including and pinota single village (manza) or part of a village extend to several pal crops villages. The weakness of joint responsibility, and the large number of co-sharers who desire to collect rent and pay revenue separately instead of through a representative, render the revenue administration very difficult. The main agricultural statistics for 1903-4 are shown below, in square miles:—

| Tahet | | | | Total. | Cultivated. | Irrigand. | Caltivable |
|----------|------|-----|-----|--------|-------------|-----------|------------|
| Ghäripur | 25 | 4/ | | 39T | 236 | :143) | 90 |
| Muhammad | abad | 141 | 41 | 130 | 234 | 8.2 | 38 |
| Zaměnie | Ψ. | 17 | 46 | 381 | 302 | 83 | 16 |
| Sahlpur | | - | 5 | 297 | 186 | 87 | 41 |
| | | To | tal | 1,389 | 958 | 1168 | 181 |

Rice and bariey are the chief food-crops, covering 209 and 230 square miles, or 22 and 24 per cent. of the total cultivated area. Peas and masur (161 square miles), gram (117), kodon (89), arhar (82), wheat (61), and bājra (60) are also largely cultivated. Barley is grown chiefly on the uplands, and pure wheat, pure gram, and mixed wheat and gram in the lowlands. Sugar-cane (35 square miles) and poppy (26) are important crops. Melons are grown in sandy alluvial deposits, and close to Ghāzīpur town 200 or 300 acres of roses supply material for scent.

The area under cultivation increased by about 11 per cent. Improvebetween 1840 and 1880, but there has been no permanent ments in agriculincrease since then, and within the last twenty years no im-tural provements have been noted in agricultural practice. Poppy practice, is more largely grown, and the area under gram has increased; but, on the other hand, indigo cultivation, which was formerly important, is rapidly dying out, and a smaller area is planted with sugar-cane. The cultivation of tobacco for the English. market was introduced at Ghāzipur in 1876, but has been abandoned. Few advances are made under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts. Out of a total of Rs. 60,000 advanced between 1890 and 1900, Rs. 49,000 was lent in the single year 1896-7. In four years since 1900 Rs. 10,000 was advanced.

Cattle, ponies, and sheep,

There is no particular breed of cattle, and the best animals are imported. Two selected bulls are at present maintained by the Court of Wards for the improvement of the local stock. A stud farm was maintained at Ghāzīpur for many years, but was closed about 1873, and only inferior ponies are now bred. Sheep and goats are plentiful, but the breed is not peculiar.

Irrigation:

Out of 365 square miles irrigated in 1903-4, 259 were irrigated from wells, 93 from tanks, and 13 from streams. The rivers are of little use, owing to their depth below the surrounding country. Swamps or jill are used as long as there is any water left in them; but they dry up by December, and then wells take their place. The wells are usually worked by bullocks, which raise water in leathern buckets. Many of the tanks are artificial, but all are of small size. In the rice tracts water is held up by small field embankments. Irrigation is required for the spring crops in all parts, except in the black soil and the alluvial tract.

Minerals.

Kankar is found throughout the District, except in the allovial deposits of the Ganges, and is used for metalling roads and making lime. Saltpetre and carbonate of soda are extracted from saline efflorescences or rek.

Arts aml manufacThere are few manufactures. Sugar is refined, and coarse cotton cloth is woven in small quantities for local use. Grazi-FUR Town, however, contains two important industries—the preparation of opium for export, and the distillation of otto of roses and other perfumes.

Commerce.

The District exports sugar, oilseeds, hides, perfumes, opinm, and occasionally grain; and imports piece-goods, yarn, cotton, salt, spices, and metals. Ghāzīpur town was once the chief trading centre in the eastern portion of the Ganges-Gogra Doab, and also traded with the Districts north of the Gogra and with Nepāl. The opening of the Bengal and North-Western Railway through Gorakhpur deprived it of the trans-Gogra trade, and the Doab traffic has been largely diverted by other branches. River traffic has now decreased considerably, and only bulky goods, such as grain and Mirzāpur stone, are carried by boat. Saidpur, Zamānia, and Ghāzīpur

are the chief trading centres; but the recent milway extensions are changing the direction of commerce.

Ghazipur is now well supplied with railways. For many years Railways the main line of the East Indian Railway, which crosses the and roads. District south of the Ganges, was the only line; a branch was subsequently made from Dildarnagar to Tari Ghat on the Ganges opposite Ghazipur town, as a Provincial railway. Between 1898 and 1904 the tract lying north of the Ganges was opened up by the Bengal and North-Western Railway (metre-gauge), one line running north and south from Benares to Gorakhpur, while another passes east and west from Jaunpur to Ballia, the junction being at Aunrihar. Communications by road are also good. There are \$87 miles of road, of which 96 are metalled. The latter are in charge of the Public Works department, but the cost of maintenance of all but 21 miles is charged to Local funds. The main lines are those from Ghazque town to Gorakhpur (with a branch to Azamgarh), to Benares, and to Buxar. Avenues of trees are maintained on or miles.

The District has suffered from no serious famine since the Famine, commencement of British rule. In 1783 there was great scarcity in the province of Benares, and Hastings described a scene of desolation from Buxar to Benares. Distress was felt in 1873-4 and again more severely in 1877-8; but although relief works were opened, few people came to them. The District suffered from an excess of rain in 1894, and a deficiency in 1895 and 1896. Prices rose very high; but the spring crop of 1897 was very good and the cultivators sold their crops at high prices, while the labouring classes are accustomed to seek employment in distant parts of India.

The Collector is usually assisted by a member of the Indian District.

Civil Service, and by five Deputy-Collectors recruited in India.

An officer of the Opium department is responsible for operations in the District, in addition to the large staff of the factory. A tabsilder is posted at the head-quarters of each tabsil.

There are three District Munsifs, a Sub-Judge, and a Dis-Conttrict Judge for civil work. The District of Ballia is included justice and in the Civil and also in the Sessions Judgeship of Ghazipur. The people of Ghazipur are exceedingly linguous and rather quarrelsome, while the excessive subdivision of land and the large area subject to alluvion and diluvion are the causes of many disputes. Offences against the peace are thus common, and even serious crimes, such as arson, occus frequently. On the other hand, professional dacoity is almost unknown. Land revenue administration.

The District was ceded to the British in 1775 as part of the province of Benares, and its revenue administration was included in that of BENARES DISTRICT up to 1818, when a separate District of Ghazipur was formed. This comprised the present District of Ballia, which was not separated till 1879. The land revenue was permanently settled between 1787 and 1705; and the changes made subsequently have been due to the resumption of revenue-free land, to the assessment of land which had previously escaped, and to alluvion and diluvion. The permanent settlement was made without any survey and did not include the preparation of a record-of-rights. The necessity for both of these operations was obvious, and between 1830 and 1841 a survey was made, on the basis of which a recordof rights was drawn up. At the same time land which had escaped at the permanent settlement was assessed. As the papers prepared between 1840 and 1842 were not periodically corrected, they soon fell into confusion, and an attempt was made in 1863 to revise them. In 1879, however, a complete revenue resurvey was carried out, and a revised record was subsequently prepared which has had a very beneficial effect in settling disputes. Annual papers are now maintained by the patteriri, as in the rest of the Provinces. The revenue assessed in 1703 was 8-5 lakhs; and the demand for 1903-4 was 10-3 lakhs, falling at the rate of Rs. 1-4 per acre over the whole District, and varying from R. 1 to Rs. 2 in different parganas. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees :-

| 1 - 27 - | (890+t | 1500-ti | 1600-ti. | 1905-4 | |
|----------------|--------|---------|----------|--------|--|
| Land revenue . | 10,51 | 10,48 | 10,37 | 10,14 | |
| Total revenue | 14,00 | 16,49 | 16,01 | 15,41 | |

Local selfgovernment.

There is only one municipality, Ghāzīpur, but five towns are administered under Act XX of 1856. Outside the limits of these, local affairs are managed by the District board, which had in 1903-4 a total income of Rs. 98,000, of which Rs. 42,000 was derived from local rates. The expenditure was a lakh, including Rs. 56,000 spent on roads and buildings.

Police and jails.

The District Superintendent of police has a force of 3 inspectors, 77 subordinate officers, and 313 constables, distributed in 15 police stations, besides a force of 130 municipal and town police, and 1,653 rural and road police. The

District jail, which also accommodates prisoners from Ballia, had a daily average of 435 inmates in 1903.

The population of Ghazipur compares fairly well with other Education. Districts as regards literacy, 3.2 per cent. (6-2 males and 0-2 females) being able to read and write in 1901. In the case of Musalmans, the proportion rises to 4-3 per cent. The number of public schools increased from 123 with 5,133 pupils in 1880-1 to 182 with 8,712 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 202 such schools with 10,449 pupils, of whom 447 were girls, besides 50 private schools with 257 pupils. One of the public schools is managed by Government, and 102 by the District and municipal boards. Out of a total expenditure on education of Rs. 40,000, Local funds provided Rs. 40,000, and fees Rs. 2,100.

There are eight hospitals and dispensaries, with accommoda-Hospitals tion for seventy-two in-patients. In 1903 the number of cases and distreated was 59,000, including 1,400 in-patients, and 3,500 operations were performed. The total expenditure was Rs. 11,000

from Local funds.

About 24,000 persons were successfully varyinated in 1903-4. Vaccinarepresenting a proportion of 26 per 1,000 of population. Vac. tios. cination is compulsory only in the municipality of Ghazipur.

(W. Oldham, Memoir on Ghazcepoor District, 1870 and 1876; District Gasetteer, 1884 [under revision]; W. Irvine,

Report on Revision of Records, Ghazipur, 1886.)

Ghazipur Tahsil.-Head-quarters taksil of Ghazipur District, United Provinces, comprising the parganas of Ghastpur, Pachotar, and Shadiabad, and lying north of the Ganges between 25° 23' and 25° 53' N. and 83° 16' and 83° 43' E. with an area of 391 square miles. Population fell from 319,385 in 1891 to 266,871 in 1901, the rate of decrease being nearly 20 per cent. There are 824 villages and only one town, GRAZIPUR, the District and tahsil head-quarters (population, 39,429). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,66,000, and for cesses Rs. 49,000. The density of population, 683 persons per square mile, is slightly above the District average. Besides the Ganges, the Gangt, Besti, and Mangai drain the taksil, flowing across it from north-west to south-east. In the northern portions rice is targely grown, and there are considerable tracts of barren avar land from which carbonate of soda (sajji) is collected. The area under cultivation in 1903-4 was 236 square miles, of which 143 were irrigated. Wells supply nine-tenths of the irrigated area, and tanks the remainder.

Muhammadābād Tahsīl. - Eastern tahul of Ghāzīpur District, United Provinces, comprising the parganas of Zaharabad, Muhammadahad, and Dehma, and lying north of the Ganges, between 25° 31' and 25° 54' N. and 83° 36' and 83° 58' E., with an area of 320 square miles. Population fell from 251,823 in 1801 to 226,760 in 1901. There are 604 villages and two towns, including MUHAMMADABAD, the takill headquarters (population, 7,270). The demand for land revenue in 1003-4 was Rs. 2.41,000, and for cesses Rs. 45,000. The density of population, 700 persons per square mile, is the highest in the District. Through the centre of the tahul flows the Mangai, and the Chhorf Sarjū crosses the north. Rice and sugar-cane are largely grown in the northern portion, where thill and tanks abound, while spring crops are the staple in the south, which includes a large area of alluvial soil and forms one of the most fertile tracts in the District. The area under cultivation in 1903-4 was 234 square miles, of which 82 were irrigated. Wells supply about eight-ninths of the irrigated area, and tanks most of the remainder.

Zamānia Tahsil,-Southern tahsil of Ghāzīpur District, United Provinces, comprising the parganas of Zamānia and Mahaich, and lying south of the Ganges and north of the Karamnāsā, between 25° 19' and 25° 36' N. and 83° 15' and 8xº 52' E., with an area of 381 square miles. Population fell from 246,030 in 1891 to 237,867 in 1901, the rate of decrease (4 per cent.) being the lowest in the District. There are 354 villages and two towns: Bara (population, 5, 260), and ZAMARIA. the tahail head quarters (5,252). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,41,000, and for cesses Rs. 52,000. The density of population, 624 persons per square mile, is slightly below the District average. In the north is a large area of rich alluvial soil, which requires no irrigation and contains some exceptionally fertile fields where poppy is largely. grown. Near the Karamnasa black soil is found, in which likewise irrigation is not required. The area under cultivation in 1903-4 was 302 square miles, of which 53 were irrigated. The irrigated area lies chiefly in the west and centre of the taksil, and is supplied almost entirely by wells.

Saldpur Tahsil.—Western tahsil of Ghazpur District, United Provinces, comprising the parganas of Saidpur, Bahri-ahad, Khanpur, and Karanda, and lying north of the Ganges, between 25° 28' and 25° 46' N. and 83° 4' and 83° 26' E., with an area of 297 square miles. Population fell from 206,615 in 1891 to 182,320 in 1901. There are 617 villages and two

towns, of which Sampus, the Likeli head-quarters, has a population of 4,260. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,75,000, and for casses Rs. 39,000. The density of population, 614 persons per square mile, is the lowest in the District. Besides the Ganges and Guntt, the chief drainage channel is the Gangt, which flows from north-west to southeast. In the south-east comer lies a fine stretch of rich allowed land, while towards the north the soil is a heavy clay, where rice is grown. Elsewhere the ordinary loam is found. The area under cultivation in 1903-4 was 186 square miles, of which 87 were irrigated, chiefly from wells.

Bara.—Town in the Zamānia tahsil of Ghāzīpur District, United Provinces, situated in 25° 31' N. and 83° 52' E., on the Ganges, 18 miles south-east of Ghāzīpur town. Population (1901), 5,260. Bāra is a long, narrow, straggling town at the confluence of the Karamnāsā with the Ganges. Close by, on the banks of the smaller river, was fought the bank, usually known as Chausā Ghāt, between Humāyān and Sher Shāh in 1539, which ended in the defeat and flight of the former. There are some old Hindu temples and a spacious idgih. Bāra has no trade; it contains two schools with about 77 punils, of whom 22 are girls.

Bhitri.—Village in the Saidpur tahtil of Ghazipur District, United Provinces, situated in 25° 34' N. and 83° 17' E., 3 miles north-east of Saidpur-Bhitri station on the Bengal and North-Western Railway. The place is important for the archaeological remains that have been found. A red sandstone pillar, consisting of a single block 28½ feet in beight, stands near a large mound and bears an undated inscription of Skanda Gupta of Magadha! A still more important inscription was found on a seal at the same place, which gives the genealogy of nine generations of the Gupta kings?. A modern mosque in the village has been largely built from fragments of ancient sculptures found in the neighbourhood. A fine bridge over the Gaingl here dates from the fifteenth century, when it was built by one of the kings of Jaumpar. Bhitri contains an aided primary school with 79 pupils.

Ghāzipur Town.—Head-quarters of the District and taksil of the same name, United Provinces, situated in 25° 35° N. and 83° 36' E., on the left bank of the Ganges, and on a branch of the Bengal and North-Western Railway, and also connected by a steam ferry with the terminus of a branch of the East

¹ J. F. Fleet, Gupta Inscriptions, p. 52.

¹ Journal, Ariatic Society of Bengul, 1889, pp. 84 and 88.

Indian Railway on the opposite side of the river. Population (1901), 39,429. The town was founded, according to Hindu tradition, by Rājā Gādh, an eponymous hero, from whom it took the name of Gadhipur; but it more probably derives its name from the Saiyid chief, Masud, whose title was Malik-us-Sadat Ghāzī. Masūd defeated the local Rājā and founded Ghāzīput about 1330. For its later history and Mutiny narrative see GHAZIPUR DISTRICT. The town stretches along the bank of the Ganges for nearly 2 miles, with a breadth from north to south of about three-quarters of a mile. The massive walls of the old palace, called the Chahal Situn or 'forty pillars,' the numerous masonry ghots, and a mud fort form striking features in the appearance of the river front. Masud's tomb and that of his son are plain buildings; and the only other antiquities are the tank and tomb of Pahar Khan, governor in 1580, and the garden, tank, and tomb of Abdullah, governor in the eighteenth century. Abdullah's palace, which was still intact at the time of Bishop Heber's visit, is now in ruins, though a gateway still remains. 'The tomb of Lord Cornwallis, who died here in 1805, consists of a domed quasi-Grecian building with a marble statue by Flaxman. Ghazipur is the beadquarters of the Opium Agent for the United Provinces, and the opium factory is situated here, to which are consigned the poppy products, opium leaf, and trash of all the Districts in the United Provinces. The factory occupies an area of about as acres, and its main function is to prepare opium for the China market, where it is known as Benares opium. Opium for consumption in the United Provinces, the Punjab, Central Provinces, and part of the supply for Bengal, Assam, and Burma are also prepared here, besides morphia and its salts, and codeia for the Medical department in all parts of India. During the busy season, from April to June, about 3,500 hands are employed daily; while at other times the number varies from 300 to 2,000. Ghāzīpur was constituted a municipality in 1867. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 40,000 and Rs. 30,000 respectively. In 1903-4 the income was Rs. 45,000, chiefly from octroi (Rs. 31,000) and rents (Rs. 6,000). The expenditure in the same year was Rs. 46,000. The town is no longer an important trade centre, as the tract north of the Ganges, which it formerly served, is now traversed by railways. Besides the manufacture of opium, the chief industry is that of scent-distilling. Roses are grown close to the town, and rose-water and otto of roses are largely manufactured. There are about fourteen schools

attended by \$,400 pupils. Ghāzīpur is the head-quarters of the Lutheran Mission in the District, and contains male and female dispensaries.

Muhammadābād Town.—Head-quarters of the taksil of the same name in Ghāzīpur District, United Provinces, situated in 25° 37' N. and 83° 47' E., on the Bengal and North-Western Bailway and close to the road from Ghāzīpur town to Burar. Population (1901), 7,270. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,500. It contains one tolerably straight thoroughfare, lined with well-built shops and houses, and wears a neat and clean appearance. A weekly bazaar is held, and a flourishing export trade in grain is springing up. Besides the ordinary public offices, there are a dispensary, a munsifi, and two schools with 184 pupils.

Saidpur Town.—Head-quarters of the tahril of the same name in Ghazipur District, United Provinces, situated in \$5° 32′ N. and 83° 13′ E., on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 4,200. Nothing is known of the history of Saidpur, but it contains remains of great interest. In the town itself are two Musalman dargahs constructed from Hindu or Buddhist pillars, if they were not actually chailwas attached to a vihāra or monastery. Large mounts exist in the neighbourhood, which undoubtedly conceal ancient buildings. Saidpur is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,400. There is a considerable trade in oilseeds, tobacco, cotton, hides, and saijā, or carbonate of soda. The town also contains a dispensary, and a school with about 140 pupils.

(Journal, Asiatic Society of Bengal, xxxiv, pages 80-2.)

Zamānia Town.—Head quarters of the tahiil of the same name in Ghāzipur District, United Provinces, situated in 25° 23' N. and 83° 34' E., 2 miles north-east of the Zamānia station on the East Indian Railway. Population (1901), 5,252. The town was founded in 1560 by Ali Kuli Khān, and named after his title of Khān Zamān. Two hundred years later it was burnt by Fazl Ali and remained deserted for some years. According to Hindu tradition it derives its name from the 118hi Jamadagni. A massive pillar, about 20 feet high, stands on a heap of ruins south-east of Zamānia, but bears no inscription. Zamānia is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,100. It has some trade in sugar and rice. There are three schools with 170 pupils, of whom 20 are girls.

Boone. figuration, and river system.

Ballia District (Raliya).-Eastern District of the Benares daries, com- Division, United Provinces, lying between 25° 32' and 26° 11' N. and between 83° 38' and 84° 39' E., with an area of 1,245 square miles. It consists of a wedge-shaped tract of country forming the eastern extremity of the Ganges-Gogra Doah. It is bounded on the north-east by the Gogra, which separates it from Gorakhpur and from the Saran District of Bengal; on the south by the Ganges, which divides it from the Bengal District of Shahabad; and on the west by Azamgarh and Ghazipur. Ballia may be divided into two almost equal areas: the modern alluvial formation which lies along the banks of the Ganges and Gogra, especially the former; and the uplands in the centre and west, which consist of alluvium deposited in past ages. The meeting of these two areas takes place by a gentle slope, and there is no prominent ridge. Every part of the District is highly cultivated and thickly populated. The Ganges and Gogra are the chief rivers, and every year carry on a continual process of destruction and renewal. At each bend the concave bank is being eroded, while the opposite shore receives a new alluvial deposit to fill up the void left by the receding river. After a period of years the process is reversed, or the river suddenly cuts a new bed for itself. Besides the Ganges and Gogra, the only river of importance is the Chhott or Lesser Sariū, a branch from the Gogra, which leaves that river in Azamgarh, and joins the Ganges a little to the west of Ballia town. It forms approximately the boundary between this District and Ghazipur in the upper part of its course. The SURANA TAL, the largest perennial lake, is connected with the Ganges by a narrow deep channel, the Katihar Nadi, which admits the Ganges floods in the rainy season and drains the lake when the river falls again.

Geology-

The whole District contains no rock formation; but the older alluvium is distinguished from the new by the prevalence of kankar or nodular limestone.

Sotany.

The flora of the District presents no peculiarity. The upland area is well wooded, and mango groves abound in great profusion. In the alluvial soil liable to be inundated the babul (Acacia arabica) is the principal tree. The toddy palm (Borassus flubelliformis) is very common in the west of the District. There is very little jungle; but where waste exists the dhik (Button frondosa) is found, while on the banks of the rivers tall grasses and tamarisk form a refuge for wild hog.

The wild animals of Ballia are not important, owing to the

Francis.

density of population. Nilgai and wild hog are, however, found in the grass jungles near the rivers. Wild-fowl of numerous kinds frequent the lakes. Fish are plentiful in the rivers and pends, and are much used for food. The fishing rights in the lower reaches of the Chhorl Sariū belong to Government.

Ballia resembles the border Districts of Ghazipur and Climste Azamgarh in climate. Extremes of heat and cold are less and temthan in the more western Districts, but to European constitutions and also to the natives of drier tracts the climate is relaxing.

The average annual rainfall is 42 inches, equally distributed Rainfall. in all parts. The rainy season commences early, and as a rule

lasts longer than in the Districts farther west.

There is no material for a history of the District, which only History became a separate entity in 1879. Many ancient mounds and and archaeruined forts exist, which are generally assigned by the people to the Bhars and Cherus, who are said to have held the tract before the Musalman conquest. Some of them probably contain Buddhist remains, and attempts have been made to identify sites visited by the Chinese pilgrims. Ballia was no doubt included in the early Hindu kingdom of Magapita, and a thousand years later in the Musalman kingdom of Jaunpur, Under Akbar it belonged to the Subahs of Allahabad and Bihar. In the eighteenth century it became included in the territory subject to the Raja of Benares. The Doaba pargana was ceded to the British as part of Bihar in 1765, and the rest of the District in 1775. Up to 1879 Ballia was included first in Benares, and then in GHAZIPUR DISTRICT. In 1893, when a wave of fanaticism spread over the east of the United Provinces, and riots took place about the slaughter of kine by Musalmans, the Hindus of this District took a prominent part in the movement.

Ballia contains 13 towns and 1,784 villages. Its popula-Tie tion increased between 1872 and 1891, but decreased in the People. next decade. The numbers at the four enumerations were as follows: 726,791 (1872): 975,673 (1881); 995,327 (1891); 987,768 (1901). The Census of 1872 probably understated the population, while in 1894 a serious outbreak of fever took place. The District supplies large numbers of emigrants to Eastern Bengal and to Assam. There are three tahsils-BALLIA, RASRA, and BANSDIH-each named from its headquarters. The municipality of BALLIA, the District headquarters, is the principal town.

The following table gives the chief statistics of population in 1901:-

| | | page. | Nan | iber of | The state of | 14 | Take. | を発音 | |
|---|----------------|---------------------|-------|------------|--------------------|-----------------------|--|----------------------------------|--|
| | Tuhill. | Area in eq miles | Towns | Villagen | Populati | Population spare n | Percental variation population (want to | Number persons u to read a | |
| | Balliii | 441 | 6 | 572 697 | 405,613 188,726 | 990 666 | - 0-1 - 6-3 | 6,065 | |
| ١ | Binefile | 371 | 5 | 315 | 293,919 | 793 | + 4-4 | 8,236 | |
| Į | District total | 1,745 | 13 | 1,754 | 987,768 | 793 | - 0-8 | 31,938 | |

About 93 per cent. of the population are Hindus and nearly 7 per cent. Musalmans. The decrease in population between 1891 and 1901 was much less than in the adjoining Districts, while the density is higher than in any District in the Provinces except Benares. More than 99 per cent. of the population speak Bihāri, the prevailing dialect being Bhojpuri.

Castes and occupations. The most numerous Hindu castes are: Rājputs or Chhattrīs, 129,000; Brāhmans, 117,000; Ahīrs (graziers and cultivators), 111,000; Chamārs (leather-workers and labourers), 90,000; Koirīs (cultivators), 64,000; Bhars (cultivators), 50,000; Baniās, 42,000; and Bhuinhārs (agriculturists), 31,000. The Bhars are an aboriginal race chiefly found in the Benares Division. The Dusādhs, 17,000, are noteworthy as supplying large numbers of village policemen and also of professional criminals. Among Musalmāns are Julāhās (weavers), 33,000, and Shaikhs, 8,000. About two-thirds of the total area is held by Rājputs or Chhattrīs, who also cultivate a very large proportion. The District is essentially agricultural, 67 per cent. of the population being supported by agriculture, and nearly 7 per cent. by general labour,

Christian missions. There were no missions in the District up to 1903, and only four native Christians were enumerated in 1901. A mission has now been opened by a Society called the Christian Church Workers of Canada.

General agricultural conclitions. The upland and lowland areas present strikingly different features. In the former rice is the most important crop, covering about half of the area sown with autumn crops. The spring crop area varies considerably from year to year, being greatest when there has been heavy rain early in October. In the lowlands, however, the spring crops are more important than the autumn crops. Wheat, gram, peas, and barley are grown here. There is little rice in this tract, maize and small millets being the principal autumn crops, and they can often be harvested before the flood sets in. The annual deposits of the Ganges are usually very productive; but those of the Gogm are sandy, and sometimes quite infertile. In wet or cloudy winters the spring crops are very liable to rust.

The ordinary tenures existing in the permanently settled Chief agri-Districts of the United Provinces are found in Ballia. A statistics tenure called ganwadh is peculiar to this District. It consists and princiin the grant by a samindar of a village or part of a village at pal crops. a fixed rent in perpetuity, the grant being generally for some consideration. These grants were originally made to Brahmans only. Complex mahals extending to parts of a number of villages are very common, and the possession of a considerable tract of country by a clan of Rajputs was a prominent feature in the early history of British rule. The main agricultural statistics for 1903-4 are shown below, in square miles :-

| Ticket. | | | | Total | Cultivated | Irrigated. | Cultivable watte. | |
|----------------------------------|-----|-------|-----|-------------------|-------------------|-----------------|----------------------|--|
| Balliii . Rasrii . Banadih | 0 0 | 2 2 2 | 20 | 441 433 371 | 327 270 256 | 47 167 02 | ## 66 #3 | |
| patterning. | | | eal | 1,245 | 813 | 306 | 111 | |

Kodon and other small millets covered 146 square miles, barley 193, rice 143, peas 147, and gram 121. Other foodcrops of importance are maize, arhar, and wheat. Sugar-cane is a most valuable crop covering 58 square miles, and poppy is grown on 6 square miles.

Before the permanent settlement, a good deal of the District Improvewas waste, but improved administration soon led to extended arriculcultivation, and at the first preparation of records in 1840 it was taral found that the District had become fully cultivated. There has practice. been little extension since that date. Agricultural methods show no change. Very small advances are made in ordinary years under the Agriculturists' Loans Act, and still smaller under the Land Improvement Act. Out of a total of Rs. 46,000 advanced during the ten years ending 1900, the advances in two years amounted to Rs. 35,000. In the next four years only Rs. 520 was lent.

The cattle of the District are of a poor type, and the best ponies, animals are all imported or purchased at the large fair held and sheep.

near Ballia town. Horse-breeding operations under the Government Stud department were formerly carried on in and near the District at Korantadth, Buxar, and Ghaupur, and at that time the Government stallions were used by the zamindars. Since the abolition of the stud, about 1873, there has been a decline, but small ponies are still bred for sale in the neighbourhood. The sheep and goats are generally inferior.

Irrigation.

Out of 306 square miles irrigated in 1903-4, 232 were irrigated from wells, 44 from tanks and jhils, and 30 from other sources. Irrigation is required chiefly in the upland area, and wells are by far the most important source of supply. Rice land, however, is largely kept moist by small field embankments which hold up rain water. Artificial tanks are very numerous, but all are small excavations. Ponds and jhils or swamps are made use of as long as water remains in them. The only stream used to an appreciable extent is the Katihār Nadi, which is dammed at several places, and admits Ganges water to the Surahā Tāl during the rains. In the uplands water is raised from wells in leathern buckets drawn by bullocks, Where the water-level is higher, the lever (dhenkli) is used, and the swing-basket is the usual means of lifting water from tanks or jhils and streams.

Minerals.

Kankar or nodular limestone occurs in the upland area, and is used for making lime and metalling roads. Saline efflorescences (reh) are found in the west of the District, and large quantities of salipetre and carbonate of soda are manufactured.

Arts and manufactures. The most considerable industry is sugar-refining, after indigenous methods, and the raw material is sometimes imported from Shāhābād. Coarse cotton cloth is woven in many villages, chiefly for local use. A little indigo is made, but this industry is fast disappearing.

Commerce.

The principal article of trade is sugar, which is exported largely to Bengal, and also to Rājputāna and Bombay. Oil-seeds, gram, wheat, saltpetre, carbonate of soda, and a little coarse cloth are exported, chiefly to Bengal; and the imports are rice, spices, piece-goods, salt, and metals. River traffic has survived in this District, especially on the Gogra and Chhott Sarjū, but it seems probable that the railway extensions recently made will capture a great deal of the trade. Balliā, Majhauwā, Maniar, Belthrā, and a village near Rasrā are the chief ports. A great deal of trade, especially in cattle and pomies, is carried on at the annual fair held at Balliā, and many small towns and villages play an important part in the trade of the District.

A branch of the Bengal and North-Western Railway from Railways Man in Azamgarh passes through the District from west to and roads. east, where its terminus is situated near the bank of the Gogra; another branch from Jaumpur and Ghazīpur joins this at Phepna. The Benares-Gorakhpur branch of the same railway traverses the north-west, crossing the Gogra by a bridge at Turnpar, There are 414 miles of roads, of which 52 are metalled. The latter are maintained by the Public Works department, but the cost of all but o miles is charged to Local funds. Avenues of trees have been planted along 88 miles. The chief routes are from Ballia town to Ghazpur, with a branch from Phepna to Rasra, and from Ballia to Bansdih; the other metalled roads are chiefly short feeders to the railway.

Ballia has suffered very little from scarcities. The south Famine. and east of the District are able to produce excellent spring crops after being flooded by the Ganges, and water can always be obtained from temporary wells. In 1896-7 this tract was hardly affected, and even in the west of the District nothing worse than scarcity was felt. No relief works were required in

any part.

The Collector is usually assisted by four Deputy-Collectors District recruited in India. Besides the ordinary members of the Dis-staff. trict staff, an officer of the Opium department is stationed at Ballia. There is a tahsildar at the head-quarters of each tahsil.

Civil work is dealt with by two Munsifs, and the District lies Civil within the civil and criminal jurisdiction of the Judge of crime. Ghāzīpur. Balliā bears an unenviable reputation for the litigious and quarrelsome nature of its inhabitants. Affrays, and even murders, arising from disputes about the changes made by the rivers, are more common than in most Districts of the United Provinces. The more serious offences against property are, however, infrequent, though the Dusadhs have a bad reputation as thieves and burglars, and the District is the home of many pickpockets and river-thieves who ply their trade elsewhere.

Pargana Doaba was acquired in 1765 with Bihar, and the Land rest of the District in 1775 with the province of Benares adminis-Doaba was administered as part of Shahanap District in tration. Bengal till 1818, when it was transferred to BENARES DISTRICT, which at that time included Ballia. Shortly afterwards GHAZI-PUR DISTRICT, including Ballia, was separated from Benares, and in 1832 and 1837 portions of the present Ballia District were added to Azamgarh. Three parganas formed a separate sub-

division of Ghaspur, administered by a member of the Indian Civil Service posted at Ballia. In 1879 a separate District was formed, and in 1894 a considerable area was added from Ghanpur. The whole District was thus permanently settled, in either Shāhābād or Benares, before the close of the eighteenth century. A striking feature in the fiscal history of the District has been the tenacity with which the great landholding clans of Raiputs have maintained their hold on the land, in spite of nominal sales. This was facilitated by the fact that the permanent settlement was carried out without any attempt to record completely all interests in the land. The defect was remedied by a detailed survey, and the preparation of a recordof-rights at various times between 1837 and 1841. The records of the portion of the District included in Azamgarh were revised at the resettlements made in that District. the greater part, however, the record was not periodically corrected, and soon became obsolete. In 1867-q it was partially revised. At the same time village papers were prepared for the Lakhnesar pargana, for which no records of any sort existed. Shortly after the formation of a separate District a new revision was commenced, which was completed in 1885, and records are now maintained as in the rest of the Provinces. The present revenue demand is 6.8 lakhs, or about R. 1 per acre, varying in different parganas from Rs. o-8 to Rs. 1-5-Collections on account of land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees :-

| | 1830: L | 1890-1 | 1900-1- | 1005-4- | |
|--------------------------------|--------------|---------------|---------------|---------|--|
| Land revenue . Total revenue . | 6,13 7,85 | 6,36 10,33 | 5,45 11,26 | 6,64 | |

Local selfgovernment.

The only municipality is BALLIA town, but eight towns are administered under Act XX of 1856. Outside the limits of these, local affairs are managed by the District board, which had an income in 1903-4 of Rs. 86,000, of which Rs. 35,000 was derived from local rates and Rs. 25,000 from ferries. The expenditure was Rs. 96,000, including Rs. 51,000 spent on roads and buildings.

Police and jalls.

The District Superintendent of police has a force of 3 inspectors, 79 subordinate officers, and 274 constables, distributed in 12 police stations. There are also 119 municipal and town police, and 1,370 rural and road police. The District gaol contained on the average 50 inmates in 1903.

but prisoners sentenced for long terms are transferred to Ghazipur or to a Central lail.

The District stands fairly high as regards the literacy of its Education. inhabitants, of whom 3-2 per cent. (6-6 males and 0-1 females) could read and write in 1901. The number of public schools has increased from 74 with 2,801 pupils in 1880-1 to 123 with 6,600 pupils in 1900-1, but part of this increase is due to additions to the District area. In 1903-4 there were 151 public schools with 7,423 pupils, all of whom were boys, besides as private schools with 400 pupils. Only 455 pupils in both classes of schools were beyond the primary stage. One school was managed by Government, and 106 by the District and municipal boards. Out of a total expenditure on education of Rs. 30,000, Local funds contributed Rs. 32,000 and fees Rs. 6,000.

There are 5 hospitals and dispensaries, with accommoda-Hospitals tion for 32 in-patients. In 1903 the number of cases treated pensaries. was 39,000, including 401 in-patients, and 3,256 operations were performed. The total cost was Rs. 7,600, chiefly met from Local funds.

About 43,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4. Vaccinarepresenting the high proportion of 44 per 1,000 of popul tion. lation. Vaccination is compulsory only in the municipality of Ballin.

[District Gazetteer, 1884 (under revision); D. T. Roberts,

Report on Revision of Records, Ballia District, 1886.]

Ballia Tahsil (Baliya).-Southern tahsil of Ballia District, United Provinces, comprising the parganas of Ballia, Doaba, Kopachit (East), and Garha, and lying between 250 33' and 25° 36' N. and 83° 55' and 84° 39' E., with an area of 441 square miles. Population fell from 406,151 in 1891 to 405,623 in 1901. There are 572 villages and six towns, including BALLLA, the District and tahsil head-marters (population, 15,278), CHIT FIROZPUR OF BARAGAON (9,505), BAIRTA (8,635), BHALSAND (5,727), and NARHI (6,462). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 311,000, and for cesses Rs. 60,000. The density of population, 920 persons per square mile, is the highest in the District. The taksil lies along the northern bank of the Ganges, with its castern extremity enclosed between the Ganges and the Gogm. It is noted for its fertility, the soil being of modern alluvial formation, and a large portion being subject to annual inundation by the Ganges. The area under cultivation in 1903-4 was 327 square miles, of which only 47 were irrigated, almost entirely from wells and

from the Katihar Nadt. The rich alluvial soil in the river bed

does not require irrigation.

Rasra Tahsil -- Western tahsil of Ballia District, United Provinces, comprising the parganas of Lakhnesar, Sikandarpur (West), Kopichit (West), and Bhadaon, and lying between 25° 46' and 26° 11' N. and 83° 38' and 84° 3' E., with an area of 433 square miles. Population fell from 307,645 in 1891 to \$88,226 in 1901, the decrease being the most considerable in the District. There are 697 villages and two towns, including RASRA, the takiil head-quarters (population, 9,896). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,97,000, and for cesses Rs. 54,000. The density of population, 666 persons per square mile, is the lowest in the District. The tahsil stretches from the Gogra on the north to the Chhoti Sarju on the south, and is also drained by the Budht or Lakhra, a small stream. Sugar-cane and rice are more largely grown here than in other parts of the District. The area under cultivation in 1903-4 was 270 square miles, of which 167 were irrigated. Wells supply about four-fifths of the irrigated area, and tanks and streams most of the remainder.

Bansdih Tahsil.-North-central tahül of Ballif District, United Provinces, comprising the pargamus of Kharid and Sikandarpur (East), and lying south of the Gogra between 25° 47' and 26° 7' N. and 83° 54' and 84° 37' E., with an area of 371 square miles. Population increased from 281,531 in 1891 to 293,919 in 1901. There are 515 villages and five towns : Sanatwas (population, 10,784), Bansoin, the takiil headquarters (10,024), MANIAR (9,483), REOTI (8,631), and SIKAN-DARPUR (7,414). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,74,000, and for cesses Rs. 47,000. The density of population, 792 persons per square mile, is about the District average. The taksil is much intersected by side channels from the Gogra, and a considerable portion is flooded annually. The area under cultivation in 1903-4 was 256 square miles, of which 92 were irrigated. Irrigation is more required in this takiil than in the alluvial tract bordering on the Ganges. Wells supply about eight-ninths of the irrigated area, and tanks and streams the remainder.

Bairiā.—Town in the District of Ballia, United Provinces, situated in 25° 46′ N. and 84° 29′ E., 20 miles east of Ballia town, on the road to Chāpra in Bengal. Population (1901), 8,635. The town is little more than a conglomeration of mud-built houses, traversed from east to west by one good street. It is administered under Act XX of 1856, with

an annual income of about Rs. 1,100. There is a considerable export trade in sugar and coarse cotton cloth, which are manufactured here, and the shoes made locally have some reputation in the surrounding Districts. Bairia contains a

dispensary and a town school with 116 pupils.

Bailia Town (Baliya).—Head-quarters of the District and taktil of the same name, United Provinces, situated in 250 44' N. and 84° 10' E., on the north bank of the Ganges, and on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 15,278. The name of the town is popularly derived from Vālmiki, the poet; but it has no history, though an attempt has been made to identify it with some of the remains visited by the Chinese pilgrims. The old town of Ballia was almost entirely destroyed by the erosive action of the Ganges between 1873 and 1877. Houses and offices were built on a new site; but the river still cut away the bank, and in 1894 the head-quarters were removed to Korantadih. A new civil station was then laid out a mile from the Ganges, and occupied in 1900. Ballia contains the usual public offices and a hospital and several schools. It has been a municipality since 1871. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 10,500. In 1903-4 the income was Rs. 23,000, chiefly derived from a tax on circumstances and property (Rs. 5,000) and receipts at fairs (Rs. 12,000); and the expenditure was Rs. 23,000. Sugar and cloth are manufactured; and the town is one of the chief trade centres in the District, oilseeds and ghi being exported, and rice, piece goods, metals, and salt being imported. Ballia is noted for the great Dadri fair held annually on the full moon of Kārtik (October-November). The attendance reaches 500,000 to 600,000 in favourable years, and a large trade is done in cattle and in miscellaneous goods. Small charges levied from the dealers form the greater part of the municipal income. The municipality manages I school and aids II others with a total attendance of 570; besides the District school with 180 pupils.

Bansdih Town,-Head-quarters of the tahiil of the same name in Ballia District, United Provinces, attuated in 25° 53' N. and 84° 14' E., to miles north of Ballia town. Population (1901), 10,024. The town formerly belonged to Naraulia Rajputs, whose possessions have been bought up by the Bhuinhars. It is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 1,200. Besides the ordinary offices, Banadih contains a dispensary and a town school with 84

pupils. There is little or no trade.

Bhālsand (or Bharsand).—Town in the faistil and District of Ballia, United Provinces, situated in 25° 43' N. and 84° 16' E., 6 miles east of Ballia town. Population (1901), 5,777. The place is said to be of great antiquity, having been founded by a Rājā of Haidt early in the twelfth century. There is a small manufacture of coarse cloth. The school has 128 pupils.

Chit Firozpur (also called Baragaon).—Town in Ballia District, United Provinces, situated in 25° 45' N. and 84° E., on the right bank of the Chhoti Sarjii. Population (1901), 9,505. This is the centre of the Kausik Rajputs, but is merely a callection of mud houses, without regular streets. There are two large tanks, one of which is of masonry throughout and is the finest in the District. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,400. There is a school with 55 pupils.

Haldi.—Town in the Rasra tukell of Ballia District, United Provinces, situated in 26° 6' N. and 83° 56' E., on the right bank of the Gogra. Population (1901), 5,269. Haldi is the head-quarters of the tract originally owned by the Chaubana Răjputs. It has a considerable trade in timber, imported from

the Gorakhpur forests. The school has 56 pupils.

Maniar.—Town in the Bansdih tahuit of Ballia District, United Provinces, situated in 25° 59' N. and 84° 11' E., on the right hank of the Gogra. Population (1901), 9,483. The houses of Maniar cluster round high artificial mounds, formerly the sites of the fortified residences of the principal zamindärs, but now waste and bare. It has no main thoroughfares, not does it possess any public buildings. Its importance is derived from its position as a port on the Gogra, through which rice and other grains are imported from Gorakhpur, Basti, and Nepāl, while sugar and coarse cotton cloth of local manufacture and oilseeds are experted to Bengal. Maniar is administered under Act XX of 1856, with an annual income of Ra. 1,500. There is a school with 50 pupils.

Narhl.—Town in the taksil and District of Ballia, United Provinces, situated in 25° 42′ N. and 84° 2′ E., on the road from Korantadih to Ballia town. Population (1901), 6,462. Narhi is merely an overgrown village, and its inhabitants have a bad reputation for harbouring criminals. They are chiefly Bhuinhars, who have lost their proprietary rights, but still refuse to pay rent to the Dummon Estate which has acquired them. There is a school with 42 pupils.

Rasra Town.-Head-quarters of the takili of the same

name in Ballia District, United Provinces, situated in 25° 51' N. and 83° 52' E., on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 9,896. Rasra is a thriving, well-laid-out town, and is commercially the most important place in the District. It is the head-quarters of the Sengar Răjputs, and contains a large tank surrounded by a grove sacred to Nath Babs, their patron saint. Near the tank are some scores of earthen mounds which are memorials of satis. administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,400. Sugar, hides, and carbonate of soda are exported, and cotton cloth, iron, and spices are imported for local distribution. During the rains a good deal of traffic passes by the Chhoti Sarjū. The town contains a dispensary, and a school with about 80 pupils.

Recti.—Town in the Bansdih tahtif of Ballia District, United Provinces, situated in 25° 51' N. and 84° 24' E., on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 8,631. Reott is the head-quarters of the Nikumbh Rajputs, but these have lost most of their property, and the town presents a dirty and overcrowded appearance. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of Rs. 1,000. Coarse cotton cloth, shoes, and palanquins are manufactured, but there is little trade

besides. The school has 50 pupils.

Sahatwar (also called Mahatwar and Mahatpal).— Town in the Bansdih taksil of Ballia District, United Provinces, situated in 25° 50' N. and 84° 19' E., on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 10,784. The town is said to have been founded by one Mahant Billeshar Nath Mahadeo, and is the head-quarters of the Kinwar Rajputs. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,400. Sahatwar has a considerable trade in the collection of raw produce and sugar for export, and in the distribution of cotton, salt, tobacco, and English piece-goods. There is also a small manufacture of indigo and cotton cloth. The town school has about 80 pupils.

Sikandarpur.-Town in the Bansdih takul of Ballia District, United Provinces, situated in 26° 3' N. and 84° 4' E., 24 miles north of Ballia town and 2 miles from the right bank of the Gogra. Population (1901), 7,214. Tradition ascribes the founding of the town to the reign of Sikandar Lodi, from whom its name was taken. Its former importance is attested by the ruins of a large fort, and of houses extending over a large area. Its decadence is locally ascribed to the wholesale migration of the inhabitants to Patna, but nothing is known as to the cause or even the date of this abandonment. Sikandarpur is administered under Act XX of 1856, with an annual income from taxation of Rs. 1,200. The local market is famous for its otto of roses and other perfumes, produced from flowers grown locally and exported to Bengal. There is also a small manufacture of coarse cloth. The town school has 63 pupils.

GORAKHPUR DIVISION

Gorakhpur Division .- A Division in the north-east of the United Provinces, extending from the borders of Nepal to the south of the Gogra, and lying between 25° 38' and 27" 30' N. and between 82° 13' and 84° 25' E. The northern portion includes a damp alluvial tract in Gorakhpur District, containing forests. It is crossed by the Rarri, and skirted on the northeast by the Great Gandak. The head-quarters of the Commissioner are at GORAKHPUR CITY. Population increased rapidly from 1872 to 1891, but received a check in the next decade, owing to mortality from an epidemic of fever, increased emigration, and the effects of the famine of 1896-7. The numbers at the four enumerations were as follows: 4,S10,016(1872), 5,852,386 (1881), 6,508,526 (1891), 6,333,012 (1901). The total area is 9,534 square miles, and the density of population is 664 persons per square mile, compared with 445 for the whole of the United Provinces. This Division, though it contains a smaller area than any other, ranks second in population, In 1901 Hindus formed 87 per cent. of the total, and Musalmans nearly 13 per cent. Christians numbered 1721 (1,197 being natives), and Sikhs 1,646. The Division contains three Districts, as shown below:-

| | Area in square index. | Population. | Land reemus and cases for 1903-41 in thousands of rupess |
|-------------------|--------------------------|-------------------------------------|---|
| Gorakhpur - Basti | 4,535 2,792 2,207 | 2,938,176 1,846,153 1,548,683 | 99,38 23,21 80,69 |
| Total | 9,534 | 6,333,012 | 73,28 |

Gorakhpur and Basti are situated north of the Gogra, and Azamgarh south of that river. The Division contains 19,135 villages, but only 34 towns, and is remarkable for the manner in which houses are scattered about in small hamlets, instead of being collected in central sites, as in the western portions of the by the Rainut clans which now hold it. During the twelfth century it appears to have been included in the great kingdom of Kanauj. The Musalmans for long obtained no hold of Gorakhpur, which continued to be governed by petty Rajas. In the fifteenth century one of these founded a small kingdom, which extended over a considerable area in both Gorakhpur and Champaran. Under Akbar an expedition was sent across the Gogra for the first time in pursuit of Khān Zamān, the rebel governor of Jaunpur. Other expeditions followed, and a sarkir of Gorakhpur was formed, and included in the Subah of Oudh. The Muslim yoke was, however, shaken off in the early part of the seventeenth century, and it was not till the accession of Aurangzeb that the Mughal power was really felt. About 1680 prince Muazzam (afterwards Bahādur Shāh) visited Gorakhpur, and a new division, called Muazzamāhād, was formed in his honour, which included part of Saran. Under the Nawabs of Oudh a firmer grasp of the country was taken. Intestine quarrels between the Rajas and the incursions of the Banjaras in the early part of the eighteenth century led to a decline in prosperity, and in 1750 the Nawab of Oudh sent a large army under All Kasim Khan. The submission of the Raias was obtained and tribute was collected from them; but no regular government was carried on by the Muhammadans, After the battle of Buxar in 1764 a British officer was lent to the Oudh government, who exercised almost supreme power over the south of the District; but in the north the local Rajās and a few officials were employed to collect the revenue, which was exceedingly precarious. Extortion and internecine quarrels had reduced the District to great misery, when in 1801 it was ceded to the British. In the next few years the Nepalese encroached on the northern border, and remonstrances being fruitless war was declared in 1814. The contest ended in 1816, and small concessions were made in this District to the Nepălese. On the outbreak of the Mutiny in 1857 disturbances occurred, and most of the troops at Gorakhpur mutinied. Itt August the station was abandoned and a rebel government under Muhammad Hasan was established; but in January, 1858, a Gurkha force under Jang Bahādur marched in from the north and Colonel Rowcroft's troops from the south. Muhammad Hasan was driven away and order was soon re-established.

Amharo-

Memorials of the time when Buddhism was the prevailing religion are found in the shape of ruined brick stopas and monasteries in all parts of the District; but few of these have been excavated. The best known is the stupe near Kasia, and the temple containing a stone figure of the dying Buddha. An inscription dated 400-1 A.D., in the reign of Skanda Gupta, was found on a pillar in the south of the District. A number of copperplate grants of the last Hindu kings of Kanauj have been dug up from time to time. There are no Muhammadan buildings of interest.

Gorakhpur District contains 18 towns and 7,544 vil The lages. Population increased considerably between 1872 and people. 1891, but decreased in the next decade. The numbers at the four enumerations were as follows: 2,019,361 (1872), 2,617,120 (1881), 2,994,057 (1891), 2,957,074 (1901). The District supplies many emigrants to other parts of India and abroad. In 1894 an epidemic of fever caused great mortality, and drought in 1896 increased emigration, especially to Nepal. There are six takith—Bānsgaon, Mahārājganj, Padraunā, Hārā, Deoriā, and Gorakhpur—each named from its head-quarters. The only municipality is Gorakhpur City, the administrative head-quarters of the District. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takell. | Arok in square miles. | Towns. 33 | Villagras, or and | Population | Populating per square suite. | Percentage of variation in population he tween 1891 and 1901. | Mantee of persons alie to esad and write. |
|---|--|-------------|--|--|--|---|--|
| Hänsgaon . Mahäräigani . Padraunä . Härä . Deoriä . Gorakhpur . | 614 1,239 928 571 383 652 | 4 1 3 1 6 1 | 1,667 1,265 1,283 930 1,287 1,090 | 438,364 504,325 595,706 428,846 493,822 496,011 | 714 407 642 751 847 761 | - 2-9 - 1-4 - 1-6 - 0-3 - 4-6 + 3-9 | 17,907 9,569 10,879 8,415 16,936 19,186 |
| District total | 4.587 | 18 | 7:544 | 2,957,074 | 645 | - 1-3 | 83,292 |

In 1904 an area of 52 square miles belonging to the Bänsgaon tahsil in the south of the District was transferred to
Arangarh, with a population of 18,898. Hindus form nearly
go per cent of the total and Musalmans 10 per cent. In the
northern part the density of population is comparatively
low, owing to the presence of forests and large areas of uncultivated land; but in the south it is exceedingly high. The
northern portion suffered from the fever epidemic of 1894,
while in the south famine was experienced in 1896 and 1897.
More than 94 per cent of the population speak Hihari.

Costes and occupations.

The most numerous Hindu castes are: Chamars (leatherworkers and labourers), 353,000; Ahtrs (graziers and cultivators), 342,000; Brāhmans, 263,000; Kurmis (agriculturists), 108,000; Koiris (cultivators), 152,000; Riliputs, 141,000; Kewats (cultivators), 121,000; Banias, 86,000; Bhars (labourers), 70,000; and Lunias (navvies), 66,000. The Bhuinhars (agriculturists), 32,000, are important in the east of the District. The Bhars, who once beld the land, and the Bhuinham and Kurmis are most numerous in the east of the Provinces. The damp submontane tract is inhabited by a few Thārus, who seem fever-proof, and number 2,700. Among Muhammadans, the most numerous classes are Julihas (weavers), 73,000; Shaikhs, 48,000; Pathāns, 30,000; and Behnās (cotton-carders), 20,000. The District is essentially agricultural, 72 per cent. of the population being supported by agriculture. More than half the land is held by Brähmans, Bhuinhars, and Rajputs, and the same three castes occupy about a fourth of the cultivated Britt.

Christian missions.

The District contained 1,040 native Christians in 1901, of whom 731 belonged to the Anglican communion. The Church Missionary Society, which has laboured here since 1823, has three branches in the District. In 1890 a Zanāna Mission was established.

General agricultural conditions.

The ordinary soils of the United Provinces are found, varying from sand and loam to clay. The loam is most prevalent in the south and west, and clay in the north. In the centre and east is found a peculiar calcareous soil, called bhat, which is extremely fertile and very seldom requires irrigation owing to its power of retaining moisture. The clay tract in the north-west chiefly produces rice, while kodon, a small millet, is largely grown in the north-east. Along the chief rivers tracts of low-lying alluvial soil are found, which are flooded during the rains, and for the most part produce spring crops.

Chief agrienlineal statistics pial crops.

At the last settlement 4,061 villages were held on zamindari, 4,552 on pattidari, and thirty-four on bhaiyachara tenures. and princi. There are also a few talukas which, as is usual in the Province of Agra, are settled with the under-proprietors or birtias, who pay the Government demand plus a fee of 10 per cent. which is refunded to the talukdar. The main agricultural statistics for 1903-4 are shown on the next page, in square miles.

> The principal food-crops, with the area under each in square miles, are: rice (1,358), or 42 per cent. of the net area cropped; barley (558); kedon and small millets (446); wheat (523);

pess (462); gmm (251); and maize (196). Oilseeds covered 336 square miles, sugar-cane 118, poppy 27, and indigo 15-

| Taket. | Total. | Cultivated. | Irrigated. | Culrivable waste. |
|-------------|--------|-------------|------------|----------------------|
| Hinsgaon 1 | 614 | 419 | 199 | 88 |
| Mahirajganj | 1,259 | 740 | 173 | 175 |
| Padraunā | 938 | 675 | 86 | 132 |
| Hara | 571 | 437 | 334 | 48 |
| Descrit . | 583 | 456 | 243 | 37 |
| Gorakhpur | баг | 480 | 197 | 78 |
| Total | 4.587 | 3,237 | 1,131 | 517 |

Attempts have been made from time to time to introduce Improvenew staples, such as hemp, cotton, and various kinds of rice, agreed but without success. Indigo was started about 1830 by Euro practice. pean planters, and a better class of dye is produced here than in any other part of the United Provinces. The relief afforded by a settled government and freedom from war had marked effects in the reclamation of waste land and the introduction of the valuable crops, sugar-cane and poppy. Since 1870 the net area cultivated has increased by about 16 per cent, while the area bearing two crops in a year has nearly doubled. Maize is much more largely grown than formerly, and occupies twice as large an area as it did twenty years ago. Very few advances are taken under the Agriculturists' Loans or Land Improvement Acts. Out of a total of 2-3 lakhs advanced during the ten years ending 1900, as much as 1-9 lakhs was advanced in the famine year 1896-7, chiefly for the construction of temporary wells. There have been practically no advances since 1900.

A few attempts have been made to improve the breed of Cattle. cartle, but without any marked success. The north contains peales, and large grazing-grounds to which cattle are driven in the hot weather. The ponies are very inferior; a stallion was kept for some years in the east, but no horse-breeding operations are carried on now. The richer landholders own elephants, of which about 400 are kept in the District. Sheep are bred for wool and meat, and goats for milk, manure, and meat; but all are of a poor type.

In 1903 4, 1,132 square miles were irrigated, of which 475 Irrigation. were supplied from wells, 489 from tanks, and 168 from other sources. Well-irrigation is commonest in the south-east of the District, but it is increasing rapidly in the centre and north-

east. Elsewhere tanks are most important. They include a large number of artificial excavations, which are, however, of small size. The large rivers have beds too low to supply irrigation except to the alluvial land on the border of their channels. and this is generally so moist as not to require watering. The small streams are, however, largely used, and in the north of the District they are dammed so as to flood the adjacent rice tracts. Regular channels for the distribution of water have been made on the estates of some European samindars. The spring-level is so high that water is raised from wells over a large part of the District by means of a lever with an earthen pot attached. In the south bullocks work the wells. The commonest method of irrigation is, however, the swing-basket worked by men or women. Fields are not flooded as in the western Districts, but water is scattered over the land from small channels with a wooden shovel.

Foresta.

The District contains 173 square miles of 'reserved' forests, which extend along the Nepāl frontier and down the river Rohini to Gorakhpur city. The most valuable products are sil timber (Shores robusta) and fuel; but catechu is also extracted. In the north the reserved land includes a large area under grass, which affords valuable grazing and also produces thatching-grass. In 1903-4 the total receipts were Rs. 88,000. The forests form the Gorakhpur division of the Oudh Circle, and are in charge of a Deputy-Conservator. About 100 square miles of jungle land are owned by private individuals, but in most of this area the valuable timber has been cut down.

Minerale.

Kankar or calcareous limestone is used for metalling roads and for making lime, but is scarce. The chief mineral product is saltpetre, which is extracted from saline efflorescences by Lunias.

Arts and manufactures. The principal industry is sugar-refining, which is carried on in all parts of the District, especially in the centre and south-east. The methods usually adopted are those of the country, but a large sugar refinery, worked on European lines, was opened in 1903. The manufacture of indigo still survives, especially in the Padraunā tahsil, where a number of factories are owned and managed by Europeans. A little coarse cotton cloth is woven for local use, and a peculiar cloth of mixed wool and cotton is also produced.

Commerce.

The most important export trade is that in agricultural produce, especially rice, barley, wheat, and sugar. Coarse rice is exported to Districts south of the Gogra, while the finer kinds and wheat are sent to the western Districts and the Punjab. Sugar is exported to Campore for distribution to Central India and Răiputāna, but the trade with Eastern Bengal is growing. Timber is supplied to the neighbouring Districts, and oilseeds are exported to Calcutta. The chief imports are piece-goods, obtained from Calcutta and Campore; and salt, metals, and kerosene oil, from Calcutta. Traffic is now largely carried by rail; but the commerce of the Gogra still survives, and in particular rice and wood are carried by rail to Barhaj and Turupar and then distributed by boat. Within the last few years a steamer service from Patna has been revived. There is a considerable trade with Nepal across the frontier. Grain, especially rice, ghi, and spices are imported, and salt and piece-goods exported. There are no large commercial centres, and the trade of the District is carried on at numerous small towns and markets, among which BARHAJ is the most important.

The main line of the Bengal and North-Western Railway Railway crosses the southern portion of the District, and a branch leaves and roads. Gorakhpur city and passes north. Another branch from Bhatni gives through communication with Benares, and has a short line from SALEMPUR to BARHAL. A branch has been sanctioned which will connect Gorakhpur city through the north of the District with BETHA. The roads are not good. Only on miles are metalled, while 923 are unmetalled. The former are in charge of the Public Works department, but the cost of all but 31 miles of metalled roads is charged to Local funds. Avenues of trees are maintained on 100 miles. The chief lines of road are those from Gorakhpur city to Ghampur and Fyzābād, and the road from Barhaj to Padraunā, which is to be metalled throughout. The scarcity of kankar and the absence of stone render the metalling of roads difficult and expensive.

Gorakhpur has usually escaped severe famine. Tradition Famine. tells of a great dearth in the reign of Aurangzeb, and of another in the eighteenth century, when tigers could find no other prey and killed 400 of the inhabitants of a town named Bhauapar.

Droughts caused slight scarcity in 1803, 1809, and 1814; but even in 1837 the District escaped lightly. In 1860 there was an increase in crime; but both in that year and in 1868-9 distress was not severe. The effects of the drought of 1873-4 were aggravated by a rise in prices due to immense exports of grain to Bengal, and relief works were opened, but were only resorted to by labourers. In 1896 the mins ceased prematurely and the autumn crops suffered. Advances were freely given for seed and for the construction of wells. Relief works were opened in January, 1897, and in February more than 30,000

workers were employed on roads and tanks. The spring harvest was good and works were closed when the rains fell, after a total expenditure of 2-0 lakhs on this form of relief.

District subdivisions and staff. The Padrauna takul forms a separate subdivision in charge of a member of the Indian Civil Service stationed at Kasia. The Deoria and Hātā taksils form another subdivision in charge of a Deputy-Collector, whose head-quarters have recently been transferred from Majhauli to Deoria. The posting of a Civilian to Deoria has recently been sanctioned. The remaining officers of the District staff, including two members of the Indian Civil Service and four Deputy-Collectors, reside at Gorakhpur city, Besides the ordinary District officials, two officers of the Opium department, one of the Salt department, and a Deputy-Conservator of Forests are stationed at Gorakhpur. There is a taksildir at the head-quarters of each taksil.

Civil justice and crime.

There are three District Munsifs and a Subordinate Judge. The District and Sessions Judge has civil jurisdiction throughout both Gorakhpur and Basti, but hears Sessions cases in the former only. Crime is distinctly heavier in the aouth than in the north, but is chiefly confined to thefts and burglaries, dacoity being very rare. Cattle-poisoning and arson are more common than usual.

Land revenue administration.

The District of Gorakhpur, as formed at the cession in 1801. included the present District and also Basti, Azamgarh, and parts of Gonda, and the lowlands of Nepall. The last two tracts were made over to the Nawab of Oudh and to the Nepalese respectively in 1816. The Azamgarh purganas were removed in 1820, and after the Mutiny a further cession to Nepal took place. Basti was formed into a separate District in 1865. The early revenue administration was difficult. A long period of misrule had made the large landholders independent and the peasantry timid. The demand fixed was only 3-5 likhs on the present area; and although this was a reduction on the nominal demand of the Oudh Government, it was collected with difficulty. Short-term settlements were made as usual, and the revenue rose a little. In 1822 a survey was commenced, and more detailed inquiries into the agricultural capabilities of the District and the rights of the people became possible. Regulation VII of 1822, however, laid down a procedure which could not be carried out with the existing staff. In 1830 the first jungle grant was made to a European, and this was followed by other grants. The first regular settlement under Regulation IX of 1833 was carried out between 1834 and 1830, and the revenue had then risen

to to glakhs. This settlement was based on a valuation of crops; and it was further marked by the setting aside of the talukdars, who now became merely pensioners in respect of the villages held by under-proprietors. Preparations for the next settlement were interrupted by the Mutiny, but were resumed in 1859 and completed in 1867. The operations were carried out by several successive Collectors and their Assistants, Rent-rates were assumed on various principles and applied to the areas ascertained at survey. The revenue was fixed at half the rental 'assets' so obtained, and amounted to s 5-5 lakhs, rising to 17-3. The last revision was carried out between 1883 and 1800. In two taksils it was based on rent-rates found to be prevalent, while in the remainder the actual rent-rolls were the basis of the assessment. The demand fixed was 23-1 lakhs, rising to 24.4, which amounted to 48 per cent of the rental 'assets.' The demand in 1903-4 was 25-1 lakhs, the incidence being R. 0-0 per acre, and varying from R. 0-3 to Rs. 1-2 in different pareanas. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees :-

| | 1886-1. | 1600-1. | 1000-1 | 1903-4- |
|--------------------------------|---------------|----------------|----------------|----------------|
| Land revenue . Total revenue . | DESCRIPTION H | 13.01 34,91 | 26,43 39:50 | 25,23 39:93 |

In 1904 the revenue demand was reduced by Rs. 18,000, owing to the transfer of 115 villages from the Bansgaon taksil to Azangarh.

GORAKHFUR CITY is the only municipality, but twelve towns Local selfare administered under Act XX of 1856. Outside of these, local government. affairs are managed by the District board, which had an income of 3.3 lakhs in 1903-4, chiefly derived from local rates. The expenditure was 3.2 lakhs in the same year, including 2.3 lakhs

spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police has a Assistants Police and and 5 inspectors, besides a force of 147 subordinate officers, juita.

748 constables, 192 municipal and town police, and 2,340 rural and road police. There are 34 police stations. The District jail contained a daily average of 408 immates in 1903, and the small jail at Kasia 23 more. The latter is only used for prisoners under trial or sentenced to short terms.

The District is backward as regards education, only 2-8 per Education, cent. of the population (5-5 males and o-t females) being able to read and write in 1901. Hindus (2-8) are more advanced than Muhammadans (2-3). There has, however, been a considerable improvement in recent years, and the number of public schools increased from 222 with 8,592 pupils in 1880-1 to 334 with 23,574 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 339 public institutions with 18,023 pupils, of whom 463 were girls, besides 70 private schools with 1,042 pupils. A normal school and college are situated at Gorakhpus City, and sixteen of the public schools are classed as secondary; but the great bulk of the pupils are in primary schools. Three schools are managed by Government, and 171 are under the District or municipal boards. Out of a total expenditure on education of Rs. 84,000, Local funds supplied Rs. 59,000, and the receipts from fees were Rs. 14,000.

Hospitals and dispensaries. There are 13 hospitals and dispensaries, with accommodation for 98 in-patients. In 1903 the number of cases treated was 143,000, including 1,300 in-patients, and 7,473 operations were performed. The expenditure in the same year was Rs. 20,000, chiefly met from Local funds,

Vaccina-

About 87,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, giving an average of 20 per 1,000 of population, which is below the Provincial average. Vaccination is compulsory only in the municipality of Gorakhpur.

(District Gazetteer, 1881 [under revision]; A. W. Crnick-

shank, Settlement Report, 1891.)

Bansgaon Tahsil, -South-western tahsil of Gorakhpur District, United Provinces, comprising the parganas of Bhauapar, Unaula, Dhuriāpār, and Chillūpār, and lying between 26° 14' and 26° 43' N. and 83° 4' and 83° 44' E., with an area of 614 square miles. Population fell from 451,606 in 1891 to 438,364 in 1901. There are 1,667 villages and four towns, of which BARHALGANI (population, 5,181) and Bansgaon, the tahtil head-quarters (5,034), are the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,50,000, and for cesses Rs. 72,000. In 1904 the tahail was reduced from the limits described above by the transfer of 115 villages with an area of 52 square miles, which lay south of the Gogra, to Azamgarh District. The land revenue and cesses due from these villages amounted to Rs. 18,000 and Rs. 3,000 respectively. The density of population, 714 persons per square mile, is above the District average. Bansgaon is bounded on the north by the Ami river, on the south by the Gogra, and on the east by the RAPTI. After beavy rains a considerable area near the Ami and Rapti is flooded, owing to the inability of the rivers to carry off the drainage. The Kuwana flows across the south-west corner. The area under cultivation in 1903-4 was 429 square miles, of which 190 were irrigated. Wells supply about a quarter of the irrigated area, and tanks, swamps, and small streams the remainder.

Mahārājganj.-Northern tahtil of Gorakhpur District, United Provinces, comprising the parganas of Haveli, Binayakpur, and Tilpur, and lying between 26° 53' and 27° 29' N., and 83° 7' and 83° 56' E., with an area of 1,239 square miles. Population fell from 511,450 in 1891 to 504,325 in 1901. There are 1,265 villages, but only one town, Siswa Bazar (population, 2,901). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,05,000, and for cesses Rs. 66,000. The density of population, 407 persons per square mile, is the lowest in the District. The northern and central portions of the tahsil contain a considerable area of forest and rich pasture land. Numerous streams from the Nepāl tarai intersect the damp malarious area on the border, and are dammed to flood the rice which forms the staple crop. The area under cultivation in 1903-4 was 740 square miles, of which 173 were irrigated. Wells supply about two-sevenths of the irrigated area, and tanks, swamps, and streams the remainder.

Padrauna Tahsil.-North-eastern tahsil of Gorakhpur District, United Provinces, conterminous with the parguma of Sidhuā Johna, lying between 26° 31' and 27" 18' N. and 83" 43' and 84° 26' E., with an area of 928 square miles. Population fell from 605,551 in 1891 to 595,706 in 1901. There are 1,285 villages and three towns-Amwa KHAs (population, 8,918); PADRAUNA, the tahiil head-quarters (7,031); and Bansgawa (5,009). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 5,37,000, and for cesses Rs. 86,000. The density of population, 642 persons per square mile, is about the District The takil extends from the sal forests in the north to the rich, well-cultivated tract in the centre of the District. It is bounded in places on the north-east by the Great Gandak, which occasionally shifts its channel; and on the west by the Little Gandak. Smaller streams cross the takeil, flowing usually from north-west to south-east. Padmuni produces sugar-cane, rice, and kodon, and also a considerable amount of indigo. The area under cultivation in 1903-4 was 675 square miles, of which 86 were irrigated. Wells supply five-eighths of the irrigated area, and tanks, swamps, and tivers the remainder.

Hata.-Central taksil of Gorakhpur District, United Provinces, comprising the parganas of Silhat, Shahjahanpur, and Havell, and lying between 26° 21' and 26° 58' N. and 83° 29' and 83° 58' E., with an area of 571 square miles. Population fell from 430,069 in 1891 to 428,846 in 1901. There are 950 villages and two towns, including RÜDARPUR (population, 8,860). The demand for land revenue in 1903–4 was Rs. 3,83,000, and for cesses Rs. 62,000. The density of population, 751 persons per square mile, is considerably above the District average. The tahsil includes a fertile stretch of level country between the Little Gandak on the north-east and the Rapti on the south-west. Smaller streams also cross it, and provide water for irrigation. The area under cultivation in 1903–4 was 457 square miles, of which 134 were irrigated. Wells supply more than half the irrigated area, and tanks, swamps, and small streams most of the remainder.

Deoria Tahsil, -South-eastern taksil of Gorakhpur District, United Provinces, conterminous with the pargana of Salempur or Salempur-Majhauli, lying between 26° 5' and 26° 34' N. and 83" 37' and 84" 11' E., with an area of 583 square miles. Population fell from \$17,793 in 1891 to 493,822 in 1901, the rate of decrease being the largest in the District. There are 1,287 villages and six towns-Barnaj (population, 10,054). GAURĂ (7,965), LAR (7,305), SALEMPUR-MAJHAULĂ (6,051), PAINA (5,020), and DEORIA or Bharault, the tahsif headquarters (2,151). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4.48,000, and for cesses Rs. 72,000. The density of population, 847 persons per square mile, is the highest in the District, and the tahul is the most fertile and best cultivated. It is bounded on the south by the Rapti and Gogra, and the Little Gandak crosses the centre. The area under cultivation in 1903-4 was 456 square miles, of which 243 were irrigated. Tanks, swamps, and small streams supply only about one-sixth of the irrigated area, and wells the remainder, being a more important source in this takell than in any other of Gorakhpur.

Gorakhpur Tahsil.—Head quarters tahril of Gorakhpur District, United Provinces, comprising the parganar of Bhanapar, Havell, and Maghar, and lying between 26° 29' and 27° N. and 83° 12' and 83° 38' E., with an area of 652 square miles. Population increased from 477,588 in 1891 to 496,011 in 1901, this being the only tahril which did not show a decrease. There are 1,090 villages and two towns, including Gorakhpur Crrv, the District and tahril head quarters (population, 64,148). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,94,000, and for cesses Rs. 65,000. The density of population, 761 persons per square mile, is considerably above the District

average. The takiil is divided unequally by the winding course of the Rāpti, and is also crossed by its tributaries, the Ami and Rohini, and by several smaller streams. After heavy rain a large area in the south-west becomes a continuous sheet of water. Sāi forests clothe the left bank of the Rohini and extend to the neighbourhood of Gorakhpur city, but most of the rest is highly cultivated. The area under cultivation in 1903-4 was 480 square miles, of which 197 were irrigated. Wells supply about one-third of the irrigated area, and small streams, tanks, and swamps the remainder.

Kasia. -- A subdivision of Gorakhpur District, United Provinces, comprising the PADRAUNA tahsil. The subdivision takes its name from the village of Kasia, at which the headquarters of the subdivisional officer are situated. Population of the village (1901), 1,688. The village is situated at the junction of the Deoria-Padrauna and Gorakhpur-Pipraghat roads, near the bank of the Rāma Bhār lake, and contains a dispensary and a town school with 114 pupils. A short distance away, in the village of Bishaupura, is situated the important group of ruins which were long supposed to mark the site of Kusanagara, where Gautama Buddha died. They include a large stripa and many small ones, the remains of a monastery, and a temple which enshrines a colossal statue of the dving Buddha, 20 feet in length. It has now been recognized that the buildings on this site do not agree with the description of Kusanagara given by the Chinese pilgrims.

(Cunningham, Archaeological Survey Reports, vols. aviii; V. A. Smith, The Remains near Kasia, 1896, and in Journal, Royal Asiatic Society, 1902, page 139; W. Hoey, Journal, Asiatic Society of Bengal, 1900, page 83.)

Deoria Subdivision.—Subdivision of Gorakhpur District, United Provinces, comprising the DEORIA and HATA TARRIES.

Tamkūhi.— Estate situated in Basti and Gorakhpur Districts, United Provinces, and in the Muzaffarpur, Darbhanga, Sāran, and Gayā Districts of Bengal, comprising 253 villages. The income is about 2-8 lakhs, and the land revenue and cesses payable to Government 1-4 lakhs. The owners are Bhuinhārs claiming descent from a Rājput, who married a Bhuinhārin. The founder of the family was Fatch Sāhi, Rājā of Hathwā in Sāran District, who resisted the British after the battle of Buxar in 1764, and was forced to take refuge in the jungles on the bank of the Great Gandak in Gorakhpur, where he had another estate, then included in the dominions of the Nawāb of Oudh. He acquired a large property, which was

mostly dissipated by his sons. About 1830-40 a grandson recovered part of the ancestral estate, and settled at Salemgarh in Gorakhpur District, founding a separate family. Another grandson retained Tamkuhī and greatly increased his estates. He obtained the title of Rājā, which is hereditary. The present Rājā, Indrajit Pratāp Bahādur Sāhī, was born in 1893-and the estate is now under the management of the Court of Wards.

Amwā Khās.—Village in the Padraunā taksil of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 51' N. and 84° 13' E., 68 miles east of Gorakhpur city, near an old bed of the Great Gandak. Population (1901), 8,918. It is an agricultural village, composed of a number of scattered hamlets.

Bansgaon Town.—Head-quarters of the tahtil of the same name in Gorakhpur District, United Provinces, situated in z6° 33′ N. and 83° 22′ E., 19 miles south of Gorakhpur city. Population (1901), 5,034. The town is composed of ten hamlets, and is purely agricultural. There is no trade, and the place derives its only importance from its position as head-quarters of a tahsildör and a Munsif. The town school has about 275 pupils, and a girls' school has 17.

Bansgawa.—Village in the Padrauna tehsil of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 48' N. and 84° 72' E., 64 miles east of Gorakhpur city. Population (1901), 5,009. An aided school has 31 pupils.

Barhaj. Town in the Deoria tahsil of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 17' N. and 83° 45' E., at the terminus of a branch of the Bengal and North-Western Railway, and near the confluence of the Rapri and Gogra-Population (1901), 10,054. The town is said to have been founded about 1770, but only rose into importance with the introduction of sugar cultivation in the neighbourhood. It is now the most important trade centre in the District, and is also remarkable for its filthiness. Grain, oilseeds, and sugar are largely exported by rail and river, and the insurance of the river traffic is part of the business of the town. Sugar is manufactured in about forty factories. The banks of the Rapti are covered with immense piles of timber-part for re-exportation, part for boat-building, and part for fuel in the factories. The town is administered together with GAURA under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 3,400. The Rājā of Majhauli collects octroi daties and bazar dues under (United Provinces) Act III of 1901, and pays Rs. 3,500 annually to the town fund. Barhaj contains a flourishing

town school with 183 pupils, a girls' school with 26, and a dispensary.

Barhalganj.—Town in the Bansgaon tahid of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° τγ' N. and 83° 30' E., on the north bank of the Gogra, and on the road from Gorakhpur to Azamgarb. Population (1901), 5,181. It consists of a street of masonry shops lining the sides of the road, with a fine metalled market-place. The trade consists chiefly in the export of grain, and in the distribution of imported goods, but there is also some manufacture of sugar. Barhalganj is a port of call for the river steamers. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,100. It contains a town school with 113 pupils, a girls' school with 14, and a dispensary.

Gaurā.—Town in the Deoriā tahsīl of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 17' N. and 83" 43' E., close to Barnal, of which it practically forms a suburb. Population (1901), 7,965. Gaurā is administered, together with Barhaj, under Act XX of 1856. There are several sugar factories, but not much trade besides.

Golā,—Town in the Bānsgaon taksil of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 21' N, and 83° 21' E., on the left bank of the Gogra. Population (1901), 4,944. The town is one of the most important in the south of the District, but its trade has suffered from the competition of Barna), which is now on the railway. Potatoes are largely cultivated in the neighbourhood. Golā is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,200. It contains a town school with 112 pupils, and a girls' school with 22.

Gorakhpur City.—Head-quarters of the District and tahiil of the same name, United Provinces, situated in 26° 45' N. and 83° 22' E., on the Bengal and North-Western Railway, 506 miles by rail from Calcutta and 1,056 from Bombay. The city lies near the left bank of the Rapti, and at the junction of toads to Ghāzīpur and Fyzābād. Population is increasing. The numbers at the four enumerations were as follows: 51,117 (1872), 59,908 (1881), 63,620 (1891), 64,148 (1901). These figures include a small area with a population of 771, which was administered as a cantonment up to 1904, and is now a 'notified area.' Of the total in 1901, 41,451 were Hindus and 21,829 Musaimāns. The town is believed to have been founded about 1400 by a branch of the Satāsī family, and takes its name from a shrine of Gorakhnāth. During the reign of

Akbar it became the head-quarters of a sarkar in the Subah of Oudh. In 1610 the Muhammadan garrison was driven away, and the place was held by the Hindus till 1680. A few years later Prince Muazzam visited Gorakhpur, which was thence forward called Muazzamābād in official documents. In the eighteenth century the city and District were included in Oudh, and the later history has been given in that of the District.

Gorakhpur consists of a number of village sites clustered together, and often divided by considerable areas of garden or cultivated land. The drainage is very defective, and the city has a mean appearance. East of the native quarters is a spacious civil station and the old cantonment, and a large area occupied by the head-quarters of the Bengal and North-Western Railway. The most imposing public building is the town hall built recently and called Campier Hall, after a European tamindar, who left money for its construction. It is surrounded by a fine park laid out in 1903, as a memorial to the Queen-Empress. Gorakhpur is the head-quarters of the Commissioner of the Division, of an Executive Engineer, of the Bengal and North-Western Railway Volunteers, and of a squadron of Light Horse, besides the District staff. It also contains the principal station of the Church Missionary Society and Zanāna Mission in the District, and male and female dispensaries.

A municipality was constituted in 1873. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 68,000 and Rs. 67,000 respectively. In 1903-4 the income was Rs. 72,000, chiefly raised from octroi (Rs. \$1,000) and rents and fees (Rs. 15,000). The expenditure was Rs. 77,000, including conservancy (Rs. 23,000), public safety (Rs. 12,000), administration and collection (Rs. 11,000), and education (Rs. 11,000). The small area which was formerly a cantonment had an income and expenditure of about Rs. 3,000. There has been no garrison for some years past, but in the cold weather a depôt is opened for the recruitment of Gurkhas. Gorakhpur has very little trade, and its inhabitants are largely agriculturists. It is noted for its carpenters and turners, but has no manufactures. A bank has recently been started by native enterprise. The municipality maintains 11 schools and aids 18 others, attended by 1,026 pupils. The Church Missionary Society carries on a useful educational work. St. Andrew's College, which teaches up to the First Arts examination, had 32 students in 1904. There is also a normal school under the Educational department.

Lar.—Town in the Deoria tahiii of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 12' N. and 83° 59' E., 2 miles from a station on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 7,305. It contains a few mosques, and is a considerable trading centre for the export of local produce. The town school has 160 pupils.

Nichlaul.—Village in the Maharajganj tahtil of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 27° 19' N. and 83° 44' E., at the meeting of several unmetalled roads and cross-country tracks, 51 miles north-east of Gorakhpur city. Population (1901), 1,564. This is the principal mars in the north of the District, but is declining in importance owing to its distance from the railway. A few miles away are the ruins of a castle or fort, the scene of a sharp fight during the Nepälese campaign.

Padraună Town.—Head-quarters of the tahsil of the same name, Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 54' N. and 83° 59' E. Population (1901), 7,031. The town consists of three parts, called Padraunā, Chhaoni, and Sāhibganj. The latter is now the chief market. Padraunā was identified by General Cunningham with Pāwā, the last halting-place of Gautama Buddha before his death, but the identification has been abandoned. It is the residence of a Kurmi landholder known as the Rai of Padraunā, who holds a large estate in the north of the District, and maintains a dispensary here. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,300. There is a school with 73 pupils.

Paina.—Town in the Deoria tahsil of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 16' N. and 83° 47' E., on the left bank of the Gogra. Population (1901), 5,029. The inhabitants plundered a Government commissariat train during the Mutiny, in punishment for which the village was confiscated and bestowed on the Rājā of Majhauh. Most of the inhabitants are boatmen, who live by conveying traffic along the Gogra between Barhaj and Patna. A primary school has 81 pupils.

Rudarpur.—Town in the Hata tahsil of Gorakhpur District, United Provinces, situated in 26° 45' N. and 85° 33' E., 27 miles south-east of Gorakhpur city. Population (1901), 8,800. Near the town are some ancient remains, and an old name of the place is said to have been Hansakshetra. The ruina cover a large area, but have not been regularly excavated. A

cover a large area, but have not been regularly excavated. A celebrated temple of Düdhnäth is also situated close by. Rüdarpur is administered under Act XX of 1856, with an annual

p. N.

income of about Rs. 1,100. The diversion of commerce to the railway has injured its trade; but grain is exported and saltpetre is manufactured. The town contains a dispensary,

and a school with 130 pupils.

Salempur-Majhaull, -Two adjacent villages in the Deoria tahiil of Gorakhpur District, United Provinces, situated on either bank of the Little Gandak river in 26° 17' N. and 83° 57' E. Salempur is now a station on the Bengal and North-Western Railway. The two villages are treated as one town; population (1901), 6,051. Majhault, on the east, is the residence of the Raja of the Majhauli estate, one of the most important in the District, the Raja being recognited as head of the Bisen Rajputs. The estate deteriorated owing to improvidence and continued bad administration, but has recovered under the management of the Court of Wards. The fort is a modern brick building of commonplace appearance. The joint town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 700. There is no trade. A school in Salempur has 43 pupils, and another in Majhault 115. There is also a girls' school with 27 pupils at Majhault.

Bounand river system.

Basti District,-North-western District of the Gorakhpur staties, con- Division, United Provinces, lying north of the Gogra river, between 26° 25' and 27° 30' N. and between 82° 13' and 83° 14' E., with an area of 2,792 square miles. It is bounded on the north by Nepal territory; on the cust by Gorakhpur District; on the south by the Gogra, which divides it from Fyzibād; and on the west by Gondā. Basti lies entirely in the submontane plain, with no natural elevations to diversify its aurface. It is traversed by a considerable number of small streams, and the north-west corner resembles the rice swamps of the Nepal tarus. The whole of the drainage ultimately reaches the Gogra, but not within Basti District. The northern portion, extending 14 to 20 miles from the Nepal frontier to the Rāpti, has a much greater rainfall than the rest. Many small streams rushing down from the lower hills or rising in the Nepāl tarai water this tract, chief among them being the Bürhi or 'old' Rapti, the Banganga, and the Jamwar. South of the Rapti the central plateau of the District extends almost to the Gogra, and is drained chiefly by the Kuwana, which has a course parallel to the Rapti and Gogra. The Katnehia, Rawai, and Manwar are the principal tributaries of the Kuwana. Another small river, the Ami, crosses the upland between the Rapti and Kuwana. There are many natural lakes or depressions, often formed in the old beds of rivers, the largest being the Bakhtra, Chandi, Pathra, Chaur, and Jasoit Tals.

As is usual in the submontane tracts, kuntar or nodular Geology, limestone is scarce. No other rock of any kind is found in the alluvium of which the District is composed.

The flora resembles that of the submontane tracts. Forests Botany, formerly existed, but have been cut down. The District is, however, well provided with clumps of mango, bamboo, and mahus (Bassia latifolia).

Wild hog, nilgai, wolves, and jackals are common. Spotted Faura deer are occasionally seen. During the cold weather wildfowl and snipe abound in the numerous lakes and swamps. Fish are plentiful, and are much used for food. Snakes and crocodiles are also common.

The climate of Bastl is distinctly milder than that of the Climate more western Districts, and extremes of heat and cold are less and temmarked. It is, however, not specially unhealthy, except at the close of the rains.

The average annual rainfall is 49 inches, ranging from 46 in Rainfall, the south-west to 52 towards the north. Near the Neptl frontier the fall is still heavier. Large variations occur from year to year. In 1877 only 24 inches were received, compared with 76 in 1894.

Materials for the history of the tract included in Basti History. District are unusually scarce. It possibly formed part of the great kingdom of Kosala. For some years Kapilavastu, the birthplace of Gautama Buddha, was believed to have been situated at Bhuila, 15 miles north-west of Basti town; but this identification has been abandoned in favour of a site just outside the north-east angle of the District, in Nepal. The northern part had certainly relapsed into jungle by the fifth century A.D., when it was visited by Fa Hian, though the ruins of earlier buildings were numerous. The traditions of the Rajput clans who now hold the District point to the conclusion that they began to enter it late in the thirteenth century, displacing the Bhars and the Domkatārs; but little reliance can be placed on them. A number of petty Rājās held the country and fought with each other. In Akbar's reign the Muhammadans penetrated the District, after taking Gorakhpur, and maintained a garrison at Maghar, and Basti was included in the Subak of Oudh. About 1610 the Muslims were expelled; but they returned in force in 1680, and opened up the country. Most of the District was included in the Gorakhpur sarkar, and its later history is that of GORAKHPUR

DISTRICT, from which it was only separated in 1865, though ceded to the British by the Nawab Waztr of Oudh in 1801.

Archaeo-

Many ancient mounds are found in the District, but few have been excavated. Bhuila, already referred to, was examined by General Cunningham and his assistant. A stapa at Piprahwa in the north of the District was recently excavated, and yielded an interesting find of relies in an inscribed casket. Gupta coins are occasionally found in various localities. The only Muhammadan building of interest is the shrine of Kabir at Maghar.

The people.

Basti contains 4 towns and 6,903 villages. Population is increasing steadily. The numbers at the four enumerations were as follows: 1,473,029 (1872), 1,630,612 (1881), 1,785,844 (1891), 1,846,153 (1901). There are five tahsils—Domakia-Ganj, Bānsī, Haraiyā, Bastī, and Khalīlābāb—the head-quarters of each being at a place of the same name. Bastī, the District head-quarters, is the largest town. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Taket. | Area in square miles | Town | Allega of | Population. | Population per | Percentage of variation in population be favora 1895 and 1901. | Number of persons alth- ture and and write. |
|---|---------------------------------|------|---|---|---------------------------------|--|--|
| Domariāganj - Bānst Haraiyā Basti Khahtābād - | 593 621 478 536 564 | 3 | 1,111 1,343 1,461 1,600 1,388 | 322,32) 402,277 333,801 393,079 394,678 | 544 648 698 733 700 | + 3-9 + 10-9 - 5-1 + 4-0 + 3-7 | 9,470 9,938 9,395 11,868 10,393 |
| District total | 2,792 | 4 | 6,903 | 1,845,153 | 661 | t: 3:4 | 59,004 |

Hindus form nearly 84 per cent, of the total and Muhammadans 16 per cent. The District is densely populated, and supplies a considerable number of emigrants to the West Indies and to Eastern Bengal and Assam. During the last decade it probably gained by immigration from the more distressed Districts south of the Gogra. Almost the whole population speak Bihari.

Castes and occupations. The most numerous Hindu castes are: Chamars (leatherworkers and cultivators), 278,000; Brāhmans, 195,000; Ahirs (graziers and cultivators), 185,000; Kurmis (agriculturists), 148,000; Banills, 52,000; Rājputs, 50,000; Kahārs (domestic

Archaeological Survey Reports, vol. xii, p. 108.

^{*} Journal, Royal Asiatis Society, 1898, p. 273

servants and cultivators), 48,000; and Kewats (cultivators), 40,000. The aboriginal Bhars, who once held the land, are now depressed and number only 50,000. Among Musaimans may be mentioned Shaikhs, 50,000 | Julahas (weavers), 43,000 ; Pathans, 34,000; and Raiputs, 34,000. Agriculture supports 66 per cent, of the total population, and general labour 9 per cent. Brahmans and Rajputs or Chhattris hold about twothirds of the land, and Brāhmans occupy a larger area than any other caste. Răjputs, Ahirs, Kurmis, and Chamārs are also large cultivators, while the Koiris are noted for their skill.

There were only 53 native Christians in 1901, of whom 24 Christian belonged to the Anglican communion. The Church Missionary unissions. Society has a high school at Basti, and there is also a Zanāna

Mission.

The climate and soil are suitable for the growth of nearly General all the more valuable products, and the comparatively heavy agriculrainfall is especially favourable to rice. Wheat and poppy do autous hest in the lighter loams, and are accordingly grown between the Rapti and Gogra. North of the Rapti late rice is the principal crop. In the inferior light soils barley takes the place of wheat, and kodon of rice. There is a tract of peculiar calcareous soil, known as bhat, along both hanks of the Rapti, which is very retentive of moisture and produces good crops without irrigation. In the bed of the Gogra strips of alluvial soil are liable to flooding in the rains, but are cultivated for the spring harvest.

About one-third of the District is included in samindari Chief agrimahāls, and two-thirds in pattidari, the area of bhaiyāchārā statistics mahāls being very small. A great many under-proprietors are and princifound, called birtias. One class of birt is peculiar to the pal crops. District, having been originally granted to a military colony of Raiputs or Chhattris who were settled on the border as guardians against invasion. The main agricultural statistics

for 1901-4 are given below, in square miles :-

| Takell. | | | Total. | Cultivated. | Irrigated | Cultivable waste. |
|---------------|-----|------|--------|-------------|-----------|----------------------|
| Domariaganj | (4) | - 80 | 193 | 437 | 142 | 8a |
| Banet | | 61 | 621 | 463 | 144 | 64 |
| Haralyll . | | | 478 | 338 | 333 | 75 |
| Bastt | -0 | 3 | 536 | 187 | #38 | 10 |
| Khalififidd . | Ž. | - 4 | 564 | 294 | 234 | 76 |
| | T | iste | 1.791 | 2,009 | 969 | 355 |

Rice is the crop most largely grown, covering 1,000 square miles, or 50 per cent of the net cultivated area, in 1903-4-The other food-crops of importance are wheat (377 square miles); peas and masur (325); gram (237); barley (208); and arhar (185). The most valuable crops are, however, poppy, grown on 33 square miles, and sugar-cane, grown on 68. Oilseeds are also important, covering 136 square miles.

Improvements in agricultural. practice.

At the time of its cession to the British in 1801, the District was in a very depressed condition. A settled government soon gave an impetus to cultivation, and led to the introduction of the more valuable crops, sugar-cane and poppy. During the thirty years preceding the last settlement the cultivated area increased by 13 per cent,, or, including the jungle grants in the north of the District, by 20 per cent. In the last fifteen years there has been a further small increase of about 2 per cent. and a still larger rise in the area double-cropped. There has been no appreciable change in the staples grown. Advances are freely taken under the Agriculturists' Loans Act, and amounted to a total of 1-2 lakhs during the ten years ending 1901, of which Rs. 51,000 was lent in the famine year 1806-7. From Rs. 2,000 to Rs. 3,000 has been advanced annually since 1900.

Cattle sheep

The cattle of the District are generally inferior, but those ponies, and bred in the Mahüll pargana are a little above the average. Buffaloes are largely kept for milk. Ponies are used a good deal both for riding and as pack-animals, but are of a very poor stamp. Sheep and goats are chiefly kept for the supply of wool, skins, and manure.

Trrigation.:

In 1903-4, 323 square miles were irrigated from wells, 435 from tanks and swamps, and 211 from other sources. Wells are chiefly important in the southern half of the upland area between the Gogra and Rapti, and their use decreases as the latter river is approached. North of the Rapti they are hardly used at all. Water is invariably raised from them by the lever or by two pots slung on a wheel. The small natural ponds and swamps, which are so numerous in the District, are everywhere used for irrigation, in addition to the small tanks which have been excavated. The swing-basket is used to raise water from these sources of supply. The larger rivers are not used at all for irrigation, as their beds lie too low; but the smaller streams are held up by small temporary earthen dams, and their water is turned into the rice fields as required. In the north-east of the District two European grantees constructed a series of works which effectually protect about 52,000 acres of rice land. The valleys of several small rivers have been dammed with

earthen embankments provided with weirs and gates, so that sudden floods can be allowed to escape. Water is conducted by 82 miles of main canals and about 250 miles of distributaries to all parts of the estates. No water-rates are charged, but the cultivators voluntarily keep the works in repair. This is the only considerable system of private canals in the United Provinces, and has been imitated with success by a native samindar, who owns an estate close by. Except in the case of rice fields, irrigation is chiefly required for the spring harvest. Water is usually sprinkled over the land with a wooden shovel; but poppy and garden crops are flooded.

The chief mineral-product is kankar or nodular limestone, Minerals. which is used for metalling roads and making lime. It is, however, scarce and of poor quality, and lacustrine shells are also used for making lime. Saltpetre is manufactured from the saline efflorescence called rek.

The District is exceptionally poor in industrial enterprise. Arts and Sugar-refining alone is of some importance. Agricultural implements, coarse cotton cloth, and the ordinary utensils for household use are made locally. Brass vessels are made at Bakhira. but these and also cloth are largely imported. A little chintz is made at Nagar and Bahadurour.

The trade of the District with other parts of India is chiefly Commerce. in agricultural produce. Rice, sugar, opium, saltperre, oilseeds, and hides are exported; and cloth, metals, salt, cotton, and tobacco are imported. The through trade with Neptil is also of importance. Iron, drugs, spices, ghi, fibres, and rice come from Nepšl; and raw sugar, salt, hardware, tobacco, coco-nuts, cotton yarn, and cloth are sent to that State. Usea and MEMNDAWAL are the chief marts for the traffic of the north of the District with Nepal. The commerce of the south is partly carried on by the Gogra; but the railway has largely replaced the river, as is usual where the two means of carriage compete. Campore in the west and Calcutta in the east attract most of the trade of the District.

The Bengal and North-Western Railway main line crosses Railways Basti from east to west, and Uskā in the north-east corner is and roods. at present the terminus of a branch from Gorakhpur. It is, however, being connected with Tubipur in Gonda District by a line which will pass very close to the border of Nepāl and may be expected to increase the traffic with that State. Communications by road are not good. Out of 682 miles only 113 are metalled. The metalled roads are in charge of the Public Works department; but the cost of all but 62 miles is charged

o

to Local funds. The main lines are those from Gorakhpur to Fyzābād, from Basti town to Bānai, and from Uskā towards the Nepal frontier. Bridges are still required on most of the unmetalled roads, which cross many small streams by fords and ferries. Avenues of trees are maintained on 127 miles of road.

Familie.

The famines experienced in Rasti District up to 1865, when it became a separate Collectorate, will be found in the article on Gorakhpur District. In 1868-9 only slight scarcity was felt. The rains of 1873 were light and the following spring crop could not be sown. Relief works were opened, and in May, 1874, the daily muster rose to 127,000; but it was held afterwards that relief had been too lavish. A similar failure of the mins in 1877 caused distress in 1878, and relief works were again required. In 1896-7 distress was felt; but this was due to the pressure of high prices on the labouring classes rather than to a failure of the crops. Relief works were opened, but the proportion of the population who came to them was small.

District wall.

The Collector is usually assisted by five Deputy-Collectors recruited in India, and a takitldar is stationed at the head quarters of each takiil.

Civil

There are two District Munsifs, and the system of village justice and Munaifs was introduced in 1902. Basti is comprised within the Civil and Sessions Judgeship of Gorakhpur; but sessions cases are tried by the Judge of Jaumpur, who is a Joint Sessions Judge for this purpose. Crime is on the whole light, and the District is not noted for any particular form. Infanticide was formerly suspected, but no operations are now required under the Act.

Land INVESTIG administrailon.

Basti was acquired by cession in 1801, but up to 1865 it formed part of Gorakhpur District. The quarrels of the Rajas and the failure of the Oudh government to introduce any system of administration had reduced the country to a miscrable state. The early settlements, based chiefly on the previous collections, were for short periods, and at first were made with the Rajas or large proprietors at lump sums for whole estates. In 1838-9 the first regular settlement was made under Regulation IX of 1833. It was based on a survey. and it recognized the birtias or under-proprietors, from whom engagements were taken direct for the first time. The revenue fixed was 9-7 lakhs, which was more than double the former revenue. This settlement was revised between 1859 and 1865 by various officers working on different methods, but principally relying on estimates of the rental 'assets,' and the demand was increased to 12-8 lakbs. The latest revision was made between 1883 and 1890, and Basti was one of the first Districts to be

resettled on the basis of the actual rents paid. The revenue demand amounted to 19:4 lakhs or 46 per cent of the corrected tent-roll, the incidence per acre being Rs. 1-1, varying from R. 0-8 to Rs. 2-7. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees:—

| | inc. | 1800-s. | tjere k. | Foreigns. |
|--------------------------------|----------------|----------------|----------|-----------|
| Land revenue . Total revenue . | 13,14 14,33 | 18,93 24,39 | 20,22 | 19,23 |

There are no municipalities, but three towns are administered Local alternative Act XX of 1856. Beyond the limits of these, local government affairs are administered by the District board, which in 1903-4 had an income of 1-6 lakhs, chiefly derived from local rates. The expenditure in the same year was 1-6 lakhs, including Rs. 02.000 spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police is assisted by 4 inspec Police and tors, and has a force of 97 subordinate officers and 378 constables, besides 52 town police, and 3,201 rural and road police. There are 26 police stations. The District jail contained a daily average of 247 inmates in 1903.

The District contains few towns, and the proportion of Educations literate persons is not very high; only 2-8 per cent. (5-5 males and o-1 females) could read and write in 1901. Hindus (3 per cent.) were better educated than Musalmäns (2 per cent.). The number of public schools increased from 154 with 5,037 pupils in 1880-1 to 290 with 11,286 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 308 such schools with 16,844 pupils, including 426 girls, besides 36 private schools with 459 pupils. The primary classes contained all but 1,400 pupils in both public and private schools. Two schools are managed by Government and 135 by the District board. Out of a total expenditure on education of Rs. 46,000, Local funds supplied Rs. 42,000, and the receipts from fees were only Rs. 3,800.

There are 8 hospitals and dispensaries, with accommodal Hospitals and dispensaries, with accommodal Hospitals and the tion for 51 in-patients. In 1903 the number of cases treated and dispensaries was 90,000, including 417 in-patients, and 3,362 operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 26,000, chiefly met from Local funds.

About 50,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, Vaccinagiving a proportion of 27 per 1,000 of population, which is timebelow the Provincial average.

(District Gazetteer, 1881 [under revision]; J. Hooper, Settlement Report, 1891.)

Domariaganj.-North-western tahiil of Basti District, United Provinces, comprising the pargamer of Rasulpur and Bansi (West), and lying between 27° and 27° 30' N. and 82° 26' and 82° 58' E., with an area of 593 square miles. Population increased from 313,090 in 1891 to 322,321 in 1901. There are 1,111 villages, but only one town, Biskohar (population, The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,77,000, and for cesses Rs. 70,000. The density of population, \$44 persons per square mile, is the lowest in the District. Near the Rapti, which crosses the taksil from west to east, is a fertile belt of rich soil called bhat, which does not require irrigation. South of the Rapti the takiil forms part of the central upland area, but north of the river it gradually assumes the marshy appearance of the Nepalese tarai. The area under cultivation in 1903-4 was 427 square miles, of which 142 were irrigated. Wells and small rivers each supply a fourth of the irrigated area, and tanks and swamps the remainder.

Bansl.-North-eastern taksil of Basti District, United Provinces, comprising the parganas of Binayakpur and Banst (East), and lying between 27° and 27° 28' N, and 82° 46' and 83° 14' E., with an area of 621 square miles. Population increased from 362,724 in 1891 to 402,277 in 1901, the rate of increase being the largest in the District. There are 1,343 villages and only one town, Uska (population, 6,718). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,06,000, and for cesses Rs. 77,000. The density of population, 648 persons per square mile, is almost the District average. The takil extends from the border of Nepal to the south of the Rapti river. The northern portion is intersected by a number of small streams, and chiefly produces rice. The area under cultivation in 1903-4 was 463 square miles, of which 144 were irrigated. Tanks and swamps are the chief sources of supply; but the smaller rivers are also largely used, and an extensive system of dams and irrigation channels has been constructed by European zamindars.

Haraiyā.—South-western tahsil of Basil District, United Provinces, comprising the parganas of Amorhi, Nagar (West), and Basti (West), and lying along the Gogra between 26° 36' and 27° N. and 82° 43' E., with an area of 478 square miles. Population fell from 351,609 in 1891 to 333,801 in 1901, this being the only tahsil in the District which showed a decrease. There are 1,461 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,84,000, and for cesses Rs. 73,000. The density of population, 698 persons per square mile, is

above the District average. The tahil lies in the upland area above the Gogra, and is crossed by the Kuwānā and several smaller streams. The area under cultivation in 1903-4 was 338 square miles, of which 211 were irrigated. Wells supply three-fourths of the irrigated area, and tanks and swamps most of the remainder.

Basti Tahsil.-Head-quarters tahril of Basti District, United Provinces, comprising the parganas of Nagar (East), Basti (East), Maghar (West), and Mahuli (West), and lying between 26° 33' and 27° 6' N, and 82° 37' and 82° 59' E., with an area of 536 square miles. Population increased from 377,035 in 1801 to 393,070 in 1901. There are 1,000 villages and only one town, Basti, the District and tahiil head-quarters (population, 14.761). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,22,000, and for cesses Rs. 78,000. The density of population, 733 persons per square mile, is the highest in the District. The tahuil stretches north from the Gogra in the upland portion of the District, and is crossed by the Kuwānā and a number of smaller streams. The area under cultivation in 1903-4 was 387 square miles, of which 238 were irrigated. Wells supply more than half the irrigated area, and tanks and swamps are a more important source than rivers.

Khafifabad.—South-eastern tabil of Basti District, United Provinces, comprising the parganas of Maghar (East) and Mahūli (East), and lying between 26° 25' and 27° 5' N. and 82° 50' and 83° 13' E., with an area of 564 square miles. Population increased from 380,486 in 1891 to 394,675 in 1901. There are 1,588 villages and only one town, Menndawai (population, 10,143). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,75,000, and for cesses Rs. 70,000. The density of population, 700 persons per square mile, is above the District average. The tabil lies entirely in the fertile upland tract which extends northwards from the Gogra. It is crossed by the Kuwana, Ami, and several smaller streams. The area under cultivation in 1903-4 was 394 square miles, of which 234 were irrigated. Tanks and swamps supply more than half the irrigated area, and wells about one-third.

Basti Town.—Head-quarters of Basti District and takvil, United Provinces, situated in 26° 47° N. and 82° 43′ E., on the Bengal and North-Western Railway and on the Gorakhpus-Fyzābād road. Population (1901), 14,761. The town became the residence of a local Rājā in the seventeenth century, but was never of importance. For some time before the Mutiny it was the site of an opium storehouse and treasury, and in 1865 it

became the head-quarters of a new District. Basti consists of the old village, in which the Raja's fort is situated, a new hazar which has sprung up on the road south of this, and the civil station. It is the head-quarters of the Church Missionary Society in the District, which maintains the high school, and besides the usual offices there is a dispensary. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 4,000. There is little trade. Two schools for boys contain 330 pupils, and a small girls' school has an attendance of 15.

Maghar.—Village in the Khalilabād tahtil of Basti District, United Provinces, situated in 26° 45' N. and 35° 8' E., on the Bengal and North-Western Railway and on the toad from Gorakhpur to Fyzābād. Population (1901), 2,633. The village is celebrated as containing the tomb of Kabīr, the religious reformer, who is acknowledged as a prophet or saint by both Muhammadans and Hindus. The tomb is said to have been built about 1450; but the original building was replaced or restored by Nawāh Fidāe Khān in Akbar's reign. Maghar was occupied from the close of the seventeenth century by a Muhammadan garrison, and under the Oudh government was an important military post up to the cession in 1801.

Mehndāwal.—Town in the Khalilabād tahtil of Basti District, United Provinces, situated in 26° 59' N. and 83° 7' E., 27 miles north-east of Basti town. Population (1901), 10,143. Mehndāwal is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,000. It is the chief commercial centre in the District, being a great mart for trade with Nepāl; but it has suffered from the opening of railway stations elsewhere. Most of the town consists of mud hovels, but there are several fine market-places. It also contains

a dispensary and a school with 88 pupils.

Uska.—Town in the Bansi takail of Basti District, United Provinces, situated in 27° 12' N, and 83° 8' E. It is at present the terminus of a branch of the Bengal and North-Western Railway from Gorakhpur; but the line is being extended to Tulstpur in Gorda. Population (1901), 6,718. A market was founded here by a European grantee, and it has now become the chief town in the north of the District. Rice and oil-seeds, the product of Nepal and of the country round, are largely exported. Town duties, mised under the United Provinces Revenue Act (III of 1901), yield about Rs. 2,000 annually for the improvement of the place. There is a school with 102 pupils.

Azamgarh District. - Southern District of the Gorakhpur Boun-Division, United Provinces, lying between 25° 38' and 26° 27' figuration, N. and 82° 40' and 83° 52' E., with an area of 2,207 square and river miles, of which 52 square miles were added in 1904. It is system. bounded on the north by Fyzabad and Gorakhpur; on the east by Ballia; on the south by Ghampur and Jaunpur; and on the west by Jaunpur and Sultanpur. The greater part forms an elevated plain which lies south of the Gogra. Besides the Gogra, the principal rivers are the Tons and Chhott Sarju, the former flowing from west to east across the District, while the Chhoti Sarju flows south-east from the Gogra. Along the Chhoti Sarju and Gogra are tracts of low alluvial land. The upland area south of the Tons differs from the area between the Tons and the Gogra. The southern tract is made up of a series of narrow parallel sections of country lying east and west. These are separated by lines of swamps which gradually become definite drainage channels. The whole area contains many depressions, which are filled with water in the rains, but gradually dry up. Nowhere does any long continuous expanse of cultivation occur, marshes and saline plains (\$\hat{x}sar\$) interrupting the cropped lands. In the northern portion the watercourses keep more closely to their channels, and swamps are less frequent, the expanses of cultivation more continuous, and hamlets with their attendant groves more thickly scattered. The Gogra, also known as the Great Sarju, Deoha, or Dehwa, has a valley varying in width from half a mile to ten miles, and constantly shifts its channel. The Tons after a tortuous course joins the Chhoti Sarjii near the eastern boundary. It is remarkable for the heavy floods which occur in its valley. There are about twenty large lakes or swamps, the principal being the Gamhtrhan, Kotail, Jamwawan, Salona, Pakri-Pewa, Narja, and Ratol.

The District consists entirely of alluvium, and kankar or Geologycalcareous lime is the only form of stone. Saline efflorescences

are found in many parts.

The flora is that of the Gangetic valley. Few large areas are Botany, covered with trees; but near the Tons and other streams there are some patches in which palās or dhāk (Butea frondosa) predominates. In the north mango groves abound; but there are few in the south, especially in the awampy area to the south-west. The alluvial tracts or kachhir are, however, the barest of trees.

The wolf, jackal, and fox are common, and wild hog and milgur Fauns, are occasionally met with. The rivers and lakes abound in fish, and in the winter are the haunt of gerse, duck, and stipe.

Climate and temperature. The climate is on the whole healthy, though fever is prevalent during the rains and immediately after. With the commencement of the hot weather in April westerly winds spring up; but in May the wind changes to the east and the climate becomes very relaxing.

Rainfall.

The average annual rainfall is 41 inches, the distribution in different parts of the District being fairly uniform. Variations from year to year are, however, considerable. In 1894 the fall was 68 inches, and in 1896 only 18 inches.

History.

Tradition points to the Bhars, Soeris, and Chertis as the aboriginal inhabitants of the District, and asserts that these were superseded first by the Ralputs and then by the Rhuinhars. When the tide of Muhammadan conquest flowed eastwards, Azamgarh was included in the great kingdom of Kanaui and passed with the neighbouring country under Delhi In the fifteenth century the Sharkl kings of Jaunpur usurped authority over Azamgarh. On the fall of their dynasty, the District was reatmexed to the Delhi dominions, and the fort of Sikandarpur was built by, and named after, Sikandar Lodf. In the seventeenth century a family of Gautam Rajputs rose to influence, and before the close of the century they had embraced the faith of Islam and possessed themselves of nearly the whole District as feudatory chiefs. About 1731 Mahabat Khan, head of the family, refused payment of revenue; but after some success in resisting the forces of the Oudh government, he was forced to fly. His successors gradually lost their estates, and in 1758 Azamgarh became a chakla or district of Oudh till its cession in 1801.

On June 3, 1857, the 17th Regiment of Native Infantry mutinied at Azamgarb, murdered some of their officers, and carried off the Government treasure to Fyzabad. The Europeans fled to Ghazipur, but on June 16 two planters, Messrs. Venables and Dunne, returned to Azamgarh, and, troops being sent from Ghaztpur, the town was reoccupied. On July 18 the civil officers returned, and Mr. Venables attacked the rebels, but was forced back on the town; and on July 28, after the mutiny at Dinapore, all the Europeans returned to Ghazipur. The Palwars held Azamgarh town from August 9 to 25; but they were expelled by the loyal Gurkhas on August 26, and on September 3 the civil officers returned again. On September 20 Benj Mādho and the Palwärs were defeated, and British authority to a great extent re-established. The rebels were driven out of Atraulia in November; and in January, 1858, the Gurkhas, under Jang Bahādur, marched from Gorakhpur towards Fyzabád, driving the rebels back into Azamgarh.
Kuar Singh entered the District in his flight from Lucknow in
the middle of February, and was attacked by our troops at
Atrautia; but the latter were repulsed and fell back on Azam
girh, which was besieged by Kuar Singh till the middle of
April, when he was defeated by a force under Sir E. Lugard,
and the siege raised. Kuar Singh fled, and lost his life in
crossing the Ganges; but bands of rebels roamed about
attacking the tahsifis and thânas till October, when a force
under Colonel Kelly was sent to clear the District.

Ruins of numerous forts exist in many parts, and are locally Archaeoattributed to the Bhars. An important copperplate inscription logy. of Harshavardhana of Kanauj, dated in 631 A.D., was found at Madhuban³, and an inscription on a tank records its construction in 1144. There are few remains of architectural interest, the chief being an old Rajput fort at Mehnagar.

In 1901 the District contained twelve towns and 4,688 The villages. Population increased considerably between 1872 and people. 1891; but in the next decade fell by a larger amount than in any other District in the United Provinces. The numbers at the four enumerations were as follows: 1,317,626 (1872), 1,604,654 (1881), 1,728,625 (1891), 1,529,785 (1901). Fever, emigration, and famine are responsible for the decrease between 1891 and 1901. Up to 1904 there were five Inhilit — Disouron, Azamuarr, Mähul, Sagri, and Muhammadaran — each named from its head-quarters, except Sagri and Mähul, the head-quarters of which are at Jumpur and Atraulia respectively. A sixth Inhilit named Ghosi, was constituted in 1904. The principal towns are the municipality of Azamuarr, the District head-quarters, and Mau and Muharrarpur. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Tuhest. | Aver in square miles. | Towns. N | Villagree and | Population | Population per square units | Percentage of caration is population in faces (Sp. | Number of persons able to read and welco. |
|----------------|--------------------------|----------|---------------|------------|--------------------------------|---|--|
| Deogram . 1 | 389 | | 702 | 224,827 | 578 | - 15-1 | 8,363 |
| Azamgarh | 314 | (4) | Boy | 3044114 | 841 | | 10,167 |
| Mahul | 436 | (8) | 947 | 317,734 | 716 | - 04 | 7,966 |
| Sagri v | 589 | 3 | 7,347 | 421,749 | 710. | 1-01 | 14,813 |
| Mahammadatüd | 417 | 5 | 898 | 300,820 | 719 | - 14-7 | 11,413 |
| District total | 2,133 | 19 | 4,688 | 1,529,783 | 710 | - 11-5 | 57,728 |

Epigraphia Indica, val. l, p. 67.

The total population has been increased to 1,548,683 by a transfer of 52 square miles from Gorakhpus District in 1904. Details of the alterations will be found in the articles on Saori, MUHAMMADARAD, and GHOSĪ taksīls. Nearly 86 per cent of the population are Hindus and 14 per cent. Muhammadans. The density of population is very high, and the District supplies a large number of emigrants. About 94 per cent. of the population speak Bihāri.

Castes and occupations.

The most numerous Hindu castes are: Chamars (leatherworkers and labourers), 257,000; Ahirs (graziers and cultivators), 219,000; Brähmans, 108,000; Räiputs or Chhattris, 99,000; Bhars (labourers), 70,000; Koiris (cultivators), 60,000; Bhuinhars (agriculturists), 56,000; Lunias (saltpetre workers and labourers), 52,000; and Banifs, 38,000. More than half of the Musalmans are included in the two divisions of Julihas (weavers), 54,000, and Shaikhs, 54,000; while Pathans number 27,000. Agriculture supports more than 60 per cent, of the total population, and general labour nearly 12 per cent., while weavers form 3 per cent. Rajputs or Chhattris own about one-third of the land, Brahmans one-tenth, and Bhuinhars one-sixth. The same three castes cultivate one-seventh of the District; Kurmis, Chamirs, and Ahirs occupy a large area as tenants, while Koiris are noted for their skill in the cultivation of the most valuable crops.

Christian missions,

In 1901 the District contained 104 native Christians, of whom 48 belonged to the Anglican communion. The Church Missionary Society, which has laboured at Azangarh since 1818, supports the principal school.

General agricultural conditions. In the southern portion of the District, which is budly drained, the prevailing soil is clay, chiefly producing rice. In the deeper or central portions of the depressions this becomes almost black from the amount of organic matter which it contains, and the soil is sticky and hard to work. Loam is more common in the northern portion, though clay soil and rice lands are also found there. There are small ravines along the Tons, the soil in which has suffered from denudation. The kachhār land contains large stretches of light sandy soil along the Chhoti Sarjii, and sandbanks near the Gogra. These produce but scanty crops, and along the Gogra are often covered with long grass or tamarisk, and are liable to be cut away by the river. Even the more permanent parts of the

¹ For a grammer of the dialect spoken in Arangarh, see Appendix II, Settlement Report, by J. R. Reid.

karahar are exposed to inundation, and this part of the District

is less productive than the rest. The District is held on the usual tenures found in the Chirl agri-United Provinces; but a large number of mahale or revenue against

units are complex, extending over a number of minutes of and princivillages. Proprietary rights are very minutely subdivided pal crops In a few villages inferior proprietors are also found, called mushakh khasidārs. The main agricultural statistics are given below, in square miles -

| 22Ael7. | Total. | Ciditivated. | Irrigated. | Cultivable waste. |
|---------------|--------|--------------|------------|----------------------|
| Deogson 4 | 189 | 182 | 108 | 19 |
| Azumgarh | 314 | 185 | 119 | 30 |
| Mühul . | 43% | 231 | 149 | 59 |
| Sagri | 589 | 347 | 118 | 48 |
| Muhammadaisid | 427 | 118 | 146 | 60 |
| Total | 2,385 | 1,203 | 740 | 236 |

NOTE .- Owing to settlement operations, these statistics are for various years from 1807 to 1901.

The staple food-crops are rice (422 square miles) and barley (150). Peas were grown on 181 square miles; and kodon, wheat, arhar, gram, maize, and marial are also largely cultivated. Sugar-cane is the most valuable crop (rox square miles); indigo (29) and poppy (10) are also important.

There has been no extension of the net cultivated area in Improverecent years, and the rice lands are so dependent on rainfall ments in that fluctuations are considerable. The most striking change unal has been the large increase in the area bearing two crops in the practice. same year, which has nearly doubled within the last thirty years. Advances under the Agriculturists' and Land Improvement Loans Acts are rarely taken, except in bad seasons. Out of a total of 1-4 lakhs lent during the ten years ending 1900 more than a lakli was advanced in two years, and only Rs. 2,400 has been lent in four years since 1900.

The cattle bred locally are inferior, and buffaloes are largely Cattle. used to supply milk. Ponies are also of a poor stamp, and the Ponies, and best are imported. Many of the wealthier camindars keep shoop elephants. Sheep are chiefly kept for wool and manure, and goats for milk and fiesh.

Out of 740 square miles irrigated, 416 were supplied from brigation wells, 214 from tanks and swamps, and 110 from small streams. The upland area requires much more irrigation than the kuch-

har, in which even sugar-cane can be grown without irrigation. Artificial tanks number more than 15,000, but all are of small size. The larger rivers are not used at all, owing to the cost of raising water; but every natural hollow and swamp which holds water is made use of. The upper courses of the smaller streams are regularly dammed, and embankments are also constructed wherever possible in fields to hold up water for rice. Water is generally raised from swamps and tanks by the swing-basket. In many parts of the District the water-level is sufficiently high to allow the use of the lever and pot to raise water; but in other places a leathern backet worked by hand labour, or less commonly by bullocks, takes the place of these. Water is generally sprinkled over the soil instead of being allowed to flood it, except in the case of garden crops.

Minerale.

Kankar or nodular limestone is found in many places, and is used for making lime and metalling roads. Where it occurs in block form it is used for building. Saltpetre and carbonate of soda are largely extracted from saline efflorescences called reh.

Arts and manufacfores.

The most important industries of the District are sugarrefining and the weaving of cotton cloth, which are carried on in all parts. The cloth-weaving industry has suffered from the competition of European piece-goods and also of the mills of India; but coarse varieties are still made for local use, and finer qualities from imported yarn for export. The District is the most important centre of cotton-weaving as a hand industry in the United Provinces, and about 13,000 looms are at work. Silk and satin are also largely produced. MUBARAR-FUR, MAU, and KOPĀGAN) are the chief centres of the weaving industries. The manufacture of indigo was formerly important, but is fast declining under the competition of artificial indigo. Pottery of a rather poor style is produced at Nizāmābād.

Commerce. The chief imports are grain, European piece-goods and yarn, cotton, silk, tobacco, salt, metals and hardware, and drugs; and the exports are sugar, opium, cloth, oilseeds, indigo, and saltpetre. Grain is largely imported from the country north of the Gogna. The trade routes have been considerably altered by recent railway extensions. Traffic still continues on the Gogra, where Dohnighar is the chief emporium, and there is some trade during the rains on the Chhoti Sarja. Shangan; in Jaunpur attracts a good deal of the produce of the west of the District.

Ralisave and roads.

The Oudh and Rohilkhand loop line just touches the extreme west of the District, while the Bengal and North-Western branch from Gorakhpur to Benares traverses the eastern portion. These have now been linked up by a line from Shāhganj on the former through Azamgarh town to Mau, which crosses the centre of the District. A branch connects Kopāganj with Donrīghār, and another branch from Kopāganj to Ballia has a very short length in the District. Road communications are fairly good. Out of a total length of 708 miles, 193 miles are metalled and are maintained by the Public Works department; but the cost of all but 86 miles is charged to Local funds. The main lines are the roads from Dohrīghāt to Jaunpur with a branch to Benares, and from the same place to Ghāzīpur, but the cross-road from Mau through Azumgarh town to Shāhganj is also important. Avenues of trees are maintained on 70 miles of road.

From the commencement of British rule till almost the close Famine, of the nineteenth century, no drought which could be called famine was known in the District. Hailstorms, frost, floods, and drought had occasionally caused scarcity in various parts. The early part of the decade, t891-1901, was very unfavourable. Excessive and unseasonable min damaged the harvests for three consecutive years, and in 1896 drought caused famine. The construction of a branch of the Bengal and North-Western Railway gave employment to 6,000 or 8,000 persons; but relief works were also opened and the highest number of workers rose to 11,000. Nearly 4 lakhs of revenue was remitted, and the cost of all kinds of relief amounted to about 4.3 lakhs.

The Collector is usually assisted by one member of the District Indian Civil Service, and by five Deputy-Collectors recruited stationary in India. An officer of the Opium department is stationed in the District, and there is a tahsildar at the head-quarters of each tahsil.

There are two District Munsifs and a Sub-Judge for civil Civil work, and the District Judge is also Sessions Judge. Aram-justice and garh is noted for the tension of religious feeling between Hindus and Musalmans, which not infrequently causes trouble. In 1893 serious riots accompanied by bloodshed took place over the slaughter of kine. The people are also litigious, and agrarian disputes are not infrequent. Cattle-poisoning by Chamars for the sake of hides is perhaps more common in Aramgarh than eisewhere in the United Provinces. Infanticide was formerly suspected, but no measures are now required for its prevention.

At the cession in 1801 Azamgarh was included in the large Land District of Gorakhpur then formed. In 1820 part of it was revenue adminitransferred to Jaunpur and part to Ghazipur. Three years tration.

later # Sub-Collectorate of Azamgarh was formed out of the Jaunpur pargunas, and in 1832 a separate District of Azamgurh was constituted, to which for many years part of the present Ballin District was also attached. The early settlements were for short periods and were carried out in GORAKHPUR Distruct. Operations were commenced under Regulation VII of 1822, but were never completed; and the first regular settlement was made between 1824 and 1827 by Mr. Thomason, afterwards Lieutenant-Governor of the United Provinces, and Mr. (afterwards Sir Robert) Montgomery. Land was classified according as it produced only rice or all varieties of crops, and average rates were assumed for each class of soil. The rental 'assets' so calculated were checked by assumed average pargana rates. The proportion taken as revenue varied between 50 and 66 per cent, and the revenue demand was fixed at 12.4 lakhs. This settlement was revised between 1866 and 1875. The land was again classed according to the crops it produced, and the rice land was divided into four or five classes according to its quality, while the ordinary land was subdivided according to its position near the village site or remote from it. Rent-rates were selected for each class of soil at inspection, and were applied to the areas of each class, deductions being made in the case of land held by high-caste tenants, who pay lower rates than those of low caste, and in the case of villages where rents were difficult to collect. The revenue fixed amounted to 16-6 lakhs. while the assumed rental 'assets' were 34-8 lakhs. The revenue demand in 1903-4 was 17-8 lakhs, the incidence being Rs. 1-5 per acre, varying in different pargunas from R. 1 to Rs. 1-6. This figure includes the revenue of 176 villages which are permanently settled, as they formerly belonged to the Benares province. The District is at present (1906) being resettled. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees:-

| | | ritho-t | ifigo-t- | F900=1. | 1903-4 |
|-------------------------------|---|----------------|----------------|----------------|--------|
| Land revenue Total revenue | * | 16,59 18,91 | 15,53 21,65 | 29,17 25,57 | 17,78 |

Local self government, AZAMGARH is the only municipality, but ten towns are administered under Act XX of 1856. Beyond the limits of these, local affairs are managed by the District board, which in 1903-4 had an income of 1-2 lakhs, chiefly derived from

local rates. The expenditure was also 1-2 lakhs, and included Rs. 43,000 spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police has a force of 4 in Police and spectors, 110 subordinate officers, and 408 constables, besides juils 117 municipal and town police, and 2,260 rural and road police. There are 23 police stations. In 1903 the District jail contained a daily average of 239 inmates.

Azamgarh is above the Provincial average as regards the Education literacy of its inhabitants, of whom 3-3 per cent. (6-8 males and o-2 females) could read and write in 1901. The number of public schools has risen from 184 with 7,591 pupils in 1880-1 to 224 with 11,183 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 265 such institutions with 14,216 pupils, of whom 162 were girls, besides 114 private schools with 1,285 pupils, including 34 girls. One of the schools is managed by Government, and 133 by the District and municipal boards. Out of a total expenditure on education of Rs. 41,000, Rs. 35,000 was charged to Local funds, and the receipts from fees were Rs. 4,000.

There are 8 hospitals and dispensaries, with accommoda Hospitals tion for 66 in-patients. In 1903 the number of cases treated and dispensaries was 71,000, including 745 in-patients, and 2,559 operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 10,000, chiefly met from Local funds.

About 42,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, Vaccinate representing a proportion of 27 per thousand of population. Vaccination is compulsory only in the municipality of Azamgarh.

(J. R. Reid, Settlement Report, 1877; District Gazetteer, 1883 [under revision].)

Deogaon.—Southern laheil of Asamgarh District, United Provinces, comprising the parganas of Deogaon, Bela-Daulatahad, and Belhahams, and lying between 25° 38′ and 25° 57′ N. and 82° 40′ and 83° 21′ E., with an area of 389 square miles. Population fell from 264,851 in 1891 to 224,827 in 1901, the rate of decrease being much above the District average, owing to the large area of rice land which suffered from drought. There are 702 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903–4 was Rs. 3,04,000, and for cesses Rs. 49,000. The density of population, 578 persons per square mile, is the lowest in the District. The laheil consists of a series of narrow strips separated by chains of swamps which gradually change into watercourses. The Mangai, Besū, and Gangt are the chief streams. During the mins the swamps spread over large areas in which rice is sown. Hamlets are built in those places

which are least liable to inundation. The area under cultivation in 1897-8 was 182 square miles, of which 108 were irrigated. Wells supply rather more than one-third of the irrigated area, and tanks and swamps most of the remainder.

Azamgarh Tahsil,-Head-quarters tahsil of Azamgarh District, United Provinces, conterminous with the pargana of Nizāmābād, lying between 25° 53' and 26° 12' N. and 82° 52' and 83" 16' E., with an area of 314 square miles. Population decreased from 280,488 in 1891 to 264,114 in 1901, the rate of decrease being the smallest in the District. There are 800 villages and two towns, including AZAMOARH, the District and tahril head-quarters (population, 18,835). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,18,000, and for cesses Rs. 51,000. The density of population, 841 persons per square mile, is the highest in the District. Across the centre of the takiil flows the Tons, while the Mangai traverses the southern portion. In the north a considerable area-produces a great variety of crops, but in the south rice is the most important staple. The area under cultivation in 1897-8 was 185 square miles, of which 110 were irrigated. Wells supply three-fourths of the irrigated area, and tanks, swamps, and small streams the remainder.

Māhul.-North-western tahsil of Azamgarh District, United Provinces, comprising the parganas of Māhul, Kauriā, and Atraulia, and lying between 25° 48' and 26° 27' N. and 82° 40' and 83° 7' E., with an area of 436 square miles. Population fell from 344,723 in 1891 to 312,234 in 1901. There are 947 villages and two towns, but neither of them has a population of over 5,000. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,63,000, and for cesses Rs. 38,000. The density of population, 716 persons per square mile, is about the District. average. The taksil is divided into two portions by the Kunwar Nadi. North of this river the soil is a light loam. varying to sand, while the southern part is chiefly clay and is intersected by swamps and small channels. The largest river is the Tons. The area under cultivation in 1898-9 was 251 square miles, of which 149 were irrigated. Wells supply more than half the irrigated area, and tanks, swamps, and small streams the remainder.

Sagri.—North-eastern taksil of Azamgarh District, United Provinces, comprising up to 1904 the parganas of Gopālpur, Sagri, Ghost, and Natthüpur, and lying between 26" 1' and 26" 19' N. and 83° 4' and 83° 52' E., with an area of 589 square miles. In October, 1904, the two last-named purganas were transferred to the new Guosi talisil, and a number of villages were transferred from Gorakhpur District, making the new area 345 square miles. Population fell from 469,817 in 1891 to 421,740 in 1901, the population of the area as now constituted being 234,872. There are now 755 villages and one town, Maharaigani (population, 2,192). The demand for land revenue in 1902-4 was Rs. 4, 32,000, and for cesses Rs. 72,000; but the figures for the area as now constituted are Rs. 2,40,000 and Rs. 30,000 respectively. The density of population of the reduced talisit is 681 persons per square mile, considerably below the District average. The taksil lies south of the Gogra and is chiefly drained by the Chhott Sarjū. The greater part of the area is upland, but along the Gogra and Chhoti Sarjii are large stretches of alluvial soil called kachkar. In 1809-1000, 727 square miles of the old area were under cultivation, of which 218 were irrigated, wells being the chief source of supply.

Muhammadabad Tahsil.-South-eastern tahsil of Azamgarh District, United Provinces, comprising the parganas of Karvat Mittu, Chriskot, Maunath Bhanian or Mau, and Muhammadābād, and lying between 25° 48' and 26° 8' N. and 83 11' and 83 40' E, with an area of 427 square miles. This area was reduced by 71 miles in 1904, portions being transferred to the new Gnosi taksil. Population fell from 359,746 in 1891 to 306,870-in 1901, and allowing for the recent change is now 251,796. There are 971 villages and three towns: MAU (population, 17,606), MUBARAKPUR (15,433), and Mu-HAMMADARAD, the tabsil head-quarters (8,775). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,63,000, and for cesses Rs. 50,000; but after the transfer these figures became Rs. 3,02,000 and Rs. 49,000. The density of population of the reconstituted tahsil is 707 persons per square mile, or almost exactly the District average. The tahall is Intersected by several small streams and a number of swamps and marshes, and lies south of the Chhoti Sarju and its tributary, the Tons. In 1900-1, 238 square miles of the old area were under cultivation, of which 146 were urigated. Wells supply rather more than half the irrigated area, and tanks or swamps and small rivers the remainder in equal proportions.

Ghosi.—North-eastern takeil of Azamgarh District, United Provinces, lying between 25° 57' and 26° 19' N. and 83° 21' and 83° 52' E., with an area of 368 square miles. The takeil was formed in 1904 by transferring the pargunas of Natthupur and Ghosi from Sagri tahsil, and portions of the baryana of Muhammadābād from the tahsil of that name. Population according to the Census of 1901 is 260,840, and the density is about the District average. There are 519 villages and two towns: Dohnighāt (population, 3,417) and Kopagani (7,039). The demand for land revenue is Rs. 2,72,000, and for cesses Rs. 46,000. The tahtil lies between the Gogra and the Chhott Sarju and Tons, and thus includes a considerable area of low-lying kachhār land, which is subject to fluvial action.

Azamgarh Town,-Head-quarters of Azamgarh District and tahsil, United Provinces, situated in 26° 5' N. and 83° 12' E., on the Tons and on a branch of the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 18,835. The town was founded about 1665 by Azam Khān, son of one of the Gautam Rajas referred to in the history of Azamoahn District. The dilapidated remains of the fort built by Azam Khan and a temple erected in the latter part of the eighteenth century are the only buildings of any age. Azamgarh is almost surrounded by a loop of the Tons, which is subject to heavy floods, occasionally causing great damage. Thus in 1804 it was estimated that the loss at Azamgarh was about Rs. 50,000, and the flood of 1871 was still more serious. An embankment was made between 1896 and 1898, which affords protection from floods, at a cost of Rs. 13,000. The chief public buildings are the male and female dispensaries, the town hall, the church, Mission school, and the National high school. Azamgarh has been a municipality since 1884. During the ten years ending 1901 the income averaged Rs. 17,800 and the expenditure Rs. 17,000. In 1903-4 the income was Rs. 19,000, chiefly derived from octroi (Rs. 11,000), and the expenditure was Rs. 22,000. The chief manufactures are sugar-refining and the weaving of cotton cloth. There are two high schools and seven primary schools, with a total attendance of 675.

Dohrighat.—Town in the Ghosi arkii/ of Aramgarh District, United Provinces, situated in 26° 16' N, and 83° 31' E, on the south bank of the Gogra, at the point where the roads from Azamgarh town and Ghäzipur to Gorakhpur unite and cross the river, and on a branch of the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 3,417. The town is said to have been founded by a Rājā of Azamgarh towards the close of the eighteenth century, and contains a large mosque. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 90c. Dohrighāt is the chief port on the south of

the Gogra in Azamgarh District, and has a large traffic in grain, salt, tobacco, gunny-bags, sugar, and other articles. There is

a primary school with 67 pupils.

Kopāganj.—Town in the Ghost tahsil of Azamgarh District, United Provinces, situated in 26° 1' N. and 83° 34' E., on the metalled road from Ghāsīpur to Gorakhpur, and also connected by road with Azamgarh town. It is a junction on the Bengal and North-Western line from Gorakhpur to Benares, at which branches converge from Donascutār and from Balliā. Population (1901), 7,039. The town was founded on an ancient site by Irādat Khān, Rājā of Azamgarh, about 1745; but a Hindu inscription on a small Hindu temple is dated as early as 1472. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,300. It contains a small saltpetre refinery, and cotton cloth is woven, employing 500 looms. The finest products are turbans, woven with silk borders. There is also some trade in sugar and grain. The town has

two schools, with 156 pupils.

Man (or Maunath Bhanjan).- Town in the Muhammadabad takril of Azamgarh District, United Provinces, situated in 25° 57' N, and 83° 34' E., on the right bank of the Tons and on the Bengal and North-Western Railway, at the junction of the branch from Shahganj through Azamgarh town with the line from Conikhpur to Benures. Population (1901), 17,696. The town is of some antiquity, though the date of its settlement has not been ascertained. It is mentioned in the Ain-i-Akbari as the head-quarters of a mahal or pargana, and during the reign of Shah Jahan that emperor bestowed the town upon his daughter, Jahānārā Begam, and it received in a special degree the royal favour. A sarai built by this lady still exists. At that period the town is said to have contained \$4 muhallas, or wards, and 360 mosques. At the time of the cession to the British, Man was held in jagir by one of the Oudh Begams; but the town had suffered severely from previous misrule, and has never regained its former prosperity. A commercial resident was appointed for Man and Azamgarh in 1802; and in addition to the ordinary country traffic, investments in Man cloths were made for some years on behalf of the Company. Private enterprise kept up the trade for a time after the abolition of the Company's monopoly; but the introduction of English-made yarn and cloth gave a great blow to it. Since the opening of the railway, however, trade has revived to some extent, and fewer weavers leave the town to seek employment in the mills of Bombay and Calcutta. The

population largely consists of fanatical Julähäs, and religious friction is always present. In 1893 Mau was the scene of sanguinary riots, which took place in consequence of the agitation against the slaughter of kine. There are no public buildings besides the dispensary, police station, and post office; but Mau is an important trilway centre, and contains the head-quarters of an Engineer, a District Traffic Superintendent, and a Locomotive Superintendent. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 3,000. Muslin and satin are largely woven, and there is a small manufacture of silk. There are two schools for boys with 83 pupils, and two for girls with 77.

Mubarakpur,-Town in the Muhammadahad taksil of Azamgarh District, United Provinces, situated in 26°6' N. and \$3" x8' E., eight miles north-east of Azamparh town. Population (1901), 15,433. It is said to have been formerly called Kāsimābād, and to have fallen into decay before it was resettled, under the name of Raji Mubarak, by an ancestor of the present Shaikh landholders, some twelve generations ago. Serious conflicts have occurred between the Muhammadan and Hindu inhabitants of the town, especially in 1813, 1842, and 1904, and special police are at present quartered there. Mubārakpur is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,000. It contains about 1,700 looms on which cotton, silk, and satin stuffs are woven, the town being especially noted for the latter. There is also a small industry in sugar-refining. A primary school contains 60 papils.

Muhammadābād Town.—Head-quarters of the tahsil of the same name, in Azamgarh District, United Provinces, situated in 26° 2' N. and 83° 24' E., on the Tons and on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 8,775. The town appears to be of some antiquity, and was held by Muhammadans from the early part of the fifteenth century. It contains a dispensary, a tahsili, a munsili, and a police station. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,400. There are about 300 looms and a few sugar refineries. Two schools have too pupils.

KUMAUN DIVISION

Kumaun.-The most northern Division of the United Provinces, situated almost entirely in the Himalayas and extending from the borders of Tibet to the damp submontane tract known as the Tarni. The Division is bounded on the north by Tibet; on the east by Nepal; on the south by the Bareilly Division and the State of Ramour; and on the west by the State of Tehri and Dehra Dun District. It lies between 18° 51' and 31° 5' N. and 78° 12' and 81° 3' E. with a total area of \$3,725 miles. Although it is thus the second Division in size in the United Provinces, it is sparsely inhabited, and the density of population, 88 persons per square mile, is but one-fifth of the average. Population is rising steadily. The numbers at the four enumerations were as follows: 928,823 (1872); 1,046,263 (1881); 1,181,567 (1801); 1,207,030 (1901). In 1901 Hindus formed more than 92 per cent, of the total, and Muhammadans only 7 per cent. Half of the latter are to be found in the TARAI portion of Naim Tal District. Christians numbered 3,500, of whom 2,276 were natives, and no other religion was represented by more than a few hundred followers. The head-quarters of the Commissioner are at Naini Tal, which is also the summer capital of the United Provinces. Kumaun contains three Districts, as shown below :-

| | Area la square miles. | Population, spot. | Land revenue and cessus for 1993-4, in thomsands of supers. |
|-----------|--------------------------|-------------------------------|--|
| Naini Tal | 2,677 5,419 2,629 | 311,257 465,893 429,900 | 2,23 2,29 1,68 |
| Total | 17:745 | 1,207,030 | 6,30 |

Naint Tal lies on the outer ranges of the Himalayas, but most of it is included in the waterless tract at their feet known

as the Bhabar, and the moist country below, called the Tarai. The other two Districts are situated mainly in the Himālayas, and include the highest peaks within the British Empire. The Division contains 10,041 villages and 12 towns, all of which are small. The largest towns are Natni Tal (15,164 in hot weather, and 7,600 in winter with cantonment), Kashipur (12,023), and ALMORA (8,506). Kashipur, HALDWANI, TANAKPUR, SRINAGAR, KOTDWARA, and DWARAHAT are the principal places of commercial importance. Among many famous Hindu temples and places of pilgrimage the chief are the shrines of BADRINATH and KEDARNATH. The tenures in the hill tracts differ considerably from those in the rest of the Provinces. Before British rule the normal system had been a kind of ryotuviri. Each village contained a number of cultivators called khaikar, who held hereditary, but not transferable, rights. During the Gurkha supremacy grants of cultivated land were often made to persons who were known as thatwan, the word that meaning 'village' or 'property in a village.' Such grants could be abrogated at will by the governing power. The khaikars paid to the thatwan the revenue assessed on the village and, in addition, certain dues and small cash-rents. On the conquest by the British the thatwan or, if there was none, the khaikars received proprietary rights. All landholders are now called hissadars, whatever their origin; but the name khaikar is used to describe the actual occupants of villages which were originally granted to a thatwan. The khaikars have heritable, but not saleable, rights, though sub-letting and even mortgage are allowed. They do not pay rent, but pay the Government revenue plus a mālikāna, which is generally 20 per cent, in Garhwal and 25 per cent, in Almora. There are few tenants at will, and khaikari rights are not acquired by prescription, though they are sometimes conferred at settlement. The Tarai is administered as a Government estate, while in the Bhabar the tenures are partly those of the hills and partly those of the Tarai and the plains. The gross revenue from all sources raised in this Division has been, in thousands of rupees:-

(1880-1) 11,25 (1890-1) 12,93 (1900-1) 15,98 (1903-4) 16,37.

Details by Districts are not tabulated separately.

Naini Tal District. - Southern District in the Kumaun figuration, Division, United Provinces, lying between 28° 51' and 29" 37' N. and 78° 43' and 80° 5' E., with an area of 2,677 square miles. It is bounded on the north by the Districts of

duries, copand hill and river avaferre.

Almora and Garhwal; on the east by Almora and by Nepal territory; on the west by Garhwall and Bijnor; and on the south by Plishhit, Bareilly, Moradabad, and the State of Rampur. About one-sixth of the District lies in the outer ranges of the Himālayas, the chief of which is known as GAGAR. These rise abruptly from the plains to a height of 6,000 or 7,000 feet, and are clothed with forest. The scenery is strikingly beautiful; and from the tops of the higher peaks, which reach a height of nearly 9,000 feet, magnificent views can be obtained of the vast level plain to the south, or of the mass of the tangled ridges lying north, bounded by the great snowy range which forms the central axis of the Himalayas. Immediately below the hills stretches a long narrow strip of land called the BHABAR, in which the mountain torrents sink and are lost, except during the rains, beneath the boulder formation which they themselves have made. The Bhābar contains vast forest areas, and is scantily cultivated. The remainder of the District is included in the damp moist plain known as the Tarat and the Kastilrun tahil. On the northern edge of the Tarai springs appear, which gradually form rivers or small streams, and give a verdant aspect to the country throughout the year. Kāshīpur, in the south-west cornet, is less swampy and resembles the adjoining tracts in Robilkhand. None of the rivers in the District rises in the snowy range except the SARDA, which just touches the eastern boundary. The main drainage lines of the hill country are those of the Kosi, Gola, and Nandhaur. The Kosi rises in Almora District, and the Gola and Nandhaur in the southern slopes of the outer hills. All three rivers eventually join the RAMGANGA, the Gola being known in its lower courses, as the Kichhā, and the Nandhaur as the Deohā, and later as the Garra. The smaller watercourses of the Bhahar and the Tsrai are innumerable, and change their names every few miles, but all eventually drain into the Ramganga. In the hills are several lakes of some size and considerable beauty, the chief being Naint Tal, Bhim Tal, Malwa Tal, Sar Tal, Naukuchhiya Tal, and Khurpa Tal.

The Tarai consists of a zone of recently formed Gangetic Geology. alluvium, while the Bhabar is a gently sloping mass of coarse gravels still being formed from the debris brought down by streams from the hills. A sub-Himalayan zone of low hills, including the Kotah Dun, which resembles the Stwatters and the valley of the Nandhaur, contains deposits of the upper tertiary age, chiefly Nahan sandstone. This zone is separated

from the Himālayas by a reversed fault. The higher hills comprise an older set of slates and quartzites; a massive dark dolomite or limestone; beds of quartzite and basic lava-flows, and possibly other schistose and granitic rocks. The steep slopes acted on by heavy rainfall have from time to time given way in landslips of considerable size.

Hotnny.

The flora of the District presents a great variety. In the Tanai the ordinary trees and plants of the plains are found. The Bhābar forests consist to a large extent of sall (Shoren robusta); but as the bills are ascended the flora changes tapidly, and European trees and plants are seen.

Faura.

Owing to the wide range of climate and elevation, most of the animals of both the plains and hills of Upper India are found in this District. A few elephants haunt the Bhāhar and part of the Tarai, while tigers and leopards range from the plains to the hills. The wolf, jackal, and wild dog are also found. The Himālayan biack bear lives in the hills, and the sloth bear in both the Bhāhar and the Tarai. The rāmbar or jarau, spotted deer, swamp-deer, hog-deer, barking-deer, four-horned antelope, milgai, antelope, and gural also occur. Many kinds of snakes are found, including immense pythons which sometimes attain a length of 30 feet. The District is also rich in bird life; about 450 species have been recorded. Fish are plentiful, and fishing in the lakes and some of the rivers is regulated by the grant of licences.

Climate and temperature. The climate of the Tarai and to a lesser extent of the Bhābar is exceedingly unhealthy, especially from May to November. Few people, except the Tharus and Boksas, who seem fever-proof, are able to live there long. In the hills the climate is more temperate, and the annual range on the higher slopes is from about 26° in January, when snow falls in most years, to 85° in June.

Kabufall.

The rainfall varies as much as the climate. At Kashipur, south of the Tarai, only 40 inches are received annually; while at Haldwant, in the Bhabar, the average is nearly 77. Naini Tal is still wetter, and receives 95 inches annually, including snow.

History.

Traditions connect many places in the hills with the story of the Mahābhārata. The earliest historical record is to be found

" For a complete list of plants found, see chap, viii, N-W. P.

Records of Geological Survey of India, vol. axiii, pts. 1 and 4, and vol. axiv, pt. 2; T. H. Holland, Report on Geological Structure of Hill Super sour Natur Tal.

in the visit of Hiuen Tsiang, who describes a kingdom of Govisāna, which was probably in the Tarai and Bhābar, and a kingdom of Brahmapara in the hills. The Tarni then appears to have relapsed into jungle, while the hills were included in the dominion of the Katyuri Rajas, of whom little is known. They were succeeded by the Chands, who claimed to be Sombanai Raiputs from Inūsi in Allahabad District, and first settled south of Almora and in the Tarai. The Musalman historians mention Kumaun in the fourteenth century, when Gyan Chand proceeded to Delhi and obtained from the Sultan u grant of the Bhabar and Tarai as far as the Ganges. The lower hills were, however, held by local chiefs, and Kirati Chand (1488-1503) was the first who ruled the whole of the present District. When the Mughal empire was established the Musalmans formed exaggerated ideas of the wealth of the hills, and the governor of the adjoining tract occupied the Tarai and Bhabar and attempted to invade the hills, but was foiled by natural difficulties. The Ain-i-Akbari mentions a sarkar of Kumaun, but the mahals included in it seem to refer to the submontane tract alone. The power of the Chand Rājās was chiefly confined to the hill tracts; but Bas Bahādur (1638-78) visited Shāh Jahān at Deihi, and in 1655 joined the Mughal forces against Garhwal, and recovered the Tarai. In 1672 he introduced a poll-tax, the proceeds of which were remitted to Delhi as tribute. One of his successors, named Debi Chand (1720-6), took part in the intrigues and conspiracies of the Afghans of Robilkhand and even faced the imperial troops, but was defeated. In 1744 All Muhammad, the Robilla leader, sent a force into the Chand territory and penetrated through Bhim Tal in this District to Almora; but the Rohillas were ultimately driven out. A reconciliation was subsequently effected; troops from the hills fought side by side with the Robillas at Panipat in 1761, and the lowlands were in a flourishing state. Internal dissensions followed, and the government of the plains became separated from that of the hills, part being held by the Nawab of Oudh and part by Brahmans from the hills. In 1790 the Gurkhas invaded the hill tracts, and the Chands were driven to the Bhābar and finally expelled. The Tarai and Kāshīpur were ceded to the British by the Nawab of Oudh in 1801 with the rest of Robilkhand. In 1814 war broke out between the British and Nepalese, and a force marched from Kashipur in February, 1815. Almora fell in two months and Kumaun became British territory. The later history of the District is a record of administrative details till 1857. The inhabitants of the hills took no part in the great Mutiny; but from June there was complete disorder in the plains, and large hordes of plunderers invaded the Bhābar. Unrest was spreading to the hills, when martial law was proclaimed by Sir Henry Ramsay, the Commissioner, and the danger passed. The rebels from Rohilkhand seized Haldwäni near the foot of the hills, and attempts were made to reach Naini Tāl, but without success. By February, 1858, the rebels were practically cleared out of the Tami, and there was no further trouble.

Archaeo-

There are considerable areas of ruins in the Tarai and Bhāhar which have not been properly explored. Near Kāshtpur bricks have been found bearing inscriptions of the third or fourth century a.b. The temple at Bhīm Tāi, built by Bāz Bahādur in the seventeenth century, is the chief relic of the Chands.

The people.

The District contains 7 towns and 1,513 villages. Population increased considerably between 1872 and 1891, but was then checked by a series of adverse seasons. The numbers at the four enumerations were as follows: 263,956 (1872), 339,667 (1881), 356,881 (1891), 311,237 (1901). The Tarai and Bhābar contain a large nomadic population. There are four divisions, corresponding to the tahtils of Districts in the plains; namely, Naini Tal, the Bhābar, the Tarai, and Kāshīpur. The Bhābar is in charge of a tahtildār at Kichhā. The principal towns are the municipalities of Naini Tal, the District head-quarters, and Kāshīpura, and the 'notified area' of Haldwani. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Tuhari. | Ares in square mains. | Yearne Towns | Villages, vo | Population | Population per square mile | Percentage of variation in population be- fraces 1991 and 1901. | Number of persons able for read and write. |
|----------------|--------------------------|--------------|--------------|------------|-------------------------------|---|--|
| Naint Till | 433 | i | 451 | 43,738 | 101 | - 5-2 | 3,735 |
| Bhabar | 1,279 | 4 | 511 | 93,445 | 73 | - 6-7 | 5,138 |
| Käshipur . | 189 | 2 | 147 | 55,631 | 294 | - 24-0 | 2,313 |
| Tuesi | 776 | 346 | 494 | 118,422 | 153 | - 158 | 1,741 |
| District total | 1,677 | 7 | 1,513 | 311,937 | 116 | -327 | 19,997 |

About 75 per cent, of the population are Hindus, and more than 24 per cent. Musalmans; but the latter are chiefly found in the Tarai and Kashipur. More than 67 per cent, of the total speak Western Hinds, at per cent. Central Pahari, and

per cent. Nepali or Gorkhall.

In the hills and Bhabar the bulk of the population is Castes and divided into three main castes, Brahmans, Rajputs, and occupa-Doms. Each of the two former includes the Khas tribes classed respectively as Brāhmans and Rājputs. The Doms are labourers and artisans, while the Brahmans and Rajputs are agriculturists. In the Tarai and Kāshipur are found the ordinary castes of the plains, with a few peculiar to this tract. Răiputs altogether number 51,300; Brāhmans, 36,000; Doms, 33,000; and Chamars, 23,000. The Tharus and Boksas, who are believed to be of Mongolian origin, number 16,000 and 4,000 respectively. They are the only people who can retain their health in the worst parts of the Tarai. In the hills are found three small, but peculiar, castes: the Bhotias, who come from the border of Tibet; the Naiks, who devote their daughters to prostitution; and the Sauns, who are miners. Among Musalmans the chief tribes are the Shaikhs (10,000), and Julahas or weavers (13,000). The Rains (4000) and the Turks (4,000) are found only in the submontane tract. Agriculture supports about 67 per cent, of the total population, and general labour o per cent.

Out of 650 native Christians in 1901 Methodists numbered Christian 201, Roman Catholics 193, Presbyterians 59, and the Angli-missions. can communion 38. The American Methodist Episcopal

Mission commenced work at Naini Tal in 1857.

In the hill tracts the method of cultivation differs according General to the situation of the land. Plots lying deep in the valleys agriculnear the beds of rivers are irrigated by small channels, and distingt produce a constant succession of wheat and rice. On the hillsides land is terraced, and marud, or some variety of bean or pulse, takes the place of rice in alternate years, while wheat is not grown continuously unless manure is available. In poorer land burley is grown instead of wheat. Potatoes are largely cultivated on the natural slope of hillsides from which oak forest has been cut. Cultivation in the hills suffers from the fact that a large proportion of the population migrate to the Bhilbar in the winter. Agricultural conditions in the Bhabar depend almost entirely on the possibility of canal irrigation, and the cultivated land is situated near the mouth of a valley in the hills. Rice is grown in the autumn, and in the spring rape or mustard and wheat are the chief crops. Farther south in the Tarai and in Kashipur cultivation

resembles that of the plains generally. In the northern portion the soil is light; but when it becomes exhausted, cultivation shifts. Lower down clay is found, which is continuously cultivated. Rice is here the chief crop; but in dry seasons other crops are sown, and the spring harvest becomes more important.

Chief agrientural statistics and principal crops.

The tenures in the hill tracts have been described in the account of the Kumaun Division. In the Bhābar the majority of villages are managed as Government estates, the tenants being tenants-at-will and the village managed and the rents collected by a headman. There are also a few villages under samindāri tenures peculiar to the tract, in which tenants with the khaihari occupancy right of the hills are found. Most of the Tatai is also a Government estate. The cultivators, though mere tenants-at-will, are never dispossessed as long as they pay their rents. In Kāshipur the tenures of the plains predominate, but a few villages are managed as Government estates. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles:—

| Tahill. | | | | Total. | Caltivant. | Irrigated. | i. Cieltivable waste. | |
|-----------|---|------|---|--------|------------|------------|--------------------------|--|
| Naini Tal | ŝ | 2 | 9 | 433 | 54 | 13 | ig* | |
| Bhithar. | 1 | - 2 | 2 | 1,279 | 8g | .88 | 57.* | |
| Käshipur | 2 | 8 | 8 | 189 | 69 | to | 73 | |
| Tarni . | < | | • | 776 | 195 | :38 | 43.1 | |
| | | Tota | d | 1,677 | 407 | 149 | 557 | |

. In demarkated area only.

No crop returns are prepared for the Naini Tal transit, in which wheat, barley, rice, and marno are the main food-crops, while a little tea and spices are also grown. Rice and wheat are the most important crops in the Tarai and Kāshipur, covering 101 and 87 square miles respectively, or 38 and 33 per cent. of the net area cropped. Gram, maize, and barley are grown on smaller areas. Oilseeds covered 24 square miles, and a little sugar-cane and cotton are produced. There are five tea estates in the lower hills, but little tea is now made, and fruit-growing is becoming a more important industry.

Improvements in sgricultural practice. The cultivated area in the hill tracts increased by nearly so per cent, between 1872 and 1902; but agricultural methods have not improved to any marked extent, except in the extension of irrigation and of potato cultivation. The cultivated area in the Bhabar has also increased, but is entirely dependent on canals. In the Tarai and Kashipur cultivation fluctuates considerably according to variations in the rainfall. Advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts are small. They are not required in the hills or in the Bhahar.

The hill cattle are smaller than those of the plains; but Cattle, neither breed is of good quality, though attempts have been sheep made to introduce better strains. Enormous herds are brought from the Districts farther south for pasture during the hot weather. Ponies of a small, but hardy, variety are bred in large numbers along the foot of the hills for use as packanimals. Gosts and sheep are of the ordinary type, and considerable flocks are driven up in the winter from the plains to the Tarai. In the hills goats are seldom used to supply milk, but are kept for their flesh and manure.

The total area irrigated in 1903-4 was 149 square miles Irrigation. A few square miles are irrigated in the hills from channels drawn from the rivers and carried along hillsides, besides casual irrigation from springs and water near the surface. The bulk of the irrigation in the rest of the District is from small canals. These are drawn in the Bhabar from the rivers which flow down from the hills, supplemented by lakes which have been embanked to hold up more water. Owing to the porous nature of the soil and gravel which make up that area, there is a great loss of water, and the channels are gradually being lined with masonry. More than 200 miles of canal have been built, commanding a total area of 110 square miles. In the Tarai the small streams which rise as springs near the boundary of the Bhābar were formerly dammed by the people to supply irrigation. Immense swamps were formed and the tract became extremely unhealthy. Canals and drainage systems have, however, been undertaken. The canals are chiefly taken from the small streams and are 'minor' works. In the east the villagers themselves make the dams and channels. The more important canals are divided between the charges of the Engineer attached to the Tarai and Bhahar and of the Engineer of the Robilkhand Canals,

The forests of the District cover an area of about 1,510 Forests. square miles, of which about 900 are "reserved" and 340 consist of 'protected' forests. They are situated partly in the submontane tract and partly in the hills. In the former tract the most valuable product is sail (Shorea robusta); while shisham (Dalbergia Sissoo), halds (Adina cordifolia), and khair

(Acacia Catachu) are also found. Sal extends up to about 3,000 feet, and is then replaced by various pines, especially chir (Finus longifalia), and ultimately by various kinds of cak (Quercus semecarpifalia, incana, and dilatata). The whole of the waste land in the hill tracts has now been declared 'protected' forest to prevent further denudation, which had begun to threaten the cultivation in the river-beds. Most of the 'reserved' forest area is included in the Naini Tal, Kumaun, and Garhwal forest divisions, and accounts are not kept separately for the District. The receipts are, however, large, amounting to 2 or 3 lakhs annually.

Minerale

The mineral products are various, but have not proved of great value. Building stone is abundant, and lime is manufactured at several places. Iron was worked for a time both by Government and by private enterprise; but none is extracted now. Copper is also to be found, but is not worked. A little gold is obtained by washing the sands of the Dhelä and Phtka rivers, and other minor products are alum, gypsum, and sulphur.

Arts and manufactures. Cotton cloth of good quality is largely woven in the southwest of the District, especially at Jaspur, and is dyed or printed locally for export to the hills. Elsewhere only the coarsest material is produced for local use. In the hill tracts a coarse kind of cloth, sacking, and ropes are woven from goat's hair. There are no other industries of importance. A brewery is situated close to Naini Tal, which employs about 50 hands.

Commerce.

The District as a whole imports piece-goods, salt, and metals, while the chief exports are agricultural and forest produce. The hill tracts supply potatoes, chillies, ginger, and forest produce, and import grain from the Bhābur. The surplus products of the latter tract consist of grain, forest produce, and rapesced. There is little trade to or from the Tarai. A considerable through traffic between the interior of the Himālayas and the plains is of some importance to this District. Naini Tāl is the chief mart in the hills, while Haldwani, Rāmnagar, Chorgalliā, and Kālādhungi in the Bhābar, and Jaspur and Kāshīpur are the principal markets in the plains.

Railways and roads

The only railway is the Rohilkhand-Kumaun line from Bareilly to Käthgodäm at the foot of the hills below Naim Tal; but extensions are contemplated from Lalkua on this line via Käshipur to Ramnagar, and from Moradabad on the Oudh and Rohilkhand Railway to Kashipur. There are 737 miles of road, of which 173 are metalled and are in charge of the Public Works department. The cost of the metalled roads is charged to Provincial revenues, while 226 miles of unmetalled roads are maintained by the District board, and 337 by the Tarai and Bhabar estate funds. The chief road is that from Bareilly through Kathgodam to Rankhet and Almora, passing close to Naint Tal. Another road from Moradabad through Kashtpur and Rämnagar also leads to Ränikhet.

Famine is practically unknown in the District, though high Famine. prices cause distress among the lowest classes. A serious failure of rain in the hills has never happened; and although deficiency injures the crops, the hill people depend largely on the Bhahar, in which irrigation is drawn from permanent sources. The Tarai suffers more from excessive rain than from drought, and the canal system protects every part of the low country except Kashipur, where scarcity was experienced

in 1896.

The District is in charge of a Deputy-Commissioner, who is District ordinarily assisted by a member of the Indian Civil Service stons and and by a Deputy-Collector, who are stationed at Naint Tall staff, The Käshipur taksil forms a subdivision in charge of another Deputy-Collector, who resides at Käshipur except during the rains. A special superintendent manages the Tarai and Bhāhar Government estates. A tahsildar is stationed at the headquarters of each tahsil except Naint Tal and Kashipur, where there is a mile tabilidar. In addition to the ordinary District staff, an Engineer is in charge of canals and other public works in the Government estates, and the forests are divided between several forest divisions.

Nami Tal is administered as a non-regulation tract, and the Civil same officers exercise civil, revenue, and criminal jurisdiction. Justice and In civil matters the Commissioner of Kumaun sits as a High Court, while the Deputy-Commissioner has powers of a District Judge, and his assistants and the tahtildars have civil powers for the trial of suits. The Commissioner is also Sessions Judge in subordination to the High Court at Allahabad. There is little crime in the hill tracts; but dacoities are fairly common in the Tarai and Bhahar, and this is the most serious form of crime. The proximity of the State of Rampur favours the escape of criminals.

A District of Nami Till was first formed in 1891. Before Land that date the hill tracts and the Bhilbar had been included in adminiswhat was then the Kumaun, but is now called the Alatona tration. DISTRICT. The parganes included in Kashipur and the Tarai were for long administered as parts of the adjoining Districts of Moradabad and Bareilly. About 1861, after many changes,

200

a Tarai District was formed, to which in 1870 Kāshīpur was added. The tract was at the same time placed under the Commissioner of Kumaun.

The first settlement of the hill tracts and the Bhibar in 1815 was based on the demands of the Gurkhas and amounted in Rs. 17,000, the demand being levied by parganas or pattis (a subdivision of the pargana), and not by villages, and being collected through headmen. Short-term settlements were made at various dates, in which the revenue fixed for each patti was distributed over villages by the samindars themselves. The first regular settlement was carried out between 1842 and 1846, and this was for the first time preceded by a partial survey where boundary disputes had occurred, and by the preparation of a record-of-rights. The revenue so fixed amounted to Rs. 36,000. A revision was carried out between 1863 and 1873; but the management of the Bhabar had by this time been separated from that of the hills. In the latter a more detailed survey was made. Settlement operations in the hills differ from those in the plains, as competition rents are nonexistent. The valuation is made by classifying soil, and estimating the produce of each class. The revenue fixed in the hill pattis alone amounted to Rs. 34,900, and this was raised to Rs. 50,300 at the latest assessment made between 1900 and 1902. The latter figure includes the rent of potato clearings, which are treated as a Government estate, and also revenue which has been assigned, the actual sum payable to Government. being Rs. 43, 100. There was for many years very little advance in cultivation in the Bhābar, the revenue from which in 1843 was only Rs. 12,700. In 1850 it was placed in charge of Captain (afterwards Sir Henry) Ramsay, who was empowered to spend any surplus above the fixed revenue on improving the estate. The receipts at once increased by leaps and bounds, as irrigation was provided and other improvements were made. Revenue continued to be assessed as in the hills in the old settled villages, while the new cultivation was treated as a Government estate. The first revision in 1864 yielded Rs. 60,000, of which Rs. 4,000 represented rent; and the total receipts rose to a lakh in 1869, 1-4 lakhs in 1870, nearly z lakhs in 1889, and 2-4 laklis in 1903. Of the latter figures Rs. 57,000 is assessed as revenue and Rs. 1,85,000 as rent. The greater part of the Tarai is held as a Government estate, and its fiscal history is extremely complicated, as portions of it were for long administered as part of the adjacent Districts. The land revenue in 1884 amounted to Rs. 70,000 and the rental demand

to about 2 lakbs. The latter item was revised in 1895, when rents were equalized, and the rental demand is now about 2-5 lakhs. Kashipur was settled as part of Moradabad District, and at the revisions of 1843 and 1879 the revenue demand was about a lakh. A revision has recently been made, The total demand for revenue and rent in the District is thus about 7 lakhs. The gross revenues are included in those of the Kumaun Division.

There are two municipalities, Kashipur and Natni Tal, Local selfand a 'notified area,' Hathwani, and four towns are administ governtered under Act XX of 1856. Beyond the limits of these, local affairs are managed by the District board; but a considerable expenditure on roads, education, and hospitals is incurred in the Government estates from Provincial revenues, The District board had in 1903-4 an income of Rs. 37,000 and an expenditure of Rs. 82,000, including Rs. 42,000 spent

on roads and buildings.

The Superintendent of police and a single circle inspector Police and are in charge of the whole of the Kumaun Division. In the falls. hill tract of this District there are no regular police, except in the town of Naint Tal and at three outposts, the duties of the police being discharged by the patmiris, who have a higher position than in the plains. There is one reserve inspector; and the force includes 37 subordinate officers and 135 constables, besides 83 municipal and town police, and 152 rural and road police. The number of police stations is 11. A jail has recently been built at Haldwant.

The population of this District is above the average as Education. regards literacy, and 4-2 per cent. (7-1 males and 0-5 females) could read and write in 1901. The Musalmans are especially backward, and only 2 per cent. of these were literate. In 1880-1 there were only 16 public schools with 427 pupils; but after the formation of the new District education was rapidly pushed on, and by 1900-1 the number of schools had risen to 60 with 1,326 pupils. In 1903-4 there were 93 public schools with 2,277 pupils, including 82 girls, besides 13 private schools with 170 pupils. Only 200 pupils in public and private schools were in advanced classes. Two schools were managed by Government and 77 by the District and municipal boards. The expenditure on education was Rs. 12,000, provided almost entirely from Local and Provincial funds. These figures do not include the nine European schools in Natsi Tat, which contain about 350 boys and 250 girls.

H.P. II.

Hospitals and dispensaries.

There are 14 hospitals and dispensaries in the District, with accommodation for 104 in-patients. In 1903 the number of cases treated was 78,000, of which 1,040 were in-patients, and 1,687 operations were performed. The expenditure amounted to Rs. 49,000.

Vaccina-

In 1903-4, 11,000 persons were successfully vaccinated, giving an average of 37 per 1,000.

(J. E. Goudge, Settlement Report, Almord and Hill Pattis of Naini Tal, 1903; H. R. Nevill, District Gazetteer, 1904.)

Naini Tal Tahsil .- A portion of Naini Tal District, United Provinces, comprising the purganas of Dhyanirao, Chhakhata Pahār, Pahār Kotā, Dhaniyākot, Rāmgarh, Kutanli, and Mahruri, and lying between 29° 9' and 29° 37' N. and 79° 9' and 70° 56' E., with an area of 433 square miles. Population fell from 46,139 in 1891 to 43,738 in 1901. There are 451 villages, but only one town, NAINT TAL, which is the District head-quarters in the hot weather (population, 7,600 in winter and 15,164 in summer). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 33,000, and for ceases Rs. 5,000. The density of population, 101 persons per square mile, is higher than in the Himilayan tracts generally. This tract lies entirely in the hills, and is under the charge of a peshkar or naih tahsildar. In 1903-4 the area under cultivation was \$4 square miles, of which 13 were irrigated either by small channels from rivers or by canals.

Bhabar .- A portion of Naint Tal District, United Provinces, comprising the pargonal of Chhakhata Bhabar, Chaubhainsi Bhābar, Kalādhūngt, Chilkiyā, and Kotā Bhābar, and lying between 28° 51' and 29° 25' N. and 78° 57' and 80° E., with an area of 1,279 square miles. Population fell from roo, 178 in 1891 to 93,445 in 1901. There are 511 villages and four towns, the largest being Halliwani, the cold-weather head-quarters of the District (population, 6,624). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 13,000, and no cesses are levied. The density of population, 73 persons per square mile, is the lowest in the District. This tract consists of a long narrow strip immediately below the hills, and a great part of it is covered with thick forest or dense jungle. The hill torrents sink into the porous mass of gravel, boulders, and earth which make up the Bhabar, and, except during the rains, water can hardly be obtained. Cultivation is thus entirely dependent on carnal irrigation, by means of which magnificent crops of oilseeds are raised. The population is largely migratory, and moves up to the hills in the hot weather, returning in

November. The greater part of the cultivated land is held directly from the state as landlord. Including rents, the gross income from the land is about 1-4 lakhs. In 1903-4 the area under cultivation was 89 square miles, almost all of which was irrigated.

Kāshipur Tahsil.—South-western tahail and subdivision of Naint Tai District, United Provinces, conterminous with the parguna of the same name, lying between 29° 7' and 29° 22' N, and 78° 43' and 79° 4' E., with an area of 189 square miles. Population fell from 73,168 in 1891 to 55,632 in 1901, the rate of decrease being the highest in the District. There are 147 villages and two towns: Kāshipur, the tahail head-quarters (population, 12,023), and Jaspur (6,480). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 90,000, and for cesses Rs. 11,000. The density of population, 294 persons per square mile, is also the highest in the District. The tahail resembles the adjoining parts of Rohilkhand. It lies entirely in the plains, and is not so damp as the Tarai. In 1903-4 the area under cultivation was 69 square miles, of which 10 were irrigated, almost entirely from canals.

Taral.-Southern portion of Naint Tal District, United Provinces, comprising the pargamus of Barpur, Gadarpur, Kichha, Kilpurt, Nănakmată, and Billieri, and lying between 28° 45' and 29° 26' N. and 78° 5' and 80° 5' E., with an area of 776 square miles. Population fell from 137,396 in 1891 to 118,422 in 1901. There are 404 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 70,000, and for cesses Rs. 1,700. The density of population, 153 persons per square mile, is lower than in the adjacent tracts to the south. The Tarai is a damp malarious tract which can only be safely inhabited for certain parts of the year, except by the Tharus and Boksas. The drainage of the Outer Himalayas, after sinking to an unknown depth in the boulder-beds of the Bhabar, reappears here in a line of springs which gradually form into small streams, from which canals are drawn. Rice is the great stable of cultivation. In 1903-4 the area under cultivation was 195 square miles, of which 38 were irrigated, chiefly from canals. Most of the Tarai is managed as a Government estate, and the rents amount to about any lakhs in addition to the revenue stated above.

Gagar.—A range of mountains in Naint Tal and Almora Districts, United Provinces, forming a portion of the Outer Himalayan range, lying between 29° 14' and 29° 30' N. and 79° 7' and 79° 37' E. This range is also known as Gargachai,

from the legend that the rishi Garg once dwelt on it. The chain runs along the southern border of the two Districts, parallel to the plains, from the Kost river to the Kall, and presents a line of higher elevation than any ranges between it and the main ridge of the Central Himâlayas. The loftiest peak is Badhântola, 8,612 feet, while the steep cliff of Chinā, which towers above the lake and town of Nāini Tal, reaches a height of 8,568 feet. The average elevation is from 6,000 to 8,000 feet. Forests of cypress, tun (Cedrela Toona), fir, and other timber trees clothe the steep hillsides, except where they have been cleared for potato cultivation.

Haldwani,-Head-quarters of the Bhabar tract of Naint Tal District, United Provinces, situated in 29° 13' N. and 79" 32' E, on the road from Bareilly to Naini Tal and on the Rohilkhand and Kumaun Railway. Population (1901), 6,624. The name is derived from the haldu trees (Adina cordifolia) which abound in the neighbourhood. Haldwant was founded in 1834 as a mart for the hill people who visit the Bhabar in the cold weather. It has now become the winter head-quarters of the officers of the Kumaun Division and of Naint Tal District. Besides the offices, it contains a small jail and a dispensary, and is the head-quarters of a tahsildar. Between 1897 and 1904 Haldwant was administered as a municipality, the income and expenditure during the four years ending 1901 averaging Rs. 9, 700 and Rs. 9, 100 respectively. In 1903-4 the income was Rs. 14,000, the chief item being rents and fees (Rs. 5,500), and the expenditure was Rs. 13,000. In 1904 Haldwant was constituted a 'notified area.' It is the principal mart in the Bhabar, exporting oilseeds, forest produce, and the products of the hills. There are two schools with 77 pupils.

Jaspur.—Town in the Kashipur takell of Naint Tall District, United Provinces, situated in 29° 17′ N. and 78° 50′ E. Population (1901), 6,480. The town is of modern growth and contains few brick houses. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,000. There is a considerable manufacture of cotton cloth by Julahas (Muhammadan weavers), who reside here, and also some trade

in sugar and timber.

Kāshipur Town.—Head-quarters of the Kāshipur subdivision of Naini Tal District, United Provinces, situated in 29° 13' N. and 78° 58' E., on a road from Morādābād: a railway from the same place has been projected. Population (1901), 12,023. Near the town are extensive ruins of forts and temples, which were identified by General Cunningham with the capital of the kingdom of Govisana, visited by the Chinese pilgrim in the seventh century. There are several tanks in the neighbourhood, one of which is called after Drona, the tutor of the Pandava brothers. A brick inscribed in characters of the third or fourth century A.D. was recently found here. The modern town is named after its founder, Kashi Nath, the governor of the pargana in the sixteenth or seventeenth contury. In the latter half of the eighteenth century Nand Ram, the governor, became practically independent of the Chand Rajā of Almorā; and his nepliew, Shib Lal, was in possession at the date of the cession to the British in 1801. Kashipur contains a fair-sized hazar with brick-built houses; but outside of this the houses are chiefly of mud. The largest building is the residence of the Raja, who is descended from an illegitimate branch of the Chand Rājās of Almorā. Besides the usual courts there is a dispensary. Kashipur has been a municipality since 1872. During the ten years ending 1901, the income and expenditure averaged Rs. 11,000. In 1903-4 the income was Rs. 14,000, chiefly from tolls (Rs. 5,000) and a tax on circumstances and property (Rs. 3,000); and the expenditure was Rs. 12,000. There is a flourishing trade in cloth, metal vessels, and bill produce. The municipality supports a school with 75 pupils.

Kathgodam (= timber depot').-Village in the Bhabar tract of Naint Tal District, United Provinces, situated in 29° 16' N. and 79" 33' E., at the terminus of the Robilkhand and Kumaun Railway. Population (1901), 375. The place has only become of importance since the railway was extended from Haldwani, the former terminus. It is now the starting-point for the ascent to the hill stations of Naini Tal, Rankhet, and Almora. Kathgodam is administered together with Ranibagh, three miles away on the Tonga road, under Act XX of 1856, the annual income being about Rs. Soc. Ränibägh (population, 624) is situated at the junction of the Tonga road with bridle-paths to various places in the hills. It is an important

stage in the trade route to the interior.

Mukteswar (Moterar). - Village in the Himilayas, Naini Tal District, United Provinces, simated in 29" 28' N, and 79" 39' E., at an elevation of 7,500 to 7,700 feet. Up to 1893 the village was distinguished only by its shrines and a small temple. It was then selected as the site of a laboratory for the manufacture of serum to protect cattle against rinderpest. The laboratory was completed in 1898, but was burnt down in 1899 and rebuilt by 1901. It stands in an enclosure of about 3,000 acres, part of which is occupied by oak and pine forest, a fruit garden started many years ago has also been included, and a meteorological observatory is maintained. In addition to the supply of serum for use in epidemics of rinderpest, a serum for anthrax, and also mallein, tuberculin, and tetanus anti-toxin are prepared. Researches are being conducted in the etiology of diseases affecting animals, such as rinderpest, anthrax, surra, lymphangitis epizootica, and glanders; and District board veterinary assistants from the United Provinces and the Punjab are instructed in the use of various kinds of

serum. The annual expenditure is about Rs. 50,000.

Naini Tal Town,-Head-quarters of Naini Tal District, United Provinces, with cantonment, situated in 29° 24' N. and 70° 28' E., in a valley of the GAGAR range of the Outer Himalayas. Population, 15,164 in September, 1900, and 7,609 in March, 1901, including that of the small cantonment. Up to 1839 the place was resorted to only by the herdsmen of surrounding villages, and though it was mentioned by the Commissioner in official reports, he does not appear to have visited it. It was then discovered by a European, and from 1842 it increased rapidly in size and prosperity. At the time of the Mutiny, Naint Tal formed a refuge for the fugitives from the neighbouring Districts in Rohilkhand. Soon afterwards it became the summer head-quarters of Government, and it is now also the head-quarters of the Commissioner of Kumaun and of a Conservator of Forests. In September, 1880, after three days' continuous rain, a landslip occurred, which caused the death of forty-three Europeans and 108 natives, besides damage to property amounting to about a lakhs. Since this disastrous occurrence a complete system of drainage has been carried out at great expense. The valley contains a pear-shaped lake, a little more than two miles in circumference, with a depth of 93 feet. On the north and south rise steep hillsides clothed with rich forest trees, among which oaks predominate. On the western bank is situated a considerable area of more gently sloping land, from which a level recreationground has been excavated. The upper hazar stands above this, and the houses occupied by the European residents are scattered about on the sides of the valley. East of the lake the lower bazar is built on the outer edge of the range. The surface of the lake is 6,350 feet above sea-level; and the highest peaks are China (8,568) on the north, Deopatha (7,987) on the west, and Ayarpatha (7,461) on the south. The residence of the Licatenant-Governor, completed in 1900,

is a bandsome building standing in spacious grounds. The principal public buildings include the Government Secretariat, the District offices, the Ramsay Hospital for Europeans, and male and female dispensaries for natives. There is also an important station of the American Methodist Mission. Naint Tal has been a municipality since 1845. During the ten years ending 1001 the income and expenditure averaged 14 lakhs, including loan funds. The income in 1903-4 was 1-7 lakhs, including house tax (Rs. 34,000), tolls (Rs. 93,000), water-rate (Rs. 23,000), and conservancy tax (Rs. 21,000); and the expenditure was 1:4 lakhs, including repayment of loans and interest (Rs. 23,000), maintenance of water supply and drainage (Rs. 14,000), and conservancy (Rs. 26,000). Drinking water is derived from springs, and is pumped up to reservoirs at the top of hills and distributed by gravitation. More than 4 lakhs has been spent on water-supply and drainage, and the introduction of a scheme of electric light is contemplated. The trade of the town chiefly consists in the supply of the wants of the summer visitors; but there is some through traffic with the hills. Three schools for natives have 220 pupils, and five European schools for boys have 350 pupils and four for girls 200.

Almora District. North-eastern District in the Kumaun Boun-Almora District. North-eastern District in the Con-N. and 79° 2' and 81° 31' E., with an area of 5,419 and bill square miles. It is bounded on the north by Tibet; on the and river east by the Kall river, which divides it from Nepal; on the systems. south by Naint Tal District; and on the north-west by Garhwal District. With the exception of a small area, the whole of this vast tract lies within the Himhlayas, stretching from the outer nampart which rises abruptly from the plains across a maze of tanges to the great central chain of snowy peaks, and to the borders of the Tibetan plateau beyond. 'The south-east corner extends into the Bhabar, a small tract at the foot of the hills, which is largely covered with forest, and resembles the BHABAR of Naint Tal District. For 40 or 50 miles north of the outer ranges the hills form ridges with an average height of 4,000 to 5,000 feet, sometimes rising to 7,000 or 8,000 feet. The ridges are distinct, though their windings and minor spurs give the beholder the impression of an inextricable tangle, and each ridge runs with a general direction from south-east to north-west, and ends in a snowy peak in the central chain. North of a line from Kapkor to Askot the general elevation increases, glaciers appear, and finally the limit of perpetual

snow is reached. On the western boundary, and partly situated in Garhwal, is the Trisul Mountain, named from its triple peaks having a fanciful resemblance to a trident, from 22,300 to 23,400 feet above the sea. To the north-east of Trisal is Nanda Devi, with an elevation of 25,661 feet, the highest mountain in the British Empire; and Nanda Kot, the 'couch' of the great goddess Nanda, with a height of 22,538 feet. East of these is a magnificent mass of snow-clad mountains called Panch Challit, the two highest peaks reaching 22,673 and 21,114 feet respectively. Another ridge with a mean elevation of 18,000 feet lies along the Tibetan frontier, forming the water-parting between the drainage system of the Indus and Sutlej on the north and the Kall on the south. Most of the drainage of Almora District is carried off by the Kall or Sarda. Its tributaries flow in the valleys between the lower ranges of hills; the Dhauliganga, and the Goriganga rising in glaciers, the Sarja and Ramganga (East) just below the snow-line, and the Gomati, Lahuvati, and Ladhiya in the outer hills. A long watershed runs down the western border; but in the south it is pierced by the Ramganga (West) and the Kost, which are the principal rivers not forming affluents of the Kali. Apart from small areas in the river-beds and a few elevated plateaux, there are no areas of even tolerably level land above a height of 2,000 feet.

Geology.

The southern boundary of Almora begins among the probably very ancient, but unfossiliferous, slates, schistose slates, quartz-schists, and occasional massive limestones, sometimes marmorized, of the Lower Himalayas. These become invaded by enormous masses of gneissose granite in the central region of the main chain of snowy peaks, when their metamorphism is proportionately greater; but this area has only been superficially examined. On the northern side of the central axis the great series of sedimentary marine deposits, extending from lower Silurian to Cretaceous, make this elevated tract exceptionally rich from a geological point of view, and unsurpassed in any other part of India.

Botmy.

Fanns:

The flora of the District presents a striking variety, ranging from the submontane tropical growths of the Bhābar, through the temperate zone, where cedars, oaks, pines, and rhododendrons are found, and the higher ranges, where thickets of willow and birch appear, to the lofty hillsides forming open pasture land, which is ricfuly adorned in the summer with brilliantly-coloured alpine species of flowers.

The District is rich in animal life. Elephants, tigers, the

sloth bear, black and brown bears, leopards, wild dogs, wild hog, various species of deer and wild goats, and the yak, are found in different parts. The rivers abound in fish, including the mahseer, and numerous species of birds are found. In the Bhabar and lower hills immense pythons are sometimes seen.

The Bhabar is sub-tropical in climate, but the southern por-Climate tion of the hill tract is more temperate, though the heat in the perature.

deep valleys is occasionally intense.

The outer ranges receive a heavy precipitation during the Rainfall, rains, and the annual rainfall there is about 80 inches. This rapidly decreases to about 40 inches immediately north of the outer barrier. No records are kept of the fall of rain and snow in the higher country near the snow-line; but it is much greater than in the central part of the District.

Tradition connects many places in the hills with episodes in History. the religious books of the Hindus, especially the Mahabharata. The earliest historical account of the hill country is that given by the Chinese pilgrim in the seventh century, who describes a kingdom, named Brahmapura, situated in the hills and inhabited by a hardy and uncultivated race. It was bounded by the snowy mountains, near which resided a people ruled by a woman. The earliest dynasty known is that of the Katyüris, eventually supplanted by the Chand Rājās, the former reigning at Baijnath in the Katyar valley, at which place and also at Dwarahat architectural remains are still extant. The Chand Rājās, of whom the first, Som Chand, is said to have come from Jirūsi, near Allahābād, probably in the tenth century of our era, had their established seat of government at Champawat in Kall Kumaun. In 1563, when the Chands had obtained full authority over all the petty chiefs, including the last descendant of the Katyuris, the capital was transferred to Almora by Raja Kalyan Chand. His son, Rudra Chand, was a contemporary of Akbar, and made his obeisance to that emperor at Lahore in 1582. The Muhammadan rulers never obtained a fixed footing in the hills; but in 1744 Alt Muhammad Khan sent a force to invade Kumaun. The resistance of the Chand Rajas was weak and ineffectual. The Robillas captured and plundered Almora. Though their stay in Kumaun was short, its results to the Province are bitterly remembered; and its intolerant character is still attested by the mutilated sculptures of some of the Kumaun temples. The Robillas remained in the hills for seven months, when, disgusted with the climate and the hardships they were forced to suffer, they accepted a bribe of three lakhs of rupees and returned to the plains. But

Alt Muhammad Khān was not satisfied with the conduct of his lieutenants; and three months after their retreat, at the communication of 1745, the Rohillas returned. They were defeated at the very entrance of the hills near Bärakhert, and made no further attempt on Kumaun. These were the first and last Muhammadan invasions of the hills; for the Delhi emperors never exercised any direct authority in Kumaun, although it was necessary for the Rājā to admit their nominal aupremacy for the sake of his possessions in the plains. These events were followed by disturbances and revolutions in Kumaun itself; and within the next thirty years the hill Rājās lost all the country which they had held in the plains, except the tract known as the Bhānas.

In the middle of the eighteenth century, the Gurkha tribe, under their chief, Prithwi Nārāyan, had made themselves masters of the most important part of the present kingdom of Nepal. His successors determined, in 1700, to attack Kumaun. The Gurkha forces crossed the Kälf, and advanced upon Almora through Gangoli and Kali Kumaun. The titular Raja of Kumaun fied to the plains, and the whole of his territory was added to the other conquests of the Gurkhas. The Neptilese rule lasted twenty-four years and was of a cruel and oppressive character. In the early part of the present century the Gurkhas had been making numerous raids in the British possessions lying at the foot of the Himalayas. All remonstrance was unavailing; and in December, 1814, it was finally resolved to wrest Kumaun from the Gurkhas and unnex it to the British possessions, as no legitimate claimant on the part. of the Chands was then in existence. Harak Deo Joshi, the minister of the last legitimate Rājā of Kumann, warmly esponsed the British side. At the end of January, 1815, everything was ready for the attack on Kumsun. The whole force consisted of 4,500 men with two 6-pounder guns. The first successful event on the British side during this war was the capture of Almora by Colonel Nicholls on April 26, 1815. On the same day Chandra Bahādur Sāh, one of the principal Gurkha chiefs, sent a flag of truce, requesting a suspension of hostilities and offering to treat for the evacuation of Kunsaun. Lieutenant-Colonel Gardner was deputed to hold a personal conference with Bam Sah, the Nepalese commander at Almora; and on the following day the negotiation was brought to a close by the conclusion of a convention, under which the Gurkhas agreed to evacuate the Province and all its fortified places. It was stipulated that they should be allowed to retire

across the Kall with their military stores and private property, the British providing the necessary supplies and carriage. As a pledge for the due fulfilment of the conditions, the fort of Lahmandi (now Fort Moira) was the same day surrendered to the British troops. Captain Hearsey, who had been taken and imprisoned at Almora, was released at the same time. The Gurkhas were escurted across the Kall by our troops, and the British took possession of Kumaun and Garhwal.

Some interesting rock sculptures resembling the cup-mark-Archaeoings of European countries have been found in various places. An inscription of the Katyūri Rājās is preserved at Bāgeshwar, but unfortunately it is not dated; and Batynārh was once the capital of the same line. Champāwat, the residence of the Chand Rājās, contains some interesting ruins. A large number of copperplate grants are preserved in the temples of the District, and many others are in possession of private individuals.

There are 4,928 villages, but only 2 towns. Population is The increasing steadily. The numbers at the four enumerations people, were as follows: 354,579 (1872), 360,967 (1881), 416,868 (1891), 465,893 (1901). A considerable annual migration takes place in the winter from the villages situated near the snows to more temperate parts, and from the outer hills to the Bhābar, the movement being reversed in the summer. There are two taksils, Almora and Champawat, each named from its headquarters. The principal towns are the numicipality of Almora and the cantomment of Rabikhet. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Taket. | Area in spans miles, | Num | villages | Population | Population per square mile. | Percentage of variation in population he tweets 1857 and 1904. | Number of persons able to read and write. |
|-----------------------|-------------------------|-----|----------------|------------|--------------------------------|--|--|
| Champiwat . Almori | 1,055 5,164 | # # | 1.46± 3.466 | 111,013 | 34 609 | +246 + 78 | 6,675 19,753 |
| District total | 5-419 | 4 | 4,928 | 463,893 | 86 | +11-7 | 26,426 |

Hindus form nearly 99 per cent, of the total population. There are 4,051 Musalmans, 1,427 Christians, and 217 Buddhists. The density of population is very low, owing to the desolate nature of a large area. Central Pahāri is the language ordinarily spoken, the particular dialect being called Kumanni; but 8,000 persons speak Bhotia, and a few jungle tribes are found with peculiar languages of their own.

Castes and occupations. About 97 per cent, of the Hindu population are included in the three castes of Rājput or Kshattriya, Brāhman, and Dom, who number 224,000, 112,000, and 90,000. The Rājputs and Brāhmans are divided into two main classes, according as they claim to have come from the plains or belong to the great Khas tribe, which is identified by some with the people of a similar name mentioned by the classical writers. The Doms are labourers and artisans, and with the extension of trade and road-building some of them are rapidly acquiring wealth. Among tribes peculiar to the hills may be mentioned the Bhotiās, probably of Tibetan origin, who were formerly Buddhists, but are now rapidly becoming Hinduized (9,100), and the Gurkhas (1,100). More than half of the Musalmāns are Shaikhs. Agriculture supports 92 per cent, of the population.

Christian missions.

There were 1,029 native Christians in the District in 1901, of whom 523 were Methodists and 163 Congregationalists. The London Mission has worked in Almora since 1850, and the American Methodist Mission since 1850.

General agricultural conditions. Cultivation depends largely on altitude and situation. The villages lying between a height of 3,000 and 5,000 feet and having access to forest land and grazing, and also to level land near the banks of a river, are best off. Two crops are taken, as a rule, in the autumn and spring; but in the snow valleys of the extreme north, wheat and phipur or buckwheat (Pagopyrum tataricum) are sown in May and reaped in November. When cultivation extends above 6,000 feet, it is usually inferior in method and in produce. As the country consists almost entirely of ranges of hills, the cultivated area is chiefly confined to terraces, except where the river valleys are sufficiently wide to allow tillage.

Chief agricultural statistics and principal crops. The tenures of the District are those found in the Kumaun Division. In 1903-4, 463 aquare miles or 9 per cent. of the total area were cultivated. No record is prepared of the area under each crop. The staple food-crops are marsed and rice in the autumn and wheat and barley in the spring, marsed and wheat covering larger areas than rice and barley. Inferior millets, maize, and vegetables are also grown. Near the snows barley, phāpar or buckwheat, and chua (Amarantus paniculatus) are cultivated. The other products of the hills are turmeric, ginger, chillies, and potatoes. Tea plantations cover about 2,100 acres.

Improvements in agricultural practice.

Between 1872 and 1902 the cultivated area increased by about 22 per cent. Cultivation in the hills entails continual improvement, as each year more stones are removed from the terraces, the retaining walls are strengthened, and slopes are levelled. Improved communications have also led to a rise in prices. The wealthier cultivators plant English fruit trees near their villages. Very few advances are made under the Acts, though in 1891-2 they reached a total of Rs. 24,000.

The domestic cattle are small and usually red or black, Cante, resembling the Kerry cow in appearance. In the Bhotia ponies, and she villages in the north the yak, and hybrids between the yak and ordinary kine, are used for carrying purposes. The ponies bred locally are not of good quality, though much used as pack animals. Sheep and goats are bred in all parts, and are kept chiefly for their manure and wool, but they are also used as beasts of burden. Attempts have been made to improve the breed by crossing with Tibetan, English, and Australian stock, but with no perceptible results.

About 8 per cent of the total cultivated area is irrigated, Irrigation. Water is supplied from long channels led along the hillsides, or by diverting water from the hill streams as required. Springs are also used. There are no wells, and water is never raised by artificial means. In the Bhābar, irrigation is supplied by

a small canal from the Sårdå.

The 'reserved' forests cover more than 100 square miles, Forests and a further area of 26 square miles is 'protected' and under the charge of the Forest department. These forests are situated at the foot of the hills or in the outer ranges. Sal (Shorea robusta) is the most valuable timber tree. Bamboos, turpentine, catechu, grass, and fuel are also extracted. Besides these tracts, however, the whole of the District, excluding the lands which were measured at settlement, has been declared 'District protected' forest; and this area, covering 4,832 square miles, is managed by the Deputy-Commissioner.

Copper has been worked to some considerable extent in this Minerals.

District, but hitherto only by native methods 1. A concession has recently been granted to a European syndicate. Graphite of poor quality is found near Almora town, and there are also

ores of iron, lead, and sulphur.

The District has few industries beyond agriculture. There Arts and are 23 tea plantations, producing tea valued at about 1-7 lakhs manufactures.

A brewery at Rankhet employs about 30 hands.

The trade of the District is increasing. Chillies, turmeric, Commerce, ginger, tea, and forest produce are the chief exports; and grain,

V. Ball, Manual of the Geology of India, pt. 5, pp. 171-3.

cloth, sugar, and salt are imported. Even more important is the through trade with Tibet. Borax, salt, and wool are the chief items received from Tibet, the value of wool passing through being nearly 2 lakhs annually. In recent years trade centres have moved. Almora was formerly the chief emportum; and the merchants of that place had branch establishments at Bageshwar and Champawat, where they met the Bhotias, who brought down the products of Tibet. The Bhotias, however, now travel down to the submontane markets of Rammagar, Haldwant, and Tanakpur, and are even venturing to Calcutta and Bombay. An extensive cart traffic is carried on between Baijnath, Almora, Rankhet, and Kathgodam, and small bazars are springing up in many places.

Railways and roads.

There are at present no railways in the District, but the construction of a branch to the foot of the hills from Pilibbit on the Lucknow-Bareilly metre-gauge line is contemplated. The District has 1,146 miles of road, of which 64 miles are metalled. The Public Works department is in charge of 409 miles of road, and the cost of 138 miles is met from Provincial revenues. In addition to the 64 miles of metalled road, 108 miles are practicable for carts, but the other roads are only used by packanimals. Avenues of trees are maintained on 3 miles. The eart roads lead from Ränikhet to Rämnagar and Käthgodäm, and from Almora town towards Karnaprayag in Garhwal and to the Rämkhet-Käthgodäm road. Trade with Tibet is largely carried on a road, now being greatly improved, from Tanakpur to Askot, where tracks diverge, one leading by the ANTA DHURA pass to Gartok, and another to the Neo Dhura, Lampiya Dhura, and Lipii Lekh passes, the last being the easiest route to the sacred resorts of the Hindus, Mount Kailis and the Minasarowar Lake.

Famine.

No general famine has taken place in Almora since the British gained possession of the District. The worst calamities of this kind were in 1838 and 1867. In 1896 there was slight scarcity in the west of the District. Floods occasionally damage the cultivation in river-beds, as in 1840 and 1880.

District subdivisions and staff. The Deputy-Commissioner is usually assisted by a member of the Indian Civil Service, and by two Deputy-Collectors recruited in India. One of the latter is stationed at Pithoragarh in the hot weather and at Tanakpur in the cold weather. There is a takiildar at the head quarters of each takiil.

Civil justice and crime. The District is non-regulation, and the members of the District staff exercise civil, revenue, and criminal powers. The Deputy-Commissioner has the powers of a District Judge subordinate to the Commissioner of Kumaun, who sits as a High Court for civil cases. The Cantonnent Magistrate of Rankhet exercises jurisdiction as a Judge of Small Causes Court. The Commissioner is also Sessions Judge. Crime is extremely light.

At the time of the conquest in 1815 the whole of the Land revenue present Kumann Division, excluding the Tarai and Kassirus administrativisions of Naint Tal District, was constituted a single tratian. District under a Commissioner. From 1837 Garhwal was placed in charge of an Assistant Commissioner, and in 1850 the Bhābar was made a separate charge. In 1891 Naint Tal District was formed; and the remaining area forms the present District of Almora.

When the District was acquired from the Gurklias the land revenue demand was about Rs. 70,000, while in addition various dues and taxes were levied which brought in as much again, The latter were soon abolished, and for many years the assessments of revenue were based on problematical returns of area, and were varied arbitrarily according to the apparent presperity of particular tracts. The early settlements were made for short periods, and as late as 1836 the Commissioner reported that the people were strongly opposed to a settlement for twenty years. Between 1842 and 1846 the first regular settlement was carried out, and the revenue was raised from about a lakh to Rs. 1,07,000. This was the first partial attempt to measure and examine the capabilities of the land, and to form a record of rights. The measurements, however, were few and in no way constituted a survey. Between 1863 and 1873 the settlement was revised, and this revision was preceded by a complete measurement of the terraced land. The survey was of a simple nature, being carried out by means of a hempen rope. Land was divided into five classes according as it was irrigated or 'dry' or merely casual cultivation, and a scale of the relative value of the classes was fixed. An estimate of the yield of produce was then made, and applied to the area. Other considerations were also taken into account, such as the price of grain, the increase in population, general presperity, and the like. The land revenue demand amounted to Rs. 2,17,000. The latest revision was carried out between 1899 and 1902. Cultivation was valued at the rates fixed at the previous settlement, and all-round rates for enhancement were estimated for each patti, on a general consideration of the rise in prosperity. The path rates were reduced where necessary in the case of

2 A pattl is the hill tracts is a subdivision of a parguma, not a fraction of a village as in the plains. individual villages. In addition to the revenue of the hill tracts, a small income is derived from the area cultivated in the Bhābar, which is managed directly as a Government estate, and yields about Rs. 5,000 annually in rents. The total land revenue collections in 1903-4 amounted to 2-3 lakhs; the gross revenues are included in those of the Kumaun Division.

Local selfgovernment.

There is only one municipality, ALMORA, and no towns are administered under Act XX of 1856. The District board had in 1903-4 an income of one lakh, chiefly derived from Provincial grants. The expenditure was 1-1 lakhs, of which Rs. 61,000 was spent on roads and buildings.

Police and jails, The Superintendent of police for the Kumasun Division, whose head-quarters are at Naint Tal, is in charge of the police of Almora District. There are only 9 sub-inspectors and head-constables, 24 constables, 15 municipal, and 4 rural policemen in the whole District. These are stationed in the towns of Almora and Rankhet, and police duties are generally supervised by the patroaris, who have approximately the status of sub-inspectors in the plains. The District jail contained a daily average of 59 prisoners in 1903.

Education.

Almora takes a high place as regards the literacy of its inhabitants, of whom 5.7 per cent. (11 males and 0.3 females) could read and write in 1901. The number of public institutions increased from 119 with 6,817 pupils in 1880-1 to 154 with 6,970 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 183 such institutions with 8,109 pupils, of whom 503 were girls, besides one private school with 54 pupils. About 940 students were in classes beyond the primary stage. One school is managed by Government, and 105 by the District board. Out of a total expenditure on education of Rs. 53,000, Rs. 34,000 was charged to Local funds, and the balance was met from fees and subscriptions. An Arts college is maintained at Almora.

Hospitals and dispensaries.

There were 9 hospitals and dispensaries in 1903, with accommodation for 81 in-patients. About 45,000 cases were treated during the year, including 984 in-patients, and 1,957 operations were performed. The expenditure in the same year on the principal hospitals at Almora and Rānikhet amounted to Rs. 7,600.

Vaccina-

In 1903-4, 31,000 persons were successfully vaccinated, giving an average of 68 per 1,000 of population, which is exceptionally high. Vaccination is compulsory only in the municipality of Almora and the cantonments of Almora and Rantkhet; but the inhabitants of the hills are more alive to its benefits than those of the plains.

(Gazetteer of Himālayan Districts, three volumes, 1882-6 [under revision]; J. E. Goudge, Settlement Report, 1903.)

Champawat,-Eastern tahril of Almora District, United Provinces, comprising the parganas of Bhabar Talla Des, Dārmā, Sirā, Askot, Sor, and Kāli Kumaun, and lying between 28" 57' and 30° 35' N. and 70° 51' and 81° 3' E., with an area of 2,255 square miles. Population increased from 97,968 in 1801 to 122,023 in 1901. There are 1,462 villages, but no town. The demand for land revenue in 1901-4 was Rs. 65,000, and for cesses Rs. 8,000. The tahsil extends along the Kall river from the frontiers of Tibet to the thick forest in the submontane tract called the Bhahar. It thus contains the whole variety of scenery, climate, and physical aspects which are found in the District to which it belongs. One of the chief trade routes to Tibet passes from Tanakpur at the base of the hills to the Lipa Lekh and Darma passes. In 1903-4 the area under cultivation was 169 square miles, of which 14 were irrigated.

Almora Tahsil,-Tahsil of Almora District, United Provinces, comprising the pargamas of Johar, Danpur, Chaugarkha, Gangoli, Bärahmandal, Phaldākot, and Pālī Pachhaun, and lying between 29° 26' and 30° 49' N. and 79° 2' and 80° 30' E., with an area of 3,164 square miles. Population increased from \$18,000 in 1801 to \$43,870 in 1901. There are 3,466 villages and two towns, including ALMORA Town, the District and taksil head-quarters (population, 8,596). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,65,000, and for cesses Rs. 21,000. The tahsii is situated entirely in the hills, and extends beyond the snowy range to the Tibetan frontier, including the whole variety of physical features which have been described under ALMORA DISTRICT. The south-west drains into the Ramganga, but most of the drainage passes east or south-east to the Kall. In 1903-4 the area under cultivation was 204 square miles, of which as were irrigated.

Askot.—Estate in Almora District, United Provinces, situated along the Kali river, comprising 142 villages with an area of 400 square miles. The land revenue payable to Government is Rs. 1,450, and the cesses amount to Rs. 232, while the rent-roll is about Rs. 4,200. The estate belongs to a Surajbansi Rājput, claiming descent from a younger branch of the Katyūri Rājās who once ruled Kumaun, and the head of the family bears the title of Rajwār. The Rajwārs of Askot were conquered by the Chands, but were left in possession of their estate on payment of tribute. In 1845 the estate was

settled with the village occupants as a namindari in the plains; but subsequently the whole estate was settled with the Rajwar, who may now extend cultivation to his own profit, but cannot interfere with the possessions of the permanent tenants, as

recorded in the village papers.

Almora Town.-Head-quarters of Almora District, United Provinces, with cantonment, situated in 20° 36' N. and 79° 40' E. Population, including cantonment (1901), 8,596. Almord became the capital of the Chand Rajas in the sixteenth century. In 1744 the Robillas sent a Muhammadan force for the first time into the hills. They captured and plundered Almora, but after a few months retired, disgusted with the poverty of the country and the rigours of the climate. At Sitolt, close to Almora, was fought the decisive battle with the Gurkhas, which ended in the cession of the whole of Kumaun to the British in 1825. The town is situated on a bare ridge running north-west and south-east for about 2 miles, with an elevation of 5,200 to 5,500 feet. It is the head-quarters of the London Mission and American Methodist Episcopal Mission in the District, and contains a leper asylum and a dispensary. Almora was constituted a municipality in 1864. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 9,500. In 1903-4 the income was Rs. 12,300, chiefly derived from octroi (Rs. 8,000); and the expenditure was Rs. 20,000, including Rs. 6,000 spent on water-works. An excellent water-supply has recently been perfected. The cantonment is usually garrisoned by Gurkhas, and the cantonment fund had an income and expenditure of Rs. 3,000 in 1903-4. Almora has a considerable trade, being a distributing centre for the products of the plains and imported goods. The chief educational institution is the Ramsay College, which includes a small college class of about 13 pupils, and a school department with 301. The municipality maintains four schools, attended by 166 pupils, and there are two others with more than 300.

Anta Dhurā.—A pass on the Tibetan frontier of Almorā District, United Provinces, situated in 30° 35' N. and 80° 11' E. It is important as lying on the most direct route from Tanakpur at the foot of the hills to Gyānimā, and to the mart of Gartok in Tibet, which has recently been declared open. The pass is, however, difficult for travellers. It traverses three ridges of a range at right angles to the dividing ridge between Tibet and British territory at a height of 17,300 to 17,600 feet, and snow lies on the pass for eleven months in the year.

Bageshwar.—Village in the takail and District of Almora, United Provinces, situated in 29° 51' N. and 79° 48' E., at the confluence of the Sarjū and Gomatt, which form a tributary of the Kall or Sardā. Population fluctuates considerably, and is about Soo in the autumn. The village was formerly a great trade centre for the exchange of the produce of Tibet with that of the plains and also imported goods, but the Bhotia merchants now travel to the submontane marts. Bageshwar is also a place of pilgrimage, and contains a temple built about 1450, but an older inscription records a grant to a temple here by a Katyūri Rājā. There are some curious tombs made of tiles, which are assigned by tradition to Mughal colonies planted by Timūr. A dispensary is maintained, and there is a small school with 24 pupils.

Baijnāth.—Village in the tahril and District of Almora, United Provinces, situated in 29° 55' N. and 79° 37' E., on a cart-road from Kāthgodām. Population (1900), 148. Baijnāth lies in the centre of the Katyūr valley, and was formerly known as Kārttikeyapura, a capital of the Katyūri Rājās. On a neighbouring hill stands an old temple, sacred to Kālt, at which kids and buffalo calves are sacrificed to the goddess, especially at the Dasahra. Other old temples are to be seen in the valley, and some copperplates are preserved; inscriptions found here yield a series of dates from 1202 A.D. The valley now contains several tea plantations. A dispensary is maintained at Baijnāth.

Biāns.—A fatti or division of parguna Dārmā, in the Champāwat tahsil of Almora District, United Provinces, situated in the extreme north-east corner of the District. The trade route from Tanakpuz to Tibet along the Kāli river crosses the frontier in this truct by three passes: the Lampiya Dhurā (18,000 feet), the Mangsha Dhurā, and the Lipti Lekh (16,750). The last-mentioned is the easiest route, and leads directly to the Tibetan mart of Tāklakot, and to the Mānasarowar Lake and Mount Kailās, the sacred places visited by Hindus.

Devi Dhurā.—Station on the road between Almorā town and Champiwat, in Almora District, United Provinces, situated in 29° 25' N. and 79° 52' E., 29 miles from Almora town. Between two groups of colossal blocks of grey granite, which are sacred to Mahādeo, Varāht Devi, and Bhim Sen, is a celebrated temple where many goats and buffaloes are offered at a fair in June or July. Two boulders close by exhibit deep fissures and curious marks,

Dwārāhāt.—Village in the hthsil and District of Almorā, United Provinces, situated in 29° 47' N. and 79° 26' E., 12 miles north of Rāntkhet. Population (1900), 464. The place was once the residence of a branch of the Katyūri Rājās, and the remains of many beautifully carved temples are scattered about. Some were desecrated by the Rohillas in the eighteenth century, and are no longer used for worship. In the principal temple are several images, two bearing inscriptions of the eleventh century. Some curious tombs built of tiles have been referred to an invasion of the hills by the Mughals under Timūr. Two dispensaries are maintained here, one being supported by the American Mission. The village is becoming an important trade centre for the west of the District.

Garbyang.—Station in Almora District, United Provinces, on the trade route from Tanakpur to Tibet, situated in 30° 3′ N. and 80° 52′ E., near the junction of the Kuthi Yankti and Kalapani, which form the Kali or Sarpa river. The road divides at this place, one branch going to the Lapa Lekh pass, and another to the Lampiya Dhura and Mangaha Dhura passes. A peshkar is posted here to watch the interests of traders and pilgrims, and there is a branch of the American

Methodist Mission. A small school has 36 pupils.

Lebong.—Mountain range in Almora District, United Provinces, forming part of the Himālayan system, and separating Biāns from the Dārmā valley. It is crossed by a difficult pass, situated in 30° 20′ N. and 80° 38′ E., which is covered with snow throughout the year. The crest of the pass has an elevation of 18,042 feet above sea-level.

Milam.—Village in the tuhtil and District of Almora, United Provinces, situated in 30° 26' N. and 80° 9' E. Population (1900), 1,733. The village is inhabited only in the summer, when it is the residence of the Bhotiā traders with Tibet. It lies at an altitude of 11,400 feet, 13 miles south of the ANTA DHURĀ pass, to which access is obtained by a difficult and trying ascent. Below the village, near the Gori stream, is a considerable stretch of alluvial land, which in summer produces buckwheat and barley. The surrounding country is bleak and desolate, but presents a scene of peculiar grandeur. Lofty snow mountains shut in the valley, and waterfalls are numerous and often of considerable beauty. The London Mission has a station here, and there is a school with about 50 pupils.

Nanda Devl.—The highest mountain in the British Empire, situated in 30° 23' N. and 70° 38' E. in the taksil and District of Almora, United Provinces. The elevation above sea-leve is 25,661 feet. The peak is a pyramid of grey rock coated with ice, and its sides rise at an angle of about 70° above the surrounding snow-clad mountains. The Hindus regard the clouds of snow blown off the summit by the wind as smoke from the kitchen of the goddess Nanda.

Pindari.—Glacier in the tahiil and District of Almora, United Provinces, situated between 30° 16' and 30° 17' N. and 80° and 80° 3' E. The glacier is fed by the snow from the lofty peak of Nandā Kot and other mountains lying north of it, and is the source of the Pindar river, a tributary of the

Alaknanda, which flows into the Ganges.

Ranikhet.-Military sanitarium in the tahsil and District of Almora, United Provinces, situated in 29° 38' N. and 79° 26' E., at the junction of cart roads leading to the foot of the hills at Käthgodam (40 miles) and Ramnagar (56 miles). Population in summer (1900), 7,705, including 2,236 Europeans, and in winter (1901) 3,153. The cantonment is situated on two ridges, Ränikhet proper, elevation 5,083 feet; and Chaubattill, elevation 6,042 feet. It is occupied by British troops throughout the summer, and the accommodation is being enlarged. A dispensary is maintained here. It was at one time proposed to move the head-quarters of the Government of India from Simla to Räntkhet. The income and expenditure of the cantonment fund averaged Rs. 21,000 during the ten years ending 1901. In 1903-4 the income was Rs. 29,000 and the expenditure Rs. 33,000. An excellent system of water-works has recently been carried out.

Tanakpur.-Trading centre in the Champawat tahsil of Almora District, United Provinces, situated in 29° 4' N. and 80° 7' E., at the foot of the Himalayas, near the Sarda river, A railway from Tanakpur to Pilibhit is under consideration. Population (1901), 692. The village was founded in 1880, when the older mart of Barmdeo was washed away by floods. This is now one of the most important places at which the traders from Tibet meet the merchants of the plains. Borax and wool are brought down by the Rhotias, who carry back sugar and cloth. There is also a large trade with the hill tracts of Almora District and Nepal, from which turmeric, chillies, and ghi are exported, while sugar and salt are imported. Tanakpur is situated in the Bhabar, and the timber, catechu, hides, honey, and minor forest produce of that tract are collected. here for sale. The trading season lasts only from November to May, and by the middle of June the place is deserted. The bazar contains a large and increasing number of stone houses and shops, while huts are erected annually by the smaller traders. Tanakpur is the winter head-quarters of a subdivisional officer.

Roundaries, configuration, and hill and river

Garhwal District.-Western District of the Kumaun Division, United Provinces, lying between 20° 26' and 31° 5' N. and 78° 12' and 80° 6' E., with an area of 5,629 square miles. It is bounded on the north by Tibet; on the south-east by Almora and Naint Tal; on the south-west by Bijnor; and on the north-west by the State of Tehri. The District extends from the submontane plain across the central axis of the Himālayas to the watershed between the drainage systems of the Sutlej and the Ganges. It consists for the most part of rugged mountain ranges, which appear to be tossed about in the most intricate confusion. They can, however, be ultimately traced to the great watershed, and by their general direction from north-east to south-west they determine the course and direction of the drainage channels. The greater part of the District is included in the basin of the Ganges, the principal tributary of which is the Alaknanda. This stream is formed by the junction of the Bishanganga with the Dhauliganga, both rising near the watershed and flowing south-west, their upper courses being divided from that of the Mandākini, which joins the Alaknanda at Rudraprayag, by a massive spur of mountains. At Devapraying, on the border of Tehri State, the Alaknanda meets the Bhagtrathi, their valleys being separated by another lofty range. The combined stream now assumes the name of the Ganges, and from the point of junction separates Garhwal from Tehri and subsequently from Dehra Dun. The great central axis of the Himālayas, lying about 30 miles south of the watershed, includes two ranges of lofty snow-clad hills on either side of the Alaknanda. From the eastern range, which culminates in the giant peak of NANDA DEVI, a series of spurs divides the valleys of the Birehl, Mandakini, and Pindar, all tributaries of the Alaknanda, from each other. Farther south the Dudătoli range forms the boundary between the Ganges basin and the Rämganga, which drains the south-east of the District. The principal peaks are: Trisal, 23,382 feet; Danagiri, 23,181 feet ; Kämet, 25,413 feet ; Badrinath, 23,210 feet ; and Kedarnath, 22,853 feet. The rivers flow in narrow valleys which may rather be described as gorges or ravines, and in their lower courses some of them are used for rafting timber. There are a few small lakes; but the Goung lake is the only one of importance. A narrow strip of Bhabar or waterless forest land, some z or 3 miles in breadth, intervening between the southern base of the hills and the alluvial lowlands of Robilkhand, forms the only level portion of the District.

On the south the narrow sub-Himalayan sone displays a great Geology. sequence of fresh-water deposits resembling the geological formation of the Siwaliks. The outer Himalayan zone and central axis include enormous tracts of highland country and snowy peaks, composed in their southern half of slates, massive limestones sometimes succeeded by bands of mesozoic (?) limestone, and nummulitic shales, and in their more northern portion of schistose slates, quartz-schists, and basic lava-flows. The schistose slates pass into mica-schists, with isolated patches of gneissose granites or massive bands, as along the central axis. To the north of the central axis, the Tibetan watershed, in the neighbourhood of the Nitt Pass, introduces an entirely new and vast sequence of marine strata from Silurian to Cretaceous, including a fine development of Trias.

The Bhabar and the hills immediately above it are covered Botany. with a dense forest growth, the principal tree being sail (Shorea robutta). From about 4,000 to 6,000 feet the place of sall is taken by thir (Pinus longifolia), which then yields to the banj oak (Quereus incana) and the tree rhododendron. Above 8,000 another oak, tilonj (Quercus dilatata), is found, and above 10,000 feet the chief trees are various firs, yew, and cypress. The birch grows up to 12,000 feet, but beyond this limit lies a vast expanse of grass, variegated in the summer by

rich flowers of Alpine species.

Elephants are found in the Bhabar, and tigers in the same Fame. locality and in the lower hills. Leopards are common in all parts of the District. Three kinds of bear are known, and other beasts of prey include the wolf, jackal, and wild dog. Sambar or jaran and gural are also found. The District is rich in bird life, and the rivers contain fish, including mahseer.

The great variations in altitude cause a corresponding diver- Climate sity in the climate of different parts of the District. In the and tem-Bhilbar conditions resemble those of the adjacent submontane Districts. Heat is excessive in the river valleys from March to October, while the temperature falls very low in the winter. In open situations the climate is more equable.

The maximum rainfall occurs at the outer edge of the Hima-Ralafall. layas, and in the interior near the foot of the snows. In these localities the annual amount is about 100 inches. Where there are no high mountains the precipitation is much less, and at

Srinagar only 37 inches are received, though in places of the same altitude situated near lofty ranges the fall is as much as 50 inches. The anow-line is at about 18,000 feet in the summer, but in the winter snow falls as low as 4,000 feet in the north of the District and 5,000 feet in the south.

History.

The early history of Garhwal is extremely obscure. Part of it was probably included in the kingdom of Brahmapura referred to by the Chinese traveller of the seventh century. The earliest dynasty of which records exist was that of the Katyuris. According to tradition, they had their origin at Joshimath in the north of the District, and thence spread to the south-east and into Almora. The country was subsequently divided among a series of petty chiefs. Local tradition states. that a Rājā, named Ajaya Pāla, reduced the petty chiefs about the middle or close of the fourteenth century and settled at Dewalgarh; but a successor, named Mahiput Shih, who lived early in the seventeenth century and founded Srinagar, was possibly the first of the line to establish real independence. The Garhwal Rajas first came into conflict with their neighbours, the Chands of Almora, about 1581, when Rudra Chand attempted, but without success, to invade Garhwal. Subsequent attempts were also repulsed. In 1654 Shah Jahan dispatched an expedition to coerce Raja Pirthi Shah, which ended in the separation of Dehra Dün from Garhwal. The same Raja, a few years later, robbed the unfortunate refugee, Sulaiman Shikoh, son of Dārā Shikoh, and delivered him up to Aurangzeb. Towards the close of the seventeenth century the Chand Rajās again attempted to take Garhwäl, and Jagat Chand (1708-20) drove the Raja from Srmagar, which was formally bestowed on a Brahman. Pradip Shah (1717-72), however, recovered Garhwal, and held the Dun till, in 1757, Najib Khan, the Robilla, established his authority there. In 1779 Lalat Shah of Garhwal defeated the usurper who was ruling in Kumaun, and allowed his son, Parduman Shah, to become Raja of that territory. A few years later, on the death of his brother, Parduman Shah held both Garbwal and Kumaun for a year; but he then preferred the more certain tenure of his own dominions to the intrigues of Almora, and retired to Srinagar. The Gurkhas conquered Almora early in 1790 and made an attempt on Garhwal, but withdrew owing to trouble with the Chinese in Tibet. Internal dissensions prevented another advance for some years; but in 1803 the Gurkhas overran Garhwal and also took Dehra Dün. Parduman Shah fied to the plains and collected a force, but perished near Dehra with

most of his Garhwall retainers in 1804. The Gurkha rule was severe; and when the British conquered Kumaun in 1815, in consequence of aggressions by the Gurkhas, the change was hailed with delight by the hill-men. The whole Division was administered directly by a Commissioner; but in 1837 Garhwal became a separate subdivision under an Assistant Commissioner, and in 1891 was constituted a District.

The District contains a number of temples held sacred by the Archaeo-Hindus of all parts of India. Among these may be mentioned logsthe shrines of Badrinath, Joshimath, Kedarnath, and PANDURESHWAR. At Gopeshwar an iron trident to feet high bears an inscription of the twelfth century, recording the victories of Anekamalia, possibly a ruler of Nepal. Many copperplates are preserved in temples or by individuals, which are valuable for their historic interest.

Garhwal contains 3 towns and 3,600 villages. Population The is increasing steadily. The numbers at the four enumerations people, were as follows: 310,288 (1872), 345,629 (1881), 407,818 (1891), 429,900 (1901). The whole District forms a single taksil, sometimes called Paurl from its head-quarters. The principal towns are the cantonment of LANSDOWNE, SRINAGAE, and Kotowara. Pauri, the District head-quarters, is a mere village. The following table gives the chief statistics of population in 1901 :-

| aqui | Area in | Nun | sterof | Population | Popular tion per square mile. | excitation in pope- | Number of persons while to read used write. |
|------|---------|-------|----------|------------|--|---------------------|--|
| | andance | Towns | Villagre | | | | |
| | 5,619 | 3 | 3,600 | 419,900 | 76 | + 54 | 27,410 |

Nearly 99 per cent. of the total are Hindus, and Musalmans number only 4,400. The density of population is low, as usual in Himalayan tracts. About 97 per cent, of the people speak the Garhwall dialect of Central Pahart.

More than 97 per cent, of the total Hindu population are Castes More than 97 per cent of the than Thinks pays (#45,000), and occa-included in three castes: Răjputs or Kshatıriyas (#45,000), pationi-Brahmans (101,000), and Doms (68,000). The two former are subdivided into the descendants of settlers from the plains, and members of the great Khas tribe who are regarded as autoch-The Doms are labourers and artisans. Garhwallis and Kumaunis still preserve a certain degree of antagonism towards each other. The District is essentially agricultural, and agriculture supports 89 per cent of the total. Two battalions of the Indian army are recruited entirely in Garhwal,

Christian missions.

There were \$88 native Christians in 1901, of whom \$36 were Methodists. The American Methodist Mission was founded in 1850 and has a number of stations in the District.

General agricultural conditions.

The most striking feature of the cultivated area is its scattered nature. The richest land lies in the river valleys where these widen out, and in places the rivers have left a series of terraces. Elsewhere cultivation is confined to those parts of the hillside which are the least steep, and even here terracing is required, each field being protected by an outer wall of stones. There is also some temporary cultivation, called katil, in which the land is not terraced. The shrubs and bushes are cut and burnt and the land is dug with a hoe. After cropping it remains fallow for a number of years. In the extreme north crops are sown in the spring and reaped in the autumn; but in the greater part of the District two crops are grown, ripening in the spring and in the autumn, as in the plains. The Bhabar or submontane tract resembles the plains, but cultivation here entirely depends on irrigation.

Chief agricultural statistics pal crops.

The tenures are those of the Kumaun Division. Detailed agricultural statistics are not maintained, but the total cultivated and princi, area in 1903-4 was 410 square miles. The principal food-crops are rice, maruā (Eleusine coracana), jhangorā (Oplismenus frumentaceur), wheat, and barley. The District also produces small millets, amaranth, sesamum, peas, pulses, pepper, ginger, turmeric, and mustard. Rice grows up to about 5,000 feet, and jhangera and marua to about 6,000. Above that altitude amaranth is the chief autumn crop. Only one crop can be grown annually above 8,000 feet, and here phaper or buckwheat (Fagopyrum tataricum) is largely cultivated. Wheat grows up to 10,000 feet, and barley and mustard up to 11,000 feet. In the Bhābar, maize, tobacco, and cotton are also cultivated.

Improvements in agriculturni principe.

Between 1864 and 1896 the cultivated area increased by about 30 per cent, and the rise in population is causing a further increase. Apart from the fact that the area under the plough is rising, the cultivated land is also steadily improving. The soil on the hillsides is usually very thin; and when fresh land is broken up, only a small excavation can be made in the first year. The soil is gradually improved by the weathering of rock and the annual cultivation, and the fields become broader and higher, the outer walls being gradually raised. There have, however, been no improvements in agricultural methods, and no new staples have been introduced. Advances from Government are taken only in adverse seasons, and 23 lakha was advanced in 1890-1 and 1892-3.

About two per cent of the cultivated area is irrigated. In Inigation. the hills irrigation is usually supplied by small channels conducted from rivers along the hillsides to the fields. Only the smaller streams are used for this purpose, and the supply is effected entirely by gravitation, no artificial means of lifting being employed. Cultivation in the Bhahar is entirely dependent on irrigation, which is supplied by small canals.

The outer ranges of hills are covered with forests which Feresta have been formally 'reserved' and are administered by officers of the Forest department. Their area is 579 square miles. Ramboos and sal are the chief products, and firewood and grass are also extracted. The hills near Lansdowne are covered with pines and oak. In addition to these forests, the whole of the waste land has been declared 'District-protected' forest in charge of the Deputy-Commissioner, and simple regulations for conserving the forests have been framed, with beneficial results. The 'reserved' forests belong to the Ganges and Garhwal forest divisions, and bring in a revenue of about 1-5 lakhs annually, while the District forests yield about Rs. 20,000.

Copper and iron were formerly worked to some extent, but Minerals. only for local use, and little is extracted now. Minute quantities of gold are found in some of the rivers. Lead, arsenic, lignite, graphite, sulphur, gypsum, soapstone, asbestos, alum, and stone-lac have also been observed.

The manufactures of the District are few and unimportant. Arts and Hemp is weven into coarse cloth and rope, and blankets are tures. made. Leather goods, mats, baskets, wooden bowls, and glass bangles are made for local use. Stone is carved in one or

two places.

The most important trade is with Tibet. Salt, wool, sheep Commerce. and goats, ponies, and borax are imported, and grain, cloth, and cash exported. The trade is chiefly in the hands of the Bhotias, who alone are permitted to cross the frontier, and the merchandise is carried on yaks, jūbas (a cross between the yak and the cow), asses, sheep, and goats, or even by the Bhotilis themselves. In the west of the District there is some trade with the State of Tehri, which exports grain in return for salt from Tibet. The bonax from Tibet and some portion of the other imports are taken to Kotdwara or Ramnagar at the foot of the hills. Other exports include ght, chillies, ginger, and turmeric, the produce of the lower valleys, and forest products. The resources of the District are considerably increased by the pilgrim traffic to the sacred shrines, and by the money earned

by the hundreds of men who work as coolies in the hill stations of Simla, Naint Tal, and Musseorie throughout the summer. SRINAGAR and KOTDWARA are the two chief marts in the District, but most of the trade is done in villages.

Railways and roads.

A branch of the Oudh and Rohilkhand Railway from Najibābād to Kotdwāra just reaches the foot of the hills. There are 1,063 miles of road, of which only one mile is metalled. Of the total, 462 miles are maintained by the Public Works department, 352 miles being repaired at the cost of Provincial revenues. Avenues of trees are maintained on six miles. The roads are almost entirely bridle-paths, and in places are barely practicable for laden animals; but a cart-road is under construction from Kotdwāra to Lansdowne. The pilgrim route and the roads from Kotdwāra to Lansdowne and Srinagar are the chief tracks.

Famine.

Garhwal is more subject to distress from drought than the meighbouring District of Almora; but the scarcity is usually local. In 1867 the spring crops failed in the southern half of the District; Government advanced Rs. 10,000, and the people carried up grain from the Bhabar. The scarcity of 1869-70 was little felt, as the export of grain was forbidden. When traffic was allowed large profits were made by the export of grain to Bijnor. The District suffered severely in 1877-8, when many deaths occurred from privation. In 1889-90 both the autumn and spring crops failed, and Government imported grain and gave advances. A similar failure in 1892, which affected most of the District, was met in the same way. In 1896 relief works were opened and Rs. 27,000 was spent; but the works were abandoned when the rate of wages was reduced below the market rate.

District

The Deputy-Commissioner is assisted by three Deputy-Collectors recruited in India, of whom one is stationed at head-quarters, one at Lansdowne, and one at Chamolt. Each of these is in charge of a subdivision of the District, the limits of which can be varied by the Deputy-Commissioner. There is only one takiildar, who is posted to Pauri, the District head-quarters

Civil partice and crime. The Deputy-Commissioner, the Deputy-Collectors, and the taksildar all have civil, revenue, and criminal powers, the first-named being District Judge. The Commissioner of Kumaun aits as a High Court in civil cases and as a Sessions Judge. Crime is very light.

Land revenue administration. The short rule of the Gurkhas was sufficiently harsh to cause a great diminution in the prosperity of Garhwal. A formal settlement of the land revenue was indeed made, but the local officers disregarded it. In the last year of the Gurkha government only Rs. 37,700 could be collected, out of a demand of Rs. 91,300. The first British settlement was made in 1815, as a temporary arrangement for one year, by farming whole parganas to the pargana headmen for the sum collected in the previous year, which yielded Rs. 36,000. Succeeding settlements were made by villages; but the revenue was still fixed on the basis of previous collections for a whole pargana at a time, and was distributed over villages by the village headmen. Six revisions were carried out between 1816 and 1833. and the revenue rose to Rs. 69,200. In 1822 the first attempt was made to prepare a rough record of rights, which consisted merely of a statement of the nominal boundaries of each village, an enumeration of the blocks of cultivation with the estimated area of each, and the names of the proprietors. In 1837 Garhwäl was placed in charge of a separate officer temporarily subordinate to the Commissioner of Bareilly, who made the first regular settlement. Each village was inspected and a fresh estimate was made of the cultivated area, which was divided into six classes, according to its quality. The new demand was fixed for twenty years on a consideration of this estimate and of the previous fiscal history of the village, the total amounting to Rs. 68,700. At the same time a careful record-of-rights was prepared in great detail, and was the means of settling innumerable disputes. The next revision was preceded by a complete measurement of the cultivated area, and was carried out on a new plan. It was assumed, after calculating the out-turn of the principal crops, that terraced land generally was worth so much an acre. Land was divided into five classes, and a scale of relative value was fixed. The valuation was made by reducing the total area to a common standard and applying the general rate; but other checks were also used, and in particular the population of each village was considered. The revision was completed in 1864, and the demand was raised from Rs. 69,300 to Rs. 96,300. The revenue was collected in full with an ease unknown in any District of the plains. In 1800 preparations commenced for a new revision which was to be based on a scientific survey; but after a year's experience it was found that a complete survey would cost five lakhs, and the cadastral survey was completed for only 971 square miles. A modification of the system followed in the plains, by which villages are classified in circles according to their general quality, was introduced; but on the whole the methods of the previous

settlement were adhered to, and a new valuation of produce and a revised scale of relative values were used to calculate the land revenue. In the area which was not surveyed cadastrally, the assessment was first fixed for each patti (a division of a pargawa) and distributed in consultation with the village headmen. In the extreme north, the produce of the neighbouring jungles was also taken into account. The result was a total assessment of Rs. 1,66,000. The small Bhābar cultivation is treated for the most part as a Government estate on which rent is fixed by the Deputy-Commissioner. The gross revenue of the District is included in that of the Kumauw Division.

Local selfgovernment.

There are no municipalities in Garhwal, but two towns are administered under Act XX of 1856. Beyond the limits of these, local affairs are managed by the District board, which in 1903-4 had a total income of Rs. 61,000, chiefly derived from a grant from Provincial revenues. The expenditure in the sume year was Rs. 64,000.

Police and jails.

Regular police are permanently maintained at Srinagas and at Kotdwara, and during the pilgrim season at six other places. The whole force consists of 11 subordinate officers, 130 constables, and 6 town police, and is under the District Superintendent of Kumaun. Elsewhere there are no police, but the patwars have powers corresponding to those of sub-inspectors in the plains. The District jail contained a daily average of 12 prisoners in 1903.

Education.

Garhwal takes a very high place as regards the literacy of its inhabitants, of whom 6-4 per cent (13 males and 0-2 females) could read and write in 1901. The number of public schools increased from 59 in 1880-1 to 76 in 1900-1, and the number of pupils from 2,746 to 2,813. In 1903-4 there were 118 such schools with 4,527 pupils, of whom only 15 were girls. All the pupils but 187 were in primary classes. The District also contained three private schools with 350 pupils. Two schools are managed by Government, and 101 by the District board, which contributed Rs 22,000 out of a total expenditure on education of Rs, 31,000. Receipts from fees were only Rs. 1,200.

Hospitals and dispensaries. There are 10 hospitals and dispensaries with accommodation for 84 in-patients. In 1903 the number of cases treated was 58,000, including 653 in-patients, and 1,514 operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 12,000, about Rs. 10,000 of which is derived from endowments of land called sodābart. About 41,000 persons were successfully vaccinated in Vaccina-1903-4, representing the very high proportion of 95 per 1,000 tions of population.

(N. W. P. Gazetteers, vols. x-xii, 1882-6 [under revision];

E. K. Pauw, Settlement Report, 1896.)

Badrinath.-Peak of the Central Himalayan axis in Garhwal District, United Provinces, reaching to a height of 23,210 feet above the sea. From the glaciers on its sides the Bishanganga, an affluent of the Alaknanda river, and several other tributaries take their rise. On one of its shoulders, at an elevation of 10,400 feet, and on the road from SRINAGAR to the Mana Pass, stands a shrine of Viahnu, which also bears the name of Badrināth (30° 45' N. and 79° 30' E.). The original temple is said to have been built by Sankaracharya; but several buildings have been swept away by avalanches, The present structure is modern. It is conical in shape, and is surmounted by a small cupola covered with plates of copper and crowned with a gilded ball and spire. Below the shrine a sacred tank stands on the hillside, supplied from a hot spring by means of a spout in the shape of a dragon's head. Pilgrims of both sexes bathe in the holy pool. The god is daily provided with dinner, and his comfort is carefully ensured in many other ways. The vessels on which he is served are of gold and silver, and a large staff of servants attend to his wants. The chief priest, known as the Rawal, is always a Brithman of the Namburi class from Southern India. In 1896 a suit was instituted in the civil court and a scheme of management was framed, by which the Rassal manages the secular affairs of the temple, subject to the control of the Raja of Tehra State. A large number of villages have been assigned for the maintenance of the temple, with a revenue demand of about Rs. 7,000. The temple is annually closed about November, when the priests remove the treasure to Joshimarii for the winter, returning to Badrināth in May. Immense numbers of pilgrims annually visit Badrinath and other shrines in the hills.

Joshimath.—Village in Garhwal District, United Provinces, situated in 30° 33′ N. and 79° 35′ E., at an elevation of 6,107 feet above sea-level and about 1,500 feet above the confluence of the Dhault and Bishanganga, the combined stream being known as the Alaknanda. Population (1900), 468 in summer and a little larger in winter. It is chiefly remarkable as the winter head-quarters of the Riveal or chief priest of the temple of Badrinaru, who retires here after the snows have rendered

the higher ahrine inaccessible. The village contains several ancient temples, some of which have been much damaged by earthquakes. A police station is opened here during the

pilgrim season.

Karnaprayag.—One of the five sacred confluences of the Alaknanda, where this river is joined by the Pindar (see PINDARI) in Garhwal District, United Provinces. The village is situated at a height of 2,300 feet above the sea in 30° 16′ N. and 79° 15′ E. Population (1901), 243. It contains a number of temples and also a dispensary, and during the summer a police station.

Kedarnath.-Famous temple and place of pilgrimage in Garhwal District, United Provinces, situated in 30° 44' N. and 70° E., immediately below the snow peak of Mahapanth, at an elevation of 11,753 feet above sea-level. It marks the spot where Sadāsiva, a form of Siva, in his flight from the Pändavas, assumed the form of a buffalo and attempted to dive into the earth to escape his pursuers, but left his hind quarters on the surface. A rock is still worshipped as part of the deity, and the remaining portions of his body are reverenced elsewhere; at Tungnāth, Rudranāth, Madhyamaheshwar, and Kalpeshwar. Four miles from the temple on the way to the Mahāpanth peak is a precipice known as the Bhairab Jhāmp, where devotees formerly committed suicide by flinging themselves from the summit; but the British Government suppressed this practice shortly after annexation. The Rawal or chief priest of Kedärnäth is always a Jangama from Mysore, or some other part of Southern India. Large numbers of pilgrims annually visit Kedarnath.

Kotdwāra.—Town in Garhwāl District, United Provinces, situated at the foot of the hills, in 29° 45′ N. and in 78° 32′ E., close to the terminus of a branch of the Oudh and Rohilkhand Railway, and on the small river Khoh. Population (1901), 1,029. This is the most important mart in the District, supplying the south of Garhwāl with cloth, sugar, salt, cooking utensils, and other miscellaneous articles imported from the plains. It is also the chief centre and exchange for the Tibetan trade. The Bhotiās bring down borax, and take back pulse, sugar, tohacco, and cloth. Forest produce, mustard, rape-seed, chillies, and turmeric are exported to the plains. Kotdwāra is the head-quarters of the Garhwāl Bhāhar, and contains a police station, a dispensary, and a branch of the American Methodist Mission. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1, 100.

Lansdowne.—Cantonment in Garhwil District, United Provinces, situated in 29" 52' N. and 78" 41' E., on a ridge on the outer Himālayas, 5,500 to 6,600 feet above sca-level. A cart-road from Kotdwāra railway station, 19 miles away, is now being constructed. Population (1901), 5,943. The cantonment was founded in 1887. It extends through beautiful pine and oak forests for a distance of more than three miles, and can accommodate three battalions of native troops. Lansdowne is also the head-quarters of the Ganges forest division, and of a Deputy-Collector belonging to the District staff. During the ten years ending 1901 the income and expenditure of the cantonment fund averaged Rs. 7,500. In 1903-4 the income was Rs. 11,900, and the expenditure Rs. 12,600.

Mana.—Village in Garhwal District, United Provinces, situated in 31° 5′ N. and 79° 26′ E., on the Saraswatt, an affluent of the Bishanganga, 10,560 feet above sea-level. It lies close to a pass of the same name, also known as Chirbityala or Dungri-la, which has an elevation of 18,650 feet. Though very lofty, it is one of the easiest passes into Tibet from the south, and is therefore much used by Hindu pilgrims to Lake Manasarowar. The village is chiefly inhabited by Bhotia traders with Tibet.

Niti.—Pass in Garhwal District, United Provinces, situated in 30° 58′ N. and 79° 53′ E. The pass is on the watershed between the Sutlej and Ganges basins, at a height of 16,628 feet above sea-level, and gives access to Tibet. A village named Niti is situated on the bank of the Dhauli river, 13 miles south of the pass, at an elevation of 11,464 feet above the sea. It contains a population (1900) of 267 during the summer months, but is deserted in winter.

Pandukeshwar.—Village in Garhwal District, United Provinces, situated in 30° 38' N. and 79° 34' E., on the route from Skinagan to the Mana pass, at an elevation of 6,300 feet above sen-level. Population (1901), 298. It is said to take its name from the Pandava brothers, who retired here to end their days in pious observances, after giving up the kingdom of Hastinapur. There is a celebrated temple of Yog-badri, in which four or five copperplates are preserved, bearing inscriptions of the Katyuri Rajas. A school has 23 pupils.

Pauri.—Head-quarters of Garhwal District, United Provinces, situated in 30° 8′ N. and 78° 46′ E., at an elevation of 5,390 feet above sea-level. Population (1901), 486. The

U

village lies on the northern slope of the Kandanlia hill, with a magnificent view of a long line of snow-clad mountains. Pauri was chosen as the head-quarters of the Garhwal subdivision of Kumaun District in 1840. Besides the usual offices, it contains a dispensary and jail. The American Methodist Mission has its head-quarters here, and maintains a dispensary, a female orphanage, and schools for boys and girls.

Rudraprayag.—Temple in Garhwall District, United Provinces, situated in 30° 18' and 79° N., at the confluence of the Mandakini and Alaknanda, 2,300 feet above sea-level. It is one of the five sacred confluences (prayag) in the upper course of the Ganges head-waters, and is visited by pilgrims on their way to Kedarnath.

Srinagar.—Town in Garhwal District, United Provinces, situated in 30° 13′ N. and 78° 46′ E., on the left bank of the Alaknanda, at an elevation of 1,706 feet above sea-level. Population (1901), 2,091. The old town was founded in the seventeenth century and became the capital of Garhwal; but it was washed away in 1894 in the flood caused by the bursting of the Gonna lake. The new town has been built on a higher site, and is well laid out. Srinagar ranks next to Kotowara in importance, and owes its trade chiefly to its position on the pilgrim route. It contains a fine hospital and a police station, and is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 1,100. A private school has 198 pupils.

LUCKNOW DIVISION

Lucknow Division (Lakhnau).-Western Division of Oudh, United Provinces, lying between 25° 49' and 28" 49' N. and 79" 41' and 81" 34' E., with an area of 12,051 square miles. It extends from the damp submontane tract on the borders of Nepal to the thickly populated area of southern Oudh. The Division lies entirely between the GANGES on the south-west and the Gogga on the north-east. The headquarters of the Commissioner are at Lucknow City. Population is increasing steadily. The numbers at the four enumerations were as follows: 5,315,583 (1869), 5,325,601 (1881), 5,856,550 (1891), 5,077,086 (1901). The Census of 1869 probably overstated the truth. The density, 496 persons per square mile, is higher than the Provincial average. The Division stands fourth in the United Provinces in respect of area and also in respect of population. Hindus formed 87 per cent. of the total in 1901, and Musalmans nearly 13 per cent. There were 9,237 Christians, of whom 2,150 were natives. The Division includes six Districts, as shown below :-

| | | | Area in square miles. | Population, | Land revenue and cerums for 1003-4, in thousands of rupess. |
|-----------|------|---|-----------------------|-------------|--|
| Lucknow | 4 | 2 | 967 | 793,241 | 10,24 |
| Unao - | | - | 7,792 | 976,639 | 17,59 |
| Ran Barel | be | | 1,748 | 1,033,761 | 17,83 |
| Sitiput | | | 1,730 | 1,175,473 | 18,67 |
| Hurdot | | 2 | 0,331 | 1,097,834 | 18,41 |
| Kheri | | 8 | 1,963 | 905,138 | 11,48 |
| | Tota | i | 11,051 | 5,977,085 | 94-27 |

Kheri, which is the most northern District, includes a considerable area of forest land. The remaining Districts resemble those of the Gangetic plain generally. Hardot, Unao, and Räe Barell lie north-east of the Ganges; Sitäpur is bounded on the north-east by the Gogra; and Lucknow is situated in the centre of the Division. There are 44 towns and 10,150 villages. The

largest towns are LUCKNOW CITY (264,049, with cantonments), the most populous city in the Provinces; SiTAPUR (22,557) with cantonments); and Shahabap (20,036). Lucknow, Shahabad, Sitapur, Rae Bareli, Khairanan, and Lakhimpur are the chief places of commercial importance. Lucknow was the capital of the kingdom of Oudh for nearly a century before annexation. Dalmau on the Ganges is the site of an important bathing fair.

Bounfiguration. and river system.

Lucknow District (Lakhnau).- Central District in the daries, con- Lucknow Division of the United Provinces, lying between 26° 30' and 27° 9' N. and 80° 34' and 81° 13' E., with an area of 967 square miles. In shape the District is an irregular oblong. It is bounded on the north-west by Hardot and Sitapur; on the north-east by Bara Banki; on the southeast by Rae Barell; and on the south-west by Unao. The general aspect is that of a level champaign, studded with villages, finely wooded, and in parts most fertile and highly cultivated. The two principal rivers are the Gustri and Sat, and near these streams and their small tributaries the surface is broken by ravines, while the banks of the rivers are generally sandy. The Gumti enters the District from the north, and after passing Lucknow city turns to the east and forms part of the boundary between Lucknow and Bara Banki. to sudden floods of great magnitude. Its chief tributary is the Behtt, a small perennial stream rising in Hardot. forms part of the south-west boundary, running almost parallel to the Gumi, and receiving the Nagwa or Lon and the Bakh.

Geology.

The District exposes nothing but Gangetic alluvium. A boring for an artesian well was made to a depth of 1,336 feet, but passed only through sand with occasional beds of calcareous limestone.

Hotmy.

The flora of the District is that of the Gangetic plain generally. There is very little jungle, the only considerable tract being in the north-east, where a dhak (Butea frondosa) jungle forms a fuel and fodder reserve. Groves are, however, numerous; and excellent mangoes, oranges, pomegranates, guavas, custard-apples, and bers (Zizyphus Jujuba) are grown.

Farma.

There are few wild animals of any size. Jackal and hog are the commonest, while antelope and nilgal are occasionally seen. Wild-fowl abound in the larger swamps. Fish are found in the rivers and tanks, and are also imported for sale in the city.

Climate and temperature.

The climate of Lucknow is a mean between that of the cooler submontane Districts and the dry hot tracts south and west of it. Frosts are rare, and the maximum shade temperature is about 110°. Hot westerly winds are prevalent from March to May, often accompanied by dust-storms.

The average annual rainfall is 36 inches, and is on the whole Rainfall, evenly distributed; the tract along the Gumti, however, appears to receive slightly more than other parts of the District. There are great variations from year to year, ranging from 13 inches

in 1877 and 1880 to 70 inches in 1894.

Legend relates that Lucknow city was founded by Laksh-History. mana, brother of Rāma Chandra of Ajodhyā, and connects other places with episodes in the Mahabharata. At the close of the Hindir period the country was, according to tradition, held by the Bhars, who were never conquered by the Kanauj Rājās. Many tombs are pointed out as those of heroes who fell in the raids of Saiyid Sālār Masūd. The Rājputs declare that their ancestors first entered the District in the eleventh or twelfth century, and in the thirteenth century the Musalmans began to obtain a footing. In the fifteenth century Lucknow was included in the kingdom of Jaumpur, and the town first became of importance about 1478, when it is referred to as the capital of a small division. Under Akhar a sarkar of Lucknow was formed in the Subah of Oudh. The District, apart from the city, has no further history. It was included in the tract granted to Saadat Khan, the first Nawab of Oudh ; but Lucknow did not become the regular seat of government till after Asaf ud daula succeeded in 1775. In 1856 Oudh was annexed by the British owing to the misgovernment of the king, and a year later the Mutiny broke out. An account of the great rebellion will be found in the article on Lucknow City.

The District contains many ancient mounds which have Archaeonever been examined. Local tradition assigns them to the loggBhars, but some probably date from Buddhist times. The
chief architectural monuments are the buildings at Lucknow
city, dating from the close of the eighteenth century. The
carlier edifices, though built of brick and stucco, are not
unpleasing; but the later ones are disfigured by vulgarities of
style copied from debased European models.

Lucknow contains 6 towns and 932 villages. At the four The enumerations the numbers were: 778,195 (1869), 696,824 people. (1881), 774,163 (1891), 793,241 (1901). The first Census probably overstated the actual population, but the District suffered severely from famine in 1877-8. There are three tahritis—Lucknow, Malinand, and Mohanlaidanj—the head-quarters of each being situated at a place of the same name. The principal town is Lucknow city, the District head-

quarters. The following table gives the chief statistics of population in 1901:-

| | Barco | Nun | berot | tion | å. | Seda J | 925 |
|----------------|----------|-------|----------|---------|-----------------------|---|---|
| Taksil. | Armain w | Towns | Villages | Populie | Population spare m | Percental variation pepulation 1 Veen 15 | Nimber persons a to read a write |
| Incknow , | 6a | 3 | 327 | 454,896 | 1,264 | + 14 | 30,844 |
| Malthäbäd . | 354 | | 379 | 184,230 | 552 | + 4-9 | 3,417 |
| Mohanlälganj , | 273 | 3 | 226 | 154,115 | 565 | + 2-6 | 3,156 |
| District total | 967 | 6 | 932 | 793,241 | 820 | + 3-5 | 27:417 |

Hindus form 78 per cent of the total, and Musalmans more than 20 per cent. About one-seventh of the latter are Shiahs; this is a large proportion for India, due to the fact that the Oudh kings belonged to that sect. About 80 per cent. of the population speak Eastern Hindt and about 20 per cent. Western Hindt, chiefly Hindustani.

Castes and occupations. The Hindu castes most largely represented are the Passe (toddy drawers and labourers), 84,000; Ahirs (graziers and agriculturists), 77,000; Chamārs (tanners and cultivators), 75,000; Lodhas (cultivators), 57,000; Brāhmans, 46,000; Rajputs, 30,000; and Kurmis (agriculturists), 22,000. Among Muhammadans are Shaikhs, 50,000; Pathāns, 26,000; Saiyids, 17,000; and Mughals, 12,000. Agriculture supports only 52 per cent. of the total, but about one-third of the population of the District is included in Lucknow city. Personal services support 9 per cent., cotton-weaving nearly 7 per cent., and general labour 5 per cent. The cultivating castes are chiefly Rājputs, Brāhmans, Ahirs, Pāsīs, Chamārs, Lodhas, and Musalmāns, with a certain proportion of the more skilful castes of Kurmis and Muraos.

Christian missions.

Out of 7,247 Christians in 1901, natives numbered 2,150. The latter include 846 members of the Anglican communion, 562 Methodists, 363 Roman Catholics, and 152 Presbyterians. A Zanāna Mission was established in 1852, the Church Missionary Society Mission in 1858, the American Methodist Mission in 1859, and a Wesleyan Mission in 1863.

General agricultural conditions. The District is the smallest in the United Provinces, and the only variations in the agricultural conditions of different portions are due to diversity of soil. The bed of the Gumti lies low, and in places contains belts of moist alluvial land, which are flooded in the autumn but produce excellent spring crops. The sandy land on the banks of this river produces only scanty

crops of millet or pulse, except near the city where an abundant supply of manure can be applied to it. Beyond the sandhills the soil becomes a fertile loam, which gradually turns to heavy clay. The clay soil is interspersed with patches of barren usar and tanks or jhils, but is the chief tract for rice.

The tenures found are those common to the Province of Chief agri-OUDII. About a quarter of the District is held by talukdars, entural a quarter by zamindars, and the remainder by coparcenary and princibodies of pathdars. Sub-settled mahais are not very numerous, pal crops but many small plots are held in under-proprietary right. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles :-

| Tubell. | Total. | Cultivated | Irrigated. | Cultivable waste. | |
|---------|-------------------|-------------------|----------------|----------------------|--|
| Lucknow | 350 334 373 | 218 213 150 | 69 73 66 | 27 6a 33 | |
| Total | 967 | 681 | 208 | 140 | |

Wheat is the chief food-crop, covering 143 square miles or 25 per cent, of the net area cultivated, the other important staples being gram (97), rice (93), pulses (79), bajra (68), and burley (53). Poppy covers 4 square miles, but very little sugar-cane, cotton, or oilseeds are grown,

The cultivated area increased by about 9 per cent. between Improve-1870 and 1895, and during the last ten years the net area under ments in cultivation has further risen by 7 per cent. There has been unal a striking increase in the area under rice and the coarser practice. grains, such as gram, peas, jowar, and maize, on which the people chiefly subsist. But no decrease has been observed in the area sown with wheat, and the cultivation of the most valuable crops-poppy, cotton, and garden produce-shows a large relative increase. These results are due to an extension of the system of double-cropping. A small but steady demand exists for advances under both the Land Improvement and the Agriculturists' Loans Acts. Out of 4 lakhs advanced during the ten years ending 1900, 2-9 lakbs was taken in the famine year 1896-7. In the four years ending 1904, loans averaged Rs. 0,200.

The District contains very little pasture land, and the agricul- Cattle, tural stock is of poor quality. The best cattle are imported from Ponies, and northern Oudh. There is very little horse-breeding. Sheep and goats are kept in some numbers to supply meat and wool.

Irrigation. In 1903-4 the irrigated area was 208 square miles, of which 106 were supplied from wells, 93 from tanks or skills, and o from other sources. Lucknow is fairly protected in ordinary years, but is less secure than the neighbouring Districts of southern Oudh. In seasons of drought the tanks and jhile fail almost entirely. During the last few years there has been a very large increase in the number of wells, which add materially to the security of the District. The increase has been especially rapid since the famine of 1896-7, when Government advanced more than a lakh of rupees for the construction of wells. Water is generally raised by bullock power in leathern buckets; but in the south the spring-level is high enough for the use of levers. Tank-irrigation is most common in the south, and is carried on by the use of swing-baskets. A canal was constructed early in the nineteenth century from the Ganges to the Gumti, but has never carried water except during the rains.

Minerals.

The chief mineral product is kankar or nodular limestone, which is used for metalling roads and for making lime. Saline efflorescences called reh are used in the manufacture of paper and in other arts.

Arthund. manufactures.

There are few industries deserving mention outside Luck-NOW CITY. Common country cloth is the chief article produced in the small towns and villages; and dyers, banglemakers, brass-workers, and potters supply local needs. city is, however, celebrated for its cotton fabrics, cotton-printing, dyeing, embroidery, gold and silver work, ivory and woodearving, ornamental pottery, and clay modelling. It also contains a number of factories and workshops, employing 5,300 hands in 1901.

Commerce. The District imports grain, piece-goods, metals and hardware, sugar, and salt, and chiefly exports the manufactures of the city. Lucknow city is the principal centre of trade, but the extension of railways has caused small subsidiary markets to spring up at wayside stations. There is also an immense through traffic, MALIHABAD, Gosainganj, Mohanlälgani, and Chinhat are the principal trading towns outside the city, and Banthara is the chief cattle market.

Railways and roads.

Lucknow city is the most important railway centre in the United Provinces. It is the head-quarters of the Oudh and Rohilkhand Railway, the main line of which passes through the District from south-east to north-west. A branch from Cawapore and the loop-line from Benares through Jaunpur and Fyzabad meet the main line at Lucknow. A marrow-gauge

line worked by the same railway, which traverses the District from south-west to north-east, connects the Rajputana-Maiwa Railway at Cawopore with the Bengal and North-Western Railway, and thus gives through communication between Rajputlina, northern Oudh, and Bengal. Another narrow-gauge line striking north from Lucknow connects the city with Bareilly through Shapur. Communications by road are also good. Out of 349 miles, 142 are metalled. Most of the latter are in charge of the Public Works department, but the cost of all but 52 miles is met from Local funds. Avenues of trees are maintained on 90 miles. The most important route is the road from Camppore to Fyzahad, passing through Lucknow city. Other roads radiate from the city to Strapur, Hardot, Rae Barelt, and Sultanpur.

The District has suffered repeatedly from famine, and occa- Famine. sionally distress has been very acute. In 1784 the Nawab instituted large relief works, and it is said that the works were kept open at night so that the respectable poor could earn food without being recognized. In 1837 the king attempted to stop exportation of grain and to fix prices. Under British rule there was some distress in 1860, and acute searcity in 1865 and 1869. The famine of 1873 was of no intensity, but in 1877 the rainfall was only 13 inches and the autumn crop failed completely. Relief works were opened in 1878 and were largely attended. There was scarcity in 1880; but it was local, and prices did not rise. The rains failed in 1896 and famine was severely felt. By July, 1897, there were 107,000 persons in receipt of aid. 'The following harvest was, however, good, and the works were closed by the middle of September.

The Deputy-Commissioner is usually assisted by two mem-District bers of the Indian Civil Service, one of whom is City Magis staff. trate, and by three Deputy Collectors recruited in India. Two other Deputy-Collectors are engaged in the administration of various trusts, and in the management of Government property and the payment of pensions. A tahrildar resides at the head-quarters of each takiil, and an officer of the Opium department is stationed in the District.

The civil courts include those of two Munsifs, a Subordinate Civil Judge, and a Judge of the Small Causes Court. The Sessions justice and Judge has jurisdiction also over the District of Bam Bankt. The City Magistrate is entirely employed in the criminal work of the city and miscellaneous duties connected with the municipality and various charitable funds. The District is fairly free from crime, which chiefly consists of ordinary cases of

theft and burglary, and Lucknow city is responsible for most of these.

Land revenue administration.

At annexation in 1856 a District of Lucknow, consisting of ten pargunas, was formed; but two of these were subsequently transferred to Bara Bankt and one to Unao. A summary settlement was made in 1856, the records of which perished in the Mutiny of the following year. When order had been restored a second summary settlement was made in 1858, the revenue assessed amounting to 6-0 lakhs. The District was surveyed in 1862-3, and the first regular settlement was completed in 1860. The valuation of the land was made by applying assumed rates of rent, which were sometimes selected from those actually paid, and sometimes averages of the actual tents. As in the rest of Oudh, the settlement courts had to decide on disputed claims to rights in land, and the judicial work was particularly heavy in Lucknow. The revenue demand amounted to 8 lakhs, subsequently reduced to 7-s lakhs. This settlement was revised between 1893 and 1896 by successive District officers in addition to their regular work. There was no survey, and the assessment was based on the pataviris' maps and papers. The revenue fixed amounted to 8-8 lakhs, representing 47 per cent, of the net rental 'assets.' The incidence stands at Rs. 1-6 per acre, varying from about R. 1 to Rs. 1-8 in different parganas. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees:-

| | 1890-1. | 1890-L | House. | 1005-4 |
|-----------------|---------|--------|--------|--------|
| Land revenue . | 6,0g | 7,16 | 8,48 | 8,77 |
| Total revenue . | t0,81 | 16,50 | 21,30 | 24.97 |

Local selfgovernment, There is only one municipality, Lucknow city; but five towns are administered under Act XX of 1856. Local affairs beyond the limits of these are in charge of the District board, which had in 1903-4 an income and expenditure of 12 lakbs. More than half of the income was derived from a grant from Provincial revenues, while Rs. 62,000 of the total expenditure was devoted to roads and buildings.

Police and jails. The District Superintendent of police usually has 2 Assistants, and commands a force of 6 inspectors, 116 subordinate officers, and 762 constables, besides 656 municipal and town police, and 1,192 rural and road police, distributed in 14 police circles. The Central jail contained a daily average

of 1,336 inmates in 1903, and the District jail 352. There is also a military prison in the cantonment.

Lucknow takes a high place as regards the literacy of its Education, population, of whom 4-8 per cent. (8-2 males and o-o females) could read and write in 1901. Muhammadans (6 per cent.) are much in advance of Hindus (3.4 per cent.) in this respect. The number of public institutions fell from 135 in 1880-1 to 125 in 1900-1, but the number of pupils rose from 5,834 to 6,330. In 1903-4 there were 147 such institutions with 8,436 pupils, of whom 1,183 were girls, besides 69 private schools with 436 pupils. Nearly a third of the total number of pupils had advanced beyond the primary stage. Six colleges and schools were managed by Government and 100 by the District and municipal boards. The total expenditure on education was 2-4 lakhs, towards which Government contributed Rs. 49,000 and Local and municipal funds Rs. 64,000, while the receipts from fees were Rs. 40,000. Lucknow City contains five colleges.

There are 21 hospitals and dispensaries, with accommo Hospitals dation for 391 in-patients. In 1903 the number of cases and distreated was 217,000, of which 4,000 were in-patients, and 7,600 operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 61,000. The Balmmpur Hospital at Lucknow is one of the finest in the United Provinces.

About 26,000 persons were successfully vaccinated in Vaccina-1903-4, representing a proportion of 33 per 1,000 of popu-tion. lation. Vaccination is compulsory only in the municipality and cantonment of Lucknow.

(P. Gray, Settlement Report, 1898; H. R. Nevill, District Gazetteer, 1004.)

Lucknow Tahsil.-Central tahsil of Lucknow District, United Provinces, comprising the pargunas of Lucknow, Bijnaur, and Kakori, and lying between 26° 39' and 27° N. and So 39' and 81" 6' Eq with an area of 360 square miles. Population increased from 448,461 in 1891 to 454,896 in 1901. There are 327 villages and three towns, Lucknow, the District and takiil head-quarters (population, 264,049), and KAKORI (8,933) being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,05,000, and for cesses Rs. 54,000. The density of population, 1,264 persons per square mile, is raised by the inclusion of the largest city in the United Provinces, Through the centre of the takiil flows the Guntt, while the Sai and its tributary the Nagwa drain the south. Near the rivers the soil is sandy, but beyond the sandy dunes lie stretches of loam which deteriorate near the south into heavy clay, interspersed with patches of barren aiar and jhilt. In 1903-4 the area under cultivation was 218 square miles, of which 69 were irrigated. Wells supply two-thirds of the irrigated area.

Malihabad Tahsil.-Northern tahsil of Lucknow District, United Provinces, comprising the parganas of Malthabad and Mabona, and lying between 26° 52' and 27° 9' N. and 80° 34' and 81° 4' E., with an area of 334 square miles. Population increased from 175,542 in 1891 to 184,230 in 1901. There are 379 villages and only one town, MALIHARAD, the taksil head-quarters (population, 7,534). The demand for land revenue in 1903-4 was Ra. 3,30,000, and for cesses Rs. 51,000. The density of population, 552 persons per square mile, is the lowest in the District. Across the centre of the taksil flows the Gumti, whose banks are fringed by myines and bordered by a sandy tract. In the north-east the soil is clay, and tanks and jhile The south-western portion is intersected by several small streams and is very fertile. In 1903-4 the area under cultivation was 213 square miles, of which 73 were irrigated. Wells supply two-thirds of the irrigated area, and tanks most of the remainder.

Mohanlalganj.-Southern tahtil of Lucknow District, United Provinces, comprising the parganas of Mohanlalganj and Nigohan, and lying between 26° 30' and 26° 51' N. and 80° 52' and 81° 13' E., with an area of 273 square miles, Population increased from 150,160 in 1891 to 154,115 in 1901. There are 226 villages and two towns, the largest being AMETHI (population, 6,447). In 1903-4 the demand for land revenue was Rs. 2,53,000, and for cesses Rs. 51,000. The density of population, 565 persons per square mile, is below the District average. Mohanlälganj is bounded on the north by the Gunti and on the south by the Sai. The banks of both rivers are sandy, but the tahul contains a large area of femile loam, which in the centre turns to clay interspersed with many tanks and jhils. In 1903-4 the area under cultivation was 150 square miles, of which 66 were irrigated. Wells supply rather more than half the irrigated area, and tanks most of the remainder.

Amethi.—Town in the Mohanläiganj taksil of Lucknow District, United Provinces, situated in 26° 45' N. and 81° 12' E., on the road from Lucknow city to Sultanpur. Population (1901), 6,447. The town is old and, according to tradition, was taken by one of the officers of Saiyid Salar. It was then held by Amethia Rajputs, who gave way to Shaikhs about 1550, and it has since been a stronghold of Islam. Several

saints of the Muhammadan calendar were born here; and in the reign of Wājid Alī Shāh, Maulvi Amīr Alī of Amethī led an attack on the celebrated Hamman Garhī tempie at Ajodhyā, but was defeated and killed by the king's troops in Bāra Bankī District. Amethī contains a branch of the American Methodist Mission, which supports a dispensary. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 900. There is a large manufacture of cloth, but little trade besides. A flourishing school has 138 pupils.

Kākorī.—Town in the lakiil and District of Lucknow, United Provinces, situated in 26° 52' N. and 80° 48' E., near a station on the Oudh and Rohilkhand Railway. Population (1901), 8,933. Kākorī is said to have been originally inhabited by Bhars and was subsequently included in Baiswārā. It was granted to Muhammadans by Husain Shāh of Jaunpur. Several tombs of noted saints are situated in the town and its environs. Some of the Shaikh families residing here are of antiquity and position, and their members include many of the Lucknow pleaders, who have adorned the town with well-built houses, while others are engaged in Government service. Kākorī is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,300. There are two schools with about 110 pupils.

Lucknow City (Lakhnau).-Former capital of the Province of Oudh and cantonment, situated in 25° 52' N. and 80° 56' E., on the banks of the Gumti. It is the junction of several branches of the Oudh and Rohilkhand Railway, with metreguage lines connecting the railway systems of Răjputāna and Northern Bengal, and the centre from which radiate important roads to the surrounding Districts. Distance by rail to Calcutta 666 miles, and to Bombay 885 miles. Lucknow is the largest city in the United Provinces, and the fourth largest in British India. Population is, however, decreasing. At the four enumerations the numbers were: 281,779 (1869), 261,303 (1881), 273,028 (1891), 264,049 (1901). In 1901 Lucknow contained 154,167 Hindus, 101,556 Musalmans, and 7,247 Christians, of whom 5,097 were Europeans or Eurasians. The population within municipal limits was 240,649, while that of the cantonments was 23,400.

The oldest part of Lucknow is the high ground within the Hatery-Machchlu Bhawan fort, which is known to Hindus as the Lakshman Tilä, from the tradition that a city was founded here by Lakshmana, brother of Rāma Chandra of Ajodhyā. Nothing is known of the early history of the town; but after the Muham-

madan conquest of India it was occupied by Shaikhs and Pathans. The former became of some importance and built a fort, and according to one account the place derives its name from Likhna, the architect of the fort. In the fifteenth century one of the Shaikhs, who was celebrated for his piety, assumed the name of Shah Mina. His tomb is still visited by pilgrims, who offer pieces of cloth, and it is specially resorted to when a man has a case pending in court. In 1526 Lucknow was occupied by Humayun, who abandoned it; but it was again taken by Babar in 1528. A few years later Humilyun defeated Mahmud, brother of the last Lodi king, near here. Under the Sari kings Lucknow began to rise into importance, and in the reign of Akbar it was the chief town of a surkur. Its growth, however, like that of so many of the modern cities of India, was most rapid in the eighteenth and nineteenth centuries. It rose to greatness as the capital of the dynasty which established itself in Oudh during the decay of the Mughal empire, and spread its rule, not only over the modern Province, but also through the neighbouring tracts now included in Robilkhand, the Gotakpur and Benares Divisions, and the Allahabad Division north of the Ganges. Sandat Khan, the first Nawab, had a residence at Lucknow, but seldom lived there. His son-inlaw, Safdar Jung, built a fort at Jalalabad, three miles south of the city, to keep in check the Rajputs of Baiswara, and also commenced the stone bridge over the Gumtt. He rebuilt the old stronghold of Lakshman Tilä, which was hemseforward known as the Machchhi Bhawan or 'fish palace,' from the fish which he was entitled to bear on his standard. Shula-ud-daula, the third Nawab, resided chiefly at Fyzabad, and under the reigns of the first three Nawābs Lucknow increased in size, but received few architectural embellishments.

Acaf uddenla. With Asafud-daula, the fourth Nawab, a new political situation developed. The grandeur of Lucknow dates from his reign, and the works he constructed did not degenerate into the mere personal extravagances of his successors. He built bridges and mosques, as well as the Imāmbāra, the chief architectural glory of Lucknow, in which he lies buried, the adjacent mosque, the Rūmi Darwāza or Turkish gate, and the magnificent palace which afterwards became the Residency. Outside the city lies the palace of Bibiāpur, built by him as a country-house and hunting-lodge. Numerous other handsome edifices in various parts of the city attest the greatness of this Nawāb, whose memory is still preserved in popular rhymes as the embodiment of liberality and magnificence. The Lucknow court had now reached its highest splendour. The dominions of the Nawab extended over a wider area than at any earlier or later period. All the wealth of the state was devoted to the personal aggrandizement of its ruler and the accumulation of the materials of Oriental pomp. The burden on the people was crushing, and when the English traveller, Tennant, passed through Oudb, he found almost everywhere a plundered and desolate country. Saadat Ali Khan, half-Saadat Ali brother to Asaf-ud-daula, ceded a large territory to the British Khila. in return for their protection; and thenceforward the Nawab and his successors, the kings of Outh, degenerated into a mere faineant dynasty of pleasure-seekers, whose works no longer partook of any national or utilitarian character, but ministered solely to the gratification of the sovereign. In the place of mosques, wells, forts, or bridges, palace after palace sprang up in succession, each more ungraceful and extravagant than the last. At the same time European influence began to make itself felt in the architecture, which grew gradually more and more debased from reign to reign. Awkward imitations of Corinthian columns supported Musalman domes, while false venetian blinds and stucco marble replaced the solid brickwork of the earlier period. Palaces were erected for the kings, for their wives, and for their concubines, and hardly less palatial buildings to house the royal menugeries. Saadat Ali Khan set the fashion by erecting the Farhat Bakhsh or 'giver of delight, the chief royal residence till the last king, Wajid All Shah, built the Kaisar Bagh. He also built the portion of Lucknow which extends east of the Machchhi Bhawan, besides numerous small palaces, including the Dilkushā. In his time Lucknow reached very nearly its present size.

Ghāzi-ud-din Haidar (1814), son of Saādat Alt Khān, was Ghāzi-udthe first of his line who bore the title of king. He built for Haldar. his wives the two palaces called the great and lesser Chhattar-Manzils ('umbrella' or 'dome palace'), and also erected fine mausoleums to his father and mother, and the Shah Najaf, in which he himself was buried. Other memorials of this king are the Moti Mahal, the Mubarak Manzil, and the Shah Manzil, where the wild-beast fights took place for which Lucknow was famous. He attempted to dig a canal for irrigation from the Ganges, but it proved a complete failure.

Nasir-ud-din Haidar (1827), son of the last-named monarch, Nasir-udfounded the Tarawali Kothi or 'observatory,' under the super-din intendence of Colonel Wilcox, his astronomer-royal. It contained several excellent instruments. On the death of Colonel

Wilcox in 1847, the establishment was dismissed, and the instruments disappeared during the Mutiny. The building was the head-quarters of the Fyzabād Maulvi, Ahmad-ullah Shāh, during the rebellion, and the insurgent council frequently held its meetings here. It is now occupied as a bank. Nastrud-din also built a great karbala in Itādatnagar, under which he lies buried.

Mohainmad Ali Shah, Muhammad All Shāh (1837), uncle of Nasīr-ud-din Haidar, raised his own monument, the Husainābād Imāmbāra, a tawdry building in which the degeneration of architectural taste is distinctly marked. A magnificent stone tank close to the road from the Chhattar Manzil to Husainābād dates from this reign; and near it standa an unfinished building, called the Sāt Khanda or 'seven-storied tower,' though only the fourth story was ever completed. Muhammad Ali Shāh also erected a mosque close to his mausoleum; but its courtyard and the buildings attached were never completed, and the mosque itself stood unfinished for many years.

Amjad All Shih.

Amjad Alt Shāh (1842), the fourth king, built his own mausoleum in Hazratganj, and laid down an iron bridge across the Gumt. This bridge had been brought out from England by Ghāzī-ud-din Haidar, who, however, died before it arrived. His son, Nasīr-ud-din Haidar, directed that it should be put up opposite the Residency; but the operations for sinking wells to receive the piers proved unsuccessful, and the work was thus delayed till the accession of Amjad Ali.

Wajid Ali Shah. Wajid Ali Shah, the last king of Oudh (1847-56), bears the whole opprobrium for the erection of the Kaisar Bagh, the largest, gaudiest, and most debased of all the Lucknow palaces. It was commenced in 1848 and finished in 1850 at a cost of 80 lakhs. Only the rear portion is now standing.

Mutiny.

The annexation of Ourni is described under the account of that Province. For a year the work of inaugurating the new administration was busily carried on under General Outram, the last Resident, and Mr. C. C. Jackson of the Civil Service. A couple of months before the outbreak at Meerut, Sir Henry Lawrence (March 20, 1857) had assumed the Chief Commissionership. The garrison at Lucknow then consisted of the 32nd British Regiment, a weak company of European Artillery, the 7th Native Cavalry, and the 13th, 48th, and 71st Native Infantry. In or near the city were also quartered two regiments of irregular local infantry, together with one regiment of military police, one of Oudh irregular cavalry, and two batteries of native artillery. The town thus contained nearly

ten Indian soldiers to every European, or 7,000 to 750. Symptoms of disaffection occurred as early as the month of April, when the house of the surgeon to the 48th was burned down in revenge for a supposed insult to caste. Sir Henry Lawrence immediately took steps to meet the danger by fortifying the Residency and accumulating stores. On April 30 the men of the 7th Oudh Irregulars refused to bite their cartridges, on the ground that they had been greased with cows' fat. They were induced with some difficulty to return to their lines. On May 3 Sir Henry Lawrence resolved to deprive the mutinous regiment of its arms—a step which was not effected without serious delay.

On May 12 Sir Henry held a darbar, and made an impressive speech in Hindustani, in which he called upon the people to uphold the British Government, as most tolerant to Hindus and Muhammadans alike. Two days earlier the outbreak at Meerut had taken place, and a telegram brought word of the event on the morning after the darbar. On May 19 Sir Henry Lawrence received the supreme military command in Oudh. He immediately fortified the Residency and the Machchill Bhawan, bringing the women and children into the former building. On the night of May 30 the expected insurrection broke out in Lucknow. The men of the 71st, with a few from the other regiments, began to burn the bungalows of their officers and to murder the immates. Prompt action was taken, and early next morning the European force attacked, dispersed, and followed up for ten miles the retreating mutineers, who were joined during the action by the 7th Cavalry. The rebels fied towards Strapur. Although Lucknow thus remained in the hands of the British, by June 12 every station in Oudh had fallen into the power of the mutineers. The Chief Commissioner still held the cantonments (then situated north of the Gumti) and the two fortified posts; but the symptoms of disaffection in the city and among the remaining native troops were unmistakable. In the midst of such a crisis, Sir Henry Lawrence's health unhappily gave way. He delegated his authority to a council of five, presided over by Mr. Gubbins, the Financial Commissioner; but shortly after he recovered sufficiently to resume the command. On June 11, however, the military police and native cavalry broke into open revolt, followed on the succeeding morning by the native infantry. On June 20 news of the fall of Cawnpore arrived; and on the 19th the enemy, 7,000 strong, advanced upon Chinhat, a village on the Fyzābād road, eight miles from the Residency

Sir Henry Lawrence marched out and gave the enemy battle at that spot. The result proved disastrous to our arms through the treachery of the Oudh artillery, and a retreat became necessary. The troops fell back on Lucknow, abandoned the Machchil Bhawan, and concentrated all their strength upon the Residency. The siege of the enclosure began upon July 1. On the 2nd, as Sir Henry Lawrence lay on his bed, a shell entered the room, burst, and wounded him mortally. lingered till the morning of the 4th, and then died in great agony. . Major Banks succeeded to the civil command, while the military authority devolved upon Brigadier Inglis. On July 20 the enemy made an unsuccessful assault. Next day Major Banks was shot, and the sole command was undertaken by Inglia. On August to the mutineers attempted a second assault, which was again unsuccessful. A third assault took place on the 18th; but the enemy were losing heart as they found the small garrison so well able to withstand them, and the repulse proved comparatively easy.

Meanwhile the British within were dwindling away and eagerly expecting reinforcements from Cawnpore. On September 5 news of the relieving force under Outram and Havelock reached the garrison by a faithful native messenger. On September 22 the relief arrived at the Alambagh, a walled garden on the Cawnpore road held by the enemy in force. Havelock stormed the Alambagh, and on the 25th fought his way against continuous opposition through the eastern outskirts of the city. On the 26th he arrived at the gate of the Residency enclosure, and was welcomed by the gallant defenders within. General Neill fell during the action outside the walls. The sufferings of the besieged had been very great; but even after the first relief it became clear that Lucknow could only be temporarily defended till the arrival of further reinforcements should allow the garrison to cut its way out. Outram, who now reassumed the command which he had generously vielded to Havelock during the relief, accordingly fortified an enlarged area of the town, bringing many important outworks within the limits of defence; and the siege began once more till a second relieving party could set the besieged at liberty. Night and day the enemy kept up a continuous bombardment of our position, while Outram retaliated by frequent sorties.

Throughout October the garrison maintained its gallant defence, and a small party shut up in the Alambagh and cut off unexpectedly from the main body also contrived to hold its

Pirst. relief.

> Final relief.

dangerous post. Meanwhile Sir Colin Campbell's force had advanced from Camppore, and arrived at the Alambagh on November 10. From the day of his landing at Calcutta Sir Colin had never ceased in his endeavours to collect an army to relieve Lucknow, by gathering together the liberated Delhi field force and the fresh reinforcements from England. On the 12th the main body threw itself into the Alambagh, after a smart skirmish with the rebels. Sir Colin next occupied the Dilkusha palace, east of the town, and then moved against the Martinière, which the enemy had fortified with guns of position. After carrying the post he forded the canal, and on the 16th attacked the Sikandra Bagh, the chief rebel stronghold, The mutineers, driven to bay, fought desperately, but before evening the whole place was in the hands of the British. As soon as Sir Colin Campbell reached the Mott Mahal, on the outskirts of the city proper, General Havelock came out from the Residency to meet him, and the second relief was success-

fully accomplished.

Even now, however, it was impossible to hold Lucknow; Evenueand Sir Colin Campbell determined, before undertaking any tion, further offensive operations, to return to Cawapore with his army, escorting the civilians, women, and children rescued from their long imprisonment in the Residency, with the object of forwarding them to Calcutta. On the morning of November 20, the troops received orders to march for the Alambagh; and the Residency, the scene of so long and stirring a defence, was ahandoned for awhile to the rebel army. Before the final departure, Sir Henry Havelock died from an attack of dysentery. He was buried in the Alambagh, without any monument, a cross on a neighbouring tree marking for a time his last resting-place. Sir James Outram, with 3,500 men, held the Alambagh until the Commander-in-Chief could return to recapture the capital. The rebels used the interval for the fortification of their stronghold to the utmost of their knowledge and power. They surrounded the greater part of the city, for a circuit of 20 miles, with an external line of defences, extending from the Gumti to the canal. An earthen parapet was raised behind the canal; a second line of entrenchments connected the Moti Mahal, the Mess-house, and the Imambara; while the Kaisar Bagh constituted the rebel citadel. Stockades and parapets closed every street; and loopholes in all the houses afforded an opportunity for defending the passage inch by inch. The computed strength of the insurgents amounted to 10,000 sepoys, together with 50,000

volunteers; and they possessed too pieces of ordnance, guns and mortars.

Recovery.

On March 2, 1858, Sir Colin Campbell found himself free enough in the rear to march once more upon Lucknow. He first occupied the Dilkusha, and posted guns to command the Martinière. On March 5 Brigadier Franks arrived with 6,000 men, half of them Gurkhas, sent by the Raja of Nepal. Outram's forces then crossed the Gumti, and advanced from the direction of Fyzabad, while the main body attacked from the south-east. After a week's hard fighting, from March 9 to 15, the robels were completely defeated, and their posts captured one by one. Most of the insurgents, however, escaped. As soon as it became clear that Lucknow had been permanently recovered, and that the enemy as a combined body had crassed to exist, Sir Colin Campbell broke up the British Oudh army, and the work of reorganization began. On October 18, 1858, the Governor-General and Lady Canning visited Lucknow in state, and found the city already recovering from the devastation to which it had been subjected. Lucknow remained the capital of a separate administration till 1877, when the post of Chief Commissioner of Oudh was united with that of Lieutemant-Governor of the North-Western Provinces.

Description of city.

The city of Lucknow covers a vast area on the south of the Gunti, with suburbs extending across the river. The large cantonment forms an irregular quadrilateral adjoining the southeast corner of the city. Up to the Mutiny, hazars reached to the river almost throughout the whole of its course on the northern boundary of the city, but a space has gradually been cleared, with an average breadth of about half a mile. Most of the buildings already mentioned lie in this clearing, and within the last few years have been enclosed in verdant lawns which have justly earned for Lucknow its description as the City of Parks. On the extreme west lies the unfinished mosque of Muhammad All Shah, known as the Jama Masjid. It was intended to rival the great mosque at Delhi, but is remarkable only for its size and gaudy colour decoration, which has recently been renewed. The Husainabad buildings erected by the same king consist of two enclosures at right angles. One of these, which is now lined with shops, contains the tomb of Muhammad All Shah's daughter, a poor model of the Taj at Agra-The other, which is laid out as a garden adorned with stone water-channels, fountains, and badly executed statuary, contains the Imambara, in which Muhammad Ali was buried. The buildings are richly endowed, the surplus income being devoted to charity. East of Husainābād, and extending to the Rumi Darwaza, is a beautiful garden, called the Victoria Park, which was laid out in 1887, enclosing the Sat Khanda, the house first occupied by Asaf-ud-danla when he transferred his government to Lucknow, the large tank built by Muhammad All Shah, and a baradari constructed by the same king, which contains a series of portraits of the Nawabs and kings of Oudh, Close to the tank is a clock-tower of Moorish design, 221 feet in height and 20 feet square, which was built between 1880 and 1887, and contains a chime of bells. On the eastern border of the Park lies the finest group of buildings in Lucknow, including the Rumi Darwaza, the great Imambara, and a mosque, all of which were built by Asaf-ud-daula. The first of these is a massive gateway, popularly believed to be an imitation of the gate at Constantinople from which the Sublime Porte derives its name. It leads into the Machchhi Bhawan, in which are situated the other buildings. The great Imambara consists of an immense hall, 162 feet long and 54 feet wide. On either side are verandas 27 feet wide, and at the ends octagonal apartments 53 feet in diameter. The whole building is covered with a roof of bricks set in concrete several feet thick, which stands without the thrust entailed by vaulting. No wood is used anywhere in the construction, which is built on very deep foundations. A plain slab marks the restingplace of the founder. In the same enclosure stands the beautiful mosque raised by the Nawab. The Machchhi Bhawan also contains the mound known as the Lakshman Tila, now surmounted by a mosque built by Aurangzeb, and a fine schoolhouse has recently been erected south-east of the Imambara. The mound occupied by the ruins of the Residency lies at a distance of half a mile south-east of the Machchlu Bhawan, being separated from the Gumti by a road and open ground. At the time of the Mutiny hazars were situated close to the low wall surrounding it, but these have been cleared away. The shattered walls of the main block of buildings in which Sir Henry Lawrence received his fatal wound, Dr. Fayrer's house where he died, the noble banqueting hall used during the siege as a hospital, the cellar where the women and children took refuge, and several other buildings are still standing, while high above all the topmost tower still rears its battered sides. Further decay has been prevented by carefully executed repairs, and the grounds have been levelled and turfed. In one corner, under the shade of many cypresses, are the tombs or cenotaphs of some 2,000 Europeans who

perished during the Mutiny. The palaces of Saadat Ali Khan and Ghazt-ud-din Haidar lie east of the Residency, adjoining each other. Only portions remain of the vast Farhat Bakhsh. The part of this building which overlooks the river was constructed by General Claude Martin and sold by him to Saadat All Khan. It is now joined to the larger Chhattar Manzil built by his successor, and the whole building is used as a club-Other portions of the Farhat Bakhsh are the Lal Baradari and the Gulistan-i-Iram, which are now the Provincial Museum. The former building was the throne-room of the Oudh kings, and in it a serious disturbance took place in 1837, when an attempt was made to prevent the accession of Muhammad All Shah. A fine court for the Judicial Commissioner of Oudh has recently been completed opposite this building, with a chamber used for meetings of the Provincial Legislative Council. A short distance to the south are the stately tombs of Saadat Alt Khan and his wife, and behind them the Canning College and the large quadrangle forming the Kaisar Ragh. The latter has already commenced to decay and one side has been removed. The other sides have been allotted to the talukdars of Oudh as residences. East of these buildings lie the Tarawali Kothi, the Khurshed Manzil, called after the wife of Saadat Ali Khan who commenced it, the Mott Mahal, which also includes the Mubarak Manzil and the Shah Manzil or arena, and the Shith Najaf, where Ghazi-ud-din Haidar is buried. A large horticultural garden then intervenes, on the east of which is the Sikandra Bagh, where herce fighting took place on the second relief. Another large public garden, called the Wingfield Park after a Chief Commissioner, lies on the east of the city, and south-east of this is situated the Martiniere College. This bizarre erection, which was built by General Martin as his own residence during the time of Asaf-ud-daula, resembles a colossal Italian villa on an exaggerated scale. 'The founder's hones were buried within the Martinière to prevent its confiscation by the Nawab, but were dug up and scattered during the Mutiny. The Dilkushā palace is situated in cantonments.

Improve-

Viewed from a distance, Lucknow presents a picture of unusual magnificence and architectural splendour, which fades on nearer view into the ordinary aspect of a crowded Oriental town. Some of the most striking buildings, which look like marble in moonlight, are shown by the distillusioning sun to be degraded examples of stucco and brick. Flying buttresses to support nothing but one another, copper domes gift from top to bottom, burnished umbrellas, and balustrades of burnt clay

form frequent features in the tawdry architecture which renders the distant aspect of Lucknow so bright and sparkling. Immediately after the Mutiny a wide glacis was cleared round the Macheihi Bhawan, and three military roads, radiating from this point as a centre, were cut right through the heart of the native quarter. The city itself contains shops of the ordinary style and a few large private residences. The civil station, which adjoins the eastern side of the city, has a fine thoroughfare lined with the shops of European tradesmen, called Harratgani, at the end of which is the Lucknow residence of the Lieutenant-Governor,

Lucknow is the head-quarters of the principal court in Oudh, Officials. the Inspectors-General of Civil Hospitals and of Jails, the Postmaster-General in the United Provinces, the Conservator of Forests in the Oudh Circle, the Commissioner of the Lucknow Division, an Executive Engineer, a Superintendent of Railway Police, and an Inspector of Schools. The Church Missionary Society, the American Methodists, the Wesleyan and the Zanāna Bible and Medical Missions have important stations here. There are ten hospitals and dispensaries for both sexes, besides three female hospitals. The magnificent hospital founded by the late Mahārājā of BALRAMPUR and added to by the present Mahārājā is exceptionally well equipped.

The city has been administered as a municipality since 1862. Musici-A special Act was passed to regulate it in 1864, which remained pality, in force till 1873, since which date it has been under the ordinary municipal law of the United Provinces. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged 5-2 lakhs, including a loan from Government of 13-2 lakhs to meet the cost of a water-supply from the Gumti. In 1903-4 the total income was 5-3 lakhs, chiefly derived from octroi (3-6 lakhs), sale of water (Rs. 38,000), water-rate (Rs. 26,000), and conservancy receipts (Rs. 22,000). The expenditure of 5-6 lakhs included 1-3 lakhs for conservancy, Rs. 76,000 repayment of loans and interest, Rs. 67,000 public safety, Rs. 50,000 maintenance of water-works, and Rs. 45,000 administration and collection. A drainage scheme is now under construction, and a scheme for electric tramways has been sanctioned.

The cantonment, which is the largest in the United Pro-Cantonvinces, is garrisoned by British and native regiments of both meet. cavalry and infantry and by garrison and field artillery. The cantonment fund had an income and expenditure averaging Ra. 53,000 during the ten years ending 1901; in 1903-4 the income was Rs. 78,000 and the expenditure Rs. 74,000. Lucknow is the head-quarters of the Oudh and Robilkhand Railway

Volunteer Rifles, the Lucknow Volunteer Rifles, and the Oudh squadron of Light Horse.

Commerce.

The city is more noted for its manufactures than for general trade : but its industries have suffered from the changes brought about by British rule. Under the prodigal waste and lavish display of its latest kings Lucknow was a centre for the production of rich fabrics and costly jewellery). The kings have departed, and their descendants and those of the nobles of the court who still inhabit the city live on pensions which are fast becoming subdivided to a vanishing point. Cotton fabrics are still manufactured of all grades, from the coarsest cloth to the finest muslin and cotton prints. An important industry connected with cotton is the famous chikan or embroidery in silk or cotton on muslin. The work affords employment to many women and children of good family who are now impoverished, and very tasteful articles are produced. Lucknow is also celebrated for embroidery with gold and silver thread, but the demand for this is decreasing. The silver work has some reputation and is largely sold to European visitors, while bidri or damascening of silver on other metals has been revived within recent years. The brass and copper industry is still of importance, and vessels for use by Muhammadans are especially made. Wood-carving is still carried on, and there is a little carving in ivory. The potters of Lucknow produce various kinds of art-ware, some of which are distinctly good ! while the clay modellers are pre-eminent in the whole of India. Their models of fruit and vegetables have a large sale among natives and are exported to Calcutta and Bombay, and clay figures representing various types of native life are wonderfully artistic. Minor products are tobacco, shoes, and perfumes.

There are some large industries worked on European lines. Two railway workshops employed 3,400 hands in 1003, while four large printing presses employed 930, a large paper mill 526, an iron foundry 200, a brewery 156, and an ice and flour mill 84.

Education.

Lucknow is important as an educational centre. The chief institution is the Canning College, founded in 1864 and partly supported by the talukdārs, which contained 336 students in 1904, of whom 47 were in the Oriental Department and 78 were studying law. There is also a school for the sons of the talukdārs and gentry, called the Colvin School. The Reid Christian College, which contains a business department and is managed by the American Methodist Mission, several other mission schools, a normal school, the Jubilen

See W. Hory, Monograph on Trades and Manufactures, 1889.

high school, and a number of schools under native management, may also be mentioned. The secondary schools contain nearly 2,000 pupils, and there are five primary schools with about 150 pupils. Lucknow possesses more facilities for female education than any other place in the United Provinces. It contains a high school for girls maintained by the American Mission with 150 pupils, of whom 18 were reading in college classes in 1904, while 600 girls are taught in a number of primary schools. The chief school for Europeans and Eurasians is the Martinière, which contains nearly 100 boys. It is partly supported by the endowments bequeathed by General Martin: but the fees amount to more than half a lakh annually. A girls' school, now in the Khurshed Manzil, which was founded in 1866, contains 75 pupils. Lucknow is also a centre of literary activity, and five English and eighteen vernacular newspapers and periodicals are published there, The former include an Anglo-Indian paper called the Indian Daily Telegraph, and the Advocate, which is the leading organ of native public opinion in the United Provinces, and is also published in a vernacular edition. The Newal Kishore Press is one of the most important publishing houses in India for Hindustāni literature.

(M. R. Gubbins, Mutinies in Oudh, 1858; McLeod Innes, Lucknow and Oudh in the Mutiny, 1902.)

Malihabad Town .- Head-quarters of the takril of the same name in Lucknow District, United Provinces, situated in 26" 55' N. and 80" 43' E., a mile from a station on the Oudh and Robilkhand Railway and on the road from Lucknow city to Hardot. Population (1901), 7,554. According to tradition, the town was founded by Malia, a Pasi; but nothing is known of its history till the reign of Akbar, when it was inhabited by Pathāns. It contains two bazars built in the eighteenth century, one of which owes its origin to Nawab Asaford-daula. Besides the usual offices, a dispensary and a brunch of the American Methodist Mission are situated here. Malthabad is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,300. It has little trade, but a kind of tinfoil is manufactured in small quantities, and the place is noted for its mangoes and orchards of ber (Zayphus Jujuba). A school for boys contains 175 pupils and one for girls 29.

Unao District (*Unnav*).—District in the Lucknow Divi-Bounsion of the United Provinces, lying north-east of the Ganges, daries, conbetween 26° 8' and 27° z' N. and 80° 4' and 81° 3' E., with an and river area of 1,792 square miles. It is bounded on the north by system.

Hardoi; on the north-east by Lucknow and Rae Bareli; on the south-east by Rae Bareli; and on the south-west the Ganges divides it from Campore and Fatehpur. The greater part of Unao forms a gently undulating upland, in which ridges of high and rather sandy land alternate with depressions of stiffer soil. The deeper depressions contain more or less permanent lakes, while in the shallower hollows swamps form during the rains. Large stretches of barren usar land are a conspicuous feature, sometimes extending for several miles. The valley of the Ganges is lower. It is widest in the north, where it extends several miles from the bed of the river, and gradually diminishes towards the south, where the Ganges runs close to its high bank. This is the principal river and skirts the whole of the south-western border. The Sai enters Unao from the north, and flows roughly parallel to the Ganges along or near the north-east boundary. A small stream called the Kalyani drains the upper part of the Ganges valley, and another stream, the Lont, rises in the centre of the District and flows south-east to Rae Barell. Thili and marshes are most numerous in the centre and east.

Geology.

No geological formations are found except the ordinary alluvium, which contains kankar or nodular limestone.

Botany.

The flora is that of the Gangetic plain generally. Unao is fairly well wooded; but this is due to the large number of groves, chiefly of mango and mahuā (Bassia latifolia). There are few jungles, and these contain only grass or a few dhāk (Butea frondesa) trees. Bahūl (Acacia arabica) is the only product of the ūsar plains.

Fama.

Wolves, jackals, and wild hog are common, while nilgai and antelope are still found in some numbers, and in the extreme south there are a few herds of wild cattle. Wild-fowl abound in the cold weather. Fish are plentiful in the rivers and in the larger jhils, and are used for food.

Climate and temperature. The District is generally healthy, and the temperature varies from about 75° to 103° in the hot weather and from 46° to 79° in the cold senson. The climate thus resembles that of the neighbouring Districts of southern Oudh.

Rainfall.

The average annual rainfall is 35 inches, evenly distributed over the whole District; but great variations occur over a series of years. In 1880 less than 12 inches was received, while in 1867 the fall amounted to nearly 76 inches.

History.

Tradition connects various places in the District with episodes in the Rămāyana, and attempts have been made to identify sites visited by the Chinese pilgrims. Nothing, however, is known of the history of Unao till the Muhammadan invasion. Legend relates that Saivid Salar passed through the District, and the tombs of some of his followers are pointed out. The traditions of the people state that the Rajputs first entered Unao between 1200 and 1450 A.D., retreating before the Musalman conquerors. They found the eastern portion occupied by Bhārs, and the rest by low castes, now represented by the Lodhas, Ahirs, &c. The earliest regular Musalman settlement dates from the end of the thirteenth or the beginning of the fourteenth century, when a saint named Ala-ud-din came from Kanaui and cursed the Raja of Nawal, who refused to admit him into the town, Nawal was destroyed with its inhabitants, and the Saiyid founded Bangarmau a short distance away. The shrine built over his grave bears date 1302. In the fifteenth century Ibraham Shah of Jaunpur sent a force, which took Safipur in 1425, and a few years later some Saiyids treacherously seized the stronghold of the Bisen Rajas of Unao. At this time the eastern portion of the District was included in the tract known as Baiswara. Under Akbar, Unao formed part of the sarkar of Lucknow, but materials are lacking for the history of the District under the Mughals. In the eighteenth century a Bais chieftain successfully resisted Sandat Khan, Nawab of Oudh; and a hundred years later Sleeman described the country as in a perpetual state of disturbance, where life, property, and industry were alike insecure.

At the annexation in 1856 a District of Purwa was formed, the head-quarters being at Unao town. A year later the Mutiny broke out, and before the end of June the Deputy-Commissioner was obliged to retire to Lucknow. A few of the talukdars remained conspicuously loyal, and furnished supplies and information to the British, while others adopted a position of open rebellion, and some remained neutral. There was, however, no organized movement against the British, owing to the lack of leaders. In July Havelock left Cawnpore and fought several engagements, advancing beyond Unao on the road to Lucknow. He was, however, unable to maintain his position and retired. In August an advance again took place; but it was not till September 19, after the arrival of Outram, that the real advance to relieve Lucknow was made. After the occupation of the Alambagh, communications through Unao to Campore were not interrupted, and the north of the District was cleared of rebels by February, 1858. The south and east gave more trouble, and Baiswara remained unsettled till November. In 1869 the District was enlarged by the addition of parganas transferred from Lucknow and Rae Barelt, and assumed its present form.

Archaeology. Copper arrow-heads have been found near Pariar on the Ganges opposite Bithür. The District contains many ancient mounds dating possibly from Buddhist times; but they have not been excavated. Nawal has been identified with the A-lo mentioned by Fa Hian and with the Na-po-ti-ku-lo or Navadevakula visited by Hiuen Tsiang. The oldest Muhammadan buildings are at Bāngarmau.

The people.

The District contains 10 towns and 1,633 villages. At the four enumerations the numbers were: 945,955 (1869), 899,069 (1881), 953,636 (1891), 976,659 (1901). The decrease between 1869 and 1881 was due to the famine of 1877-8. There are four tahrils—UNAO, SAVIPUR, PURWĀ, and MOHĀN—the first three named from their head-quarters, but the head-quarters of Mohān are now at Hasanganj. The principal town is the municipality of UNAO. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| TubjiL | Area in square utima | Number of Alligner | | Population. | Population per square mile. | Percentage of variation in population be teren 1692 and 1601. Stanfor of persons able persons able | Number of persons able to read and write |
|----------------|-------------------------|-----------------------|-------|-------------|--------------------------------|--|---|
| Unao . | 400 | 3 | 286 | 204,850 | 319 | + 6.2 | 8,307 |
| Saftpur | 408 | 3 | 260 | 225,490 | 352 | + 73 | 4,661 |
| Purwä | 548 | 3 | 513 | 190,910 | 531 | - 0.8 | 10,939 |
| Mohān | 436 | 3 | 474 | 155.389 | 586 | - 9.8 | £,806 |
| District total | 1,792 | 10 | 1,633 | 976,639 | 545 | + 24 | 29,613 |

Nearly 92 per cent, of the total are Hindus and 8 per cent. Musalmans. Between 1891 and 1901 a decrease of population took place in the north-east and east, while the population in the north-west and centre increased. The density is high; but Unao is not so congested as the eastern Districts of Oudh. It still supplies recruits for the Indian Army and for the police, besides considerable numbers of labourers to the neighbouring cities of Cawnpore and Lucknow. More than 98 per cent, of the population speak the Awadhi dialect of Eastern Hindi.

Castes and secupations,

Brähmans, 121,000, are the most numerous Hindu caste; while other important castes are Chamars (tanners and cultivators), 103,000; Ahirs (graziers and cultivators), 93,000;

Lodhas (cultivators), 90,000; Pāsīs (toddy-drawers and cultivators), 89,000; Rājputs, 74,000; and Kāchhīs (cultivators), 32,000. Among Muhammadans are Shaikhs, 17,000; Pathāns, 14,000; and Behnās (cotton-carders), 9,000. More than 73 per cent. of the population are supported by agriculture. Rājputs hold 45 per cent. of the total area and Brāhmans 19 per cent. Brāhmans are cultivators of about 16 per cent. and Rājputs of 10 per cent. of the tenant land, while the skilful cultivating castes, the Kāchhīs, Kurmis, and Lodhas, occupy about 20 per cent. between them.

There were 106 native Christians in 1901, of whom 59 were Christian Methodists. A branch of the American Church was opened missions.

in 1882, subordinate to the Presiding Elder of Hardon.

Unao is a District of average, but not exceptional, fertility, Gesend as compared with the rest of Oudh. The Ganges valley is of agricultural compared with the rest of Oudh. The Ganges valley is of agricultural compared to the usual type. In places there are stretches of barren sand, disions but most of it is fairly productive in ordinary years. The autumn crop is frequently flooded; but in dry years the spring crop is excellent, and requires little attention. North-east of this, beyond the old high bank of the river, the soil is usually a rich loam, producing excellent jouair and arhar, and this is the most prosperous tract. Farther inland the loam turns to clay, in which rice is the principal crop. The land again becomes sandy near the Sai, and bijen here takes the place of jouair; but the valley of that river is generally fertile.

The tenures on which the land is held are those common Chief to Oppin. About one-fifth of the total area is included in agricultural talkédári estates, of which a small proportion is sub-settled statistics. The main agricultural statistics for 1903—4 are given below, in and principal crops.

square miles:-

| Tubett. | Total. | Caltivated, | Irrigated. | Cultivabili wants: | |
|---------|----------|-------------|------------|-----------------------|--|
| Umao. | 400 | 213 | 7.7 | 62 | |
| Saffpur | 408 | #39 | 99 | 27 | |
| Purwä | 548 | 286 | 128 | 94 | |
| Mohiin | - 435 | วถึง | 118 | 39 | |
| Tot | al 1,793 | 1,032 | 422 | 271 | |

Barley, wheat, and gram are the staple food-crops, covering 220, 218, and 153 square miles respectively; while arkar (132), bhjra (122), rice (119), jourin (89), and maize (65) are also largely grown. Other crops are poppy (14) and sugar-cane (11); cotton and oilseeds are also grown to a small extent.

Improvements in agricultural practice.

Cultivation has increased by about 20 per cent, within the last forty years, and a considerable portion of this increase has taken place recently. The increase is largely due to the breaking up of inferior land for rice; but there has also been a rise in the area under maize, cotton, and poppy. While the area under the plough has risen, there has also been a great extension in the area double cropped, which now amounts to nearly a quarter of the cultivated area. Gram or peas are largely sown in lands which have produced rice, after that crop has been gathered. There is a small, but steady, demand for advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts. During the ten years ending 1900, a total of r-8 lakhs was advanced, of which r-5 lakhs was lent in the famine year 1896-7. In the next four years the average amount lent was Rs. 3,000.

Cattle, sheep.

The cattle are of an inferior type, as usual throughout pooles, and southern Oudh. An attempt was once made to improve the breed; but the bulls imported were not of a suitable stamp, and the best plough-cattle are still bought at the well-known fairs in the Provinces or from dealers. The ponies are also of a poor class, and are chiefly used as pack-animals. Sheep of the ordinary breed are kept in considerable numbers, and the District supplies the Cawnpore market.

Irrigation.

In 1903-4 the irrigated area was 422 square miles, of which 224 were supplied from wells, 168 from tanks, and 30 from other sources. The Ganges and Sai valleys require little irrigation; but temporary wells can be made when required in most parts of these tracts. In the uplands, the north-east and east depend chiefly on ihils and swamps, while wells are the principal source elsewhere. The rivers are used only to a small extent in ordinary years, owing to the cost of raising water. Wells are usually worked by a bullock-run, but water is also raised from them by hand. In the lowlands the lever can be used. The water of jalls and swamps is raised by the swing-basket. The canal made by the kings of Oudh, which was intended to link the Ganges and Gumti, has never been used for irrigation and is usually dry.

Minerale.

Kanhar is found in all parts of the District, and is used for making lime and metalling roads. Saline efflorescences called red are collected for manufacturing glass and other purposes.

Arts and manufac-THIES.

The manufactures of the District are of even smaller importance than usual. Indigo, salt, and saltpetre were formerly made; but these industries have collapsed, and the chief manufacture is that of brass and copper utensils at Bhagwantnagar, Nawaigani, and Muradabad. Country cloth is made for local consumption at several places, and there is a little calico-printing.

Unao exports grain, sugar, and ghi, and imports piece-Comgoods, salt, metals, and spices; but the trade is not consider merce able. It lies between the two large cities of Cawnpore and Lucknow, which provide markets for surplus produce and supply the small needs of an agricultural population. The traffic by road is still considerable, especially to Cawnpore. There are no large trading centres in the District, their place being taken by small markets at numerous villages and a few towns.

The branch of the Oudh and Robilkhand Railway from Railways Cawnpore to Lucknow passes across the centre of the District, and roads. and side by side with it runs the narrow-gauge line which links the Răjputāna-Mālwā and Bengal and North-Western Railways. Communications by road are fairly good. Out of a total length of 307 miles, 110 miles are metalled. The Public Works department is in charge of most of the former; but the cost of all but to miles is met from Local funds. Avenues of trees are maintained on 222 miles. The road from Cawnpore to Lucknow is the principal route, and the other metalled roads branch off from this at various points.

Records of the early famines in Unao are scunty. There Famine. was scarcity or famine in 1769, 1783, and 1838, and again after the commencement of British rule in 1861, 1865, and 1869. The drought of 1877 was severely felt, and in March, 1878, as muny as 44,000 persons were employed on relief works during a single week. Distress continued till the next autumn harvest ripened. A succession of wet years culminating in 1894 had already depressed the condition of the people, when the scantiness of rain in 1895 and the still more complete failure in the following year caused widespread distress. Relief works were opened in December, 1896, and the numbers employed rose rapidly, till at the end of February 49,000 workers were being relieved daily. The spring harvest gave temporary relief, but works were not closed till the end of August. Collections of land revenue were suspended to the extent of 7.8 lakhs, and 2 lakhs was ultimately remitted.

The Deputy-Commissioner is usually assisted by four Deputy-District Collectors recruited in India, and a tahnildar resides at the usil. head-quarters of each takul. An officer of the Opium depart-

ment is stationed in the District.

The civil courts include those of a Sub-Judge and three justice and Munsifs. Unao is within the jurisdiction of the Civil and crime.

Sessions Judge of Hardof. The District is marked by the prevalence of homicide; but crimes against property of a serious type are comparatively rare. The Rājputs are chiefly responsible for breaches of the peace, while the Pāsts supply most of the criminal population. Female infanticide was formerly very common, but is no longer suspected.

Land reverse udministration.

At annexation in 1856 a summary settlement was made, the records of which perished in the Mutiny. After the restoration of order a second summary settlement was carried out, based on the demand under the native government, which resulted in a net demand for land revenue amounting to 11-8 lakhs. The first regular settlement was made between 1862 and 1867, and was preceded by a survey. As was usual in Oudb, the Settlement officer had sole jurisdiction as a civil court to settle disputes regarding rights in land, which were numerous. The assessment was based on a comparison of the actual rents with the estimate made by applying selected rates to different classes of soil, and it resulted in a demand of 12-0 lakhs. A considerable area was permanently settled at reduced rates as a reward for loyalty during the Mutiny. The settlement was revised between 1889 and 1895 by successive Deputy-Commissioners, in addition to their regular work. The District was not resurveyed; but the maps were corrected and brought up to date, and the assessment was based on the recorded rents. This revision resulted in a demand of 15-5 lakhs, of which 1-1 lakhs is due from permanently settled estates. The assessment on the rest of the District amounted to 14-4 lakhs, which represented 48 per cent, of the rental 'assets.' The demand is at present 15-9 lakhs, and the incidence is Rs. 1-5 per acre, varying from R. 1 to Rs. 2 in different parganas. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees :-

| | | 1880-s. | 18go-t | 1900-1. | 1903-4 | |
|---------------|----|---------|--------|---------|--------|--|
| Land revenue | | 17,04 | 13,17 | 16,80 | 15,93 | |
| Total revenue | 10 | 15,26 | 18,04 | 33,03 | 23,65 | |

Local selfgovernmest. There is one municipality, UNAO, and seven towns are administered under Act XX of 1856. Local affairs beyond the limits of these are managed by the District board, which in 1903-4 had an income of one lakh, chiefly derived from rates. The expenditure in the same year amounted to 1-2 lakhs, including Rs. 58,000 spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police has under him a force Police and of 4 inspectors, 85 subordinate officers, and 306 constables jalla distributed in 13 police stations, besides 87 municipal and town police, and 1,978 rural and road police. The District iail contained a daily average of 259 inmates in 1903.

Unao is not distinguished for the literacy of its inhabitants, Education, of whom only 3 per cent. (5.8 males and o.1 females) could read and write in 1901. The number of public schools rose from 133 in 1880-1 to 142 in 1900-1, and the number of pupils from 5,172 to 6,263. In 1903-4 there were 180 public schools with 8,018 pupils, of whom 52 were girls, besides 61 private schools with 639 pupils. Only 1,600 pupils in both classes of school had advanced beyond the primary stage. Government manages four of the schools and the District board 126. Out of a total expenditure on education of Ra. 41,000, Local funds contributed Rs. 36,000 and fees Rs. 6,300.

There are 7 hospitals and dispensaries, providing accom- Hospitals modation for 42 in-patients. In 1903 the number of cases and dispensaries treated was 27,000, including 430 in-patients, and 1,404 operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 8,000, chiefly met from Local funds.

About 24,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, Vaccinarepresenting the low proportion of 25 per 1,000 of population. tion. Vaccination is compulsory only in the municipality of Unao.

(W. H. Moreland, Settlement Report, 1896; H. R. Nevill,

District Gazetteer, 1903.)

Unao Tahsil (Unnao).-Head-quarters tahsil of Unao District, United Provinces, comprising the pargaear of Unao, Sikandarpur, Pariar, and Harhā, and lying between 26° 16' and 26" 41' N. and 80" 17' and 80" 42' E., north-east of the Ganges, with an area of 400 square miles. Population increased from 192,894 in 1891 to 204,850 in 1901. There are 286 villages, but only one town, UNAO, the District and tahal headquarters (population, 13,100). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,47,000, and for cesses Rs. 36,000. This is the least thickly populated takeil in the District, the density being 512 persons per square mile. It includes a large area of lowland in the Ganges valley, which is widest towards the north, The upland is level and chiefly composed of a light loam; but excellent rice is grown in the shallow depressions which abound. In 1903-4 the area under cultivation was 215 square miles, of which 77 were irrigated. Wells supply two-thirds of the irrigated area, and tanks most of the remainder.

Safipur Tahsil.-North-western tuhsil of Unao District,

United Provinces, comprising the parganas of Saftpur, Bangarmau, and Fatchpur-Chaurast, and lying between 26° 38' and 27° 2' N. and 80° 4' and 80° 27' E., along the Ganges, with an area of 408 square miles. Population increased from 210,141 in 1891 to 225,400 in 1901. There are 360 villages and three towns, Saripur, the tahsil headquarters (population, 7,949), and Bangarmau (6,051) being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 1,38,000, and for cesses Rs. 35,000. The density of population, 552 persons per square mile, is slightly above the District average. About a third of the tahsil lies in the thirdy populated Ganges valley, and the remainder is situated on raised upland. A sluggish stream, called the Kalyani, flows through the former and does some damage by flooding. The uplands are partly drained by the Sai, which skirts the northeast; they include some light sandy soil, but are generally composed of good loam. In 1903-4 the area under cultivation was 250 square miles, of which 99 were irrigated. Wells supply more than two-thirds of the irrigated area, and tanks and other sources the remainder.

Purwa Tahsil.-South-eastern tahsil of Unno District, United Provinces, comprising the parganas of Purwa, Maurawan, Asohā, Bhagwantnagar, Daundiā Kherā, Panhan, Bihār, Patan, Magrayar, and Ghatampur, and lying between 26° 8' and 26° 36' N. and 80° 34' and 81° 3' E., with an area of 548 square miles. Population fell from 293,152 in 1891 to 290,910 in 1901. There are 513 villages, and three towns, PURWA, the taksil headquarters (population, 10,260), and MAURAWAN (7,911) being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,81,000, and for cesses Rs. 52,000. The density of population, 531 persons per square mile, is a little below the District average. Purwa lies between the Sai on the north and the Ganges on the south, and is intersected by a small stream called the Lont. The Ganges valley is narrow and contains extensive areas of grass jungle. Most of the tahul lies on the uplands, the southern portion being well wooded and highly cultivated, while the north contains large stretches of barren usar land. A chain of jhils and swamps running through the centre supplies irrigation. In 1903-4 the area under cultivation was 286 square miles, of which 128 were irrigated. Tanks supply more than a third of the irrigated area, and wells most of the remainder.

Mohān Tahsil.—North-eastern tahsil of Unao District, United Provinces, comprising the purgunus of Mohān Aurās, Gorinda Parsandan, Jhalotar Ajgain, and Asiwan Rasulabad, and lying between 26° 33' and 27° 1' N. and 80° 25' and 80° 55' E., with an area of 436 square miles. Population fell from 257,449 in 1801 to 255,380 in 1901. There are 474 villages and three towns, Asiwan (population, 6,153) and Monan, the former taksil head-quarters (5,798), being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,27,000, and for cesses Rs. 43,000. The density of population, 586 persons per square mile, is the highest in the District. Mohan is intersected by the Sai, which flows sluggishly through a tortuous channel and is liable to sudden floods, though in ordinary years its valley is very fertile. The south and east of the tahsil are interspersed with barren patches of usar and stretches of hard clay, which produce excellent rice crops in favourable years. The north and west consist of loam with sandy ridges and are generally fertile. In 1903-4 the area under cultivation was 262 square miles, of which 118 were irrigated. Nearly half the irrigated area is supplied from wells, and the remainder from the Sai and from tanks, which are more important sources here than in any other taksil of Unao.

Asiwan.—Town in the Mohān tahtil of Unao District, United Provinces, situated in 26° 48' N. and 80' 28' E., on the bank of a fine lake 20 miles north of Unao town. Population (1901), 6,153. It is said to have been founded in the eleventh century by a dhobi or washerman, named Asun, but has no history. Astwan contains a number of mosques and temples, and a fine masonry sarut built early in the nineteenth century. There is a small manufacture of coarse cotton cloth, and a market is held twice a week. A school has about 98 pupils.

Bangarmau.—Town in the Safipur Inhail of Unao District, United Provinces, situated in 26° 54′ N. and 80° 13′ E., near the Kalyāni river, and on the road from Unao town to Hardot. Population (1901), 6,051. About two miles away are a number of ancient mounds called Nawal, which have been identified with the ruins of a place visited by Hiuen Tsiang. Tradition relates that a Saiyid from Kanauj came to Nawal and was inhospitably received, whereupon he cursed the Rājā and his people and the town perished, after which Bangarman was founded. The tomb of the saint, whose name was Alā-ud-dīn, bears an inscription dated in 1302, and another tomb was exercted in 1374 by Fitoz Shāh Tughlak. Bāngarmau lies at the crossing of two old thoroughfares, the road from Kanauj to Fyzībād and Jaunpur, and the road from Delhi to Benares on the north bank of the Ganges. It is administered under Act XX of 1856, with an

annual income of about Rs. 1,000. There is little trade now, but a market is held twice a week. There is a school

with go pupils.

Maurāwān.—Town in the Purwā tahsīl of Unao District, situated in 26° 26' N. and 80° 53' E., on the road from Unao town to Rāe Bareli. Population (2001), 7,911. The place finst became of importance early in the nineteenth century as the residence of a Khattri banker, who gradually acquired a large talukā. During the Mutiny the talukdār, Gaurī Shankar, behaved with unahaken loyalty and was one of the five talukdārs whose estates were exempted from confiscation. He was rewarded with the title of Rājā and a permanent settlement at a reduced revenue. Maurīwān contains a dispensary and three schools with 150 pupils, one school being maintained by the talukdār. There is little trade, but the jewellery and carpentry produced here have some reputation.

Mohān Town.—Former head-quarters of the tahtil of the same name, Unao District, United Provinces, situated in 26° 47' N. and 80° 41' E., on a metalled road from Ajgain railway station. Population (1901), 5,798. It is pleasantly situated on the banks of the Sai, which is here crossed by a fine stone bridge built by Mahārājā Nawai Rai, minister of the Nawāb Safdar Jang. The old road from Lucknow to Cawnpore passes through Mohān, which was once a place of some importance. It has always been celebrated for its Muhammadan physicians and mimics and actors. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Ra. 900. A good deal of fruit is grown in the neighbourhood, and the town is flourishing. There is a school with 150 pupils.

Purwa Town.—Head-quarters of the tahtil of the same name, Unao District, United Provinces, situated in 26° 28' N, and 80° 47' E, on the road from Unao town to Rae Bareli. Population (1901), 10,260. The place was of some importance under native rule, being the head-quarters of a chakla; but after annexation the capital of the new District was fixed at Unao. Purwa contains a dispensary and manifit, besides the usual offices, and is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,900. It is noted for its shoes and leather-work. There is a large weekly market, besides three annual fairs, each of which is attended by 7,000 or 8,000 persons. There is a school with 114 pupils.

Safipur Town (or Saipur).—Head-quarters of the tahsil of the same name, Unso District, United Provinces, situated

in 26° 45' N. and 80° 22' E., on the old road from Delhi to Benares, north of the Ganges. Population (1901), 7,949. The town is said to have been founded by Sai Sukul, a Brahman, and is generally called after him, Saipur. A religious mendicant subsequently came to the place and was buried there, and the name was changed to Saftpur in commemoration of the holy man. Sai Sukul is said to have been defeated and killed by Ibrahim of Jaunpur, who put his lieutenants in charge of the town. Their descendants are still the principal proprietors. Safipur contains a number of tombs of Muhammadan saints. Besides the usual offices, there are a munifi, dispensary, and a branch of the Methodist Episcopal Mission. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,200. A market is held twice a week, and there are also some popular fairs. There is a school with 95 pupils.

Unao Town .- Head-quarters of the District of the same name in the United Provinces, situated in 16° 33' N. and 80° 30' E., on the road from Campore to Lucknow and on the Oudh and Robilkhand broad and narrow-gauge lines between the same places. Population (1901), 13,109. Tradition relates that it was founded by one Godo Singh in the eighth century, and some hundred years later passed under the Rajas of Kanaui, when an officer, named Unwant Singh, murdered the governor and built a fort, which he named after himself. About 1450 a descendant of Unwant Singh was treacherously murdered by Saiyids, whose descendants still hold part of the estate then seized. In the reign of Shāh Jahān a Shaikh, named Fatch-ullah, settled here, and some fine buildings erected by him still remain. On July 29, 1857, a battle was fought between Havelock's forces and the mutineers, who were defeated with loss. Unao contains a branch of the American Methodist Mission, and besides the usual public offices has male and female dispensaries. It has been administered as a municipality since 1869. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 7,000. In 1903-4 the income was Rs. 12,000, chiefly from a house tax and a tax on professions and trades (Rs. 6,000); and the expenditure was Rs. 16,000. There is a thriving local trade, but no manufactures. Five schools are maintained with 300 boys, besides a girls' school with 6 pupils.

Rae Barell District. - South-eastern District of Lucknow daries, con-Division, United Provinces, lying north-east of the Ganges, figuration, between 25° 49' and 26" 36' N. and 80° 41' and 81" 34' E., system.

with an area of 1,748 square miles. In shape it resembles a segment of a circle with the Ganges as the chord. It is bounded on the north-west by Unao; on the north by Lucknow and Bara Banki; on the east by Sultanpur and Partabgarh; and on the south-west by the Ganges, which divides it from Fateh-The general aspect of Rae Barelt is that of a beautifully wooded, gently undulating plain. It is markedly fertile and well cultivated. The principal rivers are the Ganges and the Sai, the former skirting the District for 54 miles along its southwestern boundary, while the latter runs through the centre in a tortuous course from north-west to south-east. Both of these rivers flow in deep heds, but the Ganges is bordered by a fertile valley of varying width before the upland portion is reached. Between the Ganges and the Sai lies a chain of jhils or swamps more or less connected with one another, and probably forming an old river-bed. North of the Sai are found many other fails, but these are ordinary shallow depressions and have not the narrow deep beds of the southern swamps. The Lond flows across the south-west corner of the District to join the Ganges; and there are many smaller streams, generally known as Naiyā, which carry off water only in the rains, and drain the jhils to some extent.

Geology.

The District is entirely composed of Gangetic alluvium, and kankar is the only stone formation.

Botany.

The flora presents few peculiarities. Up to the time of the Mutiny the stronghold of every talukdār was surrounded by dense jungle, and a scrub forest extended for twelve miles on either side of the Sai. Only a few patches of dhāk (Butea frondesa) now remain. The numerous groves are chiefly composed of mango or mahuā (Bassia latifolia) and the min (Melia Azadīrachta). Various kinds of fig, the babūl (Acadā arabica), and jāmun (Eugenia Jambolana) are also common.

Fauna.

There are a few wolves, but jackals abound. Nilgai and antelope are scarce. Some cattle still roam wild near the Ganges and Sai. In the cold weather water-fowl and snipe are plentiful; other game birds include quail and a few partridges and sand-grouse. Fish are caught in the jhils, and also in the rivers.

Climate and temperature. The climate is healthy, and the temperature is not marked by extremes of either heat or cold. Cool nights are experienced well into the hot weather.

Rainfall.

The average annual rainfall is a little over 37 inches, the east of the District receiving the heaviest fall. As a rule the amount is not less than 24 inches; but in 1877, 1880, and

1896 it was only 13 inches. On the other hand, in 1867 and 1894 the amount was 60 inches.

The District has never played a large part in history, and it History. contains few places of importance. Tradition relates that the Muhammadan saint, Saiyid Salar, raided it in the eleventh century; and from similar sources a few details are obtained regarding the three clans of Rajputs, the Bais, the Kanhpurias, and the Amethias, who still hold the greater part of the land. The first of these occupied a tract in the south and west, which was afterwards known as Baiswārā. The earliest historical events of which reliable accounts have been preserved are, however, connected with the incorporation of the District in the Sharki kingdom of Jaumpur, early in the fifteenth century. At that time the Bhars, who still held part of the country, were completely crushed. The Rajputs, however, were only partially reduced, and warfare was frequent till Akhar established a more settled government. Under that monarch Rae Barell was divided between the two Subāhs of Oudh and Allahābād. After Akbar's death the Rajputs appear to have increased greatly in importance and power, and when Oudh became a separate state in the eighteenth century, Nawab Saadat Khan entrusted several of the chiefs with the collection of revenue in their own parganar. As disorders increased, attempts to assert independence became more frequent, and the history of the closing years of Oudh rule is one of constant fighting between chief and chief or between the Rajas and the court officials.

At annexation in 1856 a District of Salon was formed, extending from Purwā in Unao to Allahābād. A year had hardly elapsed when the Mutiny broke out. The troops abstained from rebellion longer than in any other cantonment in Oudh; but on June 10, 1857, they ceased to obey orders and the officers were warned to depart. The whole of the European staff was allowed to escape and reached Allahabad safely. The District then reverted to its former lawless state under the Oudh government, though little help was sent to the rebel army at Lucknow. Some of the Kanhpurias at once began plundering, but the talukdars for the most part were not actively tebellious. After the fall of Lucknow, however, their opposition became more marked, and that of Rana Bent Maitho Bakhah of Shankarpur in Baiswara was especially determined. On the other hand, the Raja of Murarman was loyal throughout, and several of the important tutukhlars surrendered early and gave valuable services. It was not till the end of October that Lord Clyde made his great combined movement on Baiswārā, which ended in the flight of Benī Mādho a month later. Rāe Bareli then became the head-quarters of the District; but its shape and size were considerably altered in 1869, when part was transferred to Urao and part to Bāra Bankī, while additions were made from Sultānpur and Partābgarb.

Archaeclogy, The District contains many ancient mounds, some of which have yielded stone carvings, terra-cotta images, and other memorials dating from Buddhist times. The chief places of archaeological interest are Jats, Dalmau, and Rae Barell.

The people.

Rae Barell contains 4 towns and 1,736 villages. The population has fluctuated. At the four enumerations the numbers were: 989,008 (1869), 951,905 (1881), 1,036,521 (1891), 1,033,761 (1901). There is some reason to suppose that the Census of 1869 overstated, and that of 1881 understated, the actual population. The District suffered from famine in 1877-8 and again in 1896-7. There are four taktils—Rae Barell, Dalman, Manarajganj, and Salon—each named from its head-quarters. The principal towns are the municipality of Rae Barell and Jais. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takett: | Arra in square miles. | Towns, 25 | Villa V | Population | Population per square mile. | Percentage of cartation is population be- become 1891 and 1901. | Number of Persons alias To read and write. |
|----------------|--------------------------|-----------|---------|------------|--------------------------------|---|---|
| Riic Barell . | 371 | 1 | 353 | 213,305 | 602 | + 97 | 8,191 |
| Dalman . | 473 | 1 | 0.000 | 370,900 | 574 | - 1.8 | 9,987 |
| Maharaiguni . | 462 | 144 | 364 | 378,086 | 198 | + 0-5 | 8,342 |
| Salon . | 440 | 2 | 444 | 261,270 | 394 | - 0.3 | 6,198 |
| District total | 1,748 | 1 | 1,736 | 1,033,761 | 591 | - 0-3 | 32,719 |

Hindus form 91 per cent, of the total, and Musalmans nearly 9 per cent. Eastern Hindl is spoken by almost the entire population, the dialect in use being Awadhi.

Castes and occupations.

The Hindu castes most largely represented are: Ahirs (graziers and cultivators), 129,000; Päsis (toddy-drawers and cultivators), 107,000; Brahmans, 105,000; Chamārs (tanners, labourers, and cultivators), 98,000; Rājputs or Chhattris, 67,000; Lodhas (cultivators), 64,000; Muraos (market-gardeners), 48,000; and Kurmis (agriculturists), 44,000. Among Musalmāns are Gūjars, 13,000; Shaikhs, 9,000; Pathāns, 9,000; and Rājputs, 8,000. Agriculture supports 76 per cent of the

total population. Răjputs or Chhattris hold two-thirds of the District, the Bais and Kamhpuriā clans being the largest landholders. Ahirs, Brahmans, and Rājputs or Chhattris are the most numerous cultivators; but Lodhas, Kurmis, and Muraos are the most skilful.

There were 97 native Christians in 1901, of whom 68 were Christian Methodists and 10 belonged to the Anglican communion. missions. A branch of the American Methodist Mission was opened in 1864 and closed in 1901; but native catechists are still

employed at a few places.

The low land in the valley of the Ganges, called kachhār, General varies in width from two miles to a few yards. The lowest taral corporation is flooded during the rains, but generally bears good ditions, crops in the spring; the higher stretches are very fertile, and occasionally autumn crops can be sown in them. The uplands vary according to the class of soil. In the south it is a rich firm loam, producing wheat and poppy in the spring and millets in the autumn. As the jkils are approached, the soil becomes heavier, and rice is the prevailing crop, which is followed in spring by gram and linseed. Large patches of barren that are common here. The valley of the Sai and its tributaries resembles that of the Ganges, but is inferior in quality. North of the Sai is another large area of rice land, producing also inferior spring crops.

The tenures by which land is held are those common to the Chief agri-Province of Outh. About two-thirds of the District is included statistics in talukdari estates, and 5 per cent, of the total area is and princisub-settled. Under-proprietors also hold about 5 per cent, pal crops, The main agricultural statistics for 1903-4 are shown below,

in square miles:-

| Takell. | Total. | Cultivated | Irriganal. | Cultivable waste. |
|-------------|--------|------------|------------|----------------------|
| Rae Barell | 371 | 216 | 94 | 70 |
| Dalman | 473 | 236 | 113 | 76 |
| Mahārājganj | 465 | 233 | 139 | 77 |
| Salon | 440 | 241 | 1123 | \$8 |
| Total | 1,748 | 946 | 459 | 381 |

Rice is the crop most largely grown, covering 268 square miles, or 28 per cent. of the net cultivated area. Wheat (176), gram (170), barley (130), pulses (99), jowar (95), arhar (81), and kadon and small millets (64), are also important food-crops.

The District is one of the largest poppy-growing areas in the United Provinces. In 1903-4 the area under poppy was 48 square miles, and the price paid to the cultivators for their opium has sometimes exceeded the land revenue demand on the whole District.

Improvements in agriculturn! practice.

Immediately after the Mutiny there was a great extension of cultivation. The series of bad seasons commencing in 1801 checked the rise which had continued since the first settlement; but after 1897 another increase took place, and the net cultivated area is now about 7 per cent, higher than it was forty years ago. This increase in the area under the plough has also been accompanied by an extension of the system of double-cropping, and by an increase in the area sown on the banks of jhils with small millet and rice to ripen in the hot weather. The most important increase has been in the area under poppy, and the general tendency has been to cultivate the more valuable crops in place of inferior staples. There has been a little reclamation of land by throwing dams across tavines to prevent crosion and to collect silt. Advances are freely taken, especially under the Agriculturists' Loans Act. The total lent by Government during the ten years ending 1900 was 3-8 lakhs, of which 2-4 lakhs was advanced in the famine year 1896-7. In the next four years loans averaged Rs. 4,000. A few small agricultural banks have been started,

Cattle, ponies, and sheep. Pasture land is scarce, and the breed of domestic cattle is poor, the best animals being all imported. Ponies are still largely used as pack-animals; but the breed is very inferior. A stallion is now maintained in the District, to introduce a better strain. Sheep and goats are kept in large numbers, to provide wool, meat, milk, and manure.

Irrigation.

The District is well supplied with means of irrigation. In 1903-4 the irrigated area was 469 square miles, of which 300 were supplied from wells, 164 from tanks or jhili, and 5 from other sources. The number and importance of wells is increasing, and the safety of the crops is thereby enhanced, as jhili fail in dry years, when most needed. The larger wells are worked by bullocks; but where the water-level is higher, the dhenkli or lever and the pot and pulley worked by hand are used. Water is raised from jhils in the swing-basket. There are very few artificial tanks, and those which exist are ascribed to the Bhars. The larger streams are little used for irrigation, as their beds lie deep below the surface of the country.

Minurals.

. Kanhar or calcureous limestone is found in both block and nodular formations in most parts and is used for making lime

and metalling roads. Saline efflorescences called rel are collected for making coarse glass and for other purposes.

The only manufacture of any importance is that of coarse Arts and cotton cloth, which is made in many parts of the District. tures. Finer materials are produced at JAIS and RAE BARELL; but the industry is dying out, as there is little demand for them. Glass bangles and small phials are made in a few places. Apart from these industries little is produced in the District.

Under native government the transit dues extorted by the Commerce. landholders prevented any trade of importance, and as late as x866 the District consumed most of its own produce and hence imported little. The improvement of communications and the freedom from imposts have caused a great advance in this respect; and the District now exports grain, opinm, poppyseeds, hides, bones, oilseeds, and a little tobacco and raw sugar, and imports piece-goods, metals, salt, sugar, and spices. Rae Barell is the chief trading centre; but Lalganj, Maharajganj, and Baintt are rising in importance. Much of the trade of the south is with Kalakankar in Partabgarh District; and the trade of Dalmau, which was formerly of some consequence, is declining, though it is still the site of a large religious fair,

The main line of the Oudh and Rohilkhand Railway enters Railways the north-west of the District and turns east from Rae Bareli and roads. town, thus passing through the centre. Communications by road are fairly good, and have been much improved in recent years. There are 601 miles of mads, of which 115 are metalled; The whole of the roads are maintained at the cost of Local funds; though the metalled roads and some of the unmetalled are in charge of the Public Works department. Avenues of trees are maintained on 69 miles. The chief routes are the roads from Rae Barell town to Lucknow, Sulfanpur, and Fatehpur. An old road from Delhi to Benares, north of the

Ganges, passes through the south of the District.

Rae Barell has suffered from severe scarcity and famine. Famine, The great desolation of 1784 was long remembered, and there was scarcity again in 1810. The records of events under native government are, however, meagre. After annexation distress was experienced in 1864, 1869, and 1873; but does not appear to have been acute. In 1877-8 the deficiency in the rainfall was followed by widespread scarcity, causing acute distress for a considerable time, while actual famine prevailed for about two months. Relief works were opened both by Government and by the tulubality, and large sums were spent by the charitable. In 1881 drought again resulted in scarcity

and the collection of revenue was postponed. Excessive and untimely rain in the period 1893-5 caused distress, which necessitated the opening of small relief works. The resources of the people had thus been seriously affected before the failure of the mins in 1896, which caused the worst famine the District has experienced. More than a lakh was advanced for the construction of wells, and the revenue demand was suspended to the extent of 3 lakhs. In February, 1897, more than 90,000 persons were on relief works; but the liberal advances made enabled a large area of spring crops to be sown and food-grains to be imported, and by the end of July, 1897, the famine was over.

District

The Deputy-Commissioner usually has a staff of four Deputy-Collectors recruited in India, and a tahaldar resides at the head-quarters of each tahsil. Three officers of the Opium department and an officer of the Salt department are stationed in the District.

Civil justice and crime.

There are two District Munsifs, four Honorary Munsifs, and a Subordinate Judge for civil work. Sulfanpur and Partabgarh Districts are both included in the Civil Judgeship, and Partabgarh in the Sessions Division of Rae Barell. The most common variety of crime is burglary, for which the Pasts are especially notorious. Apart from this, serious offences are rare, and the people are quiet and law-abiding. Infanticide was formerly practised, but is no longer suspected.

Land revenue administration.

At annexation, in 1856, a summary settlement was made, the records of which have perished. The estates of the talukality were largely reduced, villages being settled direct with the village proprietors. At the second summary settlement in 1850 a reversion was made to the actual position in 1856, except where estates had been confiscated for rebellion. The first regular settlement, preceded by a survey, began in 1860 and was carried out in different ways in the three Districts, portions of which now make up Rae Bareli. In Rae Bareli itself the assessment was for the first time based entirely on the corrected rent-rolls, with adjustments for land held at privileged rates, The methods adopted in PARTABGARH and SULTANBUR, which will be found in the accounts of those Districts, were based partly on the use of corrected rent-rolls, and partly on the selection of average rates of rent. The result was an enhancement of the revenue fixed in the summary settlement from 9-5 to 12-4 lakhs. This settlement was revised between 1892 and 1806, chiefly by the District officer in addition to his own duties. There was no resurvey, and the corrected tent-rolls as usual formed the basis of the assessment. The result was an increase in the demand to 15-4 lakhs, representing 47 per cent. of the net corrected 'assets.' The incidence of land revenue is about Rs. 1-3 per acre, and varies very slightly in different parts of the District. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees :-

| | 1880-1 | 1800-1 | FU00-6. | 1001-4 | |
|--------------|--------|----------------|----------------|----------------|--|
| Land revenue | 9.74 | 12,44 47,18 | 15,02 21,05 | 15,40 22,18 | |

The District contains only one municipality, RAE BARELI, Local selfand one town administered under Act XX of 1856. Local governaffairs outside of these places are managed by the District board, which in 1903-4 had an income of 1-2 lakhs, chiefly derived from local rates, and an expenditure of 1.3 lakhs, including Rs. 61,000 spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police has under him a force Police and of 3 inspectors, 76 subordinate officers, and 304 constables fails. posted in 13 police stations, besides 41 municipal and town police, and 2,159 rural and road police. The District jail contained a daily average of 448 inmates in 1903.

The people of Rae Barell are moderately well educated com- Education. pared with their neighbours, and 3-2 per cent. (6-2 males and 0-2 females) could read and write in 1901. Public schools increased in number from 126 in 1880-1 to 166 in 1900-1, and the pupils from 5,170 to 7,418. In 1903-4 there were 196 such schools with 8,886 pupils, including 70 girls, and 35 private schools with 464 pupils. Only 1,000 pupils had advanced beyond the primary stage. Three schools are managed by Government and III by the District and municipal boards. The total expenditure on education was Rs. 43,000, of which nearly Rs. 32,000 was provided by Local funds and Rs. 7,000 from fees.

There are eleven hospitals and dispensaries, with accom- Hospitals modation for seventy in-patients. In 1903 the number of and discases treated was 61,000, including 878 in-patients, and 2,600 operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 14,000, chiefly met from Local funds.

About 16,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4. Vaccinagiving a proportion of 35 per 1,000 of population. Vaccina-ties. tion is compulsory only in the municipality of Rae Bareli.

(W. C. Benett, Clans of the Roy Barrilly District; S. H. Fremantle, Settlement Report, 1898; H. R. Nevill, District Gazetteer, 1904.)

Rae Bareli Tahsii.-Head-quarters tahsil of Rae Bareli District, United Provinces, conterminous with the parguna of the same name, lying between 26° 4' and 26° 26' N. and 81° and 81° 25' E., with an area of 371 square miles. Population increased from 221,875 in 1891 to 223,505 in 1901. There are 353 villages, but only one town, RAE BARELL, the District and tahtil head-quarters (population, 15,880). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,24,000, and for cesses Rs. 52,000. This is the most densely populated tahsil in the District, supporting 602 persons per square mile. It lies on both sides of the Sai, which flows in a tortuous channel, generally from north-west to south-east, and receives numerous small streams. The centre is composed of a light soil, which, when well manured and watered, is exceedingly fertile. In the north and south a heavier clay is found, producing chiefly rice. In 1903-4 the area under cultivation was 216 square miles, of which 94 were irrigated. Wells supply three-fourths of the irrigated area, and tanks or jhile most of the remainder.

Dalmau Tahsil. South-western tahsil of Rae Barell District, United Provinces, comprising the parganas of Dalmau, Sareni, and Khiron, and lying between 25" 57' and 26° 22' N. and 80° 41' and 81° 21' E., along the Ganges, with an area of 472 square miles. Population fell from 275,786 in 1891 to 270,900 in 1901. There are 575 villages, but only one town, DALMAU (population, 5,635). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,46,000, and for cesses Rs. 71,000. The density of population, 574 persons per square mile, in below the District average. Along the Ganges lies a strip of fertile alluvial soil, the lower stretches of which are flooded in the rains. The upland area is a rich loam, turning to sandy soil near the west, where it is crossed by the Lont, an affluent of the Ganges, and to clay in the north, where a chain of jhile marks an old river-bed. In 1903-4 the area under cultivation was 256 square miles, of which 123 were irrigated. Wells supply more than two-thirds of the irrigated area, and tanks of jhils the remainder,

Mahārājganj (or Drighijaiganj).—Northern tahiil of Rāe Barell District, United Provinces, comprising the parganas of Inhaunā, Bachhrāwān, Simrautā, Kumhrāwān, Mohanganj, and Hardot, and lying between 26° 17' and 26° 36' N. and 80° 59' and 81° 34' E., with an area of 465 square miles. Population increased from 276,740 in 1891 to 278,086 in 1901. There are 364 villages, but no towns. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,04,000, and for cesses Rs. 64,000. The

density of population, 598 persons per square mile, is about the District average. The tahsil is chiefly composed of a stiff clay soil, interspersed with many jhils and a few small streams. It thus produces excellent rice crops, which are watered from the jhils. In 1903-4 the area under cultivation was 233 square miles, of which 129 were irrigated. Wells supply rather more than half the irrigated area, and tanks or jhils the remainder.

Salon Tahsil. South-eastern tahsil of Rae Bareli District, United Provinces, comprising the parganas of Parshadeput, Rokhā Jais, and Salon, and lying between 25° 49' and 26° 19' N. and 81" 13' and 81" 37' E., north of the Ganges, with an area of 440 square miles. Population fell from 252,120 in 1891 to 261,270 in 1901. There are 444 villages and two towns: Jats (population, 12,688) and Saton, the taksil headquarters (5,170). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,67,000, and for cesses Rs. 60,000. The density of population, 394 persons per square mile, is almost that of the District as a whole. Across the centre of the tahsii flows the Sai from west to east. Its banks are fringed by light sandy soil, while to the north is found a great plain of stiff clay land, producing rice. South of the Sai lies a series of jhils which once formed a river bed, and along the Ganges is a rich alluvial tract producing magnificent spring crops. In 1903-4 the area under cultivation was 24h square miles, of which 123 were irrigated. Wells serve three-fourths of the irrigated area, tanks or jails being the other source of supply.

Dalman Town.-Head-quarters of the taksil of the same name, Rae Barell District, United Provinces, situated on the Ganges in 26" 4' N. and 81" 3' E. Population (1901), 5,635. One tradition asserts that the town was founded by Dal Deva, Rain of Kanaui; while another relates that Dal was a Bhar, and the latter seems the more probable story. The Muhammadans state that Dalmau was captured by Saivid Salar, and several early tombs still exist. Firoz Shah Tughlak founded a school here, and an idyah dates from the same reign. At the close of the fourteenth century the power of the Bhars was revived, and an attempt by the Bhar Raja to obtain the hand of a Saivid girl led to the intervention of Ibrahim Shah of launpur, who assaulted and took the fort. Thrahim Shah restored the fort, and a garden and well are pointed out as having been constructed by him. In the former is the tomb of Ibrahim's grandson, Muhammad, who fell in battle with his brother, Husain, after a brief reign. The town was of some importance under the rule of Jaunpur, and throughout the

Mughal period was held by the Muhammadans, who enriched it with mosques and other buildings. In the eighteenth century Nawab Shuja-ud-daula built a house here; but the resumption of revenue-free grants in the neighbourhood and a Maratha raid ruined the inhabitants. Dalmau stands on a steep cliff overlooking the Ganges. The fort appears to have been built on the mins of two Buddhist stupus, and with its tottering pavilions and crumbling battlements forms one of the most picturesque objects on the banks of the great river. On the east is a fine gateway erected by Ibrāhīm Shāh and largely composed of fragments of earlier temples. The interior contains buildings dating from the time of Akbar and Shah Jahan. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 900. Besides the usual offices, it contains a munsifi and a dispensary. There is a small manufacture of glass phials for use by pilgrims to contain Ganges water; and oilseeds, grain, and poppy seeds are exported to Campore. A large fair takes place in the autumn, which is attended by 150,000 persons; and a primary school has 55 pupils.

Jais .- Town in the Salon taksil of Rae Bareli District, United Provinces, situated in 26° 16' N. and 81° 33' E., on the Oudh and Rohilkhand Railway, and on the road from Lucknow to Sultanpur. Population (1901), 12,688. It is said to have been originally a Bhar fortress called Udayanagar or Ujālekānagar. Tradition relates that the place was stormed by an officer of Saivid Salar, and its modern name is derived from the Persian Jaish, 'a camp,' The Jama Masjid is the chief building. This was built with the materials of an old Hindu temple, and was restored by Ibrahim Shah of Jaunpur. Other fine buildings were erected in the seventeenth and eighteenth centuries. Jais is celebrated as being the birthplace of Muhammad Jaisi, author of the vernacular poem called the Padmavati, who lived early in the sixteenth century. Excellent muslin was formerly manufactured here; but the industry has declined. There is, however, some trade in grain, tobacco, and course cotton cloth. The town contains a dispensary and a flourishing school with 137 pupils.

Rae Bareli Town.—Head-quarters of the tahtil and District of the same name in the United Provinces, situated in 26° 14' N, and 81° 14' E., on the banks of the Sai, on the Oudh and Rohilkhand Railway, and on metalled roads to Lucknow, Fatehpur, and Sultanpur. Population (1901), 15,880. The town consists of two portions, Rae Bareli proper, and a suburb

called Jahānābād. The name Barell is according to some accounts, derived from the Bhars, who are said to have founded it. Ibrahim Shah of Jaunpur conquered Rae Rareli early in the fifteenth century and handed it over to Shaikhs and Saiyids. Husain Shah changed the name of the place to Husainabad, but the alteration was never popular. Ibrahim Shah added greatly to the strength of the fort, using the materials of older buildings which were ready to hand. A story relates that when the fort was building all that was erected during the day fell down in the course of the ensuing night. In his perplexity the king had resort to a holy man of Jaunpur, Makhdum Saiyid Jafari, who walked over the ground, after which no interruption occurred in the work. The saint's tomb stands beside the gate of the fort. Ibrahim also built the Jama Masjid, and a second great mosque was erected by Jahan Khan, the founder of Jahānābād, in the reign of Shāh Jahān. Jahān Khān's palace and tomb still adorn the suburb named after him. A handsome bridge, which crosses the Sai, was built by public subscription soon after annexation. Besides the usual Government courts and buildings, the town contains male and female hospitals and a sarai. Rae Bareli has been a municipality since 1862. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 26,000 and Rs. 25,000, respectively. In 1903-4 the income was Rs. 32,000, derived chiefly from octroi (Rs. 18,000) and market dues and rents (Rs. 7,000); and the expenditure was also Rs. 32,000. The town is the chief commercial centre in the District, and its trade has increased considerably since the opening of the tailway in 1801. Two large markets, called Capperganj and Baillieganj, after former Deputy-Commissioners, absorb much of the trade, the latter being a bonded warehouse within octrol limits. Cotton cloth is woven to some extent, and muslims of good quality are also produced. Two secondary schools, six primary schools, and a small Sanskrit pathahala are attended by more than 500 pupils.

Salon Town.—Head-quarters of the tohtil of the same name, in Rae Barell District, United Provinces, situated in 26° 2° N. and 81° 28′ E., on a metalled road from Rae Barell town. Population (1901), 5,170. The town is traditionally said to have been founded by Salivahan, ancestor of the Bais, and was for long held by the Bhars. Under Oudh rule Salon was the head-quarters of a chaklii, and on annexation the name was preserved till after the Mutiny, when the District officer was posted to Rae Barell. Salon contains a dispensary and a branch of the Metho-

Z

dist Episcopal Mission, besides the usual offices. It is also the residence of the manager of a large Muhammadan religious endowment. A grant of land was first given by Aurangzeb, and additions were made by subsequent rulers. Two-fifths of the income are spent on a school and charitable gifts, and the accounts are submitted to the District officer. A middle vernacular school is attended by 80 pupils.

Bounduries, configuration, and river system.

Sitapur District.-District in the Lucknow Division of the United Provinces, situated between 27° 6' and 27° 54' N. and 80° 18' and 81° 24' E., with an area of 2,250 square miles. It is bounded on the north by Kheri; on the east by the Kauritla or Gogra river, which separates it from Bahraich; on the south by Bara Banki and Lucknow; and on the west and south-west by the Guniti, across which jies Hardoi: The eastern portion is a low damp tract, much of which is under water in the rains, but the remaining area is a raised upland of more stable character. Numerous streams intersect the District, flowing generally from north to south, but with a slight inclination to the east. In the lowland or gunfus the watercourses are variable, but the channels in the uplands are more stable. The Guari and Kauriala or Gooka, which form the western and eastern boundaries respectively, are both navigable. Most of the upland area is drained by the Kathna and the Saniyan, which are tributaries of the Gunti, and the Sarāyān also receives the Betā and Gond. Through the centre of the ganjar flows the Chauka, a branch of the Sagna, which now brings down little water, as the main stream of the Sards is carried by the Dahäwar, a branch separating the north-east corner of the District from Kheri. The Dahawar and Gogra unite at Mallanpur, but the junction of the Chauka and Gogra his south of Shaper. There are many shallow ponds and natural reservoirs which are full of water during the rains, but gradually dry up during the hot weather.

Geology.

Sitapur exposes nothing but alluvium, and kankar or nodular

limestone is the only stony formation found-

Botany.

The District is well wooded in all parts, though it contains no forests and little jungle, except the sandy stretches near the rivers which are clothed with tall grass or tamarisk. Mangoca, jack-fruit, and a kind of damson form the principal groves, while thisham (Dalbergia Sissee) and tun (Cedrela Tooma) are the chief timber trees. Species of fig, acacia, and hamboos are also common.

Fanns:

The spread of cultivation has reduced the number and variety of the wild animals. No tigers have been shot for the

hist thirty years, and leopards are very rarely seen. A few wolves, an occasional jungle-cat, and jackals and foxes are the only carnivorous animals. Wild hog have been almost exterminated by the Pasis, who eat them. A few nilgal and antelope are still found. The rivers abound in fish, and the larger streams contain crocodiles and the Gangetic porpoise.

Apart from the gainfar, which is feverish, the District enjoys Climate a cool and healthy climate. The mean temperature ranges persurefrom about 450 in the winter to 950 in the summer. Even in May and June the maximum heat seldom rises to 110°, and

frost is common in the winter-The average annual rainfall is about 38 inches, evenly distri-Rainfall. buted in all parts of the District. Great fluctuations occur from year to year; in 1877 the total fall was only 20 inches, while in

1894 it was nearly 64 inches,

Little is known of the history of Strapur. Legends connect History. several places with episodes in the Mahabharata and Ramayana. There is the usual tradition of a raid by a general of the martyred Saiyid Salar. The rise of Raiput power, according to the traditions of the great clans which now hold the District, was somewhat later than in southern Oudh, and the influx continued till the reign of Aurangzeb. The Rajputs generally found the soil occupied by Pasis, whom they crushed or drove away. Under the early Muhammadan kings of Delhi the country was nominally ruled by the governor of Bahraich, but little real authority was exercised. In the lifteenth century the District was included in the new kingdom of Jaunpur. About 1527 Humāyūn occupied Khairābād, then the chief town; but it was not till after the accession of Akbar that the Afghans were driven out of the neighbourhood. Under Akbar the present District formed part of four surkirs: Khairabad, Bahraich, Oudh, and Lucknow, all situated in the Subah of Oudh. Khuirabad was held for some time by the rebels of Oudh in 1567, but throughout the Mughal period and the rule of the Nawabs and kings of Oudh the District is seldom referred to by the native historians. Early in the nineteenth century it was governed by Hakim Mahdi Ali Khān, the capable minister of Nasir-ud-din Haidar, and some years later Sleeman noted that it was unusually quiet as far as the great landholders were concerned. At annexation in 1856 Shapur was selected as the head-quarters of one District, and Mallanpur as the headquarters of another, which lay between the Chauka and Gogra.

Strapur figured prominently in the Mutiny of 1857. In that year three regiments of native infantry and a regiment of military police were quartered in Sitapur cantonments. The troops rose on the morning of June 3, fired on their officers, many of whom were killed, as were also several military and civil officers with their wives and children in attempting to escape. Ultimately many of the fugitives succeeded in reaching Lucknow, while others obtained the protection of loyal samindars. On April 13, 1858, Sir Hope Grant inflicted a severe defeat on the rebels near Biswan. Order was completely restored before the end of that year; the courts and offices were reopened, and since then nothing has occurred to disturb the peace.

Archaer-

The District contains a number of ancient mounds which still await examination. A copperplate grant of Gobind Chand of Kanauj was discovered in 1885, but few objects of interest have been obtained here. There are some Muhammadan buildings at Biswan and Khairanan, and Nimkhar is a famous place of pilgrimage.

The people.

Sitapur contains 9 towns and 2,302 villages. Population is rising steadily. At the four enumerations the numbers were: 932,959 (1872), 958,251 (1881), 1,073,413 (1891), 1,175,473 (1901). There are four tahilis—Sitapun, Biswan, Sidnaula, and Misrikh—each named from its head-quarters. The principal towns are the municipalities of Sitapun, the District head-quarters, and Khairanan. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| | Taksit. | Area, in spinore miles, | Young | Allegate of | Population | Population per spares sole. | Percentage of reflection in population be twen 1864 and 1950 | Number of persons able to read and write. |
|----|----------------|----------------------------|-------|-------------|------------|--------------------------------|--|--|
| | Shapur | 570 | 3 | 568 | 311,264 | 346 | + 69 | 10,502 |
| li | Diswin | 165 | 1 | 101 | 297,277 | 526 | + 9-3 | 6,124 |
| | Sidhault | 302 | 1 | 344 | 199,491 | 597 | + 11/3 | 35777 |
| 3 | Misrikh | 613 | 3 | 649 | 267,440 | 436 | = 10-0 | 7,238 |
| 1 | District total | 3,150 | 9 | 2,302 | 1/175/473 | 523 | + 95 | \$9,391 |

About 85 per cent, of the total are Hindus and nearly 15 per cent. Musalmans. The District is thickly populated, and the increase between 1891 and 1901 was remarkably large. Eastern Hindt is spoken by almost the entire population, Awadht being the ordinary dialect.

Castes and occupations. The Hindu castes most largely represented are the Chamles (tanners and cultivators), 150,000; Pasis (toddy-drawers and cultivators), 130,000; Brahmans, 114,000; Ahres (graziers and

cultivators), 106,000; Kurmis (agriculturists), 80,000; Lodhas (cultivators), 45,000; Muraos (market-gardeners), 30,000; and Rajputs, 41,000. Among Musalmans are Julahas (weavers), 39,000; Shaikhs, 21,000; Pathāns, 16,000; and Behnās (cotton-carders), 14,000. Agriculture supports 75 per cent. of the total population, and general labour 5 per cent. Rajputs and Musulmans hold most of the land, their estates being often of considerable size. Brahmans, Kurmis, Ahtrs, Chamars, and Pasts are the chief cultivators.

There were 548 native Christians in 1901, of whom 525 Christian were Methodists. The American Methodist Mission was missions.

opened in 1864.

Shāpur, though naturally very fertile, is still backward com- General pared with southern Oudh. Holdings are large, rents are to agricula considerable extent paid in kind, and high-caste cultivators, conditions. who do not labour with their own hands, are numerous. Along the Guntl is found a tract of light soil which is inferior, but east of this the centre of the District is composed of a good loam, stiffening into ciay in the hollows. 'The sandy soil produces bajra and barley, while in the richer loam sugar-cane, wheat, and maize are grown. In the lowlands west of the Chaukā rice is largely grown, as the floods are usually not too. severe to injure the crop. Between the Chauka and the Gogra, however, the autumn crop is very precarious, and during the rains the gainjur is swept by violent torrents. In this tract even the spring cultivation is poor.

The land tenures are those commonly found in Oudh Chief About 48 per cent, of the whole area is held by talukdars, and agriculsub-settlement holders have only a small share in this. Single statistics samindars hold in per cent., and joint samindars and pattidars and princithe rest. The main agricultural statistics for 1903-4 are given pal crops.

below, in square miles :-

| or | Takill. | | | | Caltivated. | Irrigated | Cultivable waste. | |
|----------|---------|-----|------|-------|-------------|-----------|----------------------|--|
| Shilpur | | | | 570 | 413 | 88 | 60 | |
| Historia | | | | 163 | 416 | 36 | 45 | |
| Sidhanli | | | - 3 | 502 | 261 | 98 | 2.0 | |
| Misrikh | 10 | 167 | - | 6+3 | 432 | .94 | 94 | |
| | | T | otal | 3,150 | 1,625 | 316 | 232 | |

Wheat is the most important crop, covering 416 square miles, or a fourth of the net cultivated area. Pulses (294), rice (250), gram (240), Andon and small millets (210), barley (208), and maize are also largely grown. Of non-food crops the chief are

poppy (27), sugar-cane (43), and oilseeds (41).

Improvements in agricultural practice.

There has been a very considerable increase in the area under cultivation during the last forty years, amounting to about 35 per cent,, and waste land is still being broken up as new tenants are obtained. In addition to this the area bearing a double crop has trebled. Improvements in the methods of agriculture and the introduction of better staples are noticeable, but are not proceeding very rapidly. In the autumn, rice is taking the place of the inferior small millets; but the variety grown is that which ripens early, not the more valuable late tice. Wheat is being cultivated more largely than barley; and the area under tobacco, poppy, and garden crops is rising. There is a steady demand for advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts; a total of 3-1 lakhs was lent during the ten years ending 1900, out of which, however, 1-2 lakhs was advanced in the famine year, 1896-7. The loans in the next four years averaged Rs. 5,300. An agricultural bank of some importance has been founded by the Khattri talukdar of Muizzuddinpur.

Cattle, ponies, and sheep.

Although no particular breeds are distinguished, the cattle of the District are superior to those of southern Oudh. Animals of good quality are regularly imported and prevent deterioration, though the absence of care in mating is as marked here as elsewhere. The gānjar provides excellent pasture. Ponies are largely used as pack-animals, though they are of an inferior type. The District board maintained a stallion from 1894 to 1896, but the experiment was not a success. Sheep are comparatively scarce, while goats are kept in large numbers for milk, for penning on land, and for their hair.

trugation-

In 1903-4, 316 square miles were irrigated, jhils and tanks supplying 192 square miles, wells 113, and other sources 11. Facilities are lacking in the sandy tract adjoining the Gumt, while irrigation is seldom required in the eastern lowlands. Even in the central loam tract permanent sources of water-supply are rare; and the District is thus badly protected in seasons of drought, as the jhils, which are the most important source of supply, fail when they are most needed. There has, however, been some increase in the number of wells, especially since the famine of 1896. Temporary wells can be made in most parts when necessary, except in the sandy tract. The wells are worked to a large extent by hand labour, a number of men combining to draw water in a large leathern bucket. In the

east, where the spring-level is higher, the lever is used. Irrigation from tanks is carried on by means of the swing-basket. Small streams are used in a few places to supply water, their channels being dammed as required.

Kankar or calcareous limestone is found in block and Miserals in nodular form. It is used for making lime and for metalling roads, and was formerly employed as a building stone.

Few manufactures are carried on, and these are chiefly con-Arts and fined to the preparation of articles in common use for the local manufactures.

Cotton cloth is woven in several places, and cotton prints are also made. The District contains some fine specimens of wood-carving, and a little art pottery is made at blisway.

Biswan.

Strapur exports grain, oilseeds, raw sugar, and opium, and Commerce. imports piece-goods, yarn, metals, and salt. The export trade has expanded largely since the opening of the railway, and also received an impetus from the famine of 1896, when a surplus was available. The town of Strapur is the chief trading centre, and substantial bazars are springing up at other places along the railway. Towns at a distance from the line, especially those which are not situated on metalled roads, are declining in importance. Important fairs are held at Ninkhār and Khairābād.

The Lucknow-Bareilly metre-gange State Railway (worked Railways by the Rohilkhand and Kumaun Railway) passes through the and roads centre of the District from south to north. A branch of the Bengal and North-Western Railway from Burnwat, in Bāra Bankt to Shāpur town has been projected. Communications are fairly good, especially in the upland area. In the gānjar the floods during the rains make boats the only means of communication. There are 576 miles of road, of which 134 are metalled. The latter are in charge of the Public Works department, but the cost of all but 56 miles is met from Local funds. Shāpur town is the centre of the principal routes, which radiate to Lucknow, Shābjahānpur, and other places. Avenues of trees are maintained on 229 miles.

Disastrous floods sometimes cause distress in the east of the Famine. District, but the defective means of irrigation render the greater part of it more subject to drought. The great famine of 1783-4 was long remembered; and in 1837, 1860, and 1869 scarcity was experienced. In 1877 the rains failed, and relief works were opened, while large numbers were fed in poorhouses. The excessive rainfall of 1894 caused much damage to the

crops, and test relief works were opened early in 1895. In that year the mins ceased early, and in 1896 they failed to a still greater extent, and severe famine followed, which lasted till August, 1897. Numerous relief works were opened, advances were made for the construction of wells, revenue was suspended to the extent of 3 lakhs, and Rs. 67,000 was ultimately remitted. Much of the distress was, however, due to the inrush of paupers from areas worse affected, and the District recovered rapidly.

District

The Deputy-Commissioner usually has a staff of four Assistants, one of whom is a member of the Indian Civil Service, while the other three are Deputy-Collectors recruited in India. A tahiildar is stationed at the head-quarters of each tahiil, and there are two officers of the Opium department.

Civil justice and come. Civil work is in the hands of two Munsits, a Subordinate Judge, and an Assistant Judge. The District of Kheri is included in the jurisdiction of the Civil and Sessions Judge of Sitapur. Crimes of violence are common, and dacotties are frequent, though they are usually not of a professional type. Burglary and theft are, however, the commonest offences, and Pasts are responsible for a large share of the crime.

Lindrevenue administration.

After the restoration of order in 1858 the District was formed in its present shape. No details have been preserved of the first summary settlement in 1856, which set aside the rights of the talukdars to a large extent. At the summary settlement which followed the Mutiny the talukdars were restored, and the demand fixed on the basis of the accounts under native rule was 94 lakhs. The first survey and regular settlement were carried out between 1862 and 1872 by various officers who employed different methods. The work was rendered difficult by the fact that in an unusually large area the rents were paid in kind and not in eash. Attempts were made to frame standard rates, but these failed at first by not making sufficient allowance for local variations, and considerable modifications were necessary. Where cash-rents were found, they were used to estimate the value of grain-rented land, and estimates of produce were also made. The result was an assessment of 13 lakhs. As in the rest of Oudh, the Settlement officer sar as a civil court to determine claims to rights in land, but the work was on the whole lighter than in the southern Districts. The next revision was earried out between 1893 and 1897. There was no resurvey or formal revision of records, and the cost was extremely small. Rems in kind were still prevalent, only about 40 per cent, of the area

assessed being held on cash-rents. The latter were also found in many cases to be insecure, having been frequently fixed at excessively high rates, while in other cases they were special rates for particular crops. The valuation of the grain-rented land was thus extremely difficult; but in some localities the record of the produce of this land was found to be fairly accurate, while the accounts of estates managed by the Court of Wards and those of some private landholders were also available. The result was an assessment of \$5.4 lakhs, excluding villages liable to diluvion. This demand represented 46 per cent, of the assumed reotal 'assets,' and an incidence of Rs. 1-3 per acre, varying from R. 0-8 to Rs. 1-8 in different pargunar. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees:

| | 1 | 58n-1 | eliga-s. | LOOK-L | 1003-4 |
|----------------|---|-------|----------|--------|--------|
| Land revenue . | | 13,35 | 17,15 | 14,98 | 10,06 |

There are two municipalities, Strapur and Khairanao, and Local selfsix towns are administered under Act XX of 1856. Local government. affairs elsewhere are managed by the District board, which had an income of 1-3 lakhs in 1903-4, chiefly derived from rates. The expenditure in the same year was 1-4 lakhs, including Rs. 60,000 spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police has a force of 3 in-Police and spectors, 101 subordinate officers, and 358 men distributed julis in 11 police stations, besides 116 municipal and town police, and 2,467 rural and road police. The District jail contained a daily average of 378 prisoners in 1903.

Sitapur takes a low place in regard to the literacy of its Education, inhabitants, of whom only 2.5 per cent. (4.6 males and 0.2 females) could read and write in 1901. The number of public schools increased from 145 with 5,481 pupils in 1880-1 to 169 with 6,463 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 215 such schools with 9,009 pupils, of whom 401 were girls, besides 19 private schools with 232 pupils. About 1,300 pupils had advanced beyond the primary stage. Five schools are managed by Government and 188 by the District and municipal boards. The total expenditure on education was Rs. 53,000, of which Rs. 41,000 was provided from Local funds, and Rs. 8,000 by fees.

Hospitale and dispensaries. There are 11 hospitals and dispensaries, with accommodation for 185 in-patients. In 1903 the number of cases treated was 103,000, including 2,571 in-patients, and 3,950 operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 16,000, chiefly met from Local funds.

Vaccina-

About 78,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, representing the very high proportion of 66 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipalities.

(S. H. Butler, Settlement Report, 1899; H. R. Nevill, Dir.

trict Gazetteer, 1905.)

Sitapur Tahsil .- Head quarters tahsil of Sitapur District, United Provinces, comprising the parganas of Pirnagar, Khairābād, Rāmkot, Sitāpur, Lāharpur, and Hargām, and lying between 27° 19' and 27° 51' N. and 80° 32' and 81° 1' E., with an area of 570 square miles. Population increased from 201,190 in 1801 to 311,264 in 1901. There are 608 villages and three towns-SiTAPUR, the District and tuhsil head-quarters (population, 22,557), KHATRABAD (13,774), and Laharpur (10,997). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,91,000, and for cesses Rs. 64,000. The density of population, 546 persons per square mile, is above the District average. The tahsil lies chiefly in the central upland portion of the District, but a strip on the north-east extends into the damper low-lying tract. The Sarāyān is the principal river, crossing the western part, while its tributary, the Gond, rises in the centre. The lowlands are drained by the Kewanl and a small tributary called the Ghāgrā. In 1903-4 the area under cultivation was 415 square miles, of which 88 were irrigated. Tanks and jhils supply four-sevenths of the irrigated area, and wells most of the remainder.

Biswan Tahsil.—North-eastern tahsil of Sitapur District, United Provinces, comprising the parganas of Biswan, Tambaur, and Kondri (North), and lying between 27° 22' and 27° 44' Nand 80° 50' and 81° 20' E., with an area of 565 square miles. Population increased from 271,894 in 1891 to 297,277 in 1901. There are 501 villages, and one town, Biswan, the tahsil headquarters (population, 8,484). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,66,000, and for cesses Rs. 58,000. The density of population, 526 persons per square mile, is about the District average. The tahsil is bounded on the cest by the Gogra, which constantly overflows and shifts its channel, and on the north by the Dahāwar, a branch of the Sanda. Another branch of the Sarda, called the Chauka, flows sluggishly across

the centre. The eastern part is thus situated in a damp allovial tract, liable to severe floods; but the south-west stretches up to the elevated area in the centre of the District. In 1903-4 the area under cultivation was 416 square miles, of which only 36 were irrigated. Swamps and tanks supply more than two-thirds of the irrigated area.

Sidhauli. - South-eastern tahail of Shapur District, United Provinces, comprising the pargunas of Bari, Sadrpur, Kondri (South), Mahmüdabad, and Manwan, and lying between 27° 6' and 27° 31" N. and 80° 46' and 81° 24' E., with an area of 502 square miles. Population increased from 269,122 in 1891 to 299,492 in 1901, the rate of increase being the highest in the District. There are 544 villages and two towns, including MAHMIDABAB (population, 8,664). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,60,000, and for cesses Rs. 74,000. The taksil supports 597 persons per square mile, being the most densely populated in the District. It extends from the Gumii on the south-west to the Gogra on the east, and thus lies partly in the uplands and partly in the low alluvial tract bordering the latter river, which is also intersected by the Chanks. In 1903-4 the area under cultivation was 362 square miles, of which 98 were irrigated. Wells supply onefifth of the irrigated area, and tanks and jhils most of the remainder.

Misrikh.-Western tahül of Shapur District, United Provinces, comprising the parganas of Aurangabatd, Chandra, Korauna, Gundlamau, Machhrehta, Misrikh, and Maholl, and lying between 27° 12' and 27° 49' N, and 80° 18' and 80° 50° E., along the Gumti, with an area of 613 square miles. The Kathnā traverses the north-west of the tahsil, and the Sarāyān forms part of the eastern boundary. Population increased from 243,207 in 1891 to 267,440 in 1901. There are 640 villages and three towns, including Misrikh, the takeil headquarters (population, 2,966). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,88,000, and for cesses Rs. 66,000. The density of population is only 436 persons per square mile, a figure much below the District average. Along the Guntt is found a considerable area of light sandy soil, which is liable to fall out of cultivation in years of either excessive or deficient rainfall. The rest of the tahtil is composed chiefly of good loam. In 1903-4 the area under cultivation was 432 square miles, of which 94 were irrigated. Wells supply rather more than half the irrigated area, and tanks most of the remainder.

Mahmudābād Estate.- A large talukdāri estate in the Districts of Strapur, Bara Bankt, Khert, and Lucknow, United Provinces, with a total area of 307 square miles. The land revenue payable to Government amounts to 3-5 lakhs, and cesses to Rs. 55,000, while the rent-roll is 8-5 lakhs. The talukdar traces his descent from a Shaikh, named Nasrullah, who was Kāzī of Baghdād, but came to India in the twelfth century. His descendants for three generations held the office of Kazi of Delhi; and about 1345 Kazi Nusrat-ullah, also known as Shaikh Nathan, was sent by Muhammad bin Tughlak to reduce the Bhars in Bara Bankt. He was successful and received a large estate. Another member of the family, named Daud Khiin, was a celebrated soldier who did good service against Hima, the general of the Suris. His son, Mahmud Khan, was also a distinguished leader, and founded the town of Mahmudābād. The family maintained its position throughout the Mughal period, and their estates were largely extended under the Oudh rulers. Nawab All Khān received the title of Rājā from the king in 1850. A few years later he took a prominent part in the Mutiny, but submitted early in 1858. His successor, Muhammad Amir Hasan Khān, rendered important public services and was rewarded by the recognition of the title of Raia and the grant of a K.C.I.E. He was succeeded in May, 1903, by his son, Rājā Alī Muhammad Khān, a member of the Provincial Legislative Council. The chief town in the estate is MAHMUDABAD.

Biswan Town.-Head-quarters of the takiil of the same name, in Sitapur District, United Provinces, situated in 27" 26' N. and 81" 1' E, at the termination of metalled roads from Strapur and Sidhault railway station. Population (1901). 8,484. The town is said to have been founded about 1350 by a fakir named Biswa Nath. Some tombs of the early Muhammudan period are ascribed to followers of Saivid Salar. Biswan also contains a fine mosque built in the reign of Shah Jahan, and a stately palace, sarar, mosque, and dargan built by Shaikh Bari towards the close of the eighteenth century. Besides the usual offices there is a dispensary. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,000. A large market is held twice a week, and Biswan is celebrated for its tobacco, thrias or tibids, cotton prints, and printed pottery. Trade is declining, but may revive when the milway is constructed from Shapur to BURHWAL There are two schools.

Khairābād.-Town in the tahul and District of Sitapur, United Provinces, situated in 27° 32' N. and 80° 46' E., on the Lucknow-Bareilly State Railway. Population (1901), 13,774 Is was formerly a place of importance, and is said to have been founded by one Khaira, a Pasi, in the eleventh century. It is, however, more probable that the name was given by Muhammadans to an older town on the same site, and it has been identified with Masachhatra, an ancient holy place. A governor was stationed here by the early kings of Delhi, and under Akbar it was the capital of a sarkir. During the first half of the nineteenth century Khairābād was the head-quarters of an Oudh wixawar, and after annexation a Division took its name from the town, though the head-quarters of the Commissioner were at Stiapur. A number of temples and mosques are situated here, some of them dating from the reign of Akbar, but none is of much interest. Khairabad contains a branch of the American Methodist Mission. It has been a municipality since 1869. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 7,500. In 1903-4 the income was Rs. 9,100, chiefly from octroi (Rs. 5,300); and the expenditure was Rs. 12,300. Trade has suffered owing to the rise in importance of Sitapur; but there is a daily market, and a small industry in cotton-printing survives. A large fair is held in January. There are five schools, including two for girls, with about 300 pupils, and two dispensaries.

Läharpur.—Town in the tahstl and District of Stiapur, United Provinces, situated in 27° 42′ N, and 80° 55′ E., 17 miles north-east of Sitapur town. Population (1901), 10,997. It is said to have been founded by Firox Shah Tughlak in 1374, when on his way to the shrine of Saiyid Salar at Bahraich. Some years afterwards, one Lahurt, a Past, took possession of it, and changed its name to Laharpur. The Pasts gave way in the fifteenth century to the Musalmans, who were ousted about 1707 by the Gaur Rajpurs. Laharpur is famous as the birthplace of Raja Todar Mal, Akhar's great finance minister and general. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,800.

It contains a dispensary and two schools.

Mahmudabad Town.—Town in the Sidhault taknil of Shapur District, United Provinces, situated in 27° 18' N. and 81° 8' E., on a metalled road from Sidhaull station on the Lucknow-Bareilly State Railway. Population (1901), 8,664. It was founded by an ancestor of the Raja who owns the Mahmudabad Estate, and contains a fine mansion, which is

the family residence, and also a dispensary. A large market is held twice a week, and brass vessels are manufactured

There is a school with \$8 pupils.

Sitapur Town.-Head-quarters of the District of the same name, and cantonment, United Provinces, situated in 27° 34' No and 80° 40' E., on the Lucknow-Bareilly State Railway, and on metalled roads from Lucknow and Shahjahanpur. Population (1901), 22,557, of whom 3,603 reside in cantonments. At annexation in 1856 the town was a small place, and its growth has been rapid. The town and station are prettily situated and well laid out. Besides the usual offices, it contains male and female hospitals, and a branch of the American Methodist Mission. Sitäpur has been a municipality since 1868. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 32,500 and Rs. 30,500, respectively. In 1903-4 the income was Rs. 38,000, chiefly derived from octroi (Rs. 16,500) and rents and market dues (Rs. 13,000); and the expenditure was Rs. 53,000. This is the chief commercial centre in the District, with a large export trade in grain, the principal market being called Thompsonganj, after a former Deputy Commissioner. There are five schools, attended by about 500 pupils. The cantonment is garrisoned by a portion of a British regiment. During the ten years ending roos the income and expenditure of cantonment funds averaged Rs. 12,000. In 1903-4 the income was Rs. 14,000, and the expenditure Rs. 17,000.

Boondaries. configuratime, and tiver system.

Hardoi District,-Western District of the Lucknow Division, United Provinces, lying between 26° 53' and 27° 47' N. and 79" 41' and 80" 49' E., with an area of 2,221 square miles. It is bounded on the north by Shāhjahānpur and Khert; on the east by the Gumti river, which separates it from Sitapur; on the south by Lucknow and Unao; and on the west by Cawnpore and Farrukhābād, the Ganges forming part of the boundary. Hardor is a level plain, with unimportant elevations and depressions. Along the Ganges in the south west is found a strip of damp alluvial ground, while the rest of the District lies in the uplands, which contain sandy hillocks and ridges both on the east and west, and sink a little towards the centre. The chief tributary of the Ganges is the RAMGANGA, a large river with a very variable channel, which traverses the west of the District and is joined near its confluence with the Ganges by the Garra. Through the central depression flows the Sai, while the Gunti forms the castern boundary, its banks being marked by rolling hills and

undulating plains of sandy composition, and by small ravines. In the central depression are found many *jkili* or swamps, the largest of which is the Dähar Lake near Sändi, and the same tract contains broad stretches of barren *ūsar* land.

The District exposes nothing but alluvium, in which kankar Geology, or calcareous limestone is found. The tisar or barren land is often covered with saline efflorescences.

Hardoi still contains a large area of jungle and uncultivated Bousyland; but the former is chiefly composed of dhāk (Butes frondess), and the only vegetation on the sand-hills is a tall grass, whose large waving white plumes form a graceful feature in the landscape. Fig trees, especially the banyan, and bamboos are numerous; but groves of mangoes are not so common as in the neighbouring Districts, though their area is increasing.

Wolves are found near the Gumti, and nilgai haunt a few Facuajungles. The antelope is still common in most parts. Jackals and hares are very abundant. The District is rich in wildfowl, and fish are caught in all the larger rivers and tanks.

The District is generally healthy, and its climate is cooler Climate and drier than the greater part of the rest of Oudh. The and temperature mean monthly temperature ranges from about 50° in January to 95° in June, while the maximum seldom rises above 105° in the shade.

Rain is equally distributed in all parts, the average annual Rainfall, fall being about 32 inches. Large variations from year to year are, however, common. Thus, in 1867 the rainfall amounted to 67 inches, and in 1896 to only 17 inches.

The early traditions of this District are connected both with Hatory. the Mahabharata and the Ramayana. During the Buddhist and early Hindu period its history is a blank. According to popular legend, the Rajputs and early Muhammadan settlers found the District inhabited by Thatheras. It is, however, probable that these were not the brass and copper workers who are now called by this name, but that the word has been altered by a false etymology. A general in the army of Mahmud of Gharni is said to have raided the District in roug, after the fall of Kanauj, and many traditions are current about the passage of Saiyid Salar a few years later. Muhammadan rule did not, however, commence till the reign of Altamsh, when the whole District was acquired. In the fifteenth century Hardol passed under the new kingdom of Janupur; and owing to its situation near the fords leading to the great city of KANAUJ it formed the scene of many sanguinary battles during the next 150 years. It was here that the Sharkt kings of Jaunpur mustered their forces and bade defiance to the Lodi sovereigns of Delhi. After their defeat at Pănipat în 1526 the Afghān nobles still held Kanauj and the country north-cust of the Ganges. Babar and his son and successor, Humayan, drove out the Afghans for a time ; but when Humāyan had suffered defeat at Chausa in 1530, his own brother turned against him and seized Bilgram. In the following year Sher Shah marched through the District and encamped opposite Kanaui, which was occupied by Humdytin. The emperor crossed the river, but his defeat entailed the downfall of Mughal rule for the time. The Afghans were finally subdued early in the reign of Akbar, who included the District in the surkars of KHAIRABAD and Lucknow, and little is known of it till the break-up of the Mughal empire. Hardor formed part of the territory of the Nawabs of Oudh, and from its position was the border-land between Shuja-ud-daula and the Robillas. From 1773 a brigade of British troops was stationed close to Bilgram for a few years, till its transfer to Cawnpore. In later times Hardot was one of the most lawless tracts in the whole of Oudh, and Sleeman described the talukdars in 1849 as openly defiant of the king's officers. At annexation in 1856 a District was formed with head-quarters at MALLANWAN.

A year later the Mutiny broke out and the country was plunged into anarchy. A column of 400 sepoys, who had been dispatched from Lucknow, broke into rebellion early in June, when the Ganges was reached. The troops at Mallanwan also mutinied and seized the treasury, but the District officials escaped to Lucknow. All the haladdars, with the exception of the Raja of Katiyari, and the people generally joined in the rebellion and sent levies to Lucknow. In April, 1858, after the fall of the capital, General Walpole marched through, fighting two engagements; but it was not till near the close of the year that the rebels were finally reduced. The head-quarters of the District were then moved to Hardot.

Archaeology. Many ancient mounds, which are locally ascribed to the Thatheris, may contain relics of Buddhist and early Hindu periods, but they still await exploration. The chief Muhammadan remains are at BILGRAM, MALLANWAN, PINASI, and SANDI.

The people.

The District contains to towns and 1,888 villages. Population increased between 1869 and 1891, but decreased slightly in the next decade. At the four enumerations the numbers were: 931,377 (1869), 987,630 (1881), 1,113,211 (1891), 1,092,834 (1901). There are four taksils-HARDOL SHAHABAD, BIL-GRAM, and SANDILA-each named from its head-quarters. The principal towns are the municipalities of Shananab, SANDILA, and HANDOI, the District head-quarters, and the 'notified areas' of Sanpi and Pistani. The following table gives the chief statistics of population in 1901 :-

| Tuknt. | Arres in square miles. | Tower | Allighter | Population | Population per square mile. | Percentage of variation in population for freen 1591 and 1901. | Number of persons able to rend and write |
|----------------|---------------------------|-------|-----------|------------|--------------------------------|--|---|
| Hardet | 635 | 3 | 470 | 282,158 | 444 | - 7.8 | 5,115 |
| Shillabid . | 342 | 3 | 318 | 750:833 | 467 | + 1.0 | 4.719 |
| Bilgrim | 595 | 4 | 485 | 293,648 | 493 | + 4-3 | 5,300 |
| Sandila . | 558 | t | 412 | 266,195 | 477 | - 40 | 4,835 |
| District total | 2,331 | 10 | 1,888 | 1,092,834 | 469 | - 1/8 | 19,981 |

About So per cent, of the population are Hindus and nearly 11 per cent. Musalmans. The density of population is low for Oudh. Between 1891 and 1901 large areas in Hardot suffered from floods and later from drought. Western Hindi is spoken by the entire population, the Kanaujiā dialect being the commonest.

The most numerous Hindu castes are Chamars (tanners Castes and and cultivators), 171,000; Brahmans, 115,000; Pasts (toddy, occupadrawers and cultivators), 80,000; Ahirs (graziers and cultivators), 80,000; Thakurs or Rajputs, 78,000; Kachhis (marketgardeners), 45,000; and Gadarias (shepherds), 41,000. The Arakhs, who are skin to the Pasts and number 24,000, are not found elsewhere in such large numbers. Among Muhammadans are Pathans, 19,000; Shaikhs, 15,000; and Julahas (weavers), 13,000. Agriculture supports 74 per cent. of the total population, and general labour nearly 6 per cent. Raiputs hold nearly two-thirds of the land.

In 1901 there were 485 native Christians, of whom 437 were Christian Methodists. The American Methodist Mission commenced inhalous. work in 1869 and has six churches, thirty-three day-schools, a training school, and an orphanage.

Hardot is liable to considerable fluctuations in prosperity, General owing to poverty of soil in some parts, liability to floods agriculin others, and a deficiency of irrigation. A tract of high conditions, sandy bhur lies along the eastern border near the Gumti, in which cultivation is much scattered and the best crops can

A B

be grown only near village sites. The central tract is more fertile, but even this is interrupted by barren stretches of usar and by swamps, while bhur reappears along the Sai. West of the central area of loam and clay rises a considerable ridge of sandy soil, which broadens out into a wide tract near the north. Throughout the District the bhue is precarious, as it suffers both from drought and from floods, and to produce good crops requires a particular distribution of the rainfall. The inferior character of much of the soil is clearly shown by the large area producing barley, bajra, and gram. In the Ganges valley, and to a smaller extent in the valleys of the other rivers, an area of rich alluvial soil is found, which is, however, liable to floods.

Chief agricultural etatistics

The tenures of Hardot are those common to Oudh. dirs own about 24 per cent, of the total area, about 5 per cent. being sub-settled. More than half is held in pattidari tenure. and princi- The main agricultural statistics for 1903-4 are shown below, pal crops. in source miles :-

| Takiti. | | | | Total. | Cultivated | Irrigated | Cultivable waste | |
|-----------|---|-----|------|--------|------------|-----------|---------------------|--|
| Hardot | × | | | 633 | 43# | 143 | 110 | |
| Shāhābād* | | 1.5 | 1+ | 542 | 365 | 69 | ton | |
| Bilgram | | | | 1196 | 401 | 91 | 81 | |
| Sandtla | | in. | 8 | 558 | 338 | 116 | 86 | |
| | | T | Into | 2,331 | 34537 | 430 | 353 | |

* Figures for 1001-2.

Wheat is the crop most largely grown, covering 470 square miles or 31 per cent, of the total area. The remaining food-crops of importance are; barley (273), bajra (230), gram (195), arhar (153), and pulses (114); while former, rice, and maize are grown to a smaller extent. Poppy is the chief non-food crop (32 square miles). Sugar-cane and cotton are not much cultivated.

improve ments in agricultural practice.

The area under the plough is increasing, but is liable to great fluctuations owing to vicissitudes of season. It amounted to 1,320 square miles in 1864, and rose to an average of 1,448 square miles during the four good years 1886-go, but fell to 1.415 in 1894. By 1903-4 it had risen to 1,537 square miles. An enormous increase has taken place in the area bearing two crops in a year, which also varies considerably. The increase is attended by a distinct improvement in the staples, especially since the famine of 1896-7. Thus the area under wheat, maize, sugar-cane, poppy, and garden produce is gaining at the expense of inferior crops. A special officer of the Irrigation department has recently been posted to Hardot, to inquire into the possibility of improving the drainage of the District. Large advances have been made under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Act, amounting during the ten years ending 1901 to a total of 5-5 lakhs, of which 2-3 lakhs was lent in the famine year, 1896-7. In the next four years the loans averaged only Rs. 2,400. A few small co-operative credit societies have been opened and two or three are flourishing.

The cattle are rather better than those of southern Oudh, Cattle, but the area available for grazing is decreasing. The Bancar pontes, breed has some reputation for hardiness and activity. Ponies are unusually plentiful, but are of a poor stamp and are chiefly used as pack-animals. A stallion has been kept in the District since 180 t, and another was tried for some years, but horsebreeding has not become popular. Sheep and goats are very largely reared, the former for wool and the latter for their flesh,

milk, and manure.

Only 420 square miles were irrigated in 1903-4. Wells Irrigation. supplied 203 square miles, tanks or jhile 191, and other sources 26. The sandy bhur is not suitable for the construction of wells, but they can be made elsewhere, and large numbers of temporary wells are dug annually. During the recent famine about 20,000 such wells were made in a few weeks with the help of loans advanced by Government. Water is usually raised from wells in a leathern bucket by bullocks, but the buckets are also worked by relays of men. Where the water is near the surface the dhenkli or lever is used, and irrigation from tanks or jhils is effected by the swing-basket. The small streams are used for irrigation to a larger extent than elsewhere in Oudh, but the Sai is the only considerable river from which a supply is obtained. A scheme has frequently been discussed to construct a canal from the Sarda, but the project has been abandoned. Part of the cutting made by the kings of Oudh early in the nineteenth century to connect the Ganges and Gunti is still visible in the south-west of the District, but has never been used for irrigation.

Kankar or nodular limestone is found in most parts of the Minerals. District, and is used for metalling roads and for making lime. Saltpetre is extracted from saline efflorescences at several

places, the largest factories being at Hardoi town.

The manufactures are not important. Cotton cloth is woven manufacin a few towns and villages, but there is little demand for the tures.

finer products of the loom, which once had some reputation. The curtains and tablecloths made at Sandila are, however, of artistic merit. Blankets, sacking, rope, string, and nets are also turned out. Vessels of brass and bell-metal are made at Mallanwan, and silver rings at Gopamau. Carpentry is of some importance at Hardot town, and a little wood-carving is produced in several places.

Commerce.

Hardol exports grain, raw sugar, tobacco, hides, cattle, and salpetre, and imports piece-goods, metals, salt, cotton, and refined sugar. Grain is exported to Calcutta and Bombay, and sugar to Central India. A good deal of sugar and even sugarcarie is sent from the north of the District to the Rosa factory near Shāhjahānpur. Hardol town is the chief mart, while Sandila, Mādhoganj, and Sāndi are increasing in importance. Several of the old trade centres have suffered from the changes made in trade routes by the alignment of the railway.

Railways and roads, The main line of the Oudh and Rohilkhand Railway traverses the District from south-east to north-west. A branch from Balamau leads to Rūdamau and Mādhoganj, and the construction of other branches is contemplated. The improvement of roads was long delayed in Hardol: but the District now contains 634 miles of road, of which 92 are metalled. The latter are maintained by the Public Works department, but the cost of all but 4 miles is charged to Local funds. Avenues of trees are maintained on 179 miles. The chief metalled roads are feeders to the railway. Shahābād, Sāndi, and Mailānwān lie on the old road from Delhi to Benares north of the Ganges.

Famine.

From the physical characteristics of its soil, the District is liable to suffer considerably from irregularities in the rainfall. Between 1868 and 1874 alternate floods and droughts had so affected the agricultural prosperity that the settlement was revised. The failure of the mins in 1877 caused general distress, especially among the labouring classes, and small relief works were opened in January, 1878. In 1893 and 1894 much damage was done by excessive rain, which threw large areas out of cultivation. The following year was marked by an tmeven and scanty distribution of the monsoon, and there was acute distress as early as November, 1895. Test works were opened early in 1896, and famine conditions were established by June. The rains failed, and the District experienced the worst famine recorded. By May, 1897, more than 113,000 persons were employed on relief works. The revenue demand was suspended to the extent of 5-7 lakhs, and 5-8 lakhs was subsequently remitted. Since the famine the District has recovered rapidly, and in 1901 it was noted that unskilled labour was difficult to obtain.

The Deputy-Commissioner is usually assisted by a member District of the Indian Civil Service (when available), and by four stall. Deputy-Collectors recruited in India. Two officers of the Opium department are stationed in the District, and a tahsildar is in charge of each taksit,

Civil work is disposed of by two Munsifs and a Subordinate Civil Judge subordinate to the Judge of Hardoi, who is also Civil justice and and Sessions Judge for Unao. Hardoi is not remarkable for any particular form of crime, though murders were formerly frequent. Dacoity of a professional type is prevalent at intervals. Wandering tribes, especially Haburas, are responsible for many offences against property, and the District is the home of about 100 families of Barwars, who commit their depredations at a distance.

Under the Nawab's government the revenue demand of the Land District was 14-6 lakhs, and this was taken as the basis of the adminissummary settlement made at annexation in 1856. After the tration. Muriny a second summary settlement was made, the demand amounting to 10-2 lakhs with cesses. A survey and regular settlement followed between 1860 and 1871, which involved the determination of a vast number of suits for rights in land. The assessment was based partly on estimates of the agricultural produce, and partly on assumed rent-rates derived from personal inquiries. The revenue so fixed amounted to 14-3 lakhs; but before the settlement had been confirmed a series of had years occurred, and a revision took place in 1874 by which the demand was reduced to 13-3 lakhs. The next settlement was made between 1892 and 1896, and was primarily based on the recorded rents. 'The proposed demand was 16-1 lakhs; but owing to the succession of bad seasons during and after the assessment it was decided to make a complete revision, which accordingly took place between 1900 and 1903, and the demand was reduced by Rs. 48,000. The revenue in 1903-4 amounted to 15-8 lakhs, with an incidence of R. 1 per acre, varying from R. o 7 to Rs. 1-5 in different pargusar. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees :-

| | (30h)-1. | (figure). | (q00-t) | 1005-4 |
|--------------|----------|-----------|---------|--------|
| Land revenue | | 15,49 | | |

Local selfgovernment.

Three towns are administered as municipalities and two as 'notified areas,' while four more are under the provisions of Act XX of 1856. Local affairs beyond the limits of these are managed by the District board, which in 1903-4 had an income of Rs. 90,000, chiefly derived from rates. 'The expenditure in the same year amounted to 1-2 lakhs, including Rs. 56,000 spent on roads and buildings.

Police and jails, The District Superintendent of police has under him a force of 3 inspectors, 95 subordinate officers, and 336 constables, distributed in 13 police stations, and there are also 183 municipal and town police, and 2,370 rural police. The District jail contained a daily average of 321 inmates in 1903.

Education

Few Districts in the United Provinces are so backward as Hardot in regard to education. In 1901 only 1-8 per cent of the population (3-3 males and 0-1 females) could read and write. The number of public schools fell from 153 in 1880-1 to 138 in 1900-1, but the number of pupils increased from 5,108 to 5,886. In 1903-4 there were 160 such schools with 7,376 pupils, of whom 253 were girls, besides 106 private schools with 1,551 pupils. Only 1,879 of the total number of scholars were above the primary stage. Four schools were under the management of Government and 159 under the District or municipal boards. Out of a total expenditure on education of Rs. 45,000, Local funds provided Rs. 36,000, and fees Rs. 7,000.

Hospitals and dispenanties. There are seven hospitals and dispensaries, with accommodation for eighty-four in-patients. In 1903 the number of cases treated was 52,000, including 853 in-patients, and 2,297 operations were performed. The expenditure amounted to Rs. 10,000, thiefly met from Local funds.

Vaccina-

About \$1,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, representing the high proportion of 46 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipalities.

(H. R. Nevill, District Gauetteer, 1904.)

Hardoi Tahsil.—Head-quarters taksil of Hardoi District, United Provinces, comprising the parganas of Bangar, Gopaman, Sarah (South), Bawan, and Barwan, and lying between 27° 9' and 27° 39' N. and 79° 50' and 80° 28' E., with an area of 635 square miles. Population fell from 306,071 in 1891 to 282,158 in 1901, the rate of decrease being the highest in the District. There are 470 villages and two towns: Hardoi, the District and tahsil head-quarters (population, 12,174), and Gopamau (5,656). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,99,000, and for cesses Rs. 68,000. The density of

population, 444 persons per square mile, is below the District average. The tahril is bounded on the east by the Gumti. It is also crossed by the Sai, and the western portion extends beyond the Garra. It therefore includes a great variety of soil, ranging from the sandy bhur near the Gumti across the central uplands to the alluvial soil near the Ramganga. In 1903-4 the area under cultivation was 432 square miles, of which 143 were irrigated. Wells supply two-thirds of the irrigated area, and tanks or jhile most of the remainder.

Shāhābād Tahsil.-Northern tahsil of Hardol District, United Provinces, comprising the parganas of Alamnagar, Shāhābād, Sarah (North), Pandarwa, Saromannagar, Pachhobā, Pall, and Mansurnagar, and lying between 27° 25' and 27° 47' N, and 79° 41' and 80° 19' E, with an area of 542 square miles. Population increased from 248,034 in 1891 to 250,533 in 1901. There are \$18 villages and three towns, Shahaban, the tahiil head quarters (population, 20,036), and Pinani (7,616) being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,31,000, and for cesses Rs. 53,000. The density of population, 462 persons per square mile, is almost equal to the District average. Shāhābād is a poor tuhiil, containing large areas of sandy soil. It lies between the Sendha, a tributary of the Rāmgangā, on the west, and the Gumti on the east, and is also crossed by the Garra and its tributary the Sukheta, and by the Sai. In 1901-2 the area under cultivation was 365 square miles, of which 69 were irrigated. Wells supply two-thirds of the irrigated area, and tanks and small streams the remainder.

Bilgram Tahsil, South-western tahsil of Hardot District, United Provinces, comprising the parganas of Bilgram, Sandi, Katiyāri, Mallānwān, and Kachhandau, and lying between 26° 56' and 27° 27' N. and 79° 41' and 80° 18' E., with an area of 596 square miles. Population increased from 281,747 in 1891 to 293,948 in 1901. There are 485 villages and four towns: BILGRAM, the takel/ head-quarters (population, 11,160), Mallanwan (11,158), Sandi (9,072), and Midhogani (3,594). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,24,000, and for cesses Rs. 70,000. The density of population, 493 persons per square mile, is the highest in the District, and this is the only taksil of Hardoi which showed an appreciable increase between 189r and 190r. On the south-west the takeil is bounded by the Ganges, which is joined by the Kamganga, the Garra meeting the latter river close to the confluence. A large portion of the west and south-west lies in the alluvial lowlands. In 1903-4 the area under cultivation was 402 square miles, of which 92 were irrigated. Wells supply nearly three-quarters of the irrigated area, and tanks and small streams the remainder.

Sandila Tahail.-South-eastern tahail of Hardor District, United Provinces, comprising the parganar of Sandila, Kalyanmal, Gundwa, and Bālāmau, and lying between 26° 53' and 27" 21' N. and So" 16' and So" 40' E., with an area of 558 square miles. Population fell from 277,350 in 1801 to 266,195 in 1901, the rate of decrease being the largest in the District. There are 415 villages and only one town, SANDILA, the takil head-quarters (population, 16,843). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,28,000, and for cesses Rs. 68,000. The density of population, 477 persons per square mile, is slightly above the District average. The tahsil lies between the Gumti on the north-east and the Sai on the south-west. Near the rivers inferior sandy tracts are found, the banks of the Gumti being especially poor. In 1903-4 the area under cultivation was 338 square miles, of which 116 were irrigated. Wells and tanks are almost equally important as a source of supply, and the liability of the latter to fail in dry seasons renders the tract very insecure.

Bilgram Town,-Head-quarters of the taksil of the same name, Hardot District, United Provinces, situated in 27" 11'N. and 80° 2' E., at the termination of a metalled road from Hardol town. Population (1901), 11,190. Tradition states that this place was held by the Thatheras. These were expelled by the Raikwärs under Raja Sri Ram, who founded a town which he named after himself, Srinagar. 'The Raikwars in their turn were ousted by the Muhammadans about 1217. A Muhammadan saint, whose tomb is the oldest in the place, is said to have slain a demon, named Bil, by his enchantments, and the name of the town was changed to Bilgram. Hindus have a similar tradition, in which the exploit is attributed to Balarama, brother of Krishna. The place is built on and around a lofty bluff, and in the older part of it many fragments of carved stone bas-reliefs, pillars, and capitals of old Hindu columns are found. Numerous mosques and dargant adorn Bilgram, some of them dating from the thirteenth century. Bilgram is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 3,600. Its trade has declined, but there is still some traffic with Hardot and Madhoganj, and cloth, glazed pottery, carved doors and lintels, shoes, and brass-ware are produced. The town contains a dispensary, a munsifi, a branch of the American Methodist

Mission, and two schools with 158 pupils. It has produced a number of Mahammadans who have attained distinction as officials or in literature.

Gopamau .- Town in the takst and District of Hardot, United Provinces, situated in 27° 32' N. and 80" 18' E., near the Gunti. Population (1901), 5,656. According to tradition, it was founded in the eleventh century by an Ahhan chief, named Raja Gopt, who drove out the Thatheras from what was then a clearing in the forest. The Muhammadan invasion is said to date from the invasion of Oudh by Saiyid Salar, but the first authentic occupation was in the thirteenth century. The town flourished under native rule and sent out numbers of distinguished soldiers and men of letters, who returned to adorn their native place with mosques, wells, and large buildings. It is now a place of small importance and has little trade; but silver thumb-rings made locally, in which small mirrors are set, have some artistic merit. There is a school

with 112 pupils.

Hardoi Town. Head-quarters of the District of the same name, United Provinces, situated in 27° 23' N. and 80° 7' E., on the Oudhand Rohilkhand Railway. Population (1901), 12,174-The native town consists of two parts: old Hardot, a village standing on an aucient mound, and the new town which has sprung up since the head-quarters of the District were moved here after the Mutiny. The public buildings include, besides the usual courts, male and female dispensaries, and a fine hall containing the municipal and District board offices, a public library, and a club. The American Methodist Mission has its headquarters here and supports an orphanage. Hardot has been a municipality since 1871. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 14,500. In 1903-4 the income was Rs. 20,000, chiefly from a tax on professions and trades (Rs. 7,000) and from rents and market dues (Rs. 7,000); and the expenditure was Rs. 24,000. Hardot is the centre of an export trade in grain, and is also celebrated for woodwork. Two large saltpetre factories have an annual output valued at about half a lakh. There are four schools for boys and two for girls, with a total of 450 pupils.

Mallanwan,-Town in the Bilgram takul of Hardot District, United Provinces, situated in 27" 3' N. and 80" 9' E., on the old route from Delhi to Benares, north of the Ganges, Population (1901), 11,158. The Shaikhs who inhabit the place claim to have come with Saiyid Salar, and it was of some importance under native rule. In 1773 a force of the Company's troops was cantoned between Mallanwan and Bilgram, but was removed soon after to Cawnpore. At annexation in 1856 Mallanwan was selected as the head-quarters of a District; but after the Mutiny the offices were removed to Hardot. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,700. There is a considerable manufacture of vessels of brass and bell-metal. The school has 216 pupils, and the American Methodist Mission has a branch in the town.

Pihāni. - Town in the Shāhāhād takil of Hardol District. United Provinces, situated in 27° 37' N. and 80° 12' E., 16 miles north of Hardot town. Population (1901), 7,616. The Hindus trace the foundation of the town to a settlement of Brahmans, while the Musalmans claim that it was founded by Saiyid Abdul Ghafur, Kazī of Kanani, who remained faithful to Humayan after his defeat by Sher Shah. Several of his descendants attained high rank, while his nephew became chief mufti under Akbar, with the title of Sadr Jahān. His tomb and mosque are the chief adornments of the town. Pihant was administered as a municipality from 1877 to 1904. when it was constituted a 'notified area.' During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 4,000. In 1903-4 the income and expenditure were Rs. 7,000. Pihani was formerly noted for the manufacture of sword-blades of the finest temper, and of woven turbans, but both of these arts have declined. There are three schools, including one for girls, attended in all by 250 pupils, and the American Methodist Mission has a branch bette.

Sandi.—Town in the Bilgram takin of Hardot District, United Provinces, situated in 27° 18' N. and 79° 58' E., at the termination of a metalled road from Hardot town. Population (1901), 9,072. The name is said to be derived from Rājā Santān, a Somavansi of Jhūst, who expelled the Thatherās and founded a fort. Sāndī was subsequently acquired by Saiyids, who held it for many years. It is autrounded by fine groves of mangoes, and north-east lies the great Dātara Lake. Sāndī was a municipality from 1877 to 1904, when it was constituted a 'notified area.' During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 4,200, and in 1903-4 amounted to Rs. 9,000. There is an important market, and the town produces blankets and small cotton carpets and cloth. There are two schools with 200 pupils, and a branch of the American Methodist Mission is maintained here.

Sandila Town.-Head-quarters of the tahril of the

same name, Hardot District, United Provinces, situated in 27° 4' N. and 80° 30' E., on the Oudh and Rohilkhand Railway. Population (1901), 16,843. The town is said to have been founded by Arakhs, who were expelled towards the end of the fourteenth century by the Musalmans. It was visited by Firoz Shith Tughlak, who built a mosque, now in ruins. Other mosques are of later date; and a remarkable building called the Bara Khambka or 'twelve pillars,' which contains a tomb, was erected in Akbar's reign. Sandila possesses male and female hospitals and a town-hall, besides the usual offices. It has been administered as a municipality since 1868. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 11,000. In 1903-4 the income was Rs. 12,000, chiefly from octrol (Rs. 8,000); and the expenditure was Rs. 14,000. A market is held twice a week, and there is a large export trade in firewood sent to Lucknow. The town also exports pan, ghi, and sweetmeats. Manufactures include art pottery, cotton curtains, and tablecloths which bear artistic designs in large checks. There are three schools for boys and two for girls, with a total of 430 pupils, and the American Methodist Mission has a branch here.

Shahabad Town.-Head-quarters of the taksil of the same name, Hardoi District, United Provinces, situated in 27° 38' N. and 79° 57' E., on the Oudh and Rohilkhand Railway. Population (1901), 20,036. The town was founded in 1677 by Nawab Diler Khan, an Afghan officer of Shah Jahan, who was sent to suppress a rising in Shāhjahlinpur. Diler Khan built a large palace called the Bart Deorhi, and filled the town with his kinsmen and troops. Shahabad rose to considerable importance during Mughal rule, but declined under the Nawāhs of Oudh. It was still a considerable town when visited by Tieffenthaler in 1770, but Tennant found it an expanse of ruins in 1799. In 1824 Bishop Heber described it as a considerable town or almost city, with the remains of fortifications and many large houses. The inhabitants have obtained notoriety for the ill-feeling which exists between Hindus and Musalmans, and serious riots took place in 1850 and 1868. Nothing is left of the Hari Deorhi but two fine gateways, and Diler Khan's tomb is also in ruins. The fine Jama Masjid erected by the same noble is still used. Shahabad contains the usual takitli offices and also a muntifi, a dispensary, and a branch of the American Methodist Mission. It has been administered as a municipality since 1872. During the ten years ending 1907 the income and expenditure averaged

Rs. 11,000. In 1903-4 the income was Rs. 17,000, chiefly derived from taxes on houses and professions and trades, and from rents and market dues, while the expenditure was also Rs. 17,000. A daily market is held, and grain and sugar are exported. The town is noted for the vegetables and fruit produced in the neighbourhood. Fine cloth used to be woven here, but the manufacture is extinct. There are three schools for boys and one for girls, with a total of 400 pupils.

Bounand river system.

Kheri District (Khiri),-Nonthern District of the Luckdaries, con- now Division, United Provinces, lying between 27° 41' and 28° 42' N. and 80° 2' and 81° 19' E., with an area of 2,063 square miles. In shape it is roughly triangular, the flattened apex pointing north. The District is bounded on the north by the river Mohan, separating it from Nepill; on the east by the KAURIALA river, separating it from Bahraich; on the south by Strapur and Hardot Districts; and on the west by Pilithilt and Shahiahanpur. An old bed of the Sanna or Chanka, called the Ul, which again joins that river, divides Kheri into two portions. The area lying north-east of the UI is a wild tract of country, which forms practically a vast riverbed in which the Sărdă has worn several channels. The widely scattered village sites are perched on the highest ground available, and in the north stretch large areas of forest. During the rains the old channels fill with water, and the courses of the rivers vary from year to year. The greatest volume of water is carried by the Sarda or Chauka, which divides into two branches on the southern border. One of these, called the Dahawar, forms, for a short distance, the boundary between Kheri and Strapur, and flows into the Kauriala. North of the Sarda lies an old bed called the Sarja or Suhell, which also discharges into the Kauriala and receives many small tributaries from the north. The portion of the District lying south-west of the UI is drier and more stable, but is also traversed by a number of streams, of which the most important are the Sarayan, Kathna, and Gunni, while the Sukheta flows along the south-west border. The District is studded with many lakes, which in the north-east take the form of deep pools marking the beds of old channels of the rivers, while in the south-west they are large shallow awamps or sheets of water, drying up in the hot weather,

Geology.

Betany.

The District exposes nothing but alluvium, and kankar or nodular limestone is the only stony formation.

Khert contains the luxurious vegetation found in the damp submontane tract. Besides the forests, which chiefly produce sal and will be described separately, groves of mangoes are

common, and there are a few areas of dhak (Butea frondata)

and other scrub jungle.

The large forest area gives shelter to many wild animals. Fenna. Tigers, bears, and wolves are not rare, while leopards, wild dogs, hyenas, jungle-cats, and jackals are more common. Five species of deer are found, the swamp deer being the commonest, and a fair number of antelope, and great quantities of nilgai and hog. Game birds are in abundance. Fish are plentiful, and maliseer are caught in all the large rivers.

South-west of the Ul the country is generally healthy. The Climate strip of jungle along the Kathnā is still malarious, but is gradu-perature, ally being reclaimed. North-east of the Ul, and especially beyond the Chanka, the climate is exceedingly damp and feverish. The District generally is comparatively cool, and

enjoys a mean annual temperature of about 70°.

The rainfall is high; the annual average amounts to 46 inches, Rainfall. the south-west receiving less than the north-east. Variations from year to year are considerable, and the total has fluctuated from 70 inches to 24.

Traditions point to the inclusion of this tract in the realm History of the Lunar race of Hastinapur, and several places are con-archaeonected with episodes in the Mahabharata. The early history is, logs. however, entirely unknown. The northern part was held by Raiputs in the tenth century, and tradition relates that they disposessed the Pasis and other aboriginal tribes. Musalman rule spread slowly to this remote and inhospitable tract, and it was probably not before the fourteenth century that a chain of forts was constructed along the northern frontier to prevent the incursions of marauders from Nepāl. Under Akbar the District formed part of the sarkar of Khairanan in the Subah of Oudh. The later history is merely that of the rise and decline of individual families, and is of purely local importance. When ROBILKHAND was ceded to the British in 1801 part of this District was included in the cession, but it was restored to Outh after the Nepalese War in 1814-6. On the annexation of Oudh in 1856 the west of the present area was formed into a District called Muhamdi and the east into Mallanpur, which also included part of Shapur. A year later Muhamdi became one of the chief centres of disaffection in northern Oudh. The refugees from Shāhjahānpur reached Muhamdi on June 2, and two days later that place was abandoned; but the whole party, with few exceptions, were shot down on the way to Strapur, and the survivors died or were murdered later at Lucknow. The British officials at Mallanpur, with a few who had fled from

Sitapar, escaped to Nepll, where most of them died. No real attempt to recover the District was made till October, 1858, but peace was restored before the end of that year. The headquarters of the single District then formed were moved to Lakhtmpur shortly afterwards.

Many villages contain ancient mounds in which fragments of scuipture have been found, Balmiār-Barkhār and Khairigarh being the most remarkable. A stone horse found near Khairigarh bears an inscription of Samudra Gupta, king of Magadha, dated in the fourth century A.D. Gol. possesses a celebrated temple.

The people.

There are 5 towns and 1,659 villages. Population is increasing steadily. At the four enumerations the numbers were: 738,089 (1869), 831,922 (1881), 903,615 (1891), 905,138 (1901). The District is divided into three tabilit—Muhamni, Nidhāsan, and Lakhīmpus—each named after its head-quarters. The municipality of Lakhīmpus, the 'notified area' of Muhamni, and the town of Golā are the principal places. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takzit. | in whats | 1 | nher of | alistina, | tetin per | attor in utfor he en 1691 | mber of one able and and |
|----------------|----------|-----|---------|-----------|-----------|---------------------------------|--------------------------------|
| | Area | Tow | Valley | Pop | Popul | THE STATE | Na Perio |
| Muhamidi . | 631 | 1 | 607 | 137,989 | 396 | -0.1 | 5,196 |
| Nighāsan . | 1,237 | 3. | 3.86 | 281,123 | 227 | + 0.6 | 1,609 |
| Lakhimpur . | 1,075 | 1 | 666 | 366,006 | 340 | + 0.1 | 7,326 |
| District total | 2,963 | 8 | 1,659 | 905,138 | 305 | + 0-2 | 16,231 |

About 86 per cent, of the total population are Hindus and nearly 14 per cent, Musalmans. Between 1891 and 1901 the District suffered both from floods and from droughts, and the rate of increase was thus smaller than in previous decades. The density of population is the lowest in Oudh. Eastern Hindi is the language principally spoken.

Castes and occupations.

Khert is remarkable for the small proportion of high-caste Hindus found in it. Brahmans number only 65,000 and Rajputs 30,000. The most numerous castes are Chamārs (tanners and cultivators), 104,000; Kurmis (agriculturists), 82,000; Pāsis (toddy drawers and cultivators), 69,000; Ahirs (graziets and cultivators), 60,000; Lodhas (cultivators), 44,000; and Muraos (market-ganleners), 34,000. Among Musalmāns are Julāhās (weavers), 20,000; Pathāns, 16,000; Rājputs, 12,000; Shaikhs, 11,000.

The Banjaras of this District number 6,800, found only in the submontane tracts. They are largely carriers of grain. Kurmis, Brahmans, Rājputs, Muraos, Chamārs, and Pāsis are the principal cultivators. Agriculture supports as many as 77 per cent, of the total population.

Out of 417 native Christians in 1901, 337 were Methodists. Christian The American Methodist Mission, opened in 1862, has a missions.

number of branches in the District.

Kheri is divided by its rivers into four tracts of varying General conditions. The south-west corner between the Sukheta agricultural and the Gumti consists of fertile loam, which turns to sand conditions along the Gumti. Between the Gumti and the Kathna lies a high sandy tract called the Parehar, in which cultivation is extremely precarious, but which is celebrated as a breeding-ground for cattle. The richest part of the District is included between the Kathna and the Ul, where the soil is a rich loam. Beyond the Ul, cultivation shifts over wide tracts. The floods of the Kauriala usually deposit coarse, unfertile sand, while the Sarda and Dahawar bring down finer silt in which rice can be grown.

The District is held on the tenures commonly found in Chief Output. Of the total area, 71 per cent, is held by talukdars, agricultural only a very small area is sub-settled. Most of the rest is takes and included in tamindari makals. The main agricultural statistics principal for 1903-4 are given below, in square miles:—

| Taksil. | Total. | Catrivated. | Irrigated. | Cultivable waste. |
|---------|-----------------------|-------------------|---------------|----------------------|
| Muhamdi | 651 1,237 1,075 | 405 439 529 | 99 1 76 | 161 197 113 |
| Total | 2,963 | 1,37+ | 176 | 673 |

Wheat is the crop most largely grown, covering 343 square miles or 25 per cent. of the net area cropped. Rice (230), maize (208), barley (157), gram (151), kudon (148), and pulses (138) are also important. Sugar-cane (49) and oilseeds (50) are the chief non-food crops.

The District was very backward at the time of the first regular Improvesettlement, but in thirty years the cultivated area had increased by agricul-18 per cent. A series of had seasons from 1892 to 1896 reduced tural cultivation considerably; but in 1903-4 the area was 25 per practice, cent. greater than it had been forty years before. There has also been a rise in the area double cropped. The area under sugar-cane, wheat, and rice has increased to some extent, but the improvement in the kind of staple grown is not so marked as elsewhere. The demand for advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts is small, except in unfavourable years. Only Rs. 88,000 was lent during ten years ending 1900, and half of this sum was advanced in the famine year, 1807. Practically no loans have been given since 1900.

Cattle, ponies, and sheep.

Kheri is the most important centre for cattle-breeding in the United Provinces. It supplies a large number of draught-bullocks to the whole of Oudh and the Gorakhpur Division. The most distinctive breed is called Parehār, from the tract of country where it is found. The bullocks are small, but fiery tempered, fast movers, and very enduring. Other breeds are the Bhūr, Khairīgarh, Majhra, Singāhl, and Dhaurahra, which are larger and coarser. During the hot weather cattle are taken in large numbers to graze in the jungles of Nepāl. Ponies are numerous, but of a very inferior type, and are chiefly kept as pack-animals. Sheep and goats are kept for meat, and for their wool and hair.

Terigation.

Only 176 square miles were irrigated in 1903-4, of which 109 were supplied by wells, 60 by tanks or jhils, and 7 by other sources. Irrigation is practically confined to the south-west of the District, excluding the Parehar tract, in which there is hardly any. The water-level is high, and the dhenkli or lever is used to raise water from wells. Irrigation from jhils is carried on by the swing-basket.

Forests.

Reserved forests cover an area of 443 square miles in the north of the District. The chief timber tree is sal (Sharea reducta); but the forests also contain assina (Terminalia tomentosa), haldu (Adina cordifelia), khair (Asseis Catechu), and other valuable species. The minor products include fuel, thatching grass, and grass used as fibre. In 1903-4 the total revenue from forest produce was 2-6 lakhs, the receipts from timber being the most important item. The forests are included in the Kheri division of the Oudh circle.

Minerals.

Kankar is the only mineral product, and is used for making time and metalling roads. It is, however, scarce and of poor quality, as is usual in the submontane Districts.

Arts and manufactures, The most important industry is augar-refining, and this is only carried on south-west of the Gumti. Cotton cloth for local use is woven at a few places, and at Oel there is a small manufacture of brass utensils.

Commerce.

The District exports grain, sugar, forest produce, cattle, and ghi, while the chief imports are piece goods, metals, and salt. There is also some trade with Nepāl, from which timber, rice,

and spices are received. The principal trading centres are

Lakhimpur, Muhamdi, and Gola.

The Lucknow-Bareilly State Railway (managed by the Pailway-Rohilkhand and Kumaun Railway) crosses the District south roads. west of the Ul. From Mailant a branch strikes off through the forest to Marauncha Ghat on the Sarda, which is crossed by a temporary bridge, the line being continued from the opposite bank to Sonaripur. A short branch of this line from Dudhwa to the Nepal frontier, opened in 1903, is used chiefly for the export of grain and forest produce. The whole line from Mailant is open only from January to June. The Pawäyan steam tramway, which connects Mailant with Shah-jahanpur, has a short length in the District.

Communications by road are very poor. Only 40 miles are metalled out of a total length of 656. About 250 miles are maintained by the Public Works department; but the cost of all but 17 miles is charged to Local funds. The chief metalled road is that from Snāpur to Shāhjahānpur, which passes through the south-west corner of the District, and the other metalled roads are merely short lengths of feeder roads to railway stations. The improvement of communications, and in particular the construction of bridges, is rendered difficult by the vagaries of the streams which intersect the District. Avenues

of trees are maintained on only eight miles.

Owing to the natural moisture of the soil and the rarity of Famine. a serious failure of the rainfall, scarcity from drought is not severely felt in this District. Distress was experienced in 1769, and tradition relates that in 1783 there was severe famine and many deaths occurred from starvation. Scarcity was again felt in 1865, 1869, and 1874. In 1878 relief works and poorhouses were opened, but were not much resorted to. Up to that time the difficulties of transport had added to the distress caused by a local failure of the crops; but the railway was opened in 1887, and now makes it possible to import grain when needed. From 1892 to 1895 excessive rain injured the crops in the lowlying parts of the District. The drought of 1896 thus caused an increase in the cultivated area north-east of the Ul, though it was followed by a contraction in the area under spring crops in 1897. Relief works and poorhouses were opened, but famine was not severe.

The Deputy-Commissioner has a staff of three Deputy-Col-District lectors recruited in India, and a taknildar resides at the headquarters of each taksil. A Deputy-Conservator of Forests is stationed at Lakhimpur.

пb

TOP OF S

Civil juitice and crimeThe civil courts are those of the Munsif and Subordinate Judge, and the District is included in the Civil and Sessions Judgeship of Stapur. Crime is generally light, though thefis and burglaries are common, owing to the fact that the houses in many parts are simply wattle sheds. The jungle along the Kathna formerly had a bad reputation for sheltering criminals. An attempt has been made, with only partial success, to reclaim the criminal tribe known as Bhatus or Sansila by settling them on the land. Female infanticide was formerly rife, but is no longer suspected.

Land revenue administration.

The records of the first summary settlement made after annexation perished in the Mutiny. It is, however, certain that under it the talukdars lost few villages. After the Mutiny a second summary settlement was made on the basis of the accomits under native rule, the demand amounting to 49 lakhs. A survey was commenced in 1864 and a regular settlement followed, which was completed by 1872. The assessments were based on estimates of produce and on selected rent-rates, while they also unduly anticipated a great extension of cultivation and proved too high. The necessity for revision was increased by a succession of bad years, and the whole settlement was again examined between 1872 and 1877, with the result that the demand was reduced from 12-2 to 8 lakhs. The settlement officers sat as civil courts to determine claims to rights in land, but their work was lighter here than in most Districts of Oudh. A new settlement, preceded by a resurvey, was made between 1897 and 1900, and was characterized by speed and economy. Rents are payable in kind over a large area, and the valuation of this portion of the District was made by ascertaining the actual receipts over a series of years. In some cases rents are paid by cash rates on the area actually cultivated in each harvest, and for the finer staples cash rents are invariably paid. The demand fixed amounted to 10-3 lakhs, which represented 46 per cent, of the estimated net 'assets.' In different parts of the District the incidence varies from Rs. 2 to R. 0-4, the average being R. 0-7. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees:-

| | 1880-L | (690-)). | 1000-1 | 190014 |
|-------------------------------|--------|----------|--------|--------|
| Land revenue Total revenue | | | 9,03 | |

The District contains one municipality, LARHIMPUR, one Local self-'notified area,' Muhampi, and two towns administered under govern-Act XX of 1856. Local affairs beyond the limits of these are managed by the District board, which in 1903-4 had an income and expenditure of 34 lakhs. About half the income is derived from rates, and the expenditure included Rs. 58,000 spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police has under him a force Police and of 3 inspectors, 85 subordinate officers, and 256 constables, jails. distributed in 12 police stations, and there are also 44 municipal and town police, and 1,762 rural and road police. The District jail contained a daily average of 286 prisoners

in 1903.

Kherl is one of the most backward Districts in the United Education. Provinces in regard to education, and only 1-8 per cent, of the population (3-3 males and 0-2 females) could read and write in 1901. The number of public schools increased from 95 with 3,430 pupils in 1880-1 to tr6 with 4,046 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 162 such schools with 5,676 punils, of whom 180 were girls, besides 4 private schools with 61 pupils. Three schools are managed by Government and 89 are managed by the District and municipal boards. The total expenditure on education in the same year was Rs. 40,000, of which Rs. 34,800 was provided from Local funds and Rs. 4,400 by fees.

There are eight hospitals and dispensaries, with accommoda- Hospitals tion for thirty-rine in patients. In 1903 the number of cases and distreated was 46,000, including 415 in-patients, and 1,988 operations were performed. The expenditure amounted to Rs. 10,000,

chiefly met from Local funds.

About 13,000 persons were successfully vaccinated in Vaccins-1903-4, representing a proportion of 34 per 1,000 of tion. population. Vaccination is compulsory only in the municipality of Lakhimpur.

(S. H. Butler, Settlement Report, 1901; H. R. Nevill, District

Gasetteer, 1905.)

Muhamdi Tahsil. - South-western takul of Kheri District, United Provinces, comprising the pargunas of Muhamdi, Pasguwan, Atwa Piparia, Aurangabad, Magdapur, Haidarabad, and Kasta (Abgawan), and lying between 27° 41' and 28° to' N. and So 2' and So 39' E., with an area of 651 square miles. Population fell from 258,617 in 1891 to 257,989 in 1901, this being the only taksit in the District where a decrease took place. There are 607 villages and one town, MUHAMOI, the taksii head-quarters (population, 6,278). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 296,000, and for cesses Rs. 49,000. The density of population, 396 persons per square mile, is the highest in the District. The taksii is bounded on the west by the Sukhetä, and is also drained by the Gunti, Kathnā, and Sarāyān. A great part is composed of fertile loam, but the large area between the Kathnā and Gumti, called the Parchār, is a dry sandy tract where irrigation is generally impossible. In 1903-4 the area under cultivation was 406 square miles, of which 99 were irrigated. Wells supply more than two-thirds of the irrigated area, and tanks or jhils most of the remainder.

Nighāsan,-North-eastern tahtil of Khert District, United Provinces, comprising the parganax of Palia, Khairigarh, Nighasan, Dhaurahra, and Firozābād, and lying between 27° 41' and 28° 42' N, and 80° 10' and 81° 10' E, with an area of 1,237. square miles. Population increased from 270,376 in 1801 to 281,123 in 1901. There are 386 villages and two towns: DHAURAHRA (population, 5,669) and SINGAHI BHADAURA, the former tahail head-quarters (5,298). Nighāsan, the present head-quarters, has a population of only 1,240. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,81,000, and for cesses Rs. 45,000. The density of population, 227 persons per square mile, is the lowest in the District. The tahsil contains 293 square miles of forest. It lies between the SARDA or Chauks on the west, and the KAURIALA on the east, and the whole area is liable to be awept by heavy floods. Besides these large rivers the Mohan forms the northern boundary, and the Dahāwar, a channel of the Chaukā, the southern The Subelt or Sarja, another old bed of the Chauka, crosses the northern portion. In 1903-4 the area under cultivation was 439 square miles; there is practically no irrigation.

Lakhimpur Tahsil.—Central tahtil of Kheri District, United Provinces, comprising the parganas of Bhūr, Srinagar, Kukrā Mailani, Paila, and Kheri, and lying between 27° 47 and 28° 30′ N. and 80° 18 and 81° 1′ E., with an area of 1,075 square miles. Population increased from 365,622 in 1891 to 366,026 in 1901. There are 666 villages and two towns: Lakhimpur, the District and tahtil head-quarters (population, 10,110), and Kheri (6,223). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,09,000, and for cesses Rs. 68,000. The density of population, 340 persons per square mile, is above the District average. Through the centre of the tahtil flows the UI, which divides it into two distinct portions. The area to the north-east, stretching up to the Sărdă or Chaukl, is

a damp low-lying tract, liable to inundations from the rivers. South-west of the UI the soil is a rich loam and agriculture is more stable. In the north of the takiil 150 square miles are occupied by forest. In 1903-4 the area under cultivation was 529 square miles, of which 76 were irrigated. Wells supply more than half the irrigated area, but tanks or flits are of greater importance than in other takiils of this District.

Dhaurahrā,—Town in the Nighāsan tahril of Kheri District, United Provinces, situated in 28° N. and 81° 5' E., near the Sukhrā, a tributary of the Dahāwar. Population (1901), 5,660. The name of the place is locally derived from a small temple or deorhā which stands a little distance away, and according to tradition marks the site of the capital of a Pāsī principality, which was overthrown by the Bisens. During the Mutiny of 1857, fugitives from Shāhjahānpur and Muhamdi sought the protection of the Dhaurahrā Rājā; but he, on pressure from the rebel leaders, gave some of them up to their enemies. For this he was afterwards tried and hanged, and his estates were confiscated. Dhaurahrā is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 700. A market is held twice a week, and the town contains a dispensary and two schools with 62 pupils.

Gola,-Town in the Muhamdi tahul of Kheri District, United Provinces, situated in 28° 5' N. and 80° 28' E., on the Lucknow-Bareilly State Railway. Population (1901), 4,913. The place is of great antiquity, and carvings and terra-cotta figures of Buddhist types have been found in the neighbourhood. It is picturesquely situated near a sill forest. To the east lies the celebrated temple of Gokatannath, round which are situated many smaller temples, dharmsalas, and monasteries inhabited by gozains. The temple is esteemed one of the most sacred in the whole of Oudh, and contains a lingam, of which several tales are told. It is said to have been brought by Ravana, king of Ceylon. Aurangzeb attempted to pull it up with chains and elephants; but fiames burst forth, and the emperor was induced to endow the shrine. Gola is one of the chief trading centres in the District, and grain and sugar are exported in considerable quantities. The town contains a branch of the American Methodist Mission, a dispensary, and a school with go pupils.

Kherl Town (Khirs).—Town in the Lakhimpur takiis of Kherl District, United Provinces, situated in 27° 54′ N. and 80° 48′ E., on the Lucknow Bareilly State Railway. Population (1901), 6,223. Kherl is a place of some antiquity, and contains a fine tomb built over the remains of Saiyid Khurd, who died in 1563. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 800. Though giving its name to the District, it is of small importance. A daily market is held, and the town contains a branch of the American Methodist Mission and a school with 144 pupils.

Lakhimpur Town.-Head-quarters of the Lakhimpur tahsil and of Khert District, United Provinces, situated in 27° 57' N. and 80° 47' E., on the Lucknow-Bareilly State Railway. Population (1901), 10,110. The town stands near the high southern bank of the UI in a picturesque situation It was a place of no importance till its selection as the District head-quarters in 1850; but it has grown rapidly, and is now the chief trading centre. There is a large export of grain and sugar, and a market is held daily. Lakhimpur contains the usual offices, and also the head-quarters of the American Methodist Mission in the District and a dispensary. It was constituted a municipality in 1868. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 13,400. In 1903-4 the income was Rs. 19,000, chiefly derived from taxes on houses and professions and from rents; and the expenditure was Rs. 21,000. These figures include a grant of Rs. 3,500 from Provincial revenues for sanitary purposes. There are five schools for boys with 290 pupils and two for girls with 50.

Muhamdi Town,-Head-quarters of the taksil of the same name in Kheri District, United Provinces, situated in 27° 58' N. and 80° 14' E., near the Gunti. Population (1901). 6,278. The town became of some importance during the seventeenth century, when it was held by Muktadi Khān, a descendant of Sadr Jahan, the great noble of Akhar's court. He built a large brick fort, the ruins of which still remain, Early in the eighteenth century the celebrated Hakim Mahdi All Khan, afterwards minister to the kings of Oudh, resided here while governor of Muhamdi and Khairabad, and made several improvements. At annexation in 1856 Muhamdi was selected as the head-quarters of a District, but after the Mutiny Lakhtmpur became the capital. Besides the usual offices, there are a branch of the American Methodist Mission and a dispensary. The town was administered as a municipality from 1879 to 1904, when it was declared to be a 'notified area.' During the ten years ending 1001 the income and expenditure averaged Rs. 1,800. In 1903-4 the income was Rs. 7,000, including a grant of Rs. 3,500 from Provincial revenues; and the expenditure was Rs. 6,500.

Though Muhamdt is of less importance than formerly, a considerable trade is still carried on, and the town contains six sugar refineries. There is a school with 140 pupils.

Singāhi Bhadaura.—Town in the Nighāsan tahsil of Kheri District, United Provinces, situated in 28° 18' N. and 80° 55' E. Population (1901), 5,298. The place consists of two separate sites, from which it derives its double name, and it belongs to the Rāni of Khairigarh, who resides here. There is a dispensary and a primary school with 70 pupils.

FYZĀBĀD DIVISION

Fyzābād Division (Faisābād), - Eastern Division of Oudh, United Provinces, lying between 25° 34' and 28° 24' N. and 80" 56' and 83° 8' E., with an area of 12,113 square miles. The Division extends from the low hills on the Nepall frontier to the Ganges, and is bounded on the east by the Gorakhpur and Benares Divisions and on the west by the Lucknow Division. The head-quarters of the Commissioner are at Fyzābād city. Population is increasing steadily. The numbers at the four enumerations were as follows: 5,905,367 (1869), 6,062,140 (1881), 6,794,272 (1891), 6,855,991 (1901). The density of population, 566 persons per square mile, is considerably above the Provincial average, and the Districts lying between the Gogra and the Ganges are congested. Although third in size in the United Provinces, this Division has the largest population. In 1901 Hindus formed 86 per cent, of the total and Musalmans nearly 14 per cent. There were also 2,437 Christians (including oct natives). The Division contains six Districts, as shown below:-

| | | Area in whear miles | Population, 1901. | Land revenue and cesses for 1900-4, in thou- made of repeas |
|-------------|-------|---------------------|----------------------|--|
| Fysibid: | 9 9 | 1,740 | T,135:374 | 16,28 |
| Gonda | a a | 2,813 | 1,403,195 | 20,47 |
| Bahraich . | (9 19 | 2,647 | 1,031,347 | 14/34 |
| Sultangur | | 1,713 | 1,083,904 | 17,01 |
| Partitionsh | | 1,442 | 914,848 | 15,05 |
| Bāra Banki | 7 7 | 1,758 | 1,179.323 | 22,81 |
| | Total | T2,113 | 6,855,991 | 1,05,95 |

Bahraich and Gonda lie north and east of the Kauriala or Gogra and border on Nepal. Fyzabad and Bara Banki are situated along the south bank of the Gogra, and Partabgarh along the north bank of the Ganges. Sultanpur lies between Fyzabad and Partabgarh. The habitations of the people are scattered in small hamlets; and while the Division contains 13,979 villages, it has only 35 towns. Fyzānān with Ajodhyā (75,085 with cantonment) and Bahranch (27,304) are the only towns whose population exceeds 20,000. The chief places of commercial importance are Fyzābād, Bahraich, Bēlā, Gondā, Nawābganj (Bāra Bankī), Nawābganj (Gondā), Tānnā, Akbarpur, Jalālpur, Sultānpur, and Bāra Bankī. Ajodhyā is to the Hindu one of the most sacred places in India, as it was the capital of Kosala, at which Rāma was born, while the Jains visit it as the hirthplace of several of their tirthankaras or hierarchs. The ruins of Set Mahet are interesting, and the site is identified by some orientalists with Srāvasti.

Fyzābād District (Faisābād).—District in the Fyzābād Bonn-Division of the United Provinces, lying between 26° 9' and daries, configura-26° 50' N. and 81" 41' and 83° 8' E., south of the Gogra, with tion, and an area of 1,740 square miles. In shape the District is an river irregular parallelogram, running from west to east with a slight system. tendency southwards. It is bounded on the north-east by the Gogra, which divides it from Gonda, Basti, and Gorakhpur; on the south-east and south by Azamgath and Sultanpur; and on the west by Bara Bankt. The chief river is the Gogra, which flows along the whole northern frontier for a distance of ninety-five miles, being navigable throughout by large cargoboats and river steamers. The high banks of the river are about 25 feet above cold-weather water-level. While this is the largest river, it receives very little of the drainage of the District. For a short distance at the south-west angle the Gumti forms the boundary. Two small streams, the Marha and Biswi, unite about the centre of the District to form the Tons (Eastern). The Majhot, Tirwa, Pikia, Tonri, and Chhoti Sariù are of minor importance. In addition to many isolated jails or swamps, there are collections of these at two or three places; but the District contains no lakes of any size.

The District exposes nothing but alluvium, in which kankar Geology, or calcureous limestone occurs both in block form and in nodules.

The flora presents no peculiarity. The whole area is well Botany, wooded, but there is no forest, though patches of dhik (Butea frondosa) jungle occur in many places. Fine mango groves and clumps of bamboos adorn the landscape.

There are few wild animals. Nilgal are found along the Fanas. Gogra and in small patches of dhāk jungle. Antelope are very scarce. A large herd of domestic cattle has run wild in the lowlands, but the numbers are being reduced by capture.

Game birds, including water-fowl and snipe, are common, and the rivers and tanks contain an abundance of fish.

Climate and temperature, The climate is good, though cholera is endemic in the District, and the Ajodhyā fairs are frequently sources of epidemics. Extreme heat is unusual, and the mean monthly temperature ranges from about 65° to 88°.

Rainfall.

The average annual rainfall is 41 inches, and it is evenly distributed, though the north receives the heaviest fall. Considerable fluctuations take place from year to year.

History.

The early history of the District is purely legendary. It is regarded by the Hindus with special veneration as containing Afonnya, the capital of Kosala, which was the birthplace of Rāma. Ajodhyā is also a place of pilgrimage for the Jains, owing to the birth of several of their saints there. From numismatic evidence it is certain that shortly before the Christian era a line of kings ruled here for some considerable time; but details of the history during the rise and decline of Buddhism, the short but brilliant rule of the Gupta kings, and the rise of the later kingdom of Kanaui, are alike wanting. The first approach to more accurate records is reached in the eleventh century, when the half-mythical mid of Saivid Salar took place. A portion of the high road is still pointed out along which the country people will not pass after dark, for they say that at night the road is thronged with headless horsemen of Saiyid Salar's army. After the fall of Kanauj, nearly 200 years later, the Musalmans overran Oudh, and Ajodhya became the capital of a province. In the fifteenth century the kings of Jaunpur held the District, and after their fall it lapsed again to Deihi. The Muhammadan historians relate little of interest, though the governorship of Oudh was of some importance. Babar entered the District, and early in Akbar's reign the governor rebelled. In the eighteenth century the importance of Ajodhya increased, as it became the capital of the new line of Nawabs who made Oudh an independent State. Saadat Khān and Safdar Jang spent little time at their head-quarters; but after his defeat at Buxar Shujā-ud-dania made the new town of Fyzabad his permanent residence. Shortly after his death in 1775 the capital was moved to Lucknow, and Fyzābād declined.

The only important event in the history of the District since the annexation of Oudh in 1859 was the Mutiny of 1857. In the early part of that year the troops in cantonments consisted of the 22nd Bengal Native Infantry, the 6th Irregular Oudh Cavalry, a company of the 2th Bengal Artillery, and a horse battery of light field-guns. The troops revolted on the night of June 8, but the outbreak was not accompanied by the scenes of massacre which occurred at other military stations. The European officers with their wives and families were allowed to leave unmolested; and although some of them were attacked in their flight by mutineers of other regiments, nearly all succeeded after more or less hardship in reaching places of safety. A Muhammadan landholder, Mir Muhammad Husain Khān, sheltered one party in his small fort for several days until the road was open and they could reach Gorakhpur in safety.

Ancient mounds exist at many places, but have not been Archaeoexplored. Local tradition ascribes them to the Bhars, but some
at least are probably Buddhist. A copperplate grant of Jai
Chand and a fragmentary inscription of the same king have
been found. Besides the coins of the local rulers referred to
above, coins of the Guptas are not uncommon, and an important
hoard of silver coins of the sixth or seventh century A. D. was
unearthed in 1904. The temples of Ajodhyā are chiefly
modern. The only Muhammadan buildings of more than
local interest are at Ajodhyā, Arbarpur, and Fyzābād.

The District contains 9 towns and 2,661 villages. Its population is increasing. The numbers at the four enumeral people tions were as follows: 1,024,652 (1869), 1,081,419 (1881), 1,216,959 (1891), 1,225,374 (1901). There are four takility Fyzarad, Akharpur, Bikāpur, and Tāndā—each named from its head-quarters. The principal towns are the municipalities of Fyzarad with Ajodhya, and Tāndā. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| | Number of | | lon. | Marie Marie | San Paris | HI. | |
|---|----------------|-------|-----------|-------------|------------|--|-----------------------------|
| Thanf. | Area to square | Towns | Villagera | Populat | Population | Poycenti variatio populatio tworn and to | Nambe present to read |
| MATERIAL STATE OF THE STATE OF | 2400 | 3 | 449 | 334-327 | 901 | + 3-6 | 19,898 |
| Fyribid . Aldurpur . | 371 | E | 600 | 243/949 | 622 | + 12-9 | 5,097 |
| Biklipur . | 407 | **** | 623 | 296,726 | 633 | + 2/7 | 7.731 |
| Tanta . | 209 | 5 | 980 | 330,341 | 688 | - 8-3 | 7,313 |
| District total | 1,740 | 9 | 1,661 | 1,005,374 | 794 | + 0.7 | 39.939 |

The figures include 20,407 persons belonging to other Districts, who were enumerated at a fair in Ajodhyā in 1901. In 1904 pargawa Surhurpur, containing two towns and an area

of 144 square miles with a population of 100,930, was transferred from Tanda to Akbarpur. Nearly 89 per cent, of the total population are Hindus and 11 per cent. Musulmans. Between 1891 and 1901 the normal increase of population was arrested by the effects of both excessive rain and drought. This District supplies a considerable number of emigrants to the West Indian colonies and also to Assam. About 70 per cent, of the people speak the Awadhi dialect of Eastern Hinds, and 26 per cent, speak Bihāri.

Cintra and occutotions.

Chamërs (tanners and cultivators), 172,000, are the most numerous Hindu caste, forming 16 per cent, of the total. The other castes of importance are Brahmans, 165,000; Ahirs (graziers and cultivators), 139,000; Kurmis (agriculturists), 74,000; Rāiputs or Chhattris, 68,000; Kewats (cultivators), 41,000; Pāsis (toddy-drawers and cultivators), 30,000; Muraos (market-gardeners), 36,000; Baniās, 35,000; Koris (weavers), 33,000; and Bhars (labourers), 25,000. The Kurmis, Kewats, Pasis, Muraos, and Bhars are chiefly found in the centre and east of the Provinces. Musalmans include Julahas (weavers), 29,000; Shaikhs, 20,000; Pathans, 14,000; and Behnas (cotton-carders), 12,000. Agriculture supports 64 per cent. of the total population, and general labour 4 per cent. Rajputs or Chhattris hold more than half of the land.

Christian mindous.

There were 341 native Christians in 1001, of whom 141 belonged to the Anglican communion and 113 were Methodists. The Church Missionary Society has laboured in the District since 1862, and the Weslevan Mission was opened in 1875.

General agricultural conditions.

The District is chiefly situated on the upland above the Gogra : but along the bed of that river lie stretches of alluvial soil, in places producing magnificent spring crops, and in others being merely sand in which tamarisk and grasses are the only vegetation. The natural soils on the upland are sand, loam, and clay. Sand is found on the high banks of the Gogra and the other streams, and passes into fertile loam, which stiffens into clay in the swamps and depressions. The heavy clay soil, which covers a large area, produces excellent rice. Owing to the density of population agriculture has become intensive.

Chief agricultural

The ordinary tenures of Ouns are found in Fyzabad. Talukdars own 72 per cent of the total area. Subordinate and princi, tenures are found to a larger extent, both in talukdari estates pal crops, and in other mahāli, than in any other District of Oudh. Thus sub-settlement holders or pukhtadärs have rights in about a quarter of the District, and owners of specific plots have rights in an additional 11 per cent. A few of the sub-settled

mahals are further sub-settled with a second grade of puhhtadārs, and some of these with still a third grade. There are also complex mahals, or revenue units, which extend to a number of villages. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles :-

| Takeit | Total. | Cultivated | Irrigated. | Catriouble waxte. |
|----------|--------------------------|--------------------------|-------------------------|----------------------|
| Fysalsid | 371 393 467 509 | 225 242 287 530 | 99 137 143 189 | 49 60 84 61 |
| Total | 1,740 | 1,084 | 568 | 254 |

Rice is the principal food-crop, covering 421 square miles or 39 per cent. of the total. Gram (261), wheat (206), peas and marur (170), barley (93), arkar (64), pulses (52), and kodon (47), are also important. The chief non-food crops are sugar-cane (67 square miles), poppy (22), oilseeds (13), and

indigo (9).

The cultivated area is now about 12 per cent greater than Improveit was forty years ago, this increase being due mainly to the ments in it was torty years ago, this increase being due mainly to the agricul-clearance of the jungle and the breaking up of inferior land tural which formerly could not be cultivated with profit. The practice. increase has been attended by few changes in methods; but there is a tendency to extend the area under the more valuable crops, such as wheat, augar-cane, and poppy, and the area double cropped has increased. The cultivation of indigo is not of much importance, but it has maintained its position better than in other Districts. There is a small but constant demand for advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts. During the ten years ending 1900 the total loans amounted to 1-2 lakhs, of which Rs. 70,000 was lent in the famine year, 1897. In the next four years about Rs. 3,000 was advanced annually.

The cattle bred locally are of an inferior type, and better Cattle, animals are largely imported. Attempts to improve the breed sheep have failed owing to the unsuitability of the bulls. The ponies are also of poor quality. Sheep and goats are kept, but in

smaller numbers than in the adjoining Districts.

Fyzabad is one of the few Districts in the United Provinces Imigation. in which the area irrigated from tanks and jhils in normal years exceeds that supplied from wells. In 1903-4, out of 568

square miles irrigated, tanks and jàils supplied 289 square miles and wells 264. The proportions vary according to the season, but tank-irrigation is always important. Unfortunately the tanks and jàils are shallow, and fail in dry seasons when they are most needed, the result being a failure of the rice crop. The number of wells is, however, increasing, and temporary wells can be made in most parts when required. Water is raised by a wheel and pulley from wells, and from jàils in the swing-basket. It is usually sprinkled over the land with a wooden shovel.

Minerals.

The chief mineral product is kankar or calcareous limestone, which is used for making lime and for metalling roads. Saline efflorescences are collected in several places, and used for the manufacture of coarse glass for bangles.

Arts and manufactures. The chief manufacturing industry is cotton-weaving. Coarse cloth is produced in many places; but Tanda, Arbardur, and Jalaipur are noted for muslims and other fine materials, and during the eighteenth and the early part of the nineteenth centuries several Europeans had factories at Tanda. Cotton-dyeing and printing are carried on in a few places, and sugar-refining is also of some importance. Many houses are adorned with finely carved doors, but wood-carving is now a declining industry.

Commerce.

The chief exports are grain (especially rice), sugar, cloth, oilseeds, opium, hides, and tobacco; while the imports include piece-goods, metals, and salt. The recent extension of railways north of the Gogra has affected the trade of Fyzābād, which was formerly a commercial centre for Eastern Oudh. There is still a considerable traffic in sailing boats and in steamers along the Gogra; but the bulk of the trade is carried by rail, and places situated on or near the railway are rising in importance, especially Gosaingani and Akbarpur.

Railways and roads The loop line of the Oudh and Rohilkhand Railway from Benares to Lucknow passes through the District. It enters at the south-east and passes north-west to Fyzabād city, from which place it turns west. A branch of the same railway runs south, from Fyzābād to Allahābād. A short length connects Fyzābād with the bank of the Gogra at Ajodhyā, opposite which, in Gondā District, is the terminus of a branch of the Bengal and North-Western Railway. There are 760 miles of road, but only 93 miles are metalled. The latter are in charge of the Public Works department, but the cost of all but 48 miles is charged to Local funds. The chief roads are those from Fyzābād city to Lucknow, Rãe Bareli, Jaunpur, Azum-

garb, and Allahabad. Avenues of trees are maintained on 193 miles, the fine tamarind avenue on the Lucknow road, which was originally planted in the time of the Nawabs of Oudh,

being specially noticeable.

Fyzabad suffered severely from famine in 1783-4, and in Famine.

1786 further damage was caused by excessive rain. In 1837
there was distress owing to high prices caused by scarcity elsewhere, and in 1860, 1866, and 1874 the lower classes suffered from a similar cause. The scarcity of 1877-8 was more serious, and relief works were opened in 1878. In 1896 the monsoon ceased prematurely, and towards the close of the year relief works and poorhouses were opened. Distress was, however, less felt than elsewhere and ceased with the rains of 1897. Severe floods have done much damage from time to time, especially in 1871, 1894, and 1903.

The Deputy-Commissioner is usually assisted by one or two District members of the Indian Civil Service, and by four Deputystaff.

Collectors recruited in India. A tahtildär is stationed at the head-quarters of each tahtil. Two officers of the Opium

department reside in the District.

The ordinary civil courts are those of two District Munsifs Civil and a Subordinate Judge. A system of village Munsifs has justice and recently been introduced. The District and Sessions Judge of Fyzāhād is also District Judge of Bāra Banki and Sessions Judge of Sultānpur. The District is fairly free from serious crime, even in the cities of Fyzāhād and Ajodhyā. The kidnapping of girls for marriage to Rājputs and Brāhmans is, however, not uncommon.

The District of Fyzābād, as formed at annexation in 1856, Land included also the northern parts of the present District of revenue Sultanuar as far south as the Gumtl. This area was removed tration. in 1869. A summary settlement was made in 1856, followed after the restoration of order by a second summary settlement, which fixed the demand at 8-7 lakhs. The first regular settlement, preceded by a survey, was commenced in 1862. Assessment was mainly based on conjectural data, such as the estimated yield of crops and rates suggested by committees of talukdurs and samindars. Rent-rolls were hardly examined at all, and a very large area of waste land was assessed. The revenue proposed amounted to 12-4 lakhs, and the enhancement was not relieved by being made progressive where it was large. The working of the assessment was affected by bad. seasons in 1870 and 1871, and by other causes. Revisions were, therefore, undertaken which were not completed until

1879, by which time many of the defects of the settlement had been remedied. The revised demand was 11-6 lakhs, and was only reached by degrees where exceptionally large enhancements were made. Owing to the enormous number of claims to rights in land, the settlement courts had an unusual amount of work. The latest revision, made between 1893 and 1899, was carried out without a complete resurvey and revision of records. The assessment was made on the basis of recorded rents, corrected where necessary. The revenue fixed was 14-6 lakhs, representing 44 per cent of the estimated net 'assets.' The incidence is Rs. 1-2 per acre, varying from Rs. 1-1 to Rs. 1-3 in different parganas. Enhancements were largely made progressive, and the full demand will not be in force till 1910. Collections on account of land revenue and total revenue have been, in thousands of rupees:—

| | | 1860-1 | 1890-L | 190016 | 100514 |
|-------------------------------|-----|--------|--------|--------|--------|
| Land revenue Total revenue | < 4 | 11,13 | 11,07 | 13:53 | 14,00 |

Local selfgovernment. There are two municipalities, Fyzānāp with Ajodeyā and Ākrarpur, and eight towns are administered under Act XX of 1856. Beyond the limits of these, local affairs are managed by the District board, which in 1903-4 had an income and expenditure of 1-3 lakhs. About half of the income is derived from local rates, and the expenditure includes Rs. 58,000 spent on roads and buildings.

Police and jails. The District Superintendent of police has under him a force of 4 inspectors, 112 subordinate officers, and 427 constables, distributed in 16 police stations, besides 208 municipal and town police, and 2,229 rural and road police. The District jail contained a daily average of 396 prisoners in 1903.

Education.

A high proportion of the population of Fyzabād is literate, and 4-1 per cent. (6-3 males and 6-2 females) could read and write in 1901. The number of public institutions increased from 97 with 3,941 pupils in 1880-1 to 150 with 9,351 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 198 such schools and colleges with 11,314 pupils, of whom 282 were girls, besides 75 private schools with 1,273 pupils. Only 1,648 of the pupils had advanced beyond the primary stage. Government manages 3 of the schools and the District and municipal boards manage 99. The total expenditure on

education was Rs. 55,000, of which Rs. 38,000 was provided from Local funds and Rs. 11,000 by fees.

There are 11 hospitals and dispensaries, with accommods. Hespitals tion for 160 in-patients. In 1903 the number of cases treated and diswas 75,000, including 1,982 in-patients, and 6,673 operations pensaries. were performed. The expenditure amounted to Rs. 16,000, chiefly met from Local funds.

About 33,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, Vaccinarepresenting the low proportion of 27 per 1,000 of population, tion. Vaccination is compulsory only in the municipalities and in

the cantonment of Fyzabad.

(H. F. House, Settlement Report, 1900; H. R. Nevill,

District Gasetteer, 1905.)

Fyzābād Tahsil.—North-western tahsil of Fyzābād District, United Provinces, comprising the parganas of Mangalsi, Haveli Awadh, and Amsin, and lying between 26° 32' and 26° 50' N. and 81° 48' and 82° 29' E., along the right bank of the Gogra, with an area of 371 square miles. Population increased from 316,586 in 1891 to 334,327 in 1901; but the increase was nominal, being due to a large concourse of pilgrims at a fair. Excluding these, the population in 1901 was only 313,920. There are 449 villages and four towns, including FYZABAD, the District and take! head-quarters (population, 75,085). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 2,93,000, and for cesses Rs. 49,000. The high density of population, 846 persons per square mile, is due to the inclusion of the city. The taksil is a long and narrow strip of land lying above the Gogra, with rich alluvial deposits in the bed of the river. The uplands are generally fertile near the high bank, but towards the south heavy clay soil is found, with patches of dhak (Butea frondosa) jungle and many swamps. In 1903-4 the area under cultivation was #25 square miles, of which 99 were irrigated, tanks or jhils supplying rather more than wells in ordinary years.

Akbarpur Tahsil.-South-eastern tahsil of Fysabad District, United Provinces, comprising the parganas of Akbarpur, Majhaura, and (since 1904) Surhurpur, and lying between 46° 15' and 26° 35' N. and 82° 13' and 82° 54' E. The area up to 1904 was 393 square miles, and is now \$37. The population of the old area increased from 241,702 in 1891 to 243,929 in 1901, and the total is now 344,859. There are 854 villages and three towns, of which Jazaneus (population, 7,265) and AKBARPUR, the taksit head-quarters (7,116), are the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,25,000, and for cesses Rs. 52,000, increased by the transfer to Rs. 4,51,000 and Rs. 73,000 respectively. The density of population of the reconstituted area, 6,42 persons per square mile, is below the District average. Along the southern border flows the Majhot, while the Biswi and Märhä unite in the west to form the Tons (Eastern). The tahsil contains many large jhils or swamps, and a considerable area in the south is barren üsar land and thorny jungle. In the old area 242 square miles were under cultivation in 1903-4, of which 137 were irrigated. Wells supply about two-thirds of the irrigated area, and tanks or jhils most of the remainder.

Bikāpur.—South-western tahsil of Fyzābād District, United Provinces, comprising the parganas of Pachchhimrāth and Khandansa, and lying between 26° 24' and 26° 43' N. and 81° 41' and 82° 21' E., with an area of 467 square miles. Population increased from 288,893 in 1891 to 296,776 in 1901. There are 623 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,58,000, and for cesses Rs. 59,000. The density of population, 635 persons per square mile, is below the District average. Most of the tahsil forms a fertile plain interrupted by many small patches of grass and dhāh jungle, and by jhils or swamps, the drainage from which gradually collects into a channel called the Biswi. The Gumti forms the south-western boundary for a little distance. In 1903-4 the area under cultivation was 287 square miles, of which 143 were irrigated. Wells and tanks or jhils supply most

of the irrigation in equal proportions.

Tändä Tahsil.-North-eastern tahsil of Fyzābād District, United Provinces, comprising the parganas of Tanda and Birhar, and lying along the Guntt between 26° 9' and 26" 40' N. and 82° 27' and 83° 8' E., with an area of 365 square miles. Up to 1904 the taksil also included pargana Surhurpur, area 144 square miles. The population of the former area decreased from 369,781 in 1891 to 350,342 in 1901, and that of the present area according to the Census of 1901 in 240,412. There are now 735 villages and three towns, including Tanna, the arbrid head-quarters (population, 19,853). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,24,000, and for cesses Rs. 68,000, decreased by the transfer of Surhurpur to Rs. 2,97,000 and Rs. 47,000 respectively. The taksil, as reduced, supports 684 persons per square mile, or somewhat below the District average. There are a few small alluvial tracts along the Gogra, but most of the tahtil lies in the uplands, consisting of two distinct portions. A strip above the

river lies high and is well cultivated and fertile, but it slopes into a tract of marshy land which is hadly drained and easily becomes water-logged. Of the old area 330 square miles were under cultivation in 1903-4, of which 189 were irrigated. Wells are a more important source of supply than jhils or swamps.

Ajodhyā Estate.-A large taluhdāri estate situated in the Districts of Fyzābād, Gondā, Sultānpur, Bāra Bankī, and Lucknow, United Provinces, with an area of 762 square miles. The land revenue and cesses payable to Government amount to 5-9 lakhs, and the rent-roll is nearly 11 lakhs. The founder of the estate was Bakhtāwar Singh, a Brāhman, who entered the service of Nawab Saadat Ali Khan of Oudh as a trooper. He rose rapidly in favour, and Muhammad Ali Shah conferred on him the Mahdona estate in Fyzabad District with the title of Raja. Bakhtawar Singh became the first noble in the State, and was selected to accompany Sir William Sleeman on his tour through Oudh in 1849. His younger brother, Darshan Singh, also attained high rank. Darshan Singh died in 1844, leaving three sons, the youngest of whom, Man Singh or Hanuman Singh, was employed by the king of Oudh and rendered important services. In 1855 Bakhtilwar Singh died childless and left his large property to Man Singh. In accordance with the general policy at the annexation of Oudh, Man Singh was deprived of almost the whole of his estates, and when the Mutiny broke out he was in confinement at Fyzābād. He was, however, released and requested to protect the European women and children, whom he received into his fort at Shahganj and escorted to the Gogra, where they embarked in safety. He then joined the rebel army before Lucknow, but withdrew in October on the arrival of Sir James Outram, and was subsequently instrumental in saving the lives of several European ladies, and gave valuable assistance in the pacification of the Province. Man Singh's estates were restored in 1858, and for his services he received the title of Maharaja and also the confiscated estate of the rebel Rājā of Gondā. He became the most influential talukdar in Oudh, and rendered great assistance in the settlement of the controversies about rights in land (see article on Ocon), for which he was appointed a K.C.S.I. At his death in 1870 the estates were managed for a time under the Talukdars Relief Act. Man Singh was succeeded, after protracted litigation, by his grandson, Sir Pratap Narayan Singh, K.C.I.E., who holds the personal title of Mahārājā, and has served as a member of the Imperial and Provincial Legislative Councils.

Ajodhyā Town (in Sanskrit Ayadhya; now known as Ajudhia).-Town in Fyzahad District, United Provinces, situated in 26° 48' N. and 82° 12' E., on the right bank of the Gogni, and on a branch of the Oudh and Robilkhand Railway. Population (1901), 21,584. The interest of Ajodhya centres in its ancient history. The old city has almost entirely disappeared, and only its outlines are marked by an extensive tract of elevated ground. But according to tradition Ajodhyñ was in remote antiquity one of the largest and most magnificent of Indian cities. It is said to have covered an area of 12 vojanas or 80 to 100 miles in circumference, though the limits according to modern tradition extend only about 6 miles from Guptär Ghät on the west to Räm Ghät on the east. Ajodhyā was the capital of the kingdom of Kosala and contained the court of the great king Dasaratha, fifty-sixth monarch of the Solar line in descent from Raia Manu. The opening chapters of the Rāmāyana recount the magnificence of the city. the glories of the monarch, and the virtues, wealth, and loyalty of his people. Dasaratha was the father of Rama Chandra, the hero of the epic, whose cult has experienced a great revival in modern times. With the fall of the last of the Solar line, Raja Sumintra, the one hundred and thirteenth monarch, Ajodhyā became a wilderness and the royal family dispersed. From different members of this scattered stock the Rājās of Udaipur, Jaipur, &c., claim descent. Tradition relates that Ajodhyā was restored by king Vikramāditya of Ujjain, whose identity is a matter of dispute. Ajodhyā was of small importance in Buddhist times, when Saketa became the chief city of Kosala. It is still uncertain where Saketa was situated, and it has been suggested that it occupied part of the ancient city of Ajodhya. Numismatic evidence points to the rule of a line of independent Rājās, in or near Ajodhyā, about the commencement of the Christian era. The identifications of Ajodhyā with the capitals of Sha-chi, 'O-yu-t'o, or Pi-so-kia, visited by the Chinese pilgrims, are all doubtful.

Under the rule of the early Muhammadan kings of Delhi, Ajodhyā or Awadh was the sent of a governor whose authority extended over a varying tract of country. When Akbar had firmly established his power in Northern India, the city became the capital of a Sūbah or province. In the eighteenth century it was for a time the nominal head-quarters of the early Nawābs of Oudh. In 1765, however, Shujā-ud-daula made his residence at Fyzānān, a few miles away, and Ajodhyā lost

all importance, except as a religious centre.

The present town stretches inland from a high bluff overlooking the Gogra. At one corner of a vast mound known as Ramkot, or the fort of Rama, is the holy spot where the hero was born. Most of the enclosure is occupied by a mosque built by Babar from the remains of an old temple, and in the outer portion a small platform and shrine mark the birthplace, Close by is a larger temple in which is shown the cooking-place of Stra, the faithful wife of Rama. A lofty temple stands on the bank of the Gogm at the place where Lakshmana bathed; and Hanuman, king of the monkeys, is worshipped in a large temple in the town, approached by an immense flight of steps, which bears the name Hanuman Garht. Other noticeable temples built during the eighteenth and nineteenth centuries are the Kanakhhawan, a fine building erected by a Rant of Tikamgarh, the Nageshwarnath temple, Darshan Singh's temple, and a small marble temple built by the present Maharājā. Ajodhyā also contains a number of Jain temples, five of which were built in the eighteenth century to mark the birthplaces of the five hierarchs who are said to have been born at Ajodhyū. Besides the mosque of Babar, two ruined mosques, built by Aurangach, stand on the sites of celebrated Hindu shrines-the Swargadwara, where Rāma's body was cremated, and the Treta-ka-Thakur, where he sacrificed. An inscription of Jai Chand, the last king of Kanauj, has been found in the latter. Three graves are reverenced by Musalmans as the tombs of Noah, Seth, and Job, and the two last are mentioned under those names in the Ain-t-Akbari. A large mound close by, called the Maniparbat, is said to have been dropped by Hanuman when carrying a portion of the Himalayas, while another tradition asserts that it was formed by the coolies who built Ramkot shaking their baskets as they left work; it possibly covers a ruined stripa.

Modern buildings include the spacious residence of the Maharajā of Ajodhyā (see Ajodhyā Estate) and two dispensaries. For administrative purposes Ajodhyā forms part of the Fyzābān municipality. There is little or no trade; but three great fairs take place annually in March-April, July-August, and October-November, which are sometimes attended by 400,000 persons. At special fairs the attendance has been estimated at as many as a million. There is one public school,

while ten Sanskrit schools contain 350 students.

Akbarpur Town.—Head-quarters of the taksil of the same name in Fyzabad District, United Provinces, situated in 26° 26' N. and 82° 32' E., on the Oudh and Rohilkhand Railway and on the river Tons (Eastern). Population (1901), 7,116. The town contains the ruins of a fort in which is a fine mosque, and the Tons is spanned by a massive bridge. Both mosque and bridge were erected by one Mohsin Khān in the reign of Akbar. Akbarpur also has a branch of the Wesleyan Methodist Mission, a munsifi, and a dispensary. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,800. It has a considerable trade in grain and hides, and produces a large amount of cotton cloth. The school has,226 pupils, and the Mission maintains a girls' orphanage with about 25 inmates.

Fyzăbād City (Faisābād).—Administrative head-quarters, with cantonment, of Fyzābād District, United Provinces, situated in 26° 47′ N. and 82° 10′ E., near the Gogra, on roads from Lucknow and Allahābād, and at the junction of three branches of the Oudh and Rohilkhand Railway; distance by rail from Calcutta 599 miles, and from Bombay 965. Population, including cantonment and Ajodhyā: (1881) 71,405; (1891) 78,921; (1901) 75,085. The population in 1901 included 55,400 Hindus and 17,674 Musalmāns. Fyzībād alone contained 53,501 inhabitants, of whom 6,097 resided in the cantonment.

When Saādat Khān was appointed governor of Oudh he built a hunting lodge four miles west of Ajodhya, then the head-quarters of the Province. Gardens were laid out and shops sprang up in the neighbourhood, and during the time of his successor Safdar Jang the name Faizābād was first applied. Shuja ad-daula, the third Nawab, lived chiefly at Lucknow during the early part of his reign; but after his defeat at Buxar in 1764 he made Fyrahad his residence, and during the remainder of his life added largely to its defences and also laid out a large town. Shujā-ud-daula died early in 1775, and before the close of the year Asaf-ud-daula moved permanently to Lucknow. The importance of Fyzabad declined, but it still remained the home of Asaf-ud-daula's grandmother and mother, the Nawāb Begam and Bahū Begam, whose treatment was the subject of charges against Warren Hastings. After the death of the Bahii Begam in 1816 Fyzibad decayed still further, but its position has improved since annexation.

The cantonment lies morth-west of the city, extending to the bank of the Gogra, along which stretches a beautiful park containing some temples at a place known as the Guptar Ghat. South of the cantonment is the civil station, which contains the usual offices of the head-quarters of a Division, and a fine building used as a museum and public library. There are also male and female dispensaries, and the chief stations of the Church Missionary Society, the Wesleyan Mission, and the Zanāna Bible and Medical Mission. The city is a well-kept place, with fairly wide roads. Most of the large buildings date from the time of Shuja-ud-daula, and are of brick covered with plaster. Two fine gateways give access to a beautiful garden known as the Gulab-barr, in the centre of which is a lofty and handsome building which was constructed by Shujā-ud-daula and in which he lies buried. The tomb of the Bahu Begam is a fine domed building lying south of the town. Three lakhs of rupees from the Begam's property were set aside for the construction of the tomb, and provision was made for its maintenance. The tomb was not completed till after the Mutiny, and its maintenance and the disbursement of the proceeds of the endowment are now supervised by the Deputy Commissioner. The earthwork of the fort, called Calcutta Khurd ("the lesser"), constructed by Shujā-ud-daula, still remains, and portions of the various palaces built by the Nawabs and their nobles have survived.

Fyzābād is administered jointly with Ajodhyā as a municipality, the introduction of local self-government dating from 1865. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 75,000 and Rs. 74,000 respectively. In 1903-4 the income was Rs. 88,000, octroi (Rs. 65,000) being the chief item; and the expenditure was Rs. 83,000, including conservancy (Rs. 21,000), public safety (Rs. 11,000), public works (Rs. 16,000), and administration and collection (Rs. 8,000). A large scheme for drainage works has recently been sanctioned. The cantonment is usually garrisoned by British infantry and artillery and native cavalry and infantry. During the ten years ending 1901 the income and expenditure of the cantonment fund averaged about Rs. 19,000. In 1903-4 the income was Rs. 22,000, and the expenditure Rs. 30,000.

The city is an important centre of the augar-refining industry, and has a considerable trade in agricultural produce and imported goods, partly carried by river, but chiefly by rail. There are sixteen schools for boys, attended by 1,200 pupils,

and four schools for girls with 162.

Jainlpur.-Town in the Akbarpur taksit of Fyzabad District, United Provinces, situated in 26" 19' N. and 82" 45' E. Population (1901), 7,265. The town is pictoresquely placed on the high bank of the Tons (Eastern), which winds in a deep channel through a fertile and well-wooded landscape. An imambara outside the town was built in the eighteenth century at a cost of Rs. 4,000 by contribution from the weavers, each man contributing a quarter of a pice for each piece of cloth woven by him. Jalalpur is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,500. There is still a flourishing manufacture of cotton cloth, but many of the Julahas (Muhammadan weavers) go to Bombay, Calcutta, and Cawnpore to work in the mills. A school has 235 pupils.

Richhaunchha (or Ashrafpur-Richhaunchha).—Town in the Tandā tahsī/ of Fyzībād District, United Provinces, situated in 26° 25' N. and 82° 47' E., on the bank of a small stream called the Touri. Population (1901), 2,325. This place, with the neighbouring villages of Baskharī and Rasūlpur, is celebrated as having belonged to a famous saint, named Makhdum-Ashraf, who lived in the fourteenth century, or to his descendants, who received tent-free grants from the Mughal emperors. The saint's tomb is built on rising ground in the village of Rasūlpur, and is much resorted to by pilgrims, especially in the month of Aghan (November-December). A visit is believed to be very efficacious for persona possessed by devils. Richhaunchha is administered under Act XX of 1850, with an annual income of about Rs. 300. A school has 95 pupils.

Tanda Town,-Head-quarters of the tahsil of the same name, Fyzābād District, United Provinces, situated in 26° 34' N. and 82° 40' E., on the bank of the Gogra, and 12 miles by road from Akharpur station on the Oudh and Rohilkhand Railway. Population (1901), 19,853. The town was granted by the emperor Farrukh Siyar to one Muhammad Hayar and rapidly rose in importance. At the close of the eighteenth century Saadat Ali Khan, Nawab of Oudh, was interested in its prosperity and established a number of officials here. It became one of the most noted weaving centres in India, producing muslins which rivalled those of Dacca. European merchants settled in the place and introduced new methods and improved patterns. The trade suffered during the American Civil War, but has since recovered. Tanda contains the usual offices, and also a branch of the Wesleyan Methodist Mission and a dispensary. It has been administered as a municipality, together with the adjacent town of Muharakpur, since 1865. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 8,000. In 1903-4 the income was Rs. 16,000, chiefly derived from a tax on circumstances and property (Rs. 8,400) and a grant from Government of Rs. 3,500, while the expenditure was also Rs. 16,000. There

are more than 1,100 looms in the town, and a number of dyeing and printing houses. Various kinds of cotton cloth are produced, including some woven from dyed yarn, while the cloth used for printing is imported. The fine flowered muslin called jāmdāni, for which the place was famous, is still made by a few weavers, but the market is very limited. Some of the best varieties are partly woven with silk or silver wire. There are three schools with 227 pupils.

Gonda District.-North-eastern District of the Fyzahad Boun-Division, United Provinces, lying between 26° 46' and 27° 50' daries, N. and 81° 33' and 82° 46' E., with an area of 2,813 square 1100, and miles. It is bounded on the north by the lower range river of the Himalayas separating it from Nepal; on the east by Basti; on the south by the Gogra, which divides it from Fyzābād and Bāra Bankī; and on the west by Bahraich. The District forms a level plain with slight inequalities, and is well wooded. During the fine clear months at the end of the rainy season the range of the Himalayas, with the snowy peak of Dhaulagiri in the centre, forms a magnificent background to the north. The people live in small hamlets scattered about the village lands. There are three natural divisions. In the north is situated a moist tract of tarai land extending a little south of the Rapti. The centre forms a level upland area or uparhar, and south of it lies a broad low tract extending to the alluvial soil in the bed of the Gogra. The Gogra and Raffi, the principal streams, flow from north-west to south-east. In the htrai a number of small streams flow from north to south to meet the Burht, or 'old,' Raptt. The remaining rivers have a course from north-west to south-east, and are, in order: the Suwāwan, Kuwānā, Bisūhī, Chamnai, Manwār, Tirhī, and Sarjū or Suhelt. Most of these are only small streams in the hot season. The whole District is studded with small shallow lakes or shift, the water of which is largely used for irrigation.

In the north limestone boulders are found in the beds of the Geologytorrents rushing down from the Outer Himālayas. Elsewhere the formation is the ordinary alluvium, which in places contains calcureous limestone or kankar.

Forests are 'reserved' in the north of the District and in Bosany, a small area in the centre. There is also a large tract of forest on the banks of the Kuwānā, which is private property. These contain sāl (Shorea robusta), usna (Terminalia tamentosa), dhau (Anogeissus latifolia), khair (Acacia Catechu), &c. Mango, mahua (Bassta latifolia), shisham (Dalbergia Sissoo), and various kinds of fig are the commonest trees in other parts.

Fanna.

Tigers and bears are found in the northern forests, and leopards are common there and are occasionally met with farther south. Several kinds of deer are found, and antelope, nilgar, wolves, and jackals are common. Snipe, waterfowl, jungle-fowl, quail, peacock, partridges, and ortolans are the chief game birds. Fish are abundant in the rivers and lakes, and crocodiles are also common.

Climate and temperature. The damp submontane tract is very unhealthy, and fever is also prevalent in all parts of the District. The proximity of the mountains and the heavy rainfall make the climate comparatively cool, the average monthly temperature ranging from about 62° in January to 91° in May.

Rainfall.

The average annual rainfall over the whole District is 44 inches, ranging from 51 in the north to 40 in the south. Extreme fluctuations occur from year to year; the fall amounted to 75 inches in 1894 and to only 22 inches in 1874. In 1901 nearly 17 inches of rain fell in twenty-four hours at Tarabganj, one of the heaviest falls ever recorded in the plains of the United Provinces.

History.

The District formed part of the great kingdom of Kosala, ruled over by the kings of the Solar race from Ajodhyā. At the death of Rama the northern portion fell to his son, Lava, with the capital city of Sravasti, which is identified by some writers with SET MAHET. Ancient remains show that many sites were inhabited during the palmy days of Buddhism; but when the Chinese pilgrims visited the holy places in the fifth and seventh centuries the country had relapsed into jungle. Many traditions are related of the young warrior of Islam, Saiyid Salar, who died fighting the chiefs of this tract near Bahraich, and many tombs are pointed out as those of his warriors. The history during the Muhammadan period is chiefly that of the varying fortunes of the Rajput clans who seized it from the Doms. The Muhammadan governor resided at BAHRAICH, but often had no authority outside his own fort. The rise of the Rajputs, according to their own traditions, dates from the fourteenth. century. The Kalhans clan was the first to attain importance, but it fell at the end of the fifteenth century, owing to the curse of a Brahman, whose daughter had been carried off by the Raja. The Januars spread over the north of the District, and finally the Bisens acquired a great territory covering 1,000 square miles. When Oudh was granted to Sandat Khan early in the eighteenth century, the local Rajas north of the Gogra were virtually independent. The Raja of Gonda slew Nawah Alawal Khan, the first of the new governors of Bahraich; but

was later so far conquered that he undertook to pay a fixed tribute. It was not, however, till the close of the eighteenth century that the Oudh government was able to break up the Bisen power and to collect revenue direct from the village headmen. The chiefs in the north and east of the District retained a partial independence still longer. Gondà suffered much from misrule in the eighteenth and nineteenth centuries, during which several great talukas were acquired by bankers and officials. Annexation in 1856 passed off quietly; but Colonel Boileau, the Deputy-Commissioner, lost his life in attempting to arrest a notorious freebooter.

On the outbreak of the Mutiny, the Raja of Gonda threw in his lot with the rebels and joined the standard of the Begam of Oudh at Lucknow. The Raja of Balrampur remained loyal throughout. He steadily declined to recognize the rebel government, received and protected Sir C. Wingfield, the Commissioner of Gonda and Bahraich, together with other English officers in his fort, and afterwards forwarded them safely under a strong escort to Gorakhpur. The Rājā of Gondā, after the relief of Lucknow, fixed his camp at Lampti on the Chamnai river, with a force said to amount to 20,000 men, who were, however, dispirited at the English successes elsewhere. After only a feeble resistance the broken remnants of his forces were swept across the Rapti and over the lower range of the Himalayas into Nepal. Most of the rebel talukdars accepted the amnesty; but neither the Raja of Gonda nor the Rani of Tulstpur could be induced to surrender talthough the conduct of the former throughout the Mutiny had been free from overt crime), and their estates were accordingly confiscated and conferred as rewards upon Mahiirains Sir Drigbijai Singh of BALRAMPUR and Sir Man Singh of Ajodhya.

SET MARET is the only site which has been excavated; but Archaeoruins are known to exist at many other places, among which logy, may be named Bansdila, Paltipur, Lodha Dib, Raya-ke-than, and Paras. There are no striking buildings of the Muhammadan period. The chief Hindu shrines are at DEM PATAN and at Chhapia.

The District contains 8 towns and 2,760 villages. At the The four enumerations the numbers were as follows:—1,168,462 people. (1869), 1,270,926 (1881), 1,459,229 (1891), 1,403,195 (1901). There are three takish—Gonna, Tarasgan, and Utraula—each named from its head-quarters. The principal towns are the municipalities of Balkampus and Gonna, and the 'notified

areas' of Nawaboanj and UTRAULA. The following table gives the chief statistics of population in 1901:-

| Tukitt | Arrain square miles. | Name of Taxable Name of Taxabl | Villages, policy | Population | Population per square mile. | Percentage of veriation is pepulation for tween tilox | Number of persons alth to resid and write. |
|----------------|-------------------------|--|---------------------|-------------------------------|--------------------------------|--|---|
| Gondā | 619 627 1,567 | 3 3 4 | 284 546 1,430 | 364,011 364,993 634,181 | 620 583 417 | - 5-3 - 5-3 - 2-3 | 22,269 16,584 14,892 |
| District total | 1,813 | 8 | 2.76a | | 499 | - 3-8 | |

Hindus number nearly 85 per cent. of the total, and Muhammadans 15 per cent. The District is thickly populated, except in the north, where there is a large area of forest. The decrease between 1891 and 1901 was chiefly due to the effects of excessive rain in 1894, and to a smaller extent to the drought of 1896. Many emigrants go from Gonda to the West Indies, Fiji, and Natal. Eastern Hindi of the Awadhl dialect is spoken almost universally.

Castes and occupations,

Brahmans are the most numerous of the Hindfi castes, numbering about 214,000, or 18 per cent. of the total. Other castes found in large numbers are the Ahirs (graziers and cultivators), 140,000; Koris (weavers and labourers), 126,000; Kurmīs (agriculturists), 105,000; Rājputs, 55,000; Kahārs (servanta and cultivators), 49,000; Muraos (market-gardeners), 47,000): and Banifis, 32,000. The Barwars, who number 2,218, are a small caste of criminals who have been settled here in the hope of reformation. A few Tharus, who appear to be of Mongolian origin, are the only people who can survive in the most fever-stricken parts of the tarai. Among Musalmans, Rajputs number 41,000; Shaikhs, 23,000; Pathans, 22,000; and Julahās (weavers), 19,000. Agriculture supports 64 per cent of the total population, and general labour 9 per cent. Brahmans cultivate 29 per cent, of the total area held by tenants, and Rajputs 12 per cent. Kurmis, Muraos, and Kachhis, who are the best tenants, hold about 14 per cent.

Christian missions. In 1901 there were 175 native Christians, of whom 61 were Methodists. The American Methodist Mission was opened here in 1859.

General agricultural constateus. The agricultural conditions are closely connected with the physical features already described. The taxai is pre-eminently a rice country, but is very unhealthy, and is hable to heavy floods. South of it lies the uparker or upland area, in which

the soil is usually a rich loam, which deteriorates to sand in the west and on the high banks of the streams. Wheat and rice, varied by gram and arhar, are the staples here. Sugarcane and poppy are grown near the village sites, and near the swamps the valuable jarhan or late rice is cultivated. In the tarhar or lowlands the subsoil is sand, and fertility depends on the composition and thickness of the surface layer. This tract requires little irrigation, but is subject to floods, and the chief crops are maize in the autumn and peas or barley in the spring. Poppy is grown in all parts and is a very valuable erop. In the neighbourhood of the Tikri forest much damage is done to cultivation by wild beasts.

The ordinary tenures of the Province of OUDH are found, Chief agri-Talukdari estates include about 60 per cent, of the total area, cultural and nearly 15 per cent, is sub-settled. There is also a large and princiarea held in small plots on complicated tenures by under pal crops proprietors. The main agricultural statistics for 1903-4 are

given below, in square miles :-

| Takeit. | Total. | Cultivated. | Irrigated. | Galtivable waste. |
|-----------|--------|-------------|------------|----------------------|
| Goodà | 519 | 411 | 197 | 103 |
| Tarabgani | 1,567 | 367 | 93 | 233 |
| Total | 2,813 | 1,795 | 501 | 461 |

Rice is the staple most largely grown, occupying 73s square miles, or 41 per cent. of the net area cultivated. Wheat (463 square miles), maize (489), gram (247), peas and musur (241), and barley (118) are also important food-crops, while poppy covered 17 square miles, sugar-cane 28, and oilseeds 12.

There has been a considerable increase in the cultivated Improvearea since the first settlement; but this has chiefly taken place ments in in the single tahril of Utraulii, where population has grown rural rapidly, large tracts of jungle have been reclaimed, and the practice. extension of the railway has made markets more accessible, Few changes have occurred in methods of cultivation. The area under poppy and sugar-cane has risen, and more land is under the valuable late rice than formerly. The prevailing feature of the cultivation is mediocrity, which is due to the large proportion of high-caste tenants, who are obliged by social custom to employ labourers instead of working with their own hands. Very few advances are taken under the

Agriculturists' Loans Act, and none have been given under the Land Improvement Act except in 1896-7. Out of a lakh advanced during the ten years ending 1900, Rs. 28,000 was lent in the wet year 1894-5, and Rs. 33,000 in the drought of 1896-7. The loans in the next four years amounted to only Rs. 250.

Cattle

The cattle bred locally are of poor quality, and animals of postes, and a better class are usually imported from the neighbouring District of Bahraich. Ponies are used to a large extent as pack-animals. Sheep and goats are fairly numerous, but no particular breeds are recognized.

Irrigation.

In 1903-4 tanks and swamps supplied irrigation for 248 square miles and wells for 240; while rivers were used to serve only 13 square miles. Few Districts have better natural advantages. In the turbar irrigation is little required in ordinary years, and the uparhar is provided with numerous tunks and wells. The number of wells is steadily increasing, and they can be made at a comparatively small cost. Water is usually raised from wells by means of a long lever, to which a pot is attached by a rope. The swing-basker is used to distribute water from jhils. Only a few crops are flooded, and the ordinary method of irrigation is to scatter water from small channels with a wooden shovel. In the tural the rain-water is held up by small embankments to keep the rice fields moist.

Forests.

'Reserved' forests cover an area of 162 square miles. The most important is a tract of 142 square miles, lying along the base of the hills, with a width varying from three to six miles. Near the east this forest contains valuable sal (Shorea robusta) and asna (Terminalia tomentesa). Towards the west the sal gives place to dhau (Anogeissus latifolia) and haldu (Adima cordifolia). A little shisham (Dalbergia Sisseo) is found in the moister tracts near the mountain torrents. The Tikri forest has an area of about twenty square miles, chiefly in the Tarabgan] taksil near the centre of the District. It supplies sail timber and fuel to Gonda and Ajodhya. In 1903-4 the forests yielded Rs. 50,000, the chief items being firewood and charcoal.

Minimala

The only mineral product is Lankar or nodular limestone, which is used for metalling roads and for making lime.

Arts and inaunineforce.

The District has few industries besides agriculture. Coarse cotton cloth is woven for local use at several places, but no finer tissues are produced. At Utrania there is a small manufacture of ornamental pottery. No other articles are produced locally except those of use in agriculture or in domestic life, which can be made by the blacksmith, the carpenter, and the potter.

Commerce. The export trade consists almost entirely of agricultural

produce. Rice, peas, maize, opium, timber, and fuel are the chief exports, while piece-goods, salt, metals, and refined angar are imported. Nawabganj and Colonelganj attract most of the trade in the south of the District, and Utraula and Tulstour are the chief centres for the export of the rice tracts in the north. Smaller but flourishing bazars have grown up at most of the villages near stations on the rallway. Some traine is still carried by the Raptf and Gogra, especially the latter; but the railway is now the chief means of transport. There is a small trade with Nepal, which supplies grain in exchange for piecegoods and sugar; but it is hampered by the absence of mads.

Gonda is better supplied with communication by rail than Railways with roads, but the latter have recently been improved and and roads. added to. The main line of the Bengal and North-Western Railway crosses the south of the District. From Gonda town one branch strikes off to the north-west, leading to Bahmich, while another leads north and north-east towards the Nepal border. The latter till recently terminated at Tulsipur, but has now been continued to USKA BAZAR in Basti, and gives off a short line to the Nepal frontier. A third branch runs south from the main line at Mankapur to the bank of the Gogra opposite Aiodhya. Out of 606 miles of road only 110 are metalled. The latter are in charge of the Public Works department, but the whole cost is charged to Local funds. Avenues of trees are maintained on 388 miles. The chief routes are from Gonda town to Fyzābād and Balrāmpur, and

towards Utraulil. Scarcity was experienced in 1865, 1869, and 1874, and in Famine. the latter year relief works were required, and distress was severe. In 1878-o relief works were again opened, but only for about two and a half months. The drought of 1896 followed a succession of bad years in which the crops had been injured by excessive rain, and the health of the people had been severely affected. Relief works and poorhouses were opened, but the proportion of the population relieved was not high.

The Deputy-Commissioner is usually assisted by a member of District the Indian Civil Service, and by four Deputy-Collectors recruited staff. in India. There are two officers of the Opium department, and a tahsildar is stationed at the head-quarters of each tahsil.

Civil cases are heard by three Munsifs and a Subordinate Civil Judge, and the District and Sessions Judge of Gonda has civil justice and and criminal jurisdiction also in Bahraich. Crime is of the ordinary type. Dacoity is very rare. The Barwars commit their crimes far beyond the limits of the District. The compli-

cated tenures on which land is held give rise to much litigation, and the Brähmans of Gondā have a had notoriety for perjury and forgery.

Land revenue administration.

A large area in the south-east of the District was ceded to the British in 1810, but was restored to the Nawab of Oudh at the close of the Nepälese War in 1816, in return for land acquired elsewhere and in extinction of a loan. At annexation in 1856, a summary settlement was made, by which the revenue was fixed at 9-7 lakhs. On the restoration of order after the Mutiny the same demand was again levied. Owing to the backward state of the District the regular settlement was postponed for some years. It was preceded by a survey and was commenced in 1868, the first assessment being completed in 1873. This assessment was based on estimates of the annual value of each village. In forming the estimates the rent-rolls were used, but they were corrected by applying what were found to be prevailing rates, and still more reliance was placed on rates obtained by estimating the value of agricultural produce. No allowance was made for the great difference between the rents paid by high-caste and low-caste tenants, and a succession of bad seasons soon showed that the revenue fixed could not be paid. A revision was at once undertaken and was completed by 1876, the 'assets' being now calculated on the basis of the actual rent-rolls, and allowances being made for the low rents paid by high castes. The revenue demand thus fixed amounted to 15.3 lakhs. The latest revision of settlement was made between 1897 and 1902, the first two years being occupied in a resurvey. An area of 860 square miles, or almost the whole of the tarai, is held by the Maharaja of Balkampur on a permanent settlement, as a reward for services in the Mutiny, and was thus excluded. The revision in the rest of the District was based as usual on the corrected rent-rolls, and the new revenue demand amounted to 45.5 per cent, of the rental 'assets.' In 1903-4 the land revenue demand for the whole District was 16-6 lakhs, the incidence being R. r per acre, varying from R. 0-7 to Rs. 1-4 in different parganas. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees :-

| | 1880-2 | tiligo-a | 1900+E- | 1905:4 |
|-----------------------------------|--------|----------|----------------|--------|
| Land revenue . Total revenue . | 15,09 | 15,03 | 15:78 07:95 | 16,61 |

There are two municipalities, GONDA and BALRAMPUR, and Local selftwo 'notified areas,' Nawabgan; and UTRAULA, besides four governtowns administered under Act XX of 1856. Beyond the limits of these places, local affairs are managed by the District board, which had an income of 1-7 takes in 1903-4, chiefly derived from rates. The expenditure was 1-6 lakhs, including a lakh spent on roads and buildings.

Gonda contains 17 police stations; and the District Super Police and intendent of police has under him a force of a inspectors, jails. 91 subordinate officers, and 361 constables, besides 112 municipal and town police, and zorr rural and road police. The District jail contained a daily average of 446 prisoners

in 1903.

The population of the District is not remarkable for its Education. literacy. Three per cent, of the total (6 males and o-1 females) could read and write in 1901. The number of public schools increased from 137 with 4,361 pupils in 1880-1 to 150 with 6,055 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 191 such schools with 9.390 pupils, of whom 248 were girls, besides 35 private schools with 445 pupils. Only 437 pupils had advanced beyond the primary stage. Two schools are managed by Government and 144 by the District board. The total expenditure on education was Rs. 46,000, of which Local funds provided Rs. 30,000, and fees Rs. 6,000.

There are 16 hospitals and dispensaries, with accommo-Hospitals dation for 148 in-patients. In 1903 the number of cases and distreated was 143,000, including 2,237 in-patients, and 4,687 pensaries operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 16,000, chiefly met from Local funds,

About \$3,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4. Vaccinarepresenting the small proportion of 24 per 1,000 of popula-tion, tion. Vaccination is compulsory only in the municipalities.

(H. R. C. Hailey, Settlement Report, 1903; H. R. Nevill,

District Gasetteer, 1905.)

Gonda Tahsil.-Head-quarters tahsil of Gonda District, United Provinces, comprising the Aurganas of Gonda and Paharapur, and lying between 27° 1' and 27° 26' N. and 81° 38' and 82° 19' E., with an area of 619 square miles. Population fell from 404,172 in 1891 to 384,021 in 1901. There are 784 villages and three towns, including GONDA, the District and takil head-quarters (population, 15,811). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 491,000, and for cesses Rs. 50,000. The density of population, 620 persons per square mile, is the highest in the District. The taksil lies chiefly in

the central upland area, which forms the most fertile portion. It is bounded on the north by the Kuwana, along which stretches a belt of jungle, while the Tirhi flows across the south and the Bisuhi across the centre. In 1903-4 the area under cultivation was 422 square miles, of which 187 were irrigated. In ordinary years tanks or swamps supply almost as

large a proportion as wells.

Tarabganj.-Southern tahiil of Gonda District, United Provinces, comprising the pargamas of Nawabgani, Mahadeva, Digsir, and Guwarich, and lying between 26° 46' and 27° 10' N. and 81° 33' and 82° 18' E., with an area of 627 square miles. Population fell from 385,560 in 1891 to 364,993 in 1901. There are \$46 villages and three towns, NAWABGANJ (population, 7,047) and COLONELGANJ (6,817) being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,17,000, and for cesses Rs. 43,000. The density of population, 582 persons per square mile, is considerably above the District average, A small portion of the tahsil lies in the central upland, but most of it is included in the tarhar or lowland tract. A small 'reserved' forest of about 15 square miles is situated in the east of the tahsil. In ordinary years irrigation is required only for the more valuable crops, and in seasons of excessive rain considerable damage is caused by floods or blight. The southern boundary is formed by the Goora, which has a very variable channel. The Channai, Manwar, Tirhi, and Sarjū or Suhelt also drain this tabsil. In 1903-4 the area under cultivation was 367 square miles, of which 93 were irrigated, wells being the chief source of supply.

Utraula Tahsil.-Northern and eastern tahuil of Gonda District, United Provinces, comprising the parganas of Utraula, Sādullahnagar, Būrhāpārā, Babhnīpair, Mankāpur, Balrāmpur, and Tulsipur, and lying between 26° 54' and 27° 50' N. and 82" r' and 82" 46' E., with an area of 1,567 square miles. Population fell from 669,497 in 1891 to 654,181 in 1901. There are 1,430 villages and two towns: BALRAMPUN (population, 16,723) and UTRAULA, the Athril head-quarters (6,756). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 7,55,000, and for cesses Rs. 1,11,000. About 860 square miles are permanently settled with the Mahārājā of Balrāmpur. The density of population, 417 persons per square mile, is low for Oudh, and the takil is not fully developed. Most of it lies north of the Rapu, stretching up to the foot of the Himalayas on the Neptl border; and this area is a moist tract, producing chiefly rice, and intersected by numerous torrents which fall into the Barht, or 'old,' Raptt. A strip of forest, with an area of 142 square miles, lies along the northern border. South of the Raptt the soil is drier and very fertile. The Suwawan and Kuwana are the chief rivers in this area. In 1903-4 the area under cultivation was 1,006 square miles, of which 221 were irrigated.

Balrampur Estate.—The largest falukdāri estate in Oudh (United Provinces), situated in the Districts of Gonda, Bahraich, Partabgarh, and Lucknow, with an area of 1,268 square miles. The land revenue payable to Government is 6-8 lakhs, of which 2-4 lakhs are due on account of permanently settled estates, and cesses amount to Rs. 74,000. The rent-roll exceeds 22 lakhs. The estate is being constantly enlarged by purchase.

The family traces descent to Barias San, a Janwar Rajput, who was deputed about 1374 by Firoz Shah Tughlak to suppress the marauding gangs in the east of what is now Bahraich District. Bariar Sah settled at Ikanna, and acquired a large estate. About 1566 Madho Singh, in the seventh generation from Bariar Sah, separated from his brother who held the ancestral property, and acquired an estate for himself between the Rapti and Kuwana. His son, Balram Das, founded the town of Balrampur and added to his father's acquisitions. The estate grew rapidly, and when Saadat Khan was appointed Nawab of Oudh, the Balrampur chief was forward in resisting his authority. In 1777 Nawal Singh became Raja and was one of the greatest warriors of the Janwars. During his life he was repeatedly engaged in hostilities with the Oudh officials, and, although often defeated by the Nawab's troops, he was never subdued, and succeeded in keeping the assessment on his pargana at so low a rate as to amount to little more than a tribute. His grandson, Drigbijai Singh, came into possession in 1836 at the age of eighteen, and was frequently engaged in warfare with the neighbouring chiefs of Utraula and Tulsipur and also with the revenue officers of the king's court. On the outbreak of the Mutiny, Drightjai Singh was conspicuous for his loyalty. He sheltered the English officers of the District within his fort, and finally sent them in safety to Gorakhpur. This loyal behaviour exposed him to the hostility of the rebel government, and a farmin from Lucknow divided his territories among his old enemies. A rebel force was actually sent to carry out this order, but was recalled. In the trans-Gogm campaign, which concluded the Mutiny, Raja Drighijai Singh joined the British force and remained with it till the remnants of the rebel army were finally driven into Nepāl. As a reward for his distinguished loyalty large estates in Gonda and Bahraich were conferred on him; so per cent of the Government revenue on his ancestral estates was remitted, and the settlement of these was confirmed in perpetuity. He subsequently received the title of Mahārājā Bahādur and was made a K.C.S.I. During the controversy over rights in land in the Province of Oodh, Drigbijai Singh was one of the leading men who helped to bring about a satisfactory settlement. On his death in 1882 he was succeeded by his widow; but the estate is now held by Mahārājā Bhagwati Prasād, K.C.I.E., an adopted son, who maks as the premier adukādār of Oudh after the Rājā of Kapūrthala. Balāāmpus and Tulsīpur are the chief places of commercial importance in the estate, while a large fair is held at Denī Pāran,

Balrampur Town.- Town in the Utraula tahsil of Gonda District, United Provinces, situated in 27° 26' N. and 82° 14' E., on a branch of the Bengal and North-Western Railway, and on a metalled road from Gonda town. Population (1901), 16,723. The town was founded by Balram Das in the reign of Jahängir, and owes much to the Rājās in whose estates it is situated. A handsome stone temple, profusely carved, was erected by the late Maharaja. Another fine stone building, containing a statue of Sir Drigbijai Singh, was erected by subscriptions from the tenants and lessees of the estate. A school with a boarding-house, a dispensary and female hospital, a large poorhouse, and an orphunage are also maintained by the estate, and are provided with excellent buildings. The Mahārājā's palace is an imposing pile enclosing a large court. The town is well built and well drained, and a new hazar has recently been laid out near the railway station. Balrampur has been a municipality since 1870. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 6,500. In 1903-4 the income was Rs. 8,000, chiefly raised from a tax on professions and trades, and the expenditure was also Rs. 8,000. There is a large truffic in grain, especially rice, and cotton cloth, blankets, and knives are made. Five schools have about 250 pupils, one being maintained by the American Methodist Mission.

Chhapia.—Village in the Utraniā takāi of Gondā District, United Provinces, situated in 26° 59' N. and 82° 24' E., on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 732. The village, commonly known as Swāmi Nārāyan Chhapiā, to distinguish it from other places of the same name, is celebrated as the birthplace of Sahajānand, a religious reformer in the

early part of the nineteenth century. He migrated to Gadhada in Gujarat, and became a learned Sanskrit scholar and ascetic. He is now worshipped as an incarnation of Krishna under the name Swāmi Nārāyan. A large temple of stone and marble, which has been erected at considerable expense, contains relics of Sahajānand, besides images of various deities. It is adorned both inside and out with paintings. Two large fairs

are held annually.

Colonelganj.-Town in the Tarabgani taksīl of Gonda District, United Provinces, situated in 27° 8' N. and 81° 42' E., on the Bengal and North-Western Railway, Population (1901), 6,817. In 1780 the village of Sikrora (Secrora) became a cantonment, at which the Nawab of Oudh stationed troops under a British officer to restrain the turbulent Rajas north of the Gogra. Another force was sent in 1802, and a bazar, named Colonelganj, was then founded. This was selected at annexation as the head-quarters of troops, and when the Mutiny broke out the English officers escaped with some difficulty to Balrampur, where they were protected. On the suppression of the rebellion, Colonelganj ceased to be a cantonment. The town is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 2,600. There is a flourishing export trade in rice, maize, and oilseeds. A dispensary is maintained here, and the American Methodist Mission has a branch. There is a school with 155 pupils.

Debi Patan.—Village in the Utraula taksil of Gonda District, United Provinces, situated in 27° 32′ N. and 82° 24′ E., on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 830. This is an ancient site connected by madition, like many other places, with Rājā Karna mentioned in the Mahābhārata. It is now occupied by a celebrated temple built from the ruins of earlier shrines, and sacred to Siva. Annangzeh is said to have been attracted by its popularity and to have sent an officer who slew the priests, broke the images, and defiled the holy places. A large fair is held in March, attended by 80,000 to 100,000 persons, and many buffaloes, goats, and pigs are sacrificed. There is some trade in ponies from the hills and in agricultural produce, while the Nepalese buy piece-goods at the annual fair.

Gonda Town.—Head-quarters of Gonda District and tahsil, United Provinces, situated in 27° 8' N. and 81° 58' E., at the junction of several branches of the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 15,811. The name of the town is popularly derived from gontha or gothan, a 'cattle

pen, and its foundation is ascribed to Män Singh, a Bisen Rajput, who possibly lived in the early years of Akbar's reign. The last Raja of Gonda threw in his lot with the mutineers in 1857, and his estates were forfeited and conferred on the owner of the Ajddhya Estate. The town is of mean appearance, but is adorned with two large tanks. The chief public buildings, besides the usual courts, are the male and female hospitals, the District school, and a literary institute with a library. Gonda has been administered as a municipality since 1869. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 18,000. In 1903-4 the income was Rs. 22,000, including octroi (Rs. 11,000) and rents (Rs. 3,000), and the expenditure was also Rs. 22,000. There is a considerable trade in agricultural produce, but no manufacturing industry. Eight schools have 260 pupils.

Nawabganj.-Town in the Tarabganj taksil of Gonda District, United Provinces, situated in 26° 52' N. and 82° 9' E., on the read from Gonda town to Fyzabad, and on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 7,047. The town was founded in the eighteenth century by Nawab Shuja-ud-daula, as a bazar for the supply of provisions to his camp when on shooting expeditions. It now contains a large grain market, a dispensary, and a branch of the American Methodist Mission. Nawabganj was administered as a municitality from 1875 to 1904, when it was declared a 'notified area.' During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 12,000 and Rs. 11,000 respectively. In 1903-4 the income was Rs. 12,000, chiefly derived from taxes on professions and on property, and from rents; and the expenditure was Rs. 11,000. There is a large export trade in grain and oilseeds, but the opening of other railways has diverted trame. Two schools have 190 pupils.

Set Mahet.—A vast collection of ruins lying partly in the Gonda and partly in the Bahraich Districts of Oudli, United Provinces, in 27° 31' N. and 82° 1' E., on the south bank of the Rapil. The ruins were examined by General Cunningham, and excuvated more completely by Dr. W. Hocy in 1884-5. They include two mounds, the larger of which is known as Mahet and the smaller as Set or Sahet. These cover the remains of an ancient city, with many temples and other buildings. In the course of the excuvations a number of interesting sculptures and terra-cotta figures were found, specimens of which are now in the Provincial Museum at Lunknow. A noteworthy inscription, dated in 1176 or 1276

Samvat (1119 or 1219 A.D.), records the survival of Buddhism to that date. For many years it was held that Set Mahet was the site of the ancient city of Sravasti. At the death of Rama, according to the Hindu sacred writings, the northern part of the kingdom of Kosala was ruled by his son, Lava, from this city. Throughout the Buddhist period references to Sravasti are frequent, and Gautama Buddha spent many periods of retreat in the Jetāvana garden there. When Fa Hian visited the place in the fifth century a. D., it was inhabited by only 200 families, and Hisen Tsiang, a couple of centuries later, found it completely deserted. The recent discoveries of the approximate site of Kapitavastu increased doubts which had been before felt as to the correctness of the identification, and it has now been suggested that Sravasti must be sought for on the upper course of the Rapti within Nepal territory. The word Srāvasti occurs on the pedestal of an image dug up at Set Mahet; but this fact is not conclusive.

(A. Cunningham, Archaeological Survey Reports, vol. i, page 30, xi, page 78; W. Hoey, Journal, Asiatic Society of Bengal, 1892, extra number; V. A. Smith, Journal, Royal Asiatic Society, 1898, page 520, and 1900, page 1; J. Bloch, Journal, Asiatic Society of Bengal, 1898, page 274; T. W. Rhys

Davids, Buddhist India, passim.)

Utraula Town,-Head-quarters of the Utraula tahsil, Gonda District, United Provinces, situated in 27° 19' N. and 82° 25' E. Population (1901), 6,756. Local tradition states that the town was seized by a Muhammadan freebooter, named Ali Khan, about 1552, who was killed by his own som-A fine tank built by Alt Khan is still in existence, and on its banks are his tomb and those of some of his descendants. The family residence is a large brick house on the site of the old fort, part of which is occupied by the takeil offices, and the town also contains a dispensary. Utraula was administered as a municipality from 1893 to 1904, when it became a 'notified area.' During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 3,500. In 1903-4 the income was Rs. 5,500, and the expenditure Rs. 4,000. There is a little local trade, and large quantities of rice pass through the town. Ornamental pottery is made on a small scale. There are three schools with 174 pupils.

Bahraich District.-North-western District of the Fyzibad Bonn-Division, United Provinces, lying between 27° 4' and 28° 24' N. daries, configuration, and 81° 3' and 82° 13' E., with an area of 2,647 square miles and over The shape of the District is that of an isosceles triangle, system,

with its apex pointing north-west, and its base running from south-west to north-east. It is bounded on the west by the Kauriala or Gogra, which separates it from the Districts of Kheri, Shāpur, and Bāra Banki; on the north-east by Nepāl territory; and on the south-east by Gonda. The physical features are well marked by the courses of the Gogra and Raptt. A belt of comparatively high land of a uniform breadth of 12 or 13 miles, and a total area of about 670 square miles, runs through the District in a south-easterly direction, dividing the basins of the two rivers. The great plain of the Gogra stretches away from the western edge of this strip of upland to the river itself. Tradition asserts, and the appearance of the country supports the theory, that in past ages the Gogra flowed immediately under this high bank. The plain is scored with numerous channels having a course generally parallel to that of the great river. The Gogra, or Kauriāla as it is called in its upper reaches, enters Bahraich from Nepäl on its extreme north-west corner. After a course of a few miles, it is joined by the Grawa, which itself is merely a branch of the Kauriāla, leaving the parent stream in Nepāl. The only other tributary of importance is the Sarju, a river also rising in Nepal, which joins the Kaurisla at Katai Ghat. An old channel, likewise called the Sarjū or Suhell, passes below the edge of the upland into Gonda. It is said that this formerly carried the main stream, but a European timber merchant diverted it to secure a more expeditious route for floating timber. The Rapti crosses the north-east corner of the District, its principal tributary being known at first as the Bhakis, and later as the Singhia. A small stream, named the Tirht, rises a short distance from Bahmich town and flows into Gonda. There are numerous lakes and jhils, the largest being the Baghel 'Tal near Payagpur. Many of them have been formed in the old beds of rivers.

Geology.

The whole District is composed of alluvium, and even kankar or calcareous limestone is rare.

Bolany.

The flora is that of the sub-Himilayan area. At annexation most of the District, excluding the river valleys, was jungle, and considerable areas are still occupied by low forest growths. Along the Nepal border lie large stretches of 'reserved' forests, which will be described later. The rest of the District is also well wooded, groves of mangoes and mahua (Bassia latifolia) having been largely planted, and shisham (Dalbergia Sisson) to a smaller extent.

Fauna.

Owing to the large area of forests and jungle the District

presents a varied fauna. Tigers, leopards, bears, wolves, hyenas, wild hog, sāmbar, spotted deer, swamp deer, hog deer, barking-deer, antelope, and nilgai are all found. In some places cattle have run wild and do much damage to the crops. Game birds of the usual varieties are common, and fish abound in the rivers and tanks.

The climate is moist, and cooler than that of the Districts Climate south of the Gogra; the cold season lasts long and the prevailing winds are easterly. The District is, however, severish, especially after the close of the rains.

The average annual rainfall is 45 inches, the north receiving Rainfall, a slightly larger amount than the south. Variations are large: in 1870 the fall was 70 inches, and in 1864 only 24 inches.

Legend connects the name of the District with Brahma, who History. is said to have chosen this area as his own special kingdom, Other traditions include it in the realm of Rājā Karna, who is referred to in the Mahābhārata. At the dawn of history the tract formed part of the kingdom of Northern Kosata, with its capital at Sravasti. The identification of the site of this great city, at which Gautama Buddha spent several years of his life, is still a disputed question. Some writers place it at SET MARKET on the borders of Bahmich and Gonda, while others: believe that it lies on the Rapti in Nepal. In the fifth and seventh centuries the country round Sravasti was found by the Chinese pilgrims to be waste and desolate. Later traditions state that Bahraich was held by the Bhars, whose name it bears. The half-mythical mid of Salar Masud, the Muhammadan warrior saint, ended in battle with the chiefs of the neighbourhood near Bahraich town in 1033. It was not, however, till the thirteenth century that a regular Muhammadan government was established in the trans-Gogra region. One of the earliest governors was Nasir-ud-din Mahmud, son of Altamsh, who ruled here rigorously until he succeeded to the throne of Delhi in 1246. For the best part of a century the records of Bahraich contain nothing of note. The Austris, the descendants of the early Musalman settlers and invaders, gradually extended their hold over the south of the District; but the Bhars were not crushed till later. In 1340 Muhammad bin Tughlak visited the tomb of Saiyid Sālār, and made the first of a series of grants, from which sprang several of the great talukdari estates. This grant was in favour of the Saivids, who expelled the Bhars and acquired a large estate. Firos Shah Tughlak passed through the District and left a young Janwar Raiput, named Bariar Sah, to clear the country of banditti.

Bariar Sah resided at Ikauna, and his clan has provided owners for several estates in both Bahraich and Gonda. About forty years later the Raikwars established themselves in the west, Under Akhar the District, together with parts of Gonda and Kheri, formed the Bahruich sarkar. The Muhammadan rule was, however, never thoroughly effective till the appointment of Saādat Khān to the governorship of Oudh. The great Rajas fought with each other or with the governor of Bahraich, and paid as little revenue as they could. All, however, had to yield to the new power, and for many years they were kept in check. Saadat Ali Khan, the sixth Nawab, first introduced a system of farming the revenue, under which the local governors paid a fixed amount, and appropriated surplus The system worked well as long as it was collections. adequately supervised, and the Nazims or governors of Bahraich were at first able and considerate. Deterioration then set in, and oppression rose to its beight under Raghubar Dayil, who held the contract for 1846-7. The state of desolation to which the country was reduced is graphically described by Sir W. Sleeman, who passed through the District in 1849. The annexation of Oudh in 1856 put an end to this misrule and misery, though the work of organization was delayed by the Mutiny. The troops at Bahraich rebelled, and the officers, after an attempt to reach the hills, made for Lucknow, but were murdered on the Gogra. The taluhdars had lost little by the land policy adopted at annexation, compared with those of other Districts. On the outbreak of the Mutiny, however, the majority joined the mutineers. Troops were not sent into the District till December, 1858, when the rebels fled to Nepil after a short campaign. Large estates were confiscated, and part of the District was restored to Nepāl, from which it had been taken in 1816.

Archaeology.

A number of ancient sites still await exploration; relics of the Buddhist period have been discovered in places. The celebrated shrine of Saiyid Sālār is situated about two miles north of Bahraten Town. An old town, called Dogaon, was an important centre of trade in the Mughal period.

The people.

The District contains 3 towns and 1,881 villages. Population is increasing. The numbers at the four enumerations were as follows: 175,915 (1869), 878,048 (1881), 1,000,432 (1891), 1,051,347 (1901). There are three tahnis—Bahbaich, Kaisandanj, and Nanpara—each named from its head-quarters. The principal towns are the numicipalities of Bahbaich, the District

¹ W. Vost, Journal, Aciatic Society of Bengal, vol. lair, p. 69.

capital, and Nanpara, and the 'notified area' of BHINGA. The following table gives the chief statistics of population in 1901:-

| Taket. | Armain square miles | Towns Name | Villages of | Population | Population per eparce mile. | Percentage of variation in population he- toven 1859 and 1901. | Number of persons ubin to read and write. |
|----------------|------------------------|------------|-------------|------------|--------------------------------|--|--|
| Bahrnich . | 918 | 13 | 688 | 377,588 | 411 | + 5.7 | 18,426 |
| Katsargunj | 679 | | 947 | 348,172 | 513 | + 4-5 | 7,933 |
| Nanpara - | 1,050 | | 546 | 375.587 | 310 | +46 | 6,610 |
| District total | 2,647 | 3 | 1,881 | 1,051,347 | 397 | +.50 | 32,979 |

Hindus form more than 81 per cent, of the total and Mussimans more than 18 per cent. The density of population is much below the average for Oudh, but the increase between 1891 and 1901 was considerable. Almost the whole

population speaks the Awadhi dialect of Eastern Hindi.

The most numerous Hindu caste is that of Ahirs (graziers Caster and cultivators), who number 125,000. Other castes largely and occurepresented are Kurmis (agriculturists), 05,000; Brähmans, 92,000; Chamars (tanners and cultivators), 76,000; Koris (weavers), 51,000; Pisis (toddy-drawers and cultivators), 48,000; Lodhas (cultivators), 43,000; Muraos (marketgardeners), 26,000; and Rājputs, 25,000. Thārus, a tribe confined to the submontane swamps, are found in small numbers in the north of the District. The Muhammadans are chiefly Pathans, 33,000; Julahas (weavers), 21,000; Behnäs (cotton-carders), 14,000; and Nais (barbers), 11,000. Agriculture supports 70 per cent, of the total population, and general labour 5 per cent. Kurmis occupy more than onesixth of the area held by tenants, and Brahmans, Rajputs, and Ahirs also cultivate large areas.

Of the 173 native Christians enumerated in 1901, 148 were Christian Methodists. The American Methodist Mission began work missions. here in 1865, and has several branches in the District.

The soil of Bahraich is chiefly loam and clay. North General of the Rapti, and at one or two other places near the Nepti sured confrontier, a moist turn tract occurs, which is especially favour-ditions. able for the valuable late rice, but produces little else. The central plateau yields excellent wheat. The inferior early rice, followed by wheat or other spring crops, is grown in this tract, while late rice is grown in small depressions. The basins of the Rāpti and Gogra are more distinctly alluvial, and are very fertile

except where the layer of rich silt above the sandy subsoil is thin. The larger rivers constantly flood their banks, but the Sarjii and Rāpti generally deposit good silt, while the Gogta causes damage by bringing down sand.

Chief agricultura! statistics.

The tenures are those usually found in OUDH. About 78 per cent of the total area, excluding the forests, is held by and princi-talukdars, and more than half is included in four large estates. A very small proportion is occupied by sub-settlement holders and under-proprietors. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles :-

| TuketL | Total. | California | Irrigated. | Cuttivatile |
|-----------------------------------|---------------------|-------------------|-----------------|-------------------|
| Bahrnich Kaisarganj Nanpira | 918 679 1,050 | 594 443 524 | 105 13 20 | 124 123 181 |
| Total | 2,647 | 1,558 | 138 | 418 |

Wheat, maize, and rice are the crops most largely grown, and in 1903-4 covered 459, 447, and 422 square miles respectively. or from 29 to 27 per cent. of the net area cultivated. Gram (273 square miles), barley (156), and peas and masur (59) are the remaining food-crops of importance. Poppy covered 15 square miles and oilseeds 180.

Improvements in agricultural practice.

There has been a very large increase in the cultivated area since the first regular settlement, amounting to 25 per cent. This is due both to the recovery of the District from the effects of misgovernment, and also to the clearing of jungle. No conspicuous changes in methods have taken place; but double cropping is more extensively practised, and the area under rice, wheat, and poppy is increasing rapidly; Population is still comparatively thin, and a large area is held by Brahmans and Rajputs, who are inferior cultivators. Very few advances are taken under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts. Out of a total of Rs. 11,600 lent during the ten years ending 1900, the single year 1896-7 accounted for Rs. 9,000. In four years since 1900 the loans averaged less than Rs. 2,000.

Cattle. ponies, and aheen

In the south of the District the cattle are of the ordinary inferior type, but towards the north they improve, and two good breeds are locally recognized, known as the Nanpara and the Risia. Though small, these cattle are active and hardy, and well fitted for agricultural work. The ponies are also of

poor quality, but better animals are imported from Nepāl. Sheep and goats are kept in very large numbers and are used

for penning on the land.

Irrigation is required to a comparatively small extent. Tanks Irrigation, and jhils are the most important source, supplying too square miles in 1903-4, while wells irrigated 29, and other sources 9 square miles. In the river basins there is very little irrigation, as the soil retains sufficient moisture except for garden crops. Masonry wells are rarely used for irrigation. Small streams are dammed to supply water, especially the hill streams in the north-east. Water is raised from jhils by the swing-basket and from wells by the lever.

Bahraich includes an area of 334 square miles of 'reserved' Forests. forests in charge of a Deputy-Conservator. They are situated chiefly along the Nepāl frontier, but also extend some distance south of the boundary. The chief timber tree is the sāl (Shores robusta); but many other species are found, including the tun (Cedreia Toona), mahuā, haldu (Adīna cordifolia), asna (Terminalia tomentosa), dhau (Anogeissus tatifolia), &c. In the low-lying alluvial land shīsham (Dalbergia Sissoo) and khair (Acazia Catechu) are common. The receipts on account of forest produce in 1903-4 amounted to 1-5 lakhs, the chief item being timber (1-2 lakhs).

A little kankar is extracted in places and is used for making Minerals.

lime, but lime is also largely imported.

Coarse cotton cloth is made in many villages for local Arts and consumption. The only industry known outside the District is manufactured that of felt-making. Small rugs of felted wool are made and ornamented with patterns. Blankets are made at a few places,

and excellent wood-carving was formerly produced.

The trade of the District has grown up since the commence Commerce ment of British rule. The chief exports are grain, forest produce, oilseeds, and opium, while piece-goods, metals, salt, and sugar are imported. Timber is floated down the river, but the railway carries most of the trade. The chief markets are thus situated on the line of rail at Bahraich, Nānpāra, Payāgpur, and other smaller places. Gram, oilseeds, and spices from Nepāl are largely carried by a hranch of the railway which terminates on the frontier close to Nepālganj, and piecegoods, metals, salt, tobacco, and sugar enter Nepāl from the same place. There are also other routes, and the total traffic with Nepāl is valued at 25 to 30 lakhs.

The main line of the Bengul and North-Western Railway Railways crosses the extreme southern corner of the District, while and roads.

a branch from Gondā traverses it from end to end. The latter terminates at Katārniān Ghāt on the Girwā, with a branch from Nānpāra to Nepālganj Road on the frontier. Road communications are poor. There are 619 miles of road, but only 14 miles are metallied, owing to the difficulty and expense of obtaining stone. The whole cost is charged to Local funds. Avenues of trees are maintained on 133 miles.

Famine.

An extensive failure of the crops owing to drought is unknown in Bahraich, and damage from excess is more common than loss from deficiency of rain. The principal effects of an exceptionally dry season are to injure the late rice, and curtail the sowings of a second crop after maize or early rice. Prices rise when there is famine elsewhere, and the labouring classes suffer. Thus in 1877 relief works and poorhouses were opened. In 1896-7, however, no relief was required.

District.

The Deputy-Commissioner is usually assisted by three Deputy-Collectors recruited in India. An officer of the Opium department is stationed in the District, and a taksildär at the bead-quarters of each taksil.

Civil justice and crime. Two District Munsifs and a Subordinate Judge comprise the ordinary civil courts of the District, which is included in the Civil and Sessions Judgeship of Gondā. Criminal work is usually light; but outbreaks of dacoity occur, and breaches of the peace are common. Although Bahraich has large grazing-grounds there are no professional cattle thieves.

Land revenue administration.

The records of the summary settlement made in 1856 perished in the Mutiny. On the restoration of order a second summary settlement was made, the revenue demand amounting to 5-8 lakhs. In 1865 a survey commenced, which was followed by a regular settlement completed in 1872. In the greater part of the District the soil was divided into classes, and rentrates were selected from those actually paid, which were applied to the area in each class. 'The 'assets' of the grainrented land were estimated by ascertaining the average annual value of the crops in each class of soil. The revenue demand was raised to 9-6 lakhs. This settlement was revised between 1896 and 1899, when regard was had to the different rates paid by high-caste and low-caste tenants. Where rents were paid in casts the recorded rents were used as the basis of assessment. Nearly half of the area included in the holdings of tenants is, however, held on grain-rents, and rates were estimated for this land on the basis of the actual receipts recorded in the village papers. The result was an enhancement to 13-8 lakhs, of which 1-7 lakhs represented the revenue

on permanently settled estates. The revenue of the temporarily settled portion of the District amounted to 45 per cent. of the corrected net 'assets,' excluding forests. The incidence is R. o-9 per acre, varying in different parganas from R. o-3 to Rs. 1-5. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupces:—

| | 4550-1. | tilgo+t- | 1000-1 | 1903-4 |
|----------------|---------------|----------|--------|--------|
| Land revenue . | 9,77 11,81 | 9.04 | 11,53 | 19,07 |

The District contains two municipalities, Bankatch and Local self-Nanpara, and one 'notified area,' Bhinoa. Outside these governtowns, local affairs are managed by the District hoard, which in 1903-4 had an income of r-2 lakhs, of which half was derived from rates. The expenditure was r lakh, including Rs. 40,000 spent on roads and buildings.

There are 12 police stations; and the District Superin-Police and tendent of police has under him a force of 3 inspectors, 74 subordinate officers, and 293 constables, besides 71 municipal and 2,153 rural police. The District jail contained

a daily average of 250 prisoners in 1903.

The District takes a medium place as regards the literacy of Education. its population, of whom 3-1 per cent. (6-5 males and c-1 females) could read and write in 1901. The number of public schools increased from 94 with 4,425 pupils in 1880-1 to 114 with 4,821 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 166 such schools with 6,694 pupils, of whom 121 were girls. Only 639 pupils had advanced beyond the primary stage. Two schools were managed by Government, and 91 by the District and municipal boards. The total expenditure on education was Rs. 30,000, of which Rs. 22,000 was derived from Local funds, and Rs. 6,000 from fees.

There are fourteen bospitals and dispensaries, with accom-Hospitals modation for 88 in-patients. In 1903 the number of cases and dispensaries treated was 111,000, including 877 in-patients, and 4,082 operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 14,000, chiefly met from Local funds.

About 34,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4. Vaccinarepresenting a proportion of 31 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipalities.

(P. Harrison, Settlement Report, 1901; H. R. Nevill, District Gazetteer, 1903.)

Bahraich Tahsil.-Eastern tahsil of Bahraich District, United Provinces, comprising the parganas of Bahraich, Ikaunā, Bhingā, and Tuisīpur, and lying between 27° 16' and 27° 56' N. and 81° 27' and 82° 13' E., with an area of 918 square miles. Population increased from 356,958 in 1891 to 377,588 in 1901. There are 688 villages and two towns: BAHRAICH, the District and tahrif head-quarters (population, 27,304), and BHINGA (5,972). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 5,04,000, and for cesses Rs. 82,000. The density of population, 4rr persons per square mile, is slightly above the District average. Two large areas in the north are occupied by 'reserved' forest. A tract of tarai or damp rice land lies in the north, between the forests, and is crossed by several streams running into the Rapti. The valleys of this large river, and of its tributary the Singhia, occupy the central part of the takeil, and on the south lies the upland plateau, which is drained by the Tirhl. In 1903-4 the area under cultivation was 591 square miles, of which 105 were irrigated. Tanks or jitals are the chief source of supply, but wells are more used than in other parts of the District.

Kaisarganj.—South-western talisit of Bahraich District, United Provinces, comprising the parganas of Fakhrput and Histmpur, and lying between 27° 4′ and 27° 46′ N. and 81° 16′ and 81° 46′ E., with an area of 679 square miles. Population increased from 332,193 in 1891 to 348,172 in 1901. There are 647 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,29,000, and for cesses Rs. 75,000. The density of population, 513 persons per square mile, is considerably above the District average. The taknil lies in the wide valley of the Gogra, and is scored by many old channels, the chief of which are the Sarjū or Suheil and the Tirhl. The whole area is fertile, except where the Gogra has deposited sand, and irrigation is rarely needed. In 1903-4 the area under cultivation was 443 square miles, of which only 13 were irrigated.

Nānpāra Tahsil.—Northem tahsil of Bahraich District, United Provinces, comprising the pargunar of Nānpāra, Charda, and Dharmānpur, and lying between 27° 39' and 28° 24' N. and 81° 3' and 81° 49' E., with an area of 1,030 square miles. Population increased from 311,281 in 1891 to 325,387 in 1901. There are 546 villages and only one town, Nānpāra, the tahsil head-quarters (population, 10,601). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,92,000, and for cesses Rs. 70,000. The density of population, 310 persons per square mile, is the

lowest in the District. A considerable area in the north-west and north is occupied by 'reserved' forests. The Gogra forms the western boundary, and the takul is crossed by the Girwā, a branch of the Gogra, and by the Sarjū, a large rapid stream. Towards the centre there is a plateau of good learn, which in the east sinks into the valley of the Rāptī and its tributary, the Bhaklā or Singhiā. The west is a rich alluvial area in the Gogra basin, which seldom requires irrigation. In 1903-4 the area under cultivation was 524 square miles, of which only 20

were irrigated. Kapurthala State .- Native State in the Punjab, under the political control of the Commissioner, Julimdur Division, lying between 31° o' and 31° 39' N. and 75° 3' and 75° 38' E., with an area of 598 square miles. The population in 1901 was 314,351, giving a density of 526 persons per square mile. The ancestors of the chief of Kapurthala at one time held possessions both in the cis- and trans-Sutle) tracts, and also in the Bari Doab. In the latter lies the village of Ahiû, whence the family springs, and from which it takes the name of Ahlüwalia. The scattered possessions in the Bari Doah were gained by the sword in 1780, and were the first acquisitions made by Sardar Jassa Singh, the founder of the family. Of the cis-Sutlej possessions, some were conquered by Sardar Jassa Singh, and others were granted to him by Mahārāja Ranjit Singh prior to September, 1808. By a treaty made in 1800, the Sardar of Kapurthala pledged himself to furnish supplies to British troops moving through or cantoned in his cis-Sutlei territory; and by declaration in the same year he was bound to join the British standard with his followers during war. In 1826 Sardar Fatch Singh fled to the cis-Sutlej tract for British protection against the aggressions of Maharaja Ranjit Singh. This was accorded; but in the first Sikh War the Kapurthala troops fought against the British at Aliwal, and in consequence of these hostilities and of the failure of Sardar Nihal Singh, son of Fatch Singh, to furnish supplies from his estates south of the Sutlej to the British army, these estates were confiscated. When the Julhindur Dollb came under the dominion of the British Government in 1846, the estates south of the Satlej were maintained in the independent possession of the Ahlawilia chieftain, conditionally on his paying a commutation in cash of the service engagements by which he had previously been bound to the government of Ranjit Singh. The Bari Doah estates have been re-leased to the head of the house in perpetuity, the civil and police jurisdiction remaining in the hands of the British

authorities. In 1849 Sardar Nihāl Singh was created a Rājā. He died in September, 1852, and was succeeded by his son, Randhir Singh, who never hesitated or wavered in his loyalty during the Mutiny. He strengthened our hold upon the Jullundur Doah, and afterwards, in 1858, led a contingent to Oudh which did good service in the field. He was well rewarded; and among other concessions obtained the grant in perpetuity of the estates of Baundi, Bhitauli, and Ikauna in Oudh, which have an area of 700 square miles, and yield at present a gross annual revenue of about 17 lakhs. In these estates the Raja exercises no sovereign powers, though in Oudh he is, to mark his superiority over the ordinary talukdars, addressed as Rājā-i-Rājagān. This title was made applicable to the Raja in Oudh only, and not in the Punjab, Raja Randhir Singh died in 1870, and was succeeded by his son, Raja Kharrak Singh. The present Raja, Jagatjit Singh, son of Kharrak Singh, succeeded in September, 1877, attaining his majority in 1890. The chiefs of Kapurthala are Sikhs, but claim Rajput extraction. The gross revenue of the State is about 13 lakhs. The military forces consist of 4 fort guns, 13 field guns, 90 cavalry, 1,433 infantry, including the Kapurthala Imperial Service Troops, gunners, and police. The principal products are sugar-cane, cotton, wheat, maize, and tobacco. 'The Rājā has the right of adoption, and is entitled to a salute of eleven guns. The State contains the towns of KAPURTHALA, the capital (population in 1901, 18,519), Phati-WARA (14,108), and SULTANFUR (9,004); and 600 villages. It is divided into five tuhals-Kapurthala, Sultaupur, Bunga, Dhilwan, and Phagwara—each under a tahsildar. An executive council, besides supervising the revenue work of the tahsildars, acts as a court of appeal, submitting its findings to the Raja for final orders. The State maintains a college at Kapurthala, a high school at Phagwara, four middle and twenty-six primary schools, with two girls' schools; also a hospital at the capital and three outlying dispensaries. The land revenue was settled in 1887.

Nanpara Estate.—A talukdāri estate in the Bahraich and Gonda Districts of Oudh, United Provinces, comprising an area of nearly 600 square miles. The revenue and cesses payable to Government amount to 2:2 lakhs and Rs. 36,000 respectively, while the rent-roll exceeds 9 lakhs. Shah Jahan granted a commission to an Afghân named Rasul Khān to reduce the turbulent Banjārās in Bahraich, and assigned him five villages and a tenth of the revenue of a large tract. His descendants acquired a considerable estate. In 1847 Rājā

Munawar Ali Khān was killed by the accidental discharge of a gun, and the estate suffered much from the quarrels of his widows. At annexation the rightful heir was recognized, and under the able management of the late Sir Jang Bahādur Khān, K.C.I.E., it became extremely prosperous. The present Rājā, Muhammad Sadik Khān, succeeded in 1902.

Bahraich Town.-Head-quarters of Bahraich District and taksil, United Provinces, situated in 27° 34' N. and 81° 36' E., on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 27.304. The principal building of interest is the shrine of Saivid Sālār Masūd, a famous warrior and saint, who invaded Oudh about 1033, and who, after several victories, was defeated and slain by the confederate Hindu chiefs. The tomb is a domed building erected two centuries after the saint's death, and it occupies the site of a former temple of the sun. Firoz Shāh Tughlak added a wall and other buildings. A large fair, attended by about 100,000 persons, both Hindus and Muhammadans, takes place annually in May, and large offerings are collected. The shrine is now managed by a committee under the supervision of the Deputy-Commissioner. The town stands at the edge of a plateau on undulating ground, and is well drained. It contains a municipal hall and male and female dispensaries, besides a dispensary near the tomb, and is the head-quarters of the American Methodist Mission in the District. Bahraich has been administered as a municipality since 1869. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 26,000 and Rs. 25,000 respectively. In 1903-4 the income was Rs. 32,000, chiefly derived from octroi (Rs. 23,000), and the expenditure was Rs. 34,000. The trade of the town has increased considerably since the opening of the milway, and a large traffic with Nepil passes through it. Grain, sugar, timber, and tobacco are the chief articles dealt in, and there is a small manufacture of felt. There are 11 schools with 900 pupils.

Bhingā.—Town in the tahsil and District of Bahraich, United Provinces, situated in 27° 42′ N. and 81° 56′ E., near the Rāptī. Population (1901), 5,972. It is said to have been founded in the sixteenth century, but was an unimportant village until acquired by Bhawānī Singh Bisen, a brother of the Rājā of Gondā, about 1720. An old fort is the ancestral home of the talukdār, who owns a large estate in the neighbourhood; but the present talukdār, the Rājā of Bhingā, lives in retirement at Benares. The town contains a dispensary and a branch of the American Methodist Mission. It was

administered as a municipality from 1883 to 1904, when its constitution was changed to that of a 'notified area.' During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 3,000. In 1903-4 the income was Rs. 6,500, including a grant of Rs. 2,500 from Provincial revenues, and the expenditure was Rs. 5,000. The principal trade is in grain, which is sent by road to Bahraich. An increasing amount of timber is exported, chiefly down the Rapti. There are two schools with 200 pupils.

Nanpara Town.-Head-quarters of the tabili of the same name in Bahraich District, United Provinces, situated in 27° 52' N. and 81° 30' E., on the Bengal and North-Western Railway. Population (1901), 10,601. Tradition states that it was founded by Nidhai, an oil-seller, whence the name Nidhaipurwa, corrupted into Nādpāra, and latterly to Nānpāra. About 16 to an Aighão in the service of Shāh Jahān, having received a grant of this and four other villages, laid the foundations of the present Nanpara Estate. The town contains the usual offices, and also a dispensary, and a branch of the American Methodist Mission. It has been administered as a municipality since 1871. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 9,000. In 1903-4 the income was Rs. 14,000, chiefly from octroi (Rs. 8,000), and the expenditure was Rs. 10,000. There is a flourishing export trade in grain and some traffic with Nepāl. Two schools have 150 pupils.

Bonnfiguration, and river system.

Sultanpur District.-District in the Fyzabad Division of darks, con- the United Provinces, lying between 25° 59' and 26° 40' N. and 81° 32' and 82° 41' E., with an area of 1,713 square miles. It is bounded on the north by Bara Banki and Fyzāhād; on the east by Azamgarh and Janupur; on the south by Jaunpur and Partabgarh; and on the west by Rae Barell and Bara Banks. With the exception of a gradual and scarcely perceptible slope from north-west to south-east, the surface of the country is generally level, being broken only by ravines in the neighbourhood of the rivers by which its drainage is effected. The scenery is of a varied character. Many spots along the Gumti are exceedingly pretty; but for the most part the country on both banks of that river is a dreary, bleak, and ravine-cut tract, occasionally relieved by mango groves. The centre of the District consists of highly cultivated and wellwooded villages; while in the south, in strong contrast to this fertile tract, are widespread arid plains and swampy thills and marshes. The chief river is the Gumtt, which enters the

District at its north-western corner and, after flowing in an exceedingly tortuous south-easterly course through the centre, passes out at the south-east. Its bed lies below the surface of the country, and is at first badly defined, but high banks are found in the latter part of its course. There are several small streams, the chief being the Majhot, which forms part of the boundary between Fyzābād und Sultānpur. A number of shallow jhils or swamps are found, but none of considerable size or importance.

The geological formation of the District is entirely alluvial, Geology.

but kankar or calcareous limestone is common.

uncommon.

The flora presents no peculiarities. The only jungle of any Bouny. size surrounds R5mnagar in the south-west, though a few matches of dhak (Butea frondom) are found elsewhere. Sultanpur is, however, well wooded, and contains magnificent groves of mango, jāmun (Eugenia Jambolana), and mahuā (Bassia latifolia).

Wild animals are very few in number; the chief are wolves, Fauna, jackals, and in places nilgai and wild bog. Small game, such as partridge and quail, and in the cold weather water-fowl and snipe, are common; and fish abound in the rivers, thits, and large tanks.

The climate is mild and healthy. West winds prevail from Climate October to June, gradually increasing in strength as the hot perature. weather approaches. The average monthly temperature ranges from 65° in January to 90° or 100° in May. Frosts are

Over the whole District the average annual rainfall is Rainfall. 43 inches, the north receiving slightly more than the south. Great variations are not uncommon; in 1877 the fall was only 13 inches, and in 1894 as much as 91 inches.

Popular legend, as usual in Oudh, connects several places in History. the District with episodes in the Ramayana. The old town of Sultanpur bore the name of Kusabhayanpur, after Kusa, son of Rama, who is said to have founded it. At the period of the Muhammadan conquest the District was held by the Bhars; but no places of importance were situated within it, and no references to it can be traced in the Persian historians. Local tradition asserts that Kusabhayanpur was conquered by Ala-ud-din; but the name of the conqueror is probably a mistake. The District formed part of the Jaunpur kingdom in the fifteenth century, and on the downfall of the Lodi dynasty became incorporated with the Delhi empire. Under the redistribution made by Akbar the present area fell partly in the

Sābah of Oudh and partly in that of Allahābād, but 250 years later the whole District came under the Nawāb of Oudh. In 1856, when Oudh was annexed, a District of Sultānpur was formed, which included portions of what are now Bāra Bankt and Rāe Barelt Districts, while additions have been made to it from Fyzābād. The District assumed its present shape in 1869.

The only noteworthy incident in the history of the District since annexation is the revolt of the troops stationed at Sultanpor cantonment during the Mutiny of 1857. Anticipating an outbreak, the European ladies and children were dispatched on June 7 to Allahabad, which they ultimately succeeded in reaching in safety, after a good deal of rough treatment and plundering at the hands of the villagers. On June 9, the troops, consisting of one regiment of native cavalry and two of infantry, rose in rebellion and fired on their officers, killing Colonel Fisher, the commandant of the station, and Captain Gibbings. Two civilian officers, Mr. A. Block and Mr. S. Stroyan, also lost their lives, one being drowned and the other shot while attempting to cross the Gumti. A few survivors were sheltered by the Rhift of Dera. who remained loval throughout, while other talukdars espoused the cause of the rebels. Several actions were fought in the District before the close of the year, but it was not till November, 1858, that order was fully restored.

Archaeo-

Many ancient mounds are found, which are connected by local tradition with the Bhars. Some of them have yielded Buddhist remains, but no regular excavations have been made. The chief sacred places connected with the story of the Rāmā-yana are Sītākund, a bathing ghāt on the Gumti close to Sultānpur; and Dhopāp, lower down the same river. At the latter place are the ruins of a fort built by Sher Shāh, which is known as Shāhgarh.

| Tukett | Anna in separe | Towns. | Villages. | Population. | Paparlation per square mile | Percentage of variation to population between 1854 and 1951. | Number of persons able to read and write. |
|----------------|----------------|--------|-----------|-------------|--------------------------------|--|--|
| Sultinper . | 508 | 1 | 818 | 340,211 | 670 | + 48 | 8,289 |
| Amethi | 366 | W | 455 | 117,207 | 593 | - 0.9 | 4,005 |
| Manifirkhlina. | 397 | *** | 434 | 261,036 | 658 | + 3-9 | 5,674 |
| Kadipur. | 442 | 0.0 | 741 | 165,480 | 601 | - 2-3 | 4,437 |
| District total | 1,713 | i | 4,43.8 | 1,083,904 | 633 | + 6-7 | 22,496 |

The District contains 2,458 villages and only one town, the The houses of the people being scattered in small hamlets. The people. population at the four enumerations was as follows: 1,040,227 (1869); 957,912 (1881); 1,075,851 (1891); 1,083,904 (1901). It is probable that the Census of 1869 overstated the actual number; but the District suffered from famine in 1877-8. There are four taksils-Sultanpur, Ametrii, Musafirkhana, and Kanipur-each named from its head-quarters. Sultan-PUR, the head-quarters of the District, is the only municipality. The chief statistics of population in 1901 are shown in the table on the previous page.

Hindus form 89 per cent of the total population and Muhammadans 11 per cent. Population is very dense everywhere, and emigration to the Colonies and to other parts of India is common. Considerable sums are remitted annually to their homes by the emigrants. The Awadhi dialect of

Eastern Hindt is spoken almost universally.

Brahmans are the most numerous caste, numbering 159,000, Castes or 17 per cent, of the total. Other castes numerically im- and occuportant are: Chamdrs (tanners and cultivators), 140,000; Ahīra (graziers and cultivators), 129,000; Rājputs, 87,000; Muraos (market-gardeners), 42,000; Kurmis (agriculturists), 38,000; Pasis (toddy-drawers), 38,000; and Koris (weavers), 35,000. Among Musalmans are found Rajputs, 26,000; Julahas (weavers), 11,000; Shaikhs, 10,000; and Pathans, 8,000. Agriculture supports 81 per cent, of the total population. Rajputs hold about 90 per cent, of the land, the three main clans being the Rājkumārs, Bandhalgotis, and Bachgotis. Brahmans, Rajputs, Ahirs, Kurmis, Muraos, and Chamars are the chief cultivating castes.

In 1901 there were seventy-five native Christians, of whom Christian fifty-seven were females; sixty-one persons belonged to the missions, Anglican communion. A branch of the Zanana Bible and

Medical Mission was established in 1801.

The Gumti is bordered by a fringe of sandy land much General broken by ravines. Farther inland, on both banks, the soil agricultural con-becomes a level fertile loam, which gradually changes both in ditions. the north and in the south to stiff clay. The whole of the riparian area is liable to suffer from the effects of floods and from water-logging after years of excessive rain. In the clay tracts the valuable late rice is the staple crop, while elsewhere other cereals, pulses, and millets are largely grown. Great plains of harren war land are found in the southern clay tract, the largest areas lying in the south-west. There is a little

alluvial soil in the bed of the Gumti, especially in the western part of the District.

Chief agricultural statistics

The tenures are those common to OUDH. Talukdari estates include about 60 per cent, of the total area. About 80 per cent. and princi, is in the hands of sub-settlement holders or under-proprietors. pal grops. Complex mahals, or revenue units extending to more than one village, are found in small numbers. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles :-

| Takett. | Total | Cultivated. | Irrigated. | Cultivable wester. |
|-----------------|-------|-------------|------------|-----------------------|
| Saltinpur . | 301 | 304 | 138 | 38 |
| Amethi | 366 | tot | 98 | 39 |
| Muslifirkhäus . | 397 | 231 | 96 | 46 |
| Kanlpur | 442 | 263 | 151 | 33 |
| Total | 1,713 | 989 | 483 | 176 |

Rice is the most important crop, covering 399 square miles, or 40 per cent, of the total. The other staple food-crops are gram (207 square miles), wheat (172), barley (156), and peas and maxier (109). Sugar-cane was grown on 28 square miles: but some of the Raiput clans have a prejudice against its cultivation. Poppy occupied 13 square miles, and a little indigo is still grown.

Improvements in agriculturnt proctice.

Between the first and second regular settlement the cultivated area increased by nearly 8 per cent., and there has since been. a further expansion. The rise in the area double cropped is still larger; and the tendency seems to be to grow more of the inferior food-crops, such as peas and gram, which can be sown after an autumn crop has been reaped, while the area under wheat, which requires a period of fallow, has decreased. Sugar-cane and poppy are increasing in favour. There is a small but steady demand for advances under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Act, which amounted to a total of 2-7 lakhs during the ten years ending 1900, the loans in 1896-7 accounting for 1-8 lakhs. In the next four years the loans averaged Rs. 1,200 annually.

Cattle. propies, and sheep.

The cattle bred locally, as in all the Districts of southern Oudh, are exceptionally poor, and animals of a better class are imported. The ponies are also of inferior quality, but a stallion has recently been supplied by Government to encourage horse-breeding. Sheep and goats are kept in large numbers, chiefly for their manure,

The cultivators depend to a very large extent on natural Irrigation, tanks or itids for water to irrigate their land. In 1903-4 tanks and jhils supplied 252 square miles, wells 225, and other sources 6. Irrigation from wells is the most reliable form, as the jhils dry up in years when they are chiefly needed. The number of masonry wells is increasing, and temporary wells can be constructed in most parts. In the famine year of 1807 advances amounting to Rs. So,000 were given for this purpose, and more than 600 masonry wells were also made. The usual method of raising water from wells is by means of a leathern bucket drawn by bullocks, or, in the east of the District, by hand labour. Where the spring-level is higher, a pot and pulley are employed. In the case of tanks water is raised by the swing-basket.

Kankar, or nodular limestone, is the chief mineral product, Minerals. and is used for metalling roads and for making lime. Saline

efflorescences are collected and used for making glass.

A little coarse cotton cloth is woven in a number of villages Arts and to meet the local demand. Metal vessels manufactured at manufac-Bandhuā have a good reputation.

The chief exports are grain, while the imports include piece- Commerce. goods, salt, and metals. The traffic on the Gumti was once considerable, but has declined with the construction of roads and railways. Sultinpur, Gauriganj, Raipur, and Bazar Sukul are the chief markets. An annual fair and agricultural show

are held at Sultanpur.

The main line of the Outh and Rohilkhand Railway crosses Railways the south-west corner of the District, and a branch from and roads. Fyzābād to Allahābād passes through the centre from north to south. The loop-line from Benares to Lucknow traverses the extreme east. Road communications are fairly good. Out of a total length of 857 miles, 99 miles of road are metalled. The chief routes are from Sultanpur town to Allahabad, Fyzābād, and Raipur, with a branch to Gaurigani. Avenues of trees are maintained on 70 miles.

The District has escaped fairly well from drought. In Famine, unfavourable years the poorer classes suffer from the effects of high prices, but distress has been severe only in 1878 and 1896-7. The drought of 1877 caused a failure of the autumn crops. Relief works were opened in 1878, but were not much resorted to. The harvest failed also in 1896, but a liberal system of advances enabled the people to sow a large area for the spring harvest, which turned out well. Revenue to the amount of Rs. 60,000 was remitted.

District

The Deputy-Commissioner is usually assisted by five Deputy-Collectors recruited in India. An officer of the Opium department is stationed in the District, and a tahsildar at the headquarters of each tahsil.

Civil justice and crime. There are two regular District Munsifs and a Subordinate Judge for civil work. A scheme for the appointment of village Munsifs was introduced in 1902. The District is included in the Civil Judgeship of Rae Barelt and in the Sessions division of Fyzthad. Criminal work is generally light, and dacoity and other serious forms of crime are almost unknown. Crimes of violence are fairly common, but there is little combination among the people, so that riots are rare.

Land revenue administration.

The records of the first summary settlement perished in the Mutiny. It involved large reductions in the estates held by taluhdārz. A second summary settlement was made on the restoration of order, the demand amounting to 9 laklis. The first regular settlement, preceded by a survey, was completed between 1863 and 1870. In the southern part of the present District the assessment was based on the actual rent-rolls, checked by applying assumed rates selected from rates found to be paid. The northern portion, then included in Fyzabad. was assessed entirely at assumed rates. A revenue of 12-4 lakha was fixed; but bad seasons and inequalities in the assessment made a revision of the demand necessary in the north, which resulted in a reduction of Rs. 36,000. The settlement courts also decided a very large number of disputed claims to land. The second regular settlement was carried out between 1892 and 1898 by the Deputy-Commissioner in addition to his regular work. At this revision the assessment was made on the actual rent-rolls, corrected where necessary. The new revenue amounts to 14-9 lakhs, representing 46 per cent. of the net 'assets.' It falls at an incidence of Rs. 1-5 per acre over the whole District, varying from Rs. 1-4 to Rs. 8 in different parganas. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees :-

| | 1880-1 | 1500-1 | 1909:1/ | 7993-44 |
|-----------------------------------|----------------|----------------|---------|---------|
| Land revenue . Total revenue . | та,68 11,99 | 17,77 15,96 | 14.15 | 14,66 |

Local selfgovernment. Outside the municipality of Sultanpur, local affairs are managed by the District board, which in 1903-4 had a revenue and expenditure of r-r takhs. Rates are the chief source of income, and the expenditure included Rs. 50,000 spent on roads and buildings.

There are 13 police stations; and the District Superin-Police and tendent of police has under him a force of 3 inspectors, 79 islas subordinate officers, and 306 constables, besides 15 municipal police, and 2,383 rural and road police. The District is in contained a daily average of 222 prisoners in 1903.

The District is very backward as regards the literacy of its Educationpopulation, of whom only 2-1 per cent. (4-1 males and 0-1
females) could read and write in 1901. The number of public
schools rose from 103 with 3,476 pupils in 1880-1 to 157
with 8,268 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 171
such schools with 8,464 pupils, of whom 71 were girls,
besides 53 private schools with 492 boys and 52 girls.
Only 887 pupils had advanced beyond the primary stage.
Two schools are managed by Government and 117 by the
District and municipal boards. The total expenditure on
education was Rs. 36,000, of which Rs. 31,000 was provided
from Local funds, and Rs. 5,000 by fees.

There are eight hospitals and dispensaries, with accom-Hospital modation for sixty-two in-patients. In 1903 the number of and dispensaries cases treated was 30,000, including 670 in-patients, and 1,320 operations were performed. The expenditure amounted to Rs. 9,000, chiefly met from Local funds.

About 35,000 persons were successfully vaccinated in Vaccina-1903-4, representing a proportion of 32 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipality of Sultanuar.

(F. W. Brownrigg, Settlement Report, 1898; H. R. Nevill,

District Gasetteer, 1903).

Sultanpur Tahsil.—Central tahiil of Sultanpur District, United Provinces, comprising the pargunar of Miranpur and Baramsa, and lying between 26° 2' and 26° 31' N. and 81° 40' and 82° 22' E., with an area of 508 square miles. Population increased from 330,964 in 1891 to 340,211 in 1901. There are 828 villages, but only one town, Sultanpur, the District and tahiil bead-quarters (population, 9,550). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,27,000, and for cesses Rs. 69,000. The density of population, 670 persons per square mile, is the highest in the District. Through the centre of the tahiil flows the Gumti, in a tortuous course. Floods are often caused in its valley, but do not extend far, and the rest of the country is an elevated tract of fertile soil. The southern portion contains a number of large jhills or

swamps. In 1903-4 the area under cultivation was 304 square miles, of which 138 were irrigated, wells and tanks or *jlals* being of almost equal importance as a source of supply.

Amethl, —South-western takail of Sultanper District, United Provinces, comprising the pargunar of Asl and Amethl, and lying between 26° 1' and 26° 20' N. and 81° 37' and 82° 4' E., with an area of 366 square miles. Population fell from 219,208 in 1891 to 217,207 in 1901. There are 455 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,19,000, and for cesses Rs. 51,000. The density of population, 593 persons per square mile, is the lowest in the District. The tahail contains large stretches of barren usar land, and many swamps. In 1903-4 the area under cultivation was 191 square miles, of which 98 were irrigated, tanks or juils being

a more important source of supply than wells.

Musäfirkhäna.-North-western tahrif of Sultanpur District, United Provinces, comprising the pargunar of Jagdispur, Gaura Jamon, Isauli, and Musäfirkhana, and lying between 26° 13' and 26° 40° N, and 81° 32' and 81° 59' E, with an area of 397 square miles. Population increased from 251,221 in 1891 to 261,036 in 1901. There are 434 villages, but no town. The demand for land revenue in 1003-4 was Rs. 3,51,000, and for cesses Rs. 57,000. The density of population, 658 persons per square mile, is slightly above the District average. Part of the northern boundary is formed by the Gumtt, which then crosses the takiil, and occasionally causes heavy floods. The banks of the river, and of its small tributary the Kandu, are cut up by ravines; but a short distance away the soil becomes more fertile. In 1903-4 the area under cultivation was 231 square miles, of which 96 were irrigated. Wells are the most important source of supply.

Kadipur. - Eastern tahsil of Sultanpur District, United Provinces, comprising the parganas of Aldemau and Chanda, and lying between 25° 59' and 26° 23' N. and 82° 6' and 82° 41 E., with an area of 442 square miles. Population fell from 274,458 in 1891 to 265,450 in 1901, the rate of decrease being the largest in the District. There are 741 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,69,000, and for cesses Rs. 59,000. The density of population, 601 persons per square mile, is below the District average. The tahsil is crossed by the Gumti, and contains a large area of low-lying, badly drained ground. It thus suffers considerably in wet years, such as 1894. In 1903-4 the area under cultivation was 263 square miles, of which 151 were irrigated. Wells and

tanks or jillis are of almost equal importance as a source of

supply in ordinary years.

Sultanpur Town.-Head quarters of Sultanpur District and taksil, United Provinces, situated in 26° t5' N, and 82° 5' E., on the right bank of the Gumti, and on a branch of the Oudh and Robilkhand Railway and on the Fyzābād-Allahābād road. Population (1901), 9,550. Tradition relates that a town was founded on the left bank of the river by Kusa, son of Rāma, and called Kusabhavanpur after him. One of the kings of Delhi named Ali-ud-din, whose identity is uncertain, destroyed the place because its Bhar inhabitants had murdered some Saiyids, and raised a new town called Sulfanpur. Early in the eighteenth century a cantonment sprang up under native rule on the present site, and the old town began to decline. It was finally mzed to the ground after the Mutiny on account of the behaviour of the inhabitants. After the pacification of Oudh a detachment of British troops was stationed at Sultanpur for a time; but all troops were removed in 1861. The present town and civil station occupy the site of the old cantonments. They have been well laid out and improved by successive Deputy-Commissioners. Besides the usual offices there are male and female hospitals, a town hall, and a poorhouse. Sultimpur has been a municipality since 1884. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 13,500. In 1903-4 the income was Rs. 25,000, chiefly derived from octroi (Rs. 10,000) and sale of land (Rs. 2,000); and the expenditure was Rs. 20,000. There are two good grain markets; and the trade of the place, which had suffered from the absence of a railway, is likely to be improved by the new line which passes through it. An agricultural show is held annually. There are two boys' schools with 350 pupils, and a small girls' school with 13.

Partabgarh District (Prataggarh),-Southern District of Hom-Partabgarn District (Pratapgara),—Solution Plantagarn District (Pratapgara),—Solution Provinces, lying between figuration, 25° 34' and 26° 21' N. and 81" 19' and 82° 27' E., with an and river area of 1,442 square miles. It is bounded on the north by system. Rac Barell and Sultanpur; on the east and south-east by Jaumpur; on the south by Allahabad; and on the west by Allahabad and Rae Barell. Portions of the District are enclosed in Jaumpur and Aliahābād, and some villages of Allahabad form enclaves in Partibgarh. The general aspect is that of a richly wooded and fertile plain, here and there relieved by gentle undulations, and broken into ravines in the vicinity of the rivers and streams. The southern portion is

perhaps more densely wooded than other parts. Barren tracts of uncultivable land impregnated with saline efflorescence (reh) are met with in places, but do not extend over any considerable area. For the most part, Partäbgarh is under rich and varied crops, dotted with many villages and hamlets, which are surrounded by fine groves of mango, mahuā, or other trees.

The Ganges forms part of the southern boundary, and the Gemtt touches the north-east corner of the District. The chief river is, however, the Sai, which enters Partäbgarh from Råe Bareli, and after an exceedingly tortuous south-easterly course falls into the Gumti in Jaunpur. This river runs chiefly between high banks, broken by deep ravines, at a considerable depth below the level of the surrounding country. It is navigable during the rains, when it swells into a considerable stream; but in the hot season it runs nearly dry. It receives a number of tributary rivulets, but none of importance. The District contains many tanks and swamps, some of which in the rains measure several miles in circumference.

Geology.

Partibgarh is entirely composed of alluvium, and kankar or calcareous limestone is the only rocky formation.

Botany.

Small patches of jungle land occur in many parts, chiefly covered with dhāk (Butea frondosa). The babūl (Acacia arabica) grows in the ravines, and the usual varieties of fig and other trees are scattered about the District. Groves of mango and mahūā (Bassia latifolia) are exceptionally numerous and large, one of them covering an area of 80 acres.

Frana.

Wild animals are not numerous, owing to the closeness of cultivation. Wolves are fairly common in the ravines and broken land, and wild hog and a few wilgui are found in the tamarisk jungle along the Ganges. Jackals and foxes occur in all parts. Wild-fowl are unusually scarce, though in the cold weather geese and duck visit the large sheets of water. Both rivers and tanks abound in fish.

Climate and temperature. The climate is dry and healthy. The mean monthly temperature ranges from about 60° in December and January to 02° in May.

Refutall.

Over the whole District the average annual minfall is 38 inches, evenly distributed. Considerable fluctuations occur from year to year, and the fall has varied from 19 inches in 1877 to 75 in 1804.

History.

Tradition connects most of the ancient sites in the District with the Bhars; but some of them certainly date from the Buddhist period. Legend ascribes the foundation of Manikpur on the Ganges to one Manadeva, son of a mythical Baldeva of Kanaui, and its change of name to Mānik Chand, brother of the great lai Chand. The Bhars were displaced by the Somavansis from Infisi, and other Raiput clans spread over the District. In the eleventh century the warrior saint of Islam, Saiyid Salar, defeated the Hindu princes of Manikpur and Kara, but Muhammadan rule was not established till the defeat of Jai Chand by Muhammad Ghori. Manikpur and Kara on the opposite bank of the Ganges were important seats of government in the early Muhammadan period. Alil-ud-din Khilit was governor here, before he gained the throne of Delhi by murdering his uncle on the sands of the river between these two places. In the fifteenth century the District came under the rule of the Sharki kings of Jaunpur, and after its restoration to Delhi the Raiput chiefs and the Muhammadan governors were frequently in revolt. The Afghans long retained their hold on the District, and early in the reign of Akbar the governor of Manikpur rebelled. Manikpur lost its importance when Aliahābād became the capital of a Province, and from that time it was merely the chief town of a sarkar. The Raipous again rose during the anarchy which marked the disruption of the empire after the death of Aurangzeb, They were, however, gradually reduced by the Nawahs of Oudh, and in 1750 Mänikpur was removed from the Sübah of Allahäbad and added to Oudh. The later history of the District is a record of constant fighting between the officials of Oudh and the Rajour chiefs. At annexation in 1856 the eastern part of the District was included in Sultanpur, while the west formed part of Salon (see Rae Barelli District). A new District was in process of formation when the Mutiny broke out. Rain Hanwant Singh of Kālākānkar escorted the fugitives from Salon to Allahābād, and then turned rebel. With few exceptions all the large landholders joined the mutineers, and the District relapsed into a state of anarchy. Troops advanced in July, 1858, but the campaign was checked by the rains, and it was not till November that British rule was re-established. On November 1, 1858, the proclamation of the Queen, assuming the government of the country, was read to the army by Lord Clyde at Partabgarh town. The area of the District then formed was altered in 1869 by the transfer of territory to Rae Barell.

Only one or two of the ancient sites which are found in Archaeomany parts have been excavated. The chief memorials of logy. Muhammadan rule are at Manikpur, where the vast mound of the ancient fort still rises high above the Ganges, and a number of ruined mosques and palaces dating from the

¹ Cumingham, Archaeological Survey Reports, vol. ai, pp. 63 and 70.

reigns of Akbar, Jahängir, and Shāh Jahān attest the former importance of what is now a mere village.

The people.

Partibgarh contains 4 towns and 2,167 villages. The population has increased considerably during the last thirty years. The numbers at the four enumerations were as follows: 782,681 (1689), 847,047 (1891), 910,895 (1891), 912,848 (1901) There are three tahails—Partibgarh, Kunda, and Parti—the head-quarters of each being at a place of the same name, except in the case of Partibgarh, the tahaildir of which is stationed at Bella. This is the only town of importance, and is also a municipality and the head-quarters of the District. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Tukett. | Arra in square | Towns. | ther of | Population | Population per- equate mile. | Percentage of variation in papellation le- treen that and rices | Number of persons able to read and write. |
|----------------|----------------|--------|---------|------------|---------------------------------|---|--|
| Partabgarh - | 432 | 3 | 679 | 316,580 | 733 | + 3-3 | 10,042 |
| Kanda | 513 | 1 | 686 | 323,508 | 596 | - 1.8 | 9,701 |
| Patti | 457 | | Bos | 272,760 | 384 | + 0-5 | 7,308 |
| District total | 1,441 | 4 | 3,167 | 912,848 | 633 | + 0.1 | 27,981 |

Hindus form nearly 90 per cent. of the total and Musalmans 10 per cent. The whole District is thickly populated, and supplies considerable numbers of emigrants to other parts of India and to the Colonies. The Awadhi dialect of Eastern Hindi is spoken by almost the whole population.

Castes and compations. The most numerous Hindu castes are Kurmis (agriculturists), 112,000; Brähmans, 111,000; Ahirs (graziers and cultivators), 102,000; Chamārs (tanners and labourers), 98,000; Rājputs, 70,000; Pāsis (toddy-drawers and labourers), 51,000; and Baniās, 33,000. Musalmāns include Shaikhs, 27,000; Pathāns, 12,000; and Julāhās (weavers), 7,000. Agriculture supports 77 per cent. of the total population, a high proportion. The District supplies a considerable number of recruits for the Indian army. Rājputs hold nine-tenths of the land, Sombansts, Bachgotts, Kānhpuriās, Bilkhariās, and Bisens being the chief clans. Brāhmans, Kurmis, Rājputs, and Ahirs occupy the largest areas as cultivators.

Christian missions.

Only forty-three native Christians were enumerated in 1901, of whom thirty-six belonged to the Anglican communion. A

branch of the Zanāna Bible and Medical Mission was founded here in 1890, and a branch of a Canadian Mission in 1903.

In the south-west near the Ganges lies a strip of low alluvial General land, which is generally sandy and unproductive. Beyond the agricultural conhigh bank is a tract of rich loam, which gradually stiffens to clay. ditions. The valley of the Sai is mainly composed of a light fertile loam, deteriorating to sand near the river and its tributary streams. North of the Sai lies another clay tract. Both of these areas of stiff soil are studded with lakes and swamps, and are liable to water-logging in wet seasons owing to defective drainage, but in ordinary years they produce excellent rice. The cultivation of sugar-cane is chiefly confined to the Patti tabiil.

The usual tenures of Ourn are found. About two-thirds Chief agriof the total area is included in talukdāri estates, while nearly statistics to per cent, is held by sub-settlement holders and under- and principroprietors. The main agricultural statistics for 1903-4 are pal crops, given below, in square miles:—

| Talidi. | Total. | Califrated. | Irrigand. | Cultivable waste. |
|-------------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|
| Partabgerh . Kunda . | 432 543 467 | 265 289 256 | 127 151 136 | 38 50 41 |
| Total | 1,443 | 810 | 414 | 119 |

Rice covered 207 square miles, or 26 per cent. of the total, barley 192 square miles, gram 138, wheat 111, arkar 88, peas and masur 62, fowdr 54, and barra 52. The chief non-food crops are poppy (19), hemp or san (16), and sugar-cane (19). A little indigo is also grown, and there are many small pan gardens.

A marked increase occurred in the area under cultivation Improvebetween the first and second regular settlements, chiefly due agriculto the reclamation of waste. A large area near the Ganges, tural
once occupied by a swamp, was reclaimed by a European, practice,
who constructed a large dam and crected pumps. The drainage of the Patti takvil has recently been improved. The area
bearing two crops in a year has also risen, and the principal
changes in the methods of cultivation have been directed
towards increasing this area. The larger areas under rice,
sugar-cane, and poppy are also noticeable. Advances are taken
with some regularity under the Land Improvement and
Agriculturists' Loans Acts. During the ten years ending 1900
the total loans amounted to 1-6 lakhs, of which 1-1 lakhs was

advanced in 1896-7. In the next four years the advances

averaged Rs. 3.500 annually.

Cattle, ponies, and sheep.

The cattle bred locally are small and inferior. The punies of the District are also poor, but a stallion is now maintained by Government. Sheep and goats are largely kept, and a fine breed of sheep is found in the Kunda takiil. The Gadarias, or shepherds, who own the latter keep them chiefly for their wool.

Irrigation.

Wells are the chief source of irrigation, supplying 257 square miles in 1903-4. Tanks or awamps served 153 square miles, but the area supplied from them is liable to considerable fluctuations. Thus in the dry year 1897 more than 84 per cent, of the irrigated area was supplied from wells. Other sources are negligible. The number of wells is increasing rapidly, and masonry wells have replaced unprotected ones to a considerable extent. Water is almost invariably raised from wells in leathern buckets drawn by bullocks, and from tanks and this by the swing-basket. Some of the tanks used for irrigation are artificial, but these are of small size.

Minerals.

Kanhar or nodular limestone is the chief mineral product, and is used for metalling roads and for making lime. A little saltpetre is extracted from saline efflorescences, and glass in also manufactured.

Arts and manufactures. There are very few industries besides agriculture. Indigo is still made on a small scale, and sugar-refining is of considerable importance in the east of the District. An interesting experiment in the rearing of silkworms and manufacture of silk is being conducted by the talukdar of Kālākānkar. Coarse cotton cloth and woollen blankets are made at a few places.

Commerce.

The District exports grain, oilseeds, opium, hemp (san), and hides, and imports piece-goods, metals, hardware, and sugar, the local production of common sugar being insufficient. Bela is the chief mart, and small markets have sprung up at several places along the railway.

Railways and roads.

The main line of the Oudh and Rohilkhand Railway passes from south-east to north-west across the District, and at Belä meets the Allahābād-Fyzābād branch running from north to south. There are 615 miles of road, of which 64 are metalled. The latter are in charge of the Public Works department; but the cost of all but 24 miles is charged to Local funds. The chief routes are from Partābgarh town to Allahābād and Fyzābād, and towards Rāe Barell and Akbarpur. Avenues of trees are maintained on 97 miles.

The District is so well protected by means of irrigation that Famine, it has suffered little from famine. Deficiency of rain caused some damage to the crops in 1864, 1868, and 1873. In 1878 the effects of drought in the previous year were more marked, and relief works were opened, but never attracted more than 4,600 persons on one day. The early cessation of the mins in 1896 was felt, because it followed a succession of years in which excessive rain had done much damage. Relief works were opened in December, but were not largely resorted to, and distress was less severe than in the adjoining Districts.

The Deputy-Commissioner is usually assisted by four District Deputy-Collectors recruited in India, and a tabsildar is stall, stationed at the head-quarters of each tabsit. The cultivation of poppy is supervised by an officer of the Opium department.

Two Munsifs and a Subordinate Judge have civil jurisdic Civil tion in the District, which is included in the Civil and Sessions justice and crime.

Judgeship of Rae Barelt. Crime is light and not of a serious type, the more heinous forms being rare. Thefts and burglaries are the chief offences. Female infanticide was once very prevalent, but has not been suspected for many years.

A summary settlement was made in 1856, and on the Land restoration of order in 1858 a second summary settlement was adminiscarried out, by which the revenue was fixed at 7-3 lakhs. A totton. survey was then made, and a regular settlement followed between 1860 and 1871. The assessment was largely based on the actual rent-rolls, and average rates were derived from these to value land cultivated by proprietors or held on grainrents. It resulted in an enhancement of the revenue to g-o lakhs. A large number of claims to rights in land were decided by the settlement courts. The second regular settlement was made between 1892 and 1896 by the Deputy-Commissioner in addition to his regular duties. It was based, as usual, on the actual rent-rolls, and allowance was made in valuing land which did not pay cash rents for the difference in rents paid by high-caste and low-caste cultivators. The new revenue amounts to 13:4 lakhs, and the incidence is Rs. 1-6 per acre, with very slight variations in different parganas. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees:-

| | 1880-1 | 1890-1- | 1900-7- | eprisi- |
|-----------------------------------|--------|---------|---------|---------|
| Land revenue . Total revenue . | 9.53 | 9,96 | 13,16 | 13,03 |

Local wifgovernment.

There is one municipality, Bria, and three towns are administered under Act XX of 1856. Beyond the limits of these, local affairs are managed by the District board, which in 1903-4 had an income of Rs. 90,000, chiefly derived from local rates, and an expenditure of Rs. 97,000, including Rs. 49,000 spent on roads and buildings.

Police and juils.

The District Superintendent of police has under him a force of x inspectors, 65 subordinate officers, and 237 constables distributed in 12 police stations, besides 32 municipal and town police, and 1,719 rural and road police. The District iail contained a daily average of 125 prisoners in 1903.

Education.

In regard to education, Partabgarh does not hold a high place. In 1901, 3-1 per cent. of the population (6-1 males and 0-1 females) could read and write. The number of public schools increased from 88 with 3,121 pupils in 1880-1 to 126 with 7,037 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 161 such schools with 7,493 pupils, of whom 65 were girls, besides 48 private schools with 1,036 pupils, including 2 girls. Only 916 pupils had advanced beyond the primary stage. Two schools are managed by Government and 100 by the District board. The total expenditure on education was Rs. 40,000, of which Rs. 24,000 was provided from Local funds, and Rs. 6,000 by fees.

Hospitals and dispensaries. There are ten hospitals and dispensaries, with accommodation for ninety-five in-patients. In 1903 the number of cases treated was 49,000, including 674 in-patients, and 1,489 operations were performed. The expenditure amounted to Rs. 11,000, chiefly met from Local funds.

Vaccina-

About 24,000 persons were successfully vaccinated in 1903-4, representing the low proportion of 26 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipality of Bellt.

(H. R. Nevill, District Gasetteer, 1904.)

Partābgarh Tahsīl (Pratipgarh).—Central tahsīl of Partābgarh District, United Provinces, comprising the parganaz of Atchā and Partābgarh, and lying between 25° 43' and 26° 11' N. and 81° 31' and 82° 4' E., with an area of 432 square miles. Population increased from 306,427 in 1891 to 316,580 in 1901, this being the only part of the District which showed an appreciable rise. There are 679 villages and three towns, Belā, the District and taksīl head-quarters (population, 8,041), and Partāboarh (5,148) being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,17,000, and for cesses Rs. 67,000. The density of population, 733 persons per square mile, is the highest in the District.

Through the centre of the takiil flows the Sai in a very winding channel. The banks of the river are sandy, but good loam is found at a short distance. In the south the soil is clay and swamps abound. In 1903-4 the area under cultivation was 265 square miles, of which 127 were irrigated,

wells being the chief source of supply.

Kundā. - South-western tahsil of Partabgarh District, United Provinces, comprising the parganas of Bihar, Dhingwas, Rampur, and Manikpur, and lying between 25° 34' and 26° 1' N. and 81° 19' and 81° 47' E., with an area of 543 square miles. Population fell from 332,876 in 1891 to 323,508 in 1901, this being the only taktil in which a decrease occurred. There are 686 villages and only one town, Manikour (population, 3,673). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,80,000, and for cesses Ra. 78,000. The density of population, 596 persons per square mile, is below the District average. The tahtil lies north-east of the Ganges, which is bordered by a high tract of fertile loam. Farther inland the soil becomes clay, and many ihils or swamps supply water for rice cultivation. In 1903-4 the area under cultivation was 280 square miles, of which 151 were irrigated. Wells and tanks or swamps supply irrigation in almost equal proportions.

Patti.—Eastern taksid of Partabgarh District, United Provinces, conterminous with the pargana of the same name, lying between 25° 39' and 26° 4' N. and 81° 56' and 82° 27' E., with an area of 467 square miles. Population increased from 272,592 in 1891 to 272,760 in 1901. There are 802 villages, but no town. The demand for land revenue in 1905-4 was Rs. 406,000, and for cesses Rs. 57,000. The density of population, 584 persons per square mile, is the lowest in the District. Through the centre of the takul flows the Sai, while the Gumti touches the north-east corner. A considerable area is badly drained, and a cut is now being made to improve it. The greater part, however, is fertile, and sugar-cane is grown more largely than elsewhere in the District. In 1903-4 the area under cultivation was 256 square miles, of which 136 were irrigated. Wells supply twice as large an area as tanks or

swamps.

Belä (or Belä Partäbgarh).—Head-quarters of Partäbgarh
District and tahril, United Provinces, situated in 25° 55° N,
and 82° E., on the bank of the Sai, at the junction of the
main line of the Qudh and Robilkhand Railway with a branch
from Allahabād to Fyzābād, and on a road between the same
two places. Population (1901), 8,041. The town derives its

name from the temple of Bela Bhawant near the river. It was founded in 1802 as a cantonment for the Oudh auxiliary force, and after the Mutiny became the head-quarters of a District. The town is well laid out and has been thoroughly drained. Besides the usual offices, it contains a general dispersary and a magnificent female hospital, and there is a branch of the Zanana Bible and Medical Mission. Bela has been a municipality since 1871. During the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 10,000. In 1903-4 the income was Rs. 14.000, chiefly derived from octroi (Rs. 8,000) and fees and rents; and the expenditure was Rs. 16,000. There is a flourishing trade in agricultural produce. Three schools have 140 pupils.

Partabgarh Town (Prataggarh),-Town in the takail and District of the same name, United Provinces, situated in 25" 54' N. and Si" 57' E., 5 miles south of BRLA. Population (1901), 5,148. It is said to have been founded about 1617 by Raja Partab Singh. The fort was of some importance in the eighteenth century and sustained several sieges. In the nineteenth century it was taken by the Oudh government. The Raja of Partabgarh resides in a fine building, portions of which are of considerable antiquity. He maintains a large school with 164 pupils, and a dispensary. Partiligarh is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about

Rs. 600. There is a flourishing local trade.

Boursfiguration, and river avstein.

Bara Banki District.-District in the Fyzabad Division daries, con- of the United Provinces, lying between 26° 31' and 27° 21' N. and 80° 56' and 81° 52' E., south-west of the Gogra, with an area of 1,758 square miles. It is bounded on the northwest by Strapur; on the north-east by the Gogra, which separates it from Bahraich and Gonda; on the south-east by Fyzābād and Sultānpur; on the south by Rāe Barell; and on the west by Lucknow. Bara Banki consists of an almost level upland plain sloping gently from north-west to south-east. Along the Gogra is found a strip of alluvial soil, which in the north becomes broader and includes the whole valley of the Chanka as far as its junction with the Gogra at Bahramghat. This low area is liable to flooding, and exposes great areas of loose white river sand. The uplands, however, present a broad sheet of level cultivation, dotted with many small villages and hamlets, and set so thick with groves of mango that they seem to meet in every direction and form a background to a landscape full of quiet charm. The District is one of the most prosperous in the United Provinces. It possesses: a fertile soil, excellent drainage, ample facilities for irrigation, and a thrifty and industrious peasantry. Excluding the Gogra, the chief river is the Gumti, whose winding course traverses the south of the District, while the central portion is drained by its two tributaries, the Reth and Kalyani. The banks of these streams are to some extent broken by ravines. Small shallow lakes and jhils are numerous everywhere.

Bara Banki exposes nothing but alluvium, and kunkar is the Geology.

only stony formation.

The flora generally is that of the Gangetic plain. Scattered Botany. patches of dhak (Butea frondosa) jungle occur, but their area has been much reduced by the spread of cultivation. A very

large area is occupied by mango groves.

Close cultivation has reduced the number and variety of Fauna. wild animals. Hog are still numerous in the tamarisk jungle along the Gogra and Chaukā, and ailgai are occasionally seen in the same region. Jackals are common everywhere. During the cold weather geese and duck abound, but other game birds are rare. Fish are caught in the tanks, but the plentiful supply in the rivers is hardly touched.

Excluding the low-lying tracts near the Gogra, Bara Banki Climate has a very healthy climate. Statistics of temperature are not and temkept; but the extremes of bent and cold are less marked than

in the Districts farther west.

The average annual minfall is nearly 40 inches, the eastern Rainfall. portion receiving the largest amount. Large fluctuations occur, and the recorded fall has varied from 23 to 64 inches.

Nothing is known of the ancient history of the District; Historyhet popular tradition connects the mounds, which are found in many places, with the Bhars. The Muhammadan conquest was effected earlier and more thoroughly than in most parts of Ondb. Saiyid Salar, the hero of many popular ballads, is said to have fixed his head-quarters for a time at Satrikh, and several Musalman families assign the settlement of their ancestors to this period. Other settlements were made in the thirteenth and fourteenth centuries, the Bhars being gradually crushed. It is noticeable that traditions of the occupation of large tracts by clans of Rajputs are less frequent here than in other parts of Oudh; and their conquests do not appear to have been made till the fifteenth century, when the country was the battle-ground between the kingdoms of Jaunpur and Delhi. Under Akbar the present District was divided between the sarkars of Lucknow and Oudh in the Subak of Oudh, and Mānikpur which belonged to Allahābād. Its later history is

chiefly a chronicle of the varying fortunes of the great families. In 1751 the Raikwars, who had entered Bara Bankt during the reign of Akbar, rose against the rule of the Nawah of Oudh, but were crushed after a fierce battle. For many years they remained out of possession of their former estates; but in the first half of the nineteenth century the lax government of the Oudh kings enabled them to recover a larger domain than had been theirs in 1751. The District, indeed, bore an evil reputation for turbulence and disorder. In jungles and ravines along the Gumti and Kalyāni lay the strongholds of many banditti whose crimes are recorded in Sir W, Sleeman's Diary.

In 1856 the District, with the rest of Oudh, came under British rule. During the Sepoy War of 1857-8 the whole of the Bara Bankt talukdars joined the mutineers, but offered no serious resistance after the capture of Lucknow. At the battle of Nawabgani (June, 1858) the Raikwar zamindars of Stranur and Bahraich fought and fell with all the historic heroism of Raiguts. The queen of Oudh, driven from Lucknow, had fled for refuge to their fort at Baundt, and these chivalrous chiefs were devoted to her cause. 'I have seen,' wrote the British General, 'many battles in India and many brave fellows fighting with a determination to conquer or die; but I never witnessed anything more magnificent than the conduct of these zamindars,' Order was re-established in July, 1858. In 1869-70 the District originally formed was increased by the addition of parts of Bahraich, Lucknow, Sultanpur, and Rae Barelt.

Archaeology. The ancient sites of the District still await exploration. Numerous deposits of coins and a copperplate grant of Gobind Chand of Kanauj, dated in 1151, have been discovered. There are many tombs, mosques, and buildings dating from the Muhammadan period, but none of importance to the archaeologist.

The people.

Bara Banki contains to towns and 2,052 villages. The population at the four enumerations was as follows: 1,113,430 (1869), 1,026,788 (1881), 1,130,906 (1892), 1,179,323 (1901). It is probable that the Census of 1869 overstated the truth; but Bara Banki suffered from searcity in 1877-8. The increase hetween 1891 and 1900 was comparatively high in all parts of the District, which is very densely populated. There are four taktilis—Rāmsanehīguāt, Nawabgani, Fatehpur, and Haddardard. The last three are named from the places at which their head-quarters are situated, while the taktilitär of Rāmsanehīghāt resides at Chamiergani. The principal town is

the municipality of Nawabgant, a mile from the town of BARA BANKI, which contains the District courts and civil station. The following table gives the chief statistics of population in 1901 :-

| Taket L | Area in square miles. | Town | Villagra- | Population | Population per | Percentage of variation is population be- tween 1861 and 1001. | Number of persons ashe to read and write. |
|----------------|--------------------------|------|-----------|------------|----------------|--|--|
| Rämanehighät | 585 | 3 | 616 | 387,670 | 662 | + 2.7 | 9,476 |
| Nawahganj , | 361 | 3 | 390 | 254,160 | 704 | + 46 | 6,883 |
| Fatchpur , | 531 | 2 | 673 | 535,407 | 644 | + 6-3 | 8,213 |
| Haidargarh . | 291 | 111 | 373 | 202,086 | 694 | + 3-7 | 5.307 |
| District total | 1,758 | 10 | 2,052 | 1,179,323 | 671 | + 613 | 29,879 |

Hindus form S3 per cent, of the total population, and Musalmans 17 per cent. About 92 per cent, of the population speak the Awadhi dialect of Eastern Hindl, while Hindustani is used by the remainder.

Kurmis (agriculturists), 162,000, are the most numerous of Center the Hindu castes. Others largely represented are; Ahirs and occu-(graziers and cultivators), 140,000; Pasts (toddy-drawers and pations. labourers), 135,000; Chamars (tanners and labourers), 92,000; Brähmans, 86,000; Rājputs, 41,000; Lodhas (cultivators), 27,000; and Koris (weavers), 25,000. Musalmans include Shaikhs, 14,000; Julähäs (weavers), 31,000; Behnis (cottoncarders), 14,000; and Pathans, 13,000. Agriculture supports 73 per cent, of the total population, and cotton-weaving nearly t per cent. Kurmis, Brāhmans, Rājputs, Muraos, and Ahirs are the principal cultivators.

Out of 144 native Christians enumerated in 1901, 136 were Christian Methodists. The American Methodist Missian commenced missions. work soon after the Mutiny and is the only missionary body in the District.

In the lowland area between the Chauka and the Gogra General cultivation is very precarious, owing to the liability to flooding, agricul-West of the Chauka and lower down the Gogra the alluvial ditions. soil is better, especially in dry years. The central part of the District forms the valley of the Kalyani, which consists of rich loam or clay, plentifully supplied with means of irrigation. The soil becomes more sandy as the Gumti is approached. In the extreme south a tract of clay bind is found resembling that in the adjoining District of Rae Barell. The Gumti valley is

flooded after heavy rain, which occasionally damages the lowland near the bed of the river, but recovery is rapid.

Chief agricultural statistics tal crops.

The District is held on the tenures usually found in OUDH. Talukdāri estates include about 47 per cent, of the total area, and princi- while sub-settlement holders have about 8 per cent. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles:-

| Taket | Total. | Cultivated. | treignood. | Caltivable waite. |
|----------------|--------|-------------|------------|----------------------|
| Räussmehlighät | 585 | 400 | 144 | 59 |
| Nawähgan] . | 361 | 951 | 101 | 50 |
| Fatehpur | gor | 353 | 1113 | 69 |
| Haidargarh . | 291 | 189 | 73 | 37 |
| Total | 1,758 | 1,194 | 433: | 215 |

Rice, gram, and wheat are the crops most largely grown, covering 339, 301, and 295 square miles, or 28 to 25 per cent. of the net cultivated area, respectively. Pulses (171 sq. miles). kodon and small millets (166), barley (89), peas and masur (68), and maize (56) are also important. Poppy is grown on 44, and sugar-cane on 36 square miles.

Improve ments in agriculintal pynotice.

The large area under the more valuable crops, such as poppy, rice, and wheat, testifies to the high standard of cultivation, which is hardly surpassed in any District of the United Provinces. There has been a considerable increase in the cultivated area during the last forty years, amounting to 15 or 20 per cent., and this has been attended by a still larger rise in the area double cropped. Barley has been replaced by wheat, and joyeur by maize, while the area under rice, sugar-cane, and poppy has risen considerably. Drains have recently been made in one or two places where drainage was defective. Advances are readily taken under the Land Improvement and Agriculturists' Loans Acts, and amounted to a total of 4-9 lakhs during the ten years ending 1900, out of which 7-6 lakhs was advanced in 1896-7. Increased prosperity accounts for the falling off in the next four years, when an average of Rs. 2,000 was lent.

Cattle, ponies, and sheep.

The cattle bred locally are of inferior quality, and the best are imported from Bahmich. There is no horse-breeding. Sheep are kept in comparatively small numbers, but goats are largely bred for food and for their bair.

Although it contains no canals, the District is unusually well Irrigation. protected by means of irrigation. In 1903-4 tanks and jhili supplied 268 square miles, wells 153, and other sources 12. Practically speaking, every field which requires water gets it. The jtils fail in exceptionally dry years, but temporary wells can be made in nearly all parts. Thus in the autumn of 1896 about 20,000 earthen wells were dog by tenants with their own resources, or by aid of loans from Government and from estates under the Court of Wards. Irrigation from wells is increasing, and the District is now much less dependent on tanks than formerly. The lever or the pot and pulley is used in most parts to mise water; but in places where the spring-level is low a leathern bucket worked by bullocks is employed. Water is raised from tanks by the swing-basket.

Kankar or calcareous limestone is common in all parts, and Minerals, is used for metalling roads and for making lime. Glass is

manufactured from saline efflorescences.

The most important industry of the District is the weaving Ara and of cotton cloth. Cotton rugs are also manufactured, and an manufactured excellent class of cotton prints is turned out at Nawabganj. Iron sugar mills are made at a factory at Bahramghāt; and brass vessels and small articles of metal, such as locks, nutcrackers, and tobacco-cutters, are made at one or two places. A little furniture is manufactured at Bahramghāt.

Bara Banki exports grain, raw sugar, hides, and cotton cloth Commerce of local manufacture, while it imports piece-goods and yarn,

metals and hardware, and refined sugar. The trade is chicily carried by railway; but there is also an immense traffic by cart with Lucknow, which absorbs much of the surplus grain of the District. A large quantity of timber passes through Rahramghāt. Nawābganj is the most considerable commercial centre, but bazars are springing up at the railway stations and

taking the place of the older markets.

The loop line of the Oudh and Rohilkhand Railway from Railways Benares to Lucknow passes across the District, and a branch and roads from Nawabganj runs to Bahranghat on the Gogra. A narrow-gauge line belonging to the same railway runs from Lucknow to Burhwal, where it meets the Bengal and North-Western Railway, which crosses the Gogra by a magnificent bridge, 3,695 feer in length. A branch of the Bengal and North-Western Railway from Burhwal to Shāpur is under consideration. The District is well supplied with roads. Out of a total length of 632 miles, 161 are metalled. The latter are in charge of the Public Works department, but the cost of all but 47 miles is charged to Local funds. Avenues of trees are maintained on 274 miles. The chief routes are the roads from Lucknow

to Fyzībād, and from Nawābganj to Fatchpur, Bahrāmghāt, and Haidargarh.

Famine.

The increase in well-irrigation and improved communications have prevented the District from suffering severely from the effects of drought. Tradition relates that in 1837 famine was intense. Bara Banki escaped lightly in subsequent years of scarcity till 1877-8. Relief works were then opened, but the numbers never rose above 6,500 in a day, and distress was severe only in the tract south of the Gumti. The failure of the rains in 1896 actually benefited the lowlands, which had recently been damaged by the excessive rain of 1894. Much loss was, however, caused in the central tract, and still more in the south. Relief works were opened and the numbers rose as high as 43,000; but the spring crop of 1897 was saved by the number of wells made, and the total expenditure on relief was only 1.5 lakhs.

District

The Deputy-Commissioner is usually assisted by four Deputy-Collectors recruited in India. Two officers of the Opium department are stationed in the District, and a tahsildar resides at the head-quarters of each tahsil.

Civil justice and crime.

There are two Munsifs and a Subordinate Judge for civil work. The District is included in the Civil Judgeship of Fyzābād and in the Sessions Judgeship of Lucknow. Crime is not on the whole of a serious nature, though rioting is more than usually prevalent, and murders occur with some frequency. Dacoities by regular gangs have taken place recently. Female infanticide was once common, but is not suspected now.

Land reverue administration.

The first summary settlement involved the setting aside of talukdars to a large extent. After the Mutiny their estates were restored and a second summary settlement was made, the demand being fixed at 11-9 lakhs. A survey was then carried out, which was followed by the first regular settlement between 1863 and 1868. The assessment was largely based on the actual rent-rolls, checked by rough estimates of the apparent value of each village and by rates applied to the area of different classes of soil. A revenue demand of 15-8 lakhs was proposed, which was reduced to 15-3 lakhs before confirmation. The latest revision was made between 1893 and 1898, preceded by a partial resurvey. The pargana of Bhitauli is permanently settled with the Raja of Kapusthala State as a reward for services in the Mutiny. Assessment was based as usual on the actual rent-rolls, the rates of money rents being applied to value the 'assets' of similar land where money rents were not paid. The result of the revision was to fix a revenue of 20-3 lakhs,

the incidence being Rs. 1-8 per acre, varying from Rs. 1-5 to Rs. 2-4 in different parganas. Collections on account of land revenue and revenue from all sources have been, in thousands of rupees:—

| | 1885+L | 1890-è. | 1900-1 | 1903-4 |
|-----------------------------------|--------|---------|----------------|----------------|
| Land revenue . Total revenue . | 16,77 | 15,58 | 18,93 25,02 | 19,7# ±6,68 |

There is one municipality, Nawabsanj, and nine towns are Local selfadministered under Act XX of 1856. Beyond the limits of governthese, local affairs are managed by the District board, which in 1903-4 had an income of 1.3 lakhs, chiefly derived from rates, and an expenditure of 1.4 lakhs, of which Rs. 80,000 was spent on roads and buildings.

The District Superintendent of police has under him a force police and of 3 inspectors, 85 subordinate officers, and 312 constables, jalla distributed in 12 police stations, besides 142 municipal and town police, and 2,626 rural and road police. The District

jail had a daily average of 425 prisoners in 1903.

Bam Banki does not take a very high place as regards the Education. literacy of its population, of whom 2.5 per cent. (4.8 males and 6.1 females) could read and write in 1901. The number of public schools fell from 145 in 1880-1 to 140 in 1900-1, but the number of pupils increased from 5,129 to 7,647. In 1903-4 there were 170 such schools with 8,317 pupils, of whom 401 were girls, besides 280 private schools with 1,998 pupils, including 96 girls. All of the pupils but 1,262 were in primary classes. Three schools are managed by Government and 127 by the District and municipal boards. The total expenditure on education was Rs. 54,000, of which Rs. 44,000 was provided from Local funds, and Rs. 8,000 by fees.

There are twelve hospitals and dispensaries, with accommong tospitals dation for sixty-eight in-patients. In 1903 the number of cases and distreated was 86,000, including 860 in-patients, and 3,881 pensaries, operations were performed. The expenditure in the same year amounted to Rs. 17,000, chiefly met from Local funds.

In 1903-4, 30,000 persons were successfully vaccinated, Vaccinarepresenting the low average of 26 per 1,000 of population. Vaccination is compulsory only in the municipality of Nawabganj.

(C. W. W. Hope, Settlement Report, 1899; H. R. Nevill, District Gazetteer, 1904.)

Rämsanehighät. - South-eastern tahsil of Bära Banki District, United Provinces, comprising the parganus of Daryabad, Saraipur, Rudault, Basorht, and Mawai Maholara, and lying between 26° 35' and 27° 2' N. and 81° 21' and 81° 52' E., with an area of 585 aquare miles. Population increased from 377,527 in 1801 to 387,670 in 1901. There are 616 villages and three towns, Rudaull (population, 11,708) and Darvarad (5,928) being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 6,35,000, and for cesses Rs. 99,000. density of population, 662 persons per square mile, is about the District average. The tahul stretches from the Gogra on the north-east to the Gumti on the south, the central portion being drained by the Kalyant, a tributary of the Gumtl. It contains a number of juils or swamps, and drains have recently been made to improve water-logged areas. In 1903-4 the area under cultivation was 400 square miles, of which 144 were irrigated. Tanks or swamps supply about twice as large an area as wells.

Nawabganj Tahsil.-Head-quarters tahsil of Bara Banki District, United Provinces, comprising the parganas of Nawabganj, Partābganj, Satrikh, and Dewā, and lying between 26° 43' and 27° 8' N. and 81° 1' and 81° 26' E., with an area of 361 square miles. Population increased from 242,975 in 1891 to 254,160 in 1901. There are 390 villages and five towns, Nawaboans, the taksti head-quarters (population, 14,478), and ZAIDPUR (9,700) being the largest. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,93,000, and for cesses Rs. 76,000. The density of population, 704 persons per square mile, is the highest in the District. The tahal is bounded on the northeast by the Kalyani, and the southern part is drained by the Reth, both rivers being tributaries of the Gumtt. It lies in the fertile upland area, and contains a number of jhils or swamps used for irrigation. In 1903-4 the area under cultivation was 252 square miles, of which ror were irrigated. Wells supply a rather larger area than tanks or swamps.

Fatehpur Tahsil.—Northern tahsil of Bära Banki District, United Provinces, comprising the pargunas of Rämnagar, Muhammadpur, Bādo Sarai, Fatehpur, Bhitauli, and Kursi, and lying between 26° 58' and 27° 21' N. and 80° 56' and 81° 35' E., with an area of 521 square miles. Population increased from 315,652 in 1891 to 335,407 in 1901. There are 673 villages and two towns, including Fatehpur, the tahsil headquarters (population, 8,180). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 5,05,000, and for cesses Rs. 82,000. Bhitault

pargana is permanently settled. The density of population, 644 persons per square mile, is the lowest in the District. The north-eastern portion of the tahul is a low tract lying between the Chauka and Gogra, which is liable to be swept by floods. Elsewhere the land lies high, forming a level fertile plain studded with many small tanks or swamps. In 1903-4 the area under cultivation was 353 square miles, of which 113 were irrigated. Tanks or swamps supply a larger area than wells.

Haldargarh.—Southern tahal of Bara Banki District, United Provinces, comprising the pargunas of Haidargarh, Subeha, and Siddhaur, and lying between 26° 31' and 26° 51' N. and 81° 10' and 81° 35' E., with an area of 291 square miles. Population increased from 194,752 in 1891 to 202,086 in 1901. There are 373 villages, but no town. The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,37,000, and for cesses Rs. 52,000. The density of population, 694 persons per square mile, is above the District average. Across the middle of the tahsil flows the Gumtt between high sandy banks. South of the river the soil is clay. In 1903-4 the area under cultivation was 189 square miles, of which 75 were irrigated. Tanks or swamps are a less important source of supply than in other parts of the District.

Bahrāmghāt.—Village in the Fatehpur tahsil of Barā Banki District, United Provinces, situated in 27° 7′ N. and 81° 27′ E., on the right bank of the Gogra at its junction with the Chaukā, on the broad-gauge line of the Oudh and Rohilkhand Railway, and on a road from Lucknow to Gonda. Population (1901), 2,838. The place was formerly of commercial importance as the point at which traffic crossed the Gogra, and a bridge of boats, replaced during the rains by a ferry, is still maintained. The construction of the Elgin railway bridge a mile away has reduced the trade passing through it; but there is still a large traffic in timber and grain from Nepal and the Districts north of the Gogra. Timber is sawn here, and there is a small manufacture of furniture. A factory owned by a European turns out and repairs iron sugar mills.

Bara Banki Town.—Town in the Nawabganj tahtil of Bara Banki District, situated in 26° 56' N. and 81° 12' E., on the Oudh and Rohilkhand Railway and on the Lucknow-Fyzhad road. Population (1901), 3,020. The place lies a mile north of Nawabganj Town, and is chiefly notable as giving its name to the District, and containing the courts, offices, and residences of the District officials. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 500.

Burhwal.—Railway junction in the Fatchpur taksil of Bāra Bankt District, situated in 27° 5' N. and 81° 24' E. The main line of the Bengal and North-Western Railway meets the Oudh and Rohilkhand Railway metre-gauge here, while a branch of the broad-gauge line runs to Bahrāmghāt. A branch of the Bengal and North-Western Railway to Sītāpur has been projected.

Daryābād.—Town in the Rāmsanehighāt taksil of Bāra Bankī District, situated in 26° 53' N. and 81° 34' E., close to the Oudh and Rohilkhand Railway. Population (1901), 5,928. It is said to have been founded in the fifteenth century by an officer of Muhammad Shāh of Jaunpur. At annexation it was selected as the head-quarters of the District, but on account of its unhealthiness the offices and courts were moved to Rāra Bankī town. Daryābād contains a dispensary, and a school with 156 pupils. It is administered under Act XX of 1856, with an income of about Rs. 1,300.

Fatehpur Town.—Head-quarters of the tahail of the same name in Bara Rankt District, Umited Provinces, situated in 27° 10′ N. and 81° 14′ E., on a metalled road. Population (1901), 8,180. Varying traditions assign the foundation of this place to the fourteenth and fifteenth centuries. It is full of old masonry buildings, most of which are in a state of decay. The finest is an imambara built by an officer of Nashrud-din Haidar. An old mosque is said to have been constructed in the reign of Akbar. Fatehpur contains, besides the usual offices, a dispensary and a school with 130 pupils. It is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,400. Markets are held twice a week, and there is a considerable trade in grain. Many weavers reside here, who turn out cotton cloth, rugs, and carpets.

Nawābganj Town.—Head-quarters of the tahsil of the same name in Bāra Bankī District, United Provinces, situated in 26° 52′ N. and 81° 12′ E., close to the Bāra Bankī station of the Oudh and Rohilkhand Railway and on the Lucknow-Fyzābād road. Population (1901), 14,478. A country house was built here by Nawāb Shujā-ud-daula of Oudh, and the town sprang up under Asaf ud-daula. In the Mutiny it formed a centre of disaffection, and was the scene of a signal defeat of the insurgent army by a British force under Sir Hope Grant. It has since become virtually the head-quarters of the District, the courts being situated in the neighbouring town of Bāra Bankī. Nawābganj contains a high school, three sarwis, male

and female dispensaries, and a fine campanile erected by private subscription. Municipal administration was introduced in 1868, and during the ten years ending 1901 the income and expenditure averaged Rs. 20,000. In 1901-4 the income was Rs. 24,000, including octroi (Rs. 10,000), tax on trudes (Rs. 3,000), and rents (Rs. 4,000); and the expenditure was also Rs. 24,000. There is a considerable trade in grain and cloth. The place was formerly noted for sugar, but the traffic in this is declining. Cotton cloth is woven, and excellent curtains are made of cotton prints. There are four schools with 525 pupils.

Rudauli.-Town in the Ramsanehighat tahsil of Bara Bankt District, United Provinces, situated in 26° 45' N. and 8r° 45' E., on the Oudh and Rohilkhand Railway and close to the Lucknow-Fyzābād road. Population (1901), 11,708. The foundation of the town is ascribed to a Bhar chief, named Rudra Mal, It contains the shrines of two noted Muhammadan saints: Shah Ahmad, who was entombed alive for six months; and Zohra Bibi, who recovered her sight miraculously by a visit to the shrine of Saivid Sălâr at Bahraich. Large fairs are held at each of these. Rudault is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 3,200. There is a flourishing trade in grain, and cotton cloth is manufactured. The town contains a dispensary, and a school with 106 pupils.

Zaidpur.-Town in the Nawabgani taksil of Bara Banki District, United Provinces, situated in 26° 40' N. and 81° 20' E., on a branch of the Lucknow-Fyzabad road. Population (1901), 9,700. The town is said to have been founded by a Saivid in the fifteenth century, and is the home of a large Saivid community. The inhabitants are noted for their turbulence, and religious troubles are not infrequent. Zaidpur is administered under Act XX of 1856, with an annual income of about Rs. 1,600. There is a flourishing trade in agricultural produce and hides, and cotton cloth is largely woven. The town contains a dispensary, and a school with 160 pupils.

RAMPUR AND TEHRI STATES

Bonndaries, configuration, and river system.

Rāmpur State.—Native State in Rohilkhand, under the political superintendence of the Government of the United Provinces, lying between 28° 25' and 29° 10' N. and 78° 52' and 79° 26' E., with an area of 893 square miles. It resembles a wedge in shape, with the apex pointing south. On the north it is bounded by Naint Tal District; on the east by Bareilly; on the south by Budaun; and on the west by Morādābād. Rāmpur State is a level, fertile tract of country, the northern portion of which resembles the damp Tarat tract lying farther north. It is crossed by many small streams, the chief of which are the Kosi and Nāhal. The Rāmgangā, which flows from north-west to south-east across the southern part of the State, ultimately receives all the drainage.

Geology.

The whole State lies in the area occupied by alluvium, and no rocky or stony formation occurs in any part.

Botany.

The flora is that of the damp submontane tract. There is not much jungle, except in the north. Bamboos flourish everywhere, and the country is dotted with groves of mango trees. There are many groves of ber (Zizyphus Jujuba).

Fauna.

Leopards are not uncommon, and tigers have frequently been killed along the northern frontier. Game is fairly abundant. Hog, antelope, *nilgai*, hares, partridges, quail, wild duck, florican, and small sand-grouse are found more or less throughout the territory; but snipe are scarce. Rämpur is celebrated for its breed of hounds, originally introduced from Southern India. They are generally of a grey colour, with a smooth coat, and larger than English greyhounds. An improved variety is now obtained by crossing with English greyhounds, and the animals so bred are easier to train than the pure breed.

Climate, temperature, and randall. Regular meteorological records have been kept for only a few years. The climate resembles that of the neighbouring Districts of BARELLY, MORADARAD, and the submontane portion of NAINI TAL. The north is very malarious.

History.

The early history of the State is that of ROBILKHAND. Two Robilla brothers, Shah Alam and Husain Khan, came in the

latter part of the seventeenth century to seek service under the Mughal emperor. The son of the first of these, Dand Khan, distinguished himself in the Maratha Wars and received a grant of land near Budaum. His adopted son, All Muhammad. obtained the title of Nawab and a grant of the greater part of Rohilkhand in 1719. Having offended the Subahdar of Oudh, Safdar Jang, who was jealous of his rapid rise to power, All Muhammad was compelled to surrender all his possessions in 1745 and was kept a close prisoner at Delhi for six months. after which he was released and appointed governor of the Mughal province of Sirhind, where he remained for a year. But taking advantage of the confusion consequent on the invasion of Ahmad Shāh Abdāli, he regained supremacy over Rohilkhand in 1748, and eventually obtained a confirmation of this territory from the emperor, Ahmad Shah Bahadur, After the death of All Muhammad his estates were divided among his sons, and the jagir of Rampur Kotera fell to Faiz-ullah Khān, the younger son. On the incursion of the Marathas, the Robilla chiefs applied for aid to the Nawah Wazir of Oudh. This was granted on promise of a payment of 40 lakhs. The Rohillas, however, failed to fulfil their pecuniary obligations; and the Nawab Wazir obtained from Warren Hastings the use of a British army, which defeated the Rohillas and brought Rohilkhand under the direct rule of Oudh. An exception, however, was made in the case of Faiz-ullah Khan, who was permitted to retain the estate or idgir of Rampur on condition of military service. This obligation was afterwards commuted for a cash payment of 15 lakhs. On the death of Faiz-ullah Khān in 1793 dissensions broke out in the family, the eldest son was murdered, and the estate usurped by a younger son. As it was held under British guarantee, the aid of British troops was given to the Nawab of Oudh in ejecting the usurper and installing Ahmad All Khan, son of the murdered chieftain.

On the cession of Rohilkhand to the British Government in 1801, the family were confirmed in their possessions. For his unswerving loyalty during the Mutiny of 1857, Muhammad Yusuf Ali Khān, Nawāh of Rāmpur, received a grant of land, then assessed at 1-3 lakhs, in addition to other honours and an increase of guns in his salute. He was succeeded in 1864 by his son, Nawāh Muhammad Kalb Ali Khān, G.C.S.I., C.I.E., who, at the Imperial Assemblage at Delhi, received a standard and an addition for life of two guns to his salute, the ordinary salute of the chiefship being thirteen guns. Sir Kalb

All Khān died in 1887 and was succeeded by Mushtāk All, who only survived for two years. The present Nawāb, Hāmid All Khān Bahādur, was a minor at his accession, and the affairs of the State were administered by a Council of Regency till 1896, when the Nawāb was invested with full powers. He holds the honorary rank of Major in His Majesty's army.

The people.

Rămpur contains 6 towns and 1,120 villages. Population increased from 1872 to 1891, but fell in the next decade owing to unfavourable seasons. The numbers at the four enumerations were as follows: 507,004 (1872), 541,914 (1881), 551,249 (1891), 533,212 (1901). There are five tahsils—the Huzûr or head-quarters, Shāhānān, Milak, Bīlāspur, and Suār. The head-quarters of the first are at Rāmpur city, and of the others at places which give their names to the tahsils. Rāmpur is the capital of the State. The following table gives the chief statistics of population in 1901:—

| Takst. | Arrath equate | Towns Towns | niter of | Population | Population per square mile. | Presentage of variation in population be- tween 1831 and 1901. | Number of persons able to read and write |
|-------------|---------------|-------------|----------|------------|--------------------------------|--|---|
| Husür | 276 | 1 | 244 | 178,333 | t,ot3 | iii | |
| Shāhābād . | 166 | 1 | 197 | 82,716 | 498 | 125 | 1775 |
| Milak | 155 | 1 | 201 | 94,046 | 603 | 100 | 4411 |
| Blikspur | 204 | T | 223 | 73/450 | 360 | Cale | 444 |
| Seile | 191 | 2 | 255 | 104,667 | 54% | 0.000 | 1993 |
| State total | 893 | 6. | 1,120 | 533,411 | 399 | - 5-3 | 10,071 |

Hindus form 55 per cent, of the total and Musalmans 45 per cent.—a much higher proportion than in any District of the United Provinces. The density of population is high in the centre of the State, but decreases in the north and south. The Hindustani dialect of Western Hindi is the language in ordinary use.

Castes and occapations. Among Hindus the most numerous castes are: Chamārs (tanners and cultivators), 40,000; Lodhus (cultivators), 34,000; Kurmīs (cultivators), 25,000; Mālīs (market-gardeners), 20,000; Brāhmans, 16,000; and Ahīrs (graziers and cultivators), 14,000. Muhammadans include Pathāns or Rohillas, 40,000; Turks (cultivators), 33,000; Julāhās (weavers), 25,000; and Shaikhs, 24,000. As is usual in the submontane tract, Banjārās (8,000) are fairly numerous. Agriculture supports 61 per cent, of the population, and cotton-weaving 3-5 per cent.

Out of 440 native Christians enumerated in 1901, 186 were Christian Methodists. There are no missions in the State.

The north of the State is composed of heavy clay and chiefly Agriculproduces rice. Towards the centre and south a rich loam is ture. found, in which a great variety of crops can be grown. The main agricultural statistics for 1903-4 are given below, in square miles :--

| Taket. | Total- | Cultivated. | Irrigated. | Cultivable waste. |
|-------------|--------|-------------|------------|----------------------|
| Histor . | 176 | 131 | 8 | |
| Shilhibad . | 166 | 110 | -8 | 28 |
| Milak | 356 | 315 | 24 | 15 |
| Biliapur | 204 | 69 | 37 | 39 |
| Suar . , | 191 | 774 | 14 | 36 |
| Total | 893 | 539 | 91 | 143 |

Maize is the crop most largely grown, covering 125 square miles. Wheat (103 square miles) and rice (08) are also important staples, and sugar-cane was grown on 28 square miles. Cultivation is spreading, but reliable statistics are not available to indicate the variations in the area under different crops,

The cattle and punies bred locally are very inferior. Ponies Cattle are, however, largely imported by the Baniārās, who use them and as pack-animals. Mule-breeding has recently been introduced. ponics.

A system of damming small streams to provide water for Irrigation. irrigation had long been in force in the State. It was wasteful and unscientific, and has now been replaced by a regular system of small canals, the chief of which are taken from the Bahalla and Kosi rivers. Masonry dams have been thrown across these two rivers, and others are contemplated. Almost the whole area north of the Ramganga is protected by canals. The area irrigated varies according to the season from about so to 150 square miles.

The most important industry is the weaving of cotton cloth, Arts and which is carried on in many places. A very fine cotton manufacdamask, called thes, which is produced at Rampur city, is not surpassed in any part of India. Ornamental pottery is also made, consisting of a red earthen body overlaid with opaque enamel, which is coloured dark blue or turquoise. Excellent sword-blades and other articles of steel are made, and matchlocks and guns were formerly turned out. Minor industries include sugar-refining and the manufacture of papier-maché and lacquer goods.

Commerce. The State exports sugar, rice, and hides, and imports piecegoods, metals, and salt. Goats are also imported in large numbers for food. Rampur was once noted for its trade in horses and elephants, but this has declined.

Rollways and roads.

The main line of the Oudh and Rohilkhand Railway crosses the State from south-east to north-west. No kankar is found, and communications by road were defective, but have been much improved. Kankar is now imported and mixed with stone brought from the Bhābar. About 33 miles of metalled roads are maintained in and near Rampur city by the State, and the British Government repairs two metalled roads, one passing from Moradabad to Bareilly and the other towards Naint Tal. There are also 223 miles of unmetalled roads. Avenues of trees are kept up on 196 miles.

Familie.

Generally speaking the State has suffered little from famine. A severe visitation is recorded in 1813, when corpses were daily seen in the streets. In 1877 famine would have been severely felt, but relief works were opened and alms were freely given to the aged and infirm. In 1896 extensive public works were started, and a large quantity of grain was purchased and sold by the State below market rates.

Administration.

The Commissioner of the Bareilly Division is Political Agent to the Lieutenant-Governor of the United Provinces for Rämpur. Since the present Nawah was invested with full powers, the services of a native official of the United Provinces have been lent to the State. This officer is called the Minister, or Madar-ul-maham, and various departments are controlled by him subject to the direction of the Nawab. The principal executive officials are the chief secretary, the home secretary, the legal remembrancer, and the Diman-i-sadr.

Legisla-Tron.

In 1902 a legislative committee was formed, consisting of members of the ruling family, officials, and leading residents in Rampur city. The Minister presides over the committee, and the regulations framed are published for criticism. Codes dealing with rent and revenue law had been issued previously, and the chief measures so far dealt with by the committee have been concerned with the municipality of Rampur and registration.

Temies.

Each taksil is in charge of a taksildar, who has jurisdiction in tent, revenue, and civil cases, and is also a magistrate with powers corresponding to those of a magistrate of the second class in British territory. Appeals in rent and revenue cases lie to the Narim. Jurisdiction in civil cases is limited to suits relating to movable property not exceeding Rs. 1,000. Suits

up to Rs. to,000 are heard by the Mufti Diwani or civil court at Rampur. More important cases and appeals in civil suits from the orders of tahstldars and the Mufti Diwani are decided by the District Judge. There is also a Court of Small Causes at Rampur. Magisterial powers are vested in a bench and in several special magistrates. The Chief Magistrate has powers of imprisonment up to three years, the Sessions Judge up to five years, the Minister up to ten years, while sentences of life imprisonment or death require the sanction of the Nawab. Appeals from the orders of subordinate magistrates lie to the court of the Chief Magistrate and then to the Sessions Judge. All cases, whether civil, criminal, or revenue, are further appealable to the Minister, and finally to the Nawab.

The ordinary revenue of the State for a series of years is Finance, shown below, in thousands of rupees:—

| | 1880-L | 1890-L | 1900-11 | 1903-4- | |
|-----------------|--------|--------|---------|---------|--|
| Land revenue . | 15.58 | 19.58 | 18,36 | 19.19 | |
| Total revenue . | 15.87 | 30,67 | 34,33 | 35:38 | |

Apart from land revenue, the chief items in 1903-4 were: interest on Government promissory notes (6.2 lakhs), cesses (2.4 lakhs), miscellaneous (2.5 lakhs), and irrigation (Rs. 49,000). The expenditure included: privy purse (4 lakhs), public works (5 lakhs), army (4.6 lakhs), pensions (3.4 lakhs), land administration (1.6 lakhs), and police (1.6 lakhs).

Property in land is not recognized in the greater part of Land the State. The rights of landholders in the area ceded by revenue. the British after the Mutiny were maintained; but in the case of 28 villages out of 146, the proprietary right has since been purchased by the State. There is thus no distinction between rent and land revenue, except in the remaining ceded villages. Collections are made through lessees or farmers, who receive leases for ten years or even longer. Leases are sold by auction; but the improvement of records and the establishment of a settlement department have materially facilitated the fixing of suitable amounts. Lessees are liable to a penalty in case of a decrease in cultivation. The cultivators acquire occupancy rights as in the Province of Agra (see United Provinces), but after a period of sixteen years instead of twelve. The minimum term for new tenants has been fixed at five years. A complete survey of the State was made in 1890.

Miscellabeous revenue

Liquor is made within the State by licensed contractors, to whom the right of manufacture and vend is sold by public auction, the receipts in 1903-4 being Rs. 41,000. Optum is sold to the State by the British Government at cost price up to 14½ cwt. annually, and at the rate fixed for sale to licensed vendors in Morādābād District for any amount in excess of 14½ cwt. It is retailed at the rates prevalent in adjacent British Districts. The right to sell hemp drugs is farmed by auction. Charas is imported direct from the Punjab and bhang from the United Provinces. The profit on opium and drugs in 1903-4 amounted to Rs. 18,000. Other items of miscellaneous revenue included chaukidāri cess (Rs. 65,000), stamps (Rs. 41,000), salt and saltpetre (Rs. 15,000), tax on sugar mills (Rs. 8,000), and registration (Rs. 9,000).

Municipal.

The only town under municipal administration is RAMPUR CITY. The municipal commissioners are elected.

Public works.

Public works are in charge of a European Chief Engineer, formerly in British service. The chief public buildings are at Rampur city. Substantial offices have been constructed at the tahsils, and the roads, bridges, and canals are well maintained.

Army,

The State maintains three squadrons of cavalry, of which two squadrons (317 strong) are Imperial Service Lancers. The local forces include 1,900 infantry, and 206 artillery with 23 guns.

Police and juits. The police force is organized on the system in the United Provinces. The Superintendent has an Assistant, and a force of 2 inspectors, 101 subordinate officers, and 409 constables, distributed in 12 police stations and 7 outposts. There are also 149 municipal and road police, and 1,281 village police. In 1904 the juil contained a daily average of 494 prisoners.

Education.

The State is backward as regards literacy, and in 1901 only 1-4 per cent. of the population (2-5 males and 0-1 females) could read and write. During the last few years, however, considerable attention has been devoted to education. The number of schools increased from 10 with 316 pupils in 1880-1 to 104 with 3,741 pupils in 1900-1. By 1903-4 the number of schools had further risen to 128, with 4,424 pupils, of whom 150 were girls, in addition to 20 private schools attended by 850 pupils. A celebrated Arabic college, with 400 students, which is maintained by the State, attracts students from all parts of India and even from Central Asia. The principal school for English education at Rämpur city has 332 pupils. There is also an industrial school at Rämpur. Of the total number of pupils only 777 are in secondary classes.

The expenditure on education in 1903-4 was Rs. 53,000, of which Rs, 18,000 was derived from a special cess.

There are 15 hospitals and dispensaries, with accommo-Hospitals dation for 200 in-patients. In 1903-4 the number of cases and distreated was 186,000, including 951 in-patients, and 3,616 personner. operations were performed. The expenditure, including the cost of sanitation, amounted to Rs. 47,000. Hospitals exist for treatment by both European and indigenous methods.

About 11,000 persons were vaccinated in 1903-4, showing Vaccinaa proportion of 21 per 1,000 of population. Vaccination is tion. compulsory in Rampur city.

(State Gazetteer, 1883 [under revision]; Annual Administration Reports.)

Huzur Tahsil.-Head-quarters tahsil in the State of Rampur, United Provinces, lying between 28° 30' and 28° 59' N. and 78° 55' and 70° 11' E., with an area of 176 square miles. Population (1901), 178,333. There are 244 villages and one town, Rampur City, the tahsil and State capital (population, 78,758). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 4,85,000, and for cesses Rs. 58,000. The high density of population, 1,013 persons per square mile, is due to the inclusion of the city. This tahsil lies in the centre of the State and is very fertile. In 1903-4 the area under cultivation was 131 square miles, of which 8 were irrigated, chiefly from canals,

Shāhābād Tahsīl,-Southern tahsil in the State of Rampur, United Provinces, lying between 28° 25' and 28° 43' N. and 78° 52' and 79° 5' E., with an area of 166 square miles, Population (1901), 82,716. There are 197 villages and one town, Shahabab, the tahsil head-quarters (population, 7,338). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,56,000, and for cesses Rs. 43,000. The density of population, 498 persons per square mile, is below the State average. The tahsil lies on both banks of the Rāmgangā, and is less protected by canals than other parts of the State. In 1903-4 the area under cultivation was 110 square miles, of which 8 were irrigated, chiefly from wells,

Milak .- South-eastern taksil in the State of Rämpur, United Provinces, lying between 28° 34' and 28° 51' N. and 79° 5' and 79° 18' E., with an area of 156 square miles. Population (1901), 94,046. There are 201 villages and one town, Milak, the tohil head-quarters (population, 2,615). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3.83,000, and for cesses Rs. 46,000. The density of population, 603 persons per square mile, is slightly above the State average. The takiil lies in the fertile central area. In 1903-4 the area under cultivation was 115 square miles, of which 24 were irrigated, chiefly from canals.

Bilaspur Tahsil.—North-eastern tahsil in the State of Rampur, United Provinces, lying between 28° 44' and 29° 1' N. and 79° 10' and 79° 26' E., with an area of 204 square miles. Population (1901), 73,450. There are 223 villages and one town, Bilaspur, the tahsil head-quarters (population, 4,448). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,08,000, and for cesses Rs. 49,000. The density of population, 360 persons per square mile, is the lowest in the State. The tahsil lies in the damp submontane tract and is intersected by many streams, some of which supply small canals. In 1903-4 the area under cultivation was 69 square miles, of which 37 were irrigated.

Suār.—North-westem tahtil in the State of Rāmpur, United Provinces, lying between 28° 53' and 29° 10' N. and 78° 55' and 79° 14' E., with an area of 191 square miles. Population (1901), 104,667. There are 255 villages and two towns: Tanna (population, 7,983) and Suār, the tahsil head-quarters (2,738). The demand for land revenue in 1903-4 was Rs. 3,81,000, and for cesses Rs. 46,000. The density of population, 548 persons per square mile, is below the State average. A large portion of the tahtil lies in the turai or moist submontane area. In 1903-4 the area under cultivation was 114 square miles, of which 14 were irrigated, chiefly by small canals drawn from the numerous streams which cross the tahtil.

Rampur City. Capital of the State of Rampur, United Provinces, situated in 28° 49' N. and 79° 2' E., on the left bank of the Kosi or Kosillä, on a road from Moradabad to Bareilly and on the Oudh and Robilkhand Railway, 851 miles by rail from Calcutta and 1,070 from Bombay. Population is increasing slowly but steadily. The numbers at the three enumerations were as follows: 74,250 (1881), 76,733 (1891), 78,758 (1901). In 1901 the population included 58,870 Musalmans and 17,371 Hindus. The town first became of notice as the residence of Faiz-ullah Khān, younger son of Ali Muhammad. For a time it bore the name Mustafabad. It is enclosed by a broad, dense, bamboo hedge, about six miles in circumference, which was formerly pierced by only eight openings and formed a strong defence. Within recent years clearings have been made in two places. In the centre of the city stands the new fort, surrounded by a wall 5,000 feet in circuit. It is built

entirely of brick and is entered by two lofty gateways. The interior of the fort is a large open space, occupied by palaces and other buildings. A fine library contains an exceptionally valuable collection of manuscripts. West of the fort are the public offices, in an imposing range of builtings completed in 1892. The large Jāma Masjid was built by Nawāb Kalb Alī Khān at a cost of 3 lakhs. Other buildings for the use of the Nawāb and his family include the Khās Bāgh palace, the Khusrū Bāgh palace, and commodious stables for horses, camels, and elephants. The chief public buildings are the jail, police station, high school, tahsili, and male and female dispensaries. Houses are maintained for the European officials outside the city, and the cantonments hie beyond these.

Municipal administration was introduced in 1890. Up to 1903 the only income raised by specific taxation consisted of a tax for watch and ward, which brought in about Rs. 4,000 or Rs. 5,000. Octroi has now been introduced. In 1903-4 the expenditure was Rs. 61,000, including public works (Rs. 20,000), conservancy (Rs. 18,000), and lighting (Rs. 13,000). The town produces pottery, damask, sword-blades, and cutlery, and is the chief trading centre in the State. It is also the chief educational centre, and contains 43 schools with 2,254 pupils. The principal institutions are the high school, where English education is provided, a technical school with 100 pupils, and an Arabic college. There are five girls' schools with 130 pupils.

Shāhābād Town.—Head-quarters of the lahsil of the same name, in the State of Rāmpur, United Provinces, situated in 28° 34' N. and 79° 2' E. Population (1901), 7,338. The town stands on rising ground and is considered the healthiest place in the State. The Nawāb has a summer residence here, built on the ruins of an old fort; it is about 100 feet higher than the surrounding country and commands a fine view for miles round. The old name of the town was Lakhnor, and it has been suggested that this was the ancient capital of the Katehriyā Rājās of ROHILKHAND. There are dispensaries for treatment by both European and indigenous methods, and also a taksītī school. The town is noted for its sugar.

Tändä (or Tändä Badridän).—Town in the Suar tahsil of the State of Rämpur, United Provinces, situated in 28° 58' N. and 78° 57' E., on the road from Moradabad to Naini Täl. Population (1901), 7,083. The place, as its name implies, was originally an encampment of Banjäräs or grain-carriers, who still form the chief inhabitants. They purchase unbusked rice in the Kumaun hills and in the TARAL and carry it to Tanda on ponies. There it is busked by women and sent to the Moradabad milway station. Tanda contains dispensaries for medical treatment by both European and indigenous methods, and a tahtili school. It is also the head-quarters of a subdivision of the Suar taksit.

Bounfiguration, and hill and river aveterns.

Tehrl State (or Tehrl-Garhwal). - Native State under the daries, con-political superintendence of the Government of the United Provinces, lying between 30° 3' and 31° 18' N. and 77° 49' and 70° 24' E., with an area of 4,200 square miles. It is bounded on the north by the Punjab States of Rawin and Bashahr, and by Tibet; on the east and south by Garhwill District; and on the west by Dehra Dun. The State lies entirely in the Himalayas, and contains a tangled series of ridges with innumerable apurs separated by narrow valleys. The general direction of the main ridges is from north-east to south-west, radiating from a lofty series of peaks on the border of Tibet, which vary in height from 20,000 to 23,000 feet above sea-level. The State contains the sources of both the GANGES and the Juana, and these two rivers receive the whole drainage. The Ganges rises in a glacier, called Gaumukh, at a height of 13,570 feet, and at first bears the name of Bhagirathi. A large affluent called the Jadhganga or Jahnavi, which rises in Tibet, joins the Bhagirathi at Bhaironghari. The Bhāgirathi flows south-west and then south-east, and joins the Alaknanda at Devapravag, after which the combined stream is called Ganges. The Alaknanda and Ganges form part of the southern boundary between Garhwal District and Tehri State. West of the lofty peak of Bandarpünch rises the Jumna, which flows south-west and then forms the western boundary of the State. The Supin rises north of the same peak, and after receiving the Rupin assumes the name of Tons (Northern). JAMNOTRI and GANGOTRI, near the sources of the two great rivers, are important places of pilgrimage.

Genlary.

Nothing is known of the geological formation of the State, except as the result of single traverses across it, which show the same general structure and composition as in the neighbouring parts of DEHRA DUN and GARHWAL DISTRICTS.

Botuny.

The flora of the State includes the vast series found in the Himalayas, ranging from the sub-tropical species which grow in the outer ranges of low hills to the Alpine flowers in the north.

Fanna.

Tigers are found in small numbers in the north of the

State, and leopards are common in the west. Black bears and wild dogs occur in some localities. Antelope, tâmbar or jaran, spotted deer, barking-deer, and musk deer are also found, besides several kinds of wild goats and goat antelopes.

Meteorological observations are not recorded, but the Climate, climate resembles that of Garhwal District. The valleys and temperalower hills are subject to a very great range of temperature, rainfall.

Snow falls as low as 4,000 feet in the winter.

The early history of the State is that of GARHWAL DISTRICT, History the two tracts having formerly been ruled by the same dynasty, and Parduman Shih, the last Raja of the whole territory, was killed logy. in battle, fighting against the Gurkhas; but at the close of the Nepālese War in 1815, his son, Sudarshan Shāh, received from the British the present State of Tehri. During the Mutiny Sudarshan Shah rendered valuable assistance to Government. He died in 1859 without legitimate issue, and in accordance with the terms of the treaty the State lapsed; but his eldest illegitimate son, Bhawant Shah, was allowed to succeed, and he subsequently received a samid giving him the right of adoption. Bhawani Shah died in 1872, and his son and successor, Pratăp Shāh, in 1887. The present Rājā, Sir Kīrti Shah, K.C.S.L. was installed in 1804. He married a granddaughter of Mahārājā Jang Bahādur of Nepāl.

An ancient trident bearing an inscription stands near the village of Barahat1, which is locally assigned to some

Tibetan Rājā.

The State contains 2,456 villages, but no town. Population is The increasing rapidly. The numbers at the three enumerations people, were as follows: 199,836 (1881), 241,242 (1891), 268,885 (1901). The whole State forms a single takiri. Tehri, the capital, is the only place of importance. More than 90 per cent. of the population are Hindus. The low density, 64 persons per square mile, is explained by the mountainous nature of the country. In 1901, 6,020 persons were recorded as able to read and write. The language usually spoken is Central Pahärt.

Almost the entire population is composed of three castes: Castes Rajputs (161,000), Brahmans (55,000), and Doms (48,000), and occu-The two first are divided into Khas Rajputs and Brahmans, who are regarded as autochthonous, and Raiputs and Brahmans descended from emigrants from the plains. There are a few Bhotias in the north of the State. Agriculture supports 88 per cent, of the total,

³ Journal, Asiatic Society of Bengul, vol. v, p. 347.

Christian missions. There are no Christian missions in Tehri, and in 1901 only seven native Christians were enumerated.

Agriculture. Cultivation resembles that in the British Districts of Garhwal and Almora. It is practically confined to terraces on hill-aides, and to small alluvial areas in river-beds. Detailed statistics are not available, but the total area cultivated is about 70 square miles. Rice, small millets such as jhangori and mandua or marua, and wheat are the staple food-crops; potatoes are also largely grown. A little tea is produced in the west of the State. Irrigation is provided by small channels drawn from streams, about 20 miles being supplied in this way. The cattle of the State are small and hardy.

Forests.

The forests of Tehri are very valuable. An area of 141 square miles, which has been leased to the British Government, yields valuable chir (Pinus longifolia) and other timber. The other trees are deodar, sal (Sharea robusta), and various kinds of oak and pine. Box-wood is common in the north of the State, but is little used. Since 1884 a forest service has been organized on the same lines as in British India, with excellent results. In 1903-4 the forest revenue amounted to 1-75 lakhs, while the expenditure was only Rs. 23,000.

Trade.

Tehri exports timber, forest produce, ghi, rice, and potatoes, and imports piece-goods, sugar, salt, iron, brass vessels, pulses, spices, and oil. A little borax passes through the State from Tibet, and salt is imported from the same country. There are no manufactures, except small industries in blanket-weaving and tanning. Mussoorie is the chief mart supplying the State. Timber is rafted down the rivers; but other merchandise is carried entirely on pack-animals or by coolies.

Roads,

There are about 263 miles of road, but these are not practicable for wheeled traffic. The chief lines are from Tehrt to Mussoorie, to Hardwar, to Devaprayag, and to Gangotri.

Administration and justice.

The Rājā has full powers within the State, and the Commissioner of Kumaun is the Political Agent to the Government of the United Provinces for Tehri. Executive authority is vested in an officer called the Wazir. Revenue cases are disposed of by a tahrildar and three Deputy-Collectors, one of the latter being stationed at Rāwain. There are two magistrates of the third class, sitting at Devaprayāg and Kirtinagar; the Deputy-Collectors have ordinarily powers of the second class; and the Wazir and one magistrate caercise first-class powers. Sentences of death are passed by the Rājā alone. Crime is very light. Civil suits are heard by the Deputy-Collectors; and there are

two civil courts in addition. Appeals lie in all cases to the Rājā, who frequently transfers them to the Wazīr or to the first-class magistrate. A limited jurisdiction is exercised by the mudfidārs of Saklānā.

The revenue of the State for a series of years is shown Finance.

below, in thousands of rupees :-

| | | 1880-1 | rāgo-r. | 1900-1 | 1905n4- |
|----------------|---|--------|---------|--------|---------|
| Land revenue . | ä | 85 | 78 | 83 | 93 |
| Total revenue | | 1+13 | t,58 | 9,80 | 4.73 |

The chief items in 1903-4 were: forests (1.75 lakhs), land revenue and cesses (Rs. 95,000), stamps, excise, and presents (Rs. 65,000), fines (Rs. 24,000), and interest on promissory notes and loans (Rs. 15,000). The expenditure of 2.75 lakhs included: privy purse (1-2 lakhs), administration (Rs. 39,000), and forests (Rs. 23,000).

No proprietary rights are recognized in land except in the Land case of the Saklana fief. Land is divided into irrigated and revenue, unirrigated, the latter being further divided into four classes according to quality. Separate rates are assessed on each class; the rates have not been revised for many years. The chief items of miscellaneous revenue are tolls on Miscellapilgrims carrying water from Gangotri, and excise. The acoust revenue, latter consists of licence fees for the sale of country liquor and hemp drugs.

The principal public buildings are the Rājā's palace, the Public courts and offices, and the jail. The expenditure on roads works

and buildings amounted in 1903-4 to Rs. 30,000.

An infantry force, 113 strong, is maintained, and the State Army, possesses two cannon, which are used only on ceremonial occasions.

A small force of police is maintained at Tehrt, Kirtinagar, Police and and Devaprayag. Outside of these places police duties are jails, performed by village headmen, who report to the patrolinia as in the British Districts of the Kumaun Division. A new jail has recently been constructed capable of holding 250 prisoners, but the number at any one time is only about 20.

In 1901 only 2-2 per cent of the population (4-4 males Education, and 0-1 females) were able to read and write. The number of schools rose from 3 with 203 pupils in 1880-1 to 5 with 303 pupils in 1900-1. In 1903-4 there were 13 schools with 512 pupils. The expenditure was Rs. 8,600.

Hospitala and dispensaries. Two hospitals are maintained by the State, at which 9,000 patients were treated in 1903, including 64 in-patients, while 43 operations were performed. The total expenditure was Rs. 4,000.

Vaccina-

Although vaccination is not compulsory, its benefits are thoroughly appreciated, and 10,000 persons were vaccinated in 1903-4, representing 38 per 1,000 of population.

(Annual Administration Reports.)

Saklānā Estate.—Feudatory estate situated in the west of the State of Tehri, United Provinces, with an area of 70 square miles. The owners or mudifidārs pay an annual quitrent of Rs. 200 to the Rājā of Tehri, and derive an income of about Rs. 2,500 from the estate. During the Gurkha War their ancestors rendered important services to the British Government. The mudifidārs have power to try all civil, rent, and revenue suits arising in their own villages, and exercise powers as second-class magistrates. Cases in which the mudifidārs are personally interested are transferred by the Commissioner of Kumaun, as Agent for the Tehri State, to competent courts in a British District.

Bhaironghāti.—Temple and pass in the State of Tehri, United Provinces, situated in 31° z' N. and 78° 53' E., at the confluence of the Bhāgirathi with the Jādhgangā or Jāhnavi. Both rivers flow in deep gorges confined by perpendicular walls of granite, and the scenery is wild in the extreme. One traveller has described the rocks as resembling the massive towers, spires, and buttresses of some Gothic cathedral reft asunder by an earthquake. A light iron-wire suspension bridge, 250 feet long, crosses the Jāhnavi at a height of 350 feet above the torrent. The place is considered sacred to Bhairen (Siva), and is visited by many pilgrims.

Devaprayag.—Village in the State of Tehri, United Provinces, situated in 30° 10′ N. and 78° 37′ E., at the confluence of the Alaktanda and Bhagirathi rivers, the combined stream being then called the Ganges; elevation 2,265 feet. The point of junction forms one of the five sacred confluences in the hills, and is annually visited by many devout pilgrims. The village stands 100 feet above the water's edge on the scarped side of a hill, which rises behind it to a height of 800 feet. The great temple of Raghunath, built of massive incemented stones upon a terrace in the upper part of the town, consists of an irregular pyramid, capped by a white cupola with a golden ball and spire. The Brahmans compute its age at 10,000 years. Religious ablutions take

place at two basins excavated in the rock near the junction of the holy streams, one on the Alaknandä, known as the Vasishtkund, and another on the Bhägirathi, called the Brahmäkund. An earthquake in 1803 shattered the temple and other buildings; but the damage was subsequently repaired through the munificence of Daulat Rao Sindhia. The place contains the head-quarters of a magistrate, a primary school, and about twenty shops.

Gangotri.-Mountain temple in the State of Tehri, United Provinces, situated in 31" N. and 78" 57' E. It stands at an elevation of 10,319 feet above the sea on the right bank of the Bhagirathi, the chief feeder of the Ganges, eight miles from its source in the Gaumukh glacier. The temple is a square building, about 20 feet high, containing small statues of Ganga, Bhagtrathi, and other mythological personages connected with the spot. It was erected by Amar Singh, Thappa, the chief of the Gurkha commanders in Garhwal, early in the eighteenth century. During the summer large numbers of pilgrims visit this place, and several dharmailas have been built for their accommodation. Flasks filled at Gangotri with the sacred water are sealed up by the officiating Brahmans and conveyed to the plains as valuable treasures. In the winter the temple is closed and the priests migrate to Mukhba, a village ten miles away.

Jamnotri.—Temple in the State of Tehri, United Provinces, situated in 31° 1′ N. and 78° 28′ E. It stands on the western flank of the great peak of Bandarpünch (20,731 feet), at an elevation of about 10,800 feet above the sea and 4 miles below the glacier from which the Jumna issues. The temple is a small wooden structure, containing an image of the goddess Jumna. Close by are a number of hot springs from which water issues at a temperature of 1947° F. Many

pilgrims visit this sacred place every summer.

Tehri Town.—Capital of the State of Tehri, United Provinces, situated in 30° 23' N. and 78° 32' E., at the junction of the Bhāgirathi and Bheling rivers. Population (1901), 3,387. Tehri stands at an elevation of 2,278 feet above the sea, and in the summer great heat is experienced. The Rājā then resides at Pratāpnagar, which stands on a ridge 8,000 above the sea, at a distance of about 9 miles. Tehri was a small village when, in 1815, Rājā Sudarshan Shāh took up his residence there. It occupies the tongue of land between the two rivers, three-quarters of a mile in length and half a mile in breadth. The bazar lies in an old river bed,

era: Hh

which divides the town into two portions. All the courts, the dispensary, and the school are built on a ridge to the south, while the members of the ruling family live on a ridge to the north. On a still higher ridge stands the Rājā's palace, which commands the whole town. There are several temples and dharmsālas for the accommodation of pilgrims. About Ra 4,000 is raised annually from octroi. Tehri is the chief commercial centre in the State, and there is a busy market at which the products of the plains and imported goods are sold. The high school has 220 pupils.

INDEX

Abdul Kuchins, saint and missionary of Islam, L. 270, 272, founder of Gangoli, 283, his mansolenns there, 283.

Aboriginal inhabitants, remains of, 1. 17; represented he common belief by the Stidens, 43, 44; the broad nose and dark colour of the Dravidlen type, widespread and increasing in the cast, 45; superseded by the Rajouts, 21, it. 232 Seculia Telbes, and under History, Castes and Occupations in Districts.

Abul Fazi, Akbar's minister and historian, his murder, I. 213, his reference to Hasdwar, 184, house at Fatchpur Sikri,

Achhuerk, town in Agra District, under Act of 1815, railway junction, 1, 404.

Acts specially affecting the Provinces passed since 488d, i. 102, 102; regu-Liting local self-government, municipal, District, med local, 122-126; Act XX

of 1816, 146.

Administration, i. 99-126; a list of Lieutenant-Toverpors before and since the union (1877) of the North-Western Provinces with Oudh (1836-1906), 99 ; the Secretariat, 99, 100; the Board of Revenue, 100; Provincial departments, son: representatives of Imperial departments, 100; 9 Commissioners of o Divisions, roo; 16 Collectors and Magistrates of 36 Districts in Province of Agra, 12 Deputy-Commissioners and Magistrates of 12 Districts in Onth and the Kumaun Division of Agra, 100; 217 tahilldire of 217 tahille. too. tai; 731 himmyer, tot; fulnifris or village accountants, 101; legislation and justice, 101-105; finance, 105-101; Local self-government, of villages, tot, he District and local boards, \$22-124, by municipalities, 124-126; of Native States, 102.

Afghan invasions, the Lods dynusty, L 23; of Ahmad Shah Durrani (1748 and 1741); 26, 28, 227, 245, 146, the crushing defeat at Platipat (1761) of the combined Himing by the Afghan and Indian Muhammudan powers, 28, 246; their settlements in North India, encouraged by Aurangueb, 145; the Pathan invaders and rulers of Robilkhand, 245-247.

Afralgarh, town in Hijnor District, under

Act of 1856, L 512, low, damp, on-

healthy, 512.

Age, statistics of, i. 37, comparatively useful in respect of fecundity and vitality of moes, 37, 45, and of the reduction of the birth-rate by calamities,

37, 98,

Agra, historic area of, i. 210, 211, one of Akbar's Subada, 210; British acquisition of, by centon (1801) and conquest (1803), area constituted (1831) independently as the Western Provinces, 271, formed (1833) first into a Presidency, then (1836) into North-Western Provinces, 211, with Onlh (1902) into United Provinces, 211; the differences in the administrations of Agra and Oudh, 236 et sey.

Agra Division, with head-quarters of Commissioner at Agra city, L 370, 371, general statistics of the area, population, and land sevenue of its six Districts, 3701 its chief planes of commercial, religious, and historical (urportance, 371.

Agea District, L 393-418; divided by rivers into four distinct tracts, 391, 392; the allovium gry feet deep, gue; v ry dry, with extremes of hear and cold, but not unbealthy, 302; its history that of the city, founded by Akbar, 393. under the Mughals, during their decline, under the British (1803), 393, 394 [the Mutiny, 304; Mughal archaeology, 3947 decrease in population (1872-81) disc to famine, not yet recovered from, 30s, falling off in area of cultivation, 306; arts and manufactures, chiefly of Agra city, 397; good supply of railways, 398; famines, recent of unprotected areas, 398; relucation, 400; medical, 4001 hibliography, 400, Agra & fairll, L 402, 403.

Agen city, administrative head-quarters of District, i. 404-415, a great milway centre, 4137 a sountcipality, 4131 cuntomacut, 413; supidly increasing population, 404; recent changes in the character and extent of its trade, 413, its value and direction, 413, 414; chief indextries, now and of old, 397, 413; public and official buildings, 412, 414, education, including law classes and a medical school, 400, 414; the Thomason Hospital and other medical institutions, 400, 412; description of the

city and its famous Moghal buildings, 407-413, the Jama Masjid, 407, 408; the fort and its contained buildings, 408, 409; the Taj, 409-411; tomb of

Itimad-ud-danla, 411-412.

Agra city, history of, the old city, I. 404, 405; the new, founded by Akbar, and adorned by his successors, especially Shith Jahan, 405, 406; taken by Lord Lake from the Marathas, 406, made the capital of a Presidency, 1, 2, 406; the fort held during the Mutiny, 406, 407; stat of Government trumferred (1858)

to Allahiblid, 407.

Ages Canal, irrigation work, in an area very liable to famine, L. 209, 210; takes off from the Jumns, 11 miles below Delhi, 200, its weir, the first in Northern India built on fine and, 200; supplemented from the Ganges Canal, 209; opened in 1875, 210; its cost and general failure of returns to pay interest. sto; its extent and area of command, 209, 210, 178; waters 250,000 acres, 210; now closed to navigation, 210, 379

Agricultural banics, L 6), co-operative and professional, 61, advances of grain at more than ag to so per cent., 61.

Agricultural conditions, general, a section in the account of each District. See also under Agricultural Improvements of Districts.

Agricultural department, i. 60, us model farms and implements not appreciated, 60; school at Camppore, 135.

Agricultural implements, L 50, improved not appreciated, 60.

Agricultural loans, for seed, cattle, and improvements, i. 6: ; large sevances in times of famine, 61, interest 61 per cent. or less or mil, 61. See also under Agricultural improvements in Districts.

Agricultural practice, improvements in, a section in the account of each District. Agricultural statistics (and principal

crops), table of, L 146; also a section in the account of each District.

Agriculture, i. 51-73; statistical tables of, 146, 147; persons engaged in and dependent on, 54, 55; soils, surface, and humidity, 21-23; harrests, 23, 54; principal emps, food and other, \$5-89; changes in the area and quality of enlitivallen, 59, 60; rude and primitive implements, 60; the slight influence of the Agricultural department, 60, 61; agricultural leans and banks, fis: cattle, and their diseases, 61-63; irrigation; 61-66; rents, wages, and prices, 66-ya ; material condition of the pumple, 71. 72. See also usaire Agriculture in

Ahar, motent town, on the high hank of

the Ganges, in Bulandshahr District, L. 333, 344, its traditions, legends, and many temples, 344-

Ahars, caste found only in Robilkhand, i.

488, 523.

Ahira, grazing and agricultural caste, L. 44. 336. See also needer Castes and Occupations in Districts.

Ahraura, town in Mirripur District, under Act of 1856, il. 155, once an important trade centre, 155; Kanani inscription; dated 1195, ignores the Muhammadan conquest, \$55.

Ajodhya, Ayodhya, Awailt (Ondh), the ancient capital of Konsla, its legends and early history, L 225, 226, it 377, 388; the birthplace of Rama Chandra, 388; the subject of the opening chapters of the Ramiyana, 388; its irmittional magnificence and circumference of 80 to too miles, 388; its fall and desertion, 388; now no more than an extensive tract of elevated ground, 388; sloubtful identification of, with capitals visited by Chinese pilgriss, 388. afm Komla.

Ajodhya, new or modern town in Fyzahad District, H. 389, 389, under Mahammedans, Akbar, and Oudh, a capital, 388, loss of all but religious importance after removal (1705) of capital to Fyzibad, 388; its holy places often built over by mooques, 389, temples, Hindu and Jain (mostly modern), 389, mosques of Bahar and Aurangzeb, 380; the graves of Noah, Seth, and Job, mentioned in the Ain-i-Aberri, 389; part of the municipality of Fyzibad, 389; little or no trade, 3891 huge attendance at its three great annual fairs, 389.

Ajosthya, taluddiri estate (762 square miles) in Fyzhbad and other Districts, ii. 387; founded by a trooper of Saintal Khān, 387; the important services of his nepbew and successor, Mān Singh, to the king of Gulls, 387, deprived, at the annexation, of almost all the estate, 487, except for a short episode, loyal and useful during and after the Mntiny and saved many lives, 587, restored to his retutes and made Mahariff, 387; his distinguished grandson and successor, 287. See also Man Singh

Akbur the Great, succeeded to his father (1836-1603) and recovered his kingdom, i, 23, 24, his victory at l'anipat (1556) over the Süra, 24. put down domestic rebellions, 74, his good government, toleration of Hindus and Christians, and liberality, 24, 300, 416, his tomb at Sikaselra, 24, 417, 455; his land settlement, ros, res, reg; his Switch

of Agra, 210; his anger at the marder of his minister, Abel Farl, 215, at insults to Todar Mal, 410; Saidak of Oudb, 227; Rohilkhand part of his Saidak of Dudh, 245; copper mint at Meerut, 325; founded and lived at Agra, 393, 405; founded Fatchpur Sikri, 24, 393, 405, 415, his theological discussions there, 416; vigorous repression of robber tribes in Mainpuri, 439; failed to incorposate Etawah, 456; magnificent fort at Allahabad, il. 78, 80.

Akharpar, takell of Cawapore District,

Akharpur, rehilf of Fyrablid District, ii. 384, 386.

Akharpur, town in Fyzähäd District, under Act of 1850, il. 289, 390, ruins of a mosque, and fine bridge built under Akhar, 390; a railway station, with some trails, 359, 300.

Al. a scarlet vegetable dye, i. 54, supplanted now by artificial dyes, 54, 80, the less to the land and people, 54, ii. 91.

Aligner, town in Budaun District, under Act of 1856, L 529; mosque of the time of Aurangreb, with an inscription dated 1307, 529

Ala-mi-din Khaij, king of Delhi (1296-1316) i. 22, his stern, suspicious sule, 22, persecution of Hindus, 22, conquered the Decam and repelled the Mongols, 22.

All Muhammail Khān, Pathān chief, i. 37, 245, 485, recognized (1740) by the emperor as governor of knhilkhand, 245, the history of his house, 485, 486, in Rāmper State, ii. 450, 481.

Alignation of Island, See Land, Alignation of. Alignati, takid of East District, 1, 475. Alignati, town in Etah District, under Act

of 1840, L 477 Aligarh, southermuost District in the Meerut Division, 1, 353-170; generally a fertile upland alluvium of the Doah traversed by three streams, 35#1 its early history that of the ancient city of Koti, 383; its conquest and coaversion (1194) by Kutis-ud-din, 353; its prosperity under the Mughal power, 334; the buttle held and prey of Jats, Afghans, and Marathas, 334; the military importance of its fortress, 354, its final capture from the Marathia by the British samult (1803) under Lord Lake, 354, 355, 366, submission of the Upper Deab, 355, the loss during the Mutiny of the District for three months, 355; the large proportion of mmbadies tenures, 357; well-irrigation checked by fall in spring-level, 358, 363; home-breading, 358; the rapid decay of the indigo industry, 3,58, the development of industries by native capital and management, 539; the former severity of famines abated by irrigation, 359, 360; the Mahammadan Anglo-Oriental College at Aligarh city, 261, 267, 368, the higher literacy of Musalmans, 361; littlingraphy, 362.

Aligarh (or Koll) takiii, i. 36a.
Aligarh city (or Koll or Koll), headquarters of District, a municipality and
railway junction. i. 365-368; the ancient fown of Koll, taken from Dor
Răjputa by Kuth-ud-din, 365, the handsome modern town, with fine public
huldings, 366, its considerable trade,
factories, and postal workshop, 366, 367,
its liability to become insanitary, 366;
the Muhammadan Anglo-Oriental College, 367, 368, its history, system of
imance, and buildings, 367, frequented
by students from India and distant parts

Hindus, 367.

Aligarh fort, three miles from the city of Aligarh or Koil, history of, f. 254, 355, 366, 366, deemed impregnable till its capture (1803) by British assault, 355, 366.

of Muhammadan world, 367, also by

Aligarh, awampy takett of Farmichahad District, k. 431.

Allahated Division, with head-quarters at Allahated city, is, s, s, general startistics of the area, population, and land revenue of its seven Districts, 1, of its principal towns and centres, 3.

Allahabad (Hababid District, II. 63-85; its division by the Ganges and the Jumna into (1) the Doah, (2) the trans-Ganges tract, (3) the trans-Jumms tract, 63-64; the intense heat south of the Jumna, 65, history of District, 65, 66, of city, 78-80; a Musalman powerstion from 1194 to 1801, 65, 66, ceded (1801) to British, 66; the fort held during the Mutiny, 66, 80; archaeology of the city, Kosam, and Jimi, 66, 67; essentially agricultural, with few industries, 68-70; irrigation extensive, almost entirely from wells, 70; railways and roads, 71; famioes up to 1897, 71; prevalence in city of burglary, forgery, and cheating, 72; severe and fraudulent early susuaments replaced lately by fluctuating, 75: high literary, 73: hibliography, 74 See also Bundelkhand.

Allahabad crantle, ii. 74
Allahabad city, seat of Government for
the Provinces, a continuent, headquarters of District, and railway centre,
ii. 78-83; at the macred junction of the
Ganges and the Junua, 78, 80, 81;

a great religious centre, z, 63, 78, 80, an important murt, 93, the most important educational centre, %r: its Hindu name Prayag or Prag. place of sacrifice, 78; Asoka's pillar and the tree of sniede, 78; Akber's magnificent fart, 78,00; under Moghala, Marathas, and Outh, 78, 79; the murders and distruction during ten slays of the Mutiny, 79, 50, the fort held throughout and the city reoccupied, 79, 80; the native city, well drained, entinery, 80, annual bathing fair, So, St ; the gardens and manuoleem of Khunti, rebei son of Jahangir, 81 | Government House, Mair College, and other notewnithy modern buildings, official, religious, edocational, 81; municipality, 81, 82, supply of filtered water from Jumps, 82; cuitonment, 80, 82; trade, no particular industry, but Government and private printing, %s; numerous educational matinations, 83; the Picture and other newspapers, 83.

Alluvium, Georgetic, ha width and extraordinary depth, i. 11, its soils, their kinds, chemical composition, and agricultural classification, 53, 52. See also antifer Goology in Districts.

Almão All Khin, capable minister of

Outh, 1. 237, 450, ii. 9. Almora, non-regulation District in Knmann Division, it. 263-278; hounded on the north by Tibet, 263, stretching from the outer range of the Himilayan across a mase of surges to the great central chain and the region of perpetral mow and glociers, 263, the chief ridges and peaks, 264, the variety and interest of its geology, herrary, and roology, 254, 252; the intense heat of the deep valleys, 362; under the Chands, the Robillas, the Napalese, 263, 266, annexed (1815) after war by the British, 256, 267; Hindus 90 per cent, of population, 267; a few Hoddhists, 267; about 9 per sent of area cultivated. less than I per cont. Irrigated, 168, 169; no stillways, but one projected, ayo; the cart road, tracks, and pames for trade to Tibet, 270, the nee of yaks and hybrids for carriage, 169; "reserved." and 'protected' forests, 160, all except actiled area declared 'District prowood from Titlet, 270; cough and study settlement, 271, 272; high literacy, 272; senceration more valued in the hills than in the plains, 272; histiography, 273. Almust rabill, it. 273.

Almora lown, head-quarters of District. a communicational municipality, it. 1741 former separal of Chambs, 2741 near Sitoil, some of decisive victory (1814). of British over Nephlese, 2741 the garrison of Gurkhas, 2741 good water-supply and considerable trade, 274.

Ambabta, town in Sanaranpur District. under Act of 1826, - 281, 1821 Hs large majority of Muhammadana, 281, once a Mugical contoument, 252.

American Methodist Episcopal Church, the, I. 47, its successful and widerpread

Mission, 47 et parrine,

Amethi, wantil of Sulfapper District, H. 478;

Amethi, old town in Lucknow District. under Act of 1856, ii. 300, 301; a stronghold of Islam, the birtiplace of

mmy saints, 200, 301. Amir Khān, Pindāri leader, born at Sambhal, i. 549, midel (1805) Rohilkhand, 487, 549 of passens in Barcilly Division, Mr. Leyoester's brave repulse of at Moradibid, 547

Amiad All Shith, king of Ondh (1842-7), completed from bridge over Gunti at

Lucknow, II. 304.

Amroha, tokett of Moradabad District, t.

Amroha town, a municipality, 1 545, 545; on a branch railway, \$45; ment alrects with handsome shops, \$45, much local trade, 346; Jama Mashi, an old temple converted, and 100 other mosques, \$30, 545

Amusements, i. 49, 50; cricket and football becoming very popular, 49; theatrical performances and literary recitations, so; private studing care, 50; festivals, 50, 51,

Amwa Khia, village in Gorakhpur Dis-

trict, ii. 216.

Auglo-Oriental College of Aligarh, 1. 135. 261, 367, 268.

Auglo-vermicular schools, in which English is taught, L. 133-

Annexation (1856) of Outli, I. 31, 231, 232, us a precursor of the Mattey, 232; the treatment of the damadacs, 236, their disloyalty during the Mutiny, 236. Lord Counting on, 237.

Anta Dhura, a high (17,500 feet) and dimcult pass from Almori leading to Garrok, at open mart of Tibet, ii. 274-Audpoleshy, fearly of Bahmdshahr Dos-

trict, 1. 34E.

Andpahahr town, a municipality, 1- 344, 345, its military importance of and during the Mutiny as commanding a principal creasing of the Gauges to Rohilkhand, 544, 345, its former trade directed by the Narams were and by railways, 343-

Apple, takell of Bareilly District, L 405 Acuta, decayed town in Berrilly District, under Act of 1856, i. 497, once (1750) cupital of Robifshand, 497; a railway station, 497; its ruins and remains,

497.
Archanology, general, i. 32, 33; Buddhist, 32, pillars of Asoka, excavated sites, 32, the casket at Piprahwa, 32, ii. 222, Jain, i. 33, at Muttra, 376, Lalitpur, ii. 106, Hindu, i. 22, 23; sarly Mahammadan, 35; Mughad, 33, at Agra, 394, 407–412, Allahabad, ii. 78, 81, Fatehpur Süri, i. 412, 416, preserved and restored by Government, 33, 394, of Oudh, 233, 234. See also Bibliography, and under Archaeology in Districts.

Architecture, splendid of Shark's of Jampur, 1, 22, 33, 11, 160, 172; Mughal, at Agra, i, 394, 407-412, Allahibid, ii, 78, 81, Fatehpur Sikri, i, 415, 416; of Chandia, 365; of Chandela, ii, 50, 62, 90; debased, by European influence, of the Nawalia of Outh at Lockoow,

Atm, of the two Provinces, i. 1, average of Divisions and Districts, 100, average of takeils, 100, table of actual, 144, 145; table of cultivated and irrigated and of principal crops, 146; classified of forests, 74; area of different crops, given under Agricultural Statutica in Districts.

Arkar (Cajanus indicus), cultivation of, i. 56, almost always a mixed crop, 56, its especial importance as a host-pinut for aktropen-fixing organisms, 56. See also under Agricultural Statistics in

Army, strength of, British and Native, before Mutiny, t. 32, at Luckmow, it. 304, 305; pursent, i. 127, part of the Eastern Communal, 127, its three divisions of Meernt Lucknow, and Mhow, 127; arsenal and military factories, 127; volunteers, strength and stations of 127; Imperial Service troops, 127, 128.

Army boot and equipment factory at

Army Remount Department. See Re-

mount.

Aris and manufactures, i. 78-84; hand and home, 78-82; mills and factories, 81, 83, wages and material conditions, 83, 84. See airs under Aris and Manufactures in Districts.

Arts colleges, classes and degrees in, i.

Arya Samaj, the, founded 1875, i. 46, its distinguishing features, raligious and social, 46; its prosperity in the Provinces, 46; the stransces opposition of orthodoxy and the Belamans, 46; education among, 124, 136, rapid increase in Massifarmagar, 293, strongest in Balandshahr, with 27 lodges, 335.

Aryas, their probable invasion by different routes and at different times, 1, 18, at III west of the Jamma in Vedic lines (6, 2000 B.C.), 17, their probable advance 2, 1000 B.C., 17; the myths and history of the two great epics, 17, 18; Buddhium as a regular development of, rather than a reaction egalint, Brahmanism, 18; the later revival of Hinduism, 18, 30; the refined features and fair complexion of their modern descendants, 45; their enters of the twiceborn, 43, 44. See also under People in Districts.

Asaf-ud-dania, Nawiib of Oedh (1775-97), i. 29, 20, 230, his treaty (1781) with Warren Hastings, and treatment of the Begams, 230; Lucknow finally made capital, 230; his relief works (1784) kept open at night to save the pride of the respectable poor, ii. 297; his extension of his dominious, magnificance and liberality, 302, 303, the lumin-bins and other splendid buildings at Lucknow, 301, 309.

Asiwan, ancient town in Unao District, ii. 323, many mosques and temples, 323.

Askot, estate in Almora District, B. 273, 274; the Rajwar claims descent from a hearch of the Katyuris, 273-

Asoles, the great Buddhist king of the Manayan dynnary, crowned 270 s.C., I. 19, 222, his pions edicts on rocks and pillars, 19, 22, 223, 266; his pillar at Mecrut removed to Delhi, 307, 324, doubtful pillar at Sankiral, 426, 437; pillar at Allahabad with later inscriptions, it. 78; pillar or bondlar at Kabi, I. 52;

Assessment of land sevence, under Akbur, i. 101, 112, 113; its later opportunity methods, 113, a regular and careful assessment made by Duncam (1788) in Benares and declared (1795) permanent, 113; the introduction of improved nethods of recurring settlements elsewhere (1822-94), 115-115, hased on surveys, village maps, rent-rolls, &c., 114, 115, 140, 141, the available of units, 114; the actual successment, about one-half (= 1 to ½) of the landlard share of the gress produce, 116; severity of early, in Bandelkhand replaced by fluctuating orsessments, 219, ii. 72, 73 of parales. See alia under Land Revenue in Districts.

Arramatha, the great home-marifice, i.
164. See also Home-sacrifice.
Atranti, fasteri of Aligath District, 1, 362.
Atranti town, a municipality, 1, 368.
Auraya, fastell of Ethwah District, i.
493.

Anraiya, town in Erawah District, under Act of 1836, L 463, 464, mesques and temples, 453.

Auraugaban, town in Bulandshahr Dis-

trict, I. 345.

Aurangaeb, Mughal emperor (1658-1707). t, 23, deposed his father and murdered his brochers, 25; persecution of Hinduism, 25, 333, 374, 390; his bigotryand almence in the Deccan prepared the way for coming decline and anarchy, se; advised his three sons to divide the empire, 25, their diasensions, 25; his saying quoted on produce- and cashrents, 67; in Robilkhand, 245, encouraged the Pathan invaders, 245; his bigoted treatment of Muttra, 500; his mosque at Mattra, 390; destroyed the famous temple of Soron, 450, of Debl Patan, il. 405; mosque at Benures, 127.

Awa estate, in Elah and other Districts, 1 47%, 477; area of 265 square miles, 476; founded by a Rajout physician, 476; Raja helped Land Lake in the Maratha Wara, 4761 loyalty during Mutiny, 476; progressive management of present R&A, 476.

Awa, town in Etah District, under Act of

Asamgath, District is Gorakhpur Division, it 231-244; mostly a high alinvial plain, south of the Gogra, 23t I many large lakes or awamps, 231; generally healthy, when not relaxing or malarious, \$22; under Kanauj, Delhi, Jaumpur, Gantaus Rajputs, Outh, British (1801), 132; Mutiny, from June 1827 to October 1828, 132, 133; densely populated and a source of emigration, 234; principal crops, rice and sugar-cane, 235, extensive irrigation from tanks and wells, 236; the most important centre of cotton weaving by aund in the Provinces, 236, sugar refining, 236; sellgious tiols (1893), #37; \$441 literacy above average, \$201 hibliography, 239.

Azaneguch takett, 1. 240.

Assumparh town, head-quarters of Districs, a municipality, it. 241; on a branch line, 241; embunked against the districtive floods of the Tons, 242; founded by a Gautam Raipot, 242.

Bithar (1483-1540), first Mughal emperor, 1. 93, defeated Ibeliam Ledi (1316) at Pholpat, ager forcem, and the Rajpore at Fntehpur Sibri (1527), 25, 478. Statute, salest of Blanch District, il. 43-

Bactelrace, town in Moradabad District, miler Aut of 1856, k 546.

Badausā, tahril of Bindā District, B.

Hadrinath, peak (23,210 feet) of the Curtral Himālayan axis in Garhwāl District, ii. 287; the famous shrine of Vialinu, 287, its large endowments. settled by a civil court, 287, holy pool and numerous pilgrims, 287; temple closed and treasure removed to Joshimuth during the winter, 387.

Bligeshwat, village in Almora District, il. 175, once a mart for Tibet trade, \$75; temple, tombs, and place of pilgrimage, 275; a Katyari tescription,

Righpas, takeff of Meerut District, L 318. Righpat, town in Meernt District, a 'sotified area, i. 320, identified with the place of tigers of the Mahabharara, 320.

Bah (or Pinahat), peninsular takell of Agra District, L 401, 400; its high inaccessible villages, safe from taxgatherers and mamuders, 400, the great cost of irrigation, 402;

Baheri, takeil of Bareilly District, i. 496, the chief rice tract, 496; danumed,

damp, and mularious, 496.

Bahlol Lodi, founder of the Losif dynasty,

I, 23, his wars with Jampur, 23. Bahraich, District in Fyzähäd Division, ii. 407-420; traversed by a raised belt dividing the valleys of the Gogra and Rapti, 408, well watered and almost independent of Irrigation, 408, 413; with extensive forests and jungle, and a varied fauna, 409, 413; moist, cool, feverial, 409; derives its name from the Bahrs, 400; loosely held by Muhammadans, 410, firmly by the Nawsles of Oudh till their decline, 410; rising of the minddire (1857) and murder of English officers, 42 0; rice, maire, wheat. and poppy the most important crops, 4131 two good breeds of cattle, 412; trade, especially with Nepal, 4131 communications by rail better than by road, 4141 occasional scarcity, not famine, 414; 78 per cent, of land held by talieksara, many daring from Muhammad Tughlak (1340), 409, 413, 4141 medium literacy, 418; hibliography,

Buhraich tainit, il. 416.

Bahraich town, hund quarters of District, a municipality, it 119; a rathway station with increasing trade, and through traffic with Nepal, 419; the death-place, tomb, and shrine of Saiyid Salar Musid, 430, the large Hindu and Musilman religious fair, 419.

Hahrumghle, village and sallway station in Bara Bank! Destrict, ii. 447; of former impuriance as a crossing of the Gogri by a bridge of boats or lerry, 447, still a large traffic from Nepil, and some

industries, 447-

Baijaath, village in Almora District, ii. 275; once a capital of the Katyuris, \$75, in the valley a sacrificial temple to Kall and other old temples, and inscriptions, 275.

Bairia, mud-built town in Ballia District, under Act of 1856, H. 196, 197.

Baineri (Pluckea lanccolata), a weed rayaging Muttra and Agra and other

Districts, i. 370, 396,

liniswata, an area of nearly 2,000 square miles, now or formerly belonging to the Beis Rajputs, I. 221, 212; their history since thirteenth century, 211, Jegende of Tilok Chand, 211, 227; the Bais chiefrain saved (1857) the foor sarvivors of the Camppore massaure, str; bibliography, str.

Bajra (Penniustum typhoidenus), cultivation of, i. 56, area as of joneir, with a smaller yield, 36. See also under Agricultural Statistics in Dis-

Bakhira Tal, a shallow flood lake, g miles by 2, in Basti District, L 205,

its neh and fowl, sos.

Ball Pir, and his son Shailch Mahoi, religious teachers under Shills Jahim and his son, t. 436, their tembs at Kananj, 436.

Ralban, Ghiyas-ud-din (1963-87), Siave king of Delhi, i. 22, a just, strict ruler, 22, his fear of the Mongols, 32.

Raldco (known also as Dunji), town in Mattra District, under Act of 1815, i. 385; its celebrated temple of mean

aspect, 385.

Rallia (Balina), District (since 1879) in Benares Division, II, 188-200; highly cultivated and thickly populated, 188, between, inundated and eroded by, the Ganges and Gogra, 188, 191, 195, 197; climate relaxing, 189; Hindu riots (1893) against Musalman slaughfer of kine, 189; rice, the great autumn crop, 190, irrigated by field embankments, 192; hitherts much river traffic. 192, likely to be captured by new railways, 193; preserved from famine by the floods of the Ganges, 193; crime due to simputes arising from changes made by the river, 192; the tennitions hold on the land of the great Raipot ciano, 194; fairly high literacy, 195; biblingmphy, 195.

Bullin traril, it. 195, 196.

Ballia town, head-quarters of District, a municipality, il. 197; on a main line of railway, 197; old town and a new site (1873-94) eroded by Ganges, 197; removal of civil station to a mile from the river, 197; a good trade centre, 197; the great annual Dadri fair, 197.

Halrampur, the largest (1,168 square miles) talabdars estate in Gonda and other Districts, ii. 403, 404; founded by the descendant of a Janwar Rajput (1374), 403, its resistance to Oudh, 403; the loyalty and eminent services of the Raji during and after the Mutiny, 403, 404; his reward in land and honour, 404; in rank the second talubdar of Oudit, 404-

Balrampur town, a municipality and railway station, it, 404; well built and drained, 404, the residence of the Maharuja, 404, many public and charitable buildings provided by him, 404-

Balwant Singh, first Raja of Benares (ac. 1770), it. 126, 138; enlarged his dominions and power, 116, came over to the British before the hattle of Buzar,

Bamboos, their places of growth L 73, disposal of, 75; the thick bamboo hedge round Rämpur city, il. 458. See also under Botany and Forests in

Districts.

Bändä, District in Allähäbäd Division, il. 32-50; an undulating slope from Vindhyan range to the valley of the Jumma, 32; its sandstones, 33, flora of 'enserved' forests, 33, 38; fauna, 33; intensely hot and unhealthy for Europeans and natives, 33; history that of Bundelkhand, L 4, 213-216, IL 33, 34, the Chandels, and Kalinjar, 33, 47; the Bundelås, 34, 48; ceded by Marathas (1803) by Treaty of Poons, 34; the Matiny, murder of Magistrate, and anarchy, 34-35; archaeology of Kalinjar fort, 35, 47-49; specially liable to agricultural fluctuations and familie, 36, 39, 40, due to its soil, 36, excess and defect of rain, 39, the difficulty of irrigation from rivers or wells, 38, Ken Cural begun (1903), 38; recent improvements in communications, 30: freedom from crime, 40; the unite severity and oppression of early assessments, 40, 41, tardy and incomplete revisions and reductions, 41, hand (1904) system of fluctuating assessments, 41 (fair literacy, 42; bibliography, 42. See gin Bundeikhand, L 4, 313-219.

Bändli *budsil*, H. 42, 43-

Banda town, head-quarters of District, a municipality, il. 45, 46, on a railway, 45, with little trade, 45, 46; a straggling, clean town with very many meaques and temples, 45; the disloyalty and deposition (1857-8) of the Nawab, 45Hinganga, an old bed of the Ganges, L.

Elinganga, the name of a hill stream rising in Nepal and joining the old" Harnl, i. 184, also of two other streams,

Hagangi (or Utangan) river (235 miles). 'arrow river,' i. 177, 178; its legendary origin, 177; its course, clisturbed by trigation works, subsequently restored, 177; the great Ramgarh reservoir, 1771 tributaries and floods, 178.

langurante, town in Unio District, under Act of 1846, ii. 323, 324; the tradition of its fossitation after the distruction of Naual (mighbouring mounds) by the curse of a saint, 3tg. 303, its old Muhammadan haildings, 316, 323.

Banids, trading saste, 1, 44, the munificence of the Churdwal Jament Khurja,

Banks, none mes in large towns, L 86,

See also Agricultural Banks.

Bimulin, satelf of Ballia District, it. 196. Diuselli, town in Ballia District, under Act of 1856, ii. 197.

Bingann, Akhril of Gomkliper District,

H. 272, 213.

Biomgacz, town in Gorakhpur District, ii. 215

Banagawa, village in Gorakhpur District, 11, 216

Bami, takeif of Best! District, il. 228. likra, fabrii of Allababail Dinniet, in 27. the prevalence of lathyrtem, 77.

Bire, town in Gharpur District, in 18g; some of defeat (1839) of Humily un by

Sher Shith, 184.

stara Banki, District in Pysibad Division, ii. 438-4491 a well-wooded aloping upland, most fertile and most presperous, 43% a lowland sandy area, liable to flooding and fever, 438, 439; generally very healthy, 459; its passessimi of all the material and moral condittons of prosperity, 439; the Muliammadin conquest early and thorough, 439; the varying fortunes of the Hailtwir Raipun under und against Outh, 440, their spiendld berossm against the British at the battle of Nawabigani (June, 1938), 440) population duuse and increasing, 440; rice, gram, wheat, poppy, and sugar-cans the most impostust crops, 442; ample irrigation from wells and tanks only, excellent drainage and competative immunity from familie, 420, 442, 443, 444; good monumentum by rail and road, 443; contract about industry and commerce. \$437 second daugities, 4447 the reversal office the Methry of the previous treatnext of the calendary, i. 23%, 237, ii. 444; low literacy, 445; bibliography,

Hitra Banki town, nominally the headquarters of District, it. 447, under Act of 1815, 448, a milway station, 447; close to Nawaigani, the virtual head-

quarters, 147, 448. Billion Total (or 'twelve hata'), secret

nociety of, L. 51%.

Barnut, lown and 'notified area' in Meerut District, L. 320, 321; irrigation sums forbidden as immitary, 320; property of disloyal (1837) Jats configurated and granted to holders of Sandhana estate, 310.

Bareilly (or Robilkhand) Division, with head-quarters of Commissioner at Bareilly city, L 482, 483, 497; general stutution of the area, population, and land revenue of its six Districts, 4831 me chief places of sommercial and historical importance, 483; generally a fertile tract, noted for sugar-case, 485.

See mire Robilkhand.

Bareilly, District in Bareilly Division, h 453-501; a gentle well-watered slope, travened by the shining Kampanga and its branches, 4837 climate determined by proximity to the hills, with long rainy and cold armsons, 484; originally part of Northern Panchala kingdom, 484; under the Muslim power, 485; the rise and history of the Kehilla Pathan bouse of Ali Munammad Khan, 485, its relations with the Marathas and Onth, 486, its subpigation by Oudh with British belp, 486, ceded (1851) to British, 486, 487; escape of Europeans during Mutiny, 487; archaeology of Rimnagur, 487, 400; large area of rice and sugar-case, 489, sugarrefining its most important industry, 401; generally free from the courtstions of famine, 491, 492; religious discord and riots prevalent, 493, 498, 4997 moderate literacy, Arts college at Barrilly city, 494, 200; hilliography, 494

Bareilly takett, L 405-

Barrilly city, head-quarters of Division and District, i. 497-500; a milway centre, 498, camonment, 499, municipallty, 499, 500; steady increase of population, 498; traditional ongin of town and name, 498; rose into prontinames with Robillas, 40% a great coutre of disaffection during Mutiny, 49%; religious riote, 498, 4991 few fine houses, 4991 good water-supply, 499; industry of sugar-refining, 500, fundane, goo; Arts college, goo.

Barbaj, town in Gorakhpur District, under Act of 1850, in 210, 2171 a gailway terminus, river port, and the most important trace centre of District, 216; numerous sugar factories and immense timber-yards, 216.

Barbalgani, town in Gorakhpur District, under Act of 1856, siver port, IL 217.

Harley, cultivation of, 1, 20, area, to per cent, of cropped area, 56, 146, prices of, 147. See alse under Agricultural Statistics and Crops in Districts.

Barshas, town in Mutra District, on a sacred hill, i. 385; a residence of Krishna's mistress, Radha, 285; its four-peaked hill, enwired with buildinga, 385; new splendal temple of Maharaja of Jaipur, 385.

Barwa Sagar, town in Jhanni District, under Act of 1846, lt. 102, 103, on a branch railway, 103; ita fine (attificial) lake and Chundel remains, 101, 103;

good local trade, toj.

Bastl, District in Goeskhpur Division, il. \$20-230; just of the submoutane plain, well watered and in parts swampy are, with many takes, often in the old leds of rivers, zzz; mild and at the close of rains unhealthy, 221; fill 1862 part of Gurakhpur District (q. v.), 223; once believed to contain the hirthplace of Buddha, 223; the celebrated inscribed easket found in the union at Pipraliwa, 222; densely populated and a source of emigration, 222; crops of rice, sugar-cane, and poppy, 223; 235; an extensive system of private canals for irrigation, 234, 225; important trade with Neptil, likely to grow with s new lime of railway, 205; roads bad and unbridged, 226; rather low literacy, ##7 : bibliography, ##7-

Bastl takett, in 129. Bastl town, herd-quarters of District, under Act of 1856, it, 129, 230; on a milway, 229; otherwise never of importance and of little trade, 229, 230.

Batai, a form of rent in kind, a portion of the threshed grain, I, 66, its disadvantages, 67.

Batesst, village in Agra District, i. 414. its famous festival and camle fair, 414,

Samiyas, crimbal tribe of thieves and coiners, peculiar to Muraffarnagar District, L. Pos.

Begam Sumrii, of Santhana, widow of Kninhardt, i. 308, 328, 329, 348, 350, her system of liberal ruck-rent, 315-See also Satelliana.

Begann of Oudb, their treatment by their son and grandene, Asai-adelasia, L. 230, a count in the impeachment of Warren Hustings, 230, its justification, 130; at Fyalbad, II. 390, 191.

Hell (or Hell Partabgach), bend-quarters of Partifigura Instrict, il. 437, 438; a municipality, railway station, and chief centre of trade, 438, thoroughly drained, 4381 magnificent female hospital, 418; named after temple of Bela Bhawani, 438,

Beian river (132 miles), chief tributary of the Southern Tons, 169, its waterfall,

166.

Ben or Vens, mythical king, founder of

Blinor, L 50%, 505,

Benates, south-eastern Division, with headquarters at Benares city, ii. 123, 1231 the causes of its recent decrease in population, 121; general statistics of the area, population, and land receme of its five Districts, 1021 its permanent settlement, sus; its few towns and numerone small hamlets, 125; Its centres of trude and religion, 133; the historical and architectural interest

of Jaunpur, 123-

Benares District, il. 114-141; part of the Gangetic alluvium, on both sides of the stream, 1241 too closely galtivated for large game, tag ; like Bengul, generally moist and relaxing, 125; noder Kanauj, Jaunpur, and Mughais, 125; granted (1738) by Sandat Khiln to Mansa Rum, ancestor of present Mahitship, 125, 126, the produce of Balwant Singh (1739-70), 126, Chet Singh and Warren Hastings, 126, 127; taken over (1775) by British, 136; abortive rising during the Mutiny, 127; the general absence of architectural heavily or antiquity in its famous temples, 127; the great density of the population in spite of recent decrease, 727, 138; rice and batley chief food-crops, 129, all comsumed in the District, 130; considerable irrigation from wells and make, 150; good service of roads and railways, 130; suffers, not severely, from drought and famine, 131; permanent actilement (1798) of Jonathus Dunes. tal, tal; subsequent revisions, 1321 very high literacy, 132; bibliography. 1337

Between tabell, ii. 133.

Benaries city, or Kast, head-quarters of District with continuent, ii. 136-141; a railway terminus and janction, 130; population (less in 1901 these in 1891) includes large and flustrating smuler of pilgrims, 136; he great antiquity, 126, 137 ; absence of political timportance under Muhammadan restraint, 225, 237, its satraordinary sanutity for Hindus to live and ole in, 137 et parries; the throng of prigrims, religious, sucred balls in the streets or

INDEX

along the galitt, 137, 138; the Higheshwat or golden temple of Siva, and numerous other temples, neither large, nor very old nor very beautiful, 137, 138; the great mosque of Aurungseb, 137, 139; the picturesque view of the city from the river, 137, disappointing interior, 137, 138; chief modern build-ings, official, educational, and charitable, 139; the municipality, 139, 140; good water-supply from the Ganges, 139, 140; drainage scheme not yet finished. 140; the contonment, 140; the large revenue from pilgrims, 140; industries and manufactures, not considerable, Leo; the Benares College, Central Hindu College (on basis of unsectarian thousophy), 140, many missionary and municipal schools, 141; the vasidence of filmous scholars and religious teachers, 141; hibliography, 141-

Benares estate, family domains of the Mahasaja, in the Districts of Benures and Minipur, it \$14-136; other asserssides land of the Maharaja, 134; area, revenue to Government, and rent-roll, 134; history of the family from its founder (1758) Mausa Rum to the present (1889) Raja, 134-136; the right of appeal from the Kaja's land and revenue courts to British courts, 135, 136; the tenures of land, 136; the titles and privileges of the present Raja, 136; hibliography, 136.

Bengal, values of trade, by river and rail, with, and principal articles, i. 85, 87, 88. Beews ('containing canes') river, large affluent of Jumus, L 178, 179; the Betwa Camil, 178, 179; soud and rall-

way hridges, 178. Rhilber ('porous'), the a strip of gravel and boulder land where the accustain torreus are lost immediately below the hills, i. z, ii. 238, its vast forests the home of tigure and wild elephants, i. s. 5. 141 geology, st, betany, 13; nannot dispense with trigation, 65, il-\$47, \$531 a portion of Naint Tal Districs, 247, 218, 259, its migratory population, 258; the improvements (1840) effected by Ramsay, 156; bendquarters at Haldwani, 260.

Bhaironghail, temple and pass in Tohri State, ii. 464; at the sacred confinence of two rivers, 464; visited by many

pilgrins, 454. Brilland (or Bharand), old town in

Bullis District. it, 198.

Bhurstpur, Jan Rajas of, L. 374: 375; influe of tiest sirge of town (1803),

Phure, the, a deck-skinned, aboriginal

race, still existing as a caste, i. 226, of Southern Oudh, 22, 226, 233, in Bundelkhand, 214, said to have founded Rae Barell, ii. 337, in Bahraich and Bara Banki Districts, 409, 439. Bharthans, *akiii of Etawah District,

1. 453.

Bhinga town, a 'notified area' in Bahraich

District, li. 419, 410. Bhitri, village in Gharipur District, ii. 185; important Gupta inscriptions on a pillar and on a seal, 183.

Bhogaipur (or Pukhrayan), rahill of

Campore District, il. 12.

Bhongaon, takell of Mainpurl District. 1. 446.

Bhoogann, town in Mainpuri District, under Act of 1856, L 449

Bhotias, hill tribe, Hindained Buddhists, ii. 268, traders with Tibet, 276, 277, alone permitted to cross the frantier, 283.

Bhukatheri, town in Musaffarangar District, i. 301, inhabited chiefly by Jats, 301, tomb of a Hindu and Mahamma-

dan saint, 301.

Binns, pattr of Almorit District, il. 275;

trade route to Tibet, 275.

Bibliographies; of the United Provinces. L 141, of the Tons river, 170, of the Hinganga (2), 178, 184, of the Himalayes, 198, of the Siwaliks, 199; of Gonna lake, 205; Baiswarh, 212; Hundelkhand, 219; Kosala, 221; Madhya Dess, 221; Magatha, 222; Mewät, 223; Outh, 242; Panchäla, 245; Rohil-khand, 248; Sarthana, 231; Fatchput Sikri, 416; Sankisi, 437; Rämmagar, 501; Dewal, 572; Kälinjar, II. 49; Kosam, 84; Deogarb, 103; Siron, 122; Rampa estata 126; Rameroliv, toy; Benares estate, 136; Benares city. 141; Simith, 142; Jaunpur, 171; Zafarābād, 174; Saldpur, 187; Kastil, 215; Lucknow city, 213; Set Mahet, 497 | and of the several Districts.

Blilliting, well-brigated and fertile taksii.

of Ethwah District, L 462, 463. Bijour (Bijmanr), northermost District in Barrilly Division, L. 301-318; its north-east boundary the road at the foot of the Himalayas, sor; the Chardi bills, 501, 502, 507, large and small game, 502; climate cool and pleasant, generally free from the malaria of the foot of the hills, 202, goz, deadly climate east of the Hämgangl, 200; after the Mugtais fell under the power of the Robbits, and family of Oudh, 503, 504, unded (4801) to the British, 50s; during the Mutiny, the rebellion of the Nawith of Najibabad, gos, the Hindu sising against him, 204; sugarcame and cotton crops, 500; the amportant 'esserved' formis, 2071 sugar and cotton industries, 507; generally fire from the causes of famine, 508; very backward in literacy, \$10; hibliography, sto.

Bijnor takril, L. 510, 311.

Bijnor town, head-quarters of District, 1, 513, 375; a municipality, well paved and strained, 513; its mythical founder Rājā Ben or Vena, 512; once a Jāt centre, 512; held during Mutiny by rebel Nawab of Najlbahad, 513.

Bikuper, tahtil of Fyrabad District, ii.

186.

Billiti, takill of Moradilland District, L.

Billaspur, tuhisi of Rampur State, ii. 458. Bilgram, takell of Hardel District, il.

359, 350.

Bilgram, town in Hardol District, under Act of 1836, ii. 360, 361; Muhammindan and Higdn traditions of its foundation, 360; the birthplace of many distinguished Muhammadaus, 361.

Billiant, MASS of Cawapore District, il-

11, 11,

Hilhaur, town in Casupore District, under Act of 1856, il. 14, arailway station, 14. Bilst town, a bottlied area in Buriaun District, L 329; trade lost by distance

from railway and decline of indigo,

Hindhichel, small town within the municipal limits of Mirzapur city, ii. 157. 155; the celebrated shrine of Vindityeshwari or Vindhyaldstill, a great resort of palgrims, 157.

Bindki, town in Fateispur District, under Acr of 1836, in 30, an important trade centre, a miles from a milway station,

Bir Singh Deo, Raja of Orchha, ii. 87, founded (1613) Jhansi, 104, municrer of Abel Fuel, 87, his relations with Akbar, Jahangir, and Shah Jahan, 87, 88,

Birth-rate, table of, since 1891, L 35, reduced by fever and funine, 37; the effects of famine and fever compared, 98. See also Vital Statistics.

Pisalpur, mini of Phiblin District, i.

Bisaipur, town in Pilibhit District, a monicipality, i. 571, 572, an agricultural centre, growing and thriving, 571, 272.

Bisanli, takrif of Budann District, 1. 527-Bisauli, town in Budann District, under Act of 1856, 1. 529, 530; tomb of Dumle

Khan, Robilla chief, 530-

Bishops, Anglican, of Lucknow at Allahabad, I. 47, Roman Catholic, Archhishop at Agra, Hishop at Allahildd,

Biswan, tahsif of Sitapur District, il. 246, 347-

Illswan, town in Sitapur District, under Act of 1856, ii. 348, mosques, palace, and tombs, 348, large markets but declining trade, 348.

Bithur, town in Campore District, under Act of 1830, il. 14, 15, on a branch line, 14; place of bankshment of Ball Rao, the last of the Penhwas, and father by adoption of Nana Sahib,

Blind, of Provinces, 1-7 males, 1-8 females per 1,000, L 40; in central Districts up to 3, 40; appear to be decreasing, 40.

Bombay Presidency, trade with, values and principal articles, i. 87, 88.

Hombay, Port of, trade by sail with, values and principal articles, i. 87, 88. Books and publications registered, their

number and character, L 138, Boots, army and other, manufactured at

Cawupore, it. 19.

Horax, one of the chief items of export

from Tibet, i. 88, ii. 270.

Botanical Survey of Northern India, with head-quarters and gardens at Sahärun-

par, 1, 269, 288, 289,

Botany, general, 1, 12-14; the division of the flora into five distinct elements, 12, the oldest, Indo-African, the youngest, Quaternary, of cultivition, 19; their origins, areas, and typical representatives, 12; of the Gangetic plain, 12, its general uniformity modified by min and heat, to, the distinct areas and seasons of Eastern and Quaternary clements, 13: the Himalayas, their representative flors, 13, 14, of the tropical some extending 5,000 feet above the sen, 13, its luxuriant vegetation, 13, of their temperate some up to 12,000 feet, the average limit of forests, 13, the alpine flora up to 17,000 feet, 13, 14; of the Central India plateau, 14. Set also under Botany in Districts.

Boundaries, of United Provinces, L. I.; of Divisions and Districts, given under

coon.

Boundaries, configuration, and hill and river systems, the first section in the

account of each District.

Brühmans, position and number of, 4 4.5. 44, their apposition to religious reforms, 46. Ahivari Brahmans in charge of temple at Heldeo, 385. See also umfer Castes in Districts.

Beass and copper industries, i. \$1; largest

of bress at Mirripur, It. 138.

Betweries, six, turning out 1-4 million gallons of beer, i. St. vz8.

Bridges, rade of Himalayas, L 198. See ulio Railways and Bivers.

Brindahan, town in Mutter District, on the railway, a municipality, 1. 385, 386; its religious associations with Krishna and Rhibh, 1,000 temples old and are, holy groves and endowed animals,

numerous pilgrims, 386.

Budann (Hodiyales), District in Bareilly Livision, L. 528-533; well watered and wooded plain, divided by a high ridge of sand, the old bank of the Ganges, gis; a rare tiger shut in 1893, 519, the danger to human life from wolves, \$197 climate, as of Rohilkhand, cooler than the Dodle, grg; its old Rathor dynasty, 530, overthrown (1196) by Mahammadana, 319; gave two emperovs to Delni, \$19, \$30; under the Mughnia, 520; its decline with the rise of the Robilla power in Barnilly, gan, 530; ceiled (1801) to British, 520; during the Metiny, \$20, 521, 530, the battles between the Muharemadans and Rajpats, 511 ; great increase in doublecropped area, 323; the large area of poppy, 503; permanent irrigation handly mended, 518, 522, 523; industry of angerrefining, \$331 poor communications and had trade, \$242 the awful familie of 1837-5, 524; pre-almor of serious crime and deceity, gra; the most backward in education of all the Districts, 526; hithiography, \$26.

Budann takrit, i. 518.

Bullain town, hand-quarters of District, a municipality, i. 830, 831; its founder Buddh, and Räthor kings, 830; its importance maler the Muhamundans, 830; passed to the Rohllas and healty (1861) to the Bettish, 830; a unifer government comblished during the Muthy, 830, 832, internal desensions, 831; the old mean and fort, with massive walls, 831; the Jimu Masjidbelli (1237) by Altareth, 831; memorals of Pathan and Mughal rule, 831; the new town with official buildings, 831; the new town with official buildings, 831; place of retirement (1450-78) of the last of the Servid languages, bits and his wife's tomb, 832.

Possible (and Burishness), the various dates unigone's to hirdersth from \$43,10370 m.c., i. 18; his activity in the Provinces, 18, the signs and remains of his docuries the signs and remains possibly a regular development and not a revolt, 18, its decay in and from the fourth century A.B. and revival of Hindulam, 18 (see also Chinese Filgrinss); an inscription of twelch or thirteenth century the labest measured of it as a living faith, 18, ii. 407; the inscriptions of Asoka, (i. 19, 13; the patternage of the Kunhar Kanthlea, 28, of Hanharamhana of Kunsaj, 21; archaeology and relice of,

enerywhere but in Hunfleyns, 32; its boly land of Kosala, 221; its connection with Magazina, 222, with Sawati and Oudh, 226; at Motina, 389; remains in Gorakhpar, ii. 224, 205; at Set Mahet, 407; Sandala, the scene of Huddha's descent, 1, 436, Sameth of his first preaching, ii. 242; Kapilacustu, his lätthplace, doubts as to its site, 202, 203, 221, 407; Kusangara, his deathplane wrongly identified with Kasala, 215. See also under Archaeology and History in Districts.

Bodhana, takett of Maraffamagur Dis-

trict, i. 300, 301.

Budidas, town in Musaffarmagar District, weler Act of 1855, l. 301.

Building stones, 1, 77-

Balandshahr, District in Meerut Division, 1. 531-157; unifers from malaria, due to swamps and extensive irrigation, mitigated by drainage, 331, 332, otherwise, like Meernt, healthy, 332; history, since Mahammadan invasions, of anarchy, war, pestilence and famine, 333. 339, the long respite under the Mughal empire till its decline, 333, 334, the return of misfortunes till the British occupation (1803), 3341 its temporary loss during the Mutiny, 334-335; the large number of recent Christian converts from the lower castes, 336; the failure to introduce Egyptian cotton, 337; the breed of horses and mules improved by Government stallions, 337. 338; the increase in the growth of cotton and sugar-case, the decline of unilgo, 337, 335; exports, of grain and cotton, 338, 339; the absence of distress from recent famines, 539; the failure hitherto of permanent land settlements, 340, 341; bibliography, 342. Bulandchaler zassif, 1. 341, 345, the great increase in population, 342.

Bulantishahr town, head-quarters of District and tokill, a municipality, 1, 245-347; its old name Baran, 345; the conversion of its Dor chief and his subjects by the army of Mahmid of Ghami, 333, 346; its rapid growth in size, elegance of public soil domestic architecture, and importance since British rule, 348; the drawlank of distance from the railway to be renedied,

247.

Boudeli Rajputs of Bambelkhand, L 214-216, their opposition to and relations with the Muhrumadan, Markith, and Buttish powers, L 215, 216; in Binda, it 34, 48, Hamirput, 32, Alfahibid, 66, 70, Jidani, 87, 88. See 250 Burdelkhand.

Bundelshand (British), country of Bundels

Rajputs, I. 4, 212-219; derivation of the name, 312; general aspects, 4, 212, flore, 14, farms, 14, soils, 213, 213, history, 213-216, H. 33, 341 the Chandels, 1, 213, 214, conquered (1181) by Prithwf Rij and submerged in the Musalman conquest, \$74; the accession to power of the Bundelis, 215, their resistance, often successful, to the Muhammadan power, 214, 215, finally (1720) called in aid of the Marathis, 215; subject to the Peshwa, 215, 216, coded (1802 and 1817) to British, 31, 210, forther additions to British territory, 216; population, reduced by galantities, 216, strongly Dravidian, ary, the Bondell dislect, 217; agriculture, 212, 213, 217, mussiciont irrigapassion in Districts, a famine due every 5 years. ii. 95; special legislation (1881), due to agricultural conditions, improvidence of the people, rack-renting of Marathia, and rigidity of British settlement, L. 217, 218 of passion, its femporary effects, 218; stringent measures (1903) against the alienation of land, long martgages, foreclosing, &c , 219; reductions of revenue and revised assensments, 219, li. 40, 41 of Justine; b bliography, i. 210. See also Hindi. Hamirpur, Allahabad, Jalaun, and Iblimsi Districts.

Burhwal, milway junction to Blan Bunki

District, ii. 448.

Burn, Colonel, repelled (1803) the Sikha from Muzzifarnagar, 1. 202, surrounded at Shimil and relieved by Lord Lake, 202.

Buxar, Isstile of (1764), defeat of Oudh and Mughal forces by Major Muuro, i. 18, 220; the timely desertion of Balwant Singh, H. 176.

E.

Calcutta, port of: value of rail-borne simile with, i 87, perceipal articles, 87, 88,

Campbell, Sir Colin (Lord Clyde), his operations round Campore, ii. 4, 17; relief of Lucknow, 307, 308; campaign in Outh, L 233; occupied Shihipalian-

par, 553.

Camels (unigation), i. 63, 64, 206-210; revenue from rates on occupiers and owners, 64, collected like land revenue, 64, receipts, expenditure, interest, and profits, 64, 65, their falls also used as a source of power, 208, 209; min village roads, 297; the system of private casels, voluntary and unraced in fault District, started by Europeans.

in 214, 115. See also under Irrigation in Districts.

Canala, used also or solely for navigation, i. 92, 93, worked as such at a low, 93, 208; Agra Canal closed to navigation since 1904, 93, 210.

Caming, Lord, Governor-General, state visit to Lucknow (October, 1858), ii. 308; his proclamation after the Mutiny, policy and opinion about the total division of Oudh, b. 356, 337.

Canning College at Lucknow, supported

by the taluedars, ii. 312.

Cantonment Magistrates, I. 103, 105.
Cantonments, Chakrisis, I. 264, Dehra, 264, 265, Landour, 266, Mussoorie, 266, 267, Roorine, 286, 887; Mesruf, 327, Mintra, 391; Agra, 404, 413; Fatelgark, 432, 433; Barcilly, 499; Shahjahanpur, 262; Caumpore, II. 15; Ris, Allahahid, 80, 82; Julinsi, 105; Benarrs, 140; Naini Tall, 262; Almora, 274, Rindeled, 277; Landdowne, 289; Lucknow, 301, 311, 312; Shapur, 350; Fysahid, 390, 301.

Carpets and rups, industry of, i. 79, 80, factories of, 79, best made at Agra

Central juil, 79, 413-

Carving, of stone, wood, chony, and ivery, i. 8z; the modern substitution of mechanical methods for handicraft, 8z.

Caste, Tribe, and Race, 1 42-45. See also sender each.

Caste, 5. 42-44; distinguished (for stu-dents) by community of occupation from tribe 43 ; its rules of endogamy, exogamy, and hypergamy, 43; its constaut modifications, 43; the three original Aryan castes of the twice-bern, and the mixed or aboriginal Scilma, 45: 44; their modern classification in twelve groups from highest to lowest, 44; the social precedence and numbers of the largest single castes, 44: high cantes pay less sent, 68, 235 of faction, trading castes, 86; relaxed by railways, at ; its infloence on the abuse of intraicants, 121; in education, 136; prejudicial to agriculture, il. 397. See also sender Cautes in Districts.

Cattle, t. 62, 62, level only where there is pasture and there carelantly, 62; cattle fairs, 62; disenses of, 63; investigation and treatment of, by arruns, ii. 261, 262; market at Kosi, t. 388; Kheri the ment important breeding centre, ii. 368. See also neader Cattle in

Districts.

Cattle, wild, from Bharatpur kept out by

a fence and ditch, 1, 573, 396.

Cave dwellings, drawings, implements, &c., found in Keimur Hills, 1, 203, ii. 146. Campore (Kenner), District in Allahabild Division, ii. 2-21; part of the Dollh, 2; well drained and fairly healthy, 3; climate, hot and dry, 3; history up to cession (1801) to British by Chadle, 3, 4; the Mutiny, 4, 5, 15-17; the great depth of the water-level in the southern portion and consequent dependence on canala, 6, 7, 8, 9, 12; cultivable area mostly taken up, 7, recent increase in ness of food-crops of poorer classes, 7; the great and flourishing trades and industries of the city, 7, 8, 18-20; full means of communication, 8, 18, 19; famines, not now liable to severe, 5, 9; early assessments, excessive and somedalous, q, to; education fair, one college, to; bibliography, 11.

Campore fahill, it. 12.

Cawapore city, head-quarters of District, on the Ganges, ii. 13-30; the most important trade-centre in Upper India, \$5; entirely a British creation, \$5, dating from first (1778) cantonment, 15, and connexion (1863) by rail with Calcuttu, 18; the native city mean, 15; the Mutiny, 18-17; the Memorial Garden around the Well, 17; plague riots, ry; the municipality, 17; filtered water-supply (1894) from the Ganges, 18; much-needed drainage acheme, 18, removal by steam trans of refuse and incineration, 18; the cuntonments for miles along the bank, 15, 18; the impetus to cotton trade given by American Civil War, 18; the development of the railway system, 18, 19; the huge recent increase in imports and exports, 19; factories, of cotton, tanning, army boots and saddles, &c., wool, mgar, jute, &c., 19, 20; Chamber of Commerce (1889) of Upper India, representative of European trade, 20; Christ Church College, affiliated to the University, industrial and other schools, 201 printing-presses and newspapers, 10.

"Coded Provinces," cedoil by Nawith of Oudh (1861), 1. 30, 210, 230, early treesament of, 113.

Cenurs, statistics of, early not trustworthy, i. 34, 33; fluctuations in growth of population, 6-3 per cent, 1881-90, only 1.) per cent. 1891-1901, 15; the actual decrease in parts due to drought, excesaire mistall, disease, 25, 36. See also seeder People in Districts.

Central Asia, lavaders from the Sakes and Kushans, L. 19, 20, the Witte Hans, so, the Rajputs probably their

Blantained descendants, 21.

Central India plateur, the four Districts ed, i. 4. Phrisis Bundelkhand, 4. their physical and economic infinitivity, 41 geology, 11, 12, botany, 14; its black

snil, 32.

Cesses, irregular and ouerous before minexation, i. 106, rates substituted for. in some cases, 107, 122, land cesses, 122, famine cess sholished in 1904, 123, cess for chankiddes, 139. The ceuses of taketh are given under each.

Chakia, takeil of Mirzapur District, H. 154, 155; much of it, on the Vindhyan platrau, game preserve of Raja of

Benares, 155. Chakrata, or Jamesir-Bawar, northern takill of Dehra Dun District, L 263. 264, physical aspects, 250, 251, 263, revenue settlement, 261, forests, 258, 253

Chakrata, town and cantonment in Dehra

Dun District, I. 164.

Chamirs, workers in leather, raw and tanned, the most minorous caste, i. 44: 45 of parsine, given to cartle poisoning for the sake of the hides, it. #37.

Chambal river (650 miles), one of the chief tributaries of the Jumns, i. 175-177; its course, falls, whiripools, and ravines, 175, 176; rises in floods 100 feet above summer level, 172; its bridge of huats, and milway bridge cens Raighat, 176, 177; its crystal stream and the muldy water of the Jumus, 177.

Champawat, tovill of Almora District, ii. 273; contains ruins of the Chands, 267.

Chand Rajputs of hill tracts (1488-1790), ii. 249, 265, 266, expelled by the Gurkhas, 249; their temple at Bhim Tal, 250, remains at Champawat, 367; their capital Almora taken, their temples descerated by the Robillas, 206. Chandauli, takiil of Benams District, it.

134

Chandaust, town in Moradibad District, I. 546, a amulcipality and railway junction, 546; an important trade centre for collection and distribution, 546.

Chandel Rajputs of Bundelkhand (850-1182), L 213, 214, ii. 33, 47, overthrown by Prithwi Raj (1181), i, 114, and Kuth-uit-ilin (1203), il. 47, 48, 51, 52; popular and religious explanation of the downfall of Paramardi, the last king, L 2141 their spleudid buildings and beautiful lakes in Mahoba, ii. 50, 62, in Jhanst, 90. See also liands, Bundelkhand, Hamirpur, and Jhansi.

Chindi, hills in Hijner District, i. 501,

gos, forest, 507.

Chandpur, town in Bijner District, a municipality, i. 523; a railway surveyml, \$13-

Chandpur, village, almost deserted, in Jaline Dietrict, il. 103 | Chandel ruins and inscriptions around a beautiful tank, 103.

Chandragupta (Greek, Sanirocottus), (eb. 297 B.C.), founder of the Manryan

dynasty, L 18, 19, 211.

Chaudra Gupta I (A.D. 320), founder of the great Hindu Gupta dynmity and cra, l. 20; Its wide rule for 150 years, 20, 220; revival of Hindmiam and possibly of Sanskrit literature, 10; overwhelmed (480) by the Huna, zo.

Charthieval, town in Muzaffarmagar District, ander Act of 1856, i. 301.

Charles, river of Challs, one of the chan-

nels of the Sarda, t. 181.

Chaukidärs, or village policemen, L 128, 129; methods of payment of, 129, 130; as registrars of births and deaths, 37, of the causes of death, 38; their

number and cost, 150.

Chet Singh, natural non and successor 1770) of Balwant Singh, Raja of Benares, i. 29, 30, 126, 135; his succession assured and confirmed by the British, 126, 135; fined for his refoul to furnish a contingent against the hostile (1780) confederacy, 126, 135; the visit of Warren Hastings to Benares, his critical position and flight, 726, 735; subsequent open rebellion, defeat, and deposition of Chet Singh, 127, 135. successfed by his nephew, 127.

Chanpil, village and railway station to Gonda District, it. 404, 403; known, for distinction, as Swami Narayan Chhapia, 404, in honour of a native religious reformer, worshipped under that name as an incumation of Krishna, 404, 405; a large and elaborate temple, 405-

Chhapraull, town in Meerut District,

under Act of 1856, i. 321,

Chhāta, to Avil of Muttra District, i. 383-Chhain, town in Muttes District, under Act of 1856, L 386, 387; its fort-like norms (nixteenth century) of 12 acres, 186, 187,

Chhatliri, town in Balandshahr District,

umler Act of 1856, L 347

Chhattar Sil, the national hero of the Hundeliks (cd. 1734), i. 215, H. 48, 52, left a third of his territory to the Monthès, L. 215; his descridants at Pattpur till 1842, il. 52. Chhibriana, sakril of Farrakhābād Dis-

trict, l. 429.

Chhiliciman, town in Farrokhibid Thistrict, under Act of 1856, i. 431. Chhoiya, river or channel in Bulandahulu

District, L 33*, 34*.

China, opium for, prepared at Ghanipur, H. 186. Chinese chroniclers, L 19; Buddhist pll-

grims, 10, 21, 236, ii. 23, 169, 203, 221, 249, 394; their report of the general decline of Eudelhian and frequent relapse of unitivated country into jungle, il. 121, 394 See also Fa Hian and Himm Tolong.

Chit Fireautr (also Burigaon), mud town in Ballin District, under Act of 1856, ii. 198; the finest tank in the District,

198,

Chirakût, hill and place of pilgrimage in Banda District, it. 46, the decay of its annual religious fairs, 40; its nummtous (and largely endowed) shrines and tempies, 46,

Cholera, epidemics and mortality of i. 38, 30 : outbreaks at Hardwir, 184, 185.

Christian Missions, statistics of, 1, 45, 47; the great success of the American Methodist Episcopal Church (1839). 47, 134 of Account Angliman Roman dioceses, 47; their work in female education, 134; the early date (1578) of the Roman Catholic Mississ at Agra, 47, 412; antive Christian village of Muiribad, ii. 68. See also amder Christian Missions in Districts.

Change, takeit of Mirespur District, it. 153-Chunar, town in Mirrayur District, a "notified area" with little trade, il. 155. 1561 the tomis of a saint, whose fetters fell off him at prayer-time in his prison

at Delhi, 136.

Chunar fort, it. 135, 155; its size and situation on a rock jutting toto the Ganges, 156; its great authority, 135; its importance under the Sars as the key to Bengal and Biliar, 155, 156; besinged (1761) imflectually by Major Manro, 156, became British (2763) after battle of Huxar, 150.

Civil combition, i. 41, 42, statistical table of unmarried, married, ami widowed,

male and female, 43.

Civil Courts of Justice, 1. 103, 104, 105,

manistics of, 151.

Civil Surgeous of Districts, L 138. Climata, general, 1.15-17; tables of temperature and rainfall, 142; the cold senson from late October to middle or end of March, 15, succeeded by the hot season, ig the rain of the morroon from mid June to October, 15, maximum, minimum, and average temperatures and rainfall, 15, 16, their local distribution, ti, 16; cyclones and storms nore, 16, occasional floods and earthquakes, 16, 17. See alto souder Climate and Tem-

perature in Districts. Coal, exists but is no longer worked, i. 76, 771 imported from Bengal, 87, 148, Coins and coinage, of kingdoms after fell of Mauryan dynasty, Buddhist and Hindu, i. 19; Kushan imitated from Roman, 20; Gupta at Jibisi, il. 83, in Fyzikidd (1924), 379; Chanhan found at Komm, 84.

Collector and Magistrate, officer in charge of a District in the Province of Agra, t.

100, 105.

Colleges, Arts, i. 132, Sanskrit at Benares, 152, professional, 132, 133, Thomason Engineering at Roorice, 132, 133, Training, 133; Muhammadar, at Alfgarh, 133; hostels for students, 133; statistics of, 135, 156; expenditure on, and its sources, 137; college fees, 137.

Colonelpuni, town in General District,

under Act of 1846, 11. 405.

Commerce. See Trade and Commerce. Commerce, Upper India Chamber of, with head-quarters at Cawapone, L.86, only Enropene concerns represented on, 86, il. 20.

Commercial circus, L. 135, H. 312.

Commissioner, officer hi charge of a Division, I roc; High Court said a District Judge in Kumann, 2031 of Kumann and of Barrilly Divisions, Political Agents for Native States of Tehri and

Rimpue respectively, too.

Communication, means of, i. 88-95; rullways, 88-91; roads, 91, 92; conveygaces, 92; light rullways, 92; canals, 92; 92; stemmers and river traffic, 93, 94; ferries, 94; Fost Office, 94, 95-See also usefer Railways and Roads in Districts.

Conquered Provinces, conquered from the Markthan (1803), i. 30, 31, 210,

ently assessment of, 115-

Conveyances and carts on roads, I. 92.
Copper and brass inclustries, i. 81, horsehold vessels, of brass for Hindra, of
tinned copper for Malanemadana, Sr;
Benares and other chief contres of arnaminutal work, Sr; il. 128.

Copper mines, mostly exhausted or closed.

Comwallis, Lent, Governor-General, tomb

ut Chiarpur, it. 186.

Caryat, Tom, so Harris te, L 284.

Cotton, the most important of the fibres, cultivation, 1,18, area moler, 146, imports and experts of raw, 87, 148, 150. Ger aim under Agricultural Statistics and Principal Copps in Unitriess.

Cotton industry: home and hand, spinning and serving; 1, 78, its chief centres, cases, and sumbers employed, 58, 16, 236, its competition with mills, 1, 78, statistics of mills and factories, 82, 83; catton curpets and rugs, 79, 80; imports and supers of cotton goods, 88, 148, 110. See also number Arts and Manulactures in Districts. Cretinism, in Districts with large rivers from the hills, i. 40.

Criminal course, L. 103, 103, statistics of, 120, 151. See also under Crime and Justice in Districts.

Criminal tribes, I. 129; transfer of Barwara to Gonda in hope of reformation, il. 396.

Crops, I. 55-59, 146, 147, of hot sessess arown in June, 53, of cold sessess arown in October and November, 53; the tendency to grow two crops, due to increasing pressure of population, 53, 146; artificial nitrification by means of microorganisms attached to the Legarithmee, 54; rotation, mixing, and irrigation of crops, 53; 54; in the Himalayan truct and Bundelkhand, 54, Scatte Harvests and smaler Agricultural Statistics and Principal Crops in Districts.

Cultivation, systems of, determined by soil and rainfall, i, 53, 54; area of cultivated and cultivable land, 146; not much more extension of, 19; generally selected, 29; little influenced by Agricultural department, 60, its policy to improve known seeds cather than introduce new, 60; its model farms and implements not appreciated, 60. See allo under Agricultural Conditions in Districts.

Cup-markings, prehistoric, on boulders, 1-17, still cut by children in Bundelkhaml,

, It.

Cyclones, rare, t. 16.

D.

Dillar, picturesque and mefal lake in Ouib, i. 205, 225. Dairy farm, at Chberat near Aligach, i.

358, 367,

Dalman, takiil of Rie Bareli District, il.

Dalman, town in Rile Barell District, moder Act of 1826. Il. 235, 236; early tradition and history, 235; laken and fortified by Brithim Shah of Janupur, 235, the beautiful rains of his fort over the Ganges, 236; Mughal mesques and other buildings, 236; its large miligious fair, 236.

Dunkaur, ancient town in Bulandshahr District, under Act of 1856, i. 347.

Daryahad, town in Bara Bankt Dustrict, under Act of 1826, ii. 448, once headquarters of District, removed thence for unbruithiness, 448.

Dasshra or Rim Lila, the gruntest Hindu

festival of the year, L 50.

Daragani, rice-producing takes of Badana District, i. 228, 239.

Dayanami, founder of Arya Samaj, 1.576; influenced by residence and studies at Mattra, 376. Deaf-mates, of the Provinces, 37 per 1,000. I. 40; in some parts up to a per 1,000.

Dend, disposal of: Musalmins inhume and abhor cremation, I. 49, raise memorial stones and faildings, 49; Hindus with some exceptions cremate, the poor imperfectly, 49.

L'eath-rate, table of, since 1881, with mortallty of principal diseases, i. 38, 39; the awful mortality from plague (1901-5% 39; infant mortality, 39. See also Vital Statistics.

Debi Patan, village on sailway in Gonda District, ii. 402; an ancient site identifind with Raja Karna, 405; its celebrated sacrificial temple of Siva, 405; Its great religious fair, 403.

Decentralization, political, since 1881, L. 113, 110 ulw Local Solf-government; financial, since 1871, 1, 100-109; See

adre Settlements, Financial.

Dehra Dan, District in Megrut Division, i. 250-268; the Dun valley, between the Himilayas and the Siwiliks, and the distingulille and foresta of Chakrata, 250; its singularly rich faum, 251, 252; tomperate climate, sufficient minfall, and immunity from drought, 232; its legeodu, 252, its prosperity under the Rajaa of Garhwal and Najib-ad dania (1757-70), \$53 raided by neighbouring tribes, 253, 254, occupied (1803-15) and oppressed by the Gurkhas, 254, rescued after war (1814) by the British, 254; archarology, 255; statistics of the people, 255, 256; polyandry commonly practised by the hill Khas Kapputs, 236; agriculture, slack and backward, 236, \$37; irrigation limited, \$57, \$48; extensive forests, 258; trude, 258, 259; administered by a Superintendent and staff, 259; special organization of civil courts, \$59, 260; land revenue and settlement; in the Din, vacillating between samindars and systemist, tomporary and permanent, \$60, \$61, in Chakrara, after standard of literacy higher than in any other District of the Provinces, 263, one to number of Europeans and Enrasians, 202; medical, 202 ; bibliography, 252,

Dehra, fahrll in Dehra Dün District, i.

262, 263,

Delira town, cold-tenson head-quarters of District, 1. 164, hot-sesson quarters at Mansoorie, 164, 167; arallway terminus, 264, bead-quarters during cold season of Trigonometrical and Forest Surveys, of Agricultural Chemist and Mycologist of the Government of India, 265 ; the water-supply and drainage of its municipality, 165; its training stables,

257, 165; the history of its foundation by the heretical Sikh Guril, Rām Rul, 253, 264, his temple and attributes, 253, 204

Delhi, rivalry and war with Jaunpur, i.

22, 23, IL 159-161 of faction.

Density of population, 445 to square mile, greater than elsewhere in India, 1, 33, 34, 144, 145, its variations and increase from west to east, 541 arban population is per cent, of total, 347 the effects, direct and indirect, of its presence on agriculture and industry. 59, 68, on comfort, 72; of rural population in Onth probably anequalled anywhere, 134; density of Divisions, Districts, and takills, given under each.

Dechand, southern takel of Saharangur

District, i. 280, 281.

Deoband, town in Saharanpur District, a municipality, 1. 283, 283, close to the main rallway, 282; its legendary and religious associations, 282; the Arabic College, devoted to Oriental studies, entirely independent of Government, 282; furge export trade in grain, 283.

Deoddir (Cedrus Deodara), an Upper Himilayan tree, i. 72, Government exploitation of leased forests of, 74, 75 See also under Botany and Forests in

Districts

Deogram, takel of Ammgurh District, II.

#39, #40.

Deogarh, fort, cave and stairs, and ruins of (stateen Jain temples), in Juansi District, it. 103; village with a fine old temple, 103; bibliography, 103.

Deoris, subdivision of Gorakhput District,

H. 215-

Deoria, takell of Gorakhpur District,

11. 21.4.

Deputy-Commissioner and Magistrate, officer in charge of a District in the Province of Outh and Division of Knmaun, i. 100, ros, his judicial functions in Kumann, 103.

Derapor, takell of Campure District, II.

12, 13,

Devaptaying, village in Tehri State, Il. 464, 46x; at the confluence of the two rivers which combine to make the Ganges, 464; one of the five mered confinences, and a resort of pilgrims for buthing, 464. 465; the great temple of Raghanith of uncemented stones, computed by Brahmans to be 10,000 years old, 464; the earthquake of 1803, 46g.

Devi Dhura, road-station in Almora District, it. 275; its celebrated temple of

maurities, 175.

Dewal, village in Phibbit District, i. 572, with mentals and an old inscription, 572; Libliography, 572.

Dhampur, takeit of Honor District, Larg. Dhimpur, town in Bimor District, a mmandpulity, L 11% \$14, on a main railway, 513; well-built and thriving,

Dhams (possibly Descree of Ptolemy) river, an afficent of the Betwa, i. 179; proposed irrigation works, 179.

Dhauralick, town in Khert District, under Act of 1836, il. 373; the punishment of the Rill for giving up fugitives to the mutiments, 373

Dibai, town in Bulandahahr District. under Act of 1856, L 347, 348, close to a main road and a railway, 347; rapidly increasing population and pres-

perity, 347, 348.

Diseases, the mortality from principal, i-38, 39; infirmities, 40; paralysia from eating kindrs, 37 ; of crops, 59; of cattle and horses, 63; the investigation and treatment with serums of bovine and hamon diamers, it. 261, 262,

District, in charge of a Collector for Deputy-Commissioner) and Magistrate,

P. 100

District boards, L 122-124; their original and early predecessors, 122; the development of their financial and administrative responsibility, 123; their number, and composition of ex-office, nominated, and elected (a great majority) members, 131, 124; their farence, 123, a table of their sources of income and objects of expenditure, 154

District staff. See under each District. Division, group of Districts under a Com-

missioner, L. 100.

Divorce, among Hindus, uncommon, l. 41, among Musalmins, legal, strongly reprobated and checked by high nominal dowers repayable on divorce, 41.

Doub (two rivers), the land between the confluence of any two rivers, especially of the Ganges and Jennia, L. 210. \$20 | extends from Siwaliks to Aliahabad juncties, seg; its natural fertility increased by irrigation and drainage, 119; the monotonous seenery of its cultivated plain, 8, 220, in 1794 a sandy waste, 320; now a great wheat-producing area, 219; its prosperity, railways, and commercial centres, van; sometimes called Madhya Desa, 221.

Doub, the Jumns-Chumbal, in Etiwah,

a desolate wildersess, 1, 152. Debrighet, town in Arangarh Detrict, under Att of 1846, il. 241, 243; on a brunch line, 345; a port on the Geogra with large trade, 342, 243.

Domariagunj, fatril of Bast! District, IL

228

Daira, labourers and artisans, one of the

three main castes of the hills and Bhilber. H. 331, 368, 381,

Dor Rhiputs of Plaran (Bulandshahr), t. 333. 346, 353. 36g. See atto Hirt

Dramage, as adjunct to or mitigation of meanitury effects of brigation, l. 332.

Dravidian (physical) type, its characterintics, L 45; pure in limited regions, 45, mixed of wide distribution, 45,

Dress, of Hindus and Mussimios, t. 48, 49 1 the characteristic Hindu albett, 48, 49; the growing use of European clothes, 40; of women, 45; of cultivators and labourers, 72.

Drighijai Singh, Mahārājā of Balrāmpar, ii, 405, 404; his distinguished layalty

during the Matiny, 403

Drugs (other than opinin) prepared from hemp (Cannahi indica), of home growth and imported, L 130, 131, dulies and licences, and revenues from, 121; their one and above, 121; Among almost as impocent as ten, 121,

Dodhal, rained town of ancient, unknown importance, in Ibline Diarrict, in 103. ting extensive mins of temples, &c., and a tank, 101, 104; a colessal (man-line) statue of Vishen carred on a hill-sale,

Duncan, Jonathan, Resident at Benares, in view of prevailing abuses, instituted and married and (1788-93) the perma-ment settlement there, L 173, il.)31, 135, afterwards Governor of Bombay, 151; his meauregement of agriculture in Janupur, 164.

Dwarahas, village in Almora District, it. 376; remains of sarved temples, some descented by the Robillas, 276,

Dweilings, of different parts and classes, of stone, brick, or mud, L 49, 72, their furniture, 73.

Dyeing, industry of, its chief centres and methods, I. So, vegetable driven out by artificial dyes, 54, 80.

Ĕ.

Earthquakes, occasional, not serious, i. 17; shartered (1803) temple of Raghu-

nath, IL 465.

East India Company, its imagnificant trade with the Provinces before annexation, L. Sq., its Directors resisted permanent settlement of Agra, 113-115; the abolition of its monopoly, a blow to native industry, li. 242.

Education, L. 130-137, statistics of financial and numerical, 137, 138; history of, sluce 1791, 130, 131; present seganication under a Director, \$36, \$32; University and colleges, 132, 1331

secontary schools, high and middle (boys), 133, 134; printery schools (boys), 134; female education and the prejudice against it, 134; special colleges, schools, and classes, 132, 133, 134, 135; schools, for Europeans and Eurasians, 135; Muhammastan education and objection to pirrely secular teaching, 135, 136; general essults tested by number of scholars, and by literacy in different regions, nationalities, and religious, 136; the drawbacks of the cente system, and of two different characters for writing, 136, 137. See also under Education in Districts.

Elephants, wild, in the Siwäliks, i. 14, 199, the Bhilbar, 2, 3, 14; kept by rich landholders of Gozakhpur, ii.

207

Elliott, Sir Charles, his atticketory settlement of Farrokhähld District, L 427, copied in other Districts, 427.

Embroidery (chikan), with chief centre at

Lindenow, 1, 79-

Endogamy of caste, i. 42, with exogony of groups, 43; among Musalmins, especially Hindu converts, 44.

Engineering College (Thomason), at Roorkee, l. 132, 133, 287.

Engineers of Public Works department, L.

120, 127.

English, instruction in, in middle schools, t. 133, in Forest School, 135; better known among Muhammudans than

Hindus, 136.

Figh, District in Agra Division, I. 463-481; generally dry and healthy, 466; part of the kingdom of Kannol, came under Muslim rule, 467; acquired (1801) by British, 457; abandomed daring Mutiny, 467; acceral accient sites, 468; cotton, sugar, and adoptive inclustries, 471; the 'accer nor' famine of 1860-1, 471, 472; lawlessness, 472; illiteracy, 475; bibliography, 473. Erab takett, 1, 473, 474.

Etah town, head-quarters of District, =

municipality, 1. 477, 478.

Etäwah, District in Agra Division, i. 451-465; its regions on either side the Janua of extreme fertility and wild desolation, 453; faunt, 453; moder the Meos till the Mulimmundan invasion, 453; persistent resistance of native timulus to Muralman aggressors, 453, 454, even to Akhur, 434; under Maritha, Clodh, and family (1801) British, 454, prolonged memberdination of chiefs, 454; shandoood during Mattay, 454, 455; slow resturation of order, 454, loyalty of unive officials and among mirr, 455; many ancient mounts, 455, 456; lowest proportion (6 per cent.) of

Musalmans in the Doub, 456; repeated families, 489; oppressive early settlements, 400; backward education, 461; hibliography, 407.

Etnwah /2/27/. 1. 461, 462.

Etäwah town, head-quarters of District, a municipality, i. 464, 465; a railway station, 464; once a innous trade centre, 464; the Jāma Masjid, 456, 464; fine buildings and square, 464; the Hume High School, one of the earliest in the Provinces, 464.

Enropeans and Eurasians: number of nonmative Christians, i. 47; education of, 135, at Musscorie, 262, 267, Naint Tal, it, 263, the Maniative school at Lucknow, i. 135, ii. 312; preparation for Government and railway service, i. 135; Ramsay Hospital for Europeans, 140, ii. 262.

Excise, department of, i. 119, its revenue, mainly from liquer, opium, and drugs, 119-121, 122; the moral policy of raising duties, tempered by the fear of sanggling, 121.

Exogamy of groups, I. 43, with endogamy of casts, 42; of Muhammudan Mewatis,

Expenditure, Provincial, Municipal, and District, tables of, 1, 153-155.

Exports, chief articles and values of, by rail and river, to other parts of India, i. 85, 87, table of, 148, 149; to Nepül and Tibet, 88.

Eye hospital, first at Allabibad, in 74-

F.

Factories. See Mills and Factories.

Fa Hian, Chinese Buddhist pilgrim, his description of Northern India early in the first century, i. 20, 226, 436, found northern Basti relapsed into jungle, ii. 221; ruius of Nawal identified with his A-lo, 316, 323; on Set Mahet (? Sravasti), 407.

Fairs, cattle, i. 62; religious, spread epidemics, 182, ii. 578. Sor Feativals and

Pilgrimage, Places of,

Fair, and Faiyar, All Khan, father and son, Nawabs of Paliaso, and ministers

of Jaipur State, i. 350.

Famino and acardity, 1, 94-99; caused now by failure of south-western monscoon rain and deficiency of autumn harvest of rice and millet, 94; tracta immene, protected, and liable, 94, 95; protection against by canals, wells, tanks, improved communications, 98, 99; regular warnings of, 95, 96; history of, since a. D. 1291, 96-98; influence of, upon statistics of Cennus, 98, compared with fever, 98, aggravated by fover, \$36, it. 95, in Bendelichand expected every five years, 93. See alto under Famine in Districts.

Famine relief, the various methods of, and their cost, i. 95-98, refmal to work On. 550.

Farhlungar, town in Meernt District, under Act of 1856, 1. 321.

Faridpur, can'll of Barrilly District, L. 494, 495, the most approductive of the

District, 494. Familian fown, bead-quarters of District,

unifer Act of 1856, L 500,

Farrukhābād, District in Agra Division, L 418-438; its head-quarters at Fatchgarls, 432, 433; one of the healthlest of the Doah Districts, 419; its association with the ancient kingcom of Panchain, 419, with the empire of Thanesus and Kanauj, 419, 420; Isl Chand and Hinon rule overwhelmed (1194) by Muhammad Ghost, 420; peace under the Mughals, 430; as part of an independent state founded (1714) by Mahanamad Ehlin at Favrakhilbid, 27, 28, 30, 420; as part of Outh, 421, orded (1801) to the British, 20, 422; the Mutiny, 421, 423, the escape by boat of fughtives from Fatchigarh, and their numerics at Cawnpore and on the river, 421, 422, 433; its ancient sites, 422; its high standard of cultivation and triple crops, 424, 430, the intense distress of the famine of 1837-8, 416; troublesome land settlements, and the improvements of Sir Charles Elliett, 426, 427 ; bibliography.

Farrekhabiid Athell, L 419, 430.

Farrakhäidd city, with Faichgarh, headquarters of District, forms one manicipality, L 431, 432; double ruilway service, 4311 decreasing population and tende, 451, 432; remains of buildings of its founder, Mahammad Khan, 432.

Fatchibail, takill of Agra District, L.

Fateligarly, head-quarters of Farrokhabad District, l. 432, 423, with Farrukhaldd city a numicipality, 432, on milway, a contournent, 432, 423; its fort, abandoned during the Mutiny, 433, the massacrts, on land and water, of the fugitives, 433, the monument and noemerial church, 433; Warren Hastings charged with posting (1780-5) a. British Resident there, 427

Faschpur, District in Allahaland Division, ill, 21-32; part of the Dollb, 21; highly cultivated, fairly wooded, and not unhealthy, 21, 22; twice the scene of declare tattles, 21, 31, inder Mohammedans, Marithes, and Outh, 23, coded (1501), #3; during the Mutiny, #3;

increase of cheaper food-crops and poppy, 25; famines, 27; heavy early settlements and fraudulent sales, 271 not distinguished for literacy, 28; bitdiagraphy, 18.

Faighpur taheil, il. 29.

Fatching town, head-quarters of District, a municipality, ii. 31; mnd houses, two tombs, and a monine, 32; noted mannifacture of white, 31.

Fatchpur, taked of Bara Banki District.

11 446, 447

Fatchper, town in Bira Rank! Instrict, under Act of 1855, fi. (48, full of

decaying old musenry, 448

Fatchper Sikri, town in Agra Dustrict, a anothied area, 1, 415, 416, its associations with Bähar and Akbar, its founder, #3, #4, 415, now partly dismantled, 415, 416; the great mosque of the tomb of the saint Salim Chishri, 419; the palaces of Akbar's Rajpat, Hindu, and Turkish and so-called "Christian" wives, 415, 416; the place of Akbar's theological conferences and other haildings. 410, of park and lake, 410; hibliography, 415.

Fauna, general, I. 14, 15, large game. leirds, and sonkes, 2, 14, 15; of Himalayas, 194, 195. See ulus under Fauna

in Districts.

Female education. See Education and Womens

Ferries, public, L 94, steum, 94; expenditure of District boards on, 123, 154-Festivals, combining pleasure and business with devotion, L 30, 51; the

great Himis Danahra or Ram Lila, 50; Musalman festivals, often shared by Hindra, 50, 51: June festivals, 51. See also Pilgranage, Places of.

Fever, the wide non of the term as a cause of feath, i. 39; the mortality from (75 per cent of total), 38, 39, increased by excessive minfall, 39, and irrigation, 290, 320, 332, 499; effects of famine and fever on vital statistics compared, 95; popular and chemp aries of quinine, 139 a fever-proof jungle tribes of the Turni, 243; in the Dun, 252; virulent in Philippi District, 164, 571, prevalent in Shillijahiin Dietrict, 581, 586.

Pinance, L 10x-126, tables of Provincial sevenue and expenditure, 152, 153; of native rule, 105, 100; British, the strict control of the Supreme Government, 106, 122; the policy since 1871 of decentralization, administrative and financial, 100; successive settlements between Provincial and Imperial Sunnce, 106-108; present arrangements, 108, 109; land recents, 109-117; suscellaneous revenue, 117-122; District, local. and musicipal finance, 122, 126, tables |

of, 754, 155

Fires Shah (III) Tughlak, his wise and heneficent rule (1551-88), t. 22; the disruption of the kingdom of Dalhi after his death, 22; foundation of Jaunpar, 22, ii. 170.

Firozabad, traviii of Agra Diarrict, L. 401. Firozabad, town in Agra Diarrict, railway station, municipality, L. 416, 417, destroyed (and rebuilt) by Akbar's orders for insulting Todar Mal. 416.

Fish and fisheries, abundant, i. 66, sometimes preserved, 66, 439, ii. 159, 249; even where plentiful not always used for food, i. 532, 353. See also seeder

Fauna in Districts.

Floods and immutations, L 16, of the Gunti, 16, 168, 169, of the Sun, 172, of the Chambal, 176, of the Binganga, 178, of the Golma lake, 204; fertilizing of the Ganges, 162, it. 191, sandy and

infertile of the Gogra, 191.

Food, i. 48; of different classes, 72; rice and millets the food of the masses, 95; two daily meals of chapter, with heris and ghr, 48; beef and mutton universal among Musalinans, 48, beef excitewed by all but the lowest Himbs crotes, 44, 45, steple and other food-grains, their cultivation, 55-57, 140, their prices, 147; the total production and surplus of food-grops, 27; imports and exports of, 87, 88, 148, 150.

Food-grains, staple and sulnidiary, i.

35-57

Forest School, Imperial, at Dehra Dun

(1880), i. 74, 135, 163.

Forests, L 72-76; their elissified area of over 13,000 square miles, 74; divided into upper, middle, and sub-Himālayan, and forests of plains, 72, 73, their characteristic and most important trees, 737 administration and enercy, 74 and M., 76; working-plans and disposal of produce of reserved and leased forests, 74, 75, the regulation of local rights and privilence of produce, fuel, and fodder, 25, 26, satisfactory relations with the population, 75: 'protected' forests generally administered in interests of the people, 75, 76; protection from fire, 76; special fruit plantations, 76; recelpts and expenditure, 76, 152, 1531 "District-protected" forest in Kumann Division, ii. 283. See who muder Forests in Districts.

Fort, the, at Agra, and its buildings

described, i. 408, 409.

Frairs and vegetables, cultivation of, i. 57, 59, 60, 61; Government nurseries and orchards, 76. See also under Agricultural Statistics in Districts. Pyzahild Division, with head-quarters at Pyzahild city, it. 376, 377; extending from the Nephil Broater to the Congru-376; a general statement of the simution, area, population, and land coverance of its six Districts, 376; the chief places of commercial, religious, and

archueological interest, 327.

Fyzilhad District, il. 377-393; Its chief siver the navigable Gogra, 377, climate fair, but cholern endemic, 378; its legendary history centring in Ajodhya, the hirthplace of Rama, 378; lell under the Mahammadana, Mughala, and Oudh, 378; during the Mutiny perolt but no massacres, 378, 379; the density of population leading to emigration and intensive agriculture, 380; rice the largest grop, sugar-cans and poppy important, 381; irrigation mostly from tanks and Mile, 381, 38:: cotton-weaving the chief tudestry, 281; communications by railways, roads, and river, 382-383; recent distress from drought and floods, \$83; girls kidnapped for marriage to Rajonts and Brahmana, 385; settlements rough and temporary, 383, 384; literacy high, 384 : bibliography, 385.

Fysikiol (adrel, ii. 383;

Fysikiol city, lead-quarters of Division and District, it 390, 391; a cantonment, 390, 391; a municipality, with scheme for drainage, 391; a triple rall-way junction, 390; a well-kept town, with many line buildings of the Nawabs, the Begams, and the nobility, 391; angar-refining infustry and considerable trade by rail and river, 391; history under Nawabs and kings of Outh, 390; capital after battle of Harar for tenyears, 390; decline after removal (1775) of capital to Lucknow, 390; the residence

of the Begnma till 1810, 390.

G

Gagar, or Gärgachal, a range of mountains in Naint Tal and Almora Districts, ii. 259, 260:

Game, i. 2, 4, 15; the game preserves of the Raja of Benares, ii. 141, 144. See

disp mader Fames in Districts.

Gandak, Great, river (192 miles), i. 184, 185, rises in Nepal and joins the Ganges opposite Patna; 184; in Retails territory a deliaic river with banks above the level of the country, 184; navigation and traffic, 185; Tribent and Saran Canals, 182; great lathing festival at Sonpur, 185; fun milear bridge, 185.

Gandak, Little, river, rises in Nepal and

joins the Gogra, i. 185.

Gangüpur, toksil of Benarca District, ii.

133, 134

Ganges siver, i. z. 6, 161-166, receives the drainage of the whole area, 2, its isme as the Bhagirathi from an icecave in Tchri State (13,800 feet), 161, pierces the Himalayas at Sakhi, 161, a considerable stream at Harriwar (180 miles), 161, there supplies Upper and at Naraura Lower Ganges (brigation) Canals, 161, its chief tributaries, 5, 161, the principal towns on its banks, S. 161, its course through the United Provinces and Hengal, 161-163, its delta between the Hooghly (west) and Megica (east), 162, the Sandarhans, 162, 163, its bountiful overflow (in Eastern Bengal) making brigation unenticis camwants, 163; the changes of its burst and conference with the Brahmsputra, 163, the constant making and numaking of new channels and islands, 163; its socred places, and especially Its junction with the Junua at Allahatnid, 163, 264; the extraordinary sanctity in post-Vedic literature and mythology and since, 164, 162; once almost the sole channel of trame between Upper India and the sex-hourd, 16z, mill a great waterway, feeding and fed by the railways, 165, 166, its service of stemmers, 166, its six railway bridges from Rorkee to Benures, 166; its flood discharge and level, 166,

Ganges Canal, Lower, irrigation work, L 20S, begon (1866), opened (1878), extended (1898), 208; its cost and erturn, 208, pays working charges but not always interest on capital, 20S; takes of at Namuer, with a solid wall thrown acress the river, 20S; waters \$31,000 acres of the authors noderation. Dodb, 10S; used also for harmselfers.

at = low, 108.

Gangre Canal, Upper, the most imperiant irrigation work in the Provinces, 1, 206-208; begun (1842), 206, checked by Lord Ellenborough, 206, resumed (1847) by Lord Hardings, 207, complisted (1858), 207, improved and remodelled (1866), 207; its cost and final mature of 214 per cent, 207; its extent and course over, under, and through dangerous torrents, 206; waters nearly one million acres of the Upper Bodh, 207; used also for navigation, statess, 205; the new Mathemach, 378.

Gangetic plain, the, bailf of the error included in, i. 3, the physical and ecomonic features of the thirteen western Dolly, h. 4, of the exacts Dolly, h. 4, of the exacts Districts.

between the Ganges and Gogra, 41 the geology of its alluvium, 11, betany, 12, 13. See also number Geology in Districts.

Gangoh, town in Sahāranpur District, the cleanest and most sautrary of the towns under the Act of 1856, 1.383; the manusleum of Shatkh Abdul Kudultz, and three old mosques, 385.

Gangotri, monntain (10,319 feet) temple in Fehrt State, closed in winter, it. 465; tolls on flasks of its sacred waters an important item of revenue, 463.

Garantis, takiff of Juani District, ii. soo; large recent decrease in popula-

tion, 100.

Garbyāng, station in Almora District, on trade-rouse to Tilet, ii. 276; post of a peskāje to protect trailers and pilgrims, 376.

Gantner's Horse, I. 478, 479

Garhwill, District in Kumaun Division, with head-quarters at Pauri, ii. 278-200; extends from the plains arross the Himalayas to the watershed between the Sutlej and the Ganges, 278, 289, its peaks and rivers, 278; the new marine strata of the Tibetan watershed, 2791 its trees and crops varying with altitude and climate, 179, 282; its rich fauna, 379; rainfall and snow-line in summer and winter, 279, 280; under the Katylitis, the Chands, and the Gurkhas, 280, the welcome conquest (1811) by the British, #8:; stendily increasing population and cultivation, 281, 282; a good recruiting ground, aSr; formis, asg ; important trade with Tibet, 283; a milesy terminus at the foot of the hills, 184, 188; most subject to famine in the Division, 184; rouls marely heidle-paths, sag; the accurate and satisfactory actilement of 1864, 285, 285; erime very light, 284 very few stations of regular police, 186; very high literacy, #86; very high proportion (05 per 1,000) of vaccinations, a871 bibliography, a87.

Garmakremer, token and place of palgrimage in Meernt District, i. 321, 322, under Act of 1826, and a rollway station, 321, 322; the great temple of the goldens Gangg, sucred well, and festival, 321, ancient fort and monute (1282).

311, 311.

Gaura, town (with Barhaj) in Gorakhpur District, under Ant of 1826, il. 217-Gautam Rajputs, converts to Islam, in

Aramgath, it. 232, 242.

Geology (general), i. o-r2, Tibetan supe, lying on the uniosatiferous Haimantas, rising by regular sequence to Upper furante, g, 10, then violently inter-

supted, 10; the sensive greissic rock of the central axis or mowy range, to ; the lower Himilayan roue, 10; the fresh-water Terriary strata of the sub-Himalayan zone, to, 11, the three Siwalik stages and their magnificent fauna, 117 the Gangetic allovium, still deposited, 11, its width of from 90 to 100 miles, 11, its depth, known and unknown, at different points, 11, composed of gravel, clays, and sands, 11, the river valleys from 50 to 200 feet below its level, 11, the salt efflors someo, red, 11; the Vinthyan system, emerging through the alluvium, 11, 12, its haematite and copper, 12. See acce under Geology in Districts.

Ghatampur, tubul of Cawapore District,

11. Id.

Ghazi-ud-din, infamens Wasir of the empire, i. 27, 28, blinded and deposed his putron, Ahmad Shah, 18, set up and mardered (1759) Alamgir II, 28, called in the Marathia to crush the Hobillan, 28, 503; founded Gharisbad,

Ghizf-od-din Halder, first king of Oudh (1814-27), spendthrift, t. 231, his buildings and memorials at Lucknow, ii.

Ghāriāliād, taknīl of Merrut District, L.

317, 318,

Ghilailibild, town in Meerut District, municipality and railway station, L 322; a

growing place of trade, 332.

Ghärfpar, District in Benares Division, ii. 174-187; flat, thickly inhabited, closely cultivated, 175; bot and damp, 175; city founded (1330) by Masiid, a Salyid chief, with the title of Ghant, 176; under January and the Surs, Akbar and the Mughals, Ondh, and Benares, 176, 177; ceded (1775) to British, 177; spread of the Matiny from Azamgarh, 177; many ancient sites with antiquities of all periods, 177, 185, 187; largely irrigated from wells, 180; only hmportant industries of openmand perfumes, 180; famines not serious, and relieved by emigration, 181; now well supplied with railways, 181; lingation and disputes due to excessive subdivision of land and the shifting of river courses, 181; the late institution (1879) of a record-of-rights, and settlement of disputes, 182; fair literacy, 183; hibliography, 183.

Gitaripur tearil, il. 183.

Charipur town, head-quarters of the District, a municipality, il. 185-187; on a branch line, and connected by a steam ferry with a terminm station, 485, 186; its long river front with old palace,

ghatt, and mud fort, 186; old tanks and tombs, 186; the tomb (180s) of Lord Cornwallis, 186; once an important trade centre for the truct north of the Garges, 186; the large and important factory of opinio, 186; the distilling of otto of roses and scents the chief industry, 186.

Ghadpur, tokist of Fatchpur District, il.

Ghosi, taksil of Amingurh District, it.

Giri Kaj (" royal hill "), a sacred sandstone hill in Muttra District, i. 387, its legend, 387, resort of pilgrims, 387, too hely to be quarried, 378.

Girwa river, in Nepal and Ondh, L 181,

184. See Kanrilla.

Girwan, takvil of Banda Dintrict, il. 45-Glaciers, of Himalayas, L 188, in Almora District, II. 163, 177, the sources of the Ganges and Jamus in Tehri State, 400, 465,

Glanders and Farcy Act (1899), the duties

of veterinaries namer, i. 62.

Glass, crude native industry of, I. 81, 82, its chief centres, 81, made from the sods of run, 8t.

Gohardhun, town in Muttra District. under Act of 1855, L 387, on the Giri RA), 387, famous in tradition and for Jat architecture, temples, complaphs of rulers, 376, 388, its tank lighted up at

the Dewall festival, 387.

Gogra or Ghages ('rattling'), the great river of Outh, Seruder of Prolemy, to b, 7, 182, 183; in volume rivals, in speed surpasses the Ganges, 6; rises in Tibet, runs through Nepal, pierces the Himalayas, 182; divides into the Kapriala and Girwa, 7, 182, which resulte and later assume the name of Gogra, 7, falls into the Ganges, 182; its chief tributaries, 182; Fyzibad and other principal towns, 7, 182; the variability of its course, 182, t81; traffic before the rallway important and still comiderable, 182, 183; steamers, railway bridges, and ferries, 163, flood discharge, 183.

Gains, a lake in Garbard District, formed (1803) by a huge hill-slip into a valley, i. 104; the successful prenantions taken before it burst (August, 1894), 204,

299; bibliography, 205.

Gold, town in Gerakhpur District, under

Act of 1856, IL 117.

Gold, ancient town in Khert District, railway station and chief travie centre, H. 373; the celebrated temple and Hegure of Gokarannath, with monaytories of genature, &c., 373.

Gonda, District in Fyalihad Division, it.

393-4071 a well-wooded and watered plain, with the Himalayas as a buckground, 393; large game of the forests, 394; lever rife, especially in terrer, 394; climate cooled by hills and heavy rainfall, 2041 the long struggles of the Rajputs against the Muhammadans and Oodh, 394, 395; during the Mutiny, the rebellion of the Rajii of Gondii and confication of his estates, 305, the active loyalty and services of the Raja of Bultampur, 395, 403, 404; excavations at Set Mahet, 305; emigration to the West Indies, Fiji, and Natal, 396; rice, in the Arms, the largest crop, poppy and sugar-case the most valuable, 390, 397; the drawlinck of custo to cultivation, 197; extensive and increating irrigation, 39%; 'reserved.' forests, 398; communications by rail better than by rouds, 399; familie seither frequent nor severe, 399; the perjury and forgery of the Brahmans, 400; difficulties of settlements, 400; higrary low, 401; lablingraphy, 401. Gooda fahrii, il 401, 402.

Gooda town, head-quarters of District, a municipality, ii. 405, 406; a multiple milway junction, 403; the rebellion (1847) and fate of its last Raja, 193-

Gopamen, old town in Hardot District, it. 351; once of importance, and adorned with mosques, &c., built by its townsmen, distinguished in war and letters,

361.

Gorikhpur Division, with head-quarters at Gorakhpur city, ii. 301, 202; from borders of Nepal to south of the Gogel, 201; the cames of the decrease in population since 1891, 201; general statistics at area, perpulation, land revenne, &c., of its three Districts, 201; the scattered distribution of the population and restly of towns, and title shief centres, and ; its Burbiblet associa-

tions, sos

Gorakhpur District, ii. 203-220; a wellwooded and watered, often immilitied, green plain, with muny lakes and rivers, non; submoutage flora, 203; very various and extensive farma, 203; relaxing and in parts malarious, sox ; Mulminmulan rule late and never firm, 203, 204; under partial British control after hamle (1764) of Buenr, coded (1801), 204; wat (1814-6) with Nephl, 104; rebel government during Mutiny over-thrown by Gurkha and British forces, 204; Berliftist remains, 204, 205, 215; estimate irrigation from wells and tanks, sor, sol, the method of sprinking with wooden shovels, soft; 'reserved' forests with all, 108; tipe, sugar, and poppy

crops, 200, 207.1 sugar-mining, 208; active trade by bad rouds, river, and rail, 208, 209; famine never severe, 200, 2101 early settlements difficult after long period of mismie, 210; concation backward, 311; bibliography, 312,

Gornkhiper tahist, il. 214, 215.

Gorakhpur city, head-quarters of Division and District, a municipality, il. 217, at8; head-quarters of Bengal and North-Western Railway, and of Government and other institutions, 218; a cantonment till 1904, now a 'notified area,' 217; a mean, ill-drained town of large and increasing population, with little trade, 217, 218; a depot for recruiting Gurkhas, 118.

Grains. See Food and Food-grains.

Grains (food) and pulses, huge fluctustions in exports of, i. 87, 88, 120. See also Food and Palses,

Gram (Creer serietimum), cultivation of, L 55, seen, 13 per cent. of eropped area, 55, 146; prices of, 147. See also under Agricultural Statistics and Principal Crops in Districts.

Grant, General Sir Hope, defeated mutineurs at Shamsahad, L 422, at Nawabguni, il. 448, his testimony to their

courage, 440, at Biswan, 340. Greathed, General Sir E. H., his march through the Doth ofter the fall of Delhi, i. 35, at Agm, 405, 407, Al Campore, it 4: victory at Balandshahr, i. 334; ut Sikandarabad, 124.

Greeks, the Alexander's invasion, L. 13, the relations of Sciences Nigster with Chardragupts, 18, the embassy and writings of Megasthenes, to: Greek inscriptions on Kushan come, 20.

Growte, Mr. F. S., L. 346, his Methuril

(1883), 188, Giga or Zahir, famous saint of Hindus and Muhammatana, i. 189, alinged

founder of Sazalwa, 180.

Gojars, the their mids in the Doth, L. ags, their revolt (thing), 271, 272, their bostility during the Mutiny, 283, 286, 234-338, their numbers and nocupations in Saharanjur, 273; thieres and infanticides in Mearut, \$14, invetorate entitle-thieves, 363 et paraine,

Galanthi, thriving town in Balandahahr District, under Act of 1856, L. 348; town Improvements, mosque and Orlental achool recently instituted by a citizen

Satyht, 248.

Guntl river (possibly Samber of Arrian), L. 7, 168, 169, rises in Pilibhit and runs in the plain between the Ganges and Gogzi, 7, 168, passes Lucknow, \$68, falls into the Genges at Saidpur, 168; its generally slight fall, sluggish flow, and winding course, 7, 168; its destructive floods at Lucknow and fauntur, 168, 169; its chief tributaries, 7, 168; its now inconsiderable traffic, 169; its road and railway bridges, 168. Gunnaur, takell of Budaun District, 1, 526,

547. Gunnant, town in Baslaun District, under

Act of 1856, L 531, 532.

Gupta dynasty of Magailla or Bibar (220-450), i. 20, 223, 226, 419; in Allshibbid, ii. 65, gold coins of at Jhan, 83; pillar and seal at Bhitzi, ii. 185; the revival of Hinduism and Sanakrit literature, i. 20. See alle under Archaeology and History in Districts.

Gurkhaa, their raith and oppressive occupation of Dehra Dun and Kumann, L 253, 254, ii. 266, 280; their gallant defence (1813) of Kalanga, i. 254, 265; their help against the mutiners, 233, 273, 305, 308, ii. 204, 232, 308; recrniting depot at Gozakhper, 218; expelled the Chanda, 249, 266; their system of land temper in Kumann Division, 246. See also Nepal.

Cursarni, estate in Jhand District, it. 101, 102, held on the wears tenure or grant, 02, canceled (1892), restored (1898) by decree of Privy Connett, 102; loyalty of its manager, Kesho Rao, during the

Mutiny, and his reward, 102.

H

Hints Rahmat Khān, Rohilla leader (1751-74), 1. 29, 345, 246, 247, joined (1761) Ahmad Shāh at Pānīpat, 246, 483, 486, 564, at Pilibhit where he built a wall and a fine mosqoe, 572, killed near Fatabganj and Katra in the final defeat of the Rohillas by Oudh and British forces, 564.

Havingguit, tribut of Bira Bankt Dis-

trict, II. 447.

Haldaur, town in Bijnor District, L \$14; place of meeting of engar-referen to fix price of raw mgar, \$14; loyalty, during the Muttey, of its Chaubin Bilk, \$14.

Haldl, town in Ballia District, ii, 198.
Haldwant, hend-quarters of Bhilbar tract
in Nami Tai District, a 'notified area,'
ii. 160, milway station and principal
mart of the Uact, 250; winter beodquarters of the Division and District,
260.

Hamirpur, District in Allahalda Diviaiou, it. 50-65; part of the great Bundelkhand plain, 50, with southwards picturesque hills and tanks, 50, 51; now no trees, 31; dry and hot, 31; under the Chandels till their double overthrow, 31, 32, 62; successively under Muhammadans, Bundeläs, Mariithat, and (1805) British, 3.2; the Muriny and return, as elsewhere, to nearthy, 51, 53; Chandel remains at Maboba and the great temple at Makarbai, 53; like other Bundelkhand Districts, population resluced lately by cycles of agricultural distress and famine, \$3. 65, 56, 57, only 28 unt of more than 1,000 cultivated square miles irrigated, 55, projected caust, 55; backward communications, 36; difficult and fluctuating assessments, 57, 58; crollitable literacy, 58; hibliography, 34. See also Bundelkhand.

Hamirpur tukrif, li, 39.

Hamirpur town, head-quarters of District, ii. 61, under Act of 1856, 61, runed fort and tombs, only remains of its traditional antiquity, 61.

Handin, takril of Allahabad District, in

.. 75

Hipper, rakell of Meeret District, L 319. Hipper (or Hipper), town in Meeret District, a municipality and railway station, i. 322, 323; Jama Maskit of the time of Aurongorb, 323.

Har Dat, Dor citief of Bulandshahr, i. 333, his conversion (1018) by the army of Mahmud of Ghami, 333, 146, his

fort at Meerut, 324.

Haraiya, tahill of Hasti District, il. 228,

Hardel, District of Lucknow Division, ii. 250-364; part of Gangetle plain with much poor sandy soil, 320; in some parts liable to floods and buily drained, 353, 355, in others deficient in irrigation and liable to droughts and famine, 353, 355, 356; generally healthy, 351; under kingdom of Jaunpur, 351, on the way to Kansul and the scene of many bloody battles for 150 years, 351, 352, between Jampur and Delhi, 352, between Sirls and Mughale, 352; ito inwiscenses under the kingdom of Outh, 33v; general rising and snarchy during the Mutiny, gaz; wheat the principal crop, poppy the most valuable, 324, its fluctuations in prosperity and of settlements, 533. 356, 357; very low literacy, 358; Sallography, 358.

Hardol rabiil, il. 36%, 359; Hardol town, bend-quarters of District since the Musiny, a municipality, it. 364, on a milway, with suport of grain, and industry of woodwork, 364.

Hardungani, town in Aligarh District, i.

368.

Hanlwar, ancient town and place of pilgrimage on the Ganges in Sahāranpur District, i. 283-285; a railway station and Union municipality, 283, 285; its former and present names, 283, 284; the great annual pilgrimage to its sucred bathing ghdf, and fair, 284, 285; the oothranks of cholem (1892 and 1903) and plagus (1897), 284, 285; the sanitary and other retorms of the Handwar Improvement Society, 284, 285; the head-works of the Upper Ganges Canal, 284.

Hart-hi-charan or Hart-hi-pairt ('Vishno's foot-print'), famous bathing ghir-

at Hardwar, 184.

Harrinvardhana, king of Thineser and Knaul (606-48), 1. 21, 479, 435, ii. 65, master of Northern India, 1. 21, failed to conquest the South, 21, his patronage of the newer Huddhism, and attempted marder by Brähmana, 21, his aplandour and power described by Himm Taining, 21, ii. 63, the short duration of his empire, 1. 21, succeeded by these conturies of obscurity and internal unarchy, 21.

Harvests, spring and automs, and their special crops in different tracts, i. 53, 54; generally the apring the revenue harvest, the automo the food harvest, 95; the importance of the rice harvest in eastern and submontane Districts, of millets classebers, in respect of famine, 95. See who Crops, Millets, and Rice. Hampur, Italia of Moradilhad District,

1-344/345+

Hasinpur, tswn in Morldähad District, meter Act of 1836, it. 546, 547.

Hastings, Warren, his arrangement (1773) with Shuja-ert-duals, i. 230, 231, helped him (1774) to comquer the Robillas, 231, 247; his share in the dealings of Amel uit-duals with the Begams, a count in his improachment, 231, its justification, 231; impenched for his share in the americation of Robilkhand, 247, its justification, 247; charged with posting, against his juvonise, a Resident at Fatehgarh, 431; his critical relations with Chet Singh, Rājā of Benares, 29, 30, its 126, 127, 132; place of residence at Chunăr still standing, 136.

Hith, total of Gorakhpar District, it.

215. 314

Hithms, natell of Allgarh District, i. 363; the difficulty of well-irrigation due to the fall in the spring-level, 263.

Hathras, city in Aligarh District, a municipality, with a double railway consersime, 1,563, 369; next to Cawapters the must important centre of trade in Dosb, 359, its factories and experts, 369, crowded sits and increasing population, 369; alone (1817), explosion and explare of its strong fort, 369.

Havelock, Sir Henry, defeat of Camppore mutinerrs, 1, 32, 11, 4, 16, 17; operations in Unso District, 215; stormed the Alambigh and partially relieved (Sept. 26) Lunknew, 200, died (Nov. 5), between second and third relief, of dysentery, 507.

Heber, Bishop, on the wildness of the western half of Muttra District, i. 373, found intact Abdullah's palace in Gharipur, now in ruins, ii. 185; on Shihiibid,

35%

Hemp (for fibre), cultivation of, L. 18. Hemp (Commobis éndica), drugs from, L. 120, 121. See also Drugs.

Hides and skins, generally shipped abroad,

87, 150

Hill stations. See Smituria.

Hill system, i. 4, 5, 185-204; the prevalence of deaf-mutant, leprest, and cretisism among, 40. See also under

Hill System in Districts.

Himilayes, the ('abode of snow'); a general view of, i. 185-198; our imperfect knowledge of, 186, 187 of pursies; extend from the Dibling river on the east to the Indus on the northwest, 186, 188; their political distribution, 186; a series of high ranges with diverging spurs (Outer Himflayas), ending abruptly, 187; the final and lowest range of Siwaliks, 187, 199; the range between India and Tibet a true watershed, 187; scenery, snowline, and protruding glaciers, 187, 188; the source of the Indo-Gangetto river system, 188; higher peaks, valleys, and lates, 189; geology, 189-194, their origin in a grent backle of the earth's cross is late Terriary era, 190; flora, 194 : fanna, 194, 195 : tribes, religious, and languages, 195-197; crups and forests, 197; communications, 197; communications, 197, 198; bibliography, 198; in the Linked Provinces, best known and surveyed, 186, rise rapidly in successively higher waves, 2, geology, 9, 10, hotany, 13, 14, fanna,

Hindau river (160 miles), affinent of Jumna, I. 175; by means of a cut, an important link between the Gauges and Jumna for the reinforcement of the

Agra Canal, 175, 209.

Hinduism, its Vectas and opics, 1, 17, 18; Baddhism as a possible development of, 18; its revival under the Guptes, 18, 20; its castes, 42-44; its influence appa Islâm, 44; the religion of 85 per cent., 45, 47, why Islâm increases fastier, 45; its immense variety of ideas and beliefs, 45, absence of dogma, 45, the

general sanctity of Brähmuns and cows, 45; its outbookery represented by the Vedantiata, 45; their monism and its corollary, mers, 45; its general tendency to recognize a personal God, 46, sapecially insupreme Vishnu or Sive of sects, or in minor deities, 46; the universal belief in transmigration, 46, the moral sanction of its rewards and pensities, 46, the streamous opposition to the Arya Samij, 46; festivals, 50.

Hindustan, "the place of the Hindus," a vagualy defined area, i. 220, 221; as India north of the Vindhyas opposed to the Decom (Dakshin = south), 220, Hindustan or Unit, the Kenter

Hindustant or Urdil, the lingua frames of North India, i. 221; the number of its speakers, 43.

Historic areas, L. 210-248;

History, records of early, before the Muhammadan compast, indirect and incomplete, i. 17, the evidence from the Vedic hymns, 17, the great epics, 17, 18, language, 18, inscriptions, 18, 19, 32, 33, coins, 19, 20, 33, Greek and Chinese writers, 18, 19, 20, 21.

History, 1. 17-32, of the Aryan invaders, 17. 18, the rise of Buddhism, 18, Alexanster's toyasion and the Mauryan dynasty of Patna (221-184 H.C.), 18, 19; the foreign Sakas (125-225 A.D.), Kushans and White Huns (450), 19, 20, the Hindu kingdoms of the Guptan (\$20-480) of Magnitha, 20, and of the Raiput dynasties of Kanani, 20, 21; Muhammadan invision: early of Malimild of Ghami (967-1030), 21, later and permanent of Mahammad of Ghori (1186-1506), 21, 23, the Muhammadan kingdoms and dynastics, 22, 33, the Meghal (Mongol) invasions and empire, 13-13, the decline of the empire and the rise of the Jata, Sikha, and Marathas, 25, the formation of local independent states (Oudh and others) within the empire, 27, 28; the definit at Panipat (1761) of the combined Hindu forces by the Afghan and Indian Muhammadans, 18; the British defeat of the imperial forces at Busar (1764), 28, 29; the mids of the Marithas and their supremany at Delhi, 29, 30, their defeat (1803) by Lord Lake, 30, the formation of the Provinces, 30, 31; the annexation (1816) of Chath, 11, the Matiny (1857), 34, 32,

History, of Omih, L. 27-33; legendary and traditional, 225, 226; part of the last great Husdu kingdom of Kanang, 226, for 500 years of the Muhammadan kingdom of Deihi, 227, of the Mughal empire, 227, 228; he practical independence under Sakdat

Khin and his immediate successors, 27, 228, their relations with the emperor, the Marathas, the British, and the Robillas, 228, 230, 246; Shuja-uddaula (1754-75), 18, 228-220, defented (1764) at Baxar, 28, 229, negotiations with Warren Hustings, 229, 247, with British help sunexed (1774) Robil-khand, 29, 230, 247; Asaf-ud-danla (1774-07), his treatment of the Begame. 130; Sandat All Khim (1798-1814), gave up the Ceded Provinces, 30, 230, 231, 247; interable record of later rulers and annexation (1856) by the British, 31, 231, 231; the Mutiny, 231, 233, its early outlierale in Lucknow (May, 1857), 222; the siege and relief of the Keshlency, 232, 233; the fortificution of the city by the robels, 232, siege and capture by the British (March, 1838), 233; final pacification (November, 1858) of the Province, 233. See alse Lucknow city.

Hium Tsiang, Chinese Buddhist pilgrim (629-645), describes Harshavarilhana's splendour and power, L 21, 420; his description of the kingdom of Chi-ki-to (Jejika) in Bundelkhand, 114; describes Kosala, 221; on Hanlwar, 283; found priests and monasteries still at Muttra, 373, 390; on Sankisi and the supposed pillar of Asoka, 430, 437; on sites in Etah District, 468; on Rammagar and Abichhattra, 484, 500) en Motipara identified with Mandawar, 503, 514. 515: on Allahablid, il. 65, 78; on Ihnal, 83; on Kosam, 83; on Benares, 137; on Ghinipur, 175, 176; on kingdoms in the Tarai, Bhilbur, and bills, 240; on a rough kingdom in the hills, governed by a woman, 164; ruins of Nawal identified with a town visited by him, 316, 323; on Set Maher († Seuvasti), 407.

Horse sterifice (Arramedia), the grant, i. 164, Brahma's at Hithir, ii. 44, at Benares, 138

Horses, no good bread save in Meerst, 1, 62, 312; discusse of surra and glanders, 63; horse-breeding and Government stallions in Manuflarougar, 295, 304, Mecrut, 514, Bulandshahr, 327, 338, Aligarh, 358.

Hospitals and Dispensanes, i. 138, 139, See also under Districts.

Humayon, eldast son of Hiber (1508-56), defeated (1530) and expelled from India by Sher Shilb (Sur), i. 23, exturned (1535) and recovered Agra and Delhi, 23,

Huzar, M\u00e4zif of R\u00e4mpur State, ii. 487.
Hypergamy, i. 43, its relation to female infanticide, 40, 43.

T.

Iglia, takiff of Allgarb District, I. 362, 3631, the difficulty of well-irrigation due to recent fall in the spring-level, 358, 363.

Imilmbars, the great, at Lucknow, manuscleum built by Asaf-mf-dauls, ti.

302, 100

Imperial Cadet Corps, i. 163.

Imperial Service forces of Rampur and Tehri States, L 127, 128, IL 456, 465.

Imports, chief articles and values of, by rall and river to other parts of India, 4. 85, 87, 88, table of, 150, to Nepal and Tibet, 88. See also under Trade in Districts.

Income tax, revenue from, i. 122, exemption of incomes below Rs. 1,000, 122 M.; 0-18 per cent, of population assessed, 122, incidince 8 ples per bond, 122,

Indigo, cultivation of, 1. 59, its rapidly decreasing area, 59, 146, 338; Aligarh, 318; exports of, 88, 150

Industries. Ser Atta.

Infant mortality, slame 1881, very high, 1-39; the lowest, in 1893, 190-7 per 1,000, the highest, in 1903, 274 per 1,000, 39.

Infanticide, female, its pravalence due to hypergamy of casto tystem, i. 40, 43, and consequent difficulty of high-caste women in finding suitable limitands, 40; the failure of legislation (aince 1795) and of mural sussion to check it, 40; the partial success of later legislation (1870), and registration of proclaimed households, 40, 41, 278; once freely practised by Jan and Gajare, 314, 208; in Agra, 200; Mainpuri, 445; Buthaub, 525; Dijace, 208; Isoupur, it 166 of service. See the

Infirmition, L. 40.

Inser, proportion of, to total population (0-14 per 1,000), 1,40; not distinguished from cretinism and desf-matism, 40, anylume and statistics, 139, 159, 160,

alleged names of, 139

Interiesuits, mutrictions on manufacture and sale of, L 119-121, their use and abute, and popular feeling on, 121, as cannes of imanity, 130. See also Drugs, Excise, Liqueus, and Opinia.

Iron, ferner mines at a unnintill, i. 77.
Iron, industry of, i. 80, its chief centers
and numbers supplessed, 80, 81.

Irrigation, mainly from wells, 1, 63, 66, total area mader, 1,46; the libition aliane can dispense with, 63; crops, seasons, and soits for which it is required as independable, 64; the importance of different sources of irriga-

tion in different tracts, 66; causle, 63, 64, 206-210; tanks, 65, 66, wells, 65; revenue, 64, 152, 153; sometimes prejudicial to climate and health, 200, 320, 332, 496, and necessitating a distinguished system, 332; scrupics against using samed rivers and tanks, 378. See also under frigation in Districts.

Irrigation, obstacles to, by earnly, the depth of the river channels, and the broken country, ii. 28, 208 et parries, by wells, the acresponding depth of the water-levels, ii. 38, 208 et parries.

Islammegur, town in Budaun District, under Act of 1846, 1, 532.

Itimidpur, takell of Agra District, 1, 400,

Itimildpur, town in Agra District, under Act of 1856, i. 417.

Itimad-ud-daula, Wasir of Jahangir, tomb of at Agra described, L. 411, 412.

Ivory-carving, i. 82.

J.

Jahanahad, town in Fatehpur District, under Act of 1826, it 321 separated from Kora by Mughal road, 32.

Jahangir, fourth Mughal emperor (160s-27), i. 24; the rebellions and defeats of his sons, 24, his great buildings, 24, at Agrs, ii. 405, Allahahad, 81, Sikundra, i. 417, 418; reception of English travellers, 24; emocrapassed the munier of Abul Fast, 215.

Jahüngirähad, town in Bulandshahr District, under Act of 1856, t. 348, named after the emperor, 348; calico-printing and fluurishing grain made, 348.

Jails, department of, 5, 130, 157; administration under laspector-General of Prisons, 130, their number, population, mortality, and cost, 130, 157, infinities, 70, 190, 50e also under Police and juils in Districts.

Jahn and Jaininu, scalptures, temples, inscriptions, i. 32; festivals, with imsges carried in sampthons cars, 21; high standard of literacy strong, 136; founded in Magadhs, 222; the munifocuse of the Jain Banils at Khuria, 349; Kushan kings of Mutra, 373, 389, most numerous in Jainst District, ii. 90; runed temples at Deogarb, 103, Lalitpur, 106, Siron, 107.

Jais, old town in Rae Harelt District, ii. 336, the Jame Marjid restored by Hartim Shab, 366; birthplace of the poet

Muhammad Jaist, 236.

Jalaiabad, old town and 'notified area' in Munifigragur District, 1, 30x 2 rules of celebrated fort Ghazagath of Najib Khān, and mosque, 307. Jalalabad, Jahril of Shahjahanpur Dietrict, L. 359.

Islabild, town in Shihhjahanpur District, under Act of 1856, t. 550, Secrease of importance, due to distance from rail-WAY, 550,

Islall, town in Allgarh District, puder Act of 1856, L 369, 370; its principal inhabitants, mace 1293, Shiah Saiyide,

370. Jalabur, town in Fysähad District, under Act of 1856, ii. 391, 391; imimbira built by contributions from the weavers.

bor. Injann, District, with headquarters at Orac, in Allahabad Division, ii. 108-122; not, dry, not unbealthy, too, the military importance of Kalpi fort as communiting a main possage of the Jumpa, 100; under Muhammadans, Bundelās, Marāthās, 209, finally by treaties, lapse, and ex-change (1861) British, 110; during the Mutmy, 110, Kesho Rao's vacillating attitude, 110; Muhammadans only 6 per cent., 111, the only District in hundelkhand which has not lost papalation, owing to (1886) Betwee Canal. 111, 112, 113; agriculture Suctuating, 113; the alow appreciation of irrigation hastened (1896-7) by famine, 113, previous famines due to blight or drought, 114; decodies not infrequent, more intractable owing to proximity of Native States, 115; assessment affectuating, 175, the last on the bosts of rentsulfa, 115, 116; high literacy, 116; hibliography, 116. See also Bundelkhand.

Jalaun wheel, it. 117, 118, the most stable. tract of a very precutions District, 118. Jalaun, bown under Act of 1835 (not the hand-quarters of District, ii. 118, 1191 once capital of Maratha State, 118; the pensions and privileges of the Marithi

Brahmans, 118

Jalesar, takell of Each District, 1, 475, 476. Jalesar, town in Etah District, a municipality, t. 478, 81 miles from Jalentz Road station, 478; rains of old fort, and inumirary lower town, 478.

Jama Masjid, at Agra, described, i. 407. 408;

Januactri, small musitain temple (10,800 feet) with image of Janua in Tehri State, H. 403; hot springs near 405.

Januath, Addill of Musillamagur District. 1, 300,

lamenth, town in Manufactogue District, under Act of 1825, J. 202, original home of the Salyhi brothers, 'king-makers' of Delhi, 302.

Jaspur, town in Naint Tal District, under

Act of 1856, ii. 260,

Jaswantosgas, town in Etawah District. under Act of 1856, 1. 462.

lats, the, their rise, a cause and effect of the decline of the Mughal empire, i. 26, shared the defeat at Panipat (1760) with the Marathas and Raipura, 28; ravaged the Dolb, 254 of furries, scired Agra and attacked (1763) Delhi, 20, cheeked by the Marithia, 19; their name-ending of Singh, 31, often money-lenders, 61; not many cust of Robitkhand, 248; their skill as cultivators, 294, 336 of fattrist, chief in-habitants of Bhilkatheri, 291, 301, in Meerut, 310, prayed (1896-7) for famine prices, 3141 property of disloyal during Mutiny confiscated, 320, their general loyalty at the time, 335, 345; in Allgarlı (1757), 354; Ját architecture at Gobardhan, 376, 388, formerly practised infanticide, 314, 508; Jat Rajaa of Bharatper, 374: 375

Jaumpur, kingdom of, its rise as an independent power under the Sharki kings, L. 22, H. 159, 160; its long struggle with Delhi and final destruction by Sikandar Lodi, t. 23, 420, 435, ii. 161. See ales

Jaunpur District and city.

Janupur, District in Benares Division, ii. 158-174; its natural diversity of anyface increased by mounds, the sites of ruined, forgotten towns or of demolished farts, 158, 174; too densely populated and cultivated for game, 139; climate generally moist and equable, 139; history that of Zafardbad and then of the Shark? kingdom of Junquiz, the rival of Delhi, 159, 100, overthrown by Sikandar Lodf, 161; ceded to British (1775), 161; the Mutiny, 161, 162; the magnificent Sharki remains at Janupur, 162, 171; sugar, the most valuable evon and important industry, 164, 165; very extensive irrigation, mostly from wells, 164, 165; severe drought and famine rare, 1896-7 an exception, 165, 166; disputes and riets due to pressure on the soil, 166; low literacy, 167; hibliography, 168.

Jampur dahall, il. 168. Jampur city, head-quarters of Diamer, s municipality, il. 170-172; on two main lines of railway, 170; founded (1359) by Phoe Shih Tughish, 170; the rule of the independent Sharki dynasty (1394-1480), 160, 161, 170; its splendid buildings and patronage of learning, 100, 171, Jampur the Shirar of India, 171; the Atala Masjid (1405), 171, the tuins of the Thanihit monque, 171, 172, Janua Masjid (1438-78), now being restored, 171; many other mesques and tombs, but no

remains of palaces and colleges, 172; not an important trade contre, 172; bibliography, 172.

Jewar, town in Bulandshahr District. under Act of 1856, i. 348, 349; held by

the Begam Smirtt, 348,

Jewellery, industry of L. So, at Lucknow and by the Sonar or goldemith custe, So, the dreay of enumelling and inlaying, 85.

Ihalo, town in Bijnor District, I. 314. Phinsi, District in Allahabad Division. ii. 8x-ro8; its southern portion mixed up in and with Native States, 85; the variety and beauty of its accusery of hills and lakes, 85, 86; its Vindhyan rocks and Mālwā trap, 86; hos, very dry, but not unbealthy, save in unturns, 85, 86; antiect to blights, droughts, floods, hallstorms, famine, fever, cholera, 87. 95; history under Chamlels, Bundelüs, Markthia, 87, 88, lapsed (1853) to British, 88; the Mutiny, favoured by the lapse and other causes, 80, the tremberous mesoure of the prisoners from the fort. So; interchanges (1961, 1886) with Sindhia, 89, Gwallor fort exchanged for Jhansl sizy, 89; great wretith of archaeological remains, on; low density of population, 90, highest percentage of Jams, 90; liable to eveles of agricultural prosperity and depression, 91, 95, 96, 97; irrigation mainly from wells and not extensive, ont former, large, of most value for elimatic ressum, 93, 94; export of building stone, 94; well provided with railways and route, 04; recurring famines and fevers, 951 decoity and serious crime common in had times, 66 ; the difficulties, must in Hundalkhand, of astislactory assessments, 96, 97, extraordinary ligislation, 95, 97; its high literacy, 95; bibliography, 98, 99. See also Durotelkhand.

Indust takril, it. 99-Jhami city, head-quarters of District, cuntomment, and municipality, il. 104. ros, an important railway centre, 04. with increasing trade and population since (1886) annexation, 104, 105; founded (1613), under the Bundelin, Marathas, Outh, ros, heally (886) passad to British by exchange with Sindhia, tos; during the Mutiny, 89; picturesquely situated round its hill-fort, ros-Jhinikina, wahealthy town in Muzzffar-

mapper District, under Act of 1856, 1.302. Janua town in Allahabld District, under Act of 1815, it 61; its identification with suctent sites and archaeological interest, 83.

Joshimaris, village in Garhwal District, ii.

\$87, 288, winter residence of the Riwal or chief priest of Badrimath, 287.

Jours (Andropogon Sorghum), a tall miliet, a food-staple, cultivation of, t. 56, area, 6 per cent, of cropped, 56, 146, prices of, 147. See also under Agricultural Crops in Districts.

Indges, of the High Court, I. 103, District, 105, 104, Sabanlinate, 104, of Small Conce Courts, 104, their jurisdiction, 104. See also under Crime

and Justice in Districts.

Judicial Commissioner, High Court of in Oudh, L 103.

lumns, the (Johnver of Arrian), i. 6, 173, 174, rises in Tehri State, 173, receives the Tone river, 173, pleroes the Siwalika, 172, is tapped and dmined by the James and Agra Canals, 173, is reinforced from the Ganges, 174, unlike the Ganges, is generally confined within its hanks, 6, 1741 joins the Ganges below Allahabid, 174; its chief tributaries, 6, 175, 174; Delhi and other principal towns, 174; the anti-typhoid virtue of its water, 174; its considerable traffic before the railway, 174; railway bridges, 174; breadth and flood discharge, 174-

Junius Canal, Eastern, important irrigation work of the Upper Doils, L 105, sog; its take-off, course, and extent, 309; begun (1823), opened (1830), 200; its cost and good returns, 200; waters 305,000 acres, 209; not now used for

manigation, 200.

Justice, administration of 1, 103-1051 statistics of, 131; High Courts, presided over by Chief Justice in Agra, and by Judicial Commissioner in Outh, of civil and criminal appeal, tog; District Judges of original and appollate jurisdiction, civil and criminal, 103, 104; saturdinate civil courts distinct from courts of crime, revenue, and rent, 103; ordinary civil courts of original jurisdiction, to4, to5; natinary criminal courts of original jurisdiction, to5. See also under Crime and Justice in Districts.

K.

Accor, prevailing soil of Bundelkhand, always too wet or too dry, i, siz, sig, Hi. 30 of passion.

Kabir, bis inflaence on the modern Radha Swimia, L 46; his tomb at Maghar, il.

Kadipar, asknif of Salifapper District, H. 428, 429.

Kningers, takel of Farrakhitski District, 4,50, 431) its famous augar cane, and tobucco, 430.

Kaimgenj, town in Farrakhähad Destrict, under Act of 1856, L 433, 434-

Kalmur Hills, the eastern portion, 200 miles long, of the Vindhyas, i. son; the fertile sanger-shaped valleys on their summits, 203; rude drawings and prehistoria implements found in caves, 203-

Karrana, taksit of Musuffarongar District, 1, 100.

Kairling, town in Muraffarmagur Dutrict, a municipality, i. 302; diegold, garden, and tank of Mukarrab Khan, physician to Jahungir and Shah Jahan, 302.

Knisar Bagh, great palace at Lucknow, built by last king of Oudh, it, 304.

Kaisarganj, takest of Bahraich District, 11. 416.

Käkorä, rillage in Budaun District, near the Ganges, i. 532, noted for religious and trading fair, 532, site of fair varies with movements of river, 532. Kakori, town in Lucknow District, under

Act of 1856, ii. 307; the residence and burying-place of distinguished and

saintly Musalmans, 301.

Kakrala, town in Budaun District, under Act of 1856, L 532; General Penny's victory (April, 1838) over the rebel

government, 532. Kalanga, hill in Debra Dün District, i. 265, fortified (1824) and defended by Gurichan, 254, 265, 266, stormed [1814] by General Gillespie and the scene of his death, 256,

Kall Nadi, East (210 miles), affluent of the Ganges, l. 167, 168; damage to valley by its insilequate channel and destruction (1885) of aqueduct of Lower Ganger Canal over it, 167, 168.

Kall Nadl, West (70 miles), affluent of

the Hindan river, i. 175-

Källnjar, town (Tarnhti) and hill-fort (1,10) feet) in Banda District, ii. 46-49; its great antiquity, legendary and historical, 46, 47, its literary and religious associations, 47; its Chandel Rajas, 47; taken (1203) and purified by Koth-inf-din, 47, 48; besieged for ten years (1530-40) by Humayan, 48; Shar Shah's siege (1545) and posthumous capture of, 48; under the Bundellis and Marithas, 48; surrender (xxxx), after ineffectual assault, to Colonel Martindell, 48; held by small British garrison during the Matiny, 48, diamantled (1866), 48; description of the almost maccramble hill and fort, 46, 48, 49; lithliography, 49;

Killyf, takelf of Jalann District, ii. 117 Killyi town, a municipality, on a main line of railway, it. 119-121; the military importance of its fortress on the Jumpa under Musalmins and other powers,

100, 110, the scene of several sieges and battles, 119, 120 | the old town a good specimen of an old North Indian town, 120; a lofty modern tower, with notable representations of the battles of the Rimayana, 1201 recovering its old importance as a great trade centre, 120; many old Maham-madan tombs, notably the chaucari gumbis (or 'eighty-four domes'), tir, TZO.

Kalsi, town in Dehra Dan District, under Act of 1856, i. 266, the Asoka inacription, 31, 155, 255, 256,

Kamisin, tabell of Banda District, il. 43;

Kampil, ancient village in Farrukhähåd District, with mound, ruins, and ancient coins, i. 434; the marriage-place of Draupadi to the five Pandavas, 434.

Kannnj (Kannauf), tahili of Farrukhiibiid

District, i. 428,

Kansuj, ancient town in Farrukhallad District, under Act of 18g6, L 434-436; once on, now some miles from, the Ganges, 434; a railway station, 434; scent distilleries, 436; the legend of its foundation in the Ramayana, 434. 435; moder the Guptes and Harshavardhana of Thanesar and Kanani, at. 435; the kingdom, the last Hindu, of the Rathers (r. 1000-1194), everthrown by Muhammad Ghort, 22, 226, 435; under the Sharkl kingdom of Jaunpur, 435; pence under the Mughals, 435; under Farrakhäbad, Marathas, and Outh, 435; tombs, shrines, and miles of unexplored ruins, 433, 436.

Kindhla, town and municipality in Maraffarnagar District, i. 303.

Kander, a limestone of the alluvium, its forms and was, i. 77 of parries; discovery of mammalian remains in, 452 et taurim.

Kankar, rent, paid generally in kind, a portion of the value of standing crops, 1. 66, 67, its disadvantages, 67.

Kans (Saicharum spontaneum), a coarse gram most destructive of agriculture, prevalent in Bundelichand, L. 217, il. 37, 35, 91 of precior, attempts to eradicate by steam plough and flooding, 37.

Künth, town in Moradabad District, under Act of 1856, L 347.

Kanunger, subordinates of reheitelers, supervisors of Admirit, L 101, 113, 114, 141; agricultural college at Cawn-

pore for training, if. so.

Kapurthula, State in the Punjah, with estates in Bahmatch District granted for good service in the Mutiny, it. 417, 418; the Käjäs, Sikhs of Rajput lement, 418; the relations of the house with Ranjit Singb and the British, 417, 418; the Raja, the premier tulndoler of Oudh, 404; his evenne, army,

privileges, &c., 418.

Karamaisi ('destroyer of religious merit') river (146 miles), L. 170, 171, Koneseesages of Arrian, 170; affinint of the tionges, 170; its high and beautiful falls, 170; the legendary explanations of its name, 170, 171, real, as boundary of non-Arran eastern kingdom of Magnitia, 172; the falls and gorge of its tributary, the Chundraprabha, ii. 142.

Karchanii, fahill of Allahibbid District,

il. 76, 77. Karhal, cadell of Maispuri Diatrict, i. 447. Karhal, town in Mainpuri District, under

Art of 1825, L 449

Kamaprayag, one of the five excred confluences of the Alaknandii river, it 288, many temples, 288.

Karwi, subdivision of Hamia District, il.

Karwi, takel of Blinds District, H. 44-Karwi, town in Handa District, under Act. of 1816, ii. 49, 50, on a branch milway, the most important trade centre of Districs, 49; Improved (1820) by its resident Maratha chief, 49; disloyalty of Natayan Rao during the Mutiny, 49. his house, property, and family treasures confiscated, 49; the famous 'Kirwee and Blanda Prize Mency,' 49.

Küsgung, fakul of Erah District, L 474.

475.

Kasganj, town in Etah District, a municipality, i. 478, 479; a milway station and innerton, 47%; once belonged to Calood James Cardner, 478, 479; with growing trade and industries of conton and engar, 479-

Käshiper, plates totall and unbdivision of Naint Tal District, il. 209.

Kashipur, mwa in Nami Tal District. a municipality, it ano, sor projected railway, 260; ruins of furts and temples, identified with expital of Govisina

kingdom, 260, 261.

Kasil, subdivision of Gorskhpur District, il. 215; important Buddhist remains, including coloural status of dying Buildha, 2751 wrongly identified with Runningara, place of his death, 215; lithliography, 215.

Katehr (uid name of Robilkhand), and Katchersa Ralputs of Enhilkhand, i. 244, 245, 455, 498, 535; the great factlity of the Katohr plane, 522, 538.

Kathgodim ("timber depos"), village and railway raminus in Naini Tal District, under Act of 1856, H. 261; the startingpoint for hill stations, 26t.

Katra (or Miranpur Katra), town in Shah-

Jahlinpur District, under Act of 1846. . 360; the defeat of the Robillas by the Oudh and British forces, 560 1 on the rallway, with local trade, 361,

Katyari Rajas of Almora and Garnwal,

11. 205, 267, 280.

Kauriāla (also Karnāli) river, rises in Tibet, i. 181, flows through Nepill, 181, passes through a deep Himilayan gorge, Shishi Pani I glass water 18t, divides and remutes with the Girwa, 181, receives several branches of the Santa and becomes the Gogra, an affluent of the Ganges, 181; tts traffic and fish, 181. See also Gogen.

Kedarnath (11,733 feet), famous temple and place of pilgrimage in Garhwall District, ii. 288; the legend of Sadissiva, 188; the Bhairah Jhamp or precipice of religious snielde, sup-

present by the British, 288,

Ken (or Kayan, Kamer of Arrian) river, (\$50 miles), affluent of the Jumna, i. irrigation, 179, 180.

Keshu Rao, of Garmeni, his vacillating hot finally loyal action during the

Mutiny, il. 102, 110.

Khadars, wide river vaileys, breaks in the great alluvial plain, i. 11, 174, 189, 290 et fustim; of the Ganges, fertile, of the Juman, infertile, 352. Khaga, saaril of Fatenpur District, il. 30.

Khair, takelf of Allgarh District, i. 303. Khairabad, town in Straper District, a municipality, ii 149, on a railway, 149-Khairaguth, ashiii of Agra Dianet, L 403- 444-

Mhajaha, seasif of Patchpur District, H.

Khajahil, town in Fatalepur District, under Act of 1826, il. 11.1 scene of Aurangach's victory (1649) over Shujil, and of Farrikh Sivar's (2712) over his

cousin, 51. Khalifahari, tahai/ of Basti District, ii. 229. Khatunili, town and railway statios in Musaffarmagar District, under Act of

1850, 1 303

Khekra, town in Merrut District, under

Act of 1846, i. 322

Kherl (Khiri), submontane District of Luckeon Division, with head-quarters at Lakhimpur, ii. 364-3741 mostly a vant river bed of the many channels of the engrant Sardit, cool, damp, awampy, malarious, 364, 363; luanriant setementane flora, 364, 362, its large forests, the shelter of many wild animals, 364, 368; the slow aprend of Masalman rule, 365, later history maimportant, 168; the murder or death of ratagees during the Mattay, 254,

366; agriculture mostly precurious, 367, but from excess rather than deficiency of rainfall, 365, 369; the Parenar tract the most important centre of cattle-breeding in the Provinces, 368, the various breeds, 368; trade with neighbouring Nepar, 368; railways, branch to Nepil frontier open only frime January to June, 359; very poor, unbridged roads, owing to engaries of rivers, 369; the speed and economy of the last settlement, 370; hackward education, 371; bibliography, 371,

Kheri, old, numportant town in Kheri District, under Act of 1825, it 373. 374; fine tomb of Saight Khard, 374. Khudaganj, thriving town in Shabjahinput

Instrict, under Act of 1856, k. 561. Khurja, taked of Bulandshahr District, L. 343, 344, largely impated and drained, 344, grows the largest crop of cotton. 344

Kimria, town in Bolandshahr District, a municipality, 1. 349, 350, the magnificent temple, 340, the munificence and public spirit of its Jain Busille, 349; the centre of the District trade, 349.

Khitahan, lakill of Jampur District, ii.

Kichhannohba (or Ashrufpor Kichhannchha), town in Fughted District, under Act of 1856, it 393; the tomb of its Musalmin saint, a favourite place of pilgrimage for demoniacs, 302.

Kirakal, takell of Janupur District, ii.

150, 170,

Kirnoll, takeif of Agra District, L 403. Kiratpur, town in Bijnor District, under Act of 1856, i. 514. 'Kirwes and Binda Prize Money,' the

famous. See Karwi, il. 49.

Kiniri (Lathyrus tatious), a pulse, esten in large quantities leads to paralysis, L 57. See also Lathyrism.

Kon or Kol, the original and usual name

of Allgaris city, 1. 365. Kopāganj, town in Azamgath District, under Act of 1856, it. 243.

Korz, ancient town in Fatchpur District. th 31, 32; held for centuries by Guntam Rajie of Argal, 31; many old and ofice runous houses, 32.

Korb (or Rhadohi), takrif of Mirzipur

District, ii. 154

Kosala (Kuchela, 'happy'), the name of two traces known in Hindu literature. I. 221, 225, 226, a northern, corresponding to Oudh, 231, part of the inly land of Baddhism, 221; a southern, about the upper waters of the Mahanull, 221; bibliography, 221, the relapse of the northern part, religiously and

economically, noted by Fa Hisn in the fifth century, ii. 221, 394. See also Ajodhya.

Kosam, the name of two villages in Allahabad District, it 83, 84; doubtfully identified with the famous Kausambhi of Hindu and Buddhist interest, 83; its ancient remains of an extensive fortress, scalptures, carvings, and a great variety of coles, 83, 841 a modern fain temple, 84 ; hibliography, 84.

Kon, town in Mutter District, a municipulity, i. 388, 389; in a low insanitary situation, 189, trade in grain and cotton, 389, large entile market, 389.

Kotdwara, town at the foot of the hills in Garhwall District, under Act of 1836, il, 288; a callway terminus and most important must in District for Tibetan

and country trade, 188,

Krishna, the eighth locumation of Vishnu, his birthplace at Muttra, I. 189, his numerous associations with the Brai Mandai, the western half of Muttra District, 374; and especially with Brindaban, 386, Giri Kaj, 387, Mahaban, 388, 389.

Kshattriyas, or warntor caste, twice-born,

43, 44,

Kulpshar, and of Hamtepur District.

Kalpshir, town in Hamirpur District. under Act of 1855, ii. 61, founded by n son of Chhatar Sal, 61, ruine of

manaious and fort, 6x.

Kumaun Division, with head-quarters at Nami Tal, ii. 245, 246, winter headonarters at Haldwani, 260; mostly in the Himalayas, from borders of Tibet to the Tarni, 242; population sparse but stradily increasing, 245; Muhammadans only 7 per cent., 245; its tiree Districts, 243, 246; its chief religious and commercial centres, 246; the tenurse peculiar to the hill tracts, 246; gross revenue from all sources, \$46; particular administration of justice in, L. 103, it. 355 of Astrim.

Kumnun, its ocquisition after war (1812) with the Gurkhas, it. 266, 267.

Kunch, takel of Jalaun District, B. 118. Kunch, town in Julian District, a munieigality, on a heanth railway, it rat ; largest trade centre in District; tat.

Kunda, Adell of Partibuart District, it.

437 Kushana (Indo-Scythian), dynasty of (125-223 A.tt.), i. 19, 20 (fele) in-scriptions of, at Muttra and elsewhere, 19, 32, 373, 376, relations of, with Rome, 10. patronage of Buddhism by Kanishka, 20, soon Himfaired, 20,

Kuth-ud-din, took (1193) Meerut and

converted temples into mosques, i. 21, 307, his capture and conversion, through treachery, of Barra, 333, of Kotl (Allgarh), 353, 365; took and purified Kalinjar, H. 47, 48.

Labour, sgricultural, wages of, L 70, material condition of, 7s; skilled and anskilled in mills and factories, wages of, 82, 83, the supply of, 84, combination of maxims to regulate wages, 84.

Läharpur, town in Situpur District, under Act of 1856, IL 349; birthplace of Today

Mal, 340. Lake, Lord, his victory (1803) at Aligarh over Marathas, I. 30, 354, storm of fortzess, 335, relieved (18c4) Colonel Barn at Shamli, 305; his failure at Bharatpur, 375, took Agra, 393; his brilliant defeat (1804) of Holkar mar

Farrakhābād, 431, 433-

Lakes, jkille, marshes, swamps, reservolrs, L 8, 9, 204-206, of the Outer Himalaysa, more beautiful thus big, 8, the Golara laire, 8, 9, 204, 205; artificial (reservoirs) in Bundelkhand and Miralpur, 9, 65; in Oudh more valuable for irrigation than rivers, 225; in Mat, 383, 384; of the Chandels in Bundelkhand, L. 30, 62, 90; in Gorakhpur, 202, Haatl, 222, Azzmgurh, 231, and Naini Tal, \$47; often the old beris of rivers, 40% of passing.

Labhimpur, tabail of Kherl District, IL

372. 373.

Lakhimpur, town, head-quarters of District, it, 374, railway station and municipality, 374; rapidly growing in size and trade, 274

Lalliper, subdivision of Jhimi District, il. tot, 96, till 1901, a separate District, its distinct fiscal history, 96, 97. Lalitpur, Antil of Jhanai District, ii. 100,

Lalitpur, town in Ihliani District, a nominated municipality and railway station, ii. 105, 106, during Mutiny British officials Ill-treated, but not murdered, 89; pietaresque Hindu and Jain temples, 100; large export of dried beet to Rangoon, 106.

Lambardly, representative of the cosharers of community land, i. 101, 111,

Land, agricultural value of different, see Soils; economic, see Rents; litigation, disputes, and crime as a result of excessive subdivision, il. 131, 181,

Land, alienation of restrictions on, 1, 416, 217; in Bandelkhand (1903), 219, in Chulh, 135, 139.

Land receion by Garges, L. 152; in Rallin, ii. 188, 197, a cume of historion, 193Land revenue, L 109-116; tenures, 109-113 7 the mindel, the revenue unit, 110, ree; rights of tenants, in Onlh and in Agra, heritable or acquired by occupancy, 111, 112; assessments, per-manent (in Benares Division), regular and summary," 111-116; incidence, generally sme-half of landlord's rent, 116; surpensions and remissions in calamities, 116; a table of amounts received from land revenue since 1890, 152; in Onth, 236-242; amount of land revenue is given in account of each Division, District, and takett. See also Assessment, Settlements, and under Land Revenue in Districts.

Landour, hill cantonment and sanitarium in Dehra Dun District, L 250, 266.

Landslips, L to; at Naint Till town (1880), ii. 262.

Languages, spoken and written, I. 43, \$37; statistics of, 43; the numbers and regions of the three principal languages, Eastern and Western Hindl and Biharl. ss, of other local and foreign tongues, 43; Urda, the language of officials, prose, and written verse, 421 Awadhi of Oudh, 435; Bundell of Bundelkhand, 217, Hindustani or Urdii the lingua france of the Provinces, 221. See also under People in Districts.

Langueri, a species of blackmail, i. 380. Lansdowne, cantonment (6,000 feet) in Carbwill District, it #80.

Liz, tewn in Garakhpar District, near a railway atarion, ii. 219.

Lathyrium, puby due to enting of kiniri dil (Lathyrus suttour), 1 57, il. 77, an

sugravation of famine, 74.

Law, adocation and classes in, L. 1331 in Allgarh College, 2671 at Agra, 414; in Muir College, Allahithad, it. 83; in Canning College, Lucknow, 317. Ser also Legislation and Legislative Council.

Lawse, town in Merrut District, under Act

of 1856, i. 323, 324, Lawrence, Sir Henry, Chief Commissioner of Onih at Lucknow before the Mutiny, ii, 304, fortified the Residency, gathered stores, 305, disarmed (May 3) the mutimous regiment, 305; his prompt action so the breaking out of the Mutiny in Lucknow, 305; his fad health, 305; fought (June 19) the mutineers at Chinhat, 30s, 306, had to retrest and concentrate upon the Residency, 206; wanneded on his bed (July a) during

the siege, 306, diest July 4, 406. Lewrence, John (afterwards Lord), his settlement (1833) of Ethwah, i. 460. Leather, large and wide industry of, I. 82,

tanneries at Campore, 83, il. 19; Mochi

and Chamir castrs, workers in, L 43,

Lebong, mountain range in Almora District, it. 276, its difficult show pass,

Legislation and chief legislative measures affecting the Providers since 1580, 1.

107, 103.

Legislative Council (1886), l. 102, composed of seven official and eight nonofficial members, 102, discusses ununal financial statement, 102, may ask questions, 102.

Lepem, in the Provinces, 0-23 per 1,000. L 40, in hill Districts up to 2, 40;

appear to be decreasing, 40.

Lightenant-Governors, a list of (1816-1906), L 99; preside over, and nominate six official members of Legislative Conneil, 102; their chief Acts, 103.

Limestone, supplies of, remote and only used locally for making lime, 1. 77-

Liquors, restrictions on manufacture and sale of, i. 119, 120, duties and licences. and receipts from, 120.

Literacy, standard of, among different religions, i. 136; highest among Jalus, Aryas, and Christians, 316; for literacy of Districts see under Education.

Local self-government, I, 122-116; Acts regulating, 122-126; its development since 1871 as part of the movement towards decentralization, rob, 122, 123, 125; Local expenditure clearly distingnished (1878) from Provincial, 122; the establishment (1882) of District hoatds, 123, the simultaneous growth of their interest, independence, and usefulness, 133; countripulities, their development into an elective system, rapid progress and finance, 124-126; 1 notified usens, 123, See also under Local Selfgovernment in Districts.

Lodl, Alghan dynmty at Delhi, i. 23, its wars with, and final destruction of, the Sharki dynasty of Janapur, il. 159-161.

Lucknow (Lahhnan), Division of Oodh, with head-quarters at Lucknow city, il, 201, 192; between the Ganges and the Gogril, sqs; its stendtly increasing population, 291; general statement of attention, area, population, and land revenue of its six Districts, sor; the towns of chief importance and trade,

Lucknow District, Il. 191-313; generally a wall-wooded, fertile plain, 292; geology and botany, of Gangetic plain, 191; climate a mean, 191, 193; history generally that of the city and its rulers till annexation (1856), 293, 301-304, during the Mutiny, 304-308; agricullure, 294, 295; extensive irrigation

from wells and tanks, 196; aris and trade mainly of city, 296; railways and roads, 295, 297; repeated famines, 297; settlements without a univey, 298; high literacy, 299; bibliography, 299-Lucknow takelf, it. 299, 300.

Lucknow city, on the Gunti river, ii. 301-315; head-quarters of Division and District, and of many Government officials, 311; a municipality, with watersupply and drainage scheme, 311; the largest cantonment in the Provinces, 201, 311, 312, the most important railway centre, 296, 297, 301, but with a decreasing population, 301; mamfactures, generally of luxuries, 312, mills and factories, 312; numerous educa-tional lustitutions, especially female, 313, 313; the distant view of marble magnificence and architectural aplendoor, 310, the mar view of an ordinary crowded town, with many sawdry sinceo buildings of debased style, 293, 5to, 311; its principal buildings, 308-311; its parks, 308, 309; history before unnexation, 301-3041 its rise and fall under its Nascabs and kings, celminating in Asaf-nd-daula, 302, 303, ninking to Wajist All Shah (1847-59), its last and lowest king, 304; history during the Mutiny (May 30, 1857, to March 15, 1838), 304-308; hibliography. 313. See also History of Outh.

Impacy. Ser Insane.

Machhlishahr, Ashill of Jaunpur District.

168, 169

Machhilabahr (Fishtown, as liable to floods), town in Jampur District, under Act of 1836, ii. 172, 173; a mined fort and seventoen meaques, 173, little trade,

Madanjur, small village in Bansi District, in Vindhyan pass, ii. 106; Chandel remains and temples and fine tank, 100.

Madhya Desa (the middle country), the term often now applied to the Dobb, L. 227, its more extended meaning formerly, 221; the holy land of Britmanism and Hinduism, 251, 222; bibliography, 221.

Magailha, a great and aucient kingdom, referred to in the epies, i. 2221 originally situated in Filhar, included Bengal and part of the Provinces at the time of Alexander, 222; the Mauryan dynasty and Asoka, 222, morwed later in the Gupta dynasty, 222; subdeed by the Chilukyans and the Pal dymany, 222; family (1197) part of the Slave empire of Dulhi, 222, its connexion with Brahmanism, Buddhism, and Jainism, 222; hibliography, 222.

Maghar, village and railway station in Basti District, ii. 230; the tomb of the celebrated Hindu and Musalman prephet and saint, Kabir, 230.

Magistrates, of criminal courts, stipendiary, i. 105, contonnest, 103, 105,

special, tor, honorary, tor.

Mahahan, town in Muttra District, 1, 384.
Mahahan, town in Muttra District, under
Act of 1856, 6, 388, 289, its traditions
and remains of Krishna's infancy and
childhood, 280, 389; the Assi Ahamha
or court of 'eighty pillars,' 388, resort
of pilgrims from far and near, 389.

Mahabharata, the great epic, its story, i. 17, of doubt at historical value, 17, the probable dates of its events and com-

pusition, 17, 18.

Minds, or unit of hand settlement, 1. 701,

110, 111.

Makhadri, a diseam, long known in Kumann, identical with plague, t 59 Mahangganj, takiti of Gorakhpur Dis

trict, ill 213.

Mahardigan) (or Drigbijaiganji), tahrif ot Blac finreli Diatrict, H. 334- 535-

Maleli Ali Khān (Hakim), the last expable minister in Ordh, 1. 221, 231,

11 374-

Mahmud of Ghami (967-1030), the first fereign invader of the Provinces after four centuries of freedom, i. 21, his raids and piunder of Muttra and other sities, 21, 374, Ordh traditions of his general, the saint Sillir Masad Ghist, 21,

Maintendated, saludative estate in Singue and other Districts, it. 148; area of 197 square miles, 148; long descent and military distriction of the family, 148, public services of the last and present Rujas, 148.

Mahnonahad, town in Stuper District.

residence of the E314, it. 549, 340. Mahobis, subdivision of Hamirpur District, IL-61.

Mahold, takelf of Hamirpur District, ii.

Mahobd, ancient town in Hamisper District, ancier Act of 1856, il. 61, 62; on a main railway, with increasing trails, 65; named from the great ascrince (Maketawat) of the founder of the Chandel dynasty, 62; probably civil capital of Chandels, 62; rained foctoverlocking beautiful sloce, studded with lalets, unsele by the Chandels, 62; listing above their overthrow, 62.

Mahroul, cabill of Jhinos District, il. 101.
Mahni, tahill of Anamgara District, il. 240.
Mainpust, District in Agra Division, 1.
438-451; physical leatures, those of
the Doah generally, 438, 439; pussed

under successive invariers and rulers of Northern India, 459, 440; shring the Matthy in the hands of the robol Raja, 440; the improved breed of horses, 442; preference given to maximize in enty settlements, 441; now immune from famine, 445; sery low standard of literacy, 445; bibliography, 445.

Mainpuri takiti, i. 445, 446,

Mainpart estate, tolkhidri, with an area of 89 square miles, i. 448, 449; descent of the Raja from Prithwi Raj of Delhi, 448, heart of the Chanhin Rajparts of the Dodh, 448; estate confisented (1827) and conferred on nucle of reliel Raja, 440, 449.

Munipuri town, head-quarters of District, a municipality, i. 449, 450; a railway station, 449; founded by Chanhan Raipurts, 450; on either side of the Agen road, 449, 450; its first, local trade, and industry of carved wood, 450.

Main (Zer Meys), cultivation of, L 56, area, 5 per cost of cropped, 56, its yield 8 to to cwt. per arm, 56. See also waster Agricultural Crops in Districts.

Makanput, village in Casenpore District, ii. 20, 21; shrine and religious fair of Musziman estut, originally a Jew, attended also by Hindas, 20, 21.

Malaria. See Fever,

Malibabad, takelf of Lucknow District, it.

Mailiabid, town in Lucknow District, under Act of 1846, more a railway station, il. 313.

Malin, affinest of Ganges in Hijnor Distriet, I. 301, its literary associations, 301. Mallacwin, town in Hardoi District, under Act of 1826, it. 261, 262; hand-quarters

of District up to Mathry, 252, 262.

Min Singh, Kaja of Ajorinya at the time
of the ameration of them, il. 387.

Min Singh, Raja of Jaiper, sold to have given Benaves 100,000 temples in a single day, ii. 132.

Mina, village in Garhwal District, it. 289, giving name to a high (18,650 feet) but feasible pass into Tibet, much frequented

by pilgrims, 289.

Mandhwar, town in Bijnor District, ender Act of 1856, L. 314, 315; doubtfully identified with Mottpura of Hinen Tuing, 314, 315; mounts and tanks, 515.

Manglanr, town in Saldrampur District, under Act of 1846, i. 285, 286, a mosque built (1285) by Ballann, 283.

Mango trees, groves of, in Farmkhillad, i. 430, fruit largely expected, 430, in Barcilly, 484 of passion.

Maniar, town in Ballia District, under Aut of 1816, il. 1981 important as a port on the Gogra, 198; the high mounds, sites, now hare, of the forts of

the chief samindars, 198,

Manikpur, village in Partabgarb District, on the Ganges, il. 437, extensive remains of its importance under the Moghala, 431, 434,

Manjhampur, takett of Atlahablad District.

11. 75.

Manco Ram (ch. 1739), founder of the present family of the Rijks of Benares under Sandat Khan, il. 120, 134, 135. See also Benares Estate-

Mar, 'black soil,' one of the prevailing

soils of Bundelkhand, 1, 212, 213, 11.36. Marshin (or Marham), town in Etah District, a 'notified area,' L 479, 480; a railway station, 479; a centre of Mohammadim population and influence, 470 : a small branch of Allyach College, 480; interesting rains and besutiful

mostur, 479

Marithda, the, their rise the most considerable factor in the decline of the Maghal empire, i. 20, their first appearance (1718) by invitation at Delhi, 16; seized and occupied country of the Hundeifis, 26, 215, 216, 218; their varythe relations with Onelle, 25, 228-230; definited (1751) with their Hindu niles at Paulpat by the Mahammadan powers, 28, raided Robilkhand, 19, 146, 247, occupied Deini and mixed Shah Alam back, 19, 129, extorted Allahübüd from him, so; forced by the British out of Robilkhand and the Doab, 29, 229, 246, 247, successes under De Bolgne and Perron, 30, occupation of Delhi, commanding influence over the emperor, 30, 229 I defeated in third Maritha War (1803), 30, settred from Delbi and the Conquered Provinces, 30, 308, recognimd by Oudh and the British as the common enemy, \$19, \$47, scired and held the Dollh, \$71, 30%; strongly fortified and defended (1803) Aligarb, \$5.4: 355; their rack-resting system, it. 40 of parries. See also Bundelkhand and the Bendelkhand Districts, and under History of Districts.

Marithu, toheil of Jennyar District, ii. 168.

Murkets, rural, I. 86.

Marriage: Hindu, a religious and social necessity, i. 41; child-marriage increasing, 41, 43 ; cohabitation before puburty rare, 41; of widows, widely legal, nowhere religious, 43, 43, of winowers, infrequent, 411 polygamy permissible, 41, redricted polyanilry prevalent in a part of Debra Dan, 42; divorce uncommon, 41, among Musalmins, allowed, strongly reprobated and

checked, 41; andogamy, exogamy, and hypergumy of Hindus, 43, endoganry

of Muselmans, 44

Martiniere, the, at Lucknow, founded by General Clande Martin, if. 313, the chief school for Enropeans and Eurasians, i.

Man (Mant), takes of Mutter District, i. 383, 384; hs jach, Nob (denised) and Moti, 383, 384; the new Mar branch of the Upper Ganges Canal, 378, 384.

Material condition of people, L 71, 71; best in the west, 71, worst in the uset, 71, 72; the dress, food, and bousing of labourers and cultivators, 72, of a slork, 72 to in manufacturing centres, wages higher and cost of living the same, 84 : model dwellings for workmen in Cawaporr, 84.

Man, tohill of Banda District, Il. 44.

Man, askelf of Ihansi District, il. 99, 100. Man-Kladpur, municipality of two towns in Bland District, il. 106; Mau, on a branch railway, rob, some a mere village turned into a town by merchants and others flying from oppression of neighbouring State, 106, 107; has lost much of its former trade to Jhimu, toy; fine Jain temple, 107.

Man, ancient rown in Azamgarh District, under Act of 1850, II. 243, 244; 2 railway function and centre, 2437 once the property of Shill Jahin's daughter, with 360 mosques, 243; a great trade in cloths under the Company, 243, its sleezy since the abolition of the monopoly and English competition, 243; sanguinary religious riots (1893), 244-

Man Aimma, town in Allahanad District, under Act of 1856, il. 84; on a hranch rallway, 84, plague of 1899 imported from Bombay, 84. Mandahā, taksif al Hamirpur District, it.

Maudalia, town in Hamirpur District, under Act of 1850, il. fiz, 63, fort, and

tomb of pilgrininge, 63;

Manrawin, town in Unan District, IL 124: the loyalty of its other differ remarded, 724. Mauryan dynasty, the, of Parez | 321-184 H.C.), L. 18, 10, 222, founded by Chandragupia after the Greek lavasion,

18, its wide empire and highly developed system of government, 191 the inscriptions of Asoka, the first great Huddhist king, to.

Mawana, rabill of Meernt District, I, 318. Mawana, town in Meernt District, a mani-

cipulity, 1. 374.

Medical department, in charge of an Inspector-General of Civil Hospitals, i, 138-140; statistics of patients and expenditure, 159, 160 Civil Surgeons

of Districts, 138; the chief Hospitals, 139; the treatment of women by their own sex, 130; lunation, 130; vaccination, 139; village assitution, 139, 140, See also under Medical in Districts.

Medical Schools, male and female, at

Agra, L 135, 400.

Meernt Division, general description and statistics of, i. 249, 250, a table of the area, population, and land revenue of each of its six Districts, 240; its most

notable places, 250.

Merrit (Meruth District, I. 305-331; sich in game, especially wild hog. 306; its henithy climate due to its high position and latitude, 306, 307, the meeting of the Bombay and Bengal monacons, 307; history, 307-309, 324, 335. Timur's invasion and massacre, 307, peace and prosperity under the Mughais, 308, subsequent raids and anarchy, 308, the rule of the adventurer Sumru and his widow, 308, 328-230, British occupation (1803), 208, the scene of the first outbrank of the Matiny, 309, 325; essensive growth and export of wheat and sugar, 311, 313; system of irrigation, 311; important business of herse-breeding, 312; recent famines hardly feit, 314; land revenue, 312; bibliography, 316.

Meerut tahitl, L. 316, 317-

Meerat city, head-quarters of District, cantonment, premicipality, railway station, L 354-357; its enrich history, 324; a copper mint of Akbar, 323, its decay in eighteenth century, 305, its rapid increase in population under British rule, 315; the circumstances and barbasitles of the first outbreak of the Mutiny, 200, 225, the suplneness of the Beitlich military anthocities, 325, the town held throughout, 115; the town mens, its public buildings fine, 333, 326, an important official, educational, and ecclosinatical center, 126, 227; abundant water-supply and good drainage, 326, 327, its prosperity and trade largely due to the contonment and railway, 327, old monuments of Muhammadan and Mughal times, 325, 526.

Mehndawal, town in Bastl District, under Act of 1836, il. 230, the chief centre of trade of the District and with Nepal,

ago.

Meja, satest of Allahablid District, ii. 27-

Meus, See Mewat.

Mewar, an ill-defined tract south of Delhi, i, 233, 224; named from Hinda Mess, Mahamendan Messitis, 223, probably akin to Minis of Rajputana, 2237 their numbers, distribution, and history, 122;

originally and recently Ishmaelites, 223, 224, 453; bibliography, 224.

Mewatis, Muhammadan Meos, 1, 223; Migration, i. 36, 37; the people generally (6) per cent.) stationary, 56; internal, due to Hindu custom of outside marriage and scarnity, 36; external, to British colonies, 36, to other parts of India, far and near, 36, 37, to manufacturing centres, 84.

Milak, tulcit of Rampur State, il. 457.

458.

Milam, village (11,400 feet) in Almera District, it. 176, summer residence of

Electif traders, 276,

Millets, the small, Josefe and bijest, i. 56; cultivation and crops of, 56, 57; stuple foods, and in respect of famine with rice the most important crops, 93. Mills and factories, of carpets and rogs,

L 79, sugar, 82, 83, cotton, 82, 83, wool, 83, paper, from jute, Inc. ice, flour, printing, bone, &c., 83, at Cawapare, II. 19.

Minas and Mess, their locality, numbers,

and relations, L 173-

Mines and Minerals, I. 76-78, practically more worked except quarries of the Stone Makill in Minisper, 27-

Miranpur, town in Muzaffarmagur District, under Act of 1856, L 303, its large local trade diverted by the railway, 303.

Mirgani, taket of Bareilly District, i. 496. Mirsapur, District in Benares Division, il. 142-158; one of the largest and most diversified in tempera of ecentry, 142, of geology, 143; big game abunitant, especially in the preserves of the fulla. 148, 144; climate fair, except at beginusing of heat and end of rains, 1441 surly history that of Chunks fort, 144. the selations of the Benarts Rigis to the Nawith and Warren Hastings, 145; the energy of Mr. Tocker during the Mutiny, 145, 146; perhistoric remains, 146; agricultuse varies with diversity of soils, 147; irrigation mainly from tanks and wells, 149; Government quarries, 149; brass hidnery most impertant, 149 : famines, none extreme, 130; most of it permanently (1793) settled, 181; Existy high literacy, 182; hibliography, 152.

Mirrapur takell, H. 132, 133.

Mirrapur city, head-quarters of District, a manicipality, it. 156-158, on a main ratiway, 157; the highest point on Ganges reached by large steamers, 157, for long the most important trailing centre in Northern Imlia, 157; decline of its trade since the extension (1864) of railway to Allahabūd, ter; its handsome river front, ghiles, and buildings,

157; a drainage scheme begun, 157; still the most important trade centre in the District, 158; large industries of brass domestic vessels and of woolles, carpets, 158; Hindblichal town, 157;

Misrich, tabill of Stapur District, ii. 347. Mohan, pass to Dehra Dan, I. s.

Mohān, taktīf of Unao District, ii, 322,

Mohān, town in Unao District, under Act of 1856, li. 324, celebrated for its Muhammadan physicians, mimics, and actors, 324.

Motanialganj, tohril of Lucknow District,

11.300

Mongol invesions, in the thirteenth and fortteenth contaries, the fear of, a cause of good government, i. 22; repelled by Alà-ud-din, 22; of Timur (1398), 23, 307, 308; in the sixteenth, of libbar, 23. Mongoloid (physical) type, in chame-

teristics and regions, i. 45.
Monsoon, i. 15, 16, 53; the henviest rain from the meeting of the Bengal and Bombay currents, 16; famine from its

failure, partim, 94-98.

Moradabad, District in Bareilly Division, 1. 333-550; must of it festile plain, 534; generally healthy, 534; tigers, leopards, and other game, 534; history under Mehammadans, Mughals, Rohlilas, Ondh, and (1801) British, 535, 535, during the Mutiny, 536; prevalence of serious crime and of religious riots, 540; low atmidant of literacy, 542; hibliography, 542

Moradabad tohall, 1, 342-545-

Morādithād city, bead-quarters of District, a municipality, i. 547, 548; on a main railway, 547; history, 547; growing population and trade, 547, 548; its celebrated brass-ware, 348; handsome Jāms Masjid, and other public buildings, 547, 548; police training school in old contouments, 547, 548.

Mosques, often built on the site of, and with the materials of, Hindu or Buddhist ahrines or temples, i. 25, 307, 388, ii.

alloy at francism.

Moth, takell of Jhansi District, il. 100. Muthrakpur, town in Azamgarh District, under Act of 1826, il. 244; religious riots, of old and secent, 244, special

police quarterol, 244-

Mughals, empire of, L 23-30, from Bibar's victory (1526) at Phirpat to the occupation of Delia by the Mashthas (r. 1770) and the British expure (1803), 23, 30; secured 150 years of comparative peace and good rule to the harassed Provinces, 24, 353 of panies; established by Akbar, 24, began to decline slowly with Shih

Jahan, 25, more rapidly with Aurangreb, 25. Its collapse through the incompetence of his degenerate successors, 26, heatened by the growth of the Hindu powers (Sikha, Jäta, Marathas), 26, 29, and by Persian and Afghua invasions, 26; hy disruption and the formation of independent States, 27, 28 ; the anarchy of its decline, 270, 192 of passion; the intervention of the British, 28, the defeat (1764) at Buxar of the forces of the emperor and the Navale of Outh, 28; its magnificent buildings and royal residences, 33; the decline of industries during its decay, 84; Oudle during, 227, 228. See also umder History in Districts.

Muhamill, tahiii of Kheri District, ii.

371. 372.

Mahamif, town in Kheri District, a 'notified area,' ii. 374, 375; head-quarters of District before Musiny, 374; considerable trade, 375; ruins of fort, 374; the residence of the celebrated Hakim Mahali Ali Khān, minister of Oush, 374, ii. 231, 232.

Muhammad All Shih, king of Ondh (1857-44), L 231; his own havdry monument, and other buildings (mostly unfurished at Lacknow, it to.).

unfinished at Lucknow, It. 204.

Muhammad Ghari (1186-1206), his invasion and conquest of Northern India, it 21, 22, crusted Prithwi Rij of Delhi, 21, and finally Jai Chand of Kanauj, the last Hindu ruler of importance, 22, 420.

Mahammad bin Teghlak of Delhi (1385-81), i. 22, his reign of terror and oppression, 22, aggravating the great famine of 1344, 22; his visit to Saiyid Saiar's tomb at Bahraich and grants,

11, 409.

Muhammad Khān, first Nawāb of Farrukhābād (1724), 1, 27, 28, 30, 420, 432; the relations of his successors with Oudh and the Marāthās, 420, 421. Muhammadābād, 2022? of Ammgarh

District, il. 241.

Muhammadžbūd, rown in Aramgarh District, under Act of 1856, a railway station, ii. 244.

Muhammadābād, teksi/ of Ghāzīper Dis-

trict, il. 184

Muhammadāliād, town in Chāzīpur District, under Act of 1856, li. 187.

Mnhammadans, their occasional endogamy and other social observances, i. 44, their division into three classes of loreign tribes, converts, occapational groups, 44, all largely of Himis origin, 44; festivals, 50, 51, 235; their number, 45, 47; their chief sects, Sannis enormonsty preponderating over Shialis, 46,

47, are increasing in number more than Hindus for physical reasons, not through converts, 43; the backward state of their education, 135, 567, their distike to purely accular instruction, 130, the good influence of Aligarh College und Ita founder, 135; fewest and of least inportance in Ethwah, 453, 456 ; religious riots against Hindus, 498, 499, 565, 100 site Rious; dissentions and battles betown them and the Hindus during the Mining 504, 570. See also under People in Districts.

Mahammadan invasions, enris (1015) and temperary of the Charnivids, i. 21, later (1191) and permanent of the Ghucids, ur, as, of the Mughals and Suris (Alghims) of the sixteently convey, 13: the strengous resistance of the Hindes

of Ethnish, 453, 454.

Muir, Sir W., Ligutenant-Governor, by proclamation (1868) mutic officials personally responsible for life in famine, i. 97 Muir College with hostels at Allah-Abid, it. 82.

Melestide, village of native Christians

evar Allahitbild, it. 58,

Multi-ud-din, his famous meeting and reconciliation [1286) with his houtile father in boats on the Ganges, ii. 63.

Makarrab Khan, physician to Mughal emperors, l. 302, 204, his dargin and

ganden at Kalenna, 302,

Makinswar (Motesar), village in the Himalayas, Naiol Tal District, it. 261, 262; since 1fig4 a laboratory for veterinary research and instruction, 263. and for preparation of protective acroms against diseases of cattle and men, 260, 2621 finit garden and meteorological observatory, 262.

Milingra-Baddhaliper, town in Jamper District, umfer Act of 1836, il. 173; on a main railway, a cotton and sugar

man, 173

Municipalities, L 114-126; their notive and early British predecessors, 124; system of, established (1842) and minsequently amended and modified, 124, 125; part of the general movement (1881) towards decentralization, 1251 the gradual and successful extension of administrative and financial responsibility, #25, and of the elective system, 134, 136, the composition of the boards with a large majority of elected and native members, 126; the necessity hithertouf centrol and supervision, 1951 their anguce, 196, a table of their income and its sources, of their expenditurn and its objects, agg. See also worder Local Self-government in Distilicts.

Munufs, their number and jurisdiction, L. 104, honorary, ro4, ro5, village, to4,

Mursin, the most important fit estate in the Provinces, L 364, 365, its origin. growth in size, and importance, 364, its varying relations with British rule, 364. 365, localty of Rall during the Mutiny and reward, 305.

Marsan, principal piace on the estate, under Act of 1826, on the railway, i.

Musäfirkhänn, tahtill of Sultanpur District, fi, 4:8

Mussoerie, hall contonment and senitarium in Dehra Dün District, i. 266, 267, summer head-quarters of District and other departments, 267, a great centre of European and Europian education, 267; the water-works and assitution of its municipality, 267.

Mustafahad, takril of Mainpurt District.

6. ga8;

Muthy, the. L. 21, 32, 309, 325, 406, 421. 11. 15-17, 79, 80, 304-308; essentially of the sepoys, L 32, led to some places. by representatives of former rulers, 32, generally took the form of emerchy rather than of a revival of native rule, 32, 372, 392, 334, 355, 504, 520 0 farries; mluequent disturbances chiefly decottes and religious riots, 32, 498, 26g | in Omile, 232, 232; hardly felt in Dehm Dün, 255; its outbreak and vigorous suppression at Musaffarmagar, 292, 305; its first outbreak, British ampineress, and manager at Meerst, 309. 315; temporary loss and subsespecial recovery of Bulanchahate, 234; the general loyalty of the Jate, the ouveterate hosnifity of the Gujara and Musalman Rajputs, 335; at Aligari, 255; flight of officials from Muttra, 375; at Agra, the fort held, 194, the murder of Christians by the mob, 406, reliaf by Colonel Greathed's column, 504, 406, 407; the massacre of the fugitives from Fatchgath, 411, 421, 433; the unavailing levalty of native officials and semimilies of Ethwah, 455; lit Campore District and city, ii. 4, 5, 15-17; at Allababad, 66, 79, 80; the missacres at Hamirpur, 53, Jhansi, S9, Mireipur, 148, Muhamdi, 36s, 366, Seltinpur, 422; in Lucknow City, L 132, 133, II. 304-308. See also mader History in the several Districts.

Muttra (Mathura), District in Agra Divisinn, 5, 372-397; traversed by the Jumns, otherwise rumarkable for absence of rivers, 37#; the flora of its wild westers half that of Rajputana, 279. 373; the wild cattle of Bharatpur State

kept out by a fence and ditch, 373; its hot dry climate and extremes of femperature, 373; large variations of minfall, 373; its history, religious rather than political, from early times to the decline of the Mughal empire, 373-3741 became (1712) subject to the Jits of Bharatpur, 374; the reigns of Sümj Mal and Runjit Singh, 374, 375; retrent. of Europeans to Ages in the Mutiny, 373; rich archaeology, 376; the recent substitution, due to irrigation, of wheat for cotton, 378; religious scruples against the use of tanks for brigation. 378, against quarrying in the Gari Raj, 378; former severity and lear of famine now attated by canals, 379, 380; truublesome land settlements, 380, 381; high literacy, due to his religious importance, 382; bibliography, 282.

Muttra cadril, 1. 382, 383.

Muttra city, head-quarters of District, a municipality, with cantonment and good railway service, i. 389-3911 the birthplace of Krishus, and a great centre of religious life, 389, once of Buddhism and Jainism, now of Hindriam, 389. 390, the town sacked, and its temples. and shrines regulatedly destroyed by Muhammadan emquerors and perseeutors, 290, the religious tolerance of Alther, 390; the picturesque native city on the James with numerous temples and fine buildings, adorned with sculpture, glats, and good streets, 390, the Jama Masjid (1661) and mosque of Aurangueb (1669), 390, the Sati bury or pillar, 590; the sewage collected in tanks, 391, solid transhed on grass farm in cantonments, 391; of growing communical Importance, 391; cotton, sugar, paper, and idol Industries, 391; the former hand-quarters of the great lankers, the Seths, 391.

Manufamagar, District in Meerat Divinion, L 189-305; a central elevated tract, flanked by the awampy Lobbury of the Ganges and Jamma, 289, 299; the impairment of the climate by extensive brigation, 190; tradition and history, 290-293, the services and power (1414-1737) of the Saiyin of Härha, 201, the ravages of Sikha, Giljara, and Marathas, 291, 292; British occupation (1803), 292; anaraby and finally result during the Mutiny, 291, 393; archaeology, 293; the population, 293, 2041 the extensive growth and export of what and sugar, 195, 196; extenrive irrigation and drainage, 195, 196; and recent immunity from famine, 297; land revenue, 198; medium literacy,

200; bibliography, 299.

Musaffarmagur takell, i. 200, 200.

Musafarnagar town, head-quariers of District and a municipality, a 302, 304; highly situated and well drained, 304; the centre of the export traile, 304; annual horse show, 304.

N.

Nafir Shih, his invasion (1738) a great shock to the Maghal empire, 1, 26, 245. Nagari, Hinda character for writing, 1, 437.

Nagina, takeit of Bijnor District, L 511, 514; damp, unhealthy, with large de-

crease in population, Err.

Naghta, town in Bijuor District, a municipality, 1, 5/5, 516; a large, well-built, husy place with considerable trade, 5(5; famous for carred about wares, 5(6;

Neiks, a small caste in the hills, devote their daughters to prestitution, il. 251.

Naith Khān, Pathka chief and adventurer in Robilkhand (ab. 1770). L 146, 271, 503, his fort and his son's mouthe at latakad, 301, obtained the title of Naith-ud-daula, became Wasir of the empire, 503, 504, \$16, benevolent and callightened ruler of Defina Dun, 23, founder and Nawab of Najihātad, 516, his tomb there, 516, his great-grandson a rabel in the Mutuy, 504, 513, 516.

Najibābād, takrif of himor l'histrict, i. 511. Najibābād, town in Bijeer Diatrict, a numicipality and a milway junction, i. 516, founded by Najib-ud-finula, who built (1725) a fort, 516; his tomb, 516; the rebellion of his great-grandom in the Mutiny, 504, 516; close to the hills and unhealthy, 516; a slepôt for hill

imde, 316.

Naktir, takell of Salutranpur District, L

Nakür, rown in Sahärunpur District, under Act of 1856, L. 286, a fine Jam temple, 286.

Names, of persons, ordinary and longrary, of Hindas and Musalmans, 1 21, surnames almost unknown, 21; of places, common affixes and their meaning, 21.

Naini Till, southern District in Konnan Division, ii. 240-163; the high (9,000 feet) outer ranges of the Birnh layas, 247; the Bhilbar, 247, the Taras, 247; drained by the Kampangi, 247; lakes, 247; the great variety of climato, minfall, Blorn, and farma, 248; the unbestituness of the Tarai and Bhilbar, 248; the Chand Rilputs, expelled (1790) by the Gurkhes, 249; certed (1801) to British, 249; war (1814-5) with Nephil, computer of Kumum, 249; quite in the hills during the Mutiny, disorder in the

plains, 250; the three main and other castes, 251; variety of agriculture in the hills, Bhither, and Turni, 231, 253, great increase of cultivated area in hills, 252; the importance and difficulty of irrigation, 251, 253, 253; extensive forests, 255, 254; trude with the hills and plains, \$54; actual and projected railways, 254, 255; administered as a non-regulation tract, 255; land tenures, 246, settlements, 250; literacy above the average, 257, backward state of Mussimans, 157; bibliography, 158,

Naini Tal taket, it. #48.

Nami Thi town, head-quarters of District and Division, summer head-quarters of Government, il. 262, 263, a contonment, 262, a municipality, 263; landally of 1850, 261; somery of valley, lake, and mountain, 262; good watersupply and drainage, 263; native and

European achools, 263.

Nana Santh (Dundu Pant), of the Mutiny, the adopted son of the last Peshwa, it 14, 15; his grievance against the Bratish, sg; his massaure of the fugitives from Fateligarh, i. 427, 422, 433, at Darrilly, 487; at Shanjahanpur after flight from Lucknow on his way to Bareilly, 552; his treambery and cruelty at Cawapore, 11. 4. 15-17

Nanda Devi, highest (25,661 feet) mountain of British India, in Almora District,

11, 264, 276, 277

Nauphra, takes of Bahrnich District, it. 416, 417.

Nanjāra, taluhdāri estate (600 square miles) in Behratch and Gonda Districts, ii. 418, 419, originally granted by Shilh Jahan to an Afghan, 418.

Ninpira, town in Bahraich District, a municipality and railway station, with flourishing export of grain, it. 420.

Nathi, town or overgrown village in Ballia District, it 198, a harbour of criminals and of Bhufubāra, who refuse to may legal rents, 198,

Narwal, takel of Camppore District, it. 13. Nasir-mi-din Haidar, king of Oudh (1827-37), debancher, i. 231; his observatory and other buildings at Locknow, it. 303- 304-

Nawabgenj, total of Bara Bucki District,

Navaliganj town, a municipality, IL 448, 440, on a railway, 448, virtually headquarters of Hära Hanki District, 448; a centre of disaffection during Muttey, 448; the signal defeat of the immgents by Sir Hope Grant, 448, his testimony to their heroism, 440

Naw therein, Andrell of Burelly Dustrict, i.

490, 497-

Nawabgan town, a 'notified area' in Gooda District, II. 456; originally a bazar to supply Shajā-mi-dania's shooting camp, 406,

Neill, Colonel, his successful operations (June, 1857) at Aliahabad, il. 80, fell

during the first coller of Lucknow, 306. Nepäl, trade or barter with, on ponies and ballocks, values and principal articles, i. 85, 88, war (1814-6) with, il. 204, 266, 267; support from, during Mutiny, 204, 233; trans-frontier trade with Gorakhpur and Busti Districts, 200, 225, with Bahmiel, 413, 419, with Blaca Banki, 447. See also Gurkhan.

Newspapers, vernacular and English, the principal, L. 137, 138, their generally satisfactory fone, 138, their criticism of Government keen, but often uninformed,

Nichland, village in Gonkhpur District, 16, 219.

Nighinan, tukzil of Kheri District, il. 172. Nilitaur, a mean town with a landsome mosque in Bijnor District, i. gt7, under Act of 1836, \$17; the recent discovery of a secret additions society, the Bara Tepl, or 'twelve hata,' g17. Nitl, village and pass (16,628 feet) to

Tibet, in Garhwal District, ii. 289.

Normal colleges and schools, for men, to

Notified areas, towns with less than municipal self-government, h. 125. See also under Local Self-government in Districts.

Occupancy tenants, the legal protection of, against rack-renting, 1. 68, 69, 111, 111, 241, 242, their different positions in Oudh and Agra, 111, 112; in Outh, 240, the Oudh Rent Act (1886), 241.

Occupations, L 47, 48; agriculture and passure, of two-thirds, 47; other industries and manufactures, 47, 48; profesatomal clauses nearly twice as numerous as commercial, 48; beggars more than 600,000, 45; religious mendicunts over 85,000, 48; the large number (44 per cent.) of women actual workers, 48, in agriculture more than men, 48. See also under Castes and Occupations in Districts.

Octrol, as Important source of municipal funds, L 114, 115 // famin.

Oilseeds, unlivation of, i. 37, 38, area of, 146; valuable exports of, 87, 150. See also under Principal Crops in Districts.

Opium, large (Imperial) revenue from monopoly of i. 117, 118, administration and organization under Opium Agent, 117, large exports of 'provision,' 88, 118, 150; conditions and restrictions of its retail sale, 121, excise revenue from, 121; its moderate use in pill or draught respectable, smoking disreputable, 121; large factory of at Ghistpur, ii. 186, supplies China and thach of India, 166. See also Poppy, and wader Principal Crops in Districts.

Orai, MASS of Jalaun District, II. 177.
Orai town, head-quarters of District, a municipality, II. 121, 122; on a main railway, with no trade and none but official importance, 121, 122.

Oriental studies, colleges and classes for, i. 132; independent Arabic college at Dechand, 282, at Guloothi, 348; of Rămpur, ii. 436; at Benares, the Pisacii periodical, 141, Society for publishing suciesi verasoular texts 141; iii patronage at Jampur, the Shirār of India, by the Sharki dynasty, 160, 171; in the Canning College at Lucknow,

Oudh (Awadh), historic area, one of the United Provinces, i. 224-243; its name derived from Ajodhya, the uncient capital of Kouls, 224, 225; physical aspects, \$24, \$25; history, \$25-233; many ancient sites, not yet explored, and architecture, 235, 234; the unequalled density of its rural population, #34; religion, language, and cestes, 234, 235; the modern subordination of rouds to milways, 235; administration, generally as of Agra, 233, 236; land revenue, 236-242, the position of the talubility before ameration, #36, #37, their treatment before and after the Mutiny, 236-239, the Oudh Estates Act (1860), 238, Settled Estates (United Provinces) Act II (1900), 2, 38, 239; the Outh Compromise (1865), dealing with subordinate rights, 230; the Outh Rent Act (1886), dealing with rights of occupancy, \$40-243; settlement, \$39, 240; the separate jadicial system, 142, the modification of the ordinary nonregulation system, 242, the Judicial Commissioner the High Court, 242; statistics of civil littgation, 242; bibliography, 142.

Outh, history of. See History of Outh, Outrain, Sir James, during the Mutiny, resigned to Havelock command of force dining first milet (Sept., 1857) of Lincknew, il. 306, commanded, fortified, and defended the Residency till the second relief by Sir Colin Campbell (Sept.-Nov.), 306, 307; evacasted the Residency and held the Alambiagh (Nov., 1857-March, 1858), 307, 308; cooperated with Sir Colin's movements

for the third and final (March, 1858) relief, 308,

P

Padramā, tohill of Gombbpur District, ii. 213.

Padrauni, town in Gorakhpur District, under Act of 1855, il. 219.

Paliant, town in Bulandshahs District, under Act of 1836, i. 330; granted by Shah Alam II to the Begins Sumril, 350, by Government to a descendant of Partab Singh, 350, the loyalty of the Nawah daring the Mutiny, 350, bis and his son's high position in Jaipur State, 350.

Pailani, town of Banda District, ii. 43-Painil, town of boatmest in Gorakhpur District, ii. 219; confiscated for plundering a Government train during the Matiny, 210.

Panchala, an ancient kingdom, the centre of the Madhya Desa, i. 242, 243, its Northern and Southern divisions, 243; the scene of the winning of Drampadi by the Pandava brothers, 243, 419, 434; bibliography, 243. See also Râmnagar and Ahichhattrs, i. 484, 500.

Phodavas, the their contest with the Kauravas, i. 17, by the Bhigangal rivet, 177, in Panchille, 142, in Dehra Din, 252, at Deoband, 282, at Nakar, 186, their capital, Hastmäpur, in Meetat District, 307, Parichhatgarh founded by, 197, in Balandshahr, 333; their marriage to Draujadl at Kampil, 424, their retirement to Pandukeshwar, ii 280.

Pandukeshwar, village in Garhwil District, it. 189; the religious retreat of the Pandavas, 189; celebrated temple of Vog-basis, 189.

Pänlpat, battles of: Bäbar's victory (1526) over the Lodis, i. 23, 227; Mahammadan victory (1761) over the Maräthäs, 28, 249, 504.

Parguest, divisions of selells, units in settlement of land revenue, i. sor, 174, corresponding to wabult of Akbar, 101.

Parfehhatgarh, uncient town and fort in Meerur District, L. 227, 328, under Act of 1826, 328.

Partitionsh (Problegard), District in Fyzikiid Division, with hand-quarters at Belli, in 429-438; portions enclosed by and enclosing other Districts, 429; fertile plain, with villages surrounded by groves of mango and other trees, 430, traversed by the Sal river, 430; day and braithy, 430; passed under Muhammedans, Jampar, Oudh, and finally (1836) British, 431; no marier of British during the Mutiny, but general

anarchy, and; crops of rice largest, of poppy and sugar-cane increasing, 433; protected by wells against familie, 434; 435; railways and roads, 434; low literacy, 436; hibliography, 436.

Partilbyark sakrif, il. 436, 437. Partabgarh, rown in Partabgarh District,

under Act of 18g6/il. 438; fine resistence and large school of the Raja, 438. Passes, to Tibet, L 198, il. 170, 259;

Moban pass to Debra Dun, I. s. Pathan, invaders and rulers of Robilkhand,

1, 27, 28, 265-267; Architecture at Janupar, il. 162, 171, 174.

Patus, massione (1763) of British at, L. 28, executed by Sumra, 308.

Parti, takell of Partibgarh District, II. 457

Patiedrit, at village accountants, i. 101, their seconds as a basis, often unsatisfactory, of early land assessment, 113 215 ; their training and use for the proparation and maintenance of village maps and records-of-rights, 140, 141.

Panel village (5,390 feet), head-quarters of Garhwal District, population 486,

II. 289, 290.

Pawayan, takett of Shahjahanpur District, i. 560; malarious swamps and lately decreasing population, 160.

Pawayan, town in Shahjahanpur Dietrica, under Act of 1856, i. 561; on the steam tramway from Shahjahanpur to Mallant. Sht.

Pendhar, village in Mainpurf District, L. 450; noted for worship of Jokhatya, 450, a great remet of female pilgrims,

电五位:

Perrop, French general of Sindhia, i. 30, his prescules for his veterans, kept upby the British, 223; communded (1803) against Lord Lake at Aligurh, 354, defeated, fleil, and surrendered, 354-

Phalaula, town in Merrut District, under

Act of 1856, L 328, Phaphand, declining town in Ethwah District, under Act of 1856, i. 465; tomb and mosque of Shih Bukhari, place of pilgrimage, 463.

Phulpus, sakell of Allahahad District, ii. 757.75

Pholpur, town in Allahabad District.

under Act of 1846, it 84. Physical aspects, it 1-17, boundaries of the area, mittral and artificial, 1, its fant natural divitions of Himalayas, z, 185-198, mb-Himilayas, z, z, Indo-Gaugeria plain, 3, 4, Central Ledis platenn, 4: hill system, 4. 5, 185-1047 the Ganges and river system, 5-8, 161ake; seemey, 8; lakes and awamps, 8, 9 ; goology of the foor natural divisions, 9-13; becamy, 13-14; 200logy, 14: 35;

metrorology, 15-17; prehistoric zemains, 17. See ales in each District. Pigeticking, annual competition at Meerut, i, 306, Muttra celebrated for, 373-

Pihani town, a 'notifind area ' in Hardel District, ii. 562; the mosque and tomb dan fennder, chief seufte under Akbar, 36z, its lost arts of aword-making and

turban-weaving, 362.

Pilgrimage, notable places of Har-dwar, t. 284, 285, Garhmuktesar, 227, Baldeo, 285, Brindaban, 385, Giri Raj, 387, Mahahan, 389, Muttra, 389, 390, Batemar, 414, Punihat, 450, Noron, 480, 481, Katora, 332; of Hindus and Musulmans to Makanpur, il. 20, 21, Chitraklit, 46, Allahabild So, St. Benarra, 137, 138, Bindhachal, 187, 188, Hägesliwar, 276, Badrinath, 187, Joshimath, 187, Kedarnath, 188, Pandukeshwar, - 280 Rudrapesyage 290, Daiman, 336, Ajadhya, 389; Kichhannchha, 392, Debl Pitan, 405, Rudaull, 449;— in Tehri State, Bhaircoghatt, 464. Devaprayag, 464, 465, Cangotri, 465, Jammotri, 465; of the Ganges, 161-165; the Son, 171; the Jumus, 173, 465; the Gogra, 183,

Philibhit, District in Bareilly Division, L. 563-573; a level plans close to the hills, \$63; large game common in wilder tracts, 564; in parts most unhealthy, 264; under the Robillas and Rahmat Khan, 564; during the Mutiny. \$64, \$65; fluctuating population due to tamine and fever (1877-9), \$65; religious rior (1872), \$65; rice and sugar-cane the most important cross, 566, 567; excessive rain more to be feared then drought, permanent irrigstion hardly nearled, 507, 568; extensive 'generated' forests, of little value but for guaring, 367, 368; sugar cellsting industry, \$68; rouds few and in rains almost impassable, 368; famines, 365, g68; medium literary, 269, 270; bibliography, 370.

Pillibhit cantil, 1, 570, 571.

Pflibhit town, head-quarters of District, a municipality, 1, 574, 573; a sailway station, 57s; almost surrounded by water and drained, 572, 573; a flourishing and well-built place, \$737 the residence (1763) of the Robilla leader, Hafis Rahmat Khan, str, his wall and fine manque, 574.

Pilkhana, old town in Aligneti District,

noder Act of 1816, 1. 170.

Pilkling, town, entitled area, and milway station in Meurus District, L. 328. Pindari, glacier la Almora District, II.

277, 288.

Findāria, incursions of, under Arair Khān, into Robilkhand, i. 487, 549, into Hareilly Division, partim. See also Amir Khān.

Piprahwa, Buddhist mafe in Bast Distrier, 1. 32, il. 222.

Pirscy, its former prevalence on great rivers, i. 31.

Plague, epidemics and huge mortality of, i. 39; in 1905, one-eleventh of the population of Muttra swept away, 30; preventive and sanitary measures, of little avail, and not persisted in, 30; outbreak and riot at Harristis, 285; riot (1900) at Cawapore, II, 32.

Police, L 128-130; distinction between rural police (watchmen, chaukādirs) and regular police, 128; before the Mutiny, 128; organization (1861) of regular police on model of Irish Constabulary, 128; the Inspector-General and his staff, 138, 139; table of its strongth and cost, 156; character of recruits, 1991 matriculants of University trained to be sub-inspectors, 129; its improved status and quality, 1997 detective methods, 129; milway police, 129; municipal police, 156; rural police, ray, 130; statistics (table), 136. See also under Police and Jails in Districta

Polyandry, of heathers, in Debra Dün, i. 42, succession inseed through males, 42, of Pändavas, 434, of hill Khas Räjputa, 256, 203.

Polygamy, among Hindus, often allowed, L. 41, also marriage of living or deceased wife's sister, 41, 42.

Poppy (Paparer sumsiferson), a highly enlitested crop, i. 58, its area, 146, its yield of 20 lb. of options per acre, 68; large advances made by Opiam department, 61, 117; the regions and methods of its cultivation and preparation, 117; religious and other objections of high scattes to growing it, 117; the work of women and children, 118; the enormous returns to enliterators, it 320. See also Option, and under Principal Crops in Districts.

Population, general view of, 1, 23-51, table of its distribution, 144, 145; mare than 4; millions i denaity, 35, 34; urban and rural, 34, 36; fluctuating growth, and its causes, 54, 36; migrature, 25, 37; age, 57; stral statistics, 27-39; infantiside, 40; fluctuating gange, 42; casts, tribs, and race, 42-45; religion, 45-47; occupations, 47, 45, food, 48, dress, 48, 49, dwellings, 49, disposal of dead, 49, strassumts, 49, 50, festivale, 50, 51, names, 61; of

Ourli, 234, 235; under each Division, District, town, and tabill, the number of the population regiven. See also under People in Districts.

Post Office, part of a circle under the Postmaster-General of the United Provinces, I. 94; old District to local post, lately supported by a cess, 94, sluor 1906 merged in Imperial, 94; postal statistics, 92.

Postal workshops, at Aligarb, 1.358, 359.
Pottery, industry, t. 81; domestic, naed
only by Mahammadana and low castes,
81; agricultural, furned or moulded,
81; onnamental, its many centra, 81;
the potter caste, Kumidir, 81; the
village potter, a servant of the community, 81.

Prayage or Prig ('place of sacrifice'), the Hindu name of Allahalad, il. 78, Hinen Tsiang's untile of it and of the tree of religious untille, 78.

Prehistoric remains, 1. 17, stone implements, rude drawings, and inscriptions in caves, 17; in the West, rare copper weapons, 17; in Knimur caves, 203; in Bamielkhand, 213.

Prices, interest of money lent by Government and by private bankers to cultivators, 1. 61, of inlineks, 62, sheep and goats, 62; of staple foods and salt table of), 147; cost of walls, 65; famine, of food, 96; of raw anger settled by uriners, \$14.

Prices, their limited effect on rems. 1.68; a rise to, not an admitted ground for rise in rents, 68, their history, 7; their instability before 1861, 7; and u.; their subsequent rise, greater steadiness and equalization, 7;

Printing and the Press, L 137, 138; Allahābād, a great centre of, il. 82.

Prithwi R5] (1172-92), last Hindu (Chanhān) king of Delhi and Ajmer, L 212 defeat and death by Muhammodaus, 21; his descendant, the R32 of Mainport, 448.

Provincial departments, and their heads, i. 100.

Public Works department, organization of, under two Chief Engineers, both of the Secretariat, I. 100, 136, railways, roads, bridges, works of irrigation and emitation, public buildings, 126, 127.

Pulma, cultivation and crops of, i. 57, puralysis due to binker, 57; the food of the poorer classes, and set to be substituted for when in bad times, it 55 of faction. See also Grains and Pulses.

Psojub, trade with, values and principal articles, i. 87, 88.

Pur, town in Manuffarmague District, under

Act of 1856, i. 304; cold-senson camp

for artillery practice, 304. Püranpur, sakell of Pilithlit District, L. art, a most backward tract, swampy, unbealthy, poor, its cultivators few and ready to migrate, 5711 light annual

Assessments, 571. Purwii, Askill of Unao District, H. 332. Purwii, town in Unan District, under Act

of 1836, it. 324-

Quining, sale of, in pice packets, I. 139.

R.

Rabspura, ancient town in Bulandshahr District, under Act of 1836, L 350, pentre of an estate confinenced after the Mutiny, 350.

Races, physical characteristics and regions. of Aryan, Dravniian, and Mongol, i. 45. Rhithl Swami, a Hindu sect of recent

origin, L 46; a development of Kabirpunthium, 46, its Trinity, 46.

Rie Berell, District in Lucknow Division, il. 315-338; part of Gangetic plain, wooded and fertile, 325; healthy, with a mean temperature, 306; historically unimportant, 327, many buildings and remains of Ibrahim Shah of Jaunpur, 327, 336, 337, during Mutmy, some loyalty, much aparchy, 327, 328; rice the largest crop, poppy the most remonerative and increasing, 319, 330; irrigated from wells, tanks, &c., 330; industries few, trade growing, 33t ; repeated and severe scarcity and famine, 331, 332; burghry common, 132; moderate literary, 333; bibliography,

Rae Bureli autril, in 334-

Rae Barell town, bund-quarters of Districk, a municipality, il 336, 337, on a railway, with a large and growing trade, 336, 337; the story of Ibrilian Shilb's fort that ross in the day and fell in the night, and the saint's walk over the ground, 337, his Jama Marjid, 336; Jahlu Khan's meaque, julace, and tomb, 336.

Rahmat Khan, regent of Robilkhand, See

Hafu Ruhmat Khan.

Ralicway Rajputs of Birn Banki District. ii. 440, their chivalry, and beroism at Nan-ligani battle (1843), 440.

Railways, i. 88-91; their inflaence on the growth of towns, 16; length and distribution, 88, 89, determined by the talgerries of trade and famine and by military considerations, Sq. 91; connucious with Bengal, 80, 90, with Bomhay, 90, with the Punjab, 90; other

lines, 90, recent and projected extensions, 90, 97, light tailways, 91; cost of construction, or; moral and sconomical influence, 36, 91, traffic, see Trude; their interference with road and river traffic, 85, 91, 95; an Imperial (oot Provincial) consern, 107, 108; milway pollor, 129. See also under Railways and Roads in Districts.

Rainfall, i. 16, 142, its premature cestation more injurious than its postponement, 16; the influence of its excess or defect on the growth of population, 35, 36, its excess as a cause of increased deaths from fever, 29; its agricultural aspects, 53; of 17 inches in 24 hours at Tambgan] in Gonda, 394; its excess worse than drought, 168. See also under Rainfall in Districts.

Rājāpar (or Majhgawān), ence flourishing town in Blinds District, ii. 30; founded by Tulai Itis, 50, his puritua regula-

tions will observed, so.

Raipur, town in Dehra Dun District, L 267, 265, 7 miles from Dehra, and a stage on the main road to Mussoorie, 267, its pure drinking-water, 267.

Rajputana and Central India, values of trade (by rail and road) with, and prin-

cipal articles, I, 82, 87, 88.

Raiputs, the modern, probably Hinduired descendants of invaders from Central Asia, i. av, Hursbavardhana of Kanaul probably their first great ruler, 27; shared in the Hindu defint (1761) at Panipat, 28; their newspaper, 137; strong to Dehra Dan, 236; polyanstry of hill Khas Rājjuta, 256, 263; the invertence hostility of Musalman Bajputs during the Mutiny, 335; Katebriya Ramuts of Roullaband, their accounts opposition to Mussiman conquest, 244. 245, 485, 498, 435; Rathor Ramurs of Kannuj, 22, 225, 435, 437; Bate Rajputa, 211; Chandel and Bundela Rajputs of Bundelkhaml, 213-213, it. 33-34; Gantam Răjputs (converts to Islam) of Azamgarh, 232, 242; Kaikwile Rilipate of Bars Banki, 440.

Ram Ral, heretfral Sikh Gura and Hindu unti-pope, i. 253, 264, founder of Dehra

town and temple, \$53, 264.

Ramayans, the great epic, of soubtful historical value, i. 17, its story, 18, the probable sintes of its events and composition, 18, melted and acted at the

Damber, 50. Rängangi, West, river (Rubut or Ruput in its upper courses), 1, 7, 8, 166, 167, rises in the Onter Himiliayas, south of the snowy range, 166, falls rapidly, floods maily, and shifts its channels, 166, 167, falls into the Ganges above Kanunj, 167, its reflectaries and principal towns, 7, 167; in Burelly District, 485.

Rimmagar, village in librally District, celebrated for its ruins and rumains, Hinda and Buddhist, I. 500, 501; the mound of Ahichhattra, identified with expital of Paschill, 484, 500; bibliography, 501.

Rammagar, town in Benares District, under Act of 1846, nearly opposite Benares city, it, 141; residences and fort of Balwant Singh and his descendants, 141; tank and temple of Chet Singh,

Rampur, town in Saharanpur Dutrict,

under Act of 1856, L 286, Rampur, State in Robilkhand, ii. 450-460; area of 893 aquam miles, a level fertile tract, with a damp, very malarious porthern tract, 450; game fairly abundant, 450, its celebrated breed of hounds, 450; its history that of Robilkhand, 450, 451; the loyalty and rewards of the Nawab during the Mutiny, 451, 457; Meralmins nearly half the population, 4521 maize the largest crop, 453; recent improvements in irrigation. 453; cotton cloth weaving and other industries, 455; crossed by a railway, 4541 famine not severe, and relieved by the State, 454; administration, L. ros, in a54: legislation and justice. 454; 455; revenue and expenditure, 455, 456; property in hard not generally recognized, 455, mut or land revenue generally let on lease by auction, 455, miscellaneous revenue from liquor, drugs, &c., 456; an elective municipality, 456; army and Imperial Service Lancers, 456; education backward, 456; hospitals for treatment on European and indigenous methods, 457, vaccination, 487; bibliography, 457.

Hampur city, captial of State, a numicipality, it. 458, 459; on a main railway, 458; 55,000 Manalmins to 17,000 ifindus, 456; cmlased by a broad, dense, bamboo hedge, six miles round, 468; the new walled fort, with palaces, &c., in centre, 458, 459; chief public halldings, 459; the fine library with valuable manuscripts, 459; the celebrated State Arabic college, 459.

Räsmanehighät, takeit of Bäru Banki Dis-

trict, ii. 446.
Rainsy, Sir Hanry, Commissioner of Kumann, poselaimed martial law during the Mutiny, ii. 250; his improvements (1850) in Naini Tal. 226; Raman Hospital for Europeans at Maini Tal. town, 263; Raman College at Almorit, 274-

Rankhet (6,942 feet), military amitarium and summer cantonment in Almora Trierita, ill 277; good water-mpply, 277; once proposed to take the place of Simila, 277.

Ripri, village in Malapari District, i. 450, 451, commanding crossing and builge of boats over Justin, 451; once a large and prospersus town, with many marks and rules of former greatness,

450, 451.

Eapst (**Schowaris* of Arrisa, also framers, refreshing*) river (400 miles), i. 183, 184, rises in Nepäl, joins the Gogra, 183; secrives the waters of the array and of lakes Bakhira and Chilna, 183, 184; navigable and has traffic, 184.

Raszā, taksīf of Hallik District, in 196.
Raszā, town in Ballik District, under Aut of 1836, it. 198, 199; on a milway, and a river port, 199; a thriving town with the best trade in the District, 199; tank, grove, and mounds, memorials of satis, 199.

Rath, transfeel Hamirpur District, il. 59, 60. Rath, atteient town in Hamirpur District, under Act of 1856, il. 63; several mosques, temples, tanks with 58,65; contre of District trade, 63.

Rather Rapputs of Kunani, L 22, 226, 428, 437, the last Hindu kingdom, overthrown (1164) by Muhammad Ghori, 22; inscription of, at Budam,

Record-of-rights, as the basis of land assessment, i. 123; often lost or destroyed in Outh during the Mutiny, 116, ii. 167, 298, 320, 332 of patrion.

Registration of documents, organization and statistics of i. 105, receipts from sale of indicial stamps, 122, 152; of births and deaths, 37, 28.

births and deaths, 37, 38.
Reinhardt or Sumrit, Walter, butcher, soldier of forme and adventurer, 1, 308, 349, perpetrated the Patna manager (1762), 308, held Sardhana and left it to his wife, the Begain Samrit, 308, 329; took (1761) Agra, 393. See also Sardhana town.

Religione, statistics of, i. 45; Himmium and its orthodox and heterodox developments, 45, 46; Islam, 46, 47; Christian missiona, 47. See also mades each Division and District.

Remount department, Army, in Mundiarnagar, 1. 195, Morrat, 312, Balandshalir, 338, Aliganh, 358,

Rants, 1, 66-70; in kind and in crab, Alamgie's criticism of, 67; the moral and economic disadvantages of produce rants, 66, 67; crab-rents, their steady extension, 67; their determination by personal, economic, and physical conditions, 68, 69, by legal recognition of) occupancy rights, 68, 69; field and lump sents, 69; occupancy and nonoccupancy rents, 69, 70; special rents for tobacco, poppy, sugar, and garden grops, 70; in Omih, 240-242, the Ouille Rent Act (1886), 241. See miss Occupancy Tenants and Tenares of Land, and wader Land Revenue in Districts.

Reoti, town in Ballin District, under Act of 1816, ii. 199.

Revenue Ser Finance.

Revenue, Board of its constitution and

appere, L. 100.

Rice, cultivation of, i. 55, its area, 14 per cent. of cropped area, 55, 146, prices of, 147, imports of, from Bengal, 87; with millers the food of the mauses, 95. See also under Principal Coops in Districts.

Rlots, plague at Hardwar, L 185, at Campore, il. 17; religious, between Hindus and Musulmint, in Hardwar (1760), 1.28g, Barrellly, 498, 499, Maridshad, 540, Pillbhit, 563, Hallia, ii. 189, Arangarh (Man), 237, 244, at Shahibiid, 363, Zaidpur, 449, between Sumis and Shinha L 540.

River system, 1, 2-8, 161-182; the drainage of the whole ares into the Ganges, 3. former piracy on great vivers, 31. See also under River System in Districts.

River-home trude, i. 6, 7, 85, 148-150; interfered with by railways, 93; stammers for goods and passenger teaffic, 93, other boats, barges, punts, &cc., 94; little now spent on keeping or deepening waterways, 93; common on Gogra, il. 180, 209, 377; cei Ganges, L 165, 166.

Rusils, L 91, 92; before and nince sinegation, 91; their length and course, metalish of Public Works department, numetalled of District boards, 91, 92; as fonlow of railways, 92; avenues of trees along, 250 er pairies, the avenue of immericals in Fyrabial, it 383. See also source Rallways and Roads in Districts. Rotertiganj, needl of Miralpur District,

ili 153, 154

Robilithand, a denouse historical tract, corresponding to Barelly Division plat Råmpur State and the Tarai pargumer of Natal Tal Instrict, L 27-29, 243-148, 485, 485; the physical features of Tarni and plain, 243, 2441 its early hintory muler Katchriya Raiputa, Mubammadans, and Mughais, 244, 2451 seized and subjected by Pathlin chiefs, 27, 28, 145, 246, their relations of was and intrigue with the Marithus, Outh, and the British power, 29, 24%, 247 Robblishand conquered and annual (1774-94) by Outh with British help,

20, 247; part of the Ceded (18er) Provinces, 247; population, 247, 2461 bibliography, 248. See and Barelly Division, paction.

Robillas, loft few buildings of importance, 1. 487; rank-renting by, 494, their short, cruel, long-remembered treatment of Kumaun, il. 165, 266, 276.

Reman Catholic missions, L. 47, at Agra-412.

Rome, Kushan gold coinage imitated from that of Augustus, r. 20.

Roorkee, takell of Saharanpur District, L. 181.

Rossker, town in Sahäranpur District, a conforment and municipality, i. a86-288; its modern importance due to works of Gunges Canal, a87; hend-quarters and workshops of Bengal Suppers and Miners, 287, 188; the Thomason Engineering College, its growth, methods, and equipment, 187.

Rose, General Sir Hugh (Lord Strathnairn), in the Muriny, his campaign in Central India, L 32; took James for and town, it, So, his great victory (May, 1858) neur Kälpi, tro.

Rudarpar, town in Gorakhpur District. under Act of 1836, it. 219, 200; extensive rains and a famous temple of Dfidhnäth, 219.

Kurinall, town in Bara Banks District, under Act of 1856, il. 449; shrines and fairs of two Muhammadan smits white made miraculous recoveries, 449.

Rudenprayag, temple and place of pilgrimage in Garhwal District, il. 200. A portmire system of land tenner, L 109,

attempted establishment of, in Dehra Dan, 260; the rack-renting system of the Marathan, II. 40.

Sandat All Khan, Nawab of Onih [1797-1814), 1. 30, 230, 231, his trenties with the British and final cession of Cedesl Provinces,' 231 and w.; the last of the tolerable rulers of Oudh, 231; the subsequent degeneracy of the dynasty, it 303. 394

Salidat Khan, Wastr of Mughal emples and first independent governor of Oudh (1724-19), 1. 16, 27, 228, the prosperity under his rule, 228; sublet Benares, il-

135, 116.

Satisbaid, consil of Muttra District, L 384. Sadis, a raste peculiar to Farmihābād District, L 423, a kimi of Hindu

Quakers, 432. Sahiar Jang, governor of Oodh (1729-15) and for a time Wazir of the empire, is 26-28, 228; began the tremble with the Robillas, 228, 245, 246, and called in the Marathia, 26, repulsed from Delhi by Ahmud Shih and the Marithiis, \$18;

at Lucknow, ii. 302. Safipur, mbitt of Unno District, ii. 321,

Safipur (or Saipur), town in Unno District. moder Act of 1886, Il. 324, 323-

Sagri, Jakill of Aramgerh Dutrict, ii. 240,

Sahajilaand, religious reformer and ascette of the early nineteenth century, il. 404) 4951 worshipped under name of Swam Niriyan as incurnation of Krishau, 40g.

Sahārunjur, District in Meernt Division, i, 268-289, the north portion of the Dollb, 268, summer heat tropical, 269, fever common everywhere, 269; history under Muhammadans and Moghals, 270, incursions and turbarities of Sikhs and Merithia (1709-1803), 270, 271, British occupation and organization, 271, 272, anarchy of the Mutiny, 272; archaeology, Boddhist, Hindu, and Mahammarian, 273, 273; population, 273, 274; wheat and rice the staple growths, 274, 272; 15 per cent. of cultivated area irrigated, 275; famine lutely hardly felt, 277; education below average, 279, 280; lubliography, 280. Salılırınıpur radıtl, i. 280.

Sahitranpur city, hend-quarters of District and takili, i. 288, 289, a railway terminus and municipality, 288, 289; mills and railway sliops, 288, Government Botanical Gardens, 288, 289; its lowlying situation and recent against ion, 188,

Salumpur, a dirty town in lilinor District, on the road to Hardwar, L 417. Sahaswan, tahril of Budann District, i.

227, 528,

Sahaswan, town in Bachann District, a municipality, i. 532, 532; once hend-

quarters of District, 233-

Sahatwar (also Muhatwar and Mahatoal). town in Hallin District, under Act of 1856, il. 199, a railway station, with considerable trade, 199

Sahawar, town in Etah District, under Act of 1856, L 480, nine a railway station.

#Sou

Sai river (ago miles), affinent of Gamti, L 160, H. 430.

Saidpur, takel of Ghlalpur District, II.

184, 185

Saidpar, town in Charlete District, under Act of 1820, ii. 187; of great interest from the ancient buildings above and below ground, 187.

Saiva cult, Benares Its principal sent in

India, i. 36.

Salyid family of Harlia, their services to

the empire, power and fall (1414-1732) in Maraffarnagur, 1, 191, 303. Saiyid king-maken of Delhi, their

home at Januath, L 102.

Salyida, Meswi, owners, by Government grant, of Sardhans estate, L 119, 120.

Sauns or Scythimes, their retreat before the Yuch chi and levesion of India in the second century b.c., i. 19; Sakn Satrum of Matten, 373-

Sablana, fendatory estate (70 square miles)

in Tehri State, II. 464.

(Name recusts), a tree of sub-Himfilayan and plains forests, i. 7% in Gezakhper, il. 202; in Kumana Divi-

sion, 254 of passing,

Mand (Salyid), warrier-saint, Sittle sephew of Mahmod of Ghami, i. 27, 226; his mids, real and mythical, in Lucknow Division, ii. 315 of parries. the myth in Fyzihaid, 378, his comb-(1033) and shrine in Bahruich, 419, the visit of Muhammad Tughlak (1340) and the grant of estates to annestors of several large taluistary in Paliraich, 400.

Salempar-Majhanli, two villages, treated as one town under Act of 1846, in Gorahhpar District, ii. 230 ; comprises the estate of the Rain of Majhaull, see, rocklessly administered, now recovering

under Court of Wards, 220.

Saffin Chishti, mist, foretold to Akhar the hirth of a son, I sq. his mosque and tomb at Farenpur Sileri, 415 Salon, Jakill of Rin Bureli District, il.

Salon, town in Rar Barell District, il. 237. 338; the emissione of the manager of a large Mohammadas religious endowment, 338.

Saft, no mines of, l. 77; in manufacture under licence on a small scale, 78, 118, 119; its external sources, 87; consumption and uses, 78, 110; average prices of, 147; imports of, 87, 119, 149-

Salt department, i. 118, receipts of, 110. Saltpetre, its manufacture from sallor earth, and export, L 118, 119.

Sambhal, takeli of Montalibled District, L.

543-344-

Sambhal, sown in Moradabad District, of great antiquity and former importance, L 535, 530, 548, 549; a municipality, 549; traditions and bistory, 248, 249; mounds, ruins, mesque, temples, 248, 549; diminishing trade, 549; its mimet, Soluli Sarai, 880.

Sandi town, a 'notinest area' in Hardol

District, if. 269.

Sandfin, taket of Hardal District, it. 260. Samilla, fown in Handot Imerict, a minicipality, il. 362, 363, a rallway station. with arts, grafts, and trade, 1037 several mosques, and the files Khambles ('twelve pillars') of Akbar's reign, 36%.

Sandatone, the extensive and valuable quarries of the Stone Makel In Mirrapur District, L 27, Government property in out, 77, duty on and revenue from, 771 of Girl Raj in Muttra District, too sacred to be quarried, 37%,

Sanitaria, Landont, I, 256, Mussoorie, 167, Nalm Tal, ti. 162, Rinikher, 277, Almora, 274, Lansdowne, 280,

Sanitation, the Sanitary Engineer of Public Works department, 1 147; water-supply and drainage of large towns, 127; by minicipalities, 125, 135, of villages in respect of water-supply, 139, 140, its slow progress, 140; similary measures against spread of plague, of little aimit, 30; incomplete of Dehia, 26s, modern and improving of Mussourie, aby a excellent of Gangob, 283, of Hardwar, 384, Rootkee, 187, Saharanarr, 188, good of Maraftamagar, 1041 Hajmr, 323, good of Meentl, 327, in-complete of Aligarb, 366, of Muttra by meriage, gut; defective of Agra, are; excellent of Shithjahimpur, 362; ampply of filtered drinking-water to Caunpore, ii. 18, drainage and incheration. of refuse, 18; good drainage and watersupply of Allahibail, 80, 82; good water-supply of Benares, drainage incomplete, 139, 140; bad of Gornkhpur, 218; good of Nami Tel, 163; good water of Almora, 574, of Kanikhet, 277; good water, naturabled drainage of Lucknew, 311; drainage scheme of Fyzithid, 202; Bels, well drained, 438. Associate, religious or charitable grants of

land, i. 110 Sankish, village with auciest rains in Farrakhabad District, 7. 430, 437 ; combitfully identified with pld capital. whither Gautama Juddha desended, 4x6; Avoka's pillar surmounted by a detruncated elephant, 436, confused with a line by Chinese pilgrins, 437 i hibliography, 437.

Sanakrit, revival of its literature under the Guptan, i. 20; study of, no Oriental

Shatten.

Saraswatt river, disappears to cand of Punjab, is believed to reappear at

Allahabild, H. 78.

Shall, past of a river system from the Himilayas through Oudh, L 180, 181, its many charmers, menodering course, and junction with the Gengra, 18c. Sec. site Giret, Gogel, and Kauriala.

Sendlans, maked of Mercel District, k. 318,

Sarifiana estato, in Mescut District, L. 310, 210, greated with a pression that title to Muswi Snipids of Kaisul, for services to liarnes and the British in their retreat (1841), and for later services during the Mutiny, 319, 310; lately in financial distress, 370.

Sardhana, town in Meernt District, a minisipality, i. 518-541, core famous as the resultsion of the Hegam Sumrs, widow of the adventurer Keinhurdt, 318, 329, her romantic life, army, wealth, and liberality, conversion to Catholicism, the fate of her second husband and her step-grandlaughter, loyalty to British rule, 308, 311, 315, 209, 330, her palace, cantooment and rained fort, 330; hiblingraphy . 531.

Strutth, encient fluidhist remains in Benaros District, il. 141, 142; 110fac, site of large monastery, and inscriptions, 141, 142; Hindu and Jain tempies near, 141; the seeme of Buddha's first prench-

tog, 147; tobliography, 147.

Sarahwii, sucisut town in Saharanpur District, l. 289, once important, now declining, 2501 hirthplace of Gilga or Zaho Pir, a Hinon and Muhammadan sand, 273, 289.

Sati Sarf or pillar at Muttra, L. 350. memorial mounds at Raira, it. 199.

Satpuras, East, a wilderness of low rocky hills and jungle in the south of Mirripur District, i. 4. 203, 204, geology,

11, 12, hotany, 14-

Scenery, generally of a highly cultivated plain, L 8, green or golden from June to March, desolute between whiles, 8, the forests and snows of the Himilayas as a background, 8; the flut broken by sandhills, scored by ravines and broad valleys with a shifting line of siver, 52, 220; of Oudh, 225.

Schools, secondary and primary for hoys, L 133, 134, statistics, 135, subjects and trachers, 133, 134; special schools, medical, normal, milestrial, agricultural, forests, &c., 134, 132, for Europeans and Enmana, 135; private schools, 133, 134, matteres of, 156, preferred by Muhammadam for their religious imtraction, 130; school (ees,

Science, degrees in, 1 133; education in, medical school at Agm, 414, at the Thomason Callege, Roorkee, 287, at the Muir College, Allahabad, ii. 82.

Socretarist, the, 1, 99, 100,

Souther (Similary), fown in Bijme District, under Act of 1856; L 517; on a main sailway, and with considerable tande, 317.

Serums, diagnostic, preventive, and untitunic, laboratory for, at Muchemen, to

201, 251;

Set Maket, a vast collection of raise, in Gonda and Bahraich Districts, it. 406, 407; the excavation of two mounds, Set and Mahet, 406; many interesting finds, now in Lucknew Museum, 400, 407; cloubtfully identified with the Servanti of Rama's on and of Buddha, 407; bibliography, 407,

Setha, native bankers, with head-quarters at Muttre, i. 391, their friendly attitude during the Mutiny, 375, built a great

semple at Brindaban, 386. Settled Estates Act II of 1900, l. 138,

Settlements, funncial, between Provincial and Suprema Governments (1871-1904), I. 106-109; Insed on a scheme of decentralization of administrative and financial responsibility, roo; anoceases and increasing transfers of departments, and of beads of revenue, in whole or in fixed parts, to Provincial Government, 106-100; sailways finally (18g2) removed from Provincial account. 107, 108; Provincial bankruptcy (1897 due to fantine, tos; general financial results, ros; a tabular statement of principal items of revenue mised (1800-1904) in the Province, and of the amounts credited to Provincial revenues, 1511 present arrangements, 108, 106,

Settlements, Sunnaial, between Lacal and

Provincial revenues, 1, 123.

Settlements, land: permanent, L 112-115; of Bennies (1795), 111, 113, of other parts repeatedly rejected by Court of Directors, 113, 115, and finally (1883) aluminoed as impracticable, 173, no material difference observed between results of permanent and recurring settlements, 116; recurring or Regulation settlements (1822-94), 173-115, revised settlement rules of 1884 and 1886, 113, quicker and cheaper methods milophed, 115; summary settlements, 111, 110; thirty years the ordinary term of a settlement, 1347 in Oudh, 239, 240, permanent in Bulandshahr defeated by trickery of landlords, 340,

341-Seven over famine, the, of 1860-1, i

471, 472,

Sex, statistics of L 40, 41, 144, 145 (table), rising proportion of females to males, 40, 41, highest where Arysu Mood is most dilated, 41, the decline of female infanticide, 40, 41.

Shills Alam (II), Mughal cospects of Delhi (1759-1806), L 28, falled against the British at Bihar, 28, position at Allahabail after the battle of Bunnr (1764). 28, 29; squimt Elritish advice joined (1769) the Marathia at Delhi, 29, 229, forced to grant them Allahabid, 29, seized and himded (1288), 30.

Saith Jahin, Moghai emperor (1627-88), L 14, 15; his intolerance of Muttra, 390; the risings of the Bundelin, 24. the raid on Hindu temples at Bennres, 24; the Tay Mahal and other splendid buildings at Agra, 25, 393, 4051 deposed by his rebellious and discordant som, 25, 405, his noble and devoted daughter, the Jama Masjid built in her name, 407, 408, her modest tomb outskie Delhi, 408; removed the imperial court to Delhi, 303. Shāhābād, toksti of Hardel District, II.

Shahabad, town in Harder District, a municipality, ii. 363, 364; a railway atation, 163; important under Machala, 303; a considerable place in 1770 and in 1824, an expanse of runs in 1799, 5631 the fine remains of its Afghin founder, 362; religious riots (1840 and 1868), 362.

Shahabad, takett of Rampur State, it.

Shahahad, town in Hampur State, the summer residence of the Nawab, it 459-Shilledara, town and 'notified area' in Meeral District, 1, 231, founded by Shill Jahan, 231, badly drained and dependent on drinking-water from a distance, 331.

Shinganj, town in Jaumper District, under Act of 1846, il. 1731 a milway junction

and thriving mast, 173.

Shahjahappur, District in Barcelly Division, i. szo-s6s; a marrow, marrod, alluvial tract running from the Games towards the Himilayns, sgo; fairly provided with wood and large game, 451; in centre healthy, in parts subject to had fever, 551; a debatable ground between Robilkhand and Oudh, finally (1801) British, 351; the Mutiny, virulent and recurring, 551, 552; population lately fluctuating, from famine and fever, 332; rice, sugar-mane, and poppy grown more widely, 554; sugar-refining the important industry, 555, the Ross mgar and rum factory, 555, 562; large exports of the colebrated local angur 855; irriguitou mataly by wells and liable to failum in drought, 555, 550, the dreadfal familie and fever of 1877-9. 550, 550, the refund to come to rolled weeks, 856, mortality of 87 per 1,000 (1878), 536; the premience of serious crime, 557; prospective increase dis-regarded in last (1900) artifement, 557; low stamfard of literacy, \$5%; bibliography, 358.

Shabjahanpur sedell, 1. 558, 350. Shahjahanpur gily, head-quarters of Thistrict, a contonment and municipality, 1, got, goz : a railway station, got : thernating population, 361; founded (1647) and named after the Maghal emperor, 561; its industry and trade, chiefly in angar and rum, not equal to its population, gor; remarkable for excellent sanitation, 560; Boer prisoners encamped (1901-3) in the cantonment,

161.

Shimli, town in Muzuflarmager District, under Act of 1856, L. 204, 205; puri of grant with Kairana to Makarrab Ehnn, physician, 304; stormed (1794) by George Thomas for the Markthits, 305; Colord Burn (1804) surrounded by Marithia and relieved by Lord Lake, 305; loyslty till death of the tabilities during the Mutiny, 305; decaying since a terrible epidemic of lemmer, 305.

Shamulbld, decaying town in Farrakh-Histo District, under Act of 1840, 1, 437 1 under the Rithers, till their expulsion

by kings of Jampur, 457-

Sharki ('austern') dynasty of Jumpur (1394-1491), L 22, il. 160, 161, 170. its independent rule of the Providers. sa; the splendid architecture of its mosques, 22, 23, ff. 160, 171; finally crushed by Bahlol Lodi of Delhi, L 23; its patturage of learning, ii, 160, 171. See m'er Jaunpur District and city.

Sheep and goats, L 62; wool and hair industries, 79, 831 trade carriers from

Tibet, 88.

Sher Shith, Sir, founder of the Sir (Afrhan) dynasty (1340-35); of Delhi, i. 23, de-Sented and expelled Humayon, 23, it. 176; started the good system of government of Akhar, h. 25.

Sherkot, town in Hijnor District, under Act of 1826, L 217, once bend quarters of Dhampur takel, 517.

Shiales, their number, i. 46, dutinguished from much more numerous Sunnis, 47 : most numerous in Lucknow city, where the kings of Oudh were of their sect, \$35; note between them and Sunnis,

Shikarpur, town in Imlandshahr District, under Act of 1846, L 350, 151, hunting-lodge of Sikundar Lodi, \$51; * neighbouring mound the site of an older town, 331; the remarkable Bara Khamba or twelve pillars, 551, other buildings of zate, \$51,

Shikanabad, takur of Mainpuri District,

i. 447, 448; Shill chabbad, town in Mainpart District, sender Act of 1855, L 451, railway station two miles from the town, 421; its firequant change of coners till 1801, 431.

Shivarajpur, exact of Campore District, II. 13a 14.

Shops, in fown and country, i. 56, now

supply each a variety of goods, 86. Shuja-ud-daula, Nawah of Oudh (1755-75), 1, 28, 29, 228-230, became hereristary Wasir, 229 Pahared in the victory of Piniput (1761), 28, defeated (1764) with Shah Alam at Burar, and at Jajman, 28, 229, mild terms of peace imposed in view of the Marathia, 29. 229; with British aid expelled the Marathia from Rohilkhand and finally (1774) annexed it, 29, 229, 230, 246, 247, 486; his dependence on the British and reception of a Resident, 230; removed from Lucknow to Fyribad after Buxar, 300, his buildings there, 301, Sidhault, tadeif of Sittipur District, il. 347.

Sikundar Lodi, king of Delki, h 393, 533.

549.

Sikandariliad; sakrif of Balandahahr Dia-

trict, 1. 343.

Sikandaribid, town in Balandahahr Distriet, a municipality, 1- 351, 352, built (1498) by Silumitar Lodi, 551, the scene of battles before and during the Mutiny, 231; on the grand trunk rood and near a railway station, but with little trade,

Sikandarpur, town in Ballia District, under Act of (Sz6, il. 199, 200; remains of its former importance and size, 199; its denulence ascribed to migration to Patna, of unknown cause and data, 200,

Sikandin, village in Agra District, L 417, 418, the famous tomb (1612-3) and marble cenetaph of Akhar, of unusual design, 417, 418; visited by Finch

(1609), 418. Sukautra Rao, statif of Afigarii District,

1. 363. 364.

Sicandra Rao, town in Aligarh District, a municipality and railway station, i. 370; a declining, ill-trained place, 370; confiscated for rebellion of its jugiralir during the Mutiny and granted to a

loyal Rajput, 370.

Silkhs, the, their rise a cause and effect of the decline of the Mughal empire, i. 26, their change from a religious sect to a warrior nation, 26, their first (1709) incursions repelled, 26, their raids in the Northern Deab, 29; compartners of westers villages, a precantion against, 34, 292, ranked Dohra Due, 253, their industriminating burincities in the Doub, 170, 191; their assistance in the Mutiny, 233, 305, held Allahabild fort, il. 66. See also under History in Districts.

Silk, cultivation of mulberry, failure in experimental, L 78, by jungle tribes, 78. Silk-weaving, with chief centre at Benares,

i. 78, 79. Singahi Bhadanra, town on two separate sites, in Kheri District, it. 275.

Stritte, takell of Allahabad District, ii. 74075

Sixon, village with Jain rains in Jainai

District, il. 107

Scral, town in Allahibad District, under Act of 1866, ii. 85, a railway station, 8g, next to Allabiblid city the most important mart, 85.

Siraaguaj, village in Mampuri District, under Act of 1856, L 451; centre of

trade in District, 442, 451. Seral, town in Moradiabad District, under

Act of 1856, 1, 549, 550.

Shiper, District in Lucknew Division, it. 338-350; part of Gangetle plain, naturally fertile, 338; cool and healthy, save in lowland feverish gangler, \$39; history engue, 339, prominent in the Mutiny, 239, 340; agriculture back-ward, with large holdings, tents in kind, and high-caste cultivators, 341; wheat the chief crop, 341; badly protected from drought, 342, several dis-tressing famines of late, 343, 344; communications by rall and road fatrly good, 243; the difficulties of witlement due to cents in kind, 344, 345, low Hisrary, 145; vaccinations, 66 per 1,000, 346; bibliography, 146, Straper raters, ii. 346.

Simper town, head-quarters of District, contonnent, a municipality, il. 330, chief centre of District trade, 350.

Sive-worship, its chief centres, L 36;

sidherents of, 46, est mutton, 48. Siwalik Hills (belonging to Siva'), 1. 4. 5, 187, 199, the final and lowest range of the Himalayas, 187, separated by the high valley of Dehra Don, 199, in the United Provinces between the Jamuz and Games, 100; the Mohan pinn road, 199, 159; geology, famos, and flora, 199; bibliography, 199-

Siwälik (geological) series, l. 11, 191, magnificent fossil fauna of, 11, 191.

Sixing, town in Belandshahr District, under Act of 1836, L 353, the legendary origin of the name, 153; once of some importance, now of small, 352.

Sleeman, Sir W., on the wreteled and lawless state of Ondh, it 315, 357, 410, -140.

Small-pex, mortality from, L 38, 39; inponiation and vaccination for, 139, 130, epidemics decreased by specad of reccination, 139-

Soils, i. 57-52; their physical and chemical. characters, Et, the low percentage of sitragen in the alluvium, 31, its more rapid renewal in a hot climate, and artificial increase, \$1, 54, 55; their classification as small loam, and clay, 50, the cross classification based on their distance from homesteads and manure, 22; the black soil of the Central Indian piateen, g2, the characteristic soils of the flundelkhand allavium, \$5, Il. 36, their liability to Alaz, 37-

Solah Sami (statem inna), scattered subarbs of Sambbal town, in Moradahad District, L 350, under Act of 1856.

Solani river (53 miles), rising in Mohan pass, affluent of Ganges, I. 166, emssed near Roorices by brick aquestness of Upper Ganges Canal, 166.

Son river (Sanskrit, Suranna on 1 gold, Some of Arrian), i. 171-1731 487 miles, affluent of Ganges, 171; its surpassing annetity, legends, historical and literary interest, 171, 173; its picturesque cascade and scenary, 171, 172; its short, high floods, disastrous to traffic and cultivation, 171; the Son Canals, 172; the bridges of the grand trunk road and the East Indian Railway, 173; its shifting channels and junctions with the Ganger, 173-

Soraun, densely population to and of Allah-

abild District, il. 75-

Soron, succent town and place of pilgrinnige in Erah District, L 480, 481 i a municipality and railway station, its legend, mound and amount (restored) temple of Sita and Rima, 480; bathleg station on the lierhigangs, old channel of the Ganges, now artificially fed, 480, 481; many curved temples, dharmaller, and old inscriptions and fairs of pilgrims, 480, 481; growing trade, 481.

Selvasti, an Important place in pre-Christion Buddhist literature, 1 226, its cance site disputed, 216; once identified with

Set Mahet, it 304, 407, 409. Srinagar, fown in Garhwill District, under Act of 1856, il. 292, old town washed away (1894) by bursting of Gohni lake, 290; modern town well built on a higher site, 290; its trade due to position on pilgrim route, 190-

Stamps, judicial and non-judicial, sale of and revenue from, i. 122.

Stuamers, river, L 93, 165, 166. Stone, prehistoric implements of, 1. 17.

201

Stone-carving, L 82, at Mattra, 379, at

Agra, 397, 413. Strachoy, Sir John (Lientenant-Governor, 1874), instituted posthouses in familie of 1860-1, i. 97, and relief to ladies in their own homes, 97-

Sair, Fahres of Rümper State, II. 458.

Sats-Himilayes, i. z. 1, the Bhitter ('jeorous'), z, the Taral, 1, the region of the Siwaliks, 3, 199, geology of, 10, II, hotany, IJ.

Sodens, the, represent, in popular belief, the aboriginal population, 1. 43, 44

Sugar, important manufacture of, | 82. its chief contres, and methods, 82; imports (from Maurities) and exports, 87, 149, 150. See also under Industries and Trade in Districts.

Sugar-cane, an important stop, i. 35, its cultivation and varieties, 58, area of, 146, its impressed growth, 311, 311 of patrim; the important crop of Bareilly Itivisian, 4831 prejudice of Rajparte against its enitivation, H. 424. See also under Principal Crops in Districts.

Sultangur, District in Fyrahad Division. il. 420 420; imversed by the Gunti river, climate muld and healthy, 421; mesentful history till the Mutiny, 421, revolt of the troops in cantonment, and murder of officers, 412; population dense and given to emigration, 473; rice, the largest crop, 424, prejudice of Rajjests against angar-came, 414; milways and roads, 425; drought and scarcity rare, 425; very backward in education, 427; bibliography, 427. Saltanpur to Aut. 11, 427, 428.

Sultanpur town, head-quarters of District, s municipality, il. 429; on a railway, with prospects of improving trade, 4191 the old town raced for disloyalty during the Matiny, 429; new town on afte of former centumment, 425.

Samm or Sombre, the Begam. See Rein-

hardt awr Santhann town.

Samil, the greatly more unmerous sect of Muhammadans, L 46, 47, rists be-

tween thirm and Shinhs, 140. Surahii Tall, lake in Ballit District, four to thirteen square miles, i. 202, ii. 188, its channal into the Ganges, dammed for irrigation, L 205, 106; its 5th and

fowl, 205. Sami Mal, Jat Raja of Bharatpur, his role in Mittim, L 374, 375, took (1757) Koll, 132, sacked shihddan before britle of Panipat, 321, mansoleum at Gobardhen, 387; took (1761) Agra, 393; killed (1763) at Gharistand by Robilles,

Silrment, the ancient name of a tract round Muttre, and of a variety of Peakrit, i. 248, its mention by Greek and Smakrit withern, 248, its expanal,

Mutten, 373, 389.

Shryeys, t. 140, 141, based no the Great Trigonometrical Survey of India (1801). 145; callattral aurerys, 114, 140, of 16 lockes to the mile, 140, Districts surceyed, 140, 141; topographical survey, 141; Fornit survey, 76,

 $T_{\rm c}$

Tahrif, subdivision of a District, in charge of a fahildar, l. spo, tor, tos, divided into pargumen, units in settlement of land revenue, tot, 114.

To Manul, at Agra, described, L. 409-

411.

Taiper, town in hijner District, L. \$18; residence of learning Taga family, of which some are Christians, 518; the loyalty of the Raja during the Mutiny, 528

Tällshat, well-drained town in Jhann District, under Act of 1856, in 107, 108; ruined (1858) fort and fine tank,

107, 108

Talgram (village of tanks), town in Farmhhalad District, under Act of 1846. L 437. 428.

combiler system, its origin, development, and degeneration, L 236, 237.

Thinkities, superior landowners, their tenuers, t. 100, 110, in Oudh, 136-240, comprise more than half the area of Oudh, 110, British dealings with, be-Sure the Mutiny, reversed after, 110, 116, the proprietary rights of all but five confiscated for rebellion after the Mutiny but trented liberally, 236, 237, Lord Canning's proclamation and policy, 236, 237, their rights defined and regulated (1869) by the Cruth Estates Act, 238, their indebtedness, 238, Talakelias Relief Act (1870), 238, Settled Estates Act (1900), 138, 139; the Outh Com-promise (1866) between superior and inferior projutetors, 239-

Tamktibl, estate of a Raja in Bant and Gurakhpur Districts, il. 213, 216.

Tanakpur, village, at the foot of the Himalayas, in Almora District, il. 277 | centre for trade with Tibet, 277, 278; projected railway from Pilibhit, 277.

Tinda, taket of Fyshind District, il. 387. Tanda, town in Fyrabad District, a municipality, il. 392, 393; a noted wraving centre, once famous for fine flowered musling, goo; attil a large industry in

inferior cioths, 203-Tandi (or Tindi Hadridan), town in Rampur State, il. 489, 450.

Tanks, irrigation, L o. or, 66; sacred tanks not used for irrigation, 278.

Tanning See Lenther.

Turningani, Juliani of Gamilla District, in

Taral, the famp malarious tract, where the mountain torrents reappear below the Bliffint, L 5, IL 147, 359, most of it managed as a Government estate, 259; pre-eminently a rice country,

Taxes, musimpal, on houses, land, profemious, trades, horses, &c., and ears, tolls (besides octrol), i. 124, 125, 155 of passens.

Ten, cultivation of, established by Government, I. 60, constant area of (12 square miles), 146; imports and exports of,

149, 150.

Technical and industrial education, a. 132,

133, 135

Tehri (or Tehri-Gurhwall) State, il. 460-466; an area of 4,300 square miles, entirely in the Himalayas, 460; contains the sources of the Ganges and fumna, 460; its physical aspects, conditions, and history as of Garliwal District, 460, 461, the active loyalty of its Raja during the Mutiny, 461; has no town but the capital, 461; low density and rapid increase of population, 461, 99 per cent. Hindus, 461; about 70 miles cultivated with rice, millets, &cc., 462; very valuable forests leased to British Government, 462; trade mainly with Massoorie, 460; no roads for wheeled traffic, 462; administration and justice, i. 102, il. 462, 463; crime very light, 462; revenue and expenditure, 463; land revenue, 463; tolls on pilgrims carrying water from Gangotri, 463; army, police, &c., 463; education backward, 463; heapituls, 454; vaccination much apprecinterl, 464; bibliography, 464.

Tchti town, capital of State, and coldseason residence of Rajit, ii. 465, 466; hot and low, bann in old river bed. 46s; a busy trade centre, 466; temples and charmadlas for pilgrimage.

400.

Temperature, i. 15, 16, 141. Securio under Climate and Temperature in Districts.

Tennres of land, i. 109-112; the ordinary tenuess in the Provinces, 294, 377 et famine; in Oudh, superior of solieddare, 236-239, of interior proprietors, 239, 240, occupancy terrores, 140, statistory femants, 240-242; poculing, of hill tracts, ii. 246.

Thigh persistence of, after British moremany, i. 3t, in Ethwah District, 454. its goddess at Hindhachal, it. 157, 138.

Thickerdwird, tuhnii of Moradahad Dia trict, L 543-

Thakurdwam, town in Moraillibad District, under Act of 1826, L 350.

Tham Bhawan, town in Mumfarnagur District, under Act of 1836, i. 305, a centre of disaffection during the Methy, 191, 303. No also Shimle

Thams and Boknes, fever-proof tribes of

Tarai, i. 243, it. 251.

Thomas, George, Irish adventurer, his sower over a commercially area north of Delbi, i. 30, called in by the Marathila against the Sicis, 271, 292, stormed Shamil, 204, restored to power the Begam Sumru, 230, saved the battle of Gokulgarh (1788) for the emperor, 329.

Thomason, James, Lientenant-Governor, (1843-53), formar of Engineering College at Roorkee, L 287, the history and scheme of the College, 2871 Thomason Hospital at Agra, 400, 4121 settled Asimgarh, ii. 238.

Thread, sacred, of the twice-born, I. 43. so, its investiture compared with Christion confirmation, 44; columned of other

unities, so,

Tiber, trade or laster with, on slicep and goats, yaks and hybrids, values and principal astides, I. 85, 88, it. 269, 270, 283; Himalayan passes to, i, 198; trade road, tracks, and passes from Almeira, il. 270, 273, 275, 276, Anta Dhnik, pass to the open mart of Gartok, 274; trade and pilgrim passes and rentes from Garbwal, 289, 290,

Tigers, in the Bhabar, L. a, in the Siwillies and chawhere, 14. Seculis under France

In Districts

Tilliar, the most prosperous sake? of Shilhjahanpur District, L 559, 560.

Tilhar, fown in Shilbinhanpur District, s municipality, L 362, 563, z railway. station, and now next to Shihjahanpur city as a centre of trade, 502; estates runnsented of rebal (1827) Muhammadans, g62.

Then, the Mongol, his investor, took Delhi (1398), i. 13, harried and stormed

Meurut, 23, 307, 308. Tirwa, tuhul of Farrakhähad District,

1, 425, 425

Tirwa, town in Farnkhilded District, under Act of 1836, L-435; the castle and estate of the Kaja, 438.

Tobucco, coarse, grown round most villages and consumed locally, L 38, its area, 140, its yield of 12 to 15 cwt. per scre, 28; imports and exports of, 149, 150; Its special flavour from

brankish water, 430.

Tune, Pastern, ever, amount of Ganges, i sye, its inseference channel and dissafrous floods; 170; destructive floods of Asnuguth town, it. 242.

Tons, Northern, river (100 miles), aideent of the Juman, L 174, 175.

Tom, Southern (Tamani), siver (104 miles), affluent of Ganges, 1, 169, 170. rises (2,000 feet) in Kaimar Hills, 160, its magnificent series of waterfalls, 169.

crossed near its innertion by bridge of East Indian Railway, 169, 170.

Towns, population of, if per cent, of total, i. \$41 seven with population over 100,000, 101 with population over 10,000, \$41 the proportion of arban to smal population in different parts, \$41 little influx of rural population into, \$61 their original rise and growth as seats of worship or of government, \$50 the modern influence of trade and manufactures, \$61 the distarbing effect of railways, \$6.

Trails and commerce, i. 84-88, statistical tables of, 148-150; (as history and state before amexation, 84; its chief cantra, 85; internal, mostly rural and imple, by shops and markets, 86; external, (a) with the rest of India, mostly with Bengal and Calcutta, 85-88, (d) foreign, with Nepal and Tibet, 85, 88; the shief articles of export and import, by road, 85, by rail and by iver, 85, 87, 88, 184-150. See also waster Trails in Thistrees.

Traffic. See Canalo, Railways, Rivers,

emi Rouds,

Treasure, after one and bullion, imports and exports of (within India), i. 149,

THOU

Trees, of the Himilayas, i. 13, 14; important and characteristic of the different forest arms, 73, 73; destruction of jungle for tailway foet, 322, 323; avenues of, along touts, 229 of passion. Security issuing Hotany and Forests in Districts.

Tribes, descendants of a common ancestor, distinguished from castes, i. 41; chief of Minalmins, 44, criminal, 139; jungle of Bundelchind, 157; Mewilis, 123, 124; ivver-proof of jungles of Rohilkhand, 243.

Tocker, Mr., his energy at Mirelpur during the Mutiny, L 145, 146.

Talst Dis; the embrated poet and religious teacher, i. 233, founded and strictly regulated Rajapur, ii. 20.

Tindle, village and railway junction in Agra District, i. 418.

140

Ubari, an unusual tenure of land in llundelkhand, ii. 92, the decree of the Privy Council upon its grant to Raja Krabo Rao of Gurarai, 102.

Ujhtei, town, a municipality, in Bulann District, i. 833, a milway station, 233,

Usuo, Diatrict in Luckeriw Division, it. 513-215; part of the Cangette plain, and with its physical features, 313, 314; generally healthy, with mean temperature, 314; smaler the Mahammandana.

Jaunpur, Mughala, and Oudh, 315, its wretched must before annexation (1856) described by Sleeman, 315; during the Mutiny, a lack of leaders, 315, 216; its deuse population, 316; of average settility, with a slow increase in cultivated area for growing of tice, 517, 318; largely irrigated from wells and tanks, 318; industries and trade slight, 318, 379; severe distress from recent families, 319; murder prevalent, 310; seme low permanent settlements as rewards of loyalty, 320, 324; low literacy, 311; bibliography, 321.

Unner fanni, fi. 321.

Unno town, head-quarters of District, a municipality, if. 323; on two railways, with a thriving trade, 325, its history from the eighth century to the

Mininy, 345

United Provinces, the area administered by the Lieutenant-Governor of Agra and Ondh, general view of, L 1-141; the origin and history of the name and charge, 1, 2, 30, 41, 99, 210, 211; physical aspects, 1-17; history, 17-52; archaeology, 32, 33; population, 33-51; agriculture, 51-72; forests, 72-76; mines and minerals, 76-78; arts and mannfactures, 78-84; trade and commerce, \$4-58; communications, 88-94; famine, 90-99; administration, 99-10; ; finance, general, 10x-109, land revenue, 109-117, miscellaneous revenue, 117-122; local self-government, 122-126; public works, 126, 127, 22my, 127, 148; police, #18-130; education, #30-138; medical, 138-140; enryeys, 140, 141; hibliography, 141; statistical tables, 142-160; rivers, 161-185; mountains, 185-204; lakes, 204-206; canals, 206-210; historic areas, 210-248; detailed accounts of Divisions and Districts, 240-573, Il. 1-449; Native States, 450-

University of Alfahāhād, constituted 1887, 1. 131, 132; the change (1904) in the constitution of its Senate, 132; requires a murse of four years for its ILA degree, 133; cost almost paid by examination fees, 133; statistics of education, 133.

Urds or Hindustani, the official and literary language, 1, 42; the linguage

frame of the Provinces, 221.

Unir, a clay soil impervious to water and intractable, 152, its surface effloresceller,

res, of sods salts, 11, 51,

Uska, town in Basti District, under Act III of 1901, it. 230; the terminus of a branch railway, proceeding to Tubaper, 230; an important must of country and Nepal produce, 230. Utraulii, takell of Gowla District, ii. 401,

Utrania, rown in Gonda District, a * notified arm, 'ii. 407.

V.

Vaccination (and inoculation), i. 139, matistics and cost of, 160, compulsory only in numicipalities and contomments, 262 of parsen, valued more in the hills than on the plains, ii. 272, 464. See also under Vaccination in Districts.

Valshnavism, its chief centres, tenets, and adherents, i. 35, 46, 372, 374, 386, 389; its relation to the Radha Swami sect, 46. Valsyan, or truders, one of the three

priginal twice-born castes, i. 43, 44-Vallabhächärya sect, residence of founder and lead-quarters at Gokul, i. 389.

Veterimary department, the civil, its organisation and daties, i. 63; instruction in the use of serums for entitle discuss, ii. 252.

Villages (= the revence sweets or parishes), with populations of from 500 to over 5,000, i. 34; number over 100,000, metable, 144, 145; more compact or inaccessible in the west, a precention against Sikhs and tax gatherers, 34, 401, elsewhere straggling, 34; little migration from, to towns, 36; village autonomy and its relations with the Government, 101, 102; village Munnifered courts, 104, 105; village or rural police, 128, 129; smilintion and water

supply of, 139, 140.

Vimilitya (+ "a hunter") Hills (Owindian of Piolemy), i. & 199-103, separate the Gangetic basin from the Deccan, 199, north of the Narhada, 200, really the southern excurpment, you miles long, of the Milwii plateau, 200, touch the Sitpuris at the source of the Narbadil, Rowing honosorth between the two ranges, sometimes far, sometimes near, soo; in the valley like 'a weatherbeates coust-line, 200; their pink sandatones with ripple-marks made by water, 200, outlying ranges and isolated peaks, sor; their moderate (2,000 feet) elevation, 201; with the Satparties the watershed of the centre of India, sor, the source of many great rivers, 307, fortresses and custles of their abrupt flar-topped eminances, 102; their geology, 11, 12, 201, 202; their shythology, 202, 203.

Vital statistics, i. 37-39; methods of registration in roral and orban areas, 37, 38, 39, checked and tested by higher officials, 37, 38, and found roughly correct, 38; table of births, deaths, and of mortality from characteristic diseases.

38; denths from principal diseases, 48, 39; infant mortality, 39; effects on, of famine and fever compared, 98.

Volunteers, corps of, afrength and stations of, i. 197.

W.

Wages, the returns misleading, i. 70; daily, of agricultural labour, vary in different parts, 70, between 3 annua in the west, and 11 in the east, 70, their supposed upward tendency, 70; of village arrisant, 70; tising of skilled labour and donossic service, 70, 71; of men and women, skilled and anakilled, in mills and factories, 83, 84; the combination of employers to regulate, 84; of teachers in primary and secondary schools, 134.

Wajid All Shilh, the last king of Oudh (1847-20, sec. 1887), i. 33, 231, 232, his extravagance, misrule, and deposition, 231, 232; built the Kalsur Bigh, the largest and most debased of all the Lucknew palaces, ii. 304.

Walidad Khan of Mallgurh, his energetic hostility during the Matiny, J. 234.

370

Walpole, General, restored order (December, 1827-May, (858) in Cawapere, II. 4, retook (1858) Edwah, I. 455.

Water-supply, of large towns, i. 127, of villages, 139, 140. See also Santation.

Well, the, at Cawapore, il. 17.

Wells, irrigation, their methods and cost, t. 6g, area supplied by, 66, 146, much larger than that of canals, 146; suffer from the fall in the spring-level, 358, 363, 403, il. 6, 46.

Wheat, cultivation of, i. 55, its area, 18 percent, of cropped arm, 55, 146, perces of, 147. See also under Principal Crops

In Districts.

White Huns, of Central Asia, their invasious of Iuslis and overthrow of the Gupta empire, i. sc.

Wolves, found everywhere, i. 14, kill human beings, 14, especially in Bedsam,

gry; lu Cawapure, li. 3.

Women, their number, i. 144, 145; their proportion to men in different areas, 40, 41; the prevalence and reason of female infanticide, 40, 42; marriage of, 41, 42; the large number engaged in agriculture and other work, 47, 48; dress, 49; wages in factories, 83; education of, general, 534, meritical, 135; in hospitals, 139; at Lucknow, ii. 312; visited by lady doctors, 1, 130.

Wood curving, i. 82.

Wool, industries of, hand, i. 76; woollen mill at Cawapore, statistics of, 83; carpet and rag factories, 79, 80; imports and exports of woollan goods, 88, 149, 150; imports of raw wool, 149; from Tibet, 88, ii. 270. See also under Arts and Manufactures in Districts.

¥.

Yake and hytrida with kine, used for carriage in the hills, it. 269.

\mathbf{z}

Zatarabaid, old town in Janupur District, under Act of 1856, it 173, 174; a railway station, with no industries, 173, 174; its old name Manaich, identified with the some of several striking incidents, 174, the subjection by conversion of a Raiput chief by Zafaz Khān, 174; its decline after building of Janupur, 174; the Maniel (1311), tourds and mounds of great interest, 174; billiography, 174-

Zaidpor, town in Bara Banki District, under Act of 1826, li. 449, its turbulent Saiyid inhabitants, 449.

Zamilnia, taked of Ghilapper District, it.

Zamunia, town in Charipter District, under Act of 1856, IL 187, rains surmounted

by a massive piller, 187.

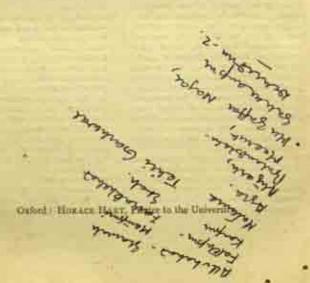
Zamtrader's system of land senare, i. 109,
111, four classes of, 111; former British

dealings with, 113, 114.

Zaminality, functions of, under native rule, paid cesses along with land revenue, i. 122, responsible for law and order in rural ports, 128; till lately paid the chambidity, 120.

chaubidire, 199-Zaurma, female pupils in, L 134-

Zoology. See Fauna.

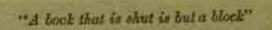




Gaz- Althe Brasch

With Robert - Gaz

Williams



ARCHAEOLOGICAL COVT. OF INDIA

NEW DELHI.

Please help us to keep the book clean and moving.